प्रथमभाग

शाहपुरा के पोलपात्र श्रीमान् मरुधराधीशों के आश्रित तथा
राजराजेश्वर मरुधराधीश श्रीसरदारसिंहजी बहादुर के
पितृव्यक महाराजधिराज कर्नल सर श्रीप्रतापसिंहजी
के कृपापात्र शोदा बारहठ

कृष्णसिंहजी

विरचित उदधिमंथिनी
टीका सहित

जिसको

कविराजाजी श्री मुरारिदानजी की
सहायता से

दाधीच आसोपा पंडित बलदेवात्मज पंडित
रामकर्ण–श्यामकर्ण शर्मा ने
शोधकर
निज प्रतापप्रेस में
मुद्रितकिया

जोधपुर

संवत१९५६ मूल्य रु० ४०)

निवेदन

मैं कई दिनों से इस विचार में था कि हिंदीभाषा का कोई ऐसा उपकारी उपयोगी अनूठा पुस्तक प्रकाशित कियाजाय कि जैसा संस्कृत भाषा में महाभारत ; तौ ढूंढते २ यह वंशभास्कर उपलब्ध हुआ. वास्तव में ग्रंथ की कविता बहुत ही अनूठी है, और जैसी कविता अनूठी है वैसे विषय भी ऐसे अनठे भरे हैं कि जैसे अठारह पुराण, महाभारत, वाल्मीकीयरामायण कों संक्षिप्त कथा, तथा मध्यमकालीन विक्रम भोज आदि उत्तम २ राजाओं के चरित्र, और अर्वाचीन काल के राजपूताना के समस्त राजाओं का शृंखलाबद्ध सत्य इतिहास; जिसमें प्राचीन काल के राजाओं का इतिहास तौ पुराण और महाभारत से; मध्य समय के राजाओं का इतिहास कथासरित्सागर, विक्रमांकचरित, भोजप्रबंध आदि ग्रंथों से; और अर्वाचीन काल के राजाओं का इतिहास वड़वाभाटों की पुस्तकों, परसी किताबों और समस्त राजस्थानों की ख्यातों से लिखागया है.

जैसे महाभारत में युधिष्ठिरादि पांडवों के इतिहास को मुख्य रख कर अन्य सर्व विषय दर्शाये गये हैं वैसे इस ग्रंथ में भी अग्निवंशी चहुवाण बुंदीनरेश्वर श्रीमान्-रामसिंहजी के इतिहास को मुख्य रख कर, अग्निवंशी चहुवाणों के इतिहास के उद्देश से उनके समकालीन राजपूताना के समग्र राजाओं का यथार्थ-इतिहास क्या भला और क्या बुरा प्रसंगवशात् लिखा है; और इतिहास के सिवाय षट्शास्त्र, वाराही संहिता, कामसूत्र आदि में से अति उपयोगी अश्व गज पुरुष आदि के लक्षण, वृक्षायुर्वेद, भूमितलगतजल विज्ञान, चतुःषष्टि कला आदि ऐसे २ अनेक व्यवहारोपयोगी विषय दर्शाये गये हैं. इस ग्रंथ के पढ़ने से इतिहास आदि का जानना तो मुख्य फल है ही, परन्तु उसके साथ अवांतर फल यह बड़ा भारी है कि इसका अभ्यास करने से स्वयं विद्वान् और उत्तम कवि बन सकता है. जो महाशय कविराजाजी श्रीमरारिदानजी निर्मित जसवंतजसोभूषण के अलंकारादिकों के उदाहरणों का भंडार एकत्रित ढूंढें तो इस ग्रंथ के सिवा और दूसरा कोई नहीं मिलेगा. जसवन्तजसाभूषण अलंकारादिकों का

परिज्ञान कराने के लिये एक ही ग्रंथ है, वैसे अलंकारादिकों के उदाहरणों का हिंदीभाषा में यह भी एक ही ग्रंथ है, सो जिन्होंने जसवंतजसोभूषण देखा है उनको यह ग्रंथ अवश्य देखना चाहिये.

इस ग्रंथ में अनेक भाषाओं के अनेक शब्दों का प्रयोग कियागया है जैसे कि माघ काव्य के विषय में लोकों का यह कथन है कि

"नवसर्गे गते माघे नवशब्दो न विद्यते ॥"

अर्थ– "माघ काव्य के नौ ९ सर्ग जाने पर फिर कोई नया शब्द शेष नहीं रहता ॥" वैसे इस ग्रंथ को पढने से संस्कृत, प्राकृत, ब्रजभाषा आदि का कोई शब्द अवशेष नहीं रहता, इसलिये इस ग्रंथ का गहन होना संभव है, परंतु श्रीमान् चारणकुलभूषण कृष्णसिंहजी ने टीका रचकर इसको सरल बनादिया है, जिससे हरएक मनुष्य इस ग्रंथ के आशय को भलीभांति समझ सकता है.

वास्तव में ग्रंथ उत्तम है परंतु इसका मुद्रित होना कठिन सा दिखाई देने लगा; क्योंकि ग्रंथ बहुत बड़ा है सो द्रव्य भी उतना ही चाहिये, और शोधन का श्रम भी ; परंतु जब परमदयालु परमेश्वर कृपा करते हैं तब सब सुलभ होजाता है. छापने के लिये यंत्रालय की आज्ञा तो मरुधराधीशों की ओर से, और छापने के व्यय के द्रव्य का प्रबंध मजिस्ट्रेट दर्जे अव्वल व जोधपुर दरबार की कौंसिल के मुख्य मेम्बर कविराजाजी श्री मुरारिदानजी साहिब की ओर से होगया ; इसके अतिरिक्त इस ग्रंथ में प्राकृत और संस्कृत के कठिन स्थलों में श्रीबुन्दीशाश्रित साहित्य के पारगामि कौंसिल के मेम्बर विद्वद्वर श्री गंगासहायजी ने, राज्य का और श्रीमद्भागवत की टीका निर्माण करना आदि शास्त्र संबंधी बहुत सा कार्य रहने पर भी पूर्ण सहायता दी .

अब हम परमेश्वर से वारंवार यह प्रार्थना करते है कि हमारे स्वामी मरुधराधीश राजराजेश्वर धीर वीर श्रीसरदारसिंहजी बहादुर, विद्या के कदरदान मुसाहिबआला जी.सी. ऐस्. आई., एल्. एल्. डी., सी. बी. इत्यादि पद विभूषित महाराजधिराज कर्नल सर श्रीप्रतापसिंहजी साहिब, गुणग्राहक कविराजाजी श्री मुरारिदानजी, विद्वद्वर पंडितजी श्रीगंगासहायजी और चारणकुलभूषण श्रीकृष्णसिंहजी सदा प्रसन्न और चिरजीवी रहैं.

जिन श्रीमानों ने प्रथम रुपये भेज कर वंशभास्कर के छापने में सहायता दी है, और जिन्होंने प्रथम ग्राहकश्रेणी में अपना नाम लिखकर उत्साह बढाया है उनके नाम नीचे लिख कर कोटिशः धन्यवाद देतेहुए ईश्वर से उनका सदा मंगल चाहते हैं.

पहले रुपये भेजनेवालों के नाम

संख्या	नामावली
२०	श्रीमान् कोटा नरेश्वर
२	श्रीमान् महारावळजी जैसलमेर
१	ठाकुर साहिब मनोहरसिंहजी सरदारगढ [उदैपुर]
२	ठाकुर सा० अमरसिंहजी गढी
१	ठाकुर साहिब अमरसिंहजी (उदैपुर)
१	बारहठ फतहसिंहजी (उदैपुर)
१	दधवाड़िया कँवरजी करणीदानजी
१	दधवाडिया जगमालजी (उदैपुर)
२	जमादार भानुजी गांव दांतो गुजरात
१	रावबहादुर श्यामसुन्दरलालजी (कृष्णगढ)
१	ठाकुरसा० लालसिंहजी (बीकानेर)
१	ठाकुरसा० बहादुरसिंहजी (बीदासर)
१	ठाकुरसा० रणजीतसिंहजी (ततारपुर)
१	ठाकुरसा० प्रल्हादसिंहजी (रूनीजा-मालवा)
१	ठाकुरसा० बिड़दसिंहजी चौहाण (अलवर)
२	ठाकुर सा० गंगासिंहजी सेनाध्यक्ष (अलवर)

संख्या	नामावली
१	बारठ शिवबगसजी
१	बारठ गंगाबगसजी
१	अचरोल ठाकुरसा० केसरीसिंहजी (जैपुर)
१	रामसली ठाकुरसा० भूरसिंघजी
१	करणसर ठा० सा० बहादुरसिंघजी
१	सादूलपुरा का खिड़िया परभुदानजी
१	नीपलास ठा० सा० रूपसिंघजी चांपावत
१	कँवर साहिब अमरसिंहजी चांपावत
२	धुवाळे ठा. सा० भोपालसिंहजी
१	प्रोहित अमेदजी [जैपुर]
१	बारठ रामलालजी (खेतड़ी)
१	ठाकुरसा० रणजीतसिंहजी राठोड़ (सैंसड़ा मारवाड़)
१	साह रंगराजजी (जोधपुर)
१	मुहता गणेशचंदजी (जोधपुर)
१	साह भभूतचंदजी (जोधपुर)
१	रावराजा रूपसिंहजी (जोधपुर)
१	कविराजा मुरारिदानजी (जोधपुर)
१	ऊजळ बेणीदानजी [जोधपुर]

प्रथम ग्राहकश्रेणी में नाम लिखानेवालों के नाम

संख्या	नामावली
०	श्रीमान् बुन्दी नरेश्वर
०	श्रीमान् झालावाड़ नरेश्वर
	ठाकुरसा० बगरू सावंतसिंहजी जैपुर
	बगरू कँवरजी प्रतापसिंहजी
	खूड़ी ठाकुरसा० उदैसिंहजी

संख्या	नामावली
१	मनोहरपुर के रावजी साहिब ।५॥
२	स्वामी मोतीरामजी भं
१	खंडेला का पाना छोट मनः ॥
१	गांव खेड़ीका पन

१ ठाकुर सा० स–ाईसिंहजी जोदका	१(रावबहादुर ठा० सा० मंगलसिंघजी (अलवर)
१ बलदेवजी कविया	१ ठा० सा० दुर्जनसिंह जी जावली
१ बारठ रामप्रतापजी	१ ठा० सा० कृष्णसिंहजी बीजवाडि
१ ठिकाना अरवै	१ चारण अमरूदानजी (बीकानेर)
१ ,, दांतै	१ रियासत खावर सिभुसिंघजी
१ ,, मंडाव अजीतसिंहजी	१ ठा० सा० अमरसिंहजी बोरखेडा केभाई [नरसिंघगढ]
१ ,, मलसीसर	१ ठा० सा० गोरधनसिंहजी गुणाहेडाभाला
१ ,, दूधू	१ कँवर सा० सत्रुसालजी लसूरड्याका
१ ,, खाचरीवास	१ ठा० सा० विनैसिंघजी रौसड़ीकेभाई
१ ,, खिवाड़	१ ठा० सा० अजीतसिंहजी मंडला का
१ ,, लवाण	१ रतनू रामनाथजी
१ ,, डांगरथल	१ सीकर रावराजाजी साहिब
१ ,, डिगी	२ बारहठ रामनाथजी (उदैपुर)
१ ,, दूणी	१ बारठ किशोरदानजी सो नत मारवाड़
१ ,, पाहाड़े	१ बगतावरसिंहजी बेड़ा ठाकुर साहिब के भाई (जोधपुर]
१ ,, पाडली	१ महादानजी वणसूर [जोधपुर)
१ ,, जोवनेर	१ ठिकाणा घाणेराव [मारवाड़]
१ ,, नींदड	१ ठिकाणा पोकरण
१ ,, बोलगढ स्योसिंघजी	१ रावराजा अमरसिंहजी [जोधपुर]
१ ,, वागाव स	१ खिड़िया चेलदानजी
१ ,, बणपांणे	१ लाळस नवलदानजी
१ ,, खेतडी	२ सिंघीजी बछराजजी
१ ,, खंडेला	१ वणसूर कृपारामजी
१ ,, मेंदवास	१ शाह हणवंतचंदजी
१ ,, हरसोली	१ पंडितजी लालचंद्रजी महाराज
१ ,, मोबतपुरै	१ भंडारी किसनमलजी
१ बारठ –योदानजी	१ भंडारी फोजचंदजी
१ बारठ हिंगलाजदानजी	२ ताल ओंकारसिंघजी
१ बारठ संजूदानजी	२ शाहपुराका दधवाडिया नाहरसिंहजी
१ बारठ स्योबगसजी	१ गांव देवरिया शाहपुरा मऊ भैरोंसानजी
१ बालावग गो–जी	१ सव.ल.शा.नि.णात स्वामीजी श्री बालारामजी उदासीन
१ थानसिंघजी –जी पालावत	
१ ठाकुरसा० के पतरोदा	
१ ठाकुरसा० महा नरसिंहजी	
१ ठाकुरसा० बचूणा ज्ञासिंहजी राणावत	
१ सांभर देवीसिंघजी बलवंतसिंहजी	

॥ श्रीः ॥

मुद्रणकर्तृनामधामादिकथनम्

श्रीमान् विद्यावितरणपटुर्दीर्घदर्शी विनीत
उद्यद्भास्वद्रुचिरसुमहाः शिक्षिनो वाजिवर्गे ॥
कार्याकार्येक्षणनिरतधीः स्फूर्तिमां तत्त्ववेत्ता
सर्दाराख्यो जयतु सुचिरं श्रीमरुक्ष्मापतीन्द्रः॥ १ ॥

धीरो वीरः प्रतापी विपुलतरमतिर्दिक्षु विख्यातकीर्ति
र्विद्विड्वर्गस्य जेता प्रबलतरजने दीनलोके समानः ॥
दुष्टानां दर्पहन्ता तरणिकुलभवः प्राप्तपूर्णप्रतिष्ठो
जीयादानन्दहेतुर्मरुधरणिनृणां भागधेयं प्रतापः ॥ १ ॥

चारणकुलावतंसः कविराजश्रीमुरारिदानाख्यः ॥
शरदः शतं स जीयान्मुद्रणकार्यं यदाश्रयात्सिद्धम् ॥१॥

परोपकारैकपरायणो यः सरस्वतीजानिरभूद्दधीचिः ॥
तदन्वयेऽभावि महोत्तमेन ज्योतिर्विदा श्रीरघुनाथनाम्ना ॥ १ ॥
तदात्मजः श्रीबलदेवनामा विद्वान्महान् भागवतैकनिष्ठः ॥
स्वधर्मपालोऽतिपरोपकारी विराजते योधपुरेऽतिरम्ये ॥ २ ॥
पतिव्रतामूर्धमणिर्वदान्या धर्मे रता दीनदयार्द्रचेताः ॥
शृङ्गाररूपा सदनस्य साक्षात्तद्धर्मपत्नी सिणगारनाम्नी ॥ ३ ॥
तयोः सुताः सन्ति पञ्च प्राणा इव सुसंमताः ॥
रामकर्णाभिधस्तेषां ज्येष्ठो हरिपदे रतः ॥ ४ ॥
श्रीमद्भारतभास्करेतिपदभाग्वेदान्तभट्टाञ्चिता
नानाकाव्यकलाकलापकुशलाः सद्धर्मसंस्थापकाः ॥
विद्यासिन्धुसुधांशवोऽतिकरुणाः श्रीगट्टुलालाभिधा-
स्तत्पादाम्बुरुहेषु यस्य सततं चेतो मिलिन्दायते ॥५॥
तेनायं खलु मुद्रयते सविवृतिः श्रीवंशसूर्याभिधः
साहाय्येन यवीयसोऽतिविदुषः श्यामस्य भव्यात्मनः ॥

शिष्टाग्रे सरसं समर्प्यत इतश्चाशास्यते सादरं
सानन्दं कवितासुधैकरसिकाः पश्यन्तु चेतोहरम् ॥६॥
रसशरनवचन्द्रेऽब्दे मार्गे मासेऽसिते दलेष्टम्याम् ॥
पूर्णः प्रथमो भागो योधपुरे स्वप्रतापसुप्रेसे ॥७॥

सटीक वंशभास्कर के मूल्य का नियम

(१)प्रथम रुपये भेजनेवालों को रु० २५) कलदार में समग्र ग्रंथ खंडशः ज्यों ज्यों छपता जायगा त्यों त्यों भेजा जायगा.

(२)केवल प्रथम ग्राहकश्रेणी में नाम लिखानेवालों को रु० ३०)कलदार में समग्र ग्रंथ संपूर्ण छपजाने पर भेजाजायगा.

(३)ग्रंथ संपूर्ण छपजाने पर रु० ४०) कलदार में मिलेगा.

डाकव्यय अलग देना होगा.

विशेष सूचना

जिन श्रीमानों ने मूल्य के रुपये भेजदिये हैं उनको ज्यों ज्यों वंशभास्कर के खंड छपतेजांयगे त्यों त्यों जिल्द बंधा कर अलग२भेज दिये जांयगे, इस लिये अब भी जो रसिकजन हालके (संवत्१९५६) के फाल्गुन सुदी पूर्णिमा तक रुपये२५) कविराजाजी श्रीमुरारिदानजी साहिब के पास जमा करादेंगे उनको रु० २५) में भेजदिया जायगा. और खंडभी ज्यों ज्यों छपते रहेंगे त्यों त्यों जिल्द बंधा कर अलग अलग भेज दिये जांयगे. इसलिये प्रथम ग्राहक श्रेणी में नाम लिखाने वालों से निवेदन है कि उपरोक्त अवधि तक रुपये भेज कर इस कार्यसिद्धि में सहायता प्रदान करें. इस ग्रंथ के छपने का निर्भर गुणग्राहकता से प्रथमग्राहक बन प्रथम रुपये भेजनेवाले और सब प्रकार से पूर्ण सहायता देनेवाले विद्या के कदरदान श्रीकविराजाजी साहिब पर ही है.

जो महाशय उपरोक्त समय तक रुपये जमा न करा देंगे उनको ग्रंथ की प्राप्ति बिलम्ब से होगी, अर्थात् ग्रंथ छपजाने तक इस ग्रंथ के कवितामृत से वंचित रहना पड़ेगा और मूल्य भी अधिक लगेगा,इसलिये फाल्गुन सुदी पूर्णिमा तक की अवधि देकर सूचित कियाजाता है सो इस अवसर को न चूकें

यद्यपि हमने विज्ञापन में लिखा था कि समग्र ग्रंथ की जिल्दें ४ बंधाईजांयगीं परंतु कार्य का आरंभ ही था इसलिये पहली जिल्द छपने में विशेष विलम्ब हुआ और ग्राहकों के ग्रंथ देखने की अति त्वरा आई, जिससे प्रथम भाग अर्थात्१-२-३राशि को दो२जिल्दों में बांधना विचार दो राशि तो अभी आप की सेवा में भेजी हैं; और तृतीय राशि अलग बंधाकर पीछे से भेजी जायगी.

॥ श्रीः ॥

श्रीवंशभास्करटीकायाः पूर्वपीठिका ॥

उस सर्वाधार सर्वशक्तिमान् कलाकुशल परमेश्वर के नियमानुसार इस पृथ्वी का भी परिवर्तन धर्म होगया है, कि एक बढीहुई वस्तु को घटाता है और घटीहुई वस्तु को बढाता है, जिसके अनेकानेक उदाहरण हैं, उनको दिखाकर हम इस पीठिका को बढाना नहीं चाहते विद्वान् लोग स्वयं सोचलेंगे. इस विषय में महाराजा भर्तृहरि ने भी लिखा है—

स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ।
परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ॥

अर्थ—उसीका होना होना है जिसके जन्म से वंश की उन्नति होवे; नहीं तौ परिवर्तन धर्मवाले इस संसार में कौन नहीं मरता और कौन नहीं जन्मता ॥ तौ इससे भी सिद्ध है, कि इस संसार का परिवर्तन ही धर्म है. इसके अनुसार वस्तुमात्र का परिवर्तन होता है. जिनमें संस्कृतकविता और भाषाकविता का भी परिवर्तन जान लेना चाहिये. इनमें संस्कृतकविता का जन्म श्रीरामचन्द्र के समय में वाल्मीकि मुनि से हुआ; जब से लेकर भोज महाराज के समय तक उन्नति ही जानना चाहिये. जिसमें महाभारतादि जैसे ग्रंथों ने प्रकाश पाया है, परंतु भोज से लेकर इस समय तक संस्कृतकविता ने अवनति ही प्राप्त की है, और क्रमशः अधोगतिको प्राप्त होतीजाती है. इसीप्रकार भाषाकविता ने भी भाषा के कवियों से जन्म पाया है, जिसका समय निर्णय करने में तौ हम विशेष समय खोना नहीं चाहते, परंतु दिल्ली के बादशाह अकबर के समय से भाषाकविता की उन्नति पाईजाती है, जिसमें गोस्वामी तुलसीदास और केशवदास आदि कवियों ने भाषाकविता को सजीवित किया है, परंतु उनसे शुद्ध शब्दों का और शुद्ध छंदों का निर्वाह नहीं हुआ सो उनके बनायेहुए ग्रंथ विद्यमान हैं. जिनको देखने से हमारा लिखना सिद्ध होसकता है. और पिछले समय में बिहारीदास कवि हुआ, जिसके लिये लौकिक में यह प्रसिद्ध होगया कि "दोहरो बिहारीको सिहारीको सो मंत्र है" परंतु यह कहावत अयोग्य है, क्योंकि बिहारी ने सब छंदों को छोड कर एक दोहा छंद बनाया, जिसके भी लक्ष्यलक्षण का निर्वाह नहीं हुआ; और उसके शब्द तौ अनेक अशुद्ध हैं, केवल अर्थ विषय में तुलसीदास केशव और बिहारी

आदि — ये प्रशंसनीय हैं, परंतु एक बात के जानने से पूर्ण कवि नहीं होसकता बाकी अन्य कवियों की कुछ गणना ही नहीं है, जिनकी निंदा ग्रंथकार (सूर्यमल्ल) ने प्रथम राशि के दूसरे मयूख के आदि में स्पष्ट रीति से करदी है, इसकारण से हम विशेष लिखना नहीं चाहते.

अब हम मुक्तकंठ होकर कहते हैं कि गीर्वाण आदि छःहों भाषाओं के व्याकरण जानने के कारण और पूर्ण विद्वान् होने के हेतु वंशभास्कर नाम क ग्रंथ में ग्रंथकार (सूर्यमल्ल) ने लोकभाषा के काव्य को पूर्णोन्नति पर प हुँचादिया है, जिसके आगे लोकभाषा का प्राचीन ग्रंथ कोई आदर नहीं पा सकता, और आगे के लिये भी यही कह सकते हैं, कि यहां तक लौकिक भाषा के काव्य की पूर्णोन्नति होकर आगे अधोगति होवेगी, जैसाकि संसार का उपरोक्त परिवर्तन धर्म है, परंतु—

उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोपि समानधर्मा कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥

अर्थ-मेरे समान धर्मवाला भी कोई उत्पन्न होवेगा, अथवा है, क्योंकि स मय की तौ कोई अवधि नहीं, और पृथ्वी बड़ी है॥ इस सिद्धांत के अनुसार फिर भी सूर्यमल्ल के समान कोई कवि होवे तौ आश्चर्य नहीं, परंतु अद्या वधि तो लोकभाषा के काव्यो में सर्वोपरि यही वंशभास्कर ग्रंथ मानाजाने में को ई संदेह नहीं है. और इस ग्रंथ के जिज्ञासु (समझने की इच्छा रखने वाले) लोगों की भी राजपूताना में कमी नहीं है. परंतु यह ग्रंथ अनेक भाषाओं से पूर्ण विद्वान् का रचाहुआ है, और बहुत कठिन शब्दों के प्रयोग किये गये हैं, इसकारण इसको समझलेना भी सुगम नहीं है, अतएव हमारे पूर्णमित्र चारण रामना थ रतनू आदि कई मित्रों ने प्रेरणा वा अनुरोध किया, कि इस ग्रंथ की सरल टीका बनादीजाय तौ बडाही लोकोपकार होकर आपका नाम चिर स्थायी रहेगा. तब हम ने भी इस कठिन कार्य को हाथ में लिया. इस कार्य में जिन २ विद्वानों ने सहायता दी उनके नाम सादर नीचे लिखेजाते हैं.

१ बूंदी की कौंसिल के मेम्बर और पूर्ण पंडित, पण्डित गंगासहाय शर्मा, जिन्होंने जोधपुर के कविराजा मुरारिदान द्वारा प्राकृत भाषा की टी का में अमूल्य सहायता दी, जिनके हम अत्यंत आभारी हैं.

२ प्राकृत के कितने ही श्लोकों के अर्थ में हमारे मित्र चारण रामनाथ रतनू के द्वारा जयपुर के पंडित नानूलाल शर्मा ने भी सहायता दी, जिनका भी धन्यवाद करते हैं.

३ हमारे मित्र शाहपुरा के राज्यगुरु पंडित यमुनादत्त शर्मा ने शुद्ध गीर्वाण भाषा में मुझको ? अमूल्य सहायता दी, उनका मैं पूर्ण आभारी हूं.

४ ज्योतिष के प्रकरण में जोधपुर के पंडित अमृतलाल शर्मा, जो कल्ल शिवदत्त शर्मा के पास रहते हैं उनकी सहायता प्रशंसनीय है, जिनको मैं

शतशः धन्यवाद देता हूं.

(५) कितने ही गीर्वाणभाषा के संदेहों में, और इस ग्रंथ को शुद्ध करके सटीक छापने में जोधपुर के पंडित रामकर्ण शर्मा ने प्रशंसनीय सहायता दी, जिनका मैं आभारी हूं.

(६) मेरे मित्र चारण उज्वल फतहकर्ण ने कई स्थलों में कई शब्दों के अर्थ बताये, जिनका सादर धन्यवाद कियाजाता है.

इस प्रकार सहायता मिलने पर हमने इस ग्रंथ की टीका रचने का कार्य किया है. यह ग्रंथ काव्यों में कितना उपयोगी है और इतिहास में कितना उपयोगी है, सो काव्य विषय में तो हम ऊपर लिख आये हैं, कि लौकिक कविता में यह ग्रंथ अलौकिक है; और बडे बडे कवियों का भी गुरु है, यहां तक कि इस ग्रंथ की शैली को याद करके अनर्गल पूर्ण कवि होसकता है. और इतिहास विषय में यदि हमारा शरीर नीरुज और विद्यमान रहा तो पूर्णरीति से तो उत्तर पीठिका में लिखेंगे, परंतु साधारण रीति से यहां भी लिखदेते हैं, कि ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल ने ऐतिहासिक विषय कई जगह से लिया है, उसमें जो इतिहास उस समय के बनेहुए काव्य नाटक भाण चंपू आदि से लिया है, वह सब सत्य है, और जितना इतिहास बड़वाभाटों (वंशावली लिखनेवाले भाटों) की पुस्तकों से लिया है वह पंद्रहवीं १५ शताब्दी के पहिले का तो असत्य है; क्योंकि बड़वाभाटों की वंशावली लिखने की शैली का पंद्रहवीं शताब्दीसे सामान्यतः प्रारंभ हुआ है, और इससे पहिले किसी विशेष भाट ने कुछ लिखा भी तो उसकी पूर्वापर शैली मिलाने और अपनी पुस्तकों को प्रतिष्ठित बनानेके लिये पिछले भाटोंने कल्पित नाम और कल्पित इतिहास लिखदिया है, सो मानने योग्य नहीं है; जैसे अग्निवंशी चारों क्षत्रियों की पीढियां शृंखलाबद्ध दो दो सौ से ऊपर लिखी हैं सो ये किसी इतिहासवेत्ता के मानने योग्य नहीं हैं, क्योंकि हमारे मामा कविराजा श्यामलदास ने हमारे सामने बापा रावल से लेकर वर्तमान महाराणा फतहसिंह पर्यंत पाषाणलेखों (प्रशस्तियों) से पीढियों का निर्णय किया, जिसमें भी अनुमान ११५० वर्ष में बडवाभाटों के लिखेहुए अनेक नाम कल्पित निकले तो जानना चाहिये, कि द्वापर युग से लेकर इस समय तक के २०० नाम कब सही मिल सकते हैं, परंतु ग्रंथकर्ता ने कई नाम तो पुराणों और नाटकादि से लिये सो तो सत्य हैं और कई बडवाभाटों की पुस्तकों से लेकर चारों अग्निवंशजों की शृंखलाबद्ध पीढियां लिखीं हैं सो सभी विश्वास करने योग्य नहीं हैं, परंतु अब इसके सत्यासत्य का निर्णय करना सुगम नहीं है, सो हमने दिग्दर्शन न्यायानुकूल यहां थोड़ासा लिखदिया है.

(१) प्रथम राशि में मंगलाचरण, ग्रंथकर्ता के नियम तथा ज्योतिष का प्रक

रण ता आदरणीय है, परंतु बहुवाणों का संक्षिप्त वर्णन और पुराणों को अनुकूल खगोल और भूगोल का वृत्तांत तथा फलादेश लिखा है, वह आधुनिक विद्वानों के मानने योग्य नहीं है, जिसके लिये विशेष लिखना व्यर्थ है.

(२)द्वितीयराशि में ऋषियों का मत बताया है वह ग्रन्थकर्ता के विद्याबल को सूचित करता है, और उसमें ज्योतिष प्रकरण सिद्धांतशिरोमणि के अनुकूल है सो आदरणीय है. इसके उपरांत अग्निवंशियों का वंशवर्णन किया है सो संतोषदायक नहीं है, क्योंकि उनकी पीढियां बडवाभाटों की पुस्तकों से लिखीगई हैं. उनके बीच में कहीं २ काव्य नाटक आदि से भी इतिहास लिखागया है, परंतु उसका छानना दुर्घट है.

(३)तृतीय राशि का इतिहास पुराणों से लियागया है जिसमें हस्ताक्षेप करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि पुराणों को धर्मग्रंथ मानने में अपनी २ श्रद्धा है, परंतु उनको भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास मानना ही पड़ेगा; जैसे रामचन्द्र को ईश्वर का अवतार चाहे मानें चाहे न मानें, परंतु वे वन में गये, सीता का हरण हुआ और रावण को मार कर सीता को लेकर अयोध्या में पीछे आये यह पुराणों का इतिहास है सो मानना ही पड़ता है. इसी प्रकार श्रीकृष्णादिक का भी समझ लो. इसके उपरांत ग्रंथकर्ता(सूर्यमल्ल)ने तृतीय राशि में लिखदिया है, कि सातवाहन के चरित्र से लेकर वल्लभाचार्य के चरित्र तक हमने प्राचीन पंडितों के लिखनानुसार लिखदिया है, परंतु इसमें असंभव वृत्तांत होवे वह मानने योग्य नहीं है.

(४)चतुर्थ राशि में विक्रम का इतिहास लिखा है, उसमें आधुनिक विद्वानों को बहुत संदेह है, जिसका सविस्तर वृत्तांत लिख सकेंगे तो उत्तरपीठिका में लिखेंगे. और भोज का चरित्र भोजप्रबंध ग्रंथ से लियागया है, परंतु आधुनिक विद्वान् भोजप्रबंध को भोज से बहुत समय पीछे बना हुआ कल्पित मानते हैं. आगे पृथ्वीराजरासा का इतिहास लियागया है जिसकेलिये ग्रंथकर्ता ने स्वयं लिखदिया है कि यह इतिहास झूठा है.

(५)पंचम राशि का इतिहास कुछ तो बड़वाभाटों की पुस्तकों से, और कुछ दिल्ली के ऐतिहासिक प्राचीन फारसी पुस्तकों से, तथा कुछ बुंदी की ख्याति से लियागया है, सो कुछ तो बुंदी के बढाव के साथ है, और कुछ मिथ्या सत्य-संमिलित है, और कितने ही संवतों में फर्क है, सो जो कुछ हम को मालूम होवेगा वह दुरुस्त करके लिख देंगे.

(६)इसीप्रकार छठे राशि में भी संवतों का और वृत्तांतों का फर्क है, उसे भी टीका में स्थल स्थल पर दिखा देंगे.

(७)सप्तम राशि में समीप का इतिहास होने से, और राजपूताना के राज्यों से ऐतिहासिक लेख मँगा लेने के कारण भूलें बहुत कम हैं, और इ

स समय के बड़वाभाटों के लेख भी कुछ सत्य मिलते हैं, परंतु सप्तम राशि में ही ग्रंथकर्ता लिख गये हैं कि जहां हम को पूर्ण निश्चय हुआ वहां तो सम्वत् लिख दिये हैं, बाकी वृत्तांत पूर्वापर का अनुसन्धान न होने स जहां जो याद आया वहां वैसा लिखदिया है, सो जहां जिसका संभव होवे वहां वैसा जान लेना.

(८) अष्टम राशि मेंग्रंथकर्त्ता ने बुंदी के दफ़्तर से और बड़वाभाटों की पुस्तकों से बहुत छान बीन के साथ लिखा है, जिसमें सदेह नहीं प्रतीत होता केवल उदयपुर के महारांना अरिसिंह के मारेजाने के कारण दिखाने में मेवाड़ के इतिहासवेत्ताओं का मत भेद है, सो हम उसी स्थान पर दिखावेंगे.

हमको इस ग्रंथ के इतिहास में न्यूनाधिक भेद ज्ञात हुआ जिसका मूल में कुछ हस्तक्षेप न करके केवल टीका में दिखादेंगे. जैसे ग्रंथकर्ता ने " पृथ्वी राजरासा" नामक ग्रंथ का जगह २ मिथ्यापन दिखाकर, संवत् उसी ग्रंथ का मान लिया सो अनुचित है; क्योंकि उससे इतिहासवेत्ताओं को भ्रम और ग्रन्थकर्त्ता (सूर्यमल्ल) को मिथ्यात्व का कलंक लगता है, सो यथा शक्ति टीका में मिटातेजावेंगे.

हम मुक्तकण्ठ होकर लिखते हैं, कि राजपूताना की किसी रयासत के यश-सूचक इतिहास में कहीं कमी रहगई होवे तो संभव है, परंतु भूत और वर्तमान राजाओं का क्या भला और क्या बुरा सत्य इतिहास लिखन में त्रुटि मात्र भी त्रुटि नहीं की है, यहां तक कि सम्पूर्ण राजपूताना का स्तुति-निंदा-सूचक सत्य इतिहास देखना चाहें तो इस ग्रन्थ में सर्वत्र मिल सकता है.

हम शपथ पूर्वक कह सकते हैं, कि ऐसा सत्यवक्ता इतिहासवेत्ता अद्यावधि कोई नहीं हुआ, और अब होना भी कठिन है; क्योंकि सब इतिहासकर्ताओं को लाभ की लालसा रहती है जिससे निंदनीय प्रकरण को छोड देते हैं, परंतु सूर्यमल्ल ने सत्य के पक्ष का अवलम्बन करके लोभ पर दृष्टि नहीं दी, यहां तक कि सच्ची निन्दा तो अपने स्वामी वंश की भी लिख दी. और कहीं ग्रन्थकर्त्ता ने झूठा इतिहास भी लिख दिया है, जिसमें उनका दोष नहीं है; क्योंकि वहां उनको वैसी ही सामग्री मिली. उत्तम कवियों का नियम है कि वे किसी लाभ के लोभ से झूठा इतिहास नहीं लिखते और इन का भी यही नियम था. यद्यपि इस ग्रंथ की समाप्ति पर ग्रंथकर्ता को कुछ साधारण प्राप्ति की आशा नहीं थी, परन्तु उस बड़े भारी लोभ को तुच्छ समझ कर अपने प्रण को निभाने के लिये इस ग्रंथ का निर्माण करना ही छोड दिया. जिस पीछें अनुमान ८–१० वर्ष तक नैरोग्यता के साथ जीवित रहे, परन्तु इस ग्रन्थ की ओर फिर रुचि नहीं की. ग्रन्थकर्ता का प्रथम राशि में नियम है कि आठ राशियों में इतिहास का वर्णन करके फिर कविवंशवर्णन

करूंगा; और उसके पीछे चार राशियों में धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों ही पुरुषार्थ लिखूंगा सो वह न हुआ.

ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) बहुत ही स्वतंत्र प्रकृति के पुरुष थे, जिनका स्वयं राव राजा रामसिंह और उनके प्रधान पुरुष बहुत ही आदर रखते थे, जिनका शृंखलाबद्ध जीवनचरित्र मैंने बुंदी से मँगवाया था, परंतु बुंदी की कौंसिल के मेम्बर पण्डित गंगासहाय ने उत्तर में लिखा कि "सूर्यमल्लजी का जीवनचरित्र लिखाहुआ तौ है नहीं, और उनको मरे तीस वर्ष हुए, उनके समय के मनुष्य विद्यमान न रहने से शृंखलाबद्ध जीवनचरित्र नहीं मिलसकता." इससे यहां जीवनचरित्र नहीं लिखागया सो पाठक लोग इस क्षति को क्षमा करेंगे. यदि सावकाश मिला तौ उत्तरपीठिका में हम को याद है उतना सा बिना शृंखलाबद्ध लिखेंगे; क्योंकि हम भी इनके समय में युवावस्था को प्राप्त होचुके थे, अतएव उनकी कितनी ही बातें हमें भी याद हैं. और हम यह भी जानते हैं कि ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) ने यह (वंशभास्कर) ग्रंथ बहुधा मद्य पीकर ही बनाया है; क्योंकि वे दिन में और रात्रि में दोनों समय मद्य पीते थे और जब कभी महाराव राजा रामसिंह उनको सलाह में बुलाते तब भी मद्य पीकर ही जाते थे, परंतु वे मद्य का नशा ज्यादा कभी नहीं करते थे, प्रतिभा शक्ति को बढाने के लिये औषधवत् थोडासा मद्य पीलिया करते थे, जिसका एक उदाहरण नीचे दियाजाता है. जब रतलाम के महाराजा बलवंतसिंह का देहांत हुआ, उसकी खबर ग्रंथकर्ता को बुंदी में अपने स्थान पर ही मिली तब सूर्यमल्ल ने कहा कि "बलवंतसिंह जैसे वदान्य और गुणग्राहक राजा को घर पर ही जलांजलि देना उचित नहीं, किंतु तालाब पर चल कर जलांजलि देना चाहिये " इस पर साथ के परिकर सहित बुंदी के तालाब पर गये और जलांजलि देने का समय आया तब कहा कि "ऐसे राजा को बिना कविता किये ही जलांजलि देना उचित नहीं, और मद्य पिये बिना अच्छी कविता नहीं होसकती" ऐसा कहकर 'हरल्या' नामक चाकर को अपने निवासस्थान पर भेज कर मद्य मँगवाया, और उस शोक में भी दो तीन प्याले मद्य के लेकर मनहर जाति के निम्न लिखित दो छंद नवीन बना कर जलांजलि दी.

मनहरम्

काव्यमनि वारिधि विपत्ति के में बूडे सब,
बिन अवलंब गुन गौरव गह्यो नहीं ।
पवन प्रलैके दीप दीपित दह्यो जो देह,
चित्त हू लह्यो जो दुःख कबहू चह्यो नहीं ॥
रत्नपुरराज बलवंत के त्रिदिव जात,

समन सुशीलनपैं जावन सह्यो नहीं ।
आज अवनीपैं अविरूपनके आलय में,
मालव मिहिर विन मालव रह्यो नहीं ॥ १ ॥
ग्रस्त द्व दारिद में अस्त भो बुधन बृंद,
अस्त भो प्रकाश हाहा! द्वादश रविनको ।
काव्यमय रत्न हाहा! ठां ठां भये कंकरसे,
हाहा पुहवीमें भयो पात सु पविनको ॥
रत्नपुरराज बलवंतके त्रिदिव जात,
स्वांन संग हाहा! भो हुताशन हविनको ।
रत्नाकर फूटो हाय! ग्रंथनिधि लूटो हाय!,
कल्पतरु टूटो हाय! कामद कविनको ॥ २ ॥

इससे पाठक लोग ग्रंथकर्ता के मद्य पीनेका हाल समझ सकते हैं, कि ऐसे शोक के अवसर पर भी मद्य पीकर कविता बनाई, तो सामान्य समय का कहना ही क्या है.

टीका के नियम

(१) टीकाकार के मित्र अमृतलाल ज्योतिषी का सिद्धांत है, कि किसी ग्रंथ का खंडन करके अपना पांडित्य दिखानेवाले अनेक विद्वान् हैं, और होते हैं, परंतु किसी प्राचीन ग्रंथ का मंडन करके विद्वत्ता दिखानेवाले विद्वान् इस समय में कम ही होते हैं अतएव हम भी इस ग्रंथ का खण्डन नहीं करते. किन्तु "वंशभास्कर" में जहां तहां इतिहास सम्बन्धी त्रुतियां दिखाई देती हैं उनको टीका में सुधार कर अथवा उत्तर पीठिका में भी सुधार कर "वंशभास्कर" का मण्डन ही करेंगे.

(२) जहांपर व्यंग्य अथवा रूपक अलंकार आदि कठिन स्थल आजावेंगे तहां सविस्तर टीका करके उस आशय को खोल देवेंगे. परंतु जहां सुगम प्रकरण है तहां केवल टिप्पणी ही करेंगे. और कठिन शब्द के ऊपर अंक देकर वही अंक नीचे देकर स्पष्टार्थ लिखदेंगे.

(३) ग्रंथकर्ता ने इस ग्रंथ में अपभ्रंशभाषा के अनुसार विभक्तियों का लोप करदिया है, जिनका अर्थ सर्व साधारण के समझने के लिये विभक्तियों का अर्थ खोलके दिखादेंगे.

(४) बहुधा स्थलों में ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) ने शब्दों के व नामों के आगे अंक लिख दिये हैं वही उनका अर्थ है. इसलिये उन शब्दों का अर्थ हम कुछ नहीं लिखेंगे; क्योंकि उन शब्दों का वह अंक ही अर्थ है. जैसे मुनि का अर्थ ७ सात है और सात का अंक मुनि शब्द के आगे कियाहुआ है तो वही उसका अर्थ है. फिर टीका का वृथा विस्तार करने से कोई लाभ नहीं. इस प्रक-

रण को विशेष देखना होतौ नाममाला नामक कोष में और वृत्तरत्नाकर की छंदवृत्ति में देखलें. और संख्या के व पीढियों आदि के नाम पर जो अंक दिये हैं उनकेलिये प्रथम राशि में स्वयं ग्रंथकर्ता ने ही लिखदिया है, इसलिये उनका हम कुछ अर्थ नहीं लिखेंगे.

(५) इस ग्रंथ की टीका में शब्दों के अर्थ में टीका के बाहुल्य के भय से कोषों का प्रमाण नहीं लिखाजावेगा, परन्तु जिनको जिस शब्द के अर्थ में संदेह होवे वे, मदिनी १ एकाक्षरी २ द्विरूपकोष ४ त्रिकांडशेष ५ अनेकार्थध्वनिमंजरी ६ हारावली ७ धनंजय ८ नाममाला ९ वररुचि १० मातृका ११ अव्यय १२ हेमचंद्र (हेमाचार्यकृत)१३ अनेकार्थनाममाला १४ विश्वकोष १५ हलायुध १६ पंचतत्वप्रकाश १७ अमरकोष १८ इन अठारह कोषों में देखलें. अथवा इन सब कोशों से संगृहीत शब्दार्थचिन्तामणि नामक कोष में देखलेवें. बहुधा अप्रसिद्ध शब्दों के लिये कोषका प्रमाण भी देदियाजावेगा; और प्राकृतादि भाषाओं के लिये शुद्ध शब्द तौ संस्कृत से बनते हैं जिनके प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं, परन्तु देशीप्राकृत के शब्द जो रूढि से प्रचलित हैं उन शब्दों के अर्थ का प्रमाण हेमाचार्यकृत देशीनाममाला नामक प्राकृत कोष में देखलेवें. बाकी कितने ही लोकभाषा के अथवा अनेकार्थ शब्दों के अर्थ प्रकरणवशात् कियेजायंगे. जिसकेलिये मुक्तावलीकार ने लिखा है—

" शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानकोषाप्तवाक्याद्व्यवहारतश्च ।
वाक्यस्य शेषाद्विवृतेर्वदन्ति सांनिध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः ॥ "

अर्थ—शक्तिग्रह अर्थात् शब्दज्ञान निम्न लिखित बातों से होता है. १व्याकरण से. २ उपमा देने से. ३ कोष से. ४आप्तवाक्य (बडे लोगों के कथन) से. ५व्यवहार से. ६ थोडेसे शब्द के कहने से बाकीके पद का ज्ञान होना. ७व्याख्या करने से (वस्तु का नाम तौ न लेवे और उसके सदृश अर्थ करने से). ८ सिद्धपद के नजदीक होने से. इन आठ बातों से वृद्धों ने शक्तिग्रह (शब्दज्ञान) होना कहा है. इसीके अनुकूल हमने भी किया है, सो इस प्रकरण को विशेष देखना होतौ राजराजेश्वरी यंत्रालय काशी में छपेहुए मुक्तावलीग्रंथ के ३७० वें पृष्ठ में देखें.

(६) हमको इस ग्रंथ (वंशभास्कर) का भावार्थ दिखादेना ही अभीष्ट है; क्योंकि इसमें अनेकानेक इतिहास और अनेक विद्या विषय भरेहुए हैं, जिनका भावार्थ जानलेना ही फलितार्थ है, इसलिये अन्य टीकाकारों के समान शब्दसिद्धि में अपनी पंडिताई दिखाकर समय खोना नहीं चाहते, यदि किसी शब्द का अर्थ नहीं आया तौ अंक देकर ब्रेकेट में उसके अर्थ की जगह खाली छोडे देंगे, कि जिससे विद्वानों को भ्रम न होवे, परंतु अन्य टीकाकारों के समान "इतिस्पष्टम्" करके नहीं छोडेंगे.

[७] हमको ग्रंथकर्ता का अभिप्राय दिखादेना ही अभीष्ट है, और भावार्थ दिखादेना ही टीका का फल है, नहीं तो शब्दसिद्धि तो पाणिनीयादि ग्रंथों में भरी पड़ी है, इसकेलिये बड़े सामुद्रिक ग्रंथ में लिखा भी है—

परहृदयाभिप्रायं परगदितार्थस्य वेत्ति यः सत्त्वम्।
सत्त्वं भुवने दुर्लभसंभूतिः सुकविरेकः॥

अर्थ—जो दूसरे के अभिप्राय को और दूसरे के कहेहुए अर्थ के सार को समझलेता है वहीएक सुकवि है, जो दुर्लभ जन्मवाला होने से लोक में सत्त्व रूप है.

[८]हमारे मित्रों ने इस बात की प्रेरणा भी की कि टीका की भाषा उत्तम देवनागरी में ही होनी चाहिये, यह उनका कथन आदरणीय था, और मित्रों का उत्तम कथन मानना सज्जनों का धर्म है, तथापि हम यह टीका अन्य विद्वानों के लिये और केवल हमारे मित्रों के लिये ही नहीं रचते, किंतु संसार के सर्व साधारण मनुष्यों को समझाने के लिये यह परोपकारकारक परिश्रम करते हैं, जिसमें टीका की भाषा को कठिन करना उचित नहीं समझ कर उसमें कहीं २ प्रचलित और उर्दू आदि देशभाषा के शब्द भी लिखे हैं, जिसकेलिये वात्स्यायन प्रणीत कामसूत्र में भी लिखा है—

"नात्यन्तं संस्कृतं चैव नात्यन्तं देशभाषया।
कथां गोष्ठीषु कथयँल्लोके बहुमतो भवेत्॥"

अर्थ—"विशेष संस्कृत भी नहीं और विशेष देशभाषा भी नहीं ऐसी कथा को सभा में कहताहुआ लोक में माननीय होता है॥" इस आशय को लेकर हमने भी इस ग्रंथ की टीका में क्वचित् मिश्रित भाषा लिखी है, सो अन्य विद्वान् लोग और हमारे मित्र लोग उपरोक्त कथन के अनुसार क्षमा करेंगे.

[९]'श्रेयांसि बहुविघ्नानि.'अर्थात् श्रेष्ठ कामों में विघ्न बहुत होते हैं, इसी कारण से हमने भी इस ग्रंथ की टीका रचने में बहुत ही शीघ्रता की है सो शब्दार्थ में कहीं क्षति रहगई होवे तो सज्जनगण क्षमा करें.

[१०]ग्रंथकर्ता का नियम था कि आठ राशियों में इतिहास का वर्णन कर के बाकी चार राशियों में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये चारों कहूंगा (देखो प्रथम राशि-मयूख १३छंद८–१० इस क्रम से ग्रंथकर्ता से आठ राशि भी पूर नहीं बने, जिनको बुन्दीवालों ने बारह राशियों में विभक्त करके बारह राशि बनादिये, अर्थात् छः राशि तक तो बराबर क्रम जैसा ग्रंथकर्ता ने रक्खा था वैसा रक्खा, और ग्रंथकर्ता का देहांत होने के पश्चात् सप्तम राशि के चार टुकड़े करदिये, अर्थात् 'शत्रुसाल' के देहांत तक सातवाँ राशि रक्खा; भावसिंहचरित्र' और 'अनिरुद्धसिंहचरित्र' को आठवाँ राशि बनादिया; इसके पीछे 'बुधसिंहचरित्र' को नवम राशि करके, 'उम्मेदसिंहचरित्र' को दशम राशि करदिया. फिर आगे चल कर ग्रंथकर्ता के नियमानुसार 'अजित

सिंहचरित्र, विष्णुसिंहचरित्र और रामसिंहचरित्र' इनको आठवें राशि में ही रख कर ग्रंथ की समाप्ति की. इसवास्ते हम कल्पित अष्टम, नवम, दशम इन तीन राशियों को उड़ा कर ग्रंथकर्ता के नियमानुसार पीछा सप्तम राशि ही रक्खेंगे. और 'अजितसिंहचरित्र, विष्णुसिंहचरित्र और रामसिंहचरित्र' याथातथ्य रक्खेंगे.

[११]इस ग्रंथ में अनेक भाषाओं के शब्द होने के अतिरिक्त जहां तहां युद्ध का प्रकरण आया है, वहां अनेक वस्तुओं के अनुकरण के शब्द आये हैं. यथा "कराक्किय, खराक्किय, घुरक्किय, चटक्किय, लटक्किय, सटक्किय, झनंकिय, भनंकिय, ठनंकिय, रनंकिय, भटक्किय, फटक्किय, झननंकिय सननंकिय, भननंकिय, गणणंकिय, टणणंकिय, सणणंकिय, हननंकिय" इत्यादि अनेक नाम आये हैं सो उसी शब्द का अनुकरण (नकल) समझना चाहिये. यथा- "झरैं असि झल्लरिलों झनकारि" यहां झनकार अर्थ झल्लरी का अनुकरण है, जिसका अर्थ करैं तौभी "झालरी के समान झणकार हुआ" यह होता है, सो ऐसा अर्थ करना केवल टीका के बाहुल्य का हेतु है सो यह हम नहीं करेंगे विद्वान् लोग आप समझ लेवें.

[१२] ग्रंथकर्ता ने इस ग्रंथ में नियम रक्खा है कि मयूख की इतिश्री में मयूख की कथा का सूचीपत्र संस्कृत में लिखदिया है. इस क्रम का आदि से लेकर पंचम राशि तक बराबर निर्वाह किया है, परंतु पंचम राशि से आगे छठे राशि में प्रथम, और सप्तम राशि में एक 'उम्मेदसिंह चरित्र' के सिवाय, तथा अष्टमराशि में 'अजितसिंह चरित्र' के प्रथम मयूख के सिवाय मयूखों की इतिश्री की जगह किसी कारण से खाली छोड़ दी है सो वहां वहां पर हम मयूख की कथा का सूचीपत्र संस्कृत में लिख कर इस त्रुटि को मिटावेंगे; जिसको पाठक लोग क्षेपक नहीं जानें; क्योंकि ग्रंथकर्ता के वर्णन किये हुए इतिहास का ही सूचीपत्र बनावेंगे, जिसमें न्यूनाधिक कुछ नहीं कियाजायगा, जिसका अभिप्राय केवल यह त्रुटि मिटाने का ही है. यद्यपि ग्रंथकर्ता के दत्तक पुत्र मुरारिदानजी के पास ग्रंथकर्ता के हाथ की शोधी हुई पुस्तक है तथापि हमको वह नहीं मिली, इसलिये कोटा के कविराज देवीदान से प्रति मंगवा कर उससे यह पुस्तक लिखवायागया जिसमें कई अशुद्धियां मिलीं जिनको यथामति शोधकर यह ग्रंथ छापागया है; तथापि दृष्टिदोष से कहीं कोई अशुद्धि रहगई हो तौ पाठक लोग क्षमा करें. और इस पर भी पुस्तक के अंत में शुद्धाशुद्ध पत्र भी लगादिया गया है जिसमें देखलेना

[१३]इस ग्रंथ में अनेक जाति के छंद ग्रंथकर्ता(सूर्यमल्ल)ने रक्खे हैं, जिनके लक्षण दो प्रकार के हैं; अर्थात् एक तौ सामान्य और दूसरा विशेष. इनमें सामान्य लक्षणवाले छंद तौ एक दूसरे में भी कहीं कहीं मिलजाते हैं जैसे

"त्रिभंगी" छंद कहीं कहीं "दुर्मिला" छंद में मिलजाता है, परंतु मात्रा गणबद्ध आदि कितनेही विशेष लक्षणवाले छंद दूसरे छंद में कदापि नहीं मिलते, जिसकेलिये ग्रंथकर्ता ने भी कहीं कहीं इसी ग्रंथ में बतादिया है कि सामान्य लक्षण से तौ यह अमुक छंद है, और विशेष लक्षण से यही अमुक छंद होता है. इसके अतिरिक्त ग्रंथकर्ता ने जिन ग्रंथों से इस ग्रंथ में छंद लिये हैं उनके नाम प्रथम-राशि के द्वादश मयूख में ४३-४४ के छंद में स्पष्ट लिख दिये हैं, इसीकारण से और टीका का वृथा बाहुल्य होने के कारण छंदों के लक्षण नहीं लिखे हैं सो पाठक लोक इस क्षति को क्षमा करेंगे. और सामान्य लक्षण का कोई छंद दूसरे छंद में मिलाहुआ प्रतीत होवे तो ग्रंथकर्ता का दोष नहीं समझना चाहिये; क्योंकि ग्रंथकर्ता ने इस ग्रंथ में दोनों लक्षणों का निर्वाह करके अपनी निर्माणशक्ति दिखाई है; जिसकेलिये अग्निपुराण में महाराज वेदव्यास ने भी लिखा है—

नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्रापि दुर्लभा ॥
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ॥

अर्थ—"इस संसार में प्रथम तौ मनुष्यत्व दुर्लभ है, वहां भी विद्या दुर्लभ है, उसमें भी कविपन दुर्लभ है, और कविपन में भी कविता करने की शक्ति होना अत्यंत दुर्लभ है ॥" सो ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) में पूर्ण थी, इसलिये नाना लक्षणों के छंद इस (वंशभास्कर) ग्रंथ में लिखेगये हैं उनमें किसी किसी छंद के चरण के बीच की यति छोड़ दीगई है. जैसे मनोहर नामक छंद का चरण ३१ वर्ण का होता है, और ऐसे चार ४ चरणों से मनोहर जाति का छंद बनता है सोतो याथातथ्य है, परंतु प्रत्येक वर्ण के प्रथम पाद के बीच की यति तो आठ आठ वर्ण पर और द्वितीय पाद में आठ सात वर्ण पर होती है सो ग्रंथकर्ता ने छोड़ दी है, वह उनका दोष नहीं है; क्योंकि नाना प्रकार के विषयों का और नाना कथाओं का वर्णन करने के कारण सामान्य लक्षण में चरण के बीच की यति छोड़ देना दोष नहीं मानाजाता है, सोही महाभारतादि ग्रंथों में भी देखलेवें.

[१४]इस ग्रंथ में ग्रंथकर्ता ने देशों के प्राचीन संस्कृत नाम लिखे हैं उनके आधुनिक प्रचलित नाम और पते मिलने कठिन हैं, तथापि जोकुछ हमको यथार्थ मिल गये हैं उनका एक नक्शा तीसरे राशि के आदि में (जहांसे देशों के नामों का प्रारंभ होता है) लगादिया है. सो जहां पर देशों के नाम आवें वहां वहां उस नक्शे के अनुकूल समझ लेना. इस ग्रंथ में उसी एक देश का नाम अनेकबार आया है इसलिये स्थान स्थान पर टीका करने से वृथा बाहुल्य होता है, इस कारण सब देशों के नामों का नक्शा एक ही स्थान पर लगादिया गया है सो पाठक लोक देखलेवें.

[१५]इस ग्रंथ में कहीहुई कथा भी वारंवार कही गई है जिसको पुनरुक्ति दोष नहीं जानना चाहिये; क्योंकि यह सिंहावलोकिनी गाथा वाल्मीकि आदि बड़े ग्रंथों में ठाम ठाम आई है. जिसका प्रयोजन पाठकों को पूर्वकथा का स्मरण कराना मात्र है. और सिंहावलोकिनी का अर्थ यह है कि सिंह अपने भक्ष्य पशु को मारकर वहां से थोड़ी दूर चलकर फिर उसको देखता है, इ-सीप्रकार कहीहुई कथा बड़े ग्रंथों में वारंवार कहकर स्मरण कराईजाती है. ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) ने गांवों के नाम कितने ही तो बड़वाभाटों की पुस्तकों से लिये हैं, और कितने ही पुराणों में लिखेहुए लिये हैं सो पुराणों में लिखे-हुए छोटे गांवों का तो कहीं पता ही नहीं है, और बड़वाभाटों की पुस्तकों से लियेहुए नामों को छोड़ कर अन्य नाम संस्कृत में शुद्ध बनाकर लिखे हैं. यथा—'मांडलगढ' को 'मंडनगढ,' 'आहड़' को 'आहुट्ट', 'बागोर'को 'बग्घपुर', 'नैणवा' को 'नैनपुर', 'खटकड़' को 'खटपुर', 'आलणयावास' को 'अल्हनपुर', जालोर' को 'जालपपुर' अथवा 'जालउर', 'मंडोवर' को मंडपपुर', 'मथा-णिया' को 'मन्थानपुर' और 'तूणपुर' को 'तोहनपत्तन'इत्यादिक बहुधा नाम संस्कृत अथवा प्राकृत में शुद्ध करके लिखे हैं सो निदर्शना मात्र दिग्दर्शन न्याय से यहां लिख दिये हैं; इसीप्रकार सभी गांवों के नाम लिखदेना चा-हते थे. सो इसीकारण से ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) के दत्तक पुत्र मुरारिदान को हमने लिखा था कि वंशभास्कर ग्रंथ बना उससे प्रथम के खर्ड़ों (मसविदे के पत्र) हमारे पास भेज देवें तो उनसे यह चति मेट दीजावे. उसका उन्होंने उत्तर भेजा कि पांच वर्ष पहिले मैंने उन खर्ड़ों को देखे थे सो सब कशारि-यों (एक प्रकार के जंतु विशेष) ने खाडाला इस से वे कुछ पढ़े नहीं जाते इसकारण से जिस गाम के नाम का निश्चय हुआ वहां तो अर्थ लिख दिया गया है और जिनके नाम स्पष्ट विदित नहीं हुए उनके नाम टीका में नहीं लिखे हैं सो पाठक क्षमा करें.

टीकाकार

शाहपुरा का पोळपात (पात्र)

शोदा बारहठ किसनसिंह वर्मा.

ॐ

परमात्मने नमः

अथ वंशभास्करटीकाकारस्य संक्षेपतो वंशवर्णनम् ॥
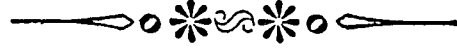
तत्रादौ टीकासमाप्त्यर्थसाधकं मङ्गलाचरणं प्रारभ्यते ॥

दोहा

मिहिर असंख्य असंख्य महि, धरे बिनुहि आधार ।
सुकवि कृष्ण आधार सुहि, अजर अमर अविकार ॥ १ ॥

मनोहरम्

सर्वशक्तिमान है दयालु न्यायकारी दृढ,
एक अविनाशी अविकारी पदपाचेकौं ।
धराधर-युक्त धरा असंख्यन सूर्यधारी,
व्यापक चराचरमें व्योमरीति राचेकौं ।
कहै कविकृष्ण जो अजन्मा रू अखंड ईश,

रात्री में जितने तारे दीखते हैं वे सब स्वयं प्रकाशमान सूर्य हैं और जिस प्रकार यह अपना सूर्य अपनी इस पृथ्वी को प्रकाशित करता है इसी प्रकार वे सूर्य भी अपनी अपनी पृथ्वियों को प्रकाशित करते हैं इसी कारण से मंगलाचरण में कहागया है कि जिस परमेश्वर ने असंख्यात सूर्य और असंख्य पृथ्वियों को बिना किसी आधार के धरे हैं वही जरारहित अमर और अविकारी परमेश्वर मेरा आधार है. जाति वाचक शब्द के साथ बहुवचन का प्रयोग करना अनावश्यक है इस कारण से मिहिर और महि शब्द एक वचन से कहे गये हैं परंतु "असंख्य" इस शब्द के योग से बहुवचन जानना चाहिये ॥१॥
सर्वशक्तिमान् होने पर भी दृढ दया करनेवाला और न्याय करनेवाला और नाश रहित है, वह एक ही है उसके समान दूसरा कोई नहीं है और जो कभी विकार को प्राप्त नहीं होता अर्थात् जिस परमात्मा का कभी अवतार आदि नहीं होता,ऐसे पद में पचा हुआ और पर्वतों सहित असंख्य पृथ्वियों को और असंख्य सूर्यों को बिना ही किसी आधार के धारण करनेवाला चर और अचर (जड़ और चेतन) में आकाश के समान राचा हुआ (व्यापक) है, टीकाकार बारहट कृष्णसिंह कहता है कि

अमित अगोचर अरूप वेद-जाचेकौं ।
भैरव भवानी आदि और भ्रमजाल ऐसे
काचेकौं न मानौं मानौं एक वह साचेकौं ॥ २ ॥

दोहा

निपुण पितू[1] अवनाड़के, धारि चरण हियधाम ।
तिम गुरु सीतारामकों, पूरण[2] करत प्रणाम ॥ ३ ॥
देवबानि[3]में आदिकवि, जिम हुव बल्मकँजा[4]त ।
सूर्यमल्ल भाषा सुकवि, ममम[5]तें तिमहिं मनात ॥ ४ ॥
चन्द आदि कवि चन्दसम[6], रहे सबहि हँतरोचि[7] ।
सूर्य सूर्य उद्गम[8] समय, पिक्खेजावत पोचि ॥ ५ ॥
रीति लच्छ गुन व्यङ्ग्य अरु, शब्द छन्द रचि शुद्ध ।
नाहिन कोऊ निर्बहे[9], बनि यहँरीति प्रबुद्ध[10] ॥ ६ ॥
केशव आदिक कविनके, पिक्खे बहुत प्रबन्ध[11] ।
सूर्यमल्ल रचना सदृश, सो न मिले दृढसन्ध[12] ॥ ७ ॥

जो परमेश्वर जन्म करके रहित (जिसका कभी जन्म नहीं होता) और जो कभी खंडित नहीं होता और सबका स्वामी है, जिसका कभी प्रमाण (माप या तोल) नहीं हो सकता, किसी के देखने में नहीं आसकता, रूप से रहित, और वेदों ने जिसका निश्चय किया है एक उस सच्चे परब्रह्म को मैं मानता हूं ; भैरव और भवानी आदि भ्रमजाल के समान कच्चे देवताओं को नहीं मानता ॥ २ ॥ १टीकाकार के पिता का नाम'औनाड़सिंह'(अनम्रसिंह)है २प्रणामके आठअंग(उरसा शिरसा दृष्टया मनसा वचसा तथा। पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामोष्टांग उच्यते)हैं उन सहित किया जावे उसको पूर्ण प्रणाम कहते हैं३ संस्कृतके आदिकवि ४ वाल्मीकि मुनि हुए इसीप्रकार ५मेरेविचारसे भाषा के आदिकवि [आचार्य] सूर्यमल्ल हैंक्योंकि भाषा में अद्यावधि ऐसा ग्रन्थ किसीने नहीं रचा ॥ ४ ॥ ६ चन्दभाट आदि जो भाषाकवि हुए वे सूर्यमल्ल रूपी सूर्य के ८ उदय होने से दिवस के चन्द्रमा के समान ७ कान्ति रहित होगये ॥ ५ । काव्यप्रकाशादि साहित्य ग्रन्थों में रीति, गुण, लच्चण, व्यङ्ग्य आदि काव्य के अङ्ग कहेगये हैं उनको आदि लेकर शुद्धशब्दों का प्रयोग और शुद्धछन्दरचना का सूर्यमल्ल के समान १० विशेष विद्वान् बनकर कोई ९ निर्वाह नहीं करसके ॥ ६ ॥ ११ बहुत ग्रन्थ देखे १२ दृढप्रतिज्ञावाले नहीं मिले ॥ ७ ॥

किये सबहि गुन काव्यके, पुनि बहु विद्या पूर ।
भारत इतिहासिक भयो, सूर उदै यहसूर ॥ ८ ॥
शाण चढे विनु सुमनि[2] सुहु, पावत कहुँन प्रकाश ।
त्यौं टीका विनु ग्रन्थको, बनत न कबहु विकाश ॥ ९ ॥
तिनमैं हू यह[3] अति कठिन, बहुभाषाजुत बाद ।
बिनु टीका कबहु न बनैं, समझनको सब स्वाद ॥ १० ॥
याके समझनके अरथ, बहु जन बिकल बिचार ।
रची सुमित्रन प्रेरना, टीका करन तयार ॥ ११ ॥
करत सु यातैं याहिकी, उत्तम टीका अर्त्थ ।
जाके बल बाल हु जगत, समझन होंहिं समर्त्थ ॥ १२ ॥
कृष्ण सुकवि के वंशको, समझहु कथन समास ।
राजथान विच जो रहत, बिधि बिधि करत बिलास ॥ १३ ॥
जवन[10] मुहम्मद तुगलक जु, भो दिल्लिय भरतार ।
तानैं अतिशय रचि तुमुल[11], महि बेढिय[12] मेवार[13] ॥ १४ ॥
राणा गढलक्ष्मण[14] रहे, खल सम्मुह खिरि खेत ।
सुत तिनके अरिसिंह सुहु, निवसे नाकनिकेत[15] ॥ १५ ॥
अजय[16] अनुज अरिसिंहके, भये भूमिभरतार ।
सोहु गये दिव[17] कालवश, भुज हमीर[18] धरिभार ॥ १६ ॥
लै हमीर प्रभुता[19] लगे, महि जित्तन मेवार ।
पैं बल यवननको प्रचुर[20], जित्त न सके जुझार[21] ॥ १७ ॥

---

१ यह वंशभास्कर भारतवर्ष सम्बन्धी इतिहास का सूर्य उदय हुआ है ॥ ८ ॥ २ श्रेष्ठ मणि भी ३ वंशभास्कर ग्रंथ ४ वक्ता (ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल) के वचन ५ सबको समझने का आनंद विना टीका के कभी नहीं आ सक्ता ६ उत्तम अर्थ के साथ टीका की जाती है ७ बालक अथवा मूर्ख भी ८ समर्थ ९ संक्षेपसे १० यवन ११ घोर युद्ध १२ घेरी १३ मेवाड़ (देश का नाम है) अर्थात् मेवाड़ की भूमि को १४ चितौड़ के महाराणा का नाम (गढ़लक्ष्मणसिंह) १५ स्वर्गस्थान १६ अरिसिंह का छोटा भाई अजयसिंह राजा हुआ १७ स्वर्ग १८ हमीरसिंह के १९ स्वामिपन २० बहुत २१ युद्ध करनेवाले वीर ।

तब निराश है निर्धन तकि, द्वारकेश प्रभु द्वार ।
किय प्रयान मग[1] द्वारिका, हियधरि लज्जा हार ॥ १८ ॥
मग जावत गुर्जर[2] मुलक, सुनि चारण जश सोर ।
ग्राम खोड[3] नामक गये, मिलन पितामह मोरं[4] ॥ १९ ॥
विक्रमाब्दे[5] ख ख वेद विधु१४००, आयें कठिन अनेह[6] ।
मेदपाट[7] तजि भूपमनि, गमने बारू[8] गेह ॥ २० ॥
कवि बारू आतिथ्य करि, रक्खे रान हमीर ॥
पलटाये संबोधि[9] पंहु[10], भयछुराय[11] ह्वै भीरं ॥ २१ ॥

षट्पदी

बारूमात विशद[12], किर्त्ति[13] धारक हित कारक ।
नाम बरवडी निपुन, आदि शक्ति सु अवतारक[14] ।
नृप नवघन कँहँ न्यौंति, चुलू ओदन[15] इक चाढिय ।
पृतना[16] सह दिय तृप्ति, बहुत अचिरज जग बाढिय ।
अभिधान[17] अन्नपूर्णा उचित, पाय तदिन[18] हुव जग प्रथित[19] ।
हम्मीर भूप वृत्तान्तयह, सुनि पहुँचे तिन्ह दरश हित ॥२२॥
पाय दरस पय परसि, नृपति निजदुःख निवेदिय ।
अम्बा[20] अक्खिय होहु, भूप शत्रुन बल भेदिय ।
धुरि जावहु निज मुलक, जुद्ध करि शत्रुन जित्तहु ।
रविकुल की तजि राह, विरचि निज घात न वित्तहु ॥
करजोरि नृपति विनती करिय, किंह बल[21] जीतौं शत्रु कँहँ ।
रन भिरन तुरंग[22] इक्क न रहिय, जुज्झन हित भट हू न जँहँ ॥२३॥

---

१ मरग २ गुजरात ३खोड नामी गाम में ४मेरे (टीकाकार के पितामह से) ५ विक्रम के सम्वत् ६ समय ७ मेवाड़देश ८ बारू नामक चारण के घर पर ९ समझाकर १० राजा को ११ सहायक होकर १२ उज्वल १३ कीर्त्ति १४ देवी का अवतार थी १५ एक कुल्हडी [छोटे से पात्र] में पस्सी भर चावल चढा कर राजा नवघण को संपूर्ण १६ सेनासहित तृप्त करदिया इस कारण से १७ अन्नपूर्णा नाम १८ उसी दिन से १९ प्रसिद्ध हुआ २० माता ने कहा २१ किस सेना से शत्रुओं को विजय करूं २२ एक भी घोड़ा नहीं रहा

मात कहिय मम पुत्त, नाम बारू अति निर्भय ।
नयपट्टु[1] धर्मनिधान[2], जाय करिहैं तावक[3] जय ॥
तरल[4] पंचशत५००तुरग, नृपति[5] बिनु-मूल्य निवेदहि[6] ।
जिम बाहुज[7] गन जोरि, दिर्घशत्रुन[8] बल भेदहि ।
तुम जाहु भूप पच्छे[9] तुरत, आवहिं यह कछुदिनन उत ।
लै विजय लहहु प्रभुता ललित[10], निखिलनतैं[11] बनिहो प्रनुत[12] ॥२४॥

दोहा

उत जो भूपति जालउर, कथ संबंध कहाय ।
सोनगरे चहुवान सन, जोरहु सगपन जाय ॥ २५ ॥

षट्पदी

दिय माता बरदान, सु लहि नृप हम्मै[13] सिधायउ ।
मेदपाट धर मांहि, प्रविसि प्रत्यय[14] यह पायउ ॥
मालदेव मंत्री सु, आय इम अरज उचारिय ।
विरचन हित संबंध, राव मुहि अत्त प्रचारिय ॥
करि स्वी[15] रु चलहु जालोर कहँ, सोनगरे अनुचर समुझि ।
कछु देश देहि दायज करि रु, भूप रहहु दुहुँ प्रीति भजि ॥ २६ ॥
इहिं अन्तर उत उमगि, सप्ति[16] शतपंच५००सत्थ सजि ।
बारू आयउ बेगि, भिन्टि[17] नृप हिन्तु[18] नेह भजि ।
जाय हम्म जालोर, पाणिपीडन[19] करि पच्छे ।
मुरि पत्ते[20] मेवार, गढ सु चित्तोर हि गैच्छे[21] ।
करि विजय करिय दुष्टन कदर्न[22], सदनै[23] अर्प्पै[24] अपनाय सुहि ।

---

१ नीति में चतुर २ धर्म ही है धन जिस के (धार्म्मिक) ३ तुम्हारा विजय करेगा ४ चपल ५ हे राजा बिना मूल्य ही ६ तुम्हारे भेट करेगा ७ इसी प्रकार क्षत्रियों का समूह जोड़कर ८ शत्रुओं की बड़ी सेना को भेदन करेगा ९ पीछे १० सुन्दर ११ सब से १२ विशेष स्तुति योग्य बनोगे १३ हम्मीरसिंह १४ विश्वास (सबूत) पाया कि १५ स्वीकार करके१६घोड़े१७मिल। १८से (महाराणा हमीरसिंह से)१९विवाह करते ही पीछे मुड़कर २०पहुंचे२१चित्तोड़गढ़ में गये२२नाश२४ अपने२३ घर को अपना करके

दिल्लीस भञ्जि दुस्सह दमियं[1], जमिय राज्य सीसोद जुहि[2] ।२७॥

दोहा

बुल्लि खोड़तैं[3] बरवड़ी, मन्नि इष्ट वह मात[4] ।
चित्रकोट[5] रक्खी चतुर, बलि हमीर बिख्यात ॥ २८ ॥
जब बिग्रह[6] छोरचो जननि, तब अतिही हित तान ।
अन्नपूर्णाके[7] अरथ, रचिय शिवाऽऽलय[8] रान ॥ २९ ॥
ममकुलके[9] इहिं मन्निहैं, इष्टदेव अनुसार ।
कहि[10] सेवा सामग्रिकों, दिय इक ग्राम उदार ॥ ३० ॥
वह मन्दिर अबहू उदित, सुखद चित्तगढ़[10] शीस ।
पुनि त्योंही इक उदयपुर, है किहिं[11] रचित महीस ॥ ३१ ॥
दरशनहित तिहिंठौं[12] सदा, आश्विन शुक्ल अनेह[13] ।
अबहू जावत वँहँ नृपति, नूतन[14] हिय धरि नेह ॥ ३२ ॥
दलि शत्रुनको दिग्घ[15] दल, चढि पब्बय चित्तोर ।
रविवंशिन पुनि राज्य रचि, जारचो जवनन जोर ॥ ३३ ॥
कारन लखि इहिं विजयको, बारू चारन बुल्लि[16] ।
कोटि दान दीनो स्वकर[17], तुलना वासव[18] तुल्लि ॥ ३४ ॥
तिहि बिच निवसथ[19] आँतरी, पुनि रवि१२ग्राम उपेत[20] ।

---

१ दण्ड दिया २ जो सीसोदियों का राज्य पहिले था वही पीछा जम गया ३खोड नामक ग्राम से बरवड़ी को बुलाकर ४ उस माता को इष्टदेव मानकर ५चीतोड़ पर रक्खी६जब माताने शरीर छोडा तब७अन्नपूर्णा(बरवडी का दूसरा नामअन्नपूर्णा था)के लिये महाराणा हम्मीरसिंहने८देवीका मन्दिर बनवाया९मेरे कुलवाले अन्नपूर्णाको इष्टदेव के सदृश(महाराणा के इष्टदेव तो एकलिंगेश्वर महा देव हैं उन्हींके अनुसार)मानेंगे यह कहकर पूजा की सामग्री के व्यय के अ-र्थ हम्मीरसिंह ने एक ग्राम भेट किया १० वह मंदिर अब भी चित्तोड़गढ के ऊपर है ११ किसी राजा (महाराणा) का बनाया हुआ अन्नपूर्णा (बरवडी) का एक मंदिर उदयपुर में भी है १२ वहां पर १३ आश्विन सुदी पक्षके समय में हृदय में १४ नवीन नेह धारण करके दर्शन करने को अब भी महाराणा जाते हैं १५ बड़ा १६बुलाकर १७अपने हाथ से१८इन्द्र की१९ग्राम (आंतरी नामक गाम) २० सहित बारह गामों के साथ

सहसपचीसन२५०००[1]आय सह, हित रचि बारू हेत ॥ ३५॥
बखसि रान मेवाड़ बिच, कविको बास कराय ।
[2]पैय मुत्ति[3]न पूजे प्रथि[4]त, भुव बिच सुयस भराय ॥ ३६ ॥
पोले[5]पात्र किय अप्पने, नृप हमीर शिर नाय[6] ।
कवि हु मुदित निज स्वान्त[7] किय, पीले अच्छत[8] पाय ।३७।
ग्राम खोड नामक सु गृह, जनपद[9] तजि गुजरात ।
बसि तबतैं मेवाड़ बिच, रान स्वामि ठहरात ॥ ३८ ॥
बारूको सनमान बहु, रान बढायो रीझि ।
उमरावन सम [10]अँदर्‍यो, पूरन नेह पसीजि ॥ ३९ ॥
बारू सन बुल्ले विदित, भूप [11]हँमीर सुभाय[12] ॥
हमरी संत[13]ति हृदयतैं, यह उपकार न जाय ॥ ४० ॥
ऐसो कोउक पद उचित, स्मार[14]कचिन्ह सदाहि ॥
सो तुम धारहु मोद[15] सन, यह मेरो मत[16] आहि[17] ॥ ४१ ॥
[18]हयसोदाके हेतु[19] हुव, यह उपकार [20]अनूप ॥
सोही सोदापद सदा, [21]भजहु कह्यो इम भूप ॥ ४२ ॥
तबतैं देथा[22]शाख तजि, धरि सोदा अभिधान[23] ।
[24]अन्ववाय बारू अबहु, मन्नत अपनो मान ॥ ४३ ॥

१आमदनी पचीस हजार रुपयों की वार्षिक आमद सहित २पग ३मोतियों से ४ प्रसिद्ध ५ अपने द्वार पर नेग लेनेवालों में पात्र ६ झुकाकर ७ मन ८ आखा ९ देश १०आदर किया ११ महाराणा हमीरसिंह ने १२श्रेष्ठभाव से बारू से कहा कि हमारी १३सन्तान के हृदय से तुम्हारा यह उपकार नहीं जावै ॥ ४० ॥ ऐसा कोई उचित पद जो सदैव तुम्हारे कियेहुए इस उपकार को १४स्मरण करानेवाला चिन्ह होवै वह तुम १५हर्ष के साथ सदैव के लिये धारण करो यह मेरी १६सम्मति १७है ॥ ४१ ॥ १८तुम पहिले से घोड़ों की सोदागरी (व्यापार) करते थे इसी १९ कारण से हमको पाँचसौ घोड़े इकट्ठे दे सके थे इसी से यह २० उपमा रहित उपकार हुआ है सो उसी सौदा (व्यापार) पद को तुम २१ सेवन करो ॥ ४२ ॥ बारू की पहिले २२ देथा नामक शाखा थी जिसको छोडकर बारू ने महाराणा हम्मीरसिंह की आज्ञानुसार २३ सौदानामक शाखा को धारण किया उसी नाम की शाखा को धारण करके २४ बारू का वंश अब भी अपना मान समझता है॥४३॥

[1]द्वारनेगतैं द्वारहठ, शब्द जुर्‌यो तिहिं सत्थ ॥
इम सोदाबार्हठ उचित, शाखा भई [2]समत्थ ॥ ४४ ॥
[3]शीसोदिन के नेग सब, पावत सुहि मुद पाय ॥
शाखा इकशतवीश१२० के, भये [4]मौलिमनि भाय ॥ ४५ ॥
रान दियो बारू अरथ, कोटि द्रव्य यश काज ॥
तिम बारू निज यश [5]तनन, किय उदार यह काज ॥४६॥
करि [6]ऐकत्रित [7]याचकन, मुद्रा लक्ख प्रमान ॥
[9]चित्रकूट चढिकैं चतुर, दिय [10]वदान्य बनि दान ॥ ४७ ॥
तादिनतैं याचक [11]संतत, सो आशय धरि शीस ॥
बारू [12]सन्ततिकौं अबहु, बोलत [13]लक्खबरीस ॥ ४८ ॥
बीर वदान्य रु [14]नय विदित, बारू भये विशेष ॥
तिनको यश जग वित्थर्‌यो, [15]दृढतर देश विदेश ॥ ४९ ॥
बारू१ के बाजूड़२ हुव, तिनके बला३ तेम ॥
पालम४ अरु हरिदास५ पुनि, जमणा६ वीर सु जेम ॥ ५० ॥
राजवीर७ अमरा८ नरू९ , उपजे क्रमसह [16]ऐस ॥
[17]मह विलसे मेवाड़महँ; निवहत रान [18]निदेस ॥ ५१ ॥
पाये बहु [19]शाँसण प्रथित, महत बढाये मान ॥
परत भार निज स्वामि पर, रचे निछावर प्रान ॥ ५२ ॥

मनोहरम्

महाराणा आदि शीसोदिया क्षत्रियों के १ द्वार(दरवाजे)पर हठ पूर्वक नेग लेने से द्वारहठ (बारहठ) कहलाये यह शब्द सोदा शब्द के साथ जुड़कर "सोदा बार हठ" नाम की उचित और २ समर्थ जुदी शाखा हुई ॥ ४४ ॥ वे ही सौदा बारहठ ३ शीसोदिया वंश के "राणावत" सब क्षत्रियों से आनन्द के साथ नेग (दस्तूर)पाकर चारणों की एक सौ बीश साखा प्रसिद्ध हैं उनके ४ मुकुटमणि की भाँति हुए ॥ ४५ ॥ ५ अपने यश को फैलाने के लिये ७ चारणों को याचना करनेवाले लोगों को, ६ इकट्ठे करके, ८ लाख रुपये, ९ चित्तौड़गढ पर चढके १० दातार (उदार) बनकर दिये ११ निरंतर १२ बारू के वंशवालों को १३ लाखबीस (लाख रुपये देनेवाले) कहते हैं १४ नीति में प्रसिद्ध १५ अत्यंत दृढ होकर फैला १६ ये १७ उत्सव १८ आज्ञा १९ उदक ग्राम

द्वीप ताप ऋषि इन्दु१७३७विक्रम समा[1] के बीच,
दिल्लीईश औरँग[2] चलायकेँ छेज्यो नहीँ ।
छोरि उदैद्रंग[3] रान राजसिंह अद्रिनमेँ,
जुरनौँ चह्यो जो भीत[4] भँजिकेँ भज्यो[5] नहीँ ।
लेत रह्यो नेग जिँहिँ द्वार[6]कौँ न छोरौँ कहि,
बारहठ नरू लरि भिरवे लज्यो नहीँ ।
म्लेच्छनकौँ मारि स्वामि लोँन[7]कौँ उजारि[8] अहो[9],
तंन[10]कौँ तज्यो पैँ निज पंन[11]कौँ तज्यो नहीँ ॥ ५३ ॥

दोहा

उदयभाण१० हुव नरु सुवन[12], बैंणाहेडै[13] रचि बास ।
राणा सेवन तजि रहे, उर धरि भाव उदास ॥ ५४ ॥
उनके भये किशोर११सुव[14], द्ढ तिनके सुत देव१२ ।
बने बहुतही बीरबर, शाहपुरेप[15] गहि सेव ॥ ५५ ॥
शाहपुरातेँ पुब्बदिश[16], गव्यूती[17] इक ग्राम ।
देवपुरा अभिधान[18] दृढ, पुनि खेड़ा उपनाम ॥ ५६ ॥
सम्वत तेरा धृति समय, छिति[19] वितान[20] यश छान ।

---

१ सवंत् में २ औरंगजेब महाराणा राजसिंह का विजय करने की शोभा लेने आया था वह शोभा प्राप्त नहीं हुई (शोभित नहीं हुआ) ३ उदयपुर, महाराणा राजसिंह ने बादशाह की फौज से घिरजाने के भय से उदयपुर को शून्य करादिया और पर्वतों में जाकर युद्ध करना चाहा ४ भय का ५ सेवन करके भगे नहीं थे, परंतु बारहठ नरू ने कहा कि जिस ६ द्वार (दरवाजा) पर हठपूर्वक मैंने नेग लिये हैं उस द्वार को ऐसे कठिन समय में नहीं छोडूंगा यह कहकर उदयपुर का शहर शून्य हो जानेपर भी औरंगजेब की सेना से लड़कर नेग पानेवाले उस द्वार से भी आगे बढ़के जगदीश के मंदिर पर काम आये [मारे गये] ७ अपने स्वामी का लवण खाया था उसको ८ उज्वल दिखाकर ९ आश्चर्य करनेवाला कार्य करके १० शरीर को छोड दिया परंतु अपने ११ प्रण को नहीं छोड़ा १२ पुत्र १३ मेवाड़ के उमराओं में एक ठिकाना है १४ पुत्र १५ शाहपुरा के पति की सेवा ग्रहण करके १६ पूर्वदिशा में १७ दोकोश (गव्यूतिः स्त्री क्रोशयुगमित्यमरः) १८ नाम १९ भूमिपर २० डेरा [तंबू] छाने के लिये

शाहपुरप उम्मेद सुहि, देव कविहि दिय दान ॥ ५७ ॥
अभ्युत्थानौदिक अरपि, बहु सनमान बढाय ।
पूजनीय किय अप्पने, चावल पीत चढाय ॥ ५८ ॥
पोलपात्र इम किय प्रथि, नृप उमेद धरि नेह ।
कवि शिविका आरूढ करि, गमन करायउ गेह ॥ ५९ ॥
देव१२कवीके सुत सदय, भये चमन१३ अभिधान ।
तिनके कीरतिसिंह१४तिम, बीर धीर दृढवान ॥ ६० ॥
कित्तिसिंहके सुत कुशल, उपजे भाग्य उदोत ।
जिन्ह अभिधा अवनाड१५जे, हितुन गुणाकर होत ॥६१॥
गुन वसु धृति१८८३वत्सर गिनहु, श्रावन शुक्ला दोज ।
भये प्रगट अवनाड़ सुव, आलयं अति मति ओज ॥ ६२ ॥
तिनके कृष्ण१६ सु मंदमति, रखैं कछुक कविराह ।
तिहँ कीन्हो साहस अतुल, अर्णवं मथन उछाह ॥ ६३ ॥

पद्धतिका

ऋतु व्यो नन्द विधु१९०६मित समौरु,
फग्गुन शुचि प्रतिपद१बुध सु चारु ॥
घटिका त्रयोदश१३ पल चउवीस२४,
सतभिषा ऋच्छे घटि अट्ठतीस३८ ॥ ६४ ॥
पल बाण अग्नि३५जानहु अवंच, शिवनामयोग घटि तीन पञ्च५३॥
सर तीन३५पलहु तापैं सुभाय, अरु कौलव नामक करन आय॥६५॥

---

१ उम्मेदसिंह ने, २ उपरोक्त ग्राम, ३ ताजीम आदि देकर ४ पीले ५ प्रसिद्ध ६ पालखी [नरयान] पर चढाकर ७ दयावान् ८ चमनसिंह ९ नामवाले १० गुणों की खान ११ अत्यन्त सामर्थ्य और बुद्धि के घर १२सो (तिनके कृष्णसिंह नामक मन्दमतिवाला जो थोड़ा सा कवियों का मार्ग रखता है) १३ बहुत १४ समुद्र के मथने का १५विक्रमी संवत् उन्नीस सौ छः १९०६ शालिवाहन शक१७७१ फाल्गुन(१६)सुदी एकम १ बुधवार घड़ी १३ पल २४ शतभिषा (१७)नक्षत्र घड़ी ३८पल३५ शिवनाम योग घड़ी५३ पल ३५ कौलव करण सूर्योदय से इष्ट घड़ी ५३ पल ५५ लग्न स्पष्ट ८ । २२ । ५४ । ५३ । सूर्य १० । ३

जन्मकुण्डलिका

सूर्योदयात घटि इष्ट एहु, त्रेपन५३ पल पचपन५५जानिलेहु ।
अरु लग्नस्पष्ट अष्ट८रुदुबीह२२, चौवन५४पुनित्रेपन५३हूसुहीह।६६
इहिं समय कृष्णकवि जन्म आसे, कायर अरु कृपनन दियन त्रास
सर५अब्दे रह्यो लालन अधीन, पुनि वर्णबोध निज मातु दीन ॥६७।
जब दश हायने वय जानलीन, पितु कियउ मोहि गुरुपद अधीन।
श्रीसीतारामाचार्य शुद्ध, पण्डितन शिरेमणि अरु अलुद्ध ॥६८॥
तिन्ह कृपा प्राप्त व्याकरण कोश, वयपाय कृष्ण कछु लहिय होश
अठतीस३८बरस वय करि उदार, इहिं गिनि असार धरि स्वर्ग प्यार
महि बाहु नन्द शशि१९२१ अब्द मान, अवनाड़ तात किय देह हान
पितु देह तजनको दुक्ख पाय, गृह कार्य लग्यो पठं सु विहाय॥७०
शाहपुर भूप लक्ष्मण सुजान, तिन मोहि लडायो सुत समान ।
पैं शास्त्र बाहु निधि इन्दु१९२६पाय, नृप तेहु गये देवननिकाय७१
तिन पट्ट लह्यो नाहर सुरीति, ते करत सदा गुन हिं प्रीति ।
भाग्यहितें पाये हम भुवाल, जे नित्य विडारक दुष्टजाल ॥ ७२॥

कुंभार्क गतांशाः ३। २७ (१) हुआ २ पंच वर्ष की अवस्था होने पर्यन्त ३ दश वर्ष की अवस्था होने पर ४ निर्लोभी ५ इस संसार को असार जानकर ६ वर्ष ७ प्रमाण ८ पिता अवनाड़सिंह ने ९ शरीर छोडा १० उस पढ़ने को छोडकर घर के कार्य में लगा ११ लक्ष्मणसिंह नामक १२ परंतु उन्नीससौ छब्बीस के सम्वत् में १३ स्वर्ग में गये १४ हमने नाहरसिंह नामक राजा भाग्यसे ही पाया १५ बिखेरनेवाल

नृप नाहर मोपँहँ प्रीति ठानि, पुनि [1]पोलपात्र [2]अपनो पिछानि ।
पुनि पठन करायउ [3]देवबानि, [4]पाठक इक [5]अतिबुधकों सु ठानि ७३
पुनि राज्यभार मोहि सौंपि भूप, अति दान दये हित धरि [6]अनूप ।
[7]बँलि लखिय उदैपुर भूप [8]रुष्ट, तिनपैं मुहि पठयो करन [9]तुष्ट ॥७४॥
तँहँ मिले मोहि ऋषि दयानन्द, जे [10]विद्यावारिधि अरु [11]स्वच्छन्द।
तिन ज्ञानदै रु किय [12]अमल चित्त, पुनि दियउ [13]सुविद्या रूप वित्त।७५
[14]सज्जन नृप सेयो मैं [15]सुभाय, लिन्हौं जिन्ह सुतसम मुहि लुभाय ।
करि [16]वेतन बहुविधि मान कीन, अरु राज्यकाज किय बहु अधीन
तिनके [17]पदाब्ज रहि स्वर्ग तुल्य, भोगे अनेक सुख जे अमूल्य ।
[18]पैं हौं हमैंहिं [19]हतभाग्य [20]कैंन, नृप कियउ गोन [21]सुरराज ऐंन ।
वह अब्द भूमि युग नव रु चन्द१९४१, मनु प्रलयरूप निकस्यो जु मन्द
सो भूप [22]शत्रु-अटवी [23]कृशानु, भो अस्त [24]सर्वदा सजन भानु ॥७८॥
तब भये भूमिपति [25]फैतह तत्र, जे सदा बीरगुनके [26]अमत्र ।
तिनहू मुहि रक्ख्यो हित तनाय,बहु दान मान संजुत बनाय॥७९॥
पैं इत सु जोधपुर भूप [27]आँप, [28]यशवन्त सु यशलोभी अमाप ।
करिकैं निमंत्रण रु मोहि बुल्लि, तुलना सुरराजहि तुल्य तुल्लि ८०
पदभूषण [29]काञ्चन दै प्रसिद्ध, इत आनि कियो सबभांति [30]इद्ध ।

---

२ अपना १ पोळपोत्र [अपने द्वार पर नेग लेनेवालों में पात्र] जानकर ३ संस्कृत पढाया ४ पढानेवाला ५ रामनिवास नामक पण्डित को ६ उपमा रहित ७ पुनि, राजाधिराज नाहरसिंह ने अपने पर उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह को ८ अप्रसन्न जानकर उनको ९ प्रसन्न करने के लिये मुझे उदयपुर भेजा१०विद्या के समुद्र११स्वतंत्र१२निर्मल१३ उत्तम विद्या रूपी धन दिया१४महाराणा सज्जनसिंह की मैंने १५ श्रेष्ठ रीति से सेवा की१६ तनखा करके१७उनके चरण कमलों में रहकर१८परंतु १९ खेद का विषय है कि २० करने को २१ स्वर्ग गये २२ शत्रुओं रूपी वन का २३ अग्नि २४ सदैव के लिये सज्जनसिंह रूपी सूर्य अस्त हो गया २५ फतहसिंह नामक २६ वीरगुण के पात्र २७ समर्थ २८ महाराजा यशवंतसिंह २९ पगों में सोने का भूषण देकर३०वर्धित किया (बढाया)

मानसें बढाव अतिमोद मानि, तब रचन लगो टीका प्रतानि ८१

दोहा

केसरिसिंह किशोर कहि, जोरावर लघु जानि ॥
त्रयसुत ए नत्ती तिमहिं, नाम प्रताप प्रमानि ॥ ८२ ॥
तीन पुत्र सुपठित तिमहिं, पौत्र एक शुभपाय ॥
काव्य रु शास्त्र विनोद करि, रहतकृष्ण मुद छाय ॥ ८३ ॥
सुकवि कृष्णकों इहिं समय, पालत त्रय भूपाल ॥
मान दानतें किय महत, मुहि कृपनन हिय साल ॥ ८४
निरखहु नाहरसिंह नृप, प्रथम शाहपुर भूप ॥
भुगवत शाँसण ग्राम भुव, रक्खत निज अनुरूप ॥ ८५ ॥
फतहसिंह मेवाड़पति, रविकुलमनि श्रीरान ।
वेतनदै बहुविधि विपुल, मुहि रक्खत सनमान ॥ ८६ ॥
बहु आदर त्योंहीं बिरचि, रक्खत जोधपुरेश ॥
पँगभूषण हाटक समपि, सद्धत रीति सुरेश ॥ ८७ ॥
प्रतिमासिक्क वेत प्रथितं, द्वैसत २००रुप्पय देत ।
पटुता सैन यशवन्त पहुं, लाह सुयश भरिलेत ॥ ८८ ॥
पालक मेरे त्रय नृपति, तीननके सुततेम ॥
मित्र बन्धु सबजन मुदित, रहहु सदा जुत क्षेम ॥ ८९ ॥
मुहि टीका निर्माण मैं, दृढउछाह जिन दीन ॥
सुहृद शिरोमनि ते सदा, पुष्ट रहहु मतिपीन॥ ९० ॥
मातु पिता गुरु चरन नमि हियधरि इष्ट सनेह ॥

१मन २ विस्तार करके ३ नाती (पोता) ४ उदक ग्राम और भूमि भुगावते हुए अपने समान मुझे रखते हैं ५ तनखा देकर बहुत रीति से मेरा बहुत आदर रखते हैं ६ इसीप्रकार बहुत सन्मान करके जोधपुर के ईश रखते हैं ७ और पगों में ८स्वर्ण (सोना) का आभूषण देकर ९इन्द्र की रीति साधते हैं १०प्रसिद्ध ११चतुराई १२से १३प्रभु (स्वामी) १४पालना करनेवाले तीनों राज और तीनों के पुत्र अर्थात् राजाधिराज नाहरसिंह के पुत्र उमेदसिंह और सरदारसिंह, महाराणा फतहसिंह के पुत्र भोपालसिंह, राजराजेश्वर यशवंतसिंह के पुत्र सरदारसिंह १५ सम्बन्धी (लागती के) १६टीका बनाने में १७ मित्रशिरोमणि १८तीव्र बुद्धिवाले

जन्मलियेको फल समझि, अब आरम्भत एहै ॥ ९१ ॥
"उ धिमंथनी" नाम यह, पिक्खहु सुगम उपाय ॥
रचत कृष्ण टीका रुचिर, शब्द अर्थ दरसाय ॥ ९२ ॥

मनोहरम्

अमृतसो व्यंग्यार्थ सु गूढ़ प्रकटायदेहौं,
इन्दिरासी उक्ति दान कल्पद्रु जनाय कैं ।
चंदमुखी नायकान वर्णनको चन्द कैं रु,
बीररस मद्य हालाँ मिर्च्युहि गनायकैं ।
अभ्रगज कैसो गजवर्णन विधाय बलि ।
सैंप्तिनके वर्णनको सप्ताश्व मनाय कैं ।
काढिदैहौं याविधि तैं रत्ननको सोध करि,
वंशभास्कराब्धि को ह्याँ मंथन बनाय कैं ॥ ९३ ॥

दोहा

युग्म बाण बृहती इला१९५२ ,समौ भाद्रपद मास ।
प्रेरित बहु मित्रन प्रकट, हुव इंहिं रचन हुलास ॥ ९४ ॥
चा ाकुल धारण करत, उपपद विबुध उदोत ॥
सोदाबारहठ शाख सुंहि, ेतु सुटी ा होत ॥ ९५ ॥

---

१ इस संसार में जन्मलेने का यही फल है कि कोई परोपकारी कार्य करें इसी वार्ता को समझकर २इस टीका का प्रारंभ करता हूं ३अमृत के समा छिपेहुए व्यंग्यार्थ को प्रकट करदूंगा. और ४लक्ष्मी के सदृश उक्तियों को और राजाओं के दान वर्णन रूपी कल्पवृक्ष को जनाकर, चन्द्रमुखी नायकाओं के वर्णन को चन्द्रमा ५ करके ६ और मद्यरूपी वीररस, ७ विषरूपी ८ मृत्यु गिनाऊंगा अर्थात् इस ग्रन्थ में युद्ध के वर्णन में जहां तहां मृत्यु के होने का कथन है वही विषरूपी रत्न है क्योंकि समुद्र मंथन में जो विष निकलाथा उसकी गणना रत्नों में है; गजों के वर्णन रूपी९ऐरावत करके पुनि १०घोड़ों के वर्णन रूपी सप्ताश्व मनाकर, वंशभास्कर रूपी ११समुद्र का मथन करके इसप्रकार से रत्नों का शोधन करके निकालदूंगा यह टीकाकार की प्रतिज्ञा रूप रूपकालंकार है १२ सम्वत् १३ इस टीका के रचने का १४ देवता (महाभारतादि आर्ष ग्रन्थों में चारणों को देवता लिखा है) १५ यही (बारहठ कृष्णसिंह) १६ इस श्रेष्ठ टीका का कारण है

प्रथमहिं ग्रन्थ [1]अथोर पुनि, बढ़ैं जु टीका [2]व्यास ॥
[3]प्रवृति होन संदेहपर, समझहु रीति [4]समास ॥ ९६ ॥
कठिनशब्द अरु विषयकोँ [5]ठाँ ठाँ [6]स्फुट करि ठीक ॥
तजि देहौं अति सुगम तिहँ, कहहु न जिहैं अनीक ॥ ९७ ॥
[7]मानस को इहिं जगतमैं, [8]विस्मृति धर्म विचारि ॥
मिलैं कहू जो चूक मुहि, [9]धीधन लेहु सुधारि ॥ ९८ ॥
कुशल नाहिन [10]कविकर्म मैं, भयो न पण्डित [11]भूरि ॥
तऊ करत यह चपलता, करहु क्षमा कवि [12]सूरि ॥ ९९ ॥
सुकवि [13]कृष्टि सज्जन सुहृद, जुत [14]अञ्जलि [15]नति जानि ॥
करहु क्षमा कवि कृष्णाकोँ, पूरन दास पिछानि ॥ १०० ॥
है सु लोक उपकार हित, यह मेरो श्रम ग्रन्थ ॥
तातैं भूलहु होय तउ, [16]सज्जन छमहु समत्थ ॥ १०१ ॥

---

१ बहुत २ विस्तार ३ लोकमें प्रचार होने के संदेह से ४ संक्षेप से टीका बनाई है ५ जगह जगह ६ स्पष्ट ७ मन का ८ भूलने का ९ बुद्धि ही है धन जिनके [बुद्धिमान्] १० कविता में ११ बहुत १२ पण्डित १३ पण्डित १४ हाथ जोड़े १५ नम्रता १६ श्रेष्ठ हृदयवाले [परोपकारी]

श्रीगणेशायनमः॥

वंशभास्कर।

प्रथमराशौ प्रथमोमयूखः॥

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ श्रीबादरायणायनमः ॥
अथ श्रीमन्नानानृपनिचयनुतनलिनचलनबुन्दीपूर्विलासिनीविला
सिचाहुवाणचूडामणिभारतीभागधेयहड्डोपटङ्किमहारावराजेन्द्रराम-
सिंहात्तवंशवर्णननीतनियोगकविकुलकोटीरचारणचक्रचण्डांशुच-
ण्डीदानात्मजसुकविसूर्य्यमल्लविहित-वंशभास्कराऽभिधविविधबा-
हुजवंशविभक्तिविशिष्टवेदनीयवरविद्याविषयकप्राकृतादिपाण्डित्य-
पूर्वप्रस्तुतपुरुषार्थ (४) प्रयोजनकसंविधातृसंविधेयसम्बन्धकवि-
विधवैषयिककाव्यकलनकामाधिकारिप्रबन्धः पुस्तीक्रियते ॥

अथ श्रीमान् अनेक राजाओं के समूह से स्तुति कियेगये हैं कमल रूपी चरण जिनके, बुन्दी नगरी रूपी स्त्री के विलास करनेवाले, चहुवाणों के शिरोमणि, सरस्वती है भाग्य में जिनके अथवा सरस्वती है दायभाग में जिनके अथवा सरस्वती से कर लेनेवाले अर्थात् विद्वान्, हाडा पदवीवाले, ऐसे राव-राजाओं के इन्द्र रामसिंह से वंशवर्णन के अर्थ मिली है आज्ञा जिसको कवि-कुल के मुकुट, चारणगण के सूर्य चण्डीदान के पुत्र ऐसे श्रेष्ठकवि सूर्य-मल्ल से रचाहुआ वंशभास्कर नामक * अनेक क्षत्रियों के वंशविभाग के साथ जानने योग्य श्रेष्ठ विद्याओं के विषयवाला, प्राकृतभाषा आदि की पण्डिताई

* प्रत्येक ग्रन्थ में विषय, प्रयोजन, सम्बन्ध और अधिकारी ये चार अनुबन्ध ग्रन्थ के आदि में होतेहैं सो ही ग्रन्थकर्ता ने यहां पर दिखाये हैं, कि अनेक क्षत्रियों के वंश विभाग के साथ जानने योग्य श्रेष्ठ विद्या तो इस ग्रन्थ का विषय है और प्राकृत भाषा आदि की पण्डिताई पूर्वक विशेष स्तुति युक्त पुरुषार्थ प्रयोजन है। ग्रन्थ बनानेवाले के ग्रन्थ के साथ संविधातृ संविधेय भाव अर्थात् बनाना व बनना ही सम्बन्ध है। और अनेक प्रकार के विषयों से भरे हुए काव्यों की गणना करने का कामनावाले अधिकारी है ॥

तत्र पूर्वं नित्यसच्चिदानन्दत्वादखिलाधिष्ठानत्वाच्च
स्वरूपं ब्रह्म प्रस्तूयते॥ १ ॥ गीर्वाणभाषा ॥ आर्या ॥
आम्नाया यन्नित्यं तत्त्वं शक्ता नगोचरीकर्त्तुम् ॥
सत्यं ज्ञानमनन्तं तदाश्रयेऽहं स्वयं धाम ॥ १ ॥
शुद्धं बुद्धं मुक्तं जयतितरामन्तरिन्द्रियाविषयम् ॥
आमहतोऽखिलखेलां प्रकृतिनटीं नर्त्तयंस्तत्सत् ॥ २ ॥

अथ प्रकृतिमात्रप्रकृतित्वाद्ब्रह्माण्डवृन्तरूपिणी
भगवती मूलशक्तिः प्रस्तूयते२॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥

कल्पान्ते महदादिसृष्टिजननी विश्वं चरीकर्त्ति या-
ऽऽनुक्रोश्यं सलिलान्धऔषधपदं गत्वा बरीभर्त्यदः ॥
भूयः क्रूरकटाक्षपातनपटुः सर्वं जरीहर्त्ति या
चिच्चाक्चक्यजुगुप्सुकां जवनिकां शक्तिं भजे तामजाम्॥ ३ ॥

श्री१लज्जा२स्मृति३कान्ति४पुष्टि५धृति६गी७र्मेधा८तितिक्षा९दया१०

पूर्वक्त विशेष स्तुति युक्त पुरुषार्थ ही है प्रयोजन जिसमें, संविधातृ संविधेय अर्थात् वाच्यवाचकभाव सबन्धवाला, अनेक प्रकार के विषयवाले काव्यों की गणना की कामनावाले ही हैं अधिकारी जिसके ऐसा ग्रंथ पुस्तकाकार कियाजाता है ॥ तहां पर पहिले नित्य, सत् चित् आनन्द रूप और सब का आधारभूत होने के कारण ब्रह्म स्वरूप की स्तुति कीजाती है ॥

जो सत्य, ज्ञान, अनन्त, स्वयंज्योति, जिसको वेद भी प्रत्यक्ष करने को समर्थ नहीं है उस तत्त्व का मैं आश्रय करता हूं ॥ १ ॥ जो सम्पूर्ण खेल खलेनवाली प्रकृति (जगत् का कारण) नटी को महत्तत्त्व पर्यन्त नचाता हुआ अन्तःकरण और इन्द्रियों से नहीं जानाजावे वह शुद्ध बुद्ध मुक्त सत् स्वरूप सर्वोत्कर्षसे वर्तता है ॥ २ ॥ अब प्रकृतिमात्र की प्रकृति होनेके कारण और ब्रह्माण्डरूपी गर्भ के रहने का स्थानरूप ऐश्वर्यवाली प्रधानशक्ति की स्तुति की जाती है ॥ जो महदादि सृष्टि को रचनेवाली महाप्रलय के अन्त में संसार को रचती है और दया करके अन्न जल रूप जीवन पदार्थों को प्राप्त होके इस जगत् का पोषण करती है, फिर घोर कटाक्ष पटकने में चतुर सब जगत् का संहार करती है और चैतन्य का चकाचौंध देनेवाले तेज की घृणा करने (ढकने) वाली जवनिका (पड़दा) है उस अनादि शक्ति का स्मरण करता हूं ॥ ३॥ जिस मूल शक्ति की श्रीआदि अनन्त शक्तियां हैं वह तू विद्यास्वरूप महामोक्ष की देनेवाली

विद्या११प्राप्ति१२कला१३रति१४प्रभृतयोयस्याःपराःशक्तयः ॥
मज्जिह्वाग्रमुपेत्य मातरनिशं विद्ये महामोत्तदे
त्वं सेमं ज्वलनान्ववायमनघं विश्वेश्वरे बृंहय ॥ ४ ॥

अथ मायाशबलचिदंशस्वरूपो भगवानीश्वरः प्रस्तूयते३ ॥ आर्या॥
क्लेशादिदोषरहितं महितं ज्ञानादिषड्भगाऽवहितम् ॥
परमीडे दुरपाया यत्सङ्कल्पात्मिका माया ॥५॥
लोमाऽवटेप्यणव इव ब्रह्माण्डान्यगणितानि निवसन्ति ॥
यस्य तमीश्वरमीडे सद्गाथाग्रथितया सुगिरा ॥ ६ ॥

अथ च वेदेषु प्रथमप्रतिपाद्यत्वात्प्राप्तप्रशंसावसरं कर्म्मापि प्रस्तूयते४
यद्ब्रह्माण्डकटाहान्व्यावर्त्तयतेऽरघट्टघटिकावत् ॥
प्रभु तज्जैमिनिगेयं कर्म्मापि नमामि धीध्येयम् ॥ ७॥
अन्तःकरणोपेतं स्थातुं शक्यं न यद्विना किमपि ॥
तस्मै विश्वनियन्त्रे नमः पुरुषकारसंज्ञाय ॥ ८ ॥

अथ श्रीविष्णुस्तुतिः५ ॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥
यः क्रौडीं तनुमाश्रितो दितिसुतं पातालरन्ध्राश्रितं
हत्वा द्रागवरोप्य गामुदहरद्बालेन्दुदंष्ट्राङ्कुरे ॥

हे माता विश्वेश्वरी मेरी जिह्वा के अग्रभाग में प्राप्त होके पाप रहित अग्निवंश को बढ़ा ॥ ४ ॥ जिस परमेश्वर की सङ्कल्प रूप माया दुरपाया (कठिनाई से छूटै ऐसी) है उसको क्लेश,कर्म,विपाक,आशय,इन दोषों से रहित और ऐश्वर्य,धर्म, यश,श्री,ज्ञान और वैराग्य इन छः ६ ऐश्वर्यों सहित पूज्य परमेश्वरकी स्तुति करताहूं।५।जिसके रोमकूप में अगणित ब्रह्माण्ड परमाणुके समान स्थित हैं उस परमेश्वरकी उत्तम कथा में गुथीहुई श्रेष्ठ वाणीसे स्तुति करता हूं ॥६॥ अब फिर वेदों में प्रथम ही प्रतिपादन होनेके कारण प्राप्तहुआ है स्तुति करने का समय जिस का ऐसे कर्म की भी स्तुति की जाती है. जो ब्रह्माण्डकटाहों को रहँट की घड़ियों के समान फेरता है उस व्यापक जैमिनि ऋषि से कहागया और बुद्धि से ध्यान करने के योग्य कर्म को भी नमस्कार करता हूं ॥ ७ ॥ जो अन्तःकरण के साथ रहनेवाला है और जिसके बिना कोई वस्तु ठहर नहीं सकती उस संसारके चलानेवालेपुरुषार्थ को नमस्कार है ॥ ८ ॥ जो सूवर के शरीर को धारण

भित्त्वोरः करजैर्हिरण्यकशिपोः प्रह्लादमाश्वासय-
त्पश्चाद्रावणचेदिपादिकमहंस्तस्मै नमो विष्णवे ॥ ९ ॥
कौमोदक्यरिशङ्खपङ्कजलसच्छ्रीभिश्चतुर्भिः करै-
र्धर्मार्थादिचतुष्टयं निजकृते दादाति भक्त्यार्द्रहृत् ॥
विद्युद्गौरसिगातसेयसुमनःश्यामोर्ककोटिच्छवि-
र्लक्ष्मीकौस्तुभवैजयन्त्यधिलसद्वक्षा हरी राजते ॥ १० ॥

अथ श्रीशिवस्तुतिः ॥ ६ ॥ स्रग्धरा ॥

वामेऽङ्कार्धे दधानं हिमगिरितनुजां भव्यभूत्युज्वलाङ्गं
रम्ये न्यग्रोधमूले स्थितमुपकृतये साङ्ख्यशुश्रूषुजुष्टम् ॥
चित्तत्त्वं वल्गुवाचा सनकमुखमुनीनाविराज्ञापयन्तं
स्मेरार्द्रौष्ठप्रवालं गरलशितिगलं चन्द्रमौलिं तमीडे ॥ ११ ॥
नालम्बीवादनोत्थस्वरगमकरणत्कृच्छ्रुतिग्रामभिन्नां
जातिं शोश्रूयमाणो विविधविनिमयां दोधवीत्युत्तमाङ्गम् ॥

करके पाताल के छेद में स्थित दितिसुत (हिरण्याक्ष) को मारके दूजके चन्द्रमा समान दंतुलि के अग्र भाग पर रखकर पृथ्वी को शीघ्र निकाललाया और हिरण्यकशिपु के उर को नखों से विदारण कर प्रल्हाद का आश्वासन किया फिर रावण शिशुपाल आदि को मारा उस विष्णु को नमस्कार है॥ ९ ॥ कोमलहृदयवाला, कौमोदकी गदा, सुदर्शन चक्र, पाञ्चजन्यशङ्ख, कमल (पद्म) से शोभित चारों हाथों से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को भक्ति से अपने ही अर्थ देता है और बिजुली के समान चमकीला, सचिक्कण, और अतसीपुष्प के समान श्याम कोटिसूर्यों की शोभावाला लक्ष्मी, कौस्तुभमणि और जयन्ती माला से सुशोभित वक्षःस्थलवाला हरि सर्वोत्कर्ष से वर्तता है ॥ १० ॥ जो वाम अर्ध अङ्गमें पार्वती को धारण कियेहुए सुन्दरविभूति से भूषित अङ्ग रमणीय वटवृक्ष नीचे बैठे हुए साङ्ख्य शास्त्र के श्रवण करनेवालों से युक्त परोपकारार्थ सनकादि मुनियों को परब्रह्म के प्रकाश का उपदेश करता है और मूँगे के समान मन्द हास्य युक्त स्निग्ध ओष्ठ, विष से नीला कण्ठ और चन्द्रमा है मस्तक पर जिस के उस महादेव की स्तुति करता हूं ॥ ११ ॥ नालम्बी (शिवकीवीणा) के बजने से उठेहुए स्वरों की गमक के रणत्कार शब्द से किया है श्रुति और ग्राम भेद और अनेक प्रकार की उलटापलटी जिस में ऐसे जातिछन्द विशेष को सुनताहुआ मस्तक को घुमाता है. जहां आलिंगन से पार्वती के हाथ रूपी लता प्रत्यक्ष बिजुली

भूतेशं भर्गमीशं तमहमिह शरन्मेघशुभ्रं प्रणौमि
स्वाश्लेषे यत्र साक्षात्तडिदिव गिरिजापाणिवल्ली विभाति ॥ १२ ॥

अथ श्रीविरञ्चिस्तुतिः ७॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥

लक्ष्मीं नाभिविसप्रसूनविलसत्किञ्जल्ककोशासनः
सिद्धीः प्राप्य ततोऽतिघोरतपसः सङ्कल्पसर्गोत्सुकः ॥
सृष्ट्वाथात्रिमरीचिनारदमनुस्वायम्भुवादीन्प्रभु-
र्यो निर्माति कुलालवज्जगदिदं तं स्तौम्यजं हंसगम् ॥ १३ ॥

यद्वस्रे मनवश्चतुर्दश १४ तथैतावन्त १४ आखण्डला-
ऽऽदिष्टेन प्रभविष्णुना बत वियुज्यन्ते प्रियेणायुषा ॥
नैवास्त्युच्चतरं यदालयमृते किञ्चित्कटाहान्तरे
तं त्रैलोक्यतरुप्ररोहरचनाबीजं विरिञ्चिं भजे ॥ १४ ॥

अथ सूर्यस्तुतिः ८ ॥

आत्रुट्याः प्रलयावसानसमयं स्वैः सङ्क्रमैः सूचय-
न्स्फीतो माठरदण्डपिङ्गलमुखैर्युक्तास्त्रिषट् १८ पार्श्विकैः ॥
अप्येकारिशताङ्गयानातिमहाध्वान्तौघमुन्मूलय-
न्यो बम्भ्रन्ति सदा परोपकृतये भास्वान्स वाभ्राज्यताम् १५॥

के समान शोभित है उस शरद ऋतु के मेघ समान धवल, भूतनाथ, संसार का संहार करनेवाले ईश्वर को यहां पर नमस्कार करता हूं ॥ १२ ॥ लक्ष्मीपति के नाभि कमल की केसर बीच डब्वा पर स्थित हुआ फिर घोरतपस्या से सिद्धियों को प्राप्त होकर मानसिक रचना में उत्कण्ठित हुआ फिर अत्रि, मरीचि, नारद, मनु, स्वायम्भुव आदि की रचना करके जो प्रभु कुम्हारके समान इस जगत् का निर्माण करता है उस अजन्मा हंसवाहन की स्तुति करता हूं ॥ १३॥ जिस के एक ही दिन में चौदह मनु और चौदह ही इन्द्र स्वयंप्रभु काल के आधीन हो प्यारी आयु से छूटते हैं और अण्डकटाह में जिस के स्थान को छोड़ कर दूसरा कोई ऊँचा नहीं है उस तीन लोक रूपी वृक्ष के लगाने की रचना के बीज रूप ब्रह्मा को भजता हूं ॥ १४ ॥ जो क्षण से लेकर महाप्रलय के अन्त तक के समय को अपनी गति से जनाता न्आ वृद्धि को पहुँचा है और माठर, दण्ड पिङ्गल आदि अठारह पार्षदों से युक्त एकही चक्र युक्त रथवाला अति तेजस्वी अन्धकार का नाश करता हुआ परोपकार के अर्थ सदा भ्रमण किया ही करता

अग्रे व्यत्ययगामिभिः षडयुतैर्यो बालखिल्यर्षिभिः
स्तुत्या मञ्जुकलाप्सरोभिरनिशं तौर्येण संस्तूयते ॥
गन्धर्वोरगगुह्यकैश्च परितो विद्याधरैर्वन्दितः
साक्षी त्र्यध्वयत्यलं स जयताद्ब्रह्माण्डदीपो विभुः ॥ १६ ॥

अथ श्रीगणपतिस्तुतिः ९ ॥

शुण्डादण्डविमण्डनप्रविलसत्सिन्दूरसान्द्रश्रिया
दानासेकसुगन्धमत्तमधुपैर्यत्रारुणीभूयते ॥
यो दूणातिविसङ्ख्यविघ्नविततिं दादाति धुर्यां धियं
तं वृन्दारकवृन्दवन्द्यवपुषं नौम्याखुपत्रं परम् ॥ १७॥
प्राक्काले यदपूजने हरिहरोपेताखिलद्योषदां
दैत्यानां च मितद्रुमन्थनधियां विघ्नो महानुत्थितः ॥
उद्धर्तुं यमुपेक्ष्य मन्दरमगं शेकुर्नशक्ता अपि
स्तौमीड्यं मतिदं धियां तमनिशं लम्बोदरं लब्धये॥१८॥

आर्य्या ॥

जयतु स सिन्धुरवदनो विघ्नविनाशार्थमात्तदेहो यः ॥

वह सूर्य अतिशय करके प्रकाशमान है ॥१५॥ जो अपने सम्मुख उलटे चलनेवाले बालखिल्यादि साठहजार ऋषियों की स्तुति से और मञ्जुकला आदि अप्सरा ओंके वादित्रसे सदैव स्तुति किया जाता है और गन्धर्व, नाग, गुह्यक और विद्या धरों से चारों ओर से वन्दित, भूत, भविष्यत्, वर्तमान का साक्षी है वह व्यापक ब्रह्माण्ड का दीपक बहुत ही सर्वोत्कर्ष सेवर्तता है॥१६॥शुण्डादण्ड के चित्राम में शोभित सिन्दूर की सुन्दर शोभा से मदनिर्झर की सुगन्ध में प्रमत्त हुए भ्रम र जहां पर लाल होजाते हैं, जो असङ्ख्य विघ्नावली का नाशकरता है और शु द्ध बुद्धि को देता है उस देवताओं के समूह से वन्दित शरीर, मूषकवाहन उत्कृ ष्ट को नमस्कार करता हूं ॥ १७ ॥ पूर्व समय में जिस का पूजन न होने से समुद्र मथन करनेवाले हरिहर सहित सम्पूर्ण देवता और दैत्यों के बडाभारी विघ्न खड़ा हुआ था, जिस के बिना बडे बडे समर्थ भी मन्दराचल को उठाने में स मर्थ न हुए उस बुद्धि को देनेवाले स्तुति के योग्य गणेश की बुद्धि प्राप्ति के अर्थ निरन्तर स्तुति करता हूं ॥१८॥ जिसनेविघ्नोंका विनाश करने के अर्थ ही देहको धारण किया है, जिस के चरणारविन्द के ध्यान से अग्निवंश को मैं कहूंगा वह

यच्चरणाब्जध्यानाद्दानञ्जयमन्वयं वक्ष्ये ॥ १९ ॥

अनुष्टुब्युग्माविपुला ॥

योऽलिखल्लक्षषष्टिं श्रीभारतं व्यासवाक्यतः ॥
स ददातु मतिं तीव्रां कृशानुकुलवर्णने ॥ २० ॥

अथ श्रीभारतीस्तुतिः १० ॥ वसन्ततिलका ॥

श्वेताम्बरा विकचकञ्जविभूषिताङ्गी चक्राङ्गराजवरवाजविराजमाना
जिह्वायया वसफलाकविपण्डितानांवागीश्वरीजयतुसाच्छधियामुपास्या
कच्छप्युदाहृतकलक्वणनक्रियाभिर्माधुर्यमूर्छनमहामदमोदमाना ॥
वर्षात्ययेन्दुविशदच्छविशारदांचित्तावाणीजयत्वमरमौलिधुताङ्घ्रिपीठा
या नीयते न रिपुभिर्न च तस्कराद्यै-
र्नो बान्धवैर्नृपतिभिः प्रसभप्रयासैः ॥
वावृध्यते सततमप्युत दीयमाना
विश्वेश्वरी जयतु सा बुधवन्द्यवाणी ॥ २३ ॥
गीतासुरैरजमुखैरसुरैर्भुजङ्गैर्गन्धर्वयक्षमयुभिर्मुनिभिर्महद्भिः ॥
यद्यप्यहोकविपरार्धपरार्धपूगैःसादृश्यते नवनवोक्तिविलासवामा।२४।

गणेश सर्वोत्कर्षसे वर्तता है॥१९॥जिस वेदव्यासके कथनाऽनुसार साठलाख श्री महाभारत को लिखा वह अग्नि वंश के वर्णन में तीव्र बुद्धि देवै ॥ २० ॥ शुक्ल वस्त्र धारण किये विकसित कमल के समान सुन्दर शरीरवाली श्रेष्ठ वेगवान् हंस पर आरूढ, कवि और पण्डितों की जिह्वा जिसी से सफल है वह निर्मल मतिमानों की इष्ट देवता सरस्वती सर्वोत्कर्ष करके वर्त्तमान है ॥ २१ ॥ वीणा से निकलेहुए सुन्दर शब्दों की क्रिया करके मनोहर मूर्छना से अत्यन्त हर्ष युक्त आनन्द रूपा, शरद् काल के चन्द्रमा समान सुन्दर शोभावाली देवताओं के मस्तकों से कंपित है चरण पीठ जिस का ऐसी कोमल चित्तवाली सरस्वती सर्वोत्कर्ष करके वर्तमान है ॥ २२ ॥ जिस को शत्रु, चोर, बान्धव और राजा लोग हठ और परिश्रम से नहीं छीनसक्के किन्तु देने से निरन्तर अत्यन्त बढ़ती है वह विश्वेश्वरी पण्डितों से पूज्य सरस्वती सर्वोत्कर्षसे वर्तमान है।२३। यद्यपि ब्रह्मा को आदि ले सम्पूर्ण देवता, दैत्य, नाग, गन्धर्व, यक्ष, किन्नर, मुनि महात्मा और अनन्तानन्त कवियों के समूहों से गाईगई है तो भी

अथाऽर्थस्तुतिः ११॥ उपजातिः ॥

रसोध्वनिर्व्यङ्ग्य इतीरितव्यः काव्यादि यज्जीवितमामनन्ति ।
नान्यद्यदास्वादपरोऽभिनन्देदर्थं तमीडेऽमृतमक्षराणाम्॥२५॥

अथ श्रीरामचन्द्रस्तुतिः १२॥ शिखरिणी ॥

य आदेशं पित्रोर्निजशिरसि संन्यस्य निरगा-
त्ससीतासौमित्रिर्विपदधिगृहं दण्डकवनम् ॥
नियम्याकूपारं धनुरिषुसहायोऽहिनदरिं
दशास्यं दुःशास्यं नमत तमुपास्यं रघुरविम् ॥ २६ ॥

अथ श्रीकृष्णस्तुतिः ॥ १३ ॥ स्रग्धरा ॥

कस्तूर्या पत्रभङ्गप्रविरचनपटुं राधिकोरोजकूटे
लेखां सारल्यसिद्धामपि न हि सुभगेत्यञ्जसोत्सारयन्तम् ॥
अङ्गुल्या मार्जयन्तं लिखनमसुलभं सात्त्विकैरित्युदन्तं
वृन्दाटव्यां ब्रुवाणं शुचिजलधिभषं तं स्तुवेऽतृष्णकृष्णम्॥२७॥

अथ श्रीव्यासस्तुतिः १४ ॥ मालिनी ॥

अघतिमिरदिनेशं द्वैतवृत्रामरेशं त्रिजगदमृतहेतुं सर्वसद्धर्मसेतुम् ॥

आश्चर्य है कि वह उक्तियों के विलास से सुन्दर नई नई ही दीखती है ॥२४॥ रस, ध्वनि, और व्यङ्ग्य इनसे प्रेरित काव्यादि में जो जीव मानाजाता है जिस का स्वाद जाननेवाला दूसरे की प्रशंसा नहीं करता उस अक्षरों के अमृतरूप अर्थ की स्तुति करता हूं ॥ २५ ॥ जो पिता की आज्ञा को अपने शिर चढाकर सीता और लक्ष्मण के साथ,विपत्ति के घर दण्डक वन में गये और समुद्र को बांधकर केवल धनुष बाण की ही सहायता से बडी कठिनाई से शासन में आनेवाले शत्रु रावण को मारा उस उपासना के योग्य रघुकुल के सूर्य रामचन्द्र को नमस्कार करता हूं ॥ २६ ॥ श्रीकृष्णभगवान् राधिका जी के ऊंचेस्तन पर कस्तूरी से पत्रलेखा के लिखने में चतुर हैं तथा उस पत्रलेखा में सुन्दर सरल रेखा को भी बार बार स्तन स्पर्श लोभ से टेढी कहके शीघ्र उठाकर दूसरी सीधी रेखालिखरहे हैं तथा पत्र लेखा लिखने के समय में स्तंभ कम्प स्वेदादि सात्विक भाव का उदय होने से उत्तम पत्रलेखा नहीं मान कर स्तनस्पर्श लोभ से उसको अङ्गुली से पोंछरहे हैं और इस पत्रलेखा के वृत्तान्त को वृन्दा वन में अपने रहस्यवेदी नर्म सचिव को कहरहे हैं और इस तरह शृङ्गार रस में मग्न हैं तौभी तृष्णारहित हैं ऐसे श्रीकृष्ण की मैं स्तुति करता हूं ॥ २७ ॥

श्रुतिविषयविलासं सूरिहृच्चिन्निवासं
भ्रमविदलनबीजं नौमि तं वासवीजम् ॥ २८ ॥
अनुष्टब्युग्मविपुला ॥
पराशराऽब्धिसम्भूतं ज्ञानामृतविवर्षिणम् ॥
कृतभक्तोत्पलानन्दं वन्दे व्यासकलानिधिम् ॥ २९ ॥
अथ ज्ञानिनां वीतरागयोगिनां च स्तुतिः १५ ॥ आर्या ।
ऋषभ१कपिल२पृथु३दत्तात्रेय४भरत५याज्ञवल्क्य६शुकदेवान् ७॥
श्रीबादरायणा८ऽष्टावक्रो९द्दालक१० वशिष्ठमुनीन्११। ३०।
गोनर्दीयं१२ सुमतिं१३ जनकविदेहां१४ स्तथैव राजर्षीन् ॥
विक्रान्त१५सुबाहु१६रिमर्दनकं१७र्मादालसात्रितयम्३॥३१॥
सवनं१८ च महावीरं१९ सनत्सुजातं२० पूचेतसं३०५च दश१० ।
गय३१मवनिपतिं प्राचीनबर्हिषं३२मार्ष्टिसेनं३३ च ॥ ३२ ॥
कवि३४हरि३५चमसा३६विर्होत्रं३७पिप्पलायन३८प्रबुद्ध३९करपात्रान्
द्रुमिलं४१ तथ न्तरिक्षं४२गोरक्षं४३ शंकरं४४ शिवदम्॥३३॥
गौडपदं४५गोविन्दं४६ विद्यारण्यं४७ मदालसां४८ रैक्कम्४९।
पञ्चशिखे५०न्द्रप्रमदौ५१जैगीषव्या५२ऽकृतव्रणकौ५३॥ ३४॥
उत्कृष्टसाङ्ख्ययोगानित्यादीनीड आत्मतत्त्वरतान् ॥

पाप रूपी अन्धकार का सूर्य, द्वैत मत रूपी वृत्रासुर का इन्द्र, तीन लोकों में अमृत का हेतु, सम्पूर्ण सद्धर्म की सीमा, वेद के विषयों का खिलाड़ी, पण्डितों के हृदयों में चैतन्य समान बसनेवाला और भ्रम को नाश करने का बीज उस वासवी (वेदव्यास की माता का नाम है) से उत्पन्न वेदव्यास को नमस्कार करता हूं ॥ २८ ॥ पराशर रूपी समुद्र से उत्पन्न हुए, ज्ञान रूपी अमृत को बरसानेवाले उपकारमाननेवाले भक्त जन रूप कुवलयों (रात्रिविकाशी कमल) को आनन्द देनेवाले, व्यासरूपी चन्द्रमा को नमस्कार करता हूं ॥ २९ ॥
अब ज्ञानियों में विरक्तों की स्तुति है
१ वेदव्यास २ इसीप्रकार राजर्षिजनक विदेहों को ३ अरिमर्दन ४ जो मदालसा नामक गन्धर्वकन्या का तीसरा पुत्र था ५ दशप्रचेता ६ भूपति गय ७ आविर्होत्र ८कल्याणदेनेवाला९इन्द्रप्रमद१०इनको आदि लेकर ब्रह्मज्ञान में लीन रहनेवाले, श्रेष्ठ, सांख्य योग जाननेवालों की स्तुति करताहूं॥ इन सब के पूर्वापर(प हिले

पूर्वापरतामखिलां ज्ञातुमशक्तौ सधर्मोक्तिः ॥ ३५ ॥

अथ परमभक्तिभाजां भागवतानां स्तुतिः १६॥आर्यागीतिः॥

शङ्कर१विरञ्चि२शेषा३न्सनकादीं४-७न्नारदं८बलिं९हनुमन्तम्१०

प्रह्लादं११स्वायम्भुव१२मुत्तानपदं१३प्रियव्रतं१४ध्रुव१५मङ्गम् १६॥

वृत्र१७जटायु१८सुतीक्ष्णा१९-

नृभु२०सौभर२१र्युद्धवा२२ऽर्ज्जुना२३ऽसि २४भीष्मान् २५ ॥

शिबि२६देवल२७सारस्वत२८,

शुका२९ऽनैक३०व्यास३१धर्म३२गाधि३३दिलीपान्३४॥३७॥

मुचुकुन्द३५विदेहे३६क्ष्व क३७

रघु ३८सगर३९गय४०ययाति४१विदुरा४२लर्कान्४३ ॥

विष्वक्सेन४४विभीषण४५

शौनक४६शतधनु४७रंमूर्त्तरय४८मान्धातॄन्४९॥३८॥

ऐला५०म्ब रीष५१मुत्त-

ङ्क५२पराशर५३भीष्मका५४ङ्गिरः५५श्रुतदेवान्५६॥

भरता५७ऽऽर्ष्टिषेणौ५८रुक्मा-

ङ्गद५९क्षुप६०सुपर्ण६१रन्तिदेव६ वशिष्ठान्६३॥३९॥

प्राचीनबर्हि६४रज६५पुण्डरीक६६मैत्रेय६७पिप्पलाद६८सुनाम्नः६९

वाल्मीकि७० भूरिषेणौ७१

सुषेण७२पृथु७३याज्ञवल्क्य७४सुरथ७५र्चीकान्॥७६॥४० ॥

नील७७परीक्षित७८पुलहौ७९

ऽ ८०च्यवन८१पुलस्त्य८२ कपिल८३गर्गा८४ऽगस्त्यान्८५ ।

जाबालि८६ जामदग्न्यौ८७

कौन हुआ और पीछे कौन हुआ इस)को जानने की शक्ति न होने के कारण सबका ला कथन है, अर्थात् सब ा शामिल कथन करादिया है;पहिले पीछेका क्रम न हीं रक्खा है॥ ३५ ॥ अब परम भक्ति के पात्र भगवत् भक्तों की स्तुति है ॥ ? उत्तानपद २ अङ्ग३असित ४ अनुक ५ इक्ष्वाकु ६ लर्क ७ अमूर्तरय अम्बरी ,९उत्तङ्क१०अङ्गिरा ११ आर्ष्टिषेण १२ ऋचीक १ त्रि १४ अगस्त्य ॥

पर्वत८८मार्कण्ड्य८९शृङ्गि९०कश्यप९१दक्षान्९२॥४१॥
भृगु९३ लोमश९४दुर्वासो९५-
गौतम९६शरभङ्ग९७दाल्भ्य९८कर्दम९९नाम्नः ॥
भारद्वाज१००मयूर-
ध्वजौ१०१नहुष१०२पुरु१०३यदु१०४सुधन्व१०५कुरू१०६ंश्च४२॥
वैवस्वत१०७निमि१०८संजय१०९-
गुह११०सत्यव्रत१११भगीरथ११२हरिश्चन्द्रान्११३।
सरहूगण११४ताम्रध्वज११५
सबालि११६सुग्रीव११७चन्द्रहासा११८ऽक्रूरान्११९ ॥४३॥
चण्ड१२०प्रचण्ड१२१कुमुद१२२
प्रबल१२३बल१२४विनीत१२५पुण्यशील१२६सुशीलान्१२७॥
कुमुदाक्ष१२८पुनीता१२९ख्यौ
जय१३०विजय१३१सुनन्द१३२नन्द१३३भद्र१३४सुभद्रान्१३५।४४
श्रीसूतरोमहर्षण१३६मुग्रश्रवसं१३७तथैव तत्तनुजातम्॥
विष्णुस्वामि१३८समेता-
न्रामानुज१३९निम्बसूर्य१४०वल्लभ१४१माध्वान्१४२ ।४५।
स्वामिश्रीधर१४३जयदे-
व१४४बिल्वमङ्गल१४५गजेन्द्र१४६जाम्बवं१४७दादीन्॥
कमला१४८वाणी१४९धरणी१५०
सती१५१द्रुपदजा१५२मदालसा१५३शतरूपाः१५४॥४६॥
कुन्ती१५५सुनीति१५६विन्ध्या-
वलि १५७शबरी१५८याज्ञिकद्विजातिपत्न्य१५९श्च॥
इत्यादीन्प्रह्वशिरा वन्दे श्रीवैष्णवे महस्युपरक्तान् ॥ ४७ ॥

१अक्रूर २ नामवाले ३सूतवंशीय चारणों के पुरुषा रोमहर्षण नामक ४उग्रश्रवा ५तैसेही रोमहर्षण के पुत्र (उग्रश्रवा) को ६ रामानुज७ जाम्बवान् आदि को८य-ग्निहोत्रि ब्राह्मणों की स्त्रियों को ९ इन को आदि लेकर तेजोरूप विष्णु भगवान् के स्वरूप में तत्परों को सिर झुकाकर नमस्कार करता हूं ॥ ४७ ॥

पौर्वापर्यज्ञाने दुर्निर्णये समानधर्म्मोद्देशः ॥
अन्यानपि भक्तजनानाधुनिकान्पञ्चमेऽमयूखे नंस्ये॥४८॥

उपगीतिः ॥

द्रुहिण१दधीचि२कलानिधि३कूष्माण्डक४तरु५भृङ्गिरिटीन्६।
गाधेय७पुष्पदन्तौ८लङ्केश्वरं९बाण१०माल्यवतः११॥४९॥
मनु१२दात्तेय१३पतञ्जलि१४कात्यायन१५भागुरि१६वशिष्ठान्१७
श्रीदुर्गा१८भौमासुर१९नागोत्तमकम्बलाँ२०ऽश्वतरान्२१॥५०॥
पन्येक२२कालिदास२३भवभूति२४धाऱेशभोजा२५द्यान्॥
प्रणमामि परमपुण्याञ्छैवे तत्त्वे नियतनिष्ठान्॥५१॥

अथ प्राणकृच्छ्रेप्यचलधर्म्मवृत्तीनां स्तुतिः१७॥ उद्गीतिः॥

स्वायम्भुव१प्रियव्रत२शिबि३नल४पृथु५गय६हरिश्चन्द्रान्७॥
अङ्ग८युधिष्ठिर९सगर१०-
र्त्तध्वज११यम१२रन्तिदेव१३रघु१४भीष्मान् १५ ॥ ५२ ॥
श्रीरामचन्द्र१६रुक्माङ्गदा१७ऽम्बरीषा१८ऽर्जुनाँ१९द्यांश्च॥
अर्त्र्य२०ऽङ्गिरो२१वशिष्ठान्२२
विष्णवा२३पस्तम्ब२४दक्ष२५संवर्त्त २६ ॥ ५३ ॥
शङ्ख२७लिखित२८हारीतान्२९कात्यायन३०याज्ञवल्क्यौ३१र्वान्३२
व्यास ३३ पराशर ३४ गोतम ३५
शातातप ३६ धिषण ३७ शुक्र ३८ बलि ३९ सुकेशान्४० ॥ ५४॥

पहिले कौन हुए और पीछे कौन हुए इसके जानने का निर्णय नहीं होसकता इससे सब बराबर कहेगये हैं अर्थात् इसमें पूर्वापर का विचार नहीं है॥ और भी जो इस समय के भक्त जन हैं उनको पंचम मयूख में नमस्कार करूंगा॥४८॥

१ विभीषण २ पाणिनिमुनि ३ नागों में उत्तम कम्बल और अश्वतर ४धारा नगरी के पति भोज को आदि लेकर ५ परमपुण्यात्मा शिवस्वरूप (शैवमत) में नियम पूर्वक सेवा में तत्पर रहनेवालों को नमस्कार करता हूं ॥५१ ॥

अब प्राणकष्ट में भी अचल धर्म ही है वृत्ति जिन्हों की अर्थात् प्राणान्त क्लेश में भी धर्म को नहीं छोड़नेवालों की स्तुति है ॥ १७ ॥

६ अम्बरीष ७ अर्जुन आदि ८ अत्रि, अङ्गिरा ९ और्व

एक॰ ४१गालव४२ मेधातिथ्या४३ऽऽरुणि४४वेद४५ भर्तृहरीन्४६
शूद्रक४७विक्रम४८भोजा४९नीडे तानद्रिराडचलधर्मान् ॥५५॥

अथर्षिस्तवनोद्देशः १८ ॥ गीति॥ः

भृग्वं१ङ्गिरो२मरीचि३क्रतु४पुलह५पुलस्त्य६नारद७वशिष्ठान् ८॥
पाणिनि ९ कपिल १० कणा॰ान् ११
गोतम १२ जैमिनि १३ पतञ्जलि १४ व्यासान् १५ ॥ ५६ ॥
गर्गो १६ शनो १७ बृहस्पति १८
दुर्वासो १९ ऽत्रिं २० जमदग्नि २१ शुक २२ दत्तान् २३ ॥
कात्यायन २४ वात्स्यायन २५
कामन्दक २६ याज्ञवल्क्य २७ वाल्मीकीन्२८ ॥ ५७ ॥
प्रापिशलि २९ शाकटायन ३०
भागुरि ३१ वामन ३२ शिलूष ३३ धृति ३४ भरतान् ३५ ॥
चतुरो४ऽप्यथ सनकादीन्३९
कश्यप४०लोमश४१पराशर४२र्चीकान् ४३ ॥५८॥
च्यवना४४ऽगस्त्यो४५तथ्यै४६–
कत४७विश्वामित्र४८कण्व४९परशुधरान्५०
पञ्चशिखा५१सुरि५२गालव५३
कवषो५४द्दालक५५मतङ्ग५६ जाबालीन्५७ ॥ ५९ ॥
वत्सै५८लं५९शालिहोत्रा६०नकृतव्रणा६१पालकाप्य६२कौण्डिन्यान्६३
मेधातिथीद६४ध्मवाहा६५पन्व॰ ६६थर्वारुणा६७सुहोत्र६८मुनीन॥६०
देवल६९पर्वत७०मुद्गल७१पैला७२ष्टावक्र७३गृत्समद७४प्रभृतीन् ॥

---

१ आरुण२इत्यादि पर्वतराज (सुमेरु)के समान अचल धर्मवालों की स्तुति करता हूं
अब ऋषियों की स्तुति का कीर्तन है ॥ १८ ॥

२ भृगु, अङ्गिरा ४ अत्रि ५ और चारों सनकादिकों को भी६ अगस्त्य७ उतथ्य८एकत
९ आ ॰ १०उद्दालक११ऐल१२इध्मवाह१३ आपन्वान्१४ अथर्वा१५ अष्टावक्र
१६इनको आदि लेकर अनेक प्रकार की विद्याओं को उत्पन्न करनेवाले वेद रूपी

नानाविद्याधातून् वन्दे ऽपतांस्त्रयीलतस्तम्भान् ॥ ६१ ॥

अथ ससुरेन्द्रस्तुतिः १९ ॥

विश्वा१दित्य२मरुद्गण३साध्या४भास्वर५तुषित६गणसमेतम् ॥

अन्यैः सुरैरपि युजं सलोकपालं भजे तुरासाहम् ॥ ६२

अथश्रीगुरुस्तुतिः२० ॥ वसन्ततिलका ॥

अन्धावहं मतिमये पतितो बलाद्यै-

र्निष्कासितोऽस्मि सुखसंविदमाशु दत्वा

स्वामिस्वरूपचरणैरनुकम्पयाढ्यै

स्तेषां पदाब्जयुगलं हृदि मे चिरं स्तात् ॥ ६३ ॥

गीतिः ॥

षट्शास्त्रकुसुमभृङ्गा वादपणस्त्रीविभूषितभुजङ्गाः ॥

वेदान्तविषयमूर्तय ईड्यन्ते श्रीस्वरूपगुरुचरणाः ॥ ६४ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ॥

संक्षिप्तं नृपभोजवृत्तिसहितं पातञ्जलं १ माम्मटीं

दुस्तर्क्यां कविपद्धतिं २ लघुतराण्यद्वैततन्त्राणि ३ च ॥

तन्त्रं न्यायकणादतत्त्वमिलितं ४ चैतान्यहं पाठितो

वृक्ष के स्तंभ एसे शुद्धात्माओं को नमस्कार करता हूं ॥ ६१ ॥ अब देवताओं के साथ इन्द्र की स्तुति है ॥ १९ ॥ विश्व, आदित्य, मरुद्गण, साध्य, आभास्वर, तुषित इनगणदेवताओं से और दूसरे भी देवताओंसे युक्त, लोकपालों सहित इन्द्र को भजता हूं ॥ ६२ ॥ अब अन्धकार के गुरु की स्तुति है ॥ बुद्धिरूपी कूप में पड़ेहुए मुझको, दया से भरेहुए जिन गुरु स्वरूप चरणों ने सुख पूर्वक सद्ज्ञान देकर शीघ्र ही बलात्कार से निकाला है उनके दोनों चरण कमल मेरे हृदय में चिरस्थायी रहैं ॥ ६३ ॥ षट् शास्त्ररूपी पुष्पों के भमरे, विवादरूपी गणिकाओं (वेश्याओं) के शोभायमान पति "भुजङ्गो गणिकापतिरिति हैमः" ॥ वेदान्त के विषयों की मूर्ति, ऐसे सरस्वती स्वरूप गुरु चरण स्तुति किये जाते हैं ॥ ६४ ॥ जिनसे राजा भोज की बनाईहुई वृत्ति सहित संक्षेप से योग शास्त्र, मम्मट कृत महाकठिन कविपद्धति (काव्यप्रकाश), छोटे छोटे अद्वैत वेदान्तशास्त्र के ग्रन्थ और न्यायतथा वैशेषिक के तत्वों से मिलाहुआ ग्रन्थ यह सब मैंने पढ़ा उन परमानन्द स्वरूप उदारचित्तवाले गुरु को हर्ष से

यैस्तान्बाढमुदारचेत गुरून्वन्दे स्वरूपालयान् ॥ ६५ ॥

उपजातिः ॥

रामानुजोक्तीड्यधुरप्रचाराः साहित्यरत्नाकरकर्णधाराः ॥
मुमुक्षुसद्बोधपटुप्रकारा जयन्तु तेऽद्वैतमहोपहाराः ॥ ६६ ॥

मालिनी ॥

शिशुचरितरतः प्राग्यैर्द्विषड्ढायनो१२ऽपि
प्रतिपदधिकृतोऽहं शाब्दबोधे१ प्रवीणः ॥
तदनुगणित२कोश३ज्यौतिषं ४ पाठितस्ते
परमगुरव आशानन्दपादा जयन्तु ॥ ६७ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ॥

पश्चाद्वैदिक१लौकिको२भयविधे संपाठितश्छन्दसि६
काव्यान्यप्य७ ततो हयहितं शा स्त्रं मितं नाकुलम् ८ ॥
चाणक्योक्तर९स्तमात्मजनुषः ९शास्त्रं परं शाकुनं१०
तानाशापदपूर्वनन्दचरणानीडे गुरून्संततम् ॥ ६८ ॥

अनुष्टुप् ॥

सन्तोषादिगुणैः पूर्णं पूजिताल्लाहपद्द्वयम् ॥
ईडे मुहम्मदाभिख्यं यावन्यध्यापकं मम ॥

नमस्कार करता हूं ॥ ६५ ॥ वैष्णव संप्रदाय के आचार्य रामानुज की उक्ति (उद्देश्य) का स्तुतियोग्य मुख्य प्रचार करनेवाले, साहित्य रूपी समुद्र के खेवटिये (नाव चलानेवाले) मोक्ष प्राप्त करने की इच्छावालों को सत्य ज्ञान कराने में चतुर, अद्वैत मत ही है बड़ी भेट जिनकी ऐसे वे सर्वोत्कर्ष से वर्त्तते हैं ॥ ६६ ॥ जिनसे लड़कपन के खेलों में लगाहुआ बारह वर्ष का ही मैं व्याकरण में पदज्ञान का प्रवीण अधिकारी हुआ. जिस पीछे गणित, कोश और ज्योतिष पढ़ा. वे परमगुरु आशानन्द के चरण सर्वोत्कर्ष से वर्त्तमान हैं ॥ ६७॥ जिस पीछे वैदिक और लौकिक दोनों ही रीति से छन्द शास्त्र, काव्य, घोड़ों के हितकारी घोड़ों का शालिहोत्र, चाणक्य के कहेहुए तत्त्व (नीति) और मेरा का रचाहुआ शकुन शास्त्र पढ़ा, उन गुरु आशानन्द के चरणों की निरन्तर स्तुति करता हूं ॥ ६८ ॥

संतोषादि गुणों से पूर्ण और अल्लाह के चरणद्वय के पूजनवाले मुहम्मद नाम

वीणावादनसत्तत्त्वं रागतालविवेचनम् ॥
शिक्षितं गायकाद्यस्माद्यवनः सोपि मोदताम् ॥७० ॥
येभ्यः क्षुद्रकला आत्ता मोदन्तां तेपि केचन ॥
नह्यायासमृते शिक्षा तत्स्मृतौ स्यां कुतोऽलसः ॥ ७१ ॥
अथपितृस्तुतिः २१ ॥ गीतिः ॥
अथ वावन्द्मि भवान१चण्डीदानौ२ प्रसूजनयितारौ ॥
यच्छिक्षानुष्ठानान्मया मनुष्याय्यते जडेनापि ॥ ७२ ॥
गुरुजनपरिजनलालनमवेक्ष्य मेऽध्यापने नियतविघ्नम् ॥
अब्दात्संधिविबोधो निजसख्येऽहं निवेदितो गुरवे ॥ ७३ ॥
ये चित्संविदगाधा आत्रेय इवाप्तलाभसंतुष्टाः ॥
तानीड्य तातचरणान्भीष्ममनस्विन उपास आत्मलयान् ।७४।
ये रामसिंहचरणैर्दुर्गतशरणैः सुकृत्समुद्धरणैः ॥
बुन्दीपुराभरणैर्गुरुपदपूज्या जयन्तु विजितरणैः॥७५॥

जो मुझको पारसी पढ़ानेवाले हैं उनकी मैं स्तुति करता हूं॥ (यद्यपि अल्लाह को यवन लोक मूर्तिमान् नहीं मानते इससें पदद्वय होना उनके मत में नहीं होता तथापि काव्य में अमूर्त वस्तु को मूर्तिमान् मानकर बहुत वर्णन होना प्रसिद्ध है)॥ ६९ ॥ जिस गायक (कलावंत) से वीणा बजाने के तत्व और राग ताल के विवेचन की शिक्षा पाई वह यवन भी प्रसन्न रहै ॥ ७० ॥ जिनसे छोटी छोटी कलायें ग्रहण की हैं वे भी कितने ही प्रसन्न रहैं; क्योंकि बिना श्रम के शिक्षा नहीं होती तो उनके स्मरण में मैं कैसे आलसी होऊं ॥७१॥ अब माता पिता भवाना (भवानबाई)और चण्डीदान को अत्यन्त बारम्बार नमस्कार करता हूं कि जिनकी शिक्षा से मैं जड़ भी मनुष्यवत् हुआ ॥ ७२ ॥ कुटुंब के गुरु लोग और सेवक लोगों के लालन (लाड)को मेरे पढ़ने में निरन्तर विघ्न समझ एक वर्ष में संधि ज्ञान होने पर अपने मित्र और मेरे गुरु के मैं आधीन कियागया ॥ ७३ ॥ जो ब्रह्मज्ञान में अथवा और आत्रेय (दत्तात्रेय) की नाईं आप्तलाभ से संतुष्ट, भीष्म के समान विद्वान् उन आत्मज्ञानी स्तुति योग्य पितृ चरण की उपासना करता हूं ॥ ७३ जो अशरणशरण, सत्कर्मियों का उद्धार करनेवाले, संग्राम जीतनेवाले, बुन्दी पुर के भूषण ऐसे रामसिंह के चरणों से गुरु पद करके पूजे गये वे सर्वोत्कर्ष से वर्त्तमान हैं ॥७४॥

अथ पण्डितस्तुतिः २२ ॥

उव्वट१कैयट२मम्मट३वेदान्ताचार्य४वामनाचार्यान् ५ ।
अभिनवगुप्ताचार्यं६ वाचस्पतिमिश्र७शङ्कराचार्यौ८ ॥ ७५ ॥
भट्टकुमारिल९वर्षोपाध्याय१०गुरु११प्रभाकरा१२न्विदिता[1] ॥
लोल्लट१३नायक१४भट्टौ तिमिङ्गिलाचार्य१५वज्रटङ्का१६[2]ख्यौ ।७६।
[3]हरि१७विक्रमार्क१८भोजान्१९परमारा[4]न्वयदिवाकरान्नृपतीन् ॥
हरदत्त२०मण्डना२१[5]ख्यौ मिश्रावु[6]दयनसमाख्य२२माचार्यम् ॥७७॥
हम्मीर२३वैजला२४[7]ख्यौ जयधन्वानं२५ च चाहुवाणनृपान् ।
हरिराम२६शार्ङ्गधर२७जग
दीश२८गदाधर२९शिरोमणि३०समाख्यान् ॥ ७८ ॥
चिन्तामणिं३१ तथैतान् भट्टाचार्योपटङ्किनः षट् च ॥
श्रीशङ्कु[10]३२प्ययदीक्षित३३नारायणशास्त्रि३४नीलकण्ठाँ३५श्च ।७९।
चालुक्यान्[11]वयवारिधिचन्द्रं सोमेश्वरं३६ धराधीशम् ॥
मिश्रोपा[12]ख्याञ्छिवना३७ऽचल३८सचला३९[13]न्छास्त्रिणंगोपालम् ।
रामा४१होबल४२लल्लू४३मन्नु४४जगन्नाथ४५शास्त्रिणश्च तथा ॥
भट्टोजि४६माहिम४७बापू४८नागोजी४९नुपस[14]माख्यया भट्टान् ॥८१॥
गोकुलनाथाचार्यं५० हरिरामं५१ [15]कालियोपटङ्कञ्च ॥
नाम्नाऽथ जगन्नाथं५२ पण्डितराजं त्रिशूल्[16]युपाभिख्यम् ।८२।
नानापाठक५३दुर्वल्याचार्यौ५४वालमं५५तथा भट्टम् ॥
[17]चन्द्रादिं नारायणभट्टाचार्यं५६तथैव सूर्यादिम्५७ ॥ ८३ ॥
भवदेव५८भैरवा५९[18]ख्यौ मिश्रौ जन[19]कात्मजौ महामेधौ ॥

---

१ प्रसिद्धों को २ वज्रटङ्कनामक ३ भर्तृहरि ४ पँवारवंश के सूर्यरूपी राजाओंको ५ मंडननामक ६ उदयनाचार्यनामक ७ वैजलनामक ८ नामवालोंको ९ तैसेही इनऊपरकहेहुए भट्टाचार्यपदवीवालेछःओंको १० श्रीशङ्कु, अप्पयदीक्षित ११ सोलङ्कीवंशरूपीसमुद्रकेचन्द्रमाराजासोमेश्वरको १२ मिश्रहैउपनामाजिनकाऐसेशिवन, अचलऔरसचलनामवालोंको १३ औरगोपालशास्त्रिको १४ भट्टउपनामवालोंको १५ कालियापदवीवालेको १६ त्रिशूली उपनामक को १७ चन्द्रनारायण भट्टाचार्य को १८ नामक १९ जनक के पुत्र बड़े बुद्धिमान्

शङ्कर६०शास्त्रित्र्यम्बक६१शास्त्र्यभिधौ प्राणनाथ६२माचार्यम् ।८४।
बालस्वामि६३समाख्यं शंकरपूर्वं च तर्कवागीशम्६४ ॥
शास्त्र्युपटङ्कख्यातान्दामोदर६५कृष्ण६६काशिनाथाँ६७श्च ।८५।
भट्टसदाशिव६८संज्ञं रसिकवरं शास्त्रिणं गणेशं६९च ॥
जैनाँश्च हेमचन्द्रा७०मरचन्द्रक७१चन्द्रकीर्त्ति७२जिनचन्द्रान्७३ ८६
पाण्डित्याकूपारानशेषदुस्तर्क्यकोटिविस्तारान् ॥
बुधपरिषच्छृङ्गारान्वन्देवाग्वादिनीमनोहारान् ॥ ८७ ॥

अथ गीर्वाणवाक्कविस्तुतिः २३ ॥

श्रीहर्ष१माघ२भारवि३मयूर४धावक५गुणाढ्य६जयदेवान्७ ॥
भूपतिविक्रम८भोजौ९गोवर्द्धन१०कालिदास११धनदेवान्१२।८८।
अरसीठक्कुर१३दीपक१४
सुबन्धु१५भवभूति१६हनुम१७दिन्द्रं१८कवीन्॥
छिन्तम१९लक्ष्मण२०खण्ड
प्रशस्तिकृ२१ह्लिहण२२द्धवं२३मुरारीन्२४ ॥ ८९ ॥
नृपहरि२५नरपतिशूद्रक२६
बाण२७ कुमुद२८राजदेव२९शार्ङ्गधरान्३०
गोविन्दराज३१हरिगण३२
जयमाधव३३सूरवर्म३४शङ्खधरान्३५ ॥ ९० ॥
तरल३६स्कन्ध३७दिवाकर३८
चट३९गणपति४०कान्त४१धावक४२द्रोणान्४३
नर्छु४४सुदर्शन४५ वैट

---

१ नामक २ प्राणनाथ आचार्य ३ नामक ४ शंकरतर्क वागीश ५ शास्त्रि पदवी से प्रसिद्ध ६ नामक ७ रसिकों में श्रेष्ठ ८ जैनी ९ असरचन्द्र १० पण्डिताई के समुद्र, बहुत ही कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसी कोटियों के विस्तार करनेवाले विद्वानों की सभा के शृङ्गार ऐसे सरस्वती के मन को हरण करनेवालों को नमस्कार करता हूं ॥

अब संस्कृत भाषा के कवियों की स्तुति है ॥

११हनुमत्, इन्द्र १२ खंडप्रशास्तिकृत, बिल्हण १३ उद्धव १४ राजाभर्तृहरि

ङ्क४६बिल्वमङ्गल४७कलाकरा४८ग्निशिखान्४९।९१।
दण्डि५०क्रीडाचन्द्र५१क्षेमेन्द्र५२ दरिद्र५३शङ्कु५४रविगुप्तान् ५५।
देवेश्वर५६त्रिवि[illegible]म५७भेरीभाङ्कार५८राजशेखरकान् ५९।९२
चन्द्रामर६०घटखर्पर६१धनञ्जया६२नन्तदेव६३धनपालान् ६४
हरिहरदेव६५विलोचन६६
राघवचैतन्य६७मदन६८कर्पूरान्६९ ॥ ९३ ॥
गोग७०निशानारायण७१वररुचि ७२शङ्कर७३सुकराठ७४हरिवंशान्
कृष्णौ७६च भट्ट१मिश्रौ२रुद्रट७८ यवर्धना७९ऽभिनवगुप्तान्॥९४॥
श्रीशङ्कु८०भट्टनायक८१
लोल्लट८२वामन८३गुणाकर८४दिनकरान्८५ ॥
विश्वेश्वर८६नारायण८७पुरुषोत्तम८८चन्द्रशेखर८९सुबुद्धीन्९० ९५
चराडीदास९१विनायक९२लोचनकार९३ त्रिलोचना९४ ऽमरुकान्९५
गणदेव९६वाक्यराज९७प्रभाकरा९८ऽऽनन्ददेव९९शुकदेवान्१००।
भल्लट१०१वल्लभदेव१०२प्रह्लादन१०३रामदेव१०४विरलान्१०५ ॥
गौडा१०६भिनन्दना१०७ऽच्युत१०८
शक्तिकुमारे१०९न्दुराज११०विष्णुकवीन् १११ ॥ ९६ ॥
विद्याविनोद११२शङ्कर
लिङ्ग११३ऽचल११४मल्लिनाथ११५चौहित्थान् ११६
शाम्भवदेव११७महेश्वर११८
भास्कर११९गोपालदेव१२०हारीतान्१२१ ॥ ९८ ॥
विद्वत्कुटुम्ब१२२तत्सुत १२३
दामोदर१२४सोमनाथ१२५मुचुकुन्दान्१२६ ॥
हरिवर्म१२७कामदेवो१२८
मापतिधर१२९सिंहदत्त१३०शाकल्यान्१३१ ॥ ९९ ॥

---

१ अग्निशिख २ अनन्तदेव ३ यह भी कवि का नाम है *४ अमरु५आनन्ददेव
६ अच्युत७ अचल ८ उपमापति

इसका पूरा नाम अभिनवपादाचार्य है

वल्गु१३२वसुन्धर१३३वराठान्१३४
चालुक्याधीशसोमनाथ१३५नृपम् ॥
कोकिल१३६सीमन्त१३७कवि
प्रकाशवर्षो१३८पमन्यु१३९देवगणान्१४० ॥ १०० ॥
शकवर्म१४१सोमनाथ१४२
प्रदीप१४३नरसिंह१४४राघवानन्दान्१४५
भट्टस्वामि१४६नमघ्या१४७
ऽभिरामपशुपति१४८कुमारदास१४९हरीन् १५० ॥ १०१ ॥
रामेश्वर१५१विद्यापति१५२
रत्नाकर१५३भीमसिंह१५४कुक्कोकान्१५५
तण्डुलदेवन१५६तोशल१५७
शिवदासा१५८ऽवन्तिवर्म१५९नग्नजितः१६० ॥ १०२ ॥
रानक१६१रीमुक१६२परिमल१६३
पुष्पाकर१६४धर्मदास१६५राहुलकान्१६६ ॥
हेतुक१६७दितिरकिशोरा१६८
ऽमृतवर्द्धन१६९वस्तुपाल१७०भानु१७१कवीन् ॥ १०३ ॥
वीजक१७२वल्लासेना१७३
ऽकालजलद१७४लक्ष्मसेन१७५जयगुप्तान्१७६ ॥
उत्पलराज१७७कवीश्वर१७८
लक्ष्मीधर१७९वृद्धि१८०गण्डगोपालान्१८१ ॥ १०४ ॥
हम्मीरं१८२च नरेन्द्रं चहुवाणोच्चकुलचक्रचण्डांशुम् ॥
आनन्दवर्द्ध१८३श्री
पाल१८४कपिल१८५रूद्र१८६धानिक१८७शकवृद्धीन्१८८॥१०५॥
नाथकुमार१८९श्रुतधर१९०

॥ १ सोलङ्की क्षत्रियों का पति राजा सोमनाथ २ उपमन्यु ३ अभिराम पशुपति ४ अवन्ति वर्म ५ अमृतवर्द्धन ६ अकालजलद ७ उच्च कुलवाले चहुवाण गण का सूर्य्य राजा हम्मीर

कमलायुध१९१कृष्णपिल्ल१९२हर्ष१९३कवीन् ॥
बाण१९४मयूर२वपुर्जौ१९५
सिङ्गपिदि१९६सार्वभौम१९७वटु१९८रुद्रान्१९९ ॥१०६॥
धोयी२००न्द्रसिंह२०१लोणित२०२
सत्कव्या२०३काशपोलि२०४भोहरकान्२०५
धाराकदम्ब२०६गोपा
दित्य२०७शिवस्वामि२०८दुर्गमनसो२०९ऽपि ॥१०७॥
नृपसातव हसचिवं कालापनिमित्तशर्ववर्माणम्२१० ॥
यत्प्राकृतनृगिराढ्या त्यक्ता गीर्वाणगीर्गुणाढ्येन ॥
रुदतीपण्डित२११चम्पक२१२
भिक्षाटन२१३दग्धमरण२१४मेदाऽऽख्यान२१५ ॥
कर्णोत्पल२१६शशिवर्द्धन२१७
मालवरुद्रा२१८ऽभिनन्दनो२१९ड्डयनान्२२०॥१०९॥
सर्वज्ञवासुदेवा२२१ऽद्भुतपुण्य२२२भनन्दवर्म२२३कलश२२४कवीन्
मुक्तापीड२२५कलाकर२२६राघवदेवा२२७न्हवत्सराजाँ२२९श्च।११०

१ इन्द्रसिंह २ राजा सातवाहन का मंत्री कालापव्याकरण का कारण शर्ववर्मा जिसको नमस्कारकरता हूं॥ जिस शर्ववर्मा के कारण गुणाढ्य कवि ने प्राकृत और देश भाषा युक्त संस्कृतभाषा का बोलना छोड़ दिया, यह कथा इस प्रकार हैकिराजासातवाहनने व्याकरणपढना चाहा जिसके लियेगुणाढ्यने कहा कि छःवर्ष में पढ सकोगे;जिस पर शर्ववर्मा ने छःमास मेंही पढादेने की प्रतिज्ञाकी तब गुणाढ्य ने कहा कि यदि तू राजा को छः मास में व्याकरण पढ़ादेवे तो प्राकृत और देश भाषा युक्त संस्कृत का बोलना ही छोड़दूं. इस पर शर्ववर्मा ने अपने इष्ट स्वामिकार्तिक का आराधन करके उनसे "कालापव्याकरण" प्राप्त किया और उसने राजाको पढ़ाकर छः मास में ही अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण की तब गुणाढ्य ने उक्त तीनों भाषाओं का बोलना छोड़कर पैशाची भाषामें सात लाख श्लोकों का "बृहत्कथा" नामक ग्रंथ बनाया. जिसमें से छः लाख श्लोक तौ सातवाहन पर अप्रसन्न होकर गुणाढ्य ने अग्नि में पत्रे होम दिये. और एकलाख श्लोक बाकी रहे जिन पर"कथासरित्सागर"नामक ग्रंथ संस्कृत में बना है।१०८।३ मेदनामक ४ अभिनन्द ५ उड्डयन ६ अद्भुतपुण्य ७ राघवदेवनामक

श्रुतदेव२२९धर्मकीर्त्ति२३०श्वेताम्बरचन्द्र२३१देवदासा२३२[1]न्प्रान्
कविकमनं च महीपतिपदे[2]पूर्वकमण्डलीक२३३नामानम् ॥१११॥
जितकोटि२३४जीवनागत२३५
महामनुष्या२३६[3]हवैद्यभानू २३७[4]ग्रान्२३८ ॥
वाग्वज्र२३९ धर्मवर्द्धन२४०
तर्कु२४१यथावर्म२४२शर्वदासाँ२४३श्च ॥ ११२ ॥
कुशकोटि२४४जीवनायक२४५
भासा२४६मिधॆचारुमूर्त्ति२४७हरिचक्रान्२४८ ॥
नेत्रत्रिभाग२४९निद्रादरिद्र२५०जघनस्थलीघटक२५१नाम्नः।११३।
कविवैद्यनाथ२५२कविदे
वबोधि२५३कविनागवैद्य२५४कविशम्भून्२५५ ॥
श्रीमातङ्गदिवाकर२५६सूताम२५७जलम्भरादिवसुदेवान्२५८।११४।
मार्त्तण्ड२५९प्राकारप्रशस्ति१यूपप्रशस्ति२कर्त्तॄ२६१श्च
नवमालि२६२महादेव२६३
ज्ञाना[6]दिकवर्म२६४वीर२६५धरणीधरान्२६६ ॥११५॥
सूँ[7]तकुलान्तर्म्मिश्रणकुलपरपुरुषं च चण्डकोट्या[8]ह्वम्२६७
अन्याँ[9]श्चविन्ध्य२६८वेहड२६९
वलि२७०कनक२७१हराँ२७२श्च सूतवंशीयान् ॥ ११६ ॥
ब्रह्मा[10]ण्डबालभारतविधिं क्षपणकं सुकव्यमरचन्द्रम्२७३ ॥
मागधकुलमार्त्तण्डं माधव२७४नामानमुत्कटोक्तिवहम् ॥ ११७
रामिल२७५सोमिल२७६संज्ञौ[11] कावपि[12] भोजाश्रयावित वर्णौ ॥

१ देवदासनामक २ महीपतिमण्डलीक नामक श्रेष्ठ कवि को ३ महामनुष्य नामक ४ उग्र ५ भासानामक ६ ज्ञानवर्म ७ सूत (चारण) कुल के भीतर मीशण कुल के पुरुषा (बडेरे) चण्डकोटि नामक को ८ और भी ९ चारणकुल के कवियों को १० ब्रह्माण्ड सदृश विचित्र रचनावाले बालभारत नाम काव्य के ब्रह्मा (रचनेवाले) जैन सत्कवि अमरचन्द्र और प्रबल चमत्कारवाली उक्ति के कहनेवाले मागधकुल के सूर्य माधव कवि को नमस्कार करता हूं. ११नामवाले १२ कोई राजा भोज के आश्रित अन्यवर्णवाले

चोरमराल२७७शकुन्तौ२७८ह्लादितधारेश्वरौ कवी कौचित् ॥११८॥
राजचन्द्रमितिकृतेः कविं कुलालं२७९प्रसन्नभोजहृदम् ॥
कीर्तिप्रतान२८०वैतालिकमपिविक्रम१वडाह२कीर्त्तिकरम् ॥११९॥
भानुमती२८१लीलावत्य२८२ऽभिरूपा२८३ भोजभूमिपतिर्महिषीः॥
नृपविष्णुशक्तितनयां राज्ञीं १८४ श्रीसातवाहनन्नृपस्य ॥ १२० ॥
कौलीं च रथस्यैकं चक्रमिति गिरा कुटुम्बविबुधवधूम्२८५ ॥
कर्वयित्रीं च विपक्षश्रीकण्ठ इति स्नुषां२८६बुधां तस्याः ॥१२१॥
तस्या एव तनूजा२८७मलङ्कृतिव्यङ्ग्यविस्फुरद्वर्णाम् ॥
भोजप्रतापगाथां ग्रथयित्रीं कांचन द्विजां२८८वृद्धाम् ॥ १२२ ॥
मण्डनमिश्रप्रमदां२८९षण्मास्यां स्व मिशंकरेणा जिताम् ॥
कविमाणिमाघकलत्रं२९०धाराधवपूज्यपाटवप्रातिभाम्२९१॥१२३॥

(१)प्रसन्न किया है धार के राजा भोज को जिन्हों ने ऐसे चोरमराल और शकुन्त नामक कोई दो कवि(२)"राजचन्द्रम्"*इस काव्य से राजा भोज के हृदय को प्रसन्न करनेवाला कुम्हार जाति का कवि; विक्रम और वडाह नामक राजाओं की कीर्ति करनेवाला (३) कीर्तिप्रतान नामक भाट ॥ ११६ ॥
(४) अभिरूपा (५) राजा भोज की रानियां (६) राजा विष्णुशक्ति की पुत्री जो श्रीसातवाहन नामक राजा की रानी थी ॥१२०॥ "रथस्यैकं** चक्रम्" इस पद से राजा भोज की समस्या की पूर्ति (७) करनेवाली कुटुम्ब नामक पण्डित की स्त्री और"विपक्षश्रीकण्ठः"**इस काव्य(८) से समस्यापूर्ति करनेवाली उसी के बेटे की बहू पंडितानी ॥ १२१ ॥ अलंकार और व्यङ्ग्य से भरे हुए अक्षरों से बोलनेवाली (९) उसी की बेटी, और भोज के प्रताप की कथा को रचनेवाली कोई वृद्ध ब्राह्मणी ॥ १२२ ॥ (१०) मण्डनमिश्रकी स्त्री जिसको छः महीनों के शास्त्रार्थ से श्रीशंकराचार्यने जीता था; और(११)धारा

* राजचन्द्रं समालोक्य त्वां तु भूतलमागतम् । रत्नश्रेणिमिपान्मन्ये नक्षत्राण्यभ्युपागमन् ॥

** भोज ने यह समस्या दी थी" क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महता नोपकरणे" जिस को उस पण्डित की स्त्री ने तो-

" रथस्यैकं चक्रं भुजगयमिताः सप्त तुरगा निरालम्बो मार्गश्चरणरहितः सारथिरपि ।
रविर्यात्येवान्तं प्रतिदिनमपारस्य नभसः क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे ॥"

और उसके पुत्र की स्त्री ने —

विपक्षश्रीकण्ठो जडतनुरमात्यः शशधरो वसन्तः सामन्तः कुसुममिषवः सैन्यमबला ।
तथापि त्रैलोक्य जयति मदनो देहरहितः क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महता नोपकरणे ॥

इस प्रकार इन दोनों ने समस्या पूर्ति की थी. इस प्रकरण को विशेष देखना हो तो भोजप्रबन्ध में देखो.

रदनीं२९२सीतां२९३विज्जां२९४विकटनितम्बां चमोरिकां२९५विजयाम्
कमलां२९७सुगन्धदीपां२९८
विरोचनां२९९ फल्गुहस्तिनीं३००ऱ्हदिनीम्३०१ ॥ १२४ ॥
एताँ द्विजवरजातीर्निर्मात्रीः काव्यमुत्तमोत्तमकम् ॥
जैनीं कवयच्छीलां शीलां ३०२भट्टारिकां च वाक्श्रीलाम् ।२२५।
कृषिकसुतां३०३कवयन्तीं गायद्भिर्भोजकीर्त्तिमिति कांचित् ॥
कामपि मालाकारीं३०४ समुन्नतघनेत्यतर्क्यकाव्यकरीम्॥२२६॥
कां त्वं पुत्रीत्युक्ते नरेन्द्रलुब्धकवधूरदः काव्यम् ॥
श्लोकेन सपदि दधतीं तोषितभोजां महामृगयुदयिताम्३०५।२२७।
धाराधववितितीर्षां पुष्णान्तीं शिल्पिसुन्दरीं३०६ कांचित् ॥
कामपि कुलालजायां३०७सूक्तिसहायां पटुस्मृतप्रायाम् ।१२८ ॥
वेश्यां च विलासवतीं३०८कविकामुककालिदासकमनीयाम् ॥
प्रियदुस्थचारुदत्तां गुणानुरागां वसन्तसेनां३०९च ॥ १२९ ॥

नगरी के पति से पूजी गई है सुन्दर बुद्धि जिसकी ऐसी कविशिरोमणि माघ की स्त्री ॥ १२३ ॥ (१) ये सब ब्राह्मण जाति की उत्तमोत्तम काव्य करनेवाली और सरस्वती ही है लक्ष्मी जिसके ऐसी भट्टारिका पदवीवाली, और कविता करनेवाली शीला नाम की जैन मत की स्त्री ॥ १२५ ॥ भोज की कीर्ति गानेवालों से कवि पद को पायीहुई करषे (२)की कोई पुत्री. " समुन्नतघन* " इस अतर्क्य काव्य को करनेवाली कोई मालिन ॥ १२६ ॥ ३हे बेटी तू कौन है,**ऐसा पूछने पर,हे राजा मैं शिकारी की स्त्री हूं इस काव्य को शीघ्र श्लोक से रचकर भोज को प्रसन्न करनेवाली बड़े शिकारी की स्त्री ॥ १२७ ॥४ धारापति की काव्यतृष्णा को मिटानेवाली कोई कारीगर की स्त्री और कोई सुन्दर उक्ति ही है सहायक जिसके ऐसी सुन्दर याद रखनेवाली कुम्हारी ॥१२८॥ कवियों में कामी कालिदास की रमणी(५)विलासवती नाम की वेश्या; और गुणों से प्रीति रखनेवाली प्रियदुस्थचारुदत्ता (दुर्गतिवाला

---

*" समुन्नतघनस्तनस्तवकचुम्बितुम्बीफलक्वणन्मधुरवीणया विबुधलोकवामभ्रुवा ।
त्वदीयमुपगीयते हरकिरीटकोटिस्फुरत्तुषारकरकन्दलीकिरणपूरगौरं यशः ॥

**" का त्वं पुत्रि नरेन्द्र लुब्धकवधूर्हस्ते किमेतत्पलं क्षामं किं सहजं ब्रवीमि नृपते यद्यस्ति ते कौतुकम् ।
गायन्ति त्वदरिप्रियास्तु तटिनीतीरेषु सिद्धाङ्गना गीतान्धा न तृणं चरन्ति हरिणास्तेनामिषं दुर्बलम् ॥

इस प्रकरण को सविस्तर देखना हो तो भोजप्रबंध मे देखो.

इतिमुखकविजनवारान्स्फूर्तिस्फारान्गिरामलंकारान् ॥
कृतिविजितामृतधारान्नमाम्युदारान्सहृन्मनोहारान् ॥१३० ॥
के न बभूवुर्भूपा वितरणशीला बुधा विजेतारः ॥
ये कविसूक्तिनिबद्धास्ते ह्याकल्पं स्थिता यशोवपुषः ॥१३१ ॥
पुष्करपरिमलगुणिगणा आशुगकविकलनविहितविस्ताराः ॥
शगिरसिकरोलम्बान्प्रीणात्यलमननिलाश्रयो नारात्॥ १३२॥
येषां गुणा जनानां कविभिः सौभाग्यशालिनो न कृताः॥
ते बाल्याद्विधवाया वक्षोजाविव सुधोद्गतास्तेषाम् ॥ १३३ ॥
शण्ढवधूशृङ्गारः कुहरान्तःशून्य इद्धकासारः ॥
कुब्जाया इव हारः कविकलनबहिष्कृतो गुणाऽऽगारः ॥१३४॥
प्राणोनानपि पुंसो ये प्रत्युज्जीवयन्ति वरवाचा ॥
लोकोत्तरपरमेष्ठिन ईडे तान्भारतीभटान्सुकवीन् ॥ १३५ ॥

॥ दोधकम् ॥

चारुदत्त है प्रिय जिसका*) वसन्तसेना नामवाली ॥ १२९ ॥ इत्यादि विशाल स्फुरणवाले वाणी के भूषण, काव्य से जीती है अमृत की धारा जिन्हों ने ऐसे सज्जनों का मन हरण करनेवाले उदार कविजनों के समूहों को नमस्कार करता हूं ॥ १३० ॥ बड़े दानी, पण्डित, युद्ध जीतनेवाले भूपति कितने न हुए अर्थात् बहुत हुए, परंतु जो कवियों की सुन्दर उक्ति में भलीभांति बंधे हैं वे ही प्रलय काल तक यश रूपी शरीर से स्थित हैं ॥ ११३ ॥ पवन रूपी कविरचना (काव्य) से विस्तार को पाये हुए कमल के सुगन्ध रूपी गुणी लोग भ्रमररूपी अनुरागवाले रसिकों को पूर्णरीति से प्रसन्न करते हैं. कमल का गंध पवन के आश्रय विना भ्रमरों को शीघ्र प्रसन्न नहीं करसकता ॥१३२॥ जिन मनुष्यों के गुण कवियों से शोभित नहीं किये गये उनके वे गुण बालविधवा के स्तन के समान व्यर्थ ही उत्पन्न हुए हैं ॥ १३३ ॥ जो गुणों से भरा भी है परंतु कवियों के शब्दों से बाहर हैं वह नंपुसक की स्त्री के शृंगार, किसी गहन स्थान में भरा हुआ शून्य निर्मल तालाव और कुबरी के हार के समान है ॥ १३४ ॥ प्राणों से छूटे हुए पुरुषों को भी जो श्रेष्ठ वाणी से संजीवन करते हैं उन भारतीभट श्रेष्ठ कवि रूप अलौकिक ब्रह्माओं की स्तुति करता हूं।

---

* शकार नामक एक राज पुरुष को छोड़कर वसन्तसेना नामक वेश्या चारुदत्त नामक एक दुर्गत ब्राह्मण के गुणों पर आसक्त थी, जिसकी सविस्तर कथा मृच्छकटिक नाटक में है.

यो न कवीरितसंगतनामा नार्थिजनाय य इष्टसुदामा ॥
योऽमरवाचिनपण्डित आस्ते तुन्दमृडुद्यमवद्विफलास्ते ॥ १३६ ॥

अथ सामान्यतः सन्तोषिस्तुतिः २४ ॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥

सिद्धीरष्ट८निधीन्नवा९ऽमरगिरिं१कामद्रु१तम्या२मणी३-
न्मन्यन्तेऽपि तृणं पुराणगपदं१सर्वाऽवनीशासनम्२ ॥
ये चाऽश्नन्तिदिनत्रये३ऽपि परुषं शाकं तु नो याचितुं
द्रव्याऽन्धा दधते मनो मयि कृपां तन्वन्तु ते तोषिणः ॥१३७॥

अथ सामान्यत उदारस्तुतिः २५ ॥

दारिद्र्याऽभिहता१ हि पात्रपरमा२ यच्छेतिसम्भाषिणो१
विद्यावन्त२ इतस्ततः स्वभवनात्प्राप्तं१ हि देयं२ परम् ॥
येषामप्यसवः परोपकृतये सद्यो भवन्त्युज्झिता
ह्रीतान्यऽन्त्यजनोद्यतान्विनतितान्मान्यान्वदान्यान्भजे ॥ १३८ ॥

अथ सामान्यतो धीरस्तुतिः २६ ॥

यद्यप्याप१दसुप्रणाशनपरा वा संप२दार्भुक्षिकी
स्याद्येषां न तदप्यशोभिवदना१ ये नाऽप्यधिश्रीमुखाः २ ॥
ये सत्कर्मणि वज्रनिष्ठुरशिलालेखानिसर्गा नरा-
स्ते नन्दन्तु शितक्षुराग्रपथिका धैर्याध्वरे दीक्षिताः ॥ १३९ ॥

जिन के नाम कवियों की उक्ति में संगत न हुए, जिन्हों ने याचकों को वांछितदान नहीं दिया और जो संस्कृत में विद्वान् नहीं हैं वे आलसी के उद्यम समान विफल हैं ॥१३६॥ आठों सिद्धि, नवनिधि, सुमेरु, कल्पवृक्ष, कामधेनु, चिन्तामणि, ब्रह्मपद और संपूर्ण पृथिवी के आधिपत्य को तृण समान माननेवाले और तीसरे दिन सूखा शाक खाकर रहने पर भी धन करके अन्ध हुए मनुष्यों से मांगने को मन भी नहीं करते ऐसे संतोषी मेरे ऊपर कृपा करें॥१३७॥ जिनके "देओ" ऐसा कहनेवाले दरिद्री और विद्यावान् ही परम पात्र हैं, घर में इधर उधर जो कुछ मिलजावे वही देने योग्य है, और परोपकार के अर्थ तुरंत प्राण देनेवाले, लज्जित हुए हैं अन्य त्यागी लोग जिनसे ऐसे उदारों को नम्रता से भजता हूं॥ १३८॥ यदि प्राणों का हरण करनेवाली आपदा आपड़े, अथवा इन्द्र की संपदा आजाय, परन्तु जिनका मुख आपदा में शोभाहीन न होवे और संपदा में अधिक शोभावाले न होवें, जिनका स्वभाव सत्कर्म में वज्र के कठोर शिलालेख

अथ सामान्यतो गम्भीरस्तुतिः २७ ॥

कुक्षौ कद्वदवा१ग्विषं२क्व च खलोक्त्यौ१र्व्वः२परिस्रु१त्क्वचि-
द्धेयाऽपकृति२स्तिमिङ्गिलगिलः१ क्वाऽरुन्तुदाऽवद्यगीः२ ॥
द्रुह्य१न्मन्दर२मन्थतोऽप्यमथितस्थैर्य्या इमान्यान्धवी-
छायावद्दधतो जयन्तु गहनाऽऽकूताऽभिभूताऽऽपदः ॥ १४० ॥

अथ सामान्यतः शूरस्तुतिः २८ ॥

दाक्षाय्या१ऽऽतपवारणाः२ परिचलच्चिल्लो१च्छलच्चामरै२-
श्चण्डद्वीपि१भटै२र्विभीषणवृक१द्वाःस्थै२रुमा१धीसखैः२ ॥
प्राणां१हत्य२सृगा१ऽऽभिषेक२सुभगैर्युद्धमि१भद्राऽऽसने२
वन्द्यास्ते भुजभङ्गिभुक्तभुवना यैः सार्व्वभौमाय्यते ॥ १४१ ॥

अथ सामान्यतः कारुणिकस्तुतिः २९ ॥

ये दारिद्र्यजिता१न्खलैरपकृता२न्भूमीभृता दण्डितां३-
स्तेनैराकुलिता४न्रुजाऽप्यधिगता५न्कर्णेजपैः कुन्थितान् ६॥
इत्याऽऽध्यान्नवनीतनम्रहृदया वीक्ष्यैव तेभ्योऽमिता-
मार्त्तिं स्वान्तनिङ्गितं विदधतेऽलं तान्समन्तान्नुमः ॥ १४२ ॥

के समान (अविचल हैं) वे तीक्ष्ण छुरा (पाछने) के अग्र पर चलनेवाले धीरज यज्ञ में दीक्षा लिए हुए धीर पुरुष आनन्द को प्राप्त हों। १३६। समुद्र के मध्य स्थान रूपी उदर में कुत्सित वचन रूपी विष, कहीं खलों के वचन रूपी बड़वानल, कहीं वेधन करनेवाले अपकार रूपी मदिरा, मर्मवेधी निंद्य वाणी रूप बड़े मगरमच्छ, इन सब को कुए की छाया समान भीतर ही धारण करनेवाले शत्रु रूपी मंदराचल मंथन दंड से भी नहीं मथागया स्थैर्य जिनका ऐसे गंभीर अभिप्राय से आपदा को दबानेवाले सर्वोत्कर्ष से वर्तमान हैं। १४०। गिद्ध ही हैं छत्र जिनके, ऊपर उडनेवाली चीलहें ही हैं चमर जिनके, उन्मत्त हाथी ही हैं भट उमराव जिनके, भयानक भेड़िये ही हैं द्वारपाल जिनके, कीर्ति ही है मंत्री जिनके, प्राणों का दान देकर रुधिर का अभिषेक ही है ऐश्वर्य जिनके ऐसे जो युद्धभूमि रूप सिंहासन पर चक्रवर्ती की भांति आचरण करते हैं वे भुजाओं से कुटिलता का नाश कर भुवनों को भोगनेवाले वन्दनीय हैं ।१४१। दारिद्र्य से जीतेगये, दुष्टों ने जिनका अपकार किया, राजा ने दण्ड दिया, चौरों से घबराये, रोग से ग्रसित और चुगलखोरों से डरे ऐसों को देखते ही जो माखन समान कोमल हृदयवाले उनके अत्यन्त दुःख को अपने अन्तःकरण

अथ सामान्यतः सत्यवाक्स्तुतिः ३० ॥

प्राणत्राणहरं१ वसुक्षयकरं२वंशव्यथाविस्तरं३
भृत्याऽवाप्यपटच्चरं४ दृढदरं५दाहाऽऽपदग्रेसरम् ६ ॥
बाधादुर्वहवासरं७भ्रमिभरं८क्षुत्क्षाम्यजीर्णज्वरं९
बाढं बिभ्रति सत्यमीदृगपि ये तेभ्योऽग्रणीभ्यो नमः ॥ १४३ ॥

अथ सामान्यतो मनस्विस्तुतिः ३१ ॥

यत्पारीन्द्रपृदाकुव१न्निरनिलस्नेहाशव२त्सुप्तव३
न्नौव४त्कङ्कमुखाऽऽत्तशस्त्रव५दलं संतृप्तव६त्स्वश्ववत्७ ॥
नस्योतोक्षव८दान्धवाम्बुव९दृजुस्त्रीव१०द्भजद्भक्तव११
च्छन्दं ये दधते मनोऽनवरतं तेभ्योपि मे वन्दना ॥ १४४ ॥
इत्यादीश्वर१वेद२धर्म३सुमुनि४प्रोक्तैः सदा सत्पथै-
र्ये गच्छन्ति विशेषवाञ्छितविदः सौशील्यसंस्कारिताः ॥
पीडापावकपूतचित्तपुरटाः पुण्याः प्रसन्नाः परा-
स्तानीडे शुभशास्त्रशाणनिशितान्प्रह्वोऽखिलान्पावनान् ॥ १४५ ॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ स्वरूपा-

में निर्विकार भरपूर भरलेते हैं उन सब को नमस्कार करता हूं । १४२ । प्राणोंकी रचा का हरण करनेवाला, धन नाश करनेवाला, वंश में पीड़ा फैलानेवाला, वेतन (तनखा) में फटे वस्त्र दिलानेवाला, बडा भयानक दाह रूप आपत्ति का अगुवा कि जिस पीड़ा से दिन निकलना कठिन है, सदा भ्रमण करानेवाला और चुधा से दुर्बल होना ही है जीर्णज्वर जिसमें ऐसे कठिन सत्य को भी जो दृढ़ता से धारण करते हैं उन अग्रणियों को नमस्कार है । १४३ । जो अजगर सर्प के समान, बिना वायु के दीपक समान शयन कियेहुए की भांति नाव की नांई, संडासी में पकड़ेहुए शस्त्र की भांति, परिपूर्ण तृप्त हुए की-भांति, सरल स्त्री के समान, भजन करनेवाले भक्त के समान ऐसे चरित्र के करनेवाले मन को निरन्तर धारण करते हैं उनके अर्थ भी मेरा नमस्कार है । । १४४ । इत्यादि ईश्वर, वेद, धर्म और मुनियों से कहे हुए मार्गों से जो सदा चलते हैं और विशेष वांछित (ब्रह्म) को जानने वाले सुन्दर शील से संस्कार हुआ है जिनका, पीड़ा रूप अग्नि से पवित्र हुए हैं चित्त रूप सुवर्ण जिनके ऐसे पवित्र प्रसन्न जो हैं उन सुन्दर शास्त्र रूपी शाण से घिसे हुए संपूर्ण पवित्रों की नम्रता पूर्वक स्तुति करता हूं॥

दिस्तवमङ्गलाचरणं नाम प्रथमो मयूखः ॥ १ ॥

अथ केचित्कवित्वे प्राप्तावसरा अज्ञातशब्दशुद्धयोऽनधीतच्छन्दःशास्त्राः प्रायेगुणदोषलक्षणलक्ष्यविरोधिनो बहुशोविप्लुतविपर्य्यस्तलक्ष्यव्यङ्ग्याः क्वापि विरुद्धवाच्याश्च्यावितान्त्याऽनुप्रासाः पिङ्गलभाषोपाभिख्यदिल्लीग्वालेरान्तर्देशीयलोकभाषाकवयश्चापि कवित्वकर्त्तृत्वेन प्रस्तूयन्ते ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

॥ रोला ॥

केसव१कवि सुचिरसिक सहित बलिभद्र२ सहोदर ।
बिप्र बिहारी३ बहुरि काव्य सुचि सत्तसईकर ॥
काव्य रसायन काव्यकार देव४हु द्विजकुल जंनि ।
कुलपति५ माथुर रसरहस्य१ संग्रामसार२ रवनि ॥ १ ॥

षट्पदी ॥

कविवल्लभ१ रु सभाप्रकास२ कविता लच्छनजुत ।
कित्रैं वह कविमुख्य निपुन हरिचरनदास६ जुत ॥
कवि भूखन७ मतिराम८ त्यौंहि सोदर चिंतामनि९ ।
नरउरपति नृपरामसिंह १०कूरम सुचिरसखनि ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू (" गद्यपद्यमयी वार्णा चम्पूरित्यभिधीयते । " अर्थात् जिस ग्रन्थ में गद्य और पद्य रूप वाणी होवे उस का नाम चम्पू है) के पूर्वायण के प्रथम राशि में परब्रह्म आदि की स्तुति रूप मंगलाचरण का पहला मयूख समाप्त हुआ ॥ १ ॥ अब कितनेक, कविता करने का मिलगया है समय जिनको, शब्दों की शुद्धि को न जाननेवाले, नहीं पढ़ा है छंद शास्त्र जिन्हों ने, प्रायः काव्य के गुण दोष और लक्षण लक्ष्यों के शत्रु, बहुत ही खंडबंड और उलट पलट करदिये हैं लक्ष्य और व्यङ्ग्यों को जिन्हों ने, कहीं विरुद्ध प्रतिपादन करनेवाले और छोड़ दिये हैं अन्त्यानुप्रास जिन्हों ने, ऐसे दिल्ली और गवालियर के बीच के देशों की पिंगलभाषा नामक लोकभाषा के कवि भी कविता मात्र करने के कारण स्तुति कियेजाते हैं ॥

१ शृङ्गार रस का २ सगा भाई ३ उत्पत्ति ४ रसरहस्य और ५ संग्रामसार नामक दोनों ग्रंथों की ६ खान ७ लक्षण ८ स्तुतियोग्य ९ छोटा भाई १० शृंगार रस की खान

कवि नृपकिसोर११सोपुरपुर पै छत्र गोरकुल उद्धरन ।
सामंतसिंह१२ अरु विरुद दुव२।१३ नगर कृष्णगढ धरनिर्धन ॥२॥
उदयनाथ१४ कवि कान्यकुब्ज कौसिकमुनि बंसिय ।
जिहिं कवीन्द्रउपटंक बुद्ध दिय ॥
द्विज कविदेवीदास१५ नाथ१६ ठकुर१७ किसोर१८ जिम
दुल्लह१९ घनआँनंद२० इन्द्रजित२१ बुंदेलहु तिम ॥
आलम२२ निवाज२३ पुष्कर२४ मधुप२५,
पुखी२६ ईस२७ सुकदेव२८ पुनि ।
वृंद२९ रु अतीत३० सूरति३१ बदन३२
चटुल३३ चतुर्भुज३४ चिमन३५ चुनि ॥ ३ ॥
भूपति कवि भगवंतसिंह३६ जसवंतसिंह३७ दुव २
कालिदास३८ अरु नीलकंठ३९ धनपति४० गरीब४१ धुव॥
कासीराम४२ कपूर४३ [illegible]ल४४ रघुराय४५ हरीहर४६
श्रीपति४७ कासीनाथ४८ [illegible]सिंह४९ सुन्दर५० बंसीधर५१ ॥
कविराम५२ सुखारख५३ गोप५४ कवि उद्धवराम५५ जमाल५६ अथ
मण्डन५७ मुकुन्द५८ मीरन५९ मदन६०
कृष्ण६१ नाम दंगडीसुकथ ॥ ४ ॥
गनिका श्लेषविगुंफ धनी सेनापति६२ त[illegible]व ।
रसपटु दलपतिराय६३ बनिक श्रीमालबंसभव
देवीराम६४ गुलाबराय६५ कविराय६६ रु रसखानि६७
बेनीराम६८ रु बासुदेव६९ नेही७० रु सिरोमनि७१
सिवरत्न७२ सिवाईराम७३ पुनि माथुर राधाकृष्ण७४ अरु
निर्मल७५ निहाल७६ रसराज७७ कवि

---

१ पनि २ गौड़ कुल के क्षत्रियों का उद्धार करनेवाला ३ विड़दसिंह ४ राजा [illegible]) ५ पदवी ६ बुधसिंह ने (७आनन्दघन ८ गणिका के [illegible] उस गणिका का पति १० वैश्य (बनिया) ११ श्रीमालियों के वंश से उत्पन्न १ रसखान

दयाराय७८ देवक७९ अगरु८० ॥ ५ ॥

रसिकवर[1] हृदयानंद८१ त्यौंहि विद्यारामा८२ऽऽहुयें[2][3] ।
रामकृष्ण८३ रसपुंज८४ धीर८५ हरिराय८६ धनंजय८७
महाकवि८८ रु कल्ल्यानपाल८९ धनसुख९० पुरान९१ पुनि
नल९२ कलंक९३ हरनाथ९४ गुजदेव९५ रु गनेस९६ गुनि
सिवपाल९७ धराधर९८ संभु९९ कवि जगन्नाथ१०० जदुबंसजनि
कवि दयालाल१०१ पद्माकर१०२ रु
मुरलीधर१०३ पुनि देवमनि१०४ ॥६॥

॥ सोरठा ॥

सुकवि बिप्र कमलेस१०५ गुनभटु दीनदयालुगिरि१०६ ॥
माथुरमिश्रगनेस१०७ बालकृष्ण१०८ माथुर बहुरि ॥ ७ ॥
चारन नरहरिदास१ कुंभकरन२ पूरन३ सुकवि॥
ईश्वरदास४ रु आसा[4]५बदरिदास६ हुकमेस[5]७ बलि ॥८॥

॥ षट्पदी ॥

मेघराज८ माहव९ मुरारि१० करनेस[7]११ काव्यकर ।
बदन१२ पितामह मम[8] त्यौंहि रसबीर समुद्धर[9] ॥
बहुरि बंक[10]१३ जिहिं मरुप[11] मान कविराज बजारिउ[12] ।
दान१४ जु बुंदियनृप उमेद कविराज पजारिउ[13] ॥
श्रीचाण्डदान१५ मम जनक[14] बुध[15] संस्कृत१ पिंगल[16]२ डिंगल[17] ३न
पीर१६ रु कृपाल१७ भैरव१८ प्रमुख[18] कविजन चारनबंसगन ।९।

॥ सोरठा ॥

दास[19]स्वरूप१९ दयाल२० प्रथित[20] उदय२१ चामुंड२२ पटु[21]।

---

१ रसिक २ विद्याराम नामक ३ पैदा हुआ ४ आशा नामक ५ हुकमाचन्द्र ६ पुनि ७ करनोदांन ८ मेरे (इसीप्रकार मेरे पितामह)अर्थात ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के दादा ९ वीर रस का उद्धार करनेवाला१० बांकीदास ११ मारवाड़ के पति मानसिंह ने १२ बजाया (कविराज प्रसिद्ध किया) १३ पद जड़ा (कविराज पद से युक्त किया) १४ पिता (ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल के पिता) १५ पण्डित १६ व्रजभाषा १७ मरुभाषाओं में १८ आदि १९ स्वरूपदास २० प्रसिद्ध २१ चतुर

सोदर[1] मम जयलाल२३ पौरानिक[2] इत्यादि पुनि । १० ।
मोतीसर[3] भरतेस१ चिमन२ नरायन३ पुनि चतुर४ ॥
गिनि उम्मेद५ गनेस६ बहुरि नंद७ इत्यादि कवि । ११ ।

॥ षट्पदी ॥

भट्ट[4] चंद१ रसबीरमूर्त्ति[5] छंदनको आरिसम
सद्दनको[6] नटसाल[7] कुसल कछुकछ प्राकृतक्रम ।
साह अकब्बर सभ्य[8] गंग२ भट्टहु गुनआगर
महापात्र नरहरि३ रु तनय हरनाथ४ तास बर ।
खुम्मान५ चतुर्भुज६ भंगड़७ रु संकर८ त्योंहि प्रताप दुव२।१०
गिरिधर११गनेस१२इत्यादि सब जे कवि भट्टन बंस[9] हुव॥१२॥
कवि अन्वय कायस्थ मान१ संकर२ हरि३ मधुकर४
गजानन५ रु गोपाल६ धर्म७ ब्रजनाथ८ चक्रधर९ ।
माली मदन१ मलूक२ रसिक ल्योकार[10] सु भैरव१
रत१नाम रथकार[11] भागु१ घटकार[12]जातिभव
सुख१ चित्रकार[13] धूसर सुजन१ कम१ नापित[14] मुष्टिक[15] कुलबि१
कुसल१ रु किसोर१ पट[16]१ चर्मकर[17]
रच्छपाल१ कुल डौंब[18] कवि ॥ १३ ॥

॥ सोरठा ॥

रामकृष्णाकवि बिप्र हम जु लिख्यो रसपुंज ढिग ।
सरस अलंकृत[19] छिप्र[20] काव्यकरी ताकी वधू[21]१ ॥ १४ ॥
आजिता१ वाणीअंस[22] सुंदरिका२ करनी३ सिरा४

---

१ सगाभाई (ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल का सगा भाई) इनको आदि लेकर २ चारण कुल के कवि जानो ३ चारणों के याचकों में एक जाति है ४ भाट ५ मूर्ति ६ अत्यन्त शत्रु ७ नहीं निकले ऐसा साल ८ सभासद ९ वंश १० लोहवार (लुहार) ११ सुथार (बढ़ई) १२ कुम्हार १३ चितेरा १४ नाई १५ सुनार १६ जुलाहा १७ चमार १८ ढोली १९ रसयुक्त और अलंकार सहित २० शीघ्र काव्य करनेवाली २१ स्त्री रामकृष्ण नामक ब्राह्मण की स्त्री २२ सरस्वती का अंश

बरजू५ चारनबंसकाव्यकरी इत्यादि तिय ॥१५॥
बोरी१ ओठबिहीनकंकाली२ पुनि कंजुली३ ॥
प्रमंदा काव्यप्रवीन भट्टनंकुल इत्यादि हुव ॥ १६ ॥
इंद्रजित जु बुंदेल भाख्यो घनआनंद ढिग ॥
पातुरि तस रसखेल रायप्रबीन१ कवित्व निधि ॥ १७ ॥
घनानंद अभिधान लिख्यो इंद्रजितके निकट ॥
पातुरि ताहि सुजान२दिल्लीपति दिन्नी कवि सु ॥ १८ ॥
आलमकवि जिहिं अर्थ जवनभयो ब्रह्मत्व तजि ॥
सेख१ सु काव्य समर्थ सतीरंग रंजक सुता ॥ १९ ॥
नाजर कमलानाथ१सहजराम२हारसुख३ सु कवि ॥
इत्यादिन सुभसाथ बंदौं नरबानी कावन ॥ २० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ लोकभाषाकविस्तवनं नाम द्वितीयो मयूखः ॥ २

अथ मन्मित्रप्रशंसोद्देशः ॥

दोहा

अक्षचरन कनभक्ष मत कल्पक कोटि नवीन ॥
श्रीनिवास१ आचार्य द्विजपण्डित सुहृद प्रवीन ॥ १ ॥
व्याकरनोदधिपोत बलि मैथिल बाबूनाथ२ ॥
दूजो२ केवलकृष्ण३द्विज हद्द कोटि इन्ह हाथ ॥ २ ॥
सरजूपारी द्विज कुसल गयादत्त४ गुनगोर ॥

---

१ काव्य करनेवाली २ बिना ओठ (ओष्ठ) वाली
३ स्त्रियां ४ भाटों (मागधों) के ५ प्रवीनराय ६ नामवाला ७ देश भाषा के कवियों को श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में लोकभाषा के कवियों की स्तुति का दूसरा मयूख समाप्त हुआ ॥२॥ अब मेरे मित्रों की प्रशंसा का कीर्तन है ८ गौतम का मत न्याय और ९ कणाद का मत वैशेषिक १० नवीन कोटि * की कल्पना करनेवाले ११ मित्र १२ व्याकरण रूपी समुद्र की १३ नाव १४ पुनि १५ सीमा (कोटि की सीमा है इनके हाथ में)

---

* शुष्क तर्कनावाले शास्त्र के निर्णय को कोटि कहते हैं.

तीक्ष्णमेध[1] गोविंद५तिम मैथिल शाब्दिकमोर[2] ॥ ३ ॥
सफर[3] सिंधु साहित्यको बढि पटैत ध्वनिबीच ॥
सुहृद भवानीसंकर६ सु व्यास बिबुधै दाधीच ॥ ४ ॥
मम्मट१ न्याय२ कणाद३ मत पाणिनिमत४ बुध बीर ॥
अंबालाल७ दधीचकुल फतैलाल८ दुव धीर ॥ ५ ॥
काव्य१कोस२बलि व्याकरन३ ज्योतिष४पट मतिजोर ॥
बिप्र नन्हसर्मा९ बिबुध मित्र सुसीलन मोर ॥ ६ ॥
अध्यापक बलदेव१० बुध भूपगिराभण्डार ॥
किन्नों जिहिं कालापको[11] ध्वस्तजानि उ ार ॥ ७॥
मंत्री रामनरेसको नागर जीवनलाल ११ ॥
अमृत१२ अनुज तस यावनी[12] मंत्र नियुद्ध कमाल ॥ ८ ॥
सुधापानि बुध बैद्य द्विजकान्यकुब्ज केदार १३ ॥
बालकृष्ण१४ द्विज माथुरहु कवि नागरी[13]ऽकूपार[14] ॥ ९ ॥
कुल गौड़ रु दाधीचकुल नंद१६ हुंड १७क्रम नाम ॥
गुनी सुहृद[15] या ग्रंथके ये२ लिपिकर[16] अभिराम[17] ॥ १० ॥
राजसिंह रट्ठोरनृप मालव सीतांद्रंग[18] ॥
कुमर तास रतनेस१८ कवि सु ममसुहृद हितसंग ॥ ११ ॥
पहु[19] बलवंत१९ भनायनृप बंस कमंध[20]दुबाहु[21] ॥
बीर धीर सिवनाथ२० बलिनगर मसूदा नाह[22] ॥ १२ ।

१बुद्धिवाला २वैयाकरणोंकेमुकुट ३साहित्य रूपी समुद्र का मच्छ ४ व्यंजना वृत्ति से ध्वनि में पटाबाज (व्यंग्य से अर्थ प्रकट होवे उसका नाम व्यंजना है, कितनेक के मत से इसी को ध्वनि कहते हैं और कितनेक के मत से ध्वनि और व्यंजना दोनों साहित्य के जुदे जुदे अङ्ग हैं. ५ पण्डित ६ साहित्य ७ वैशेषिक ८ व्याकरण ९ पुनि १० पण्डित ११ कलाप व्याकरण (कातन्त्र) का १२ यवन सम्बन्धी (फारसी भाषा में) सलाह में और मल्लयुद्ध में कमाल (परमावधि करनेवाला)१३ नागरी भाषा का १४ समुद्र १५ मित्र १६ लेखक १७ मनोहर १८ मालवा देश में सीतामऊ नामक नगर १९ राजा बलवंतसिंह २० राठोड़ २१ दोनों हाथों से वाह करनेवाला २२पति

पुनि पत्तन कव्हेडपति[1] विष्णुसिंह२१ रठ्ठोर ॥
धौंकल२२ संगरिया[2] धनी जु रन१दैन२बरजोर ॥ १३ ॥
पटु पिप्पलिया ग्राम पति फूलसिंह २३ कछवाह ॥
पुनि भारत २४ सेवासुपटु बितरन उदधि अथाह ॥ १४ ॥
महासिंहहर जैतगढ पुर पति बुंदिय ढल्ल ॥
मेरो मित्र महीपको[6] सुभट हु दुर्ज्जन सल्ल २५ ॥ १५ ॥
माधँव साहिपुरेसके भ्रात इक रनजीत २६ ॥
भट दूजो २ भूपाल २७ पुनि ए दुवमित्र अभीत ॥ १६ ॥
नाथाउत चालुक्क निडर नगरपगाराँ नाह ॥
दुर्ज्जनसल्ल २८ हु ममसुहृद प्रभुंको[10] मुख्य सिपाह ॥ १७ ॥
महासिंहहर दच्छमति[11] गोकुल २९ सहेज[12] पवित्र ॥
बीर मुख्य बुंदीसको थानाँपति ममभित्र ॥ १८ ॥
गोवर्द्धन ३० ताको अनुज बहुरि हड्ड कल्यान३१ ॥
हरदाउत रु जदुजनैन[13] माधव सीलनिधान३२ ॥ १९ ॥
च्यारि४सुभट नृपरामके बितरन हितैंरन बीर ॥
भिराडरपति गर्जैकेतुगति[15] सगताउत हम्मीर१ । ३३ ॥ २० ॥
सगताउत ज्यौंहीं सुघर पिप्पलियापुर नाह ॥
हमतसिंह२।३४ कुंस[16] तिग्म मति[17] समर अजेय सिपाह ॥२१॥
दुव२ कबंध[19] इककैलवा पति माधव अनुजात[20] ॥
पदमसिंह३ । ३५बीरम४ । ३६ बहुरि निम्महडापति ख्यात॥२२॥
पुररतलाम नरेसके सुभट तीन३ मतिमान ॥
बखतावर१ । ३७ अभिधान[21] इक सोनगिरा चहुवान ॥ २३ ॥

---

१ पुर२ काधेड़ा नामक ग्राम का ३ सांगरया नामक ग्राम का ४ दानका ५ बुन्दी के राजाका ६ उमराव ७ माधोसिंहका ८ सोलंखी ९ मित्र १० स्वामि (बुन्दीपति) का ११ चतुर १२ स्वभाव से १३ यदुवंशी दानके और १४ युद्ध के लिये वीर १५ भीष्मकी १६ डाभके समान १७ तीक्ष्ण बुद्धिवाला १८ युद्धमें १९ राठोड़ २० छोटा भाई २१ नाम

हुव२ कबंध इक श्रवन पति जोरावर२।३८ अरिकाल ॥
सिवगढपति त्यौँही सुजस गाहक मन गोपाल२।३९॥२४॥
पुनि जोताईग्राम तिम बुध कबंध बलवंत४० ।
बदनमल्ल४१ त्यौंही बनिक सचिव भनाय सुमंत ॥ २५ ॥
चारन सप्तक७ मतिचतुर बिदित कोटिरसबीर ।
रामकरन१।४१ मेहडू रसिक पुनि अड्ढा कवि पीर२।४२।२६।
बुधं भवान३।४३ महियार बंलि बखतावर४।४४ बरबच्छ ॥
रोहड़ दुर्गादत्त५।४५ अरु लछमन६।४६ चतुर७।४७सुलच्छ।२७।
तीन३ भट्ट हनुमंत१।४८ पुनि रामनाथ२।४९ मति इद्ध ।
सिरोहियारनजीत३।५० कवि सुचिरस पुंज प्रसिद्ध ॥२८॥
पहिले नृपके सचिवपट्ट हुव मोहन धात्रेय ।
तासभ्रात सुहृद सु रतन५१ मनरन लरन अभेय॥२९॥
नरपति धात्रेई धनी प्रभु निये गैं प्रतिपाल ।
किल्लादार सु दुर्गको निपुन नंदजुतलाल ५२ ॥ ३० ॥
इंगरेजमत बैद्य इन हदमति बखसहुसैन५३।
इत्यादिक मममित्र गन रहहु सुखी दिनरैन ॥३१॥
सत्रुजन हु होवहु सुखी मैं जिम गुननगरीयँ ।
सहिसहि जिनके वज्रबच भयो सर्वदेसीय ॥३२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ मित्रादीष्टशंसनं नाम तृतीयो मयूखः ॥ ३ ॥

१गाम का नाम है २परिहत ३राटोड़ ४बनिया ५वीर रस की कोटि में ६चारणों में एक शाखा है ७ चारणोंकी जाति में आढा नामक एक शाखा है ८ पण्डित ९ चारणों में एक शाखा है १० पुनि ११ श्रेष्ठ छातीवाला १२ रोहड़िया कुल का चारण १३ श्रेष्ठ लत्तण युक्त १४ भाट (मागध) १५ निर्मल १६ शृंगाररस का समूह १७ धाय का पति (धाऊ) १८ मित्र १९ अपरिच्छेद (अटूट) २० आज्ञा का २१ नन्दलाल २२ वैद्यराज २३ हुसेनबक्स जिनके वज्र रूपी २५ वचन सह सहके मैं सर्वदेशी और गुणों से २४ बड़ा हुआ तैसे ही शत्रु भी सुखी होवें ।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में मित्रों को आदि

अथ च मया ग्रन्थाऽवसाने स्वोत्पत्तिविस्तरं विवर्णयिषुणा तावत्संक्षिप्य कविवंशो वर्ण्यते ॥

दोहा

पृथुनृपके बिधिसत्रतें प्रगटे मागध१ सूत२ ।
देस मगध३ आनर्त्त४ दिय पृथु इन्हअर्थ प्रभूत ॥१॥
बंसवृत्ति दिय मागधहिं१ सूतहिं२ पुण्य पुरान ।
काव्यवृत्ति सामान्य किय पूजन दुहुन२ प्रमान ॥२॥
संतति जानहु सूतकी रुचिर कल्पतर रूप ।
वृखंचारन चारनबजत ईस निदेस अनूप ॥३॥
जो भूरुह चारन जनन पाटव बिद्यापत्र ।
आलवाल नृपजन इहाँ आदर सलिल अमत्र ॥४॥
भाखाखट६ किसलय सुभग मति आमोद अमंद ।
काव्य बिरुद [illegible]सित कुसुम रसनव९ मधुर मरंद ॥५॥
पठित बीररस पुलककर उदित पराग अछेह ।

लेकर इष्टजनों के वर्णन का तीजा मयूख समाप्त हुआ ॥ ३ ॥

अब ग्रंथ के अंत में अपनी उत्पत्ति का विस्तार पूर्वक वर्णन करने की इच्छावाला मैं पहले संक्षेप से कविवंश वर्णन करता हूं. महाराज पृथु के (१) विधियज्ञ से मागध और (२) सूत ये दो उत्पन्न हुए, [illegible]न में से पृथु ने मागध को मगध और सूत को आनर्त [(३) द्वारका प्रांत] देश (४) बहुत धन के साथ दिये ॥ १ ॥ मागध को (५) वंशावली लिखने की और सूत को (६) पवित्र (७) पुराण बनाने व सुनाने की वृत्ति दी, और दोनों सत्यवक्ताओं का पूजन करके काव्य वृत्ति दोनों को बराबर दी ॥ २ ॥ सूत के वंश को (८) सुन्दर (६) कल्पवृक्ष के समान जानो जो ११ महादेव की अनुपम (१२) आज्ञा से (१०) नन्दिकेश्वर को चराने के कारण से चारण कहलाते हैं। ३। उस चारण कुल रूपी (१३) वृक्ष के (१४) चतुराई और विद्या तो पत्र, राज लोग ही आलवाल [(१५) वृक्ष की जड़ में जल ठहरने का गोल कूंडा]आदर ही जल सींचने का (१६) पात्र ॥ ४ ॥ छहों भाषा ही (१७) कौंपलें, सुन्दर बुद्धि ही [१८] सुगन्ध का आनंद, काव्य और [१६] उत्साहवर्धिनी स्तुति ही (२०) फूले हुए [२१] पुष्प, शृंगारादि नव रस ही मीठा [२२] पुष्परस ॥५॥

भेटकरि भीरुलरावनौं याद्रुमको फल एह ॥६॥
बिनुराजालय यह बिटप मरुगत मीन रहैन।
राजनिलय फुल्लित फलित अधिकहोत सुख अैन ॥७॥
सु तरु नृपन करि डहडहो सघन छयो छितिसीस।
पृथक तास साखा पृथुल बढी एकसतबीस१२० ॥ ८ ॥
तिनबिच साखा चतुरतर इक१ मीसण अभिधान।
चंडकोटि कवितैं चली सूरिन लहि सनमान ॥९॥
भाखाखट६ मिश्रेण भणिति बदि जिन्ह जित्ते बाद ।
उनको मिश्रणनाम इम हुव सु लाछनिकन्हाद ॥१०॥
प्राकृतबिच सो सब्द परि हुव मिस्सण भुवख्यात ।
मीसण इम देसीयमें प्रकट्यो सुहि छबिपात ॥११॥
तिहिंपद अंकित बित्थरिय साखा यह मतिसुद्ध ।
तामें कवि ईश्वर१ भये प्राकृत कथन प्रबुद्ध ॥१२॥
जिनके सम्मुह कोसदुव२ मुदजुत भोजकुमार।
बुंदी सैन सुरजनतनय आयो हितअनुसार ॥१३॥
उत्तरि मिलि आश्लेषजुत लैगो नगर बधाय।
पुनि पुरकासी जनकपहँ पहुँच्यो आयस पाय ॥१४॥
तत्थ घट्ट मणिकर्णिका तँहँ सचेत तजिदेह ।

रोमांच करनेवाले पढ़ेहुए बीर रस का कहना ही [२३] पुष्परज,और [२ कायर लोगों को (१) वीर बनाकर लड़ा देना ही इस वृत्त का फल है ॥ ६॥ राजाओं के [३] घर बिना यह (४) वृत्त [५] मरुस्थल में गई हुई मच्छी के समान नहीं रहता, राजाओं के [६] घर में ही पुष्पित फलित हो कर अधिक सुख का घर होता है ॥ ७॥ उस वृत्त को राजाओं ने हरा भरा करके भूमि पर गहरा छाया है, उसकी [७] जुदी२ (८) बड़ी १२० शाखायें बढ़ीं ॥ ८॥ उन में (९) अत्यंत चतुर[१०] मीशण नाम की एक शाखा चंडकोटि नाम के कवि से (११) पण्डितों से सन्मान लेकर चली है ॥९ ॥ छहों भाषाओं को (१२) मिश्रित [मिली हुई] भाषा कहकर जिन्होंने शास्त्रार्थ जीता, इस प्रकार उनका नाम मिश्रण हुआ[१३] सो१४ लक्षण [१५]युक्त शब्द है ॥ १०॥[१६] चिन्ह युक्त१७ पण्डित १८ से१९ छाती भिड़ाकर [बाथ भरकर]२० पिता के पास

सुरजननृप सुरपुर गयो भोज भयो नृपएह ॥१५॥
कवि ईश्वर हित नृप तदनु[1] बिसथ[2] बारह१२ दत्त।
बीतिं[3] तरल[4] चालीस ४० बालि मदकल[5] दुव२ गज मत्त॥१६॥
मय[6] अट्ठारह१८ रजतमय[7] मुद्रा लक्ख१०००००प्रमान।
आवतजात[8] अनेईके उभय२हि अभ्युत्थान[9] ॥१७॥
रुचिर[10] खास इक१ तुरग रथ सुभ सिबिका[11] इक दिन्न।
पुनि मुत्तिनै[12] पयपुजिकै पोरिपात्र[13] निज किन्न॥१८॥
दिय नृप सिबिकादंडकै अंघ्रिचार[14] निजअंस[15]।
ईश्वरकवि डेरनअवधि पहुँचाये सप्रसंस[16] ॥१९॥
बुंदीपतिकी वृत्ति इम पटु[17] ईश्वरकवि पाय ॥
इहनके चारनभये अच्छत[18] पीत उठाय ॥ २० ॥
कविईश्वर सुत हुव सुकवि धीधन[19] साँवलदास२ ॥
साँवल सुत भूपाल३ हुव रामदास४हुव तास ॥ २१ ॥
रामतनय आनन्द५हुव बलउद्धत रनबीर ॥
नवलराम६आनंदसुत[20] तास चतुर्भुज७धीर ॥ २२ ॥
बदन८चतुर्भुज तनय हुव पिंगल[21]१डिंगल[22]२पूर ॥
विष्णुसिंह बुंदीसनृप सनमानिय मतिसूर ॥ २३ ॥
रोसूंदा निबसथ[23]-दयो बहुबिध मानबढाय ॥
करी[24]चढाये बदनकवि पय निजखंध दिवाय ॥ २४ ॥
कालांतरगत[25] दुव[26]२हि दिय अभ्युत्थान[27] सनेह ॥
पयचर[28] भूप हरोलं[29]ह्वै पहुँचाये कविगेह ॥ २५ ॥
बदन सु कवि सुत कविमुकुट अमरगिरा[30]१मतिमान ॥

---

१ जिस पीछे २ ग्राम ३ घोड़े ४ चपल ५ मद झरते हुए ६ ऊंट ७ चांदी के रुपये ८ समय ९ ताजीम १०सुन्दर११पालकी१२मोतियों से१३पोलपात [अपने द्वार के नेग `` वालों में पात१४चरण [कदम] तक१५अपना कंधा१६प्रशंसाके साथ१७ चतुर १८ अच्छत १९ बुद्धि ही है धन जिसके ऐसा पंडित२०पुत्र २१ व्रजभाषा २२ मरुभाषा २३ग्राम २४ हाथी पर २५ बहुत समय की गईहुई २६ दोनों ही २७ ताजीम २८ पैदल होकर २९ आगे ३० संस्कृत में बुद्धिमान्

पिंगल२डिंगल३पटु भये धुरधर चण्डीदान ९ ॥ २६ ॥
रवि साहित्य सरोजके रनसुभके रोलंब ॥
तत्वबोध वैराग्यनिधि अरु स्वधर्मपिक अंब ॥ २७ ॥
जियतमुक्त हुव रामनृप जिनकी संगतिपाय ॥
दिन्नौं गुरुपद१मित्रपद२ है पंडित हित लाय ॥२८॥
तिनको सुत रविमल्ल१०कवि कवि१ बुध२ भक्त३न दास।
बंदि चरन जुग२जनकके करत प्रबंध प्रकास ॥२९ ॥
दोला१ सुरजा२ विजयिका३ जसा४ रु पुष्पा५ नाम।
पुनि गोबिंदा६ षट६ प्रिया अर्कमल्लकवि बाम ॥ ३० ॥
भ्राता कविरविमल्लको लघु सोदर जयलाल।
पाणिनीय१ बुध धर्म२ पटु विद्या३बिनय४ बिसाल ॥ ३१॥
अग्रज तस रविमल्ल यँहँ नृपके मुख्यनिदेस।
समुझावन प्राकृतसहित बरनत बंस बिसेस ॥ ३२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ संक्षिप्य कविवंशवर्णनं नाम चतुर्थो मयूखः ॥ ४ ॥

अथ प्रबन्धप्रारम्भः ॥

दोहा

होहु सदय हेरंब१कौं बंदन बारंबार ॥
देहु सुमति निजदासकौं बहुबिध बिघन विदार ॥१॥
बिधितनया१कौं नमत बिधि पूजों अंजलिपानि ।

---

१ कमल (साहित्य रूपी कमल) के २ पुष्प ३ भ्रमर अपने धर्म रूपी ४ आंब में ५ कोयल ६ जीवन्मुक्त७ ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल ८ ग्रन्थ ९सूर्यमल्ल की १०स्त्रियां ११सूर्यमल्ल का१२ छोटा सगा भाई १३व्याकरण में १४ पण्डित १५ चतुर १६ आज्ञा से

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में संक्षेप से कवि वंश वर्णन का चौथा मयूख समाप्त हुआ ॥

अब ग्रंथ प्रारंभ होता है ॥

१७ दया से युक्त ऐसे १८ गणेश को १९ सरस्वती को २० हाथ जोड़कर

सरदइंन्दु छबि सारदा उकति देहु नव आनि ॥ २ ॥
बंदौं स्फोट३ बिसेस करि मति१ कृति२ संगति३ मूल ।
सबदब्रह्म किंकर समुझि करहु दया अनुकूल ॥ ३ ॥

मनोहरम्

प्रथम अकार१ है उकार २पुनि है मकार३
प्रनव भयो जो मानि रचन जिहानकौं ।
अँच दसच्यारि१४ हल तीसतीन३३ है भयो
ब्रह्मअंड सकल प्रकासत प्रमानकौं ॥
प्रानीकौं प्रचारैं च्यारि४बानीकौं निमित्तकरि
सूचक समस्तको लखावैं निज थानकौं ।
गूढ औ अगूढ बिना जाके जगमूढ यातैं
ह्वैकैं सावधान बंदौं साचे सावधानकौं ॥ ४ ॥

१शरद के चंद्रमा जैसी है छबि जिसकी ऐसी २हे सरस्वति ३ नवीन।२। विशेष कर के शब्द को नमस्कार करता हूं जो बुद्धि रचना और संगति [संबन्ध अर्थात्४ शब्दार्थ का संबन्ध]का मूल है वह ५ हे शब्दरूपी ब्रह्म मुझको दास जानकर अनुकूल हो कर दया करो ।३। जो शब्दरूपी ब्रह्म पहले अकार उकार और मकार रूप होक र तीनों से ६ॐम् ऐसा प्रणव [ब्रह्म स्वरूप हुआ जो संसार को ग्रंथ स्वरूप मान कर चौदह७ स्वर और तेतीस ८ व्यंजन रूप हुआ ९ और ब्रह्माण्ड स्वरूप होके संपूर्ण प्रमाणों (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति और अभाव) को अर्थात् चारों वेद, छहों वेदांग, छहों शास्त्र, अठारहों पुराण और इतिहास आदि सब का१० प्रकाश करता है और चारों वाणी अर्थात् परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी, इनमें से जो मूलाधार चक्र से पहले पहल उठती है वह तो परा है, और वही हृदय स्थान को प्राप्त होवे तब पश्यन्ती, वही बुद्धि में आवे तब मध्यमा और वही मुख और नासिका द्वारा निकल कर प्रत्यक्ष होती है तब वैखरी है। इन चारों में से प्रथम की परा और पश्यन्ती को तो योगी ही प्रत्यक्ष कर सकते हैं और मध्यमा व वैखरी मनुष्यों के प्रत्यक्ष होती हैं इन दोनों में भी जो मुख द्वारा शब्दात्मक वा वर्णात्मक निकलकर बोलने में और सुनने में आती है वह वैखरी है। इन चारों वाणियों को निमित्त अर्थात् उत्पत्ति मात्र का कारण बनाकर प्राणी मात्र को व्यवहार में लगाता है और संपूर्ण वस्तु मात्र को जनाकर अपने स्थान को दिखाता है अर्थात् ब्रह्मपद को प्राप्त करता है।और जिस११ गुप्त नाद रूपी और प्रत्यक्ष शब्द रूपी ब्रह्म के बिना संसार मूर्ख

दोहा ॥

हरि१ कमला२ ईश्व३ उमा४ गो मे५ कपिल६ कणाद७ ॥
व्यास८ पतंजलि९ जैमिनि१० रु पाणिनि११ करहु प्रसाद ॥५॥
मूलसक्ति१२ जगदृगमिहिर१३ बंदि इत्यादिन बंदि ॥
कछुक आधुनिक भक्तकुल अब प्रनमत आनंदि ॥ ६ ॥

मनोहरम् ॥

उत्तर अवंतीतैं[9] जमालय[10] त्यौं पुरतैं
आखंडलआसा[11] अद्रिअर्बुदतैं[12] आनिये ।
सोपुरतैं अस्तंघा[13] उदैपुरतैं ईसअ[14]र
ज्यौंही आगरेतैं जातुधाननघा[15] जानिये ॥
पुष्करतैं बं[16]घा सिहोरतैं अनिल[17]ओर
पारिजात[18]पब्बयके कटंक[19] प्रमानिये ।
पाटवप्रजापतिको नाकं[20] नाकहूको छिति
मण्डलको छोगा बुंदीनगर बखानिये ॥ ७ ॥

दोहा ॥

जाके जनपद[21] पुण्यथल पत्तन[22] पद्दनि नाम ॥
खटपुर पुनि चम्मलिसरितैं[23] जंबुमार्ग बनधाम ॥ ८ ॥
इहनकरि विख्यात हुव इडवती यह देस ॥
चाहुवान कुलचक्र[25]को रवि जह रामनरेस ॥ ९ ॥

है उस सांचे सावधान (शब्द रूपी ब्रह्म) को मैं सावधान होकर नमस्कार करता हूं ॥ ४ ॥ १ विष्णु २ लक्ष्मी ३ शिव ४ पार्वती ५ संसार के नेत्र रूपी सूर्य ६ पुनि ७ इस समय के ८ नमस्कार करता हूं ९ उज्जीण से १० दक्षिण में ११ पूर्वदिशा में १२ आबू पर्वत से १३ पश्चिम की तर्फ १४ ईशान कोण में १५ नैऋत्य कोण में १६ अग्निकोण में १७ वायुकोण में १८ आडावळा पर्वत के १९ घेरे में २० स्वर्ग का भी नाक(नासिका) २१ देश में २२ पुर २३ नदी २४ तीर्थविशेष २५ गण

---

*"माला अच्छर माधुरी अब गुम्फत आनन्दि ॥६॥" वुन्दी मे इस ग्रथ की असल प्रति है उसमे इस दोहे के उत्तरार्ध के ये दो चरण लिखेहुए है और इस उत्तरार्धके ऊपर महीन अक्षरो मे उत्तरार्ध मूल मे लिखाहुआ है. आगे 'आधुनिक भक्त कुल का वर्णन' इससे ज्ञात होता है कि ग्रन्थकर्ता की इच्छा आधुनिक भक्त कुल के वर्णन करने की थी परंतु किसी कारण से नही होसका इससे यह त्रुटि पाईजाती है.

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ पुन र्मङ्गलपूर्वकनृपदेशराजधानीलक्षणासूचनं नाम पञ्चमो मयूखः॥५॥

षट्पदी

बानीको[1] सरवस्व पुरीबुंदिय प्रसिद्ध जँहँ ॥
रामसिंह नरनाह इड चहुवान[2] हेलि तँहँ ॥
धर्म नीति धुरधरन सरन संगत[3] जयपंजर[4] ॥
[5]दरीति सिर बहन दहन अघतिमिर दिवाकर[6] ॥
सेना समाज सो [illegible]य धरत करत प्रजापालन सुमत ॥
धनुबान खग्ग साधन सहित क्षात्रधर्म अभ्यासरत ॥ १ ॥
प्रीतिकरत पण्डितन[7] कविन सादर सनमानत ॥
बिद्याबाद बिदग्ध स्वाद कविताऽमृत जानत ॥
षट६नास्तिक परिखण्डि मण्डि मत निगम चउद्दिस४ ॥
अरि अदण्ड बहु दण्डि छण्डि पुनि दिय निवारि रिस ॥
चउ४बरन च्यारि४आश्रम चलन सोधि करिय निज निज सरनि[8]॥
उदयाऽद्रि बिंदुमति[9] दुग्गपर तपत अनलं[10]अन्वय तरनि[11] ॥२॥
जँहँ केतन[12]बिच कंप चक्कबाकहि[13] बियोगबस ॥
बंधन सर[14] बापी[15] रहत कैतव[16] मृगयारस ॥
नीचगामि जँहँ नीर चलन भाँवन व्यभिचारी[17] ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पहले राशि में फिर मंगला चरण के साथ राजा के देश और राजधानी के लक्षण जनाने का पंचम मयूख समाप्त हुआ।

१ सरस्वती का २ सूर्य (चहुवाणों का सूर्य) ३ मित्र (शरणागतों के मित्र) ४ पींजरा ५ पाप रूपी अंधेरे [illegible] ६ सूर्य ७ पंडित ८ मार्ग में ९ बुन्दी न[illegible]र १० अग्निवंश के ११ सूर्य

अब यहां पर ग्रंथ कर्ता, विरोधाभास से अपने स्वामी रामसिंह के राज्य का वर्णन करते हैं।

जहां कंप केवल १२ ध्वजा में ही है और वियोग [illegible] वश १३ चकवा चकवी हैं। बांधना १४ तालाब और १५ बावड़ियों में और १[illegible] ठगने का व्यवहार केवल शिकार में ही होता है. नीच गामी जहां पर केवल पानी ही है।१७व्याभिचारिपन

स्वानजात परसंद्म बातें स्वच्छंदविहारी ॥
सन्मार्ग रहत उल्लंघि श्रुति छिदत पटहिं लहि सूलछत ॥
इक तैर्यकर्म चित्तहिं हरन राज्य रामनृप आचरत ॥ ३ ॥
चापल नारिन चच्छु बचन ननें सुरत समागम ॥
धर्म सुनैंविनु बधिर धमनि धुक्षित नाडिंधम ॥
दुर्ब्बल जुवतिन उदर थाप आघात मृदंगन ॥
दोषाकर कुमु सें मत्तभाव सु मातंगन ॥
लूतांहि छिपावत द्रव्य निज कुच कठोरभावहिं धरत ॥
इक लूट पुण्यलूटन उचित राज्य रामनृप आचरत ॥ ४ ॥
महत प्रकृति मिटवाय करत ज्ञानहि गुन कर्त्तन ॥
इक अरघट्ट घटीन उच्चनीचन परिवर्त्तन ॥

नव रसों के संचारी भावों में ही है अन्य जगह कहीं नहीं । पराये १ घर पर केवल कुत्ता ही जाता है २ स्वतंत्र चलनेवाला एक ३ पवन ही है, और ५ श्रुति (वेद) पक्षे कर्णों का उल्लंघन करके केवल ४ बाण ही रहता है छिदने में शूल कांटा का ७ घावलेकर केवल ६ वस्त्र ही छिदते हैं और ८ चौरी का कर्म केवल पराया मन हरण करने में ही होता है अर्थात् उपरोक्त कर्म उपरोक्त वस्तुओं में ही होते हैं इन को छोड़कर अन्य स्थानों में कहीं नहीं होते इस प्रकार का राज्य महारावराजा रामसिंह करते हैं अथवा रामसिंह के राज्य में उक्त व्यवहारों का आचरण उक्त पदार्थ ही करते हैं अन्य नहीं ॥३॥ स्त्रियों के ९ नेत्र ही चपल हैं १०नहीं नहीं यह वचन केवल स्त्री पुरुषों के ११ संगम में ही होता है विना धर्म सुने १२बहिरे मनुष्य ही रहते हैं १३धमण(धोंकनी)पक्षे शरीरवर्ती जीवसाक्षिणी नाड़ी को १४सुनार ही धमता है दुर्बलता स्त्रियों के उदर में ही है थपड़ की चोट मृदंग पर ही पड़ती है १५ दोषाकर चन्द्रमा का नाम है पक्षे दोषोंकी खानकेवल १६चन्द्रमा ही है,उन्मत्त हास्तियों में ही है,अपने द्रव्य (जाला बनाने के तन्तु) को केवल १७मकड़ी ही छिपाती है और कठोरता को स्त्रियों के कुच ही धारण करते हैं लूट करने में पुण्य की लूट करना ही उचित समझते हैं रामसिंह ऐसा राज्य करते हैं ॥ ४ ॥ जगत् के कारण (१८माया जाल जिससे बारंवार जन्म मरण होता है) को मिटाकर केवल ज्ञान ही गुण (सत्व,रज, तम) को१९काटता है और नीच से ऊंच और ऊंच से नीच होने का पलटा केवल रँहट की घड़ियों में ही होता है, जड़ (जल) पक्ष में मूर्ख का संग

सफरादि[1]न जडसंग जीह जाचक इक चातक ॥
अखिलादनकर[2] अग्गि[3] घोर सु[4]हि आश्रयघातक ॥
बिपरीत चित्रकाव्यन बिहित सर[5]हि छोरि गुन निस्सरत ॥
वृष सिंह बैर रासिन रहत राज्य रामनृप आचरत ॥ ५ ॥
उदर बिदारित अवनि[6] स्यामआनन गुंजाफल[7] ॥
कलाघटन ससिकर्म्म कटन बिघटन बिधि कस्मल[8] ॥
सहत लोहसंताप ब्रह्मचारी तियबर्जित ॥
निहकिंचन[10] संन्यस्त[11] नर्म्म[12] होरिन मँह अर्जित[13] ॥
कृपनत्व भूमि अरि बसकरन सर्प बक्रगति अनुसरत ॥
गोपय नि—र बच्छहि करत राज्य रामनृप आचरत ॥६॥
पद्मादि[14]कँ परके स आत लट्टन इंदिदिर[15] ॥
तउ न बराट[16]कँ मिलत सोहु बंधन पावत चिर ॥
पा—वृद्धि पुनि दूर सो[17]मँ इक रहत मित्रसन ॥
ऊपर बढि पुनि अधर गिरन ग्रहगन तारागन[18] ॥

---

१ मछली ही करती है और य-चकपन केवल पपीहा (पक्षी विशेष) की जीभ में —ी है, २ सर्वभक्षी एक ३ अग्नि ही है और जिसके आश्रय से रहे उसी का नाश करनेवाला भी एक ४ अग्नि ही है, विपरीतपन चित्रकाव्यों में ही होता है, गुण (प्रत्यंचा) को छोड़कर केवल ५ बाण ही जाता है और वैर भाव वृष सिंह आदि राशियों में ही रहता है ॥ ५ ॥ उदर ६ भूमि का ही विदाराजाता है, कालामुख ७ चिरमी का ही है, कला चन्द्रमा की ही घटती है अन्य किसी की नहीं, कटने और ८ घिसने की रीति ९ मूर्छा में ही होती है, ताप लोहा ही सहता है और बिना स्त्री के ब्रह्मचारी ही रहते हैं, १०इच्छा रहित केवल संन्यासी ११ही हैं परिहास १२ होली के दिनों में ही १३ संचय किया जाता है, कृपनपन शत्रुओं की भूमि लेने में ही किया जाता है और टेढ़ी चाल से केवल सर्प ही चलते हैं, गौओं के दूध का निचोड़ बच्छे ही करते हैं ॥ ६ ॥ पराया खजाना लूटने को १४ पद्मकोश (कमल कोश) पर भ्रमर आते हैं तौभी १५ कमलगट्टा पक्षे १६कोड़ी नहीं पाते और बहुत समय तक वेही बंधन पाते हैं, वृद्धि पाकर मित्र से दूर रहनेवाला एक १७ चन्द्रमा ही है, १८ ऊपर बढ़कर नीचे गिरनेवाले तारागण ही हैं

भुवनाढ्य[1] धनन रि ीभवन कूट[2] कनक रजतन परत ॥
लंघत सुमार्ग्ग पाउससलिल[3] राज्य रामनृप आचरत ॥७॥
नीचउच्च समहोत तु त गुंजा सू ीमुख[4] ॥
कीलन दुख दल[5] लहत सहत इच्छु[6] हि पीलुन दुख ॥
नीचहि भेदक सेतु[7] छमा[8] छेदक इक सीरहि[9] ॥
बढत मित्र अति घटत सत्रु सुचि[10]कोहि समीरहि[11] ॥
मधुछीव[12] छपद गणिका छुवत सुहि सरजा[13] सेवनकरत ॥
पालक बिपच्छ[14] इक होत पिक राज्य रामनृप आचरत॥ ८ ॥
पठनपाय लहिपच्छ सहत बंधन सुक सौरी[15] ॥
कपट समाधि बकोट[16] नाग रसना द्वयधारी ॥
हीनपच्छ आहार्य[17] मानसेवत महिला[18]जन ॥
नेह[19] दसाको[20] नास करत इक कज्जलकेतन[21] ॥
बिलपन निवास कुररिन[22] बदन रुदननीर केकिन[23]ढरत ॥

---

१ भुवनाढ्य जलपति और पक्षे जगत् पति होकर केवल मेघ ही रीते होते हैं २मार पीट सोना चांदी पर ही पड़ती है, श्रेष्ठ मार्गों को ३ वर्षाकाल का पानी ही लांघता है ॥७॥ चिरमियों से ४ हीरे तोले जावें तभी नीच ऊंच बराबर होते हैं पत्रावली बनाने में कीलने का दुःख ५पत्ते ही लेते हैं और पीलने का दुःख सांठा (६ गन्ना) ही सहता है, ७ मर्यादा पक्षे पाल कर तोड़नेवाला जल ही है. (" नीचगामी होने के कारण यहां पर पानी नीच कहा गया है " ८ क्षमा पक्षे भूमि का छेदनेवाला केवल ९ ल ही है। बढ़ते समय में मित्र और घटते समय में शत्रु होनेवाला १० अग्नि के लिये एक ११ पवन ही है, १२ मधुमत्त पक्षे मद मत्त केवल भ्रमर ही रहता है,वही भ्रमर १३ सरजा (र युक्त कमलनी, पक्षे रजस्वला) का सेवन करता है, एक कोयल ही १४ शत्रु का पालन करती है (कोयल का काक के बच्चों को पालना प्रसिद्ध है) ॥ ८ ॥ पढ़ कर और पक्षयुक्त होकर केवल तोता और १५ मैंना ही बंधन सहते हैं, कपट की समाधि रखनेवाला एक १६ बगुला पक्षी ही है. दो जीभ पक्षे कह कर बदल जानेवाले सर्प ही हैं. हीनपक्ष होकर ऊपर से १७ आरोपण कि हुए मान का सेवन करनेवाली १८ स्त्रियां ही हैं. नेह १९ तैल पक्षे स्ने और २० दशा बत्ती पक्षे चैतन्य तथा अवस्था का नाश करनेवाला एक २१ दीपक ही है. विलाप करना २२ कुरदांतली पक्षिविशेषके मुखमें ही है. रोनेका पानी(अश्रु)२३मयूरोंके ही पड़ताहै

करटीहि [1] कर[2] मुद्रधाकरत राज्य रामनृप आचरत ॥ ९ ॥
गणकनमुखं [3] इक्कायों फटि मुख त्यों [4] क कफल ॥
रागहि मूर्च्छित [5] रत जसहि सेवत विदेसथल ॥
वर्गमूल [6] बिच्छेद गनित सागर अवगाहत ॥
नष्टभाव [7] निजरीति वृत्तबंधन निर्बाहत ॥
भयकारभाव सेवत [8] रसहि [9] अयनवाम रवि अनुसरत ॥
कन्याप्रसूत सीतहिं करत राज्य रामनृप आचरत ॥ १० ॥
बामन दिगिभनं [10] बीच रूक्षरागी तरु सैंवर ॥
भ्रमसेवी मृगजात [11] सुरत संग्राम दुरोदर ।
स्वरहि बिकृत [13] संगीत ग्रामसन [14] जात निकारे ।
धैवत [15] इक्क निखाद स्वान [16] अंत्यज ढिगधारे ।
संपाहि [17] अचिर रोचन [18] सहित करकबीज [19] देक उत्तरत ।

केवल१हस्ती ही अपने हाथ को समेटते हैं ॥९॥ केवल२ज्योतिषियों के मुखमें ही ३ लग्नविभाग होता है. फटेहुए मुखका एक ४ अनार फल ही है.५ मूर्छायुक्त केवल राग ही रहते हैं(राग के ग्राम के समस्त भाग को मूर्छना) कहते हैं विदेश में केवल यश ही रहता है. ६मूल को काटनेवाला केवल वर्ग (ग्रंथों में मूल पाठ को छेदन करनेवाले वर्ग, अध्याय, सर्ग परिच्छे॰) ही हैं. समुद्र का थाह लेनेवाला केवल गणित ही है और ७ नष्ट छंदों के प्रस्तारादि षोड़श प्रत्ययों में ही होता है. भयंकरपन को ८ रस ही सेवन करते हैं अर्थात् नव रसों में एक भय रस भी है उसके उपरांत और किसी में भयंकरता नहीं है. वामदिशा [उत्तरायण] पके उलटे भाग में केवल सूर्य ही जाता है और ९ कन्या [कुमारी स्त्री] संतान जनती है इसमें केवल कन्या संक्रान्ति ही शीत [ठंढ] को जनती है ॥१०॥वामनपन आदि १०गजों में ही है [दक्षिण दिशा के गज का नाम वामन है] शुष्क रंगवाला एक सेमल का वृक्ष ही होता है. भ्रम का सेवन करनेवाला केवल ११मृगतृष्णा ही है.१ हार जीत केवल सुरत संग्राम में ही होती है. स्वरों की१३विकृति [विकार को प्राप्त होना]केवल संगीत में ही है और वेही १४ ग्राम (संगीत में षड्ज, मध्यम और गान्धार ये तीन)निकालेजातेहैं. बुद्धिमान् होकर अन्त्यज भीलों के शब्द धारण करने में केवल संगीत का छठा स्वर १५ धैवत'ही अंत में उत्पन्न होनेवाले सातवें स्वर'निषाद' के १६शब्दको अपने समीप धारण करता है;थोड़े समयके १८प्रकाश को धारण करनेवाली एक १७बिजुली ही है,पानी उतर ने(पराक्रम का नाशहोने)में केवल १९अनार के बीज का ही२० पानी

सात्विकहि जाड्यं पावत सदन राज्य रामनृप आचरत ॥ ११ ।

धूर्तभाव कै[2]नकडु भंगपद लहरि सम्हारत ।
कर्णौ[3]जप कालिकाहि जाय तुपकन उरजारत ।
बहत दो[4]समति बैद्य गो[5]धि सेवत अ[6]लीक जँहँ ।
पुष्पँ[7]वंत उपरक्त तुलसि सिरकंठ चढत तँहँ ।
कोटिनैं उपेत तउलं[10]क्खकँहँ इक्क चाप नैं[11]ति आदरत ।
पावत कलंक कु[12]मुदेस पँहँ राज्य रामनृप आचरत ॥ १२ ॥

धनाक्षरी

हाँ[13]हा रहैं वाकैं यह हाहा देसमैं न राखैं,
वह स[14]तसत्र यह अगनित सत्रधाम ।
[15]प्राचीपति वह यह सकल दिसांको वह,
गो[16]त्रैं बल बैरी यह पूरैं बल गोत्र काम ॥

उतरता है। केवल सात्विक भाव में ही १ जड़ता को स्थान मिलता है ॥ ११ ॥ धूर्तपन केवल ९ धतूरे के वृक्ष में ही है और पदभंग होना केवल समास करने में ही होता है. २ चुगल (पिशुनपन केवल तोड़ादार बंदूक की कला (जामकी) ही करती है, जो बंदूक के कान लग कर उर को जलाती है, दोषमाति को वैद्य ही प्राप्त होते हैं, (४ वात, पित्त, कफ इन को दोष कहते हैं) एक ५ ललाट ही ६ अप्रियता को धारण करता है, अर्थात् ललाट में ब्रह्मा के बुरे लेख लिखेहुए होवें उनको वह धारण करता है ग्रहण होने में ७ सूर्य चन्द्रमा का ही ८ ग्रहण होता है, शिरऔर कंठ पर तुलसी ही चढ़ती है; कोटियों (° धनुष के अग्रभाग का नाम है पक्षे करोड़ों रुपयों के) सहित है तौ भी १० लक्ष्य (निशाना, पक्षे लाखों के धन के) अर्थ एक धनुष ही ११ नमता है, कलंक केवल २१ चन्द्रमा पर ही पाता है, इसप्रकार का आचरण रावराजा रामसिंह के राज्य में होता है ॥ १२ ॥ वाकै [इंद्रकै] १३ हाहा नामक गंधर्व रहता है और यह [रावराजा रामसिंह) हाहा खेद की वाणी अपने देश में नहीं रहने देता, इंद्र १४सौ १०० यज्ञ करनेवाला है और यह अगणित यज्ञों का स्थान है, वह केवल १५ पूर्वदिशा का ही पति है और यह सब दिशाओं का पति है वह अर्थात् इंद्र तौ १६ पर्वत और बलि राजा का वैरी है और यह रावराजा रामसिंह सेना और अपने गोत्रवालों की कामना पूर्ण करता है.

पावैं सत[1]कोटि जो लुटावैं यह वाके लेखैं ।
है कवि बिरोधी याके लेख[2] दै कविन ग्राम ॥
लाजको जिहाज सुभकाजको इलाज सुर ।
राजको सिरोमनि बिराजैं रावराजाराम ॥ १३ ॥
रनजिम सूरनकौं मुदिरैं मयूरनकौं ।
बिधुं बिखसूंचनकौं कंजकौं कठोरघांम ॥
बह्निकौं बयांरि बिटपावलिकौं बारि सहं-
कार ज्यौं सफल पथिकनके पृथुलकाम ॥
रोगीकौं सुधा ज्यौं कौलभोगीकौं रुचिरराग ।
रति रमनीनकौं धनीनकौं कलाकेग्राम ॥
सुभटकौं साधुकौं सुकविकौं सभाकौं ऐसैं ।
पंडितकौं पटुकौं प्रजाकौं रावराजा राम ॥ १४ ॥
लघुन बढावैं अतिउच्चन नमायलावैं ।
फूलफल ललित लुनायकैं लगावैकाम ॥
वक्रनकौं सरल बनावैं चलमूलनकौं ।
दैजल द्रढावैं कंटकनको छुरावैंधाम ॥
भलदल[13] भावैं औ अपक्कन पकावैं त्यौं ।
ब दीमन[14] बिहावैं फटैं तिनको न राखैं नाम ॥

वह तो शतकोटि (१वज्र) पानेवाला है और यह सौ करोड़ लुटानेवाला है, उस इंद्रके लेख(२देवता)तो कवि(शुक्राचार्य)के विरोधी हैं और इस रामसिंह के ३लेख (लिखावट)कवियों[काव्यकरनेवालों] को ग्राम देते हैं, ऐसा लज्जा का जहाज, शुभ कार्यों का उपाय और इंद्रका शिरोमणि रावराजा रामसिंह विशेष शोभायमान है॥१३॥४मेघ५चन्द्रमा६चकोरों को७सूर्य८पवन९आमका वृक्ष१० काले सर्प को ११ व्याज(सूद)का समूह१२अब यहां यथा संख्या करके बतलाते हैं कि रावराजा रामसिंह उमरावों रूपी वीरों के लिये युद्ध रूप,श्रेष्ठ पुरुषों रूपी मयूरों के लिये मेघ,सुकवि रूपी चकोरों के लिये चन्द्रमा, सभा रूपी कमलके लिये सूर्य इसी प्रकार पंडित रूपी अग्नि के लिये पवन, चतुर पुरुष रूपी वृक्ष के लिये पानी प्रजा रूपी मार्ग चलनेवालों की बड़ी कामना सिद्ध करनेवाला फला हुआ आम का वृक्ष है॥ १४ ॥ १३ श्रेष्ठ पत्रोंवाला १४ दीमक [उदेही] को मिटावे

बुंदी सुधासीचीसी बगीचीसी बनायराखी ।
मालिक[1] मनीसी[2] यौं बिराजैं रावराजा राम ॥ १५ ॥
हाटकमैं[3] हीर जिम हीरमाँहिं नीरजिम ।
इंदुमैं अमृत अबलामैं लाज ज्यौं ललाम ॥
रोहिनीस[5] राकामैं[6] पताकामैं विजय बर्ण[7] ।
सोहैं सत्यमैं ज्यौं प्रियबचन बिसेस बाम[8] ॥
संगरमैं सूर पयमाँहिं ज्यौं सिताको[9] पूर ।
कविरसनामैं रस बिद्यामैं बिनयधाम ॥
साधु मान गान तान पात्र दानपिंड प्रान ।
नीतिमैं यौं धर्मकौं निहारैं रावराजा राम ॥ १६ ॥
सोहैं सावधान प्रभुतादि[10] तीन३ सक्तिनमैं ।
सजित सदाही सात७ प्रकृति[11] बनावैं काम ॥
चतुर चमूके[12] अंग च्यारि४हु सुधारिराखे ।
च्यारि४ पुरुसारथमैं[13] बढिकैं निकास्यो नाम ॥
च्यारि४हु उपाय[14] अनपाय[15] रचिबेमैं दच्छ[16] ।
छै६ गुन[17] प्रपंचको* विरंचै[18] एक आठौं८ जाम ॥

---

१ माली २बुद्धिमान् ३सोने में हीरा होवे जैसा और हीरे में पानी[आबी]होवे ऐसा चन्द्रमा में अमृत ४ स्त्री में ५ लज्जा६ शरद पूर्णिमा की रात्रि में चंद्रमा ध्वजा में विजय के७अक्षर होवे जैसा सत्य में प्रिय वचन अधिक८सुन्दर होवे ऐसा, युद्ध में वीर, दूध में ९. सक्कर, कवि की जीभ में नव रस और विद्या में नम्रता होवे ऐसे श्रेष्ठ पुरुषों में सन्मान औरगान में तान, पात्र में दान और शरीर में प्राण हैं इसी प्रकार रावराजा रामसिंह नीति में धर्म को देखते हैं॥ १५॥ १०प्रभुशक्ति उत्साहशक्ति और नीतिशक्ति इन तीनों शक्तियों में सावधान और सज्जित होकर राज्यकी सातों ११प्रकृति[स्वामी, आमात्य, मित्र,खजाना, राज्य, गढ, सेना]योंके कार्यों को बनाते हैं इस चतुर रामसिंहने १२सेनाके चारों अंगों(हाथी, घोड़ा,रथ पैदल)को सुधार रक्खा है और१३धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों में बढकर अपना नाम प्रसिद्ध किया है इसी प्रकार१४ साम, दान, भेद, दंड इन चारों उपायों को१५ निश्चल रचिबे में१६ चतुर१७ संधि,विग्रह, यान, संस्था, आसन, द्वैधीभाव इन छहों गुणों के१८ रचने का ही है आठों प्रहर*संचय जिसका ऐसा

नायक निपुन[2] नीति[1] नोखीली नवोढा सह-
धर्मिणीकौं धव[3] यौं बिराजैं रावराजा राम ॥ १७ ॥

मनोहरम् ॥

असृं[4] अभिषेक सींचे पूजे गजमुत्तिनकैं ।
कोस निधि इद्ध[5] छाये स्वामिकर छाजाके ॥
बन्दीजन घंटिका बिसेस बिरुदाये अंग ।
रागअंग सघन सुहाये मेद[6] ताजाके ॥
सिद्धिपाय पूरि पर पिंडनमैं पैठत ।
रसीले रिझवार त्यौं प्रहारनके बाजाके ॥
सिंहासन झूठे वृथा बैठैं और राजा साँचे ।
सिंहासनबैठैं सेल[7] राम रावराजाके ॥ १८ ॥
आप भद्रआसनपैं बानी[8] रसनाऽऽसनपैं[9] ।
लच्छी[10] नयनाऽऽसनपैं[11] बास निबहतुहैं ॥
सिबिका सुखासनपैं सुकवि[12] सुमेधा सूर ।
कर कमलासनपैं असि[13] उमहतुहैं ॥
हरि हृदयाऽऽसनपैं जय बिसिखासनपैं[14] ।
द्वीपसप्ताऽऽसनपैं[15] कीरति कहतुहैं ॥

१नीतिरूपी नखरा करनेवाली नवोढा (नवीनस्त्री)२स्त्रीका निपुण ३पतिरावराजा रामसिंह शोभायमान है॥१७॥४लोहीके अभिषेकसे सींचेहुएहाथियोंके मस्तकके मोतियों से पूजेहुए५दीप्तिमान् अथवा बढ़ानेवाला, अपने स्वामी के हस्त रूपी छत्र से छायेहुए वंदीजन रूपी घंटिकासे विरुदायेहुए ताज़े६ मांस रूपी लेप से शोभाय मानअंग,पूर्णसिद्धि पाकर शत्रुओं के अंग में घुसनेवाले इसीप्रकार प्रहार रूपी बाजा के रसीले रिझवार ऐसे रामसिंह रावराजा के सेल [७ भाले] सच्चे सिंहासन पर बैठे हैं. बाकी के राजा लोग झूठे सिंहासनों पर वृथा ही बैठे हैं ॥ १८ ॥ आप [रावराजा रामसिंह] तो सिंहासन पर हैं और ८ सरस्वती जिनकी ९ जिह्वा के आसन पर १० लक्ष्मी जिनके ११ नेत्रों के आसन पर वास करती है१२श्रेष्ठकवि, श्रेष्ठ बुद्धिमान् और शूरवीर पालकी और सुख के आसनों पर, १३तरवार हस्त रूपी आसन पर उत्साह करती है, परमेश्वर जिनके हृदय रूपी आसन पर, विजय१४बाण के आसन पर, १५ सातों ही द्वीपों के

धर्मधुरधोरी धन्य रामरावराजा जाको ।
सत्रुमुकुटासनपैं [1]सासन रहतुहैं ॥ १९ ॥
मंत्रमैं महीप चन्द्रगुप्तसौं सिवाय सोहैं ।
अम्बरीस ज्यौं पय उपासैं [2]रमाधवके ॥
पारथप्रबीन [3]खुरलीके पुरुसारथमैं ।
नलज्यौंबिनीतें [4]बाहैं बाजी बडेजवके ॥
राजराजरामकी सपूती रजपूती आज ।
कैसैं और पूजैं तुल्य याके कला[5]लवके ॥
धर्ममैं जुधिष्ठिरको बामधुरधारैं कोवि ।
कर्ममैं निकारैं मर्म बानीके बिभवके ॥ २० ॥
घुम्मत [6]घटा [7]कैं [8]चतुरनमैं घटाके घाट ।
फाँदैं [9]मन्दुरानमैं तुरंग तुलातुलमैं ॥
[10]भागधेयं [11]घाँघातैं भँडारनमैं भेटआवैं ।
सेनाके समाज सज्ज [12]पौंनिप [13]पृथुलमैं ॥
चरनकी चोकी चुवैं मुकुट महीपनके ।
बुंदी अधिराज असे बानिक बिपुलमैं ॥
[14]श्रीनैं [15]भूंति भारदै नमायशाख्यो भूंलौं भूप ।
ऊँचो तऊ व्हैरह्यो छतीस३६ छत्रकुलमैं ॥ २१ ॥
दिस दिस देखि दीठि चपल चलावैं मानि ।

आसन पर कीर्ति को कहते हैं ऐसा धर्म की धुर को खींचनेवाला रावराजा रामसिंह धन्य है जिनकी १ आज्ञा शत्रुओं के मुकुट रूपी आसन पर रहती है ॥ १९ ॥ २ लक्ष्मीपति (परमेश्वर) के ३ बाणविद्या में अर्जुन जैसा निपुण और पराक्रम में भी अर्जुन के समान ४ घोड़ों को शिक्षादेने में राजा नल के जैसा ५ क्षणमात्र भी जिनकी कला के बराबर कौन पूगसक्ता है ॥ २० ॥ ६ कितने ही ७ हस्तियों के समूह ८ हस्तिशालाओं में घटा के समान घूमरहे हैं ९ हयशालाओं में १० कर[हासिल, खिराज]११ठामठाम से १३ बड़े १२ पराक्रम में सझेहुए १४ लक्ष्मी ने संपदा का भार देकर राजा को १५ पृथ्वी तक झुकादिया है तौ भी क्षत्रियों के छतीस कुलों में ऊंचा होरहा है ॥ २१ ॥ सब दिशाओं में देख देख कर चपल दृष्टि को चलाती है और बड़े वैभव के

भूखन दिखावैं मंजु बिभव बिसालाज्यौं ॥
सुबरनसेवी अभिरूपजन आवैं तिन्हैं
आसुं अपनावैं मिलि लावैं गरैं माला ज्यौं ॥
कोटिनपैं कोटिन कुमावैं अर्थ कामिनतैं
सदननसूनौंराखैं राग इकं१ताला ज्यौं ॥
निलज निसैर्ग नृपरामकी समृद्धि साँची
बित्ताकरैं वृद्धन बुलावैं बाँरबालाज्यौं ॥ २२ ॥
रामरावराजाके निकेतनमैं रारिमांडि
किंत्ति अरु लंच्छी बाद बाढैं बराजोरीपै ॥
किंत्तिकहैं मेरेकाज तोहि तिनुकालौं गिनैं
लच्छीकहैं मैंही तू बढाई भई भोरीपै ॥
किंत्तिकहैं भोगैं तोहि सकल-समाजी लोक
लच्छीकहैं मोकौं चारु मुकुट चहोरीपै ॥
फैलीफैलि फोरीधायधाय भई धोरी तऊ
काहूनाँ होरी तू दिगंतनलौं दोरीपै ॥ २३ ॥

समान बुद्धि रूपी सुन्दर भूषण दिखाती है। और १श्रेष्ठ अक्षरों के सेवन करने-वाले२पण्डित लोग आवें उनको ३शीघ्रही अपना बनाकर माला के समान गले से लगालेती है और अर्थ की कामनावालों से करोड़ों पर करोड़ों कमाती है दूसरे पक्ष में शास्त्रों के निर्णय का नाम कोटि है जिसका अभिप्राय है कि शास्त्रों के निर्णय पर निर्णय कराती हैं और जिस प्रकार ४ इकताला राग में कभी स्थान खाली नहीं रहता. इसीप्रकार यह भी स्थान खाली नहीं रखती ऐसी सच्ची निर्लज्ज ५ स्वभाववाली राजा रामसिंह की समृद्धि [संपदा] है सो ६ धन से वृद्ध पुरुषों७को वेश्या के समान बुलाती है, यहां पर शंका होती है कि वेश्या तो धन लेकर अपनी वृत्ति चलाने को बुलाती है और यह उलटा धन देकर बुलाती है तौ वेश्यापन कहां रहा जिसका उत्तर यह है कि वेश्या धन लेकर अपनी वृत्ति चलाती है इसीसे उसको कोई निर्लज्ज नहीं कहते और यह उलटा धन देकर बुलाती है इसीसे ग्रन्थकर्ता ने निर्लज्ज यह विशेषण दिया है ॥ २२ ॥ ८ घर में लड़ाई मांड कर ९ कीर्ति और १० लक्ष्मी जबरदस्ती से वाद बढ़ाती है ११ परंतु फैल फैलकर इतनी हलकी होगई है कि सुनने में आती है परंतु दीखने में नहीं आती और दौड़ दौड़ कर श्वेत पड़गई है इसप्रकार दिगंत तक दौड़ी

बुंदी छत्रपाल छितिपाल रामसिंह रोखैं ।
नामनिज कीरति त्रिलोकमैं तननकौं ॥
बलकरि राजनकौं छल [1]मृगराजनकौं ।
चण्ड दण्ड दुस्सह दुरद्द गजननकौं ॥
[2]नोदन निसंकनकौं रंकन कौं [3]ओदन ।
प्रजाकौं परिपोख मन [4]तत्वकें [5]मननकौं ॥
[6]तन खुरलीकौं रन अहित अजेयन कौं ।
पन पुरुसारथकौं धन [7]धीधननकौं ॥ २४ ॥
साहनको साल विद्या [8]विटपिको [9]आलबाल ।
हिंदुनकीढाल काल [10]अहितैं अन्नन्तपैं ॥
बीरताको [11]बारिधि गभीरताको घनघन ।
धीरताको धाम [12]मल्लिनाग नयमंतपैं ॥
[13]याजिको [14]बिदंकैं बाजिकौसलको आडोअंक ।
[15]आजिको निसंक [16]टंक [17]दुरितके [18]दंतपैं ॥
छबिको छपेसैं [19]छत्रमहलके छाजा सीस ।
राजैं रामराजा ज्यौं [20]बिडौ [21]बैजयंतपैं ॥ २५ ॥

तौ भी किसीने आग्र करके नहीं रक्खी अर्थात् इस समय में कीर्ति को रखनेवाला रामसिंह ही मिला ॥ २३ ॥ बुंदी के कुल को पालन करनेवाला राजा रामसिंह तीनों लोक पर कीर्ति को छादने में अपना नाम, बल से राजाओं को, छल से १ सिंहों को, नहीं सहनेवाला भयंकर दंड कुमार्ग जाने के वास्ते हाथियों को, निःशंक लोगों के लिये २ प्रेरणा, प्रजापालन के अर्थ ३ अन्न ४ तत्त्वमसि [ब्रह्मज्ञान] के ५ विचार के अर्थ मन ६ शस्त्रविद्या के लिये शरीर, नहीं जीतने में आवे ऐसे शत्रुओं के लिये युद्ध, पुरुषार्थ के लिये प्रतिज्ञा और बुद्धि ही है धन जिनके ऐसे ७विद्वानों के अर्थ धन रखते हैं ॥२४॥ विद्या रूपी ८ वृक्ष का ९ थामला [वृक्ष की जड़ में जल ठहरने का स्थान] १०शत्रुओं का ११समुद्र १२नीति और सलाह में चाणक्य*, १३यज्ञ का १४पण्डित १५युद्ध का १६टांकी [पाषाणदारण] १७पाप के दन्त तोड़ने को १८ चन्द्रमा, १९ बुन्दी के राजभवन में एक महल का नाम है २१ वैजयन्त नामक इन्द्रभवन में २० इन्द्र शोभायमान होवे जिसप्रकार ॥ २५ ॥

---

* चाणक्य का नाम मल्लिनाग भी है। "वात्स्यायने मल्लिनागः कौटिल्यश्चणकात्मजः ॥" इति हेमचन्द्रः ॥

अचलउदैगिरिलौंतुंगितंतखतसीसिश्रीमैंपूरसूरनकोसंघकुंसेसयभो॥
घूक अरिलोक थोक पैठे ओकं ओक दुरि ।
कोकं कविलोकनको रोकसोक खयभो ॥
कीरति किरन लोकालोकंसौं भिरनलागे ।
नास्तिक गिरनलागे दीपालोंक लयभो ॥
नलिनी धराको धवं राजैं रावराजा राम ।
भानु चहुवाननको भानुसो उदयभो ॥ २६ ॥
लच्छीके उसीसा बंधकील जयकुं रके ।
कञ्जकुच भृंगके पताकादण्ड रनके ॥
दान जलदानके मतंगज महितं मत्त ।
बैरिनके प्रानके पृदाकुं पञ्च फनके ॥
नौकानिधि कूपंके बिपत्ति महाबारिधिके ।
पारिजात पल्लव प्रबुद्धकविजंनके ॥
राम रनलाडाके अधीस गिरिआडाके सु ।
हाडाकेरहे व्है हाथ छत्र छितिपनके ॥ २७ ॥

उदयगिरि केसमान१अचल और२ऊंचा है सिंहासन जिनका, लक्ष्मी से पूर्ण शूरवीरोंका३समूह है ४कमल जहां पर शत्रुओं केसमूह रूपी घूघू[उलूक]अपनेअपने ५ घरों में छिपकर बैठगये हैं और कविलोग रूपी७ चकवों के शोक का नाश हुआ है जिसके, रोक (प्रकाश) से और कीर्ति रूपी किरणें ७ लोकालोक नामक पर्वत से [पुराणों के मत से लोकालोक उस पर्वत का नाम है जो संपूर्णपृथ्वी को घेरेहुआ है] भिड़नेलगे हैं, नास्तिक रूपी दीपक के प्रकाश का नाश होकर गिरनेलगे, पृथ्वी रूपी ९ कमलनी का १० पति चहुवाणों का सूर्य रावराजा रामसिंह सूर्य के समान उदय होकर शोभायमान है॥ २६ ॥ रन के लाडा [दूलह) और १६ आडावळा नामक पर्वत के स्वामी हाडा कुल के क्षत्रिय रामसिंह के हाथ ११ लक्ष्मी के तकिये विजय रूपी हाथी के बांधने का खंभा स्त्रियों के कुच रूपी भ्रमरों के कमल, युद्ध की ध्वजा के दंड, दान रूपी जल [दान देते समय हाथ में जल लेकर संकल्प कियाजाता है उस जल रूपी मद जल के देनेवाले] को देनवाले १२ पूजित मस्तहाथी, शत्रुओं के प्राण लेनेवाले पांच फणों के १३ सर्प, विपत्ति रूपी समुद्र के पार लंघाने को निधि रूपी नाव के १४ बरदवान(मस्तूल)१५ पण्डित और कविलोकों के लिये कल्प वृक्ष के पत्ते और

सूरिजन मूरति छेद तर्कनकी जानैं जाँ ॥
सूरजन जानैं खुरलीमैं बहुतैं बढ्यो ।
कवि मनमानैं मीन सु ध्वनि महोदधिको ।
सचिव बखानैं मरजीमैं मन्त्रहीचढ्यो ॥
सादीलोक जानैं नल नकुल न ऐसे भये ।
जानैं रिपु दण्डही उपाय मतिमैं मढ्यो ॥
रानीजन जानैं रतिराज राजराजराम ।
जोगसिद्धि ऐसी कलि कालमैं कहाँपढयो ॥ २८ ॥
धर्मकुल चिरतैं अधर्मके उदधि बूड्यो ।
रामनृप राख्यो मोति संकट सहतसो ॥
भ्रमन भयंकरमैं भ्रमत निकास्यो दान ।
सूरपन काढ्यो तृनतन्तुन गहतसो ॥
अध्ययन भक्ति त्यौं दया तपअचेत ऐंचे ।
तत्वबोध ऐंच्यो हेरि कीकस रहतसो ॥
स्वाससेस काढे श्राद्ध अध्वर सउच सत्य ।
वैश्वदेव काढ्यो बुंबमैंरत बहतसो ॥ २९ ॥
संगरके साज सब सज्जित सतत होत ।
दिन दिन दुनौंदान कीरतिके कामतैं ॥

राजाओं के छत्र होरहे हैं ॥ २७ ॥

१ पंडित लोग २ मीमांसादि छः शास्त्र (पूर्वमीमांसा १ उत्तर मीमांसा २ सांख्य ३ योग ४ न्याय ५ वैशेषिक ६) ३ शस्त्रविद्या में ४ श्रेष्ठध्वनि रूपी समुद्र का मच्छ ५ घोड़ों पर चढ़नेवाले ६ कामदेव ॥ २८ ॥ राजा रामसिंह ने धर्म के कुल को ७बहुत समय से अधर्म के समुद्र में डूबे मृत्यु का दुःख पाते हुए को रक्खा, भयंकर भँवरों (पानी के चक्करों) में भमते हुए दान को,तिनकों के तंतुओं को पकड़ते हुए शूरापन को निकाला, पढ़ना भक्ति और दया इन अचेत हुओं को खींचा,ज्ञान की केवल ८हाड्डियांमात्र रह गई थीं जिस को खींचा, श्राद्ध९ यज्ञ और शौच के कुछ ही स्वास बाकी थे उस समय में निकासे और वैश्वदेव (होम बलिदान अतिथिभोजनादि गृहस्थी के नित्यकर्म) १०कूपता हुआ बहाजाता था जिसको निकाला ॥ २९ ॥ निरन्तर

सीसधरि सासन सरस्वती सभामैं रहैं ।
नाम धाम छोरैं अरि जाकेनैंक नामतैं ॥
ईरखा असूया दंभ मूढता मलिनकर्म ।
बिप्रलाप[1] व्यसन[2] पलानैं[3] धामधामतैं ॥
बिरच्यो बसिष्ठनैं भलैंही चहुवानभूप ।
राजमान[4] जाको कुल राजराजरामतैं ॥ ३० ॥
खेतमैं[5] कहाँतो उपमान बनैं अर्ज्जुनको ।
हेतमैं[6] कहाँतो हिय हरैं हितूजनके ॥
ओजमैं[7] कहाँतो आठौं जामही उदितरहैं ।
फोजमैं कहाँतो भट अंतक[8] अरनके ॥
बुधनकौं[9] दाबैं कोटि[10] बानीमैं कहाँतो साव-
धानीमैं कहाँतो न्याय पूगत पैरनके[11] ॥
घरमैं कहाँतो अलकाकी[12] आँखि राजाराम ।
करमैं कहाँतो तुल्य कर न करनके ॥ ३१ ॥
स्वाहासह हाजरि हिरण्यरेता[13] होमनमैं ।
सत्र[14] पसुसूना[15] ह्याँ पलादपुरी[16] ताँवती[17] ॥
बाँतको[18] त्याँ बिभव बन्यो ब्यजनं[19] जंत्रनमैं ।
ईसथिति[20] ओपैं आडअद्रि[21] अपनावती ॥
बरुन बिभूति नाना निकट निपान[22] मैं ।

१ विरोधोक्ति(छल के वचन) २ मनुस्मृति में कहे हुए मृगया आदि दश व्यसन काम से और पिशुनता आदि आठ व्यसन क्रोध से उपजे हुए अठारह व्यसन घर घर से ३ भागे ४ शोभायमान ॥ ३० ॥
५ रणखेत में ६ स्नेह ७ प्रताप ८ यमराज ९ पंडितों को १० शास्त्र परीक्षा में ११ शत्रुओं को भी न्याय मिलता है १२ कुबेर की पुरी ॥ ३१ ॥ होम के स्थानों में स्वाहा सहित १३ अग्नि है वही अग्निकोण के पतिका पुर है, १४ यज्ञ में १५ पशुहिंसा होती है वही नैर्ऋत्य दिशा के पति १६ राक्षसों की पुरी को १७ धारण करती है, १८ वायुदिशा के पति पवन का वैभव १९ पंखों में बन रहा है वही वायव्यकोण का पुर है, २१ आडावळा नामक पर्वत ही ईशान कोण के पति २० शिव का स्थान है नाना प्रकार के २२ जलाशयों में जल भरा है वह

संजेमनी सुनैय अलेलिति सुहावती ॥
बसेआनि बुंदीमैं दिगीसनके आठौं८ ढंगैं ।
अलेकाबजारमैं किलेमैं अमरावती ॥ ३२ ॥
सत्यबलसासन सुलेखसाली उग्रधन्वा ।
त्यौं धनंजय बिरोचन अपारहै ॥
जम समदर्सी धर्मराज प्रिय पुण्यजन ।
सुप्रचेतो मेघनाद पानिप अगारहै ॥
बुंदीपति बिदित महाबल जगतप्रान ।
श्रीद रंजराज ईस संकर उदारहै ॥
आठौंही दिसाके पुर बुंदीमैं बखानैं त्यौंही ।
आठौंलोकपालनको राम अवतारहै ॥ ३३ ॥
एकबेर समझि बिचारैं तत्व आगमके ।
एक१बेर चिप्रपुंखैं चिल्लैपैं चढावैंजो ॥

पश्चिम दिशा के पति वरुण का स्थान है. ३न्यायालयों में श्रेष्ठ२न्याय होते हैं सोही दक्षिण दिशा के पति यमराज की १ संयमनी नामक पुरी है, बाजार है वही उत्तर दिशाके पति कुबेर की ६अलका नाम पुरी है और किला में पूर्वदिशा के पति इंद्र की ७ अमरावती नामक पुरी है. इस प्रकार बुन्दी में आठों ही ४दिशापतियों के ५ पुर आकर बसे हैं. यहां पर ग्रंथकर्ता ने दिशाओं को दिखाने में कोई क्रम नहीं रक्खा सो कर्ता की इच्छा पर निर्भर है ॥ ३२ ॥ सत्य और बल के साथ हुक्म चलाने में व८श्रेष्ठ लेखों (लिखावटों) में कुशल होने में ९ इन्द्र का अंश है, क्योंकि इंद्र बलि दैत्यराज के साथ सत्य हुक्म चलाने वाला और लेखशाली (देवताओं में कुशल) है, इसी प्रकार १० शत्रुओं का ११ धन जीतने में अपार १२ अग्नि का अंश है क्योंकि अग्नि का नाम ही धनंजय है, इन्द्रियों के १३ जीतने और सब को समान देखने में १४ यमराज का १५ पुण्यजनों (धर्मात्माओं) का प्यारा होने में नैर्ऋत्य दिशा के पति पुण्यजन (राक्षस) का १६ विशाप चेतवाला होने से १७ मेघ के समान गर्जना करनेवाला पराक्रम का घर प्रचेता (वरुण) का बुन्दीपति महाबलवान् होने और संसार का १८ प्राणरूप होने में जगत्प्राण (पवन) का १९ लक्ष्मी देने में २० कुबेर का उदार और स्वामीपन में २१ महादेव का, जैसे आठों दिशाओं के पुर बुंदी में कहे तैसे ही रावराजा रामसिंह आठों लोकपालों का अवतार है ॥३३॥ २२शास्त्र के तत्व को २३बाण एक बेर ही प्रत्यंचा पर चढाने से शत्रु कामें है

एक१ बेर रंक असरनकों सरनराखैं ।
एक१बेर बोलैं अरु तर्कउपजावैंजो ॥
एक१बेर कवि बुध बीरन बढावैं मान ।
अरिअवेनीकौं एक१बेर अपनावैंजो ॥
रामराव राजाकी अपूरब बडाई यहै ।
एक१बेर देकैं फेर हाथ न उठावैंजो ॥ ३४ ॥
ऐसी भूँति हूसैं ए अदेयं नृपरामकें ।
प्रजाकों पीर आदर अधर्मय अभिमानकौं ॥
अधनकौं आश्रय नकार कविलोकनकौं ।
थैलीकौं थिरत्व सभा आवन अजानकौं ॥
बिद्याकौं बिरह मिंत देसबास कीरतिकौं ।
आयु आततताइनकौं देर घमंसानकौं ॥
क्रोधकौं कृपा त्यौं तत्वबोधकौं सिथिलभाव ।
परनकौं पीठि दीठि परबनितानकौं ॥ ३५ ॥
लैकैं बिसराम द्विजेराज के अघायजात ।
दोरिदोरि टौरैं सीतछाया श्रमदाहके ॥

जाते हैं१पंडितों का २ शत्रुओं की भूमि को ३ एक वेर दिये पीछे फिर हाथ नहीं उठाते अर्थात् एक समय में ही इतना देदेते हैं कि फिर देने का काम ही नहीं रहता अथवा एक वेर देकर-कुसूर होने पर भी पीछा लेने को हाथ नहीं उठाते यह राजा रामसिंह कीअपूर्व बड़ाइ है॥३४॥ऐसी४संपदा होने पर भी प्रजा को पीड़ा ६अधर्मों(पापियों) को आदर, अभिमान पाप अथवा ७ व्यसन वा अपराधियों को आश्रय, कवियों को नकार (नहीं यह कहना) कंजूसों की थैली को थिरता सभा में मूर्खों का आना, विद्या को थोड़ा सा भी वियोग, कीर्ति को अपने देश में वास अर्थात् कीर्ति सदैव विदेशों में ही रहती है८आततायी (अग्निलगा नेवाला, विषदेनेवाला, हाथमें शस्त्र लेकर मारने को आनेवाला, धन हरण करनेवा ला, भूमि हरनेवाला, स्त्री हरनेवाला) को आयु१०युद्ध को देरी क्रोध को कृपा११ ज्ञान को शिथिलता, शत्रुओं को पीठ और परस्त्री को दृष्टि इतनी बातें राजाराम सिंह के ९ अदेय (नहीं देने योग्य) हैं अर्थात् नहीं देते हैं॥३५॥१२ ब्राह्मण और आंबे के पक्ष में पक्षी१३कितने ही

सेवैं कोटरीन घनैं अध्वग अधीन हैय ।
पीन होयबेकौं रहि लेत फललाहके ॥
केत पंच्छ चाहके उछाहके उम्हाहे रहैं ।
मंजु मधुभोजी करैं मधु अवगाहके ॥
बाहके मैं बचन सिराहके कहाँलौंकहौं ।
राहके रसाँल कोंस रामनरनाहके ॥ ३६ ॥
अलिकपैं कलम चलैबो चतुराननको ।
पैंत्थपनलैबो इभदंतें कढिअैबोसो ॥
रामरघुराजकैसो अंगीकृत कैबो बँलि ।
बज्रको बनैबो पार प्रकृतिके जैबोसो ॥
भ्रूको खमखैबो बोरदैबो नीली रंगको ।
हलीको हल पाय हस्तिनापुरको नैबोसो ॥
प्रैसैको सुनैबो तत्वबोधकैसो पैबो व्हैबो ।
हाडाको हुकम लेख हीरेपैं लिखैबोसो ॥ ३७ ॥

षट्पदी ॥

मनुआगम अनुसार चलत व्यवहार सकल जँहँ ॥
बसुधाके कविबिबुध आनि आलंब लहत तँहँ ॥

१रहने के घर पत्ते वृक्ष के भीतर पक्षियों के रहने के कोटरे(कोचरे)२मार्ग चलनेवाले ३मार्ग चलनेको छोडकर४पक्ष और पंख५मधुर रस में पक्षे वसन्त ऋतु के आनन्द में गोतेलगाना(थाहलेना)६प्रशंसा के७राजारामसिंह के भंडार८मार्ग ऊपर केआम्रवृक्षके समान है॥३६॥९ललाट पर१०ब्रह्मा का लेख एक बार हो जाता है वह फिर मिटतानहीं११ऐसे ही अर्जुन की प्रतिज्ञा१२हस्ती के दंतों का बाहिर निकलआना१३ रामचन्द्र का अंगीकार करना१४पुनि वज्र का बनना१५मोक्ष होजाना१६भौंह का टेढ़ा होना१७बलदेव के हल से कौरवों की राजधानी हस्तिनापुर का नमजाना(महाभारत में यह कथा है कि कृष्ण के पौत्र को कैद करदेने के अपराध पर बलदेव ने कौरवों पर क्रोध करके दिल्ली को अपने हल से खींचकर यमुना नदी में वहादेना चाहा था जब से दिल्ली टेढ़ी हो गई है)१८मन्त्रविशेष१९हाडाकुल के चोहाण क्षत्रिय रामसिंह का हुकम हीरे के ऊपर लेखखोद देनेके समान अमिटहै, जैसे कि उपरोक्त सब पदार्थ अमिट हैं॥३७॥२० मनुस्मृति के २१ पंडित २२ आश्रय

सुधर्माहिँ करि सुगम बनत परिखद प्रासादन ।
बादजल्प गति बिबिध ऊँह बिथुरत आल्हादन ॥
खुरली बिनोद सहत अखिल धनुरबेद सब मर्मधर ।
नृपरामसिंह इहिँबिधि तपत पुरबुंदिय निजधर्मपर ॥ ३८ ॥
सप्त७ईति करि रहित राज्य जाके अमोघसुख ।
सुरभि दुग्ध बहु स्रवत फूलि तरु फलत समय रुख ॥
रोगहिँ जानत नाँहिँ प्रजा जनपद आनंदित ॥
निस्व आढ्य समन्याय बत्त प्रसरत जगबंदित ॥
बिनुधर्म नीति केवल न बिधि बिभव सकल उद्योत बर।
नृपरामसिंह इहिँबिधि तपत पुरबुंदिय इकछत्रधर ॥ ३९ ॥
सिच्छादिक खट६अंग सहित श्रुति च्यारि४ श्रवनकरि ।
धृति१८मित पुराय पुरान समुझि एकाग्रचित्त धरि ॥
मीमांसा स्मृति तर्कएसु विद्या सक्करि१४ मित ।
दण्डनीति हय सस्त्र तंत्र पढिहुव प्रयासजित ॥
गीतादि कला चउसट्टि६४ गहि काव्य छ६ भाखा बादकर ॥
नृपरामसिंह इहिँबिधि तपत बुंदियपुर इकछत्रधर ॥ ४० ॥
कपिल सेस कनभच्छ तंत्र सुनि तर्कबितर्कन ।

१देवसभा को २ महलां में सभा बनती है ३ वितंडा वाद को छोड़कर स्पष्ट बोलने में आनंद के साथ ४ तर्कना फैलती है ५ शस्त्र विद्या की क्रीड़ा ॥३८॥ ६ "अतिवृष्टिरनावृष्टिः शलभा मूषकाः शुकाः । स्वचक्रं परचक्रं च सप्तैता ईतयः स्मृताः॥" इन सात ईतियों करके जिनका राज्य रहित है ७गौवों ८ देश में ९ धनहीनका और१०धनवान् का न्याय बराबर होता है, अथवा न्याय में ये दोनों बराबर समझेजाते हैं ११धर्मके साथ नीति को बरतते हैं बिना धर्म केवल नीति का बरताव नहीं करते ॥३९॥१२शिक्षा को आदि लेकर छहों वेदांग१३चारोंवेद१४अठारहों पुराण१५चौदह विद्या१६अर्थविद्या व नीतिशास्त्र१७हयविद्या(शालिहोत्र)१८शस्त्रविद्या (धनुर्वेद]१९तंत्र शास्त्र२०परिश्रम को जीतनेवाला [अनालसी] ॥ ४० ॥२१कपिल का सांख्य शास्त्र२२शेष का मीमांसा व छंदशास्त्र२३कणादका वैशेषिक शास्त्र२४ये शास्त्र तर्कवितर्कों के साथ सुने

करामलक[1] सब किन मंन्नि[2] बेदांत श्रेयमन ॥
भारतादि इतिहास सकल सुनि बहुविचार जुत ।
गीता श्रीभागवत नित्य श्रद्धये[3] जपत नुत[4] ॥
श्रीरंगनाथ सेवक परम अष्टि१६अंग अर्च्चन सुघर[5] ॥
नृपरामसिंह इहिं बिधि तपत बुंदियपुर इकछत्रघर ॥ ४१ ॥
पञ्चरात्रमुख[6] तंत्र समुझि धृति१८ उपपुरान सुनि ।
आयुर्ब्बेद रु सिल्प पुराय रामायनादि पुनि ॥
मल्लिनाग कृत मदनतन्त्र गजतन्त्र मर्म्मगहि ।
सामुद्रिक सकुनादि उचित आँगम[7] अनेकलहि ॥
नररत्न परख कोबिर्द[8] निपट काल देस समुचित करत ।
नृप अस्थिपाल कुल पाल[9] इम रामसिंह छत्रहिंधरत ॥४२॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ राजधानीराजगुणवर्णनं नाम षष्ठो६ मयूखः ॥ ६ ॥

दोहा

बुंदीपुर इहिंबिधि बिदित राज्यकरत नृपराम ॥
कामबिटप[10] बुंध[11] बिप्रकुल कबिकुल पूरन काम ॥ १ ॥
बलाविंध्यपति[12] रामरवि बिलसत बिभव बहार ॥
अंजमित्र[13] लासक अहित[14] घूक डुरावन हा ॥ २ ॥
सुभग चित्रसाला सदन इक्क दिवस अवनीस ॥
राजत रचि परिखंद[15] रुचिर[16] सुरुचि छत्र धरिसीस ॥ ३ ॥

---

१ हस्तामलक (हाथ के आवळा के समान) जिनमें वेदांत को सब से श्रेष्ठमानकर ३ श्रद्धा पूर्वक ४ स्तुतियोग्य ५ षोडशोपचार पूजा करने में चतुर ॥ ४१ ॥ ६ पंचरात्र आदि भक्ति शास्त्र को समझकर ७ शास्त्र ८ पण्डित ९ राजा अस्थिपाल के कुल का पालन करनेवाला ॥ ४२ ॥

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में राजधानी और राजा के गुण वर्णन का छठा मयूख समाप्त हुआ ॥

१० कल्पवृक्ष ११ पंडित १२ विन्ध्याचल रूपी आडावळा पर्वत के पति १३ कमल रूपी मित्रों को प्रफुल्लित करनेवाले १४ घूघू रूपी शत्रुओं को १५ सभा १६ श्रेष्ठकांतिवाला

कवि बुध भट हाजरि सकल, बिथुरत बचन बिनोद ॥
उडुमण्डल[1] बिच इंदु[2] जिम, संभर[3] लसत समोद ॥ ४ ॥
तहँ द्विज आसानन्द प्रति, अक्खिय नृप सस्मेर[4] ॥
श्रीभारत आवृत्ति बलि[5], बरनहु चोथी बेर ॥ ५ ॥

पज्झटिका ॥

सुनि नृप नियोग[6] हरखिय प्रबुद्ध[7], प्रारंभ रचिय लखि समय सुद्ध ॥
तहँ नीलकंठ टीकानुसार, द्विज करनलग्यो भारत उचार ॥ ६ ॥
तहँ प्रथम पौष्य आख्यान[8] आय, उत्तंक[9] चरित तिहिं मध्य पाय ॥
नृप अवट[10] खनन सुनतहि सचेत, कवि पंति लखी स्मित[11] हित समेत ७
किय हुकम मधुर चहिइष्ट काज, मम हार्द सुनहु सब सुकविराज ॥
चहुआन[12] बंस बर्णन सुसंध[13], है त्रिदसगिरा[14] गुंफित प्रबंध[15] ॥ ८ ॥
अवटादि चरित यह तिनहु माँहि, संस्कृत दुरूह[16] सब सुगम नाँहि ॥
अब होनलगे नर बुद्धिमन्द, समुझे न अमरबानी[17] अनन्द ॥ ९ ॥
है जो नरभाखा ग्रथित ग्रंथ, पहुंचैं तो सब लहि सुगमपंथ ।
श्रुति[18] करि पवित्र कवि सुनि निदेस[19], करजोरि लगे अक्खन असेस १०
कवि पंडित जे दुल्लभ सुगाथ[21], ते सबहि लेत तव अन्न नाथ ।
अब एक देन आयस बिलंब, जिहिं है सुरचैं कुलगुन कदंब[22] ॥११॥
सुनि कहिय भूप सब गुन समर्थ, रसबीरमूर्त्ति उद्दंड अर्थ ।
रविमल्ल[23] सुकवि छंदगिरानिधान, ए करहु उक्त[24] आयस प्रमान ।१२।

---

१ तारामण्डल २ चन्द्रमा ३ चहुवान (सांभर नगर में राज्य करने के कारण चहुवाणों को " संभर, संभरी, संभरीक और संभरवार " कहते हैं ४ मंदहास पूर्वक ५ पुनि ६ आज्ञा ७ पंडित ८ महाभारत के आदिपर्व में एक कथा है ९ गौतम ऋषि के शिष्य उत्तंक की कथा भी उसी पौष्य के आख्यान में है १० राजा रामसिंह ने उस उत्तंक के खड्डा खोदने की कथा सुनते ही ११ हसते हुए १२ चौहाण (चहुवाणों का मूलपुरुष) का १३ अच्छी प्रतिज्ञा के साथ अथवा संधान कियाहुआ १४ देववाणी (संस्कृत) में गुथाहुआ १५ ग्रंथ में १६ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसा १७ संस्कृत भाषा १८ कानों को १९ आज्ञा २० हसके २१ अच्छी कविताकरनेवाले २२ समूह २३ सूर्यमल्ल २४ कही

इम होत बन्यों कछुदिन बिलास, तिथि तीज३ लहीसितें[1] राधमास ।
जगि ब्राह्मय[2]मुहूरत नृप सुभाय, किय मंगल दरसन हष्टछाय ॥१३॥
विप्रनदै ओदन[3] भूमि भर्म[4], करि मंजनादि सब नित्यकर्म ।
किय रंगनाथ मंदिर प्रवेस, द्विजे[5]रामजन्म उच्छव विसेस ॥१४॥
मंदिर वह हाटक[6] रजतजात, मनिजटित लसत जनु रविप्रभात ।
जँहँ रत्न[7]पीठ थित रंगराज[8], समयोचित सज्जित सकलसाज ॥१५॥
मंदिर मुख[9] आयत[10] अजिर[11] एक, बिच सलिल[12]जंत्र छुट्टत अनेक ।
कुंकुम गुलाबजल लिप्त धाम, जँहँ माघ[13]सीत नहीं राध[14]घाम ॥१६॥
कवि बुध छबि उत्तर ओर पात, भेट[15]पंति दिसा दक्खिन सुहात ।
हरि समुख पूर्वदिस गानकार, पातुरिगन तांडव[16] पटु पकार ॥१७॥
होवत मधु मर्दल[17] मुरज[18] नाद, मंजीर[19] ताल बर बीन[20]बाद ।
स्वर उठत सुद्ध बिकृतन[21] अलाप, चउ४ताल जाति श्रुति सहित जाप १८
सुख सीत मंद जँहँ गंधबाह[22], अवतार परसुधर तिथि उछाह
नृपकरिय जाय दरसन बिनीत, पूजनकिय सोलह १६ अंगप्रीत ।१९।
सविधान रचिय हरिबपु सिंगार मल्ली[23] सरोज[24] सुम तुलसिहार ।
कर्पूर दीप आरति उतारि, दिस सबन संखसीकरें[25] बयारि ॥२०॥
पुनिकरि प्रनाम नमि अष्ट[26]८ अंग निजनिलय[27] आय सहसभ्य[28] संग ।
तँहँ रचिबिनोद परिखद बिधान बैठो सिंहासन चाहुवान ॥ २१ ॥

हुई आज्ञा को १ वैशाख सुदी तीज २ चार घड़ी रात बाकी रहते ३ अन्न ४ स्वर्ण ५ परशुराम का ६ सोना चांदी से रचाहुआ ७ रत्नों से जड़ेहुए सिंहासन पर ८ बुन्दीवालों के इष्टदेव रङ्गनाथ नामक विष्णु की मूर्ति ९ आगे १० चौड़ा ११ चौक १२ फुहारे १३ जहां पर माघ महीना की सी ठंढ है १४ वैशाख मास की सी गरमी नहीं १५ उमरावों की पंक्ति १६ नाचने की रीति में चतुर १७मधुर ध्वनिवाला मृदंग के सदृश वाद्य विशेष १८ मृदंग (वाद्यविशेष) १९ताल मंजीरे (वाद्यविशेष) २०वाद्य २१शुद्ध और विकृत भेद से दो प्रकार के स्वर*होते हैं २२ पवन २३ मोगरा २४ कमल २५ जलकण (आरती होती है तब शंख में लेकर जल छींटते हैं) २६ प्रणाम के [उर शिर दृष्टि मन वचन पग हाथ घुटने] ये आठ अंग हैं २७अपने महल में २८ सभासदों के साथ

---

* "ततः शुद्धाः स्वराः सप्त विकृता द्वादशाप्यमी ॥ " इति संगीतदर्पणे ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथमराशौ वंशप्रबन्धप्रारम्भविचारो नाम सप्तमो ७ मयूखः ॥ ७ ॥

दोहा

निज निकाय[1] परिखद रचिय, राज मुकुटमनि राम[2]॥
कवि पंडित सुभटन सहित, बनत बिनोद ललाम ॥ १ ॥

मुक्तादाम

रचीसुखधाम सभा नृपराम, लसैं भट पंकति दक्खिन बाम॥
रंजैं[3] कवि पंडित सम्मुख सर्व, तजैं गुरु[4] कौव्य[5] जिन्हैं लखि गर्व ।२।
लसैं हरिआसन[6] उप्पर भूप, ढुरैं ब्यजनावलि[7] सीत स्वरूप।
ढुरैं सिर चौंर दुरघाँ अवदात, मनों सिवसेखर गंग प्रपात ॥ ३ ॥
छुटैं जलजन्त्र[12] गुलाबज नीर, मिले बहु बर्ण[13] कपूर पटीर[14]॥
मनौं दुख आतप[15]को लहि सीत, बस्यो इहिं आलय[16] होय अभीत।४।
महीपति जानि प्रबुद्ध[17] प्रबीन, तहाँ रविमल्लहिं[18] आयस[19] दीन ॥
रचो नृगिरा[20]करि बंसप्रबन्ध[21], धरो सबही मत मध्य सुसंध[22] ॥ ५ ॥
महादिन आज ससीजुत[23] मंजु[24] रु[25], रोहिनि[26] तैतिल[27] औ अतिगंजु[28] ॥
करो अबही तसमात[29] बिचार, बनैं जिम ग्रन्थ अबिघ्न प्रकार॥६॥
सुन्यौं कवि यौं असुनाथ[30] निदेस, कह्यो करजोरि तथाऽस्तु[31] नरेस॥
तहाँ बहुद्रव्य मँगाय महीस, सकंकन[32] कुंडल[33]की बखसीस ॥७॥
दयो फल पूर्ण अमत्र[34] बहोरि, कहे मृदुबैन कृपादृग जोरि ॥

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में वंशभास्कर ग्रंथ के प्रारंभ के विचार का सातवां मयूख समाप्त हुआ ॥

१ अपने महल में २ बुंदी का राजा रामसिंह ३ शोभायमान ४ बृहस्पति [सुरगुरु] ५ शुक्राचार्य ६ सिंहासन ७ पंखों की पंक्ति ८ दोनों तर्फ ९ श्वेत १० शीसपर ११ पड़ना १२ फुहारे

१३ विलेपन अथवा प्रकार १४ चंदन १५ ताप १६ घर में १७ पंडित [ऊहापोहकुशल] १८ ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल को १९ आज्ञा २० प्राकृतादि देशभाषा २१ वंशवर्णन का ग्रंथ २२ श्रेष्ठ प्रतिज्ञा के साथ २३ चन्द्रवार के सहित २४ मनोहर २५ अरु २६ रोहिणी नक्षत्र २७ तैतिल करण २८ अतिगंज नाम योग २९ इस कारण से ३० प्राणनाथ ३१ हे राजा ऐसा ही हो ३२ कड़ों के सहित ३३ कानों में पहरने के मोती ३४ पात्र

लये कवि अर्पित[1] सीसचढाय, दयो सुभआसिख त्यौं बिरुदाय[2] ।८।
तुही नृप काव्यनको रिझवार, तुही समुझैं श्रम बुद्धिबिचार ॥
तुही सब भूपनको सिरमोर, तुही कृतकृत्य नैं[3] तोसम और ॥ ९॥
तुही कुल पंकजको नृप भानु, तुही कविपावकको पवमानु[4] ॥
तुही अघ अंण्डजके[5] सिर बाज, तुही अरिदंतिनकौं मृगराज[6]॥१०॥
तुही मन रावनसो मजबूत, तुही रन राघव ज्यौं रजपूत ।
तुही कलिभूपनकौं सिखदैन, तुही लरि साहनसौं भुवलैन ॥११॥
तुही श्रुतिमारगको रखवार, तुही नृप धर्म भयो अवतार ॥
तुही नमनीयं करैं निजबंस, तुही छलकांनन आनलअंसैं ॥ १२ ॥
तुही रमैनी छितिको रसलेतु, तुही रतिकीरतिको झषकेतु ॥
तुही दुखपब्बय पच्छैति सक्र, तुही इक सत्यब्रती भुवचक्र ॥ १३ ॥
तुही बुध बारिद उत्तरबात, तुही नृप चोरनको परभात ॥
तुही परतत्व बिबेचन दच्छ, तुही रससिंधु निमंजन मच्छ ॥ १४ ॥

दोहा॥

बिरुदावलि इम अक्खि कवि, दै आसिख मुदपाय ॥
ग्रन्थरचन निजगेहकौं, आयो नृपहिं रिझाय ॥ १५ ॥
करिमंजेन धरि इष्टमन, दै श्रद्धाजुत दान ॥
द्विज भोजन बहु दच्छिना, दिय पुनि बिहित बिधान ॥ १६ ॥
अनल बंस आरंभ के, आदि सकल अब इष्ट ।
बंदौं कवि रविमल्ल बलि[23], टारहु अखिल[24] अरिष्ट[25] ॥ १७ ॥

---

१ अर्पण किये हुए २ उत्साहवर्धिनी स्तुति करके ३ नहीं ४ पवन ५ पाप रूपी पक्षियों के ६ सिंह ७कलि युग के ८ वेद ९ नमस्कार करने के योग्य १०छल रूपी वन के ऊपर ११अग्नि का अंश, पक्षे हे अग्निवंशी १२ भूमि रूपी स्त्री का १३कीर्ति रूपी रति का कामदेव १४ पर्व रूपी पर्वतों के पंख मूल के अर्थ इंद्र १५ सत्यव्रत का धारण करनेवाला १६भूमंडलमें १७पंडित रूपी मेघ का बढानेवाला १८चतुर १९ शृंगारादि नव रसों के समुद्रका २० थाह लेनेवाला २१ स्नान २२ उचित २३ पुनि २४ संपूर्ण २५ विघ्न

बंदौं गनपति इभबदनं[1], दयानिधान दुरूह[2] ॥
दलहु दंतकरि दासके, पाप कुमति प्रत्यूह[3] ॥ १८ ॥
कुंद[4] बिसद रु[5] कच्छपी[6], बाँदन तत्व प्रबीन ॥
थप्पहु बानी[7] भक्तिथिर, अप्पहु युक्ति नवीन ॥ १९ ॥

मनोहरम् ॥

हरि[9] हर[10] इंदिरा[11] उमाके[12] अंघ्रि[13] सीसआनौं ।
ठानौं नंति[14] तपनसहस्रकरावलिकौं[15] ॥
धर्मको घरानौं सब पूजिपहिचानौं नृप ।
राम जो खजानौं पाय थानोंदै न कलिकौं[16] ॥
कपिल कनादको बिसेसतासौं बानौं बंदि ।
मानौं मुनि पाणिनि सरोजं[17] सब्दआलिकौं ॥
जैमिनिकौं जानौं त्यों गंदानौं मुनिगोतमकौं ।
व्यासकौं बखानौं मैं प्रमानौं पतंजलिकौं ॥ २० ॥

दोहा

कमलचरन इत्यादिकन, नतिपूरब उर आनि ॥
कृपाबिघन गन कंदनकौं[20], मंगि भक्ति प्रियमानि ॥ २१ ॥
हरि हेरंब[21] रमा[22] गिरा[23], गुरुन पूजि हितसंग
बिरचन ंस[24] कौं अबकवि धरिय उमंग ॥ २२ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ वंश प्रवन्धप्रारम्भनियोगपूर्वकपुनर्मङ्गलशंसनमष्टमो ८ मयूखः। ८।

---

१ हाथी के मुखवाला २कठिनाई से तर्कना मेंआवे ऐसा ३विघ्न४मोगरा के पुष्प समान श्वेत कान्तिवाला५कांतिवाली६ वीणा का नाम है ७ बजाने के तत्व में ८हे सरस्ती ९ विष्णु १० शिव ११ लक्ष्मी १२ पार्वती१३ चरण १४ नम्रता१५ हजारहाथों की पंक्तिवाले सूर्य को१६ हे रावराजा रामसिंह जो पुरुष खजाना अर्थात् संपत्ति को पाकर कलियुग को स्थान नहीं देते हैं ऐसे सब धर्मके घरानों को मैं पूज्य पहिचानता हूं१७शब्द रूपी कमल का भ्रमर१८कहों१९नम्रता पूर्वक २०नाशकरने को२१ गणेश २२ लक्ष्मी २३ सरस्वती २४ वंशवर्णन का ग्रन्थ-

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में वंशवर्णन का प्रारंभ रूपी कार्य पूर्वक फिर मंगलाचरण करने का आठवां मयूख समाप्त हुआ

अथ ग्रंथप्रारम्भकाले गतकल्पकाललग्नग्रहादिनिश्चयनम् ।

दोहा

दस१० गुरुअक्खर उच्चरन, काल प्रानअभिधान ।
खट६ प्राननको इक१पल, घटी१ सठ्ठि६०पलमान ॥ १ ॥
घटी सठ्ठिको इक१दिन, रजनीजुत यह सब्द ॥
तीस३०दिननको मास इक१;एँ बारह१२ इक१अब्द ॥ २ ॥
मेस१रासि मुख परसि रवि, आनि छुवैं पुनि जोहि ॥
सौरबरस१ सो नरनको, देवनको दिन१सोहि ॥ ३ ॥
देवनको यह दिवस१हू, निसा१सहित पहिचानि ।
दिवस तत्थ उत्तरअयन, रजनी दक्खिन जानि ॥ ४ ॥
राति सु दिन दिन राति ए, दैत्यनकैं बिपरीत ।
चांद्रमास अब भाखियत, लखि सिद्धांत बिनीत ॥ ५ ॥
अँमिकातिथिके अंतमैं, इक्कत रवि ससि आय ॥
आवैंपुनि तत्थहि उभय२, चांद्रमस१ सु कहाय ॥ ६ ॥
पितर दिन१ यह रात्रिजुत, असितपक्ख दिन१तत्थ ।
बिसदपक्खं जानहु निसा१, सावनमिति अब अत्थ ॥ ७ ॥

अबग्रंथके प्रारंभसमयमें बीतेहुए कल्प,समय,लग्न,ग्रह आदिका निश्चयकरनाहै

दश गुरु अक्षरों के उच्चारण में जितना समय लगे उसका १ नामप्राण (एक श्वास) है, इन छः प्राणों का एक पल होता है, साठ पलों की एक घड़ी होती है ॥ १ ॥ साठ घड़ियों का एक दिन रात होता है, ऐसे तीस दिनों का एक महीना और बारह २ महीनों का एक ३ वर्ष ॥ २ ॥ मेष राशि के ४ आदि को स्पर्श करके फिर सूर्य पीछा उसी स्थान पर आजावे उस को मनुष्यों का ५ सौर वर्ष कहते हैं और वही देवताओं का एक दिन है ॥ ३ ॥ यह देवताओं का दिन भी रात्रि सहित जानो । जहां पर उत्तरायण तौ दिन और दक्षिणायन रात्रि है ॥ ४ ॥ जो देवताओं का दिन है वह तो दैत्यों की रात्रि और देवताओं की रात्रि है वह दैत्यों का दिन है । इन को विपरीत जानलेना चाहिये ॥ अब इसके आगे ६ सिद्धांत की रीति से चान्द्र मास कहने हैं ॥ ५ ॥ ७ अमावास्या के अन्त में सूर्य चद्रमा एक राशि पर आकर फिर उसी स्थान पर पीछे दोनों आजावे उसको चांद्र मास कहते हैं ॥ ६ ॥ यह पित्रीश्वरों का एक दिनरात है । जिस में ८ कृष्ण पक्ष तो दिन और ६ शुक्ल

ग्रहें उदयद्वय२ अंतर सु, सावनदिन१ पहिचानि ।
सोहि कुदिन अरु भभूमनें,काल सुभदिवस जानि ॥ ८ ॥
ख ख ख नेत्र गुन बेद४३२०००ए, च्यारिगुनैं कृतमाँहिं ।
त्रेतामैं त्रि३गुनैं बरस, दु२गुनैं द्वापर आँहिं ॥ ९ ॥
कलियुगके ए ४३२०००इक१गुनैं,जानहु बरस सुजान ।
एक१ महाजुगके चरन, च्यारि कहे इहिं मान ॥ १० ॥
निज रवि१२ लवें संध्या बरस, आदि चरनके उक्त ।
तिते अंतसंध्यांसके, जे सब इनबिच जुक्त ॥ ११ ॥
च्यारि४ चरनके सब बरस, जुरैं महाजुग१ जानि ।
ख ख नभ नभ रद बेद ४३२००००ए, वाके अब्द प्रमानि ॥ १२ ॥
कुर्धांने महाजग एक१ मनु, तें चउदह जब होय ।
इक१ बिधिदिन तितनी निसा, १ रनकल्प ते दोय२ ॥ १३ ॥
मनुनकेहु संध्याबरस, कृतहायंन १७२८०००मित आँहिं ।

पल राात्रि है। अब यहां पर सावन दिन कहते हैं ॥ ७ ॥ दो१सूर्यों के उदय के अंतर को (सूर्य उदय होकर अस्त होने पश्चात् फिर उदय होवे जिस के बीच के समय को) सावन दिन कहते हैं, वही कुदिन (भूमि का दिन) है, और अश्विनी आदि नक्षत्र प्रतिदिन उदय होकर फिर उसी स्थान पर उदय होवे सो २ भ (नक्षत्र) दिन जानो ॥ ८ ॥ चार लाख बत्तीस हजार को चौगुना करने से १७२८००० वर्ष ३ सत्ययुग के होते हैं और त्रेतायुग में चार लाख बत्तीस हजार को तिगुना करने से १२९६००० वर्ष होते हैं इसी प्रकार उक्त संख्या को दुगुनी करने से द्वापर में ८६४००० वर्ष होते हैं और यही एक गुने अर्थात् ४३२००० वर्ष कलियुग के होते हैं. इसी प्रमाण से एक ४ महायुग के चार चरण होते हैं जिस के ४३२०००० वर्ष हुए ॥ ९ ॥ १० ॥ अपने अपने (युगों के) वर्षों का बारहवां ५ अंश जो आदि चरण में चार लाख बत्तीस हजार ६ कहे उतने ही वर्ष संध्या और संध्यांश के सब इन में ७ जुड़े हुए हैं ॥ ११ ॥ इस प्रकार चार चरण के सब वर्ष जोड़ने से महायुग जानो. जिस का तयालीस लाख बीस हजार वर्षों का प्रमाण है ॥ १२ ॥ एक मनु में ऐसे इकहत्तर ८ युग होते हैं और ९ ऐसे चौदह मनु का ब्रह्मा का एक दिन और इतनी ही रात्रि होता है वे ही मनुष्यों के दो कल्प हैं ॥ १३ ॥

मनुओं के संध्या के वर्ष भी १० सत्ययुग के बराबर होते हैं, इन संधियों

आदि रु मध्यनमैं रु ए, अंतहु गिनहुउमाँहिं ॥ १४ ॥
मनुसंध्या हायन जुरत, यौं ए पंद्रह१५बेर ॥
है तब दिव्यहजार१००० जुग, सोहि दिवस१ बिधिकेर ॥ १५ ॥
बिधिके बरसपचास५० गत, यह बहुमत उद्योत ।
हायन अष्टक अर्द्धजुत ८१२, कतिकन मत गतहोत ॥ १६ ॥
वर्त्तमान बिधिदिवसमैं, छ६मनु गये तजि प्रान ॥
स्वायंभुव१ इक१ दूसरो, स्वारोचिस अभिधान ॥ १७ ॥
उत्तम३ तामस४ रैवत५ रु, चाक्षुष६ ए गत जानि ।
बैवस्वत७ सप्तम७ मनु सु, बिद्यमान अब मानि ॥ १८ ॥
गये महाजुग मुनि नयन२७, या मन्वंतर माँहिं ।
अग्रगँ जुगके त्रि३पद गत, अब चोथो कलि आँहिं ॥ १९ ॥
भूमि बेद नव बेद ४९४१मित, किय कलि अब्द प्रयान ।
मास इक१ दिन दुव२ घटी, सोलह१६ पलहु समान१६ ॥ २० ॥
बिधिके इक१दिनमाँहिं रवि१, कवि२ बुध३ स्वगति अभेद ॥

को मनुओं के आदि में बीच में और अंत में प्रसन्न होकर गिनो ॥१४॥ इस प्रकार मनुओं की संध्या के वर्ष पन्द्रह बेर जुड़ते हैं तब दिव्य हजार युग होते हैं, सो ही १ ब्रह्मा का दिन है ॥ सिद्धांत में नौ प्रकार का काल है अर्थात् ब्राह्मय, दैव, आसुर, पैत्र्य, सौर, सावन, चान्द्र, नाक्षत्र और बार्हस्पत्य. इसी बार्हस्पत्य से प्रभवादि ६० संवत्सरों का प्रारंभ होता है॥१५॥ बहुत लोकों के ३मत से ब्रह्मा के पचास वर्ष२बीते हैं और कितनेक लोकों के मत से ब्रह्मा के साढा आठ वर्ष बीते हैं ॥ १६ ॥ ब्रह्मा के इस वर्तमान दिन में छः मनु ५ बीत गये जिनके ४ नाम मूल में स्पष्ट हैं और अब सातवाँ वैवस्वत मनु ६ वर्तमान है ॥ १७ ॥ १८ ॥ इस मनु में सत्ताईस महायुग बीत गये और ७ आगे चलनेवाले (अट्ठाईसवें) युग के तीन चरण (सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग) बीत कर अब चौथा ८ कलियुग वर्तमान है ॥ १९ ॥ चार हजार नवसौ इकतालीस वर्ष, एकमास दो दिन, सौलह घड़ी और सौलह पल कलियुग के गये ॥२०॥ब्रह्मा के एक दिन में सूर्य ९ शुक्र और बुध ये तीनों ग्रह अपनी अभेद (इन तीनों ग्रहों की स्पष्ट गति तो भिन्न भिन्न है परंतु मध्यम) गति एक ही है सो उस मध्यम गति से ४३२०००००० बार बारह

भोगत ए तीन३हि भगन[1]

कोटि१००००००० गुनित रद बेद४३२००००००० ॥ २१ ॥

ससि सुर सर मुनि हय बिसिख

लक्ख१००००० गुनित ५७७५३३००००० अरु आर ।

आकृति सर बसु कर भुजग

रस नव आकृति२२९६८२८५२२बार ॥ २२ ॥

गुरु सर सर चउ रस नयन, कर चोसठिगुन३६४२२६४५५ बेर ।

बसु नव हग मुनि तर्क सर,रस सक्करि १४६५६७२९८सनि केर।२३।

बसु नृप सिव गुन रद नयन २३२३१११६८

आहिक१ राहु२भ भोग ।

है रविदिन अर्बुद१००००००००गुनित

दुव सर सर तिथि १५५५२००००००००० जोग ॥ २४ ॥

अंक नंद नव दुव ख नृप१६०२९९९ ।

प्रयुत१०००००० गुनित१६०२९९९००००००० ससि केर ॥

कह ख ख ख ख सर कृत नृपति

नव मुनि हय तिथि१५७७९१९४५००००बेर ॥ २५ ॥

सर कृत खट गुन दुव नयन, पन्नग पन्द्रह१५८२२३६४५ठानि ॥

अयुत१०००० गुनितए१५८२२३६४५००००भभ्रमनपच्छिमगामीजानि॥

पादाकुलकम् ॥

१राशियों को भोगतेहैं॥२१॥और इसीप्रकार ब्रह्माके एक दिनमें चन्द्रमा५७७५३३००००० बेर बारह राशियोंको भोगता है और२२९६८२८५२२बेर बारह राशियों पर मंगल भ्रमण करता है ॥ २२ ॥ ३६४२२६४५५ वार बृहस्पति भोगता है और १४६५६७२९८ बार शनैश्चर घूमता है ॥ २३ ॥ २३२३१११६८ वार राहु फिरता है। ब्रह्मा के एक दिन में एक अर्ब से पन्द्रह हजार पांच सौ बावन को गुणा ने से १५५५२००००००००० सूर्य के दिन हुए ॥ २४ ॥ इसी प्रकार ब्रह्मा के एक दिन में सोलह लाख दो हजार नव सौ निन्नानवें को दश लाख से गुणाये तौ १६०२९९९००००००० दिन चन्द्रमा के हुए और ब्रह्मा के एक दिन में पृथिवी के दिन १५७७९१९४५०००० हुए ॥ २५ ॥ १५८२२३६४५ को दश हजार से गुणा किया तो१५८२२३६४५०००० दिन नक्षत्र भ्रमण के पश्चिमगामी जानो।२६।

रवि१कवि२बुध३के भगन कहेजे ।
कुज१गुरु२सनि३चलतुंग भगन जे ४३२००००००० ॥
बुधके कृत बसु नव बसु नव नव ।
खट गुन नव सत्रह१७९३६९९८९८४चलोच्च भव ॥ २७ ॥
दुव नव बेद अंक बसु गुन दव ।
द्वि ख मुनि७०२२३८९४९२ भृगु चलतुंग भगन धुव ॥
अहि सर बसु सर दस गज अहि कृत ।
४८८१०५८५८ ससि मंदोच्च भगन भूमीभृत ॥ २८ ॥

दोहा

ख नभ गगन बसु द्दग यह कु१७२८०००,हुव इहिँ क्रम कृत१बर्ष॥
खछ नव जगती १२९६० सत१०० गुनित,
१२९६००० त्रेता३ वर्ष प्रकर्ष ॥ २९ ॥
सहँस१००० गुनित कृत तर्क गज ८६४०००, द्वापर३अब्दसमूह॥
प्रथम कह्यो कलिको प्रकट, जानहु हायन जूह४३२००० ॥३०॥
जोरि च्यारि४ये जुग कह्यो,इक्क महाजुग मान४३२००००॥
इक्कहत्तरि७१ करि जो गुन्यौं, मनुहायन मिति थान ।३१।

षट्पदी ॥

सूर्य शुक्र और बुध के राशियों का भोग ब्रह्मा के एक दिन में कहा सो ही मंगल, बृहस्पति और शनि चल (शीघ्र) तुंग (उच्च) का भगण(राशियों का भोग) जानो. वे ४३२००००००० होते हैं और १७९३६९९८९८४ भगण बुध के चलोच्च (शीघ्रोच्च) के होते हैं ॥ २७ ॥ ७०२२३८९४४९२ शीघ्रोच्च के शुक्र के भगण होते हैं ४८८१०५८५८ हे राजा रामसिंह चन्द्रमा के मन्दोच्च के भगण (राशियों के भोग) होते हैं ॥ २८ ॥ अब आगे अहर्गण लाने के लिये सत्ययुगादि के वर्षों की गणना फिर लिखते हैं,१७२८०००सत्ययुग के वर्ष और १२९६००० त्रेतायुग के श्रेष्ठ वर्ष हुए॥२९॥८६४००० वर्षों का समूह द्वापर का और ४३२००० कलियुग के वर्षों का समूह जानो ॥ ३० ॥ इन चारों युगों को जोड़कर ४३२०००० वर्षों का एक महायुग का प्रमाण कहा इनको इकहत्तर से गुणाया तो एक मनु के वर्षों का प्रमाण ३०६७२०००० होता है ॥ ३१ ॥ इनको ६ से गुणाया तो हे चहुवाण १८४०३२००००प्रमाण छः मनुओं

व्योम गगन नभ बीस तु‍ग खट नभ गुन३०६७२००००बच्छर ।
　इक१ मनुके ए छ६ करि गुनित छ६मनुन हुव संभर ॥
ख ख ख खरद नभ बेद अष्ट भू १८४०३२०००० मित ते आये
　कृत मिति१७२८०००मित मनुसंधि,
　बरस छ६गुनित १०३६८००० मिलवाये ॥
तबव्योमगगननभबसुभुजगखटपचासधृति१८५०६८८०००मितभये
　नृपरामसिंह इहिँ मान सब छमनुनके हायन गये ॥ ३२ ॥

दोहा॥

सप्तम७मनुकीसंधिके,हायन १७२८००० अत्थ १८५०६८८००० उपेत ।
ख ख ख अष्टि जिन बान धृति१८५२४१६०००,ए हुव तत्थ समेत।३३।

षट्पदी ॥

भ २७ मित महाजुग बहुरि गये सप्तम७ मनुके अब ।
अयुत१०००० गुनित चउसट्ठि,
छ सिव११६६४००००तिनके हायन सब ॥
ए ११६६४०००० अरु वे १८५२४१६००० दिय जोरि,
तबहि ख र सट्ठि सर ख नव ।
रस अतिधृति १९६९०५६०००परिमान भये सब अब्द धरनिधव ॥
इन अग्ग म‍ाजुग जो लग्यो तीन३गये ताके चरन ।
तिन अब्द ख ख ख बसु गज भुजग,

के वर्षों का हुआ, सत्ययुग के वर्षों के समान ही एक मनु की संधि के वर्ष होते हैं जिनको छः गुणा किया तो१०३६८०००वर्ष हुए जिनको छः मनु के वर्षों में मिलायातब १८५०६८८०००वर्ष हुए,इस प्रमाण से हे राजा रामसिंह छः मनुओं के वर्ष गये॥३२॥ सातवें मनु की संधि के१७२८०००वर्षों सहितअ-र्थात् ऊपर की संख्या में मिलाये तो १८५२४१६००० वर्ष हुए ॥ ३३ ॥
इस सातवें मनु के अब सत्ताईस महायुग गये सो ग्यारह हजार छः सौ चौसठ को दस हजार से गुणाया तो११६६४००००वर्ष हुए सो ऊपरकी संख्या में जोड़ने से हे भूपति १९६९०५६००० वर्ष हुए और इनसे आगे अट्ठाईसवां महा युग लगा जिसके तीन चरण बीते जिन के हे कीर्तिधन(कीर्ति ही है धन जिसके)

राम ३८८८०००प्रमित हुव कित्तिधन ॥ ३४ ॥

दोहा

जोरे ए३८८८००० पहिले१९६९०५६०००न बिच,ते कलि पूरब बर्ष।
ख ख ख बेद कृत नव नयन,मुनि नव इन्दु१९७२९४४०००प्रकर्ष ॥३५॥
इन पिच्छैं कलिके गये, भू कृत नव कृत ४९४१अब्द ॥
इन समेत सब गतबरस, सुनहु समयमय सब्द ॥ ३६ ॥
भू कृत नव बसु बेद नव, नयन तुरग नव चन्द१९७२९४८९४१ ॥
ग्रन्थ पूर्व याकल्पको, यह गत हायन कन्द ॥ ३७ ॥

हरिगीतम् ॥

गतअब्द द्वादस१२ तैं गुनैं तहँ मास आत्मक जे ठये ।
दुवअंकदुवमुनिअट्ठगुनसरबाजिछबिकृति२३६७५३८७२९२एभये ॥
इक१मास मधु गत जोरि २३६७५३८७२९३ तिथिकिय ।
तीस३० सौं गुनिके अबै ॥
नभ अंक मुनि धृति भूप उत्कृति
खेंदु मुनि७१०२६१६१८७९०हुव ए सबै ॥ ३८ ॥
इक१मास उप्पर द्वै२ गई
तिथि ते जुरी इन ७१०२६१६१८७९०मैं जहाँ ॥
दुव अङ्क मुनि धृति भूप उत्कृति
व्योम कु मुनि ७१०२६१६१८७९२ भई तहाँ ॥

रामसिंह ३८८८००० वर्ष हुए ॥ ३४ ॥ इनको ऊपर की संख्या में मिलाया तो कलियुग के पहिले १९७२९४४००० वर्ष विशेष करके हुए ॥ ३५ ॥ इनके पीछे कलियुग के ४९४१ वर्ष गये. जिन के साथ सब गयेहुए वर्षों को समयमयी शब्द के साथ सुनो ॥ ३६ ॥ इस ग्रन्थ (वंशभास्कर) के बनने से पहिले ब्रह्मा के इस कल्प (श्वेतवाराह कल्प) के १९७२९४८९४१ वर्षों का समूह बीता है। ३७। गयेहुए वर्षों को बारह से गुणाया तो २३६७५३८७२९२ मास हुए, जिनमें ग्रंथ प्रारंभ से पहिले गयाहुआ एक चैत्र मास फिर मिलाने से २३६७५३८७२९३ सौर मास हुए, इनको ३० से गुणाया तो ७१०२६१६१८७९० तिथियां हुईं, ॥ ३८ ॥ एक महीने के ऊपर दो तिथियां गईं वे इनमें जोड़ने से ७१०२६१६१८७९२

दुव२ठाम ए लिखि सौरतिथि ७१०२६१६१८७९२ ।
अधिमास ह्यां अब आनिये ।
तँहँ जो क्रिया नृपराम पाटवपुंज सोहु प्रमानिये ॥ ३९ ॥

षट्पदी ॥

कल्प ब˜स रविकेर ४३२००००००० मास किन्नैं बारह१२गनि ।
कोटि१०००००००गुनित कृत अष्ठ
एक सर५१८४०००००००हुव ति लेहु सुनि ॥
तीस३०गुनित करि इनहिं किये मासनके बासर ।
तँहँ हुव अर्बुद१००००००००गुनित
नयन सर सर तिथि१५५५२००००००००नृप बर ॥
इन सौरदिनन सन लक्ख१०००००गुनि
सुर नव तिथि१५९३३००००००अधिमास जँहँ ॥
गत दिनन७१०२६१६१८७९२गये अधिमास कति
त्रैरासिक बिधिं किन्न तँहँ ॥ ४० ॥

दोहा ॥

किय प्रमान दिन कल्पके१५५५२००००००००,
अरु फल किय अधिमास १५९३३००००० ॥
ग्रन्थपूर्व रवि द्याँस गत७१०˜६१६१८७९२, इच्छा फल यँहँ आस४१

तिथियां हुईं, इन सौर तिथियोंको दो जगह लिख कर अब यहां पर अधिक मास आनते हैं, उस क्रिया को हे राजा रामसिंह! चतुराई की पुंज जानो। ३९। एक कल्प के ४३२०००००० सौर वर्ष हुए जिनको १२ से गुणाकर मास किये तौ पांच हजार एक सौ चौरासी को एक करोड़ से गुणाने से ५१८४० ०००००० हुए सो सुनो, इनको तीस से गुणाकर महीनों के दिन किये तौ हे श्रेष्ठराजा! पन्द्रह हजार पांचसौ बावन को एक अड़ब से गुणायेहुए १५५५२० ०००००० कल्प के सौर दिन हुए और पन्द्रह हजार नौ सौ तेतीस को एक लाख से गुणाया तौ १५९३३००००० एक कल्प के अधिक मास हुए, गयेहुए दिनों में कितने अधिक मास हुए सो सौर दिनों से त्रैराशिक रीति से किये हैं। ४०। सौर दिन तौ प्रमाण, और इस ग्रंथ (वंशभास्कर) के पहिले कल्पादि गत दिन इच्छा, और कल्प के अधिक मास फल हैं॥ त्रैराशिक में प्रमाण, इच्छा

रुचिरा ॥

इच्छाकरि फल एह गुनित हुव ख ख ख ख ख छ गुन नव जगती ।
दस्र नयन मुनि गुन बसु नव सर
भूपति पावक प्रमथपती११३१६५९८३७२२१२९३६०००००
भाजक प्रथम१५५५२००००००००भजत रद अतिधृति
खट खट मुनि दृग तुरग७२७६६१९३२भये
नृपमनिराम प्रबंध प्रथम सब इहिँ परिमिति अधिमास गये ॥४२॥
तीस३० गुनित इन्ह करि दिनकिय तँहँ
नभ रस नव मुनि बिसिख फनी ।
नंद नयन धृति हुव२१८२९८५७९६०परिमित गत
अधिक दिनन यह बितति बनी ।
रवि गतदिन७१०२६१६१८७९२ इन२१८२९८५७९६०जुत दुव सर यह
छ मुनि कृत कु नव ख रद मुनी७३२०९१४७६७५२
यह हिमकर दिन बिसरन परिमिति सुनहु नृपतिमनि चतुरचुनी॥४३॥
कलप अवमदिन ख ख ख ख सर सर
दुव बसु ख सर नयन२५०८२५५००००मितहै
ससि गतदिवस निकर७३२०९१४७६७५२करि अवमन
गुनित करिय तँहँ समुचितहै ।
ख ख ख ख ख ख तुरग मुनि बसु सर नभ दुव ख मुनि गगन प्रकृती

और फल ये तीन होते हैं सो ही ऊपर बताया है ॥ ४१ ॥ इस इच्छा से फल को गुणाने से जो संख्या हुई वह ११३१६५९८३७२२१२९३६००००० है इन में कल्प के सौर दिनों का भाग देने से हे राजाओं के मणि रामसिंह इस ग्रंथ के प्रारंभ होने से पहिले ७२७६६१९३२ अधिक मास गये ॥ ४२ ॥ इन को तीस से गुणा करके अधिक मासों के दिन किये तो २१८२९८५७९६० गये हुए अधिक दिनों की पंक्ति बनी, इन को गत सौर दिनों में मिलाया तौ ७३२०९ १४७६७५२ हुए सो चन्द्रमा के दिन हैं, सो हे राजाओं के मणि रामसिंह चतुर की चुनी हुई संख्या सुनो ॥ ४३ ॥ एक कल्प में २५०८२५५०००० तिथि टूटती हैं जिनको चंद्रमा के गये हुए दिनों के समूह से गुणाना चाहिये उस

तुरग नयन रस अनल भुजग ससि ॥

१८३६२७२१०७०२०५८७७६०००००इम समुदयहुवगुनन कृती*

ससिदिन गन१६०२९९९००००००करि इनहिं भजिय तँहँ

फल सु अवम हुव सुनहु जथा ॥

गुनमुनिकरनवनयननयनसरसरकृतहर११४५५२२९२७३गतअवमतथा

ससिदिन गन७३२०९१४७६७५२इन११४५५२२९२७३करि बिरहितकिय

तँहँ खिल जुहि दिननिचय रह्यो

नव हय कृत मुनि जिन रस गुन खट

गगन नयन मुनि७२०६३६२४७४७९मित सु लह्यो ॥ ४५ ॥

पादाकुलकम् ॥

यह मध्यम सावन रविदिन गन, लहिय बार भजि याहि सप्त७सन ॥

तँहँ कृत सर गुन सर गुन नभ अहि,

कृत नव दुव दस१०२९४८०३५३५४अवधि गई लहि ॥४६॥

इक१खिलतैं ससि बार भानु सन,

अब रविभगन४३२००००००००न गुनित अहर्गन ७२०६२४७४७९ ॥

बसु कर नव दस नव बसु सर फनि,

कृतससिगुनहर अनलकोटिहनि३११३१४८५८९१०९२८०००००००

दोहा॥

कुदिन१५७७३१६४५०००००नकरिइन३११३१४८५८९१०९२८०००००००

गुणाने से १८३६२७२१०७०२०५८७७६०००००हुए ॥४४॥ इस संख्या में कल्प के चान्द्र दिनों का भाग देने से जो फल हुआ वे तूटी तिथियां ११४५५२२९२७३ हुईं सो चांद्र दिनों में से इनको निकाला तो७२०६३६२४७४७९बाकी रहे सो अहर्गण हुआ ॥ ४५ ॥ यह मध्यम रवि दिनों का जो गण है वह सावन दिन जानो, जिन में सात का भाग देकर वार निकाला जिस में१०२९४८०३५३५४ अवधि गई ॥४६॥ बाकी एक रहा सो गत रविवार और वर्तमान चन्द्र (सोम)वार हुआ॥ अब रविभगण से अहर्गण को गुणाया तो ३११३१४८५८९१०९२८०००००००हुए॥४७॥ भूमि के दिनों से इन में भाग दिया तो जो फल आया वह सूर्य के बीते हुए भगण हैं, जो१९७२९४८९४१हुआ, ये ही कल्प के सौर गत

---

*प्रकृती १ नकृती २ अन्त्यानुप्रासः ॥

कौं भजे, फल रवि गगन अतीत ॥

बिधु कृत नव बसु बेद नव, कर हय नव इक१९७२९४८९४१नीत।४८।

खिल सर सर ख ख त्रि सर नव९५३००५५,द्वादस१२आहत कीन॥

कुदिन १५७७९१६५४००००भजतफल नभ लहिय,

तिहिँ अवि१ रासि अधीन ॥ ४९ ॥

तीस३० गुनित करि पुनि खिलहिँ, कुदिनन भजिय महीस ॥

तहँ फल आयउ तेहि गत, अवि१के लव इकबीस२१ ।५०।

सट्ठि६०गुनित सेसहिँ बिरचि, कुदिनन भजिय समत्थ ॥

कलालहिय फल बेद कृत४४,एडक१की गत अत्थ ॥५१॥

पुनिसेसहिँकरिखरस६०हतभूमिदिनन१५७७९१६४५००००दियभाग

फल बिकला तेतीस३३गत, इक्खहु जुत अनुराग॥ ५२ ॥

रोला ॥

यह १९७२९४८९४१ । ० । २१ । ४४ । ३३ । भगनादिक अर्क

भयउ मध्यम धरनीधन ॥

अब ससि भगन५७७५३३००००००न गुनिय

अहर्गन७२०६३६२४७४७७९मध्यम सावन ॥

लक्ख१०००००गुनित तहँ तुरग व्योम गुन अंक भुजग दुव

सर ससि नव गुन इक्क

अर्कअतिधृति नृप कृत४१६१९१२१३९१५२८९३०७००००००हुव५३

वर्ष हुए ॥४८॥ बाकी ९५३००५५रहे जिनको बारह से गुणाया और भूमि के दिनों से भाग दिया तो फल शून्य मिला सो मेष राशि हुई ॥ ४९ ॥

फिर जो बाकी रहे जिनको तीस से गुणा करके हे राजा उस में भूमि के दिनों का भाग दिया तहां फल २१ आये सो मेष राशि के गत अंश हुए ॥ ५० ॥ बाकी रहेहुए अंकों को साठसे गुणाया और भूमि के दिनों का भाग दिया तौ फल ४४ आये सो यहां पर मेष राशि की ४४ कला गई॥५१॥फिर बाकी रहे जिनको ६० से गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया तो लब्धि फल ३३ विकला गत हुई सो प्रीति सहित देखो ॥ ५२ ॥

यह भगणादिक (भगण,राशि,अंश,कला,विकला)हे भूपति! मध्यम सूर्य हुआ अब चन्द्रमा के भगणों (बारह राशियों के भोगने को भगण कहते हैं) से

कुदिनन करि इन्ह भजिय लब्ध फल चंद्रभगन गत ।
रस नृप बसु नव अंक बानहय गुन उत्कृति२६३७५९९८१६६मत॥
खिल करि बारह१२गुनित भाग दिय तँहँ इक१आयउ ।
यातैं वृखर२ अब तीस३०गुनित खिल बहुरि भजायउ॥५४॥
तँहँ फल लव इकबीस२१ सष्टि६० आहत सेसहिँ करि ।
कलिका छप्पन५६लहिय भूमि दिवसन ताकौं हरि ॥
ख रस६०गुनित करि खिलहिँ भजिय हर रविदिन सावन ।
वृखर२विकला गत तत्थ लब्ध फल हुव अट्ठावन५८ ॥५५॥

दोहा॥

यह १।२१।५६।५८। ससिमध्यम अब द्युगन,
७२०६३६२४७४७९मध्यम सावन लाय ॥
हिमकर तुङ्ग भचक्र ४८८१०५८५८गन, करि तिहिँ दिन्न गुनाय५६
भूदिन१५७७९१६४५००००करिभाजितकियउ,तँहँससितुंगभभोग
गुन नभ सायक अष्ठ इक, नव दुव आकृति२२२९१८५०३जोग ॥५७॥
पूरबक्रम खिलकौं बिरचि,दैदै भूदिन१५७७९१६४५००००भाग ।
मुनि७तिथि१५रद३२आकृति२२लिय सु,रासि प्रमुख जुतराग ।५८।

मध्यम सावन के अहर्गण को गुनाया तो४१६१९१२१३६१५२८६३०७००००० हुआ ॥ ५३ ॥ इस में भूमि के दिनों का भाग देने से लब्धिफल२६३७५६९८१६६ चन्द्रमा के भगण गये, बाकी के अंकों को १२ से गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया तो १ आया, इस से मेष राशिगत और वर्तमान वृष राशि के बाकी के अंकों को तीस से गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया ॥ ५४॥ वहां फल २१ अंश गये, और बाकी के अंकों को ६० से गुणाकर फिर भूमि के दिनों का भाग दिया तो ५६ कला लब्धि हुई, फिर बाकी रहे जिनको ६०से गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया तो वृष राशि की ५८ कला गई ॥ ५५॥ यह राश्यादिक अर्थात् राशि १ अंश २१ कला ५६ विकला ५८ मध्यमचन्द्रमा हुआ ॥ अब द्युगण (अहर्गण) मध्यम सावन को चन्द्रमा के भगण से गुणाया ॥ ५६ ॥ और उस में भूमि के दिनों का भाग दिया तो चन्द्रोच्च के भगण का भोग २२२६१८५०३ गया ॥ ५७ ॥ बाकी के अंकों को पहिली रीति से अर्थात् १२, ३०, ६० और फिर ६० से गुणा गुणा कर भूमि के दिनों से भा

इमरवि०।२१।४४।३३ससि।२१।५६।५८।ससिउच्च ७।१५।३२।२२। ए
हुव मध्यम नरनाह ॥
अब रवि१ससि२फुटतर बिरचि,चतुरन रंजनचाह ॥५९॥
इक१रु चतुर्दस१४बहुरि खट६,अंसादिक ऋन रूप ॥
भानु बीजसंस्कार फल, निकस्यो अत्थ अनूप ॥ ६० ॥
ऋन ससिको लव मुख दुव२रु,पावक३पुनि इकतीस३१ ॥
तान४९ रु जिन२४ससितुंगको,ऋन कलादि अवनीस ।६१।
उदयान्तर विकला कढी,उत्कृति२६ऋन रवि देय ॥
ऋन ससिमैं सायक५कला,बिकला तान४९प्रमेय ॥६२॥
इन बिनु रवि गगन०रु कृति२०रु, तीस३०रु ब्रह्म१बिधान।
ससि भूमि१रु अतिधृति१९रु मुनि,कृत४७रु तुरग गुन३७ मान ॥
मुनि७रु बेद भूमि१४रु नयन, कृत४२ बहोरि बसु बान ५८॥
अब्दबीज संस्कृत यहै चंद्र तुंग चहुवान ॥ ६४ ॥

षट्पात्

ग दे दे कर राशि ७ अंश १५ कला ३२ विकला २२ प्रीति पूर्वक लिये सो राश्यादिक चन्द्रोच्च हुआ ॥५८॥ इस प्रकार सूर्य, चन्द्र और चन्द्रमा का उच्च राशि आदिक हे नरपति रामसिंह ! ये मध्यम हुए जिनके अंक मूल में स्पष्ट लिखे हुए हैं॥ अब सूर्य चन्द्रमा स्पष्टतर चतुरों को प्रसन्न करने की चाहना से रचते हैं ॥ ५९ ॥ अंश १ कला १४ विकला ६ सूर्य के बीज संस्कार का फल ऋण रूप (घटाना) है इस लिये मध्यम सूर्य में से बाकी निकाला ॥ ६० ॥ चन्द्रमा के अंश २ कला ३ विकला ३१ ऋण (बाकी) है और हे भूपति, चन्द्रमा के उच्च में कला ४९ विकला २४ ऋण है॥६१॥सूर्य के उदयान्तर२६ विकला बाकी देनी, और चद्रमा में कला५विकला४६ऋण दी ॥६२॥ ये दोनों (बीज और उदयान्तर) मध्यम सूर्य में से निकाले तो बीज उदयान्तर से संस्कार दिया हुआ मध्यम सूर्य राशि० अंश २० कला ३० विकला १ विधि पूर्वक हुए । इसी प्रकार चन्द्रमा में बीज और उदयान्तर दोनों संस्कार दिये तो बाकी राशि १ अंश १९ कला ४७ विकला ३७ इस प्रमाण से चन्द्रमा हुआ ॥ ६३ ॥ और हे चहुवाण रामसिंह, वही अब्दबीज संस्कार चन्द्रमा के उच्च में ऋण बाकी दिया तो बाकी राशि ७ अंश १४ कला ४२ विकला २८ चन्द्रमा का उच्च हुआ

भूमि१रु भ२७रु सर पच्छ२५बहुरि नव सर५९परिमित अब,
आयउ रवि मृदुकेंद्र१।२७।२५।५९तास भुजकरि किय ज्या तब।
अंगुल व्यंगुल आदि एक नभ भू १०१रु नभ० रु नभ० ॥
तिहिंकरि मृदुफल लियउ भू १रु ख सर५०रु दस१०सुप्रभ ॥
मेषादि भानु यातैं यहैं१।५०।१०,
लवमुख फल रवि०।२०।३०।१जुत०।२२।२०।११।करयो ॥
अयनांस प्रकृति२१पुनि गज पवन ५८
इहिं कलादि जुत अनुसरयो ॥ ६५ ॥

दोहा ॥

ब्रह्म१रु कृत भूमि१४रु भुजग,चंद्र१८रु सिव११यह अर्क ॥
अब लंका बुंदी उदय,अंतर चर संपर्क ॥ ६६ ॥
रस मुनि७६मित चर पल इहाँ,सायन रवि करि आय ॥
रवि१।१४।१८।११अजादितातैंदयो,मृदुफुट०।२२।२०।११तैं सु घटाय
तब गगन०रु आकृति२२बहुरि,भुजग भू१८रु सर बात५५॥
यह०।२२।१८।५५प्रबन्ध प्रारंभके,दिन फुटतर रविप्रात।६८।

॥ ६४ ॥ सूर्य का मंदोच्च राशि २ अंश १७ कला ५६ विकला० सिद्धान्त में प्रसिद्ध है जिनमें से पहिले उदयान्तर संस्कार दिया हुआ मध्यम सूर्य आया उसको घटाया तौ बाकी राशि १ अंश २७ कला २५ विकला ५९ रहा, यह सूर्य का मृदु (मन्द) केन्द्र हुआ, इसका भुज किया तौ इतना ही हुआ फिर इसकी ज्या की तौ अंगुल १०१ व्यंगुल (अंगुल के साठवें हिस्से को व्यंगुल कहते हैं) शून्य, प्रति व्यंगुल (व्यंगुल का साठवां हिस्सा) शून्य ज्या हुई इनसे मृदुफल लिया तौ अंश१कला५०विकला१०आया सो फल मेषादि[मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या] छः राशियों में मन्द केन्द्र होवै तौ मंद फल युक्त होता है इससे युक्त किया तौ राशि० अंश २२ कला २० विकला ११ यह मन्द स्पष्ट सूर्य हुआ अब इनसे चरफल लाने के लिये अयनांश २१ कला ५८ युक्त किया ॥ ६५ ॥ तब राशि १ अंश १४ कला १८ विकला ११ यह सायन सूर्य हुआ अब लंका और बुन्दी के उदय के बीच में चरों का संबन्ध कहते हैं ॥ ६६ ॥ इस सायन सूर्य के चरपल ७६ आये सो विकलात्मक हैं और मेषादि ६ राशियों में चरपल ऋण (बाकी) दियाजाता है इसलिये मन्दस्पष्ट में कला १ विकला १६ घटाया तौ ॥ ६७ ॥ बाकी राशि ० अंश २२ कला १८

पहिलैं ज्या१०।१।०।०किय ताहिसौं,भोग्यखराड नृप१६लीन ॥
रवि१२सौं भजि अवनी१रु कृति२०,लिय किय भुक्तिबिहीन।६९।
मध्यमगति मार्त्तंडकी,नव पंच५९रु गज८पाय ॥
यातैं केंद्र१।२७।२५।५९मृगादियौं,दिय फल एह१।२०।घटाय ।७०।
तब रविगत फुटतर भई,हय पवन५७रु अहि च्यारि४८।
अब ससि फुटतर करनक्रम,नृपबर लेहु निहारि ॥ ७१ ॥
उदय१देस२भुज३अंतर रु अब्दबीज४चर५सुद्ध ॥
कु१रु नव कु१९रु कृत गुन३४रु जिन२४,
यह१।१९।३४।२४ससि गिनहु प्रबुद्ध ॥ ७२ ॥
संस्कृत ससि मंदोच्च७।१४।४२।५८तैं,
काढ्यो यह१।१९।३४।२४हि निसेन्द्र ॥
सर५रुपंचनयन२५रुगज८रु,कृतगुन३४तबमृदुकेंद्र५।२५।८।३४।।७३
याको भुजकरि ज्या करी,दस१०रु रवि१२रु आकास० ॥
सर नयन२५रु कर कृत४२कला,प्रमुख मंदफल२५।४२तास ।७४।
मंदकेंद्र५।२५।८।३४यह इंदुको,एडक आदिक अत्थ ॥
यातैंयह२५।४२मृदफलकरयोसंस्कृतससि१।१९।३४।२४के सत्थ७५

विकला ५५ यह इस ग्रन्थ (वंशभास्कर) के प्रारंभ के दिन प्रभात में स्पष्ट सूर्य हुआ ॥ ६८ ॥ पहिले ज्या करी उसीसे गति फल के लिये भोग्य खराड सौलह का लिया जिसमें १२ का भाग दिया तौ फल कला १ विकला २० आया सो सूर्य की मध्यम गति कला ५९ विकला ८ में घटाये (क्योंकि मन्दकेंद्र मकरादि ६ राशि, मकर कुंभ मीन मेष वृष मिथुन में गतिफल ऋण होता है) बाकी सूर्य की स्पष्ट गति कला ५७ विकला ४८ हुई अब हे श्रेष्ठराजा चन्द्रमा को स्पष्ट करने का क्रम देखो ॥ ७० ॥ ७१ ॥ उदयान्तर, देशान्तर, भुजान्तर, अब्दबीज और चर इन पांच संस्कारों से शुद्ध कियाहुआ चन्द्रमा हे पण्डित रामसिंह राशि १ अंश १९ कला ३४ विकला २४ जानो ॥ ७२ ॥ संस्कार कियाहुआ पहिले चन्द्रमा का मंदोच्च राशि ७ अंश १४ कला ४२ विकला ५८ में से निकाला तौ राशि ५ अंश २५ कला ८ विकला ३४ बाकी रहा सो चन्द्रमा का मन्दकेन्द्र हुआ ॥ ७३ ॥ इसका भुज करके ज्या करी तौ अंगुल १० व्यंगुल १२ प्रतिव्यंगुल ० इनसे मंदफल कला २५ विकला ४२ आया ॥ ७४ ॥ सो चन्द्रमा का मंदकेंद्र एडक (मेष) आदि छः राशियों में है इसलिये मन्दफल चन्द्रमा में युक्त किया

तब भूमि रु नख२० पुनि नभ रु, खट६फुटतर ससि१।२०।०।६आँहिं॥
भोग्य खंड आयो प्रकृति २१, मृदु फल साधन माँहिं ॥ ७६ ॥
तेरह१३सौं गुनि ताहि२७३दै, बेद४ भाग फल लिन्न ॥
मध्यम गति नभ नव मुनि ७९०रु, सर गुन ३५तँहँ जुत किन्न।७७।
गज तर्क६८रु तिथि१५भुक्ति फल, जुरि ससिगति१९०।३५हुवसुद्ध ॥
अहि सर गज८५८अरु नभ पवन५०, तिहिं दिन प्रात प्रबुद्ध ॥७८॥
फुटरवि०।२२।१८।५५॥५७।४८ससि१।२०।०।६॥८५८।५०करितिथि
लहिय, तीज ३ घटी मुनि राम ३७ ॥
पल आकृति२२अरु रोहिनी४, विश्व१३रु गज सर५८ताम॥७९॥
तीस३०रु दस१०अतिगंज६युति, तैतिल६करन उपेत ॥
विस्तरसौं चंडासि भव, करिहैं गनित निकेत ॥ ८० ॥
पल मुखकु १रु द्विसर५२रु ख गुन३०, जँहँ देसांतर मान ॥
जिन२४अरु गज नयन२८रु ख गुन३०, अक्ष अंश तिंहिं थान ॥८१॥
अैसे बुंदियनैर बिच, हुव यह प्रथित प्रबंध ॥

तब राशि १ अंश २० कला० विकला ६ स्पष्टतर चन्द्रमा हुआ ॥ अब गति स्पष्ट करने के लिये मन्दफल साधन में जो ज्या का भोग्य खण्ड२१ आया ॥ ॥७६॥ जिसको १३ से गुणाकर चार का भाग दिया सो चन्द्रमा की मध्यम गति कला ७९० विकला ३५ में मिलाये ॥ ७७ ॥ गतिफल कला ६८ विकला १५ मध्यमगति में जोड़ने से हे पण्डित रामसिंह कला ८५८ विकला ५० प्रभात में चन्द्रमा की गति स्पष्ट हुई ॥ ७८ ॥ सूर्य और चन्द्रमा को स्पष्ट करके तिथि निकाली तो ३७ घड़ी और२२पल सूर्योदयात् तीज आई और रोहिणी नक्षत्र तहां पर १३ घड़ी ५८ पल आया ॥ ७९ ॥ ३० घड़ी १० पल अतिगंज योग, तैतिल करण सहित आया ॥ यहां पर संक्षेप से गणित किया गया है ॥ आगे चहुवाण के जन्म स्थान पर विस्तार से गणित करेंगे ॥ ८० ॥ अब बुन्दी नगर के देशान्तर और अक्षांश बताते हैं कि १ पल ५२ अक्षर ३० व्यक्षर (घड़ी के साठवें हिस्से को पल, और पल के साठवें हिस्से को अक्षर, और अक्षर के साठवें हिस्से को व्यक्षर कहते हैं) देशान्तर का प्रमाण है, और २४ अंश २८ कला ३० विकला इस स्थान पर अक्षांश है ॥ ८१ ॥ इस प्रकार बुन्दी नगर के वीच में यह ग्रंथ (वंशभास्कर) प्रसिद्ध हुआ । प्रभवादि साठ संवत्सरों में ब्रह्मा, विष्णु और शिव इन तीनों के बीस बीस वर्ष होते हैं उनमें शिव

सिवके बरस बिरोधकृत५,अंतर सर्व सुसंध ॥ ८२ ॥

षट्पात्

नृप१सित२मंत्रिय१मंद२सेननेता१हु सुक्र२जँहँ,
पूर्वधान्यपति१आर२अपर अन्नेस१अर्क२तँहँ ॥
अर्घप्रति१हु कविपुत्र२मेघ ईस१हु भृगु कुलबर२ ।
रसपति१गुरु२ धनईस१बुध२रु नीरसपति१हिमकर२ ॥
फलपति१हु चंद्र२कुतवाल१रवि२जिहिँ हायन इम खेट७गन ।
तिहिँमाँहिँ भूप सासन लहि रु किय प्रबंध प्रारंभपन ॥ ८३ ॥

दोहा ॥

गुन३रु पचीस२५रु नभ०रु कृत४,सुद्ध लग्न अनुसार ।
सुचिकुलको किय तिहिँ समय, अर्कमल्ल उच्चार ॥ ८४ ॥

षट्पात्

विक्रम सक हय अंक अष्ठ अवनी१८९७मित आवत ।
सालिवाह सक नयन तर्क हय भूमि१७६२सुहावत ॥
चंद्राध सित तीज३ घटी मुनि गुन३७पल दुव कर२२ ।
बिधिभ४त्रिकु१३रु गज पंच५८छठी६युति तीस३०रु दस१०पर ॥
तैतिल४कृसानु ससि१३कृतबिखय५४दिन दंत३२रु रद३२मान धर
मध्यान्ह इष्ट आरंभकिय लग्न कुलीर४प्रबंध बर ॥ ८५ ॥

की बीसी के भीतर पाँचवीं संख्या का “ विरोधकृत ” नामक संवत्सर श्रेष्ठ प्रतिज्ञा के साथ है ॥ ८२ ॥ इस वर्ष का राजा शुक्र, मंत्री शनैश्चर, सेनापति शुक्र, पूर्वधान्यपति मंगल, पश्चिम धान्यपति सूर्य, भाव (मँहगाई सस्ताई) का पति शुक्र, मेघपति शुक्र, रसप[illegible] बृहस्पति, धनपति बुध, नीरसे[illegible] चंद्रमा, फलपति चन्द्रमा, कोतवाल सूर्य जिस वर्ष में इन ग्रहों का समुदाय है उसी वर्ष में राजा की आज्ञा लेकर इस ग्रंथ (वंशभास्कर) के प्रारम्भ का पन किया ॥ ८३ ॥ अब ग्रंथ के प्रारम्भ का लग्न स्पष्ट लिखते हैं राशि ३ अंश २५ कला ० विकला ४ इस शुद्ध लग्न के अनुसार अग्नि वंश का सूर्यमल्ल कवि ने उच्चारण किया ॥ ८४ ॥ विक्रम का सम्वत् १८९७ और शालिवाहन का शक १७६२ वैशाख सुदि ३ सोमवार घड़ी ३७ पल ५२ रोहिणी नक्षत्र घड़ी १३ पल ५८ अतिगंज योग घड़ी ३०पल १ तैतिल करण घड़ी १३ पल ५४ दिनमान
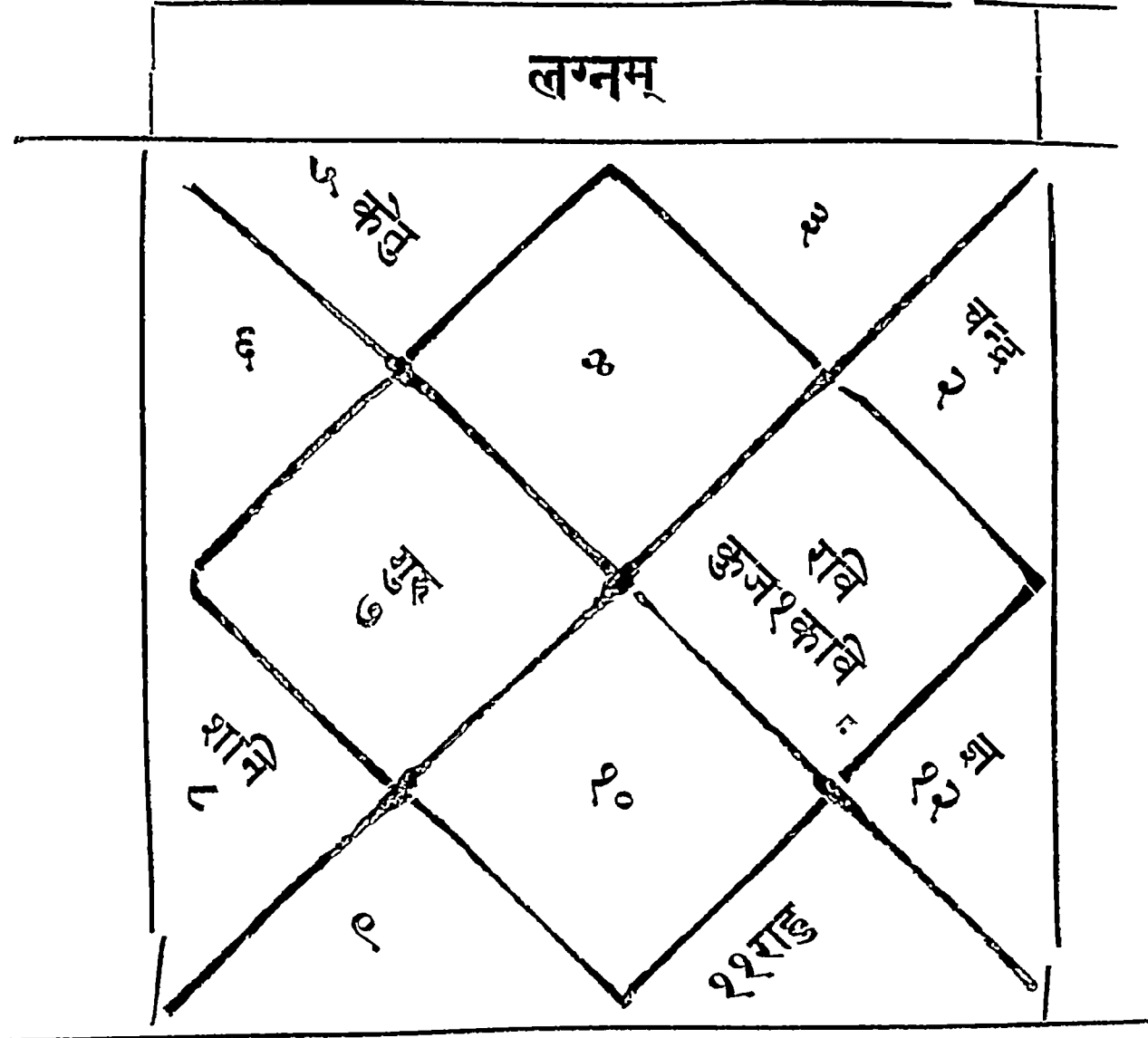
लग्नम्

ग्रहलाघव अनुसार अभ्र सर बेद४५०अहर्गन ।
अवि१ पररवि कवि कुज रु इंदु वृख२ केतु मृगादन५ ।
तुला७ जीव अलि८मंद कुंभ११ आश्रित सिंहीसुत ।
सोमनंद थित सफर१२ जत्थ निज भाग भोग जुत ।
हय पंच अर्क१२५७मित जवन सक इंग्रेजन सासि बेद धृति१८४१।

घड़ी २३पल ३२ मध्यान्ह के समय कर्क लग्न में श्रेष्ठ ग्रंथ का आरम्भ किया ॥८५॥ अब आगे ग्रह लाघव नामक करण ग्रंथ के अनुसार अहर्गण ४५० है, और सूर्य, शुक्र, मंगल ये तीनों ग्रह मेष राशिपर हैं, चन्द्रमा वृष राशि पर, केतु सिंह राशि पर, वृहस्पति तुल राशि पर, शनैश्चर वृश्चिक राशि पर, राहु कुंभ राशि पर, बुध मीन राशि पर है. ये ग्रह अपने अपने अंशों के भाग सहित हैं औ हिजरी सन् १२५७ ईसवी सन् १८४१ है, इस समय में श्रेष्ठ

तिहिँ काल सुकवि आरंभ किय अनलबंसउतपत्ति कृति ॥८६॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ सर्गादि-लयान्तसमयसूचनपूर्वकग्रन्थप्रारम्भकाललग्नपञ्चाङ्गस्फुटीकरखेट स्थानसूचनं नाम नवमो ९ मयूखः ॥ ९ ॥

दोहा

कवि भमेड१ अनुकूल सब, लगन सकुन ग्रह लिन्न ।
तत्थ बंदि गुरु देवतन, कृति आरंभन किन्न ॥ १ ॥
जदपि न तीव्र मदीय मति, तदपि रचौं यह ग्रंथ ।
प्रथम नृपति आदेस पुनि, कविकुल जीवन पंथ ॥ २॥

षट्पदी

जो न निरखि राकेस चमक खद्योत दिखावहिँ ।
जो न गरुड़गति देखि मसक मन उडन चलावहिँ ॥
जो न छुद्र बेसंत जानि सिंधुहिँ जलधारहिँ ।
प्लवग जो न हनुमंत मलप लखि फाल सम्हारहिँ ॥
जो रामरावराजेंद्र लखि इतरभूप राज्य न धरैं ।

कवि (सूर्यमल्ल) ने अग्नि वंश की उत्पत्ति का ग्रंथ (रचना) आरंभ किया। ८६।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में सृष्टि रचना से लेकर प्रलय पर्यन्त समय के जनाने पूर्वक ग्रंथ के प्रारंभ समय का लग्न पञ्चाङ्ग स्पष्ट करके ग्रहों का स्थान जनाने का नवमा मयूख समाप्त हुआ॥

कवि (सूर्यमल्ल) ने मेष राशि (मेष राशि पर सूर्य और मंगल का आना शुभ है सोही यहां पर है) लग्न, शकुन, ग्रह ये सब अनुकूल ले, गुरु और देवताओं को नमस्कार करके इस ग्रंथ [वंशभास्कर] का प्रारंभ किया॥ १ ॥ यद्यपि मेरी बुद्धि तीव्र नहीं है तौ भी यह ग्रंथ बनाता हूं, क्योंकि एक तौ राजा की आज्ञा और दूसरा कवियों के कुल के जीवन का मार्ग ही यही है। २। यदि चन्द्रमा को देखकर जुगनू [आग्या] चमक न दिखाता हो, गरुड़ की गति को देखकर मच्छर उडने का मन नहीं करता हो, समुद्र को जानकर छोटे तालाव जल को धारण नहीं करते हों, हनुमान् की फलांग को देखकर बन्दर छलांग नहीं लेते हों, और रावराजेन्द्र रामसिंह [बुंदीपति चाहुवाण] को देखकर दूसरे राजा राज्य धारण न करते हों तौ सूर्यमल्ल कवि भी कुल की रीति को छोड़कर तुच्छ कविता न करै, अर्थात् ऊपर कहे हुए दृष्टांतों से बडों

कुलरीति छंडि रविमल्ल कवि तो न छुद्र कविताधरैं ॥ ३ ॥

दोहा

कोलौं निज मांदव कहौं, मैं कवि कोबिद दास ।
छमहु सुकवि अपराध यह, करहु न मम उपहास ॥ ४ ॥
जे विद्या गुन बोध बिनु, रहत दंभ धरि चित्त ।
तिनसौं बिनती ग्रन्थ यह, न पढि बिगारहु मित्त ॥ ५ ॥
प्रथम समास रु ब्यासकरि, कहौं अनलकुल भव्य ।
पुनि सब बरबिद्या बिषय, जे अवश्य पठितव्य ॥ ६ ॥
अनलअन्ववायहिं किते, बरनत सौर बखानि ।
तेजतत्व एकत्व करि, नहिं बिरोध तँहँ जानि ॥ ७ ॥

अथ क्षत्रियत्रय३सहितचहुवाणोत्पत्तिसमसनम् ॥

गीर्वाणभाषा ॥ अनुष्टुब्युग्मविपुला ।

पुराऽभूद्गौतमस्यर्षेश्छात्र उत्तङ्कसाभिधः ।
गुरुं प्रोवाच सोऽधीत्य प्रोच्यतां दक्षिणा त्विति ॥ ८ ॥
गोतमेनोक्तमुत्तङ्केणाध्यायी ते यदीहते ।

को देखकर छोटे अपनी कुलरीति के अनुसार अपना अपना कार्य करते ही रहते हैं तैसे ही मैं [ग्रंथकर्ता कवि सूर्यमल्ल] भी अपने कुल की काव्य करने की रीति को नहीं छोडकर उत्तमोत्तम काव्यों के रहते भी तुच्छ कविता करना हूं ॥ ३ ॥ कहांतक मैं अपनी मृदुता कहूं मैं कवि और पंडितों का दास हूं. हे श्रेष्ठकवियो! इस तुच्छ कविता रूपी मेरे अपराध को क्षमाकरके मेरी हसी मत करना ॥ ४ ॥ जो विद्या, गुण और ज्ञान के बिना ही अपने चित्त में घमंड भरकर रहते हैं तिनसे मेरी बिनती है कि हे मित्रो! इस ग्रन्थ को पढ़कर मत बिगाड़ना ॥५॥ प्रथम तो संक्षेप से फिर विस्तार करके श्रेष्ठ अग्निवंश को कहूंगा. फिर जो अवश्य पढ़ने योग्य सब श्रेष्ठ विद्याओं के विषय है उनको कहूंगा ॥ ६ ॥ कितने ही लोग अग्निवंश को सूर्यवंश कहकर वर्णन करते हैं उसमें भी तेजतत्व एक होने से, अर्थात् तेज रूप से सूर्य और अग्नि एक ही है, कुछ विरोध नहीं जानना ॥ ७ ॥

अब तीन क्षत्रियों के साथ चहुवाण की उत्पत्ति का संक्षेप से वर्णन है

पहले गोतम ऋषि का शिष्य उत्तंक नामक हुआ उसने पढ़कर दक्षिणा

तद्दीयतामिति श्रुत्वा सोऽप्यहल्यां व्यजिज्ञपत् ॥ ९ ॥
तयोक्तं कुण्डले राज्ञा भूभृत्सौदासवर्म्मणः ।
दक्षिणा दीयतां वत्सेति नियुक्तो ययौ नृपम् ॥ १० ॥
हार्द्दे निवेदिते राज्ञाज्ञप्तः शुद्धान्तमेत्य सः ।
ययाचे कुण्डले राज्ञीं तस्मै साप्यवदत्सती ॥ ११ ॥
अब्रवीदपि सोत्तङ्कं शचीष्टे कुण्डले इमे ।
रक्ष्येतां तक्षकाद्ब्रह्मन्प्रमादेनेष्यति च्छली ॥ १२ ॥
सोपि प्रतस्थ ओमुक्त्वाऽध्वन्येनं नियतेर्बलात् ।
बुभुक्षोग्रा समुत्पन्ना प्रमत्तीकृतवत्यरम् ॥ १३ ॥
श्रीफलं सफलं वीक्ष्याऽऽरुरोह तमसौ द्विजः ।
स्थापयित्वाऽवनौ बध्वा कुण्डले स्वाऽजिनाञ्चले ॥ १४ ॥
तदैव कुण्डलान्वेषी तक्षकः समुपागमत् ।
नीत्वा प्रसह्य तेऽधावत्सत्वरो दक्षिणामुखः ॥ १५ ॥
अवतीर्य्य द्विजो बिल्वाद्यावत्तमनुधावति ।
तावत्प्रविश्य भूमौ सोऽप्यगच्छद्वडवामुखम् ॥ १६ ॥

के लिये गुरु से कहा ॥८॥ गोतम ने कहा, हे उत्तंक तेरी गुरानी जिस वस्तुकी इच्छा करती है वह दे. यह सुनकर उस उत्तंक ने अहल्या से कहा ॥९॥ अहल्या ने कहा, हे पुत्र ! राजा सौदासवर्मा की रानी के कुण्डल दक्षिणा में दे इस रीति प्रेरित होकर राजा के पास गया ॥ १० ॥ अभिप्राय जताने पर राजा की आज्ञा से इस उत्तंक ने जनाने में जाकर रानी से कुण्डल मांगे, उस पतिव्रता रानी ने भी उसको दे दिये ॥ ११ ॥ और उसने उत्तंक से यह भी कह दिया था कि इंद्राणी के प्रिय इन कुंडलों को हे ब्राह्मण ! तक्षक नाग से बचाना, यदि तुम असावधान रहोगे तो वह छली ले जायगा ॥ १२ ॥ वह उत्तंक भी इस बात को स्वीकार कर चला, मार्ग में प्रारब्धवश इसको अत्यन्त भूख लगी सो शीघ्र ही उत्तंक को असावधान कर दिया ॥ १३ ॥ यह ब्राह्मण फले हुए बील के वृक्ष को देखकर कुण्डलों को अपनी मृगछाला के कोने में बांध, भूमि पर धरकर, उस वृक्ष पर चढ़ गया॥ १४ ॥ उसी समय कुंडलों को खोजनेवाला तक्षक आगया और अचानक कुंडलों को लेकर दक्षिण को दौड़चला ॥ १५ ॥ वह ब्राह्मण बील के वृक्ष से उतर उसके पीछे दौड़ा इतने

उत्तङ्कः काष्ठमादाय प्रारेभे खननं भुवः ।
नाभिन्त भूस्ततः शक्रो ह्रादिनीं प्राहिणोदरम् ॥ १७ ॥
पविराखण्डलाज्ञप्तस्तत्काष्ठं प्राविशत्तदा ।
आपातालं चखानोर्वीं चक्रेऽध्वानं द्विजोचितम् ॥ १८ ॥
तेनाऽधोभुवनं गत्वा दृष्ट्वा चित्राण्यनेकशः ।
नागानग्निबलाज्जित्त्वोत्तङ्कस्ते आप कुण्डले ॥ १९ ॥
ततःसस्वरुनिर्भिन्नश्वभ्रमासीन्महीतले ।
विशश्राम वशिष्ठर्षिः कदाचित्तदुपस्थले ॥ २० ॥
तत्रर्षेर्नन्दिनीधेनुर्विचरन्ती क्वचिद्दिने ।
वैदूर्य्यसुहरित्तृण्या लोभमुष्टाऽवटेऽपतत् ॥ २१ ॥
याते तदागमाऽनेहस्यक्षमालोदितः प्रभुः ।
अन्वेष्टुं निर्ययावुच्चैर्नन्दिनीति समाह्वयन् ॥ २२ ॥
श्रुत्वा स्वामिस्वनं चक्रे सा हम्भारवमर्ज्जुनी ।
ततस्तामेत्य मुनिना गङ्गानावीशशेखरा ॥ २३ ॥
आविरासावटात्सापि प्रस्तुता परदेवता ।

में वह तक्षक भूमि में घुसकर अपने लोक (नागलोक) में चलागया ॥ १६ ॥ उत्तंक एक लकड़ी ले पृथिवी को खोदने लगा परन्तु पृथ्वी नहीं खुदी तब इंद्र ने शीघ्र ही वज्र दिया ॥ १७ ॥ और इंद्र की आज्ञा से वह वज्र उस लकड़ी के लग गया, तब भूमि को पाताल पर्यन्त खोद डाला और उस ब्राह्मण के जाने योग्य मार्ग कर दिया ॥ १८ ॥ उस मार्ग से पाताल में जाय, अनेक आश्चर्य देख, अग्नि के बल से सर्पों को जीत, उत्तंक ने वे कुंडल लिये ॥१६॥ तब से वह वज्र से खुदा हुआ बिल (खड्डा) पृथिवी में रहा, किसी समय वसिष्ठ ऋषि ने उस स्थल के समीप विश्राम किया ॥ २० ॥ हां पर ऋषि की नंदिनी नामक गाय किसी दिन फिरती हुई नील मणि के समान सुंदर हरे तृणों के लोभ से उस बिल में पड़ गई ॥ २१ ॥ उस गाय के आने का समय आने पर अपनी स्त्री अक्षमाला के कहने पर प्रभु (वसिष्ठ) उच्च स्वर से नंदिनी इस नाम से पुकारते हुए गाय को ढूंढने गये ॥ २२ ॥ उस श्वेत गाय ने स्वामी का शब्द सुन, हंभार शब्द किया (रंभाई) तब उस गौ को प्राप्त हो शिव के मस्तक पर रहनेवाली गंगा की मुनि ने स्तुति की ॥ २३ ॥ उस गढ़े से स्तुति की हुई उत्कृष्ट देवता वह गंगा भी प्रकट हुई और अपने

स्वस्रोतोरंहसा रुद्धां सौरभेयीमतीतरत् ॥ २४ ॥
दृष्ट्वा तदाऽवटं घोरं विचारितमथर्षिणा ।
मया निष्कासिता शक्त्या गङ्गामाहूय नन्दिनी ॥२५॥
पततामवटेऽन्येषां क्व निष्कस संभवः ॥
तदिदं पूरणीयं मे श्वभ्रं केनचिदद्रिणा ॥ २६ ॥
इत्यालोच्य हिमप्रस्थं जगामारुन्धतीधवः ॥
पुत्रमेकं ययाचे तं गर्त्तपूर्त्यै कुलाचलम् ॥ २७ ॥
मेनेऽनेनर्षये पुत्रः पङ्गुर्नन्दी निवेदितः ॥
अर्बुदाहिमधिष्ठाप्यानयत्स तमुपाश्रमम् ॥ २८ ॥
तेनर्षिः पूरणाञ्चक्रे खातं सर्वहिते रतः ॥
निमग्नोऽद्रिरसौ खातेऽवशिष्टा तस्य नासिका ॥२९॥
ततोऽयमर्बुदो नाम्ना प्रख्यातो भुवि पर्वतः ॥
अरण्यनवके९ गण्यस्तीर्थरूपः शिवालयः ॥३०॥
वशिष्ठेन ततस्तत्रानुष्ठिताः शतशोऽध्वराः ॥
तीर्थानि देवताः सर्वाः स्थापिताश्चोत्तमे गिरौ ॥३१॥
अथो वैवस्वताऽभिख्ये संलग्ने सप्तमे७ मनौ ॥

स्रोत के वेग से रुकी हुई गाय को तिराया ॥ २४ ॥ तब बड़े भारी गढ़े को देखकर ऋषि ने विचारा कि मैंने तो शक्ति से गंगा को बुलाकर नंदिनी को निकास लिया है ॥ २५ ॥ परन्तु इस गढ़े में और गिरेंगे तिनके निकसने की क्या संभावना है इस कारण से इस खड्डे को किसी पर्वत से मुझे भर देना चाहिये ॥ २६ ॥ ऐसा विचारकर अरुंधती का पति हिमालय के पास गया और गढ़ा भरने के हेतु उस कुलाचल से एक पुत्र मांगा ॥ २७ ॥
उस पर्वत ने माना कि ऋषि के अर्थ नंदी नामक पाँगला (चरण रहित) पुत्र भेट करूं. वह ऋषि अर्बुद नामक सर्प पर चढ़ा कर नंदी पर्वत को अपने आश्रम के पास लाया ॥ २८ ॥ सब का कल्याण करनेवाले ऋषि ने उस पर्वत से उस खड्डे को भर दिया, यह पर्वत खड्डे में डूब गया जिसकी नासिका बाकी रही ॥ २९ ॥ तब से यह पर्वत पृथिवी पर अर्बुद नाम से प्रसिद्ध हुआ और नव अरण्यों (वनों) में गिना गया और तीर्थ रूप शिवालय हुआ ॥३०॥ तब वसिष्ठ ने तहां पर सैकड़ों यज्ञ किये और इस उत्तम पर्वत पर संपूर्ण देवता और तीर्थ स्थापित किये ॥ ३१ ॥ इस के आगे वैवस्वत नामक सातवाँ

तद्भुक्तानां युगानां चाऽतीतानां सप्तविंशतौ२७॥ ३२ ॥
अष्टाविंश२८युगस्यापि द्वयोरङ्घ्र्योर्व्यतीतयोः ॥
तृतीय३स्यार्वषड्वेदाऽभ्रतर्कैभा८६०४६७ब्दसंचये ॥ ३३ ॥
द्वापरस्य गते शिष्टे त्र्यग्नीषुगुणा३५३३संमिते ॥
प्रवृत्तोतिदुराचारो दैत्यहेतुर्महीतले ॥ ३४ ॥
दैत्यराड्बाणसूनू द्वौ२वशिष्ठस्य महामखे ॥
धूम्रकेतु१श्च जम्भ२श्च प्रत्यूहं ह्यन्वतिष्ठताम् ॥३५॥
तत्क्रुद्धेन वशिष्ठेन ब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥
अन्ये चेन्द्रमुखा देवा आनीता अर्बुदं गिरिम् ॥ ३६ ॥
प्रार्थितेन ततो धात्रा मृत्युमुद्दिश्य दैत्ययोः ॥
उदपादि ज्वलद्वह्नेः कुण्डात्क्षत्रचतुष्टयम्४ ॥ ३७ ॥
पूर्वं प्रादुरभूत्तत्र क्षत्रियः पीनविग्रहः ।
प्रतिहार१इति ख्यातो नाम्ना सौम्यान्तरिन्द्रियः ॥ ३८ ॥
पुण्डरी‌कसगोत्रोसौ यजुर्वेदः सुलक्षणः ॥
ताभ्यां माध्यन्दिनिशाख३त्र्यंके त्रि३प्रवरो रणम् ॥ ३९ ॥
उल्मुकच्छर्दिनं१ दैत्यं सूचीलोमानमुद्धतम् ॥

---

७ मनु लगने पर और उसके भोगने के सत्ताईस युग बीतने पर ॥ ३२ ॥ अ-ट्ठाईसवें युग के दो चरण व्यतीत होकर तीसरे चरण (द्वापर) युग के आठ लाख साठ हजार चार सौ सड़सठ वर्ष बीत कर ॥ ३३ ॥ तीन हजार पांच सौ तेतीस वर्ष बाकी रहते पृथिवी पर दैत्यों का किया हुआ अत्यन्त दुराचार फैला ॥ ३४ ॥ दैत्यों के राजा बाण के दो बेटे धूम्रकेतु और जंभ ने वसिष्ठ के बड़े यज्ञ में विघ्न किया ॥ ३५ ॥ उन पर क्रोध कर वासिष्ठ ने ब्रह्मा, विष्णु महेश और इंद्रादि अन्य देवताओं को अर्बुद पर्वत पर बुलाया ॥ ३६ ॥ तब प्रार्थना करने पर ब्रह्मा ने उन दोनों दैत्यों की मृत्यु को विचार कर जलते हुए अग्निकुंड से चार क्षत्रिय उत्पन्न किये ॥ ३७ ॥ उनमें प्रथम पुष्ट शरीरवाला, सौम्य है अंतःकरण और इंद्रियां जिस की ऐसा प्रतिहार नाम से प्रसिद्ध क्षत्रिय उत्पन्न हुआ ॥ ३८ ॥ इस (प्रतिहार) पुण्डरीक गोत्र, यजुर्वेद, त्रिप्रवर, माध्यन्दिनी शाखावाले सुलक्षण पुरुष ने उन दोनों दैत्यों से संग्राम किया ॥ ३९ ॥ इस क्षत्रिय ने अंगारे उगलनेवाले सूचीलोम(सूई सरीखे केशवाले)

अन्यांश्चाजौ जघानायं दैतेयाञ्छस्त्रशालिनः ॥ ४० ॥
तथापि नाशकद्धन्तुं द्वौ२तौ दोर्दण्डदुर्मदौ ॥
यतमानोपि दुष्टाभ्यां प्रहारैः प्रापितोऽस्मृतिम् ॥ ४१ ॥
क्षत्रियास्तत्कुलोद्भूताः ख्यातिं जग्मुर्महीतले ॥
तन्नामाङ्कितया जात्या पडिहारा१ इतीरिताः ॥ ४२ ॥
उदभावि ततो धात्रा द्वितीयः२क्षत्रियोत्तमः ॥
चालुक्य२श्चालुको२नाम्ना चुलुक्यश्चौलुकस्तथा ॥
भारद्वाजसगोत्रोयं यजुर्वेदो महाभुजः ॥
वीरो माध्यन्दिनीशाख३श्चक्रे त्रि३प्रवरो रणम् ॥ ४४ ॥
वृष्ट्वा पार्शत्कमासारं चुलुक्यः शौर्यसागरः ॥
दानवाञ्छूककर्णादीन्मर्द्दकादींश्च सोऽवधीत् ॥ ४५ ॥
नाभिभूतौ ततोप्येतौ दैतेयौ समिदुत्कटौ ॥
जितवन्तौ तमप्याशु प्रहारैरतिदारुणैः ॥ ४६ ॥
तदन्ववायसम्भूता अभूवन्क्षत्रिया भुवि ॥
कथिताश्चालुका२जात्या सर्वैःसोलङ्खिनस्तथा ॥ ४७ ॥
ततो रमेशरुद्राभ्यामाज्ञप्तेन विरिञ्चिना ॥

विकट दैत्य और अन्य शस्त्रकुशल दैत्यों को मारा ॥ ४० ॥ तौ भी भुजबल से मदोन्मत्त उन दोनों (धूम्रकेतु और जंभ) को मारने के लिये समर्थ नहीं हुआ और यत्न करने पर भी उन दुष्टों के प्रहार से मूर्छित हुआ ॥ ४१ ॥ उसके कुल से पैदाहुए क्षत्रिय उसीके नाम की जाति से पड़िहार कहानेवाले प्रसिद्ध हुए ॥ ४२ ॥ तब ब्रह्मा ने क्षत्रियों में उत्तम चालुक्य, चालुक, चुलुक्य और चौलुक इन नामों से दूसरा क्षत्रिय पैदा किया ।४३। भारद्वाज गोत्र, यजुर्वेद, माध्यन्दिनी शाखा और त्रिप्रवरवाले महाबाहु इस वीर ने संग्राम किया ॥ ४४ ॥ इस वीरता के समुद्र चुलुक्य ने पार्शत्क बाणों की वृष्टि वरसा कर शूककर्णादि और मर्दकादि दानवों को मारा ॥ ४५ ॥ तौ भी संग्राम में विकट रहनेवाले वे दोनों दैत्य नहीं हारे और अतिकठोर प्रहारों से इस क्षत्रिय को जीतलिया ॥ ४६ ॥ उसके कुल से पैदाहुए क्षत्रिय पृथ्वी में सब चालुक कहाये और जाति से सोलंखी हुए ॥ ४७ ॥ तब विष्णु और शिव की प्रेरणा से ब्रह्मा ने वशिष्ठ के हितकी इच्छा से तीसरा क्षत्रिय

भूय आविरभाव्यन्यो वशिष्ठेष्टचिकीर्षुणा ॥ ४८ ॥
प्रमारः१परमारो२यं प्रामार३श्च समाख्यया ॥
वशिष्ठगोत्रसंपन्नो यजुर्वेदो रणोत्सुकः ॥ ४९ ॥
सोपि माध्यन्दिनीशाखो वीरस्त्रि३प्रवरो युधि ॥
कङ्कालादोग्रकग्रीवकोलदंष्ट्रादिकानहन् ॥ ५० ॥
तुमुलं च महच्चक्रे तथापीन्द्रारिराट्सुतौ ॥
नाशकत्तौ खलौ जेतुं प्रत्युताऽभूत्प्रहारितः ॥ ५१ ॥
तदन्वयसमुद्भूताः क्षत्रिया ये धरातले ॥
प्रमाराः१परमारा२स्ते जात्या सर्वैः प्रकीर्त्तिताः ॥ ५२ ॥
ततोतिक्रूरयाऽऽहुत्या हव्यं प्रक्षिप्य पावके ॥
उदपादि चतुर्थो४यं वीरः क्रुद्धमना बली ॥ ५३ ॥
आजानुलम्बदोर्दण्डोऽस्यऽरिशक्तिगदायुधः ॥
तप्तकाञ्चनसङ्काशश्चण्डवीर्यश्चतुर्भुजः ॥ ५४ ॥
सामवेदस्तथापञ्चप्रवरो वत्सगोत्रभृत् ॥
संनद्धः कौथमीशाखः सङ्ग्रामोद्धतसाहसः ॥ ५५ ॥
आपन्वान्१जामादग्न्य२श्च च्यवनो३ भार्गव४स्तथा ॥
और्वः५पञ्चम५इत्येताश्चण्डासिप्रवराभिधाः ॥ ५६ ॥

फिर पैदा किया ॥ ४८ ॥ यह क्षत्रिय प्रमार, परमार और प्रामार इन नामों से वाशिष्ठ गोत्र, यजुर्वेदवाला रण में उत्साही हुआ ॥ ४९ ॥ उस माध्यन्दिनी शाखा और त्रिप्रवरवाले वीर ने संग्राम में कंकालाद, उग्रग्रीव और कोलदंष्ट्र आदि दैत्यों को मारा ॥ ५० ॥ बड़ा भारी संग्राम किया तौ भी वे दोनों दुष्ट दैत्यराज के पुत्र जीतने में नहीं आये उलटा यह प्रमार घायल हुआ ॥ ५१ ॥ उस के वंश के भूतल में जो क्षत्रिय हैं वे प्रमार जाति से कहाये ।५२।तब क्रूर आहुति से अग्नि में होम कर क्रोधीमनवाले,बली शूरवीर चौथे क्षत्रिय को उत्पन्न किया ॥ ५३ ॥ यह क्षत्रिय आजानुबाहु, खड्ग चक्र बरछी और गदा इन आयुधोंवाला,तपेहुए सोने के समानदीप्तिमान्,प्रचण्ड पराक्रमी, चतुर्भुज, सामवेद, कौथमी शाखा, पञ्चप्रवर और वत्स गोत्र धारण करनेवाला, शस्त्रधारी, संग्राम में बड़ा साहसी जिस चण्डासि क्षत्रिय के आपन्वान्, जामदग्न्य, च्यवन, भार्गव और और्व ये पांच प्रवरों के नाम हैं, सब लोग

चह्वाण४श्चहुवाणो४सौ चुहाण४श्च चतुर्भुजः ॥
चौहाण४श्चापि चण्डासिः४प्रोक्तः सर्वैरभिख्यया ॥ ५७ ॥
अभिषिक्तोऽखिलैर्देवैर्विधिपूर्वं नृपोत्तमः ॥
स उल्बणाभिसंपाते रेमे दुर्गासहायवान् ॥ ५८ ॥
अभेद्यं वपुरासाद्याखिलसूतेः प्रसादतः ॥
स्वशक्तिमाश्रितां स्तुत्वाऽऽशापूरां शत्रुशातिनीम् ॥ ५९ ॥
शक्त्या धूम्रध्वजं१बाणैश्चतुर्भिर्यन्त्रकेतनम्२ ॥
अयं निपातयाञ्चक्रे प्रभुः शौण्डीर्यभूषणः ॥ ६० ॥
तालहस्तं३करालास्यं४कीलजिह्वं५ह्रदोदरम्६ ॥
रीतिनेत्रं७महादैत्यं शूलिकं८शैलनासिकम् ९ ॥ ६१ ॥
प्रहारपातैनैरेतांश्चण्डासिरसुरानहन् ।
सुरकेशिहिडम्बाद्या अभवन्विपलायिनः ॥ ६२ ॥
तत इन्द्रादयो देवाश्चहूवाणमपूजयन् ।
ववृषुः कुसुमासरं ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ ६३ ॥
तुष्टुवुश्चारणाः सिद्धा विद्याधरमयूरगाः ।
हाहादयो जगुः कीर्त्तिं गन्धर्वास्तस्य भूपतेः ॥ ६४ ॥

जिसको चव्हाण, चहुवाण, चुहाण, चतुर्भुज, चउहाण और चंडासि इन नामों से कहते हैं ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ इन चार श्लोकों का कुलक है ॥ सब देवताओं ने विधि पूर्वक इस उत्तम राजा का अभिषेक किया वह दुर्गा की सहायता से संग्राम में स्पष्ट क्रीड़ा करनेलगा ॥५८॥ संपूर्ण को पैदा करनेवाली शक्ति की कृपा से अभेद्य शरीर को प्राप्त होकर शत्रुओं का नाश और आशा पूर्ण करनेवाली अपनी सहायक शक्तिकी स्तुति करके ॥५९॥ पराक्रम ही है भूषण जिसके ऐसे प्रभु ने बरछी से धूम्रध्वज को और चार बाणों से यंत्रकेतन को मारा ॥ ६० ॥ यह दो श्लोकों का युग्म है ॥ चंडासि ने हस्तताल, करालास्य, कीलजिह्व, ह्रदोदर, रीतिनेत्र, महादैत्य शूली और शैलनासिक इनको शस्त्रप्रहार से मारा. और मुर, केशी, हिडंबादि भागगये ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ यह युग्म है ॥ तब इंद्रादि देवताओं ने चहुवाण का पूजन किया, पुष्पों की वृष्टि की, और अप्सराओं का समूह नाचने लगा ॥ ६३ ॥ चारण, सिद्ध, विद्याधर, किन्नर और नाग प्रसन्न हुए. हाहा आदि गंधर्व उस राजा की कीर्ति गाने लगे ॥ ६४ ॥

अथ विष्णवीशब्रह्माणश्चण्डासिं सुरसेवितम् ।
इन्द्रप्रस्थाधिपत्ये तं तेऽभिषिच्य तिरोदधुः ॥ ६५ ॥
हेतिद्वितीय एषोपि प्रभुर्जित्वा चतुर्दिशः ।
इन्द्रपूस्थे चकारोच्चै राज्यं धर्मधुरंधरः ॥ ६६ ॥
एवं युष्मत्कुलोत्पादी रामसिंह धराधव ।
आविरासाऽर्बुदे राजा चहुवाणो१ऽग्निकुण्डतः ॥ ६७ ॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ क्षत्रि-
यत्रय३सहितचहुवाणजन्मवर्णनं नाम दशमो१० मयूखः ॥ १० ॥

अथ चहुवाणवंशसमसनम् ॥
गीर्वाणभाषा ॥ गीतिः ॥

नृपचहुवाण१ज्जज्ञे पुत्रः सामन्तदेव२इति नाम्ना ।
समरप्रचण्डभावात्प्रचण्ड इत्यप्युदीरितो लोकैः ॥ १ ॥
सामन्तदेवतोऽभून्नृपो महादेव३इत्यभिख्यावान् ।
परकदनतत्परत्वात्परभञ्जन३ इत्यपीरितः सर्वैः ॥ २ ॥
उदभूच्च महादेवान्महोन्तदेवो४ महीपतिर्नाम्ना ।
आर्द्राद्यङ्घ्रिभवत्वात्कुबेर४आपेत्यपि प्रसिद्धिं सः ॥ ३ ॥

इस पीछे ब्रह्मा, विष्णु, महेश उस सुरसेवित चंडासि का इंद्रप्रस्थ के आधि-पत्य (स्वामीपन) का अभिषेक करके अन्तर्धान हो गये ॥ ६५ ॥ शस्त्र ही है दूसरा सहाय जिसके ऐसा होने पर भी इस धर्म धुरंधर प्रभु ने चार दि-शाओं को जीत कर इंद्रप्रस्थ पर भली भांति राज्य जमाया ॥ ६६ ॥ हे पृथि-वीपति रामसिंह ! आपके कुल को उत्पन्न करनेवाला आबू पहाड़ पर अग्नि कुंड से चहुवाण राजा इस रीति पैदा हुआ ॥ ६७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में तीन क्षत्रियों के साथ राजा चहुवाण के जन्म के वर्णन का दशवाँ१०मयूख समाप्त हुआ ॥

अब चहुवाण वंश का संक्षेप से कहना है॥ संस्कृत भाषा ॥

चहुवाण राजा के सामन्तदेव पुत्र हुआ, जिसको युद्ध में प्रचंड रहने के कारण लोगों ने प्रचंड भी कहा ॥ १ ॥ सामंतदेव के राजा महादेव हुआ जि-सको शत्रुओं का नाश करने से सबने परभंजन कहा ॥ २ ॥ महादेव के म-होन्तदेव हुआ, जो आर्द्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने से कुबेर भी

जज्ञे म न्तदेवान्महीपतिर्बिन्दुसार५ आह्वातः ।
मन्त्रजयः५ स ख्यातो मन्त्रसहायो५ऽपि मन्त्रकुशलत्वात् ॥ ४ ॥
भूपालबिन्दुसारादजायत प्रविदितो भुवि सुधन्वा६ ।
अन्यौदार्यहरत्वादुदारहारो६ऽपि कीर्त्तितः कविभिः ॥ ५ ॥
भूपसुधन्वन उदभूत्स वीरधन्वा७समाख्यया ख्यातः ।
सुजनाशोककरत्वाद्योऽशोक७ इति प्रसिद्धिमपि लेभे ॥ ६ ॥
भूपा वीरधन्वन उत्पेदे शत्रुशूलजयधन्वा९ ।
षट्कतर्ककोविदत्वात्प्रथितः शङ्काविदार८इत्यपि सः ॥ ७ ॥
जयधन्वनोऽप्युदभवन्महीपतिर्वीरसिंह९ इतिनाम्ना ।
अविरतविजयकरत्वाद्विजयो९ऽपि स कीर्त्तितो महाकविभिः ॥८॥
जज्ञेऽथ वीरसिंहधरणिधवोऽभिख्ययापि वरसिंहः१० ।
तस्याऽपरा२समाख्या मारुत१०इत्यप्यरुद्धगमनत्वात ॥ ९ ॥
वरसिंहादुत्पेदे नरेश्वरो वीरदण्ड११ आख्यातः ।
यदपरनामसुमेरु११र्बभूव विदितोऽवनीतलेप्यखिले ॥ १०
जज्ञेऽथ वीरदण्डादरिमन्त्रः१२स हि जयन्त१ उदया२ख्यः ।
माणिक्यराज्य१३ उदभूदरिमन्त्राच्छूर१३ त्यपि समाह्वः ॥ ११ ।

कहाया क्योंकि ज्योतिष के मत से आर्द्रा के चार चरणों के नाम " कु, घ, ङ, छ " इन अक्षरों पर क्रम से आते हैं ॥ ३ ॥ महोन्तदेव के राजा बिन्दुसार हुआ जो मंत्र की सहायता से और मंत्र में कुशल होने से मंत्रजय कहाया ॥ ४ राजा बिन्दुसार के पृथिवी में प्रसिद्ध सुधन्वा हुआ, जिसको दूसरों की उदारता हर लेने के हेतु कवियों ने उदारहार भी कहा ॥ ५ ॥ राजा सुधन्वा के वीरधन्वा हुआ जो सज्जन लोगों का शोक हरलेने से अशोक प्रसिद्ध हुआ ॥ ६ ॥ राजा वीरधन्वा के शत्रुओं का शूल जयधन्वा हुआ, ो छहों शास्त्रों में पण्डित होने से शंकाविदारक भी कहाया ॥ ७ ॥ जयधन्वा के वीरसिंह ुआ, जो निरन्तर वि य रने से कवियों से विजय कहाया ॥ ८ ॥ वीरसिंह के वरसिंह हुआ, जो कहीं नहीं रुकने से मारुति कहाया ॥ ॰ ॥ वरसिंह के वीर ंड हुआ, जो पृथ्वी में दूसरे नाम से सुमेरु कहाया ॥ १० ॥ वीरदंड के अरिमंत्र आ, जो जयंत और उदय कहाया, अरिमंत्र के माणिक्य

पुष्कर१४उदभूच्छूरात्स एव वा विजयपाल१४उभयाऽऽह्वः ।
नृपपुष्करतो जनेऽसमञ्जस१५ इति प्रतिष्ठितसमाख्यः ॥ १२ ॥
असमञ्जसादुदभवन्नरेश्वरः प्रेमपूर१६आख्यातः ।
भूपोथ भानुराजः१७ समाख्यया प्रेमपूरतो जज्ञे ॥ १३ ॥
उदभूच्च भानुराजान्महीपतिर्मानसिंह१८इति नाम्ना ।
हनुमां१९श्च मानसिंहाज्जज्ञे स हि धर्मपाल१९इति विदितः ॥१४॥
नृपहनुमत उत्पेदे नरेश्वरश्चित्रसेन२० इतिसाऽऽह्वः ।
जज्ञेथ चित्रसेनान्नाम्ना शम्भु२१धराधवःख्यातः ॥ १५ ॥
शम्भोश्च महासेनो२२ऽतिर्द्रविणत्वात्स एव ऋद्धीशः२२ ।
सुरथ२३श्च महासेनात्सुरथादथ रुद्रदत्त२४ आह्वयतः ॥ १६ ॥
स हि भूपरुद्रदत्तो२४ विदितो भुवि करणपाल२४नाम्नाऽपि ।
जज्ञेथ रुद्रदत्ताद्धेमरथः२५ सेनपाल२५इत्यपि सः ॥ १७ ॥
हेमरथादुत्पेदे चित्राङ्गद२६ आख्यया धराधीशः ।
चित्राङ्गदादजायत चित्ररथ२७श्चन्द्रसेन२७उभयाऽऽख्यः ॥ १८ ॥
चित्ररथाद्बाह्लीकः२८स एव भुवि वत्सराज२८इति विदितः ।
धृष्टद्युम्नो२९जज्ञे बाह्लीकाद्वरुण२९इत्यपि स नाम्ना ॥ १९ ॥
धृष्टद्युम्नादुत्तम३०उत्तमतोऽभूत्सुनीक३१ आह्वयतः ।
उदभून्नृपसुनीकात्सुबाहु३२रिति मोहनो३२पि च स एव ॥ २० ॥

राज हुआ, जो सूर भी कहाया ॥ ११ ॥ सूर के पुष्कर हुआ, जो विजयपाल कहाया, पुष्कर के असमंजस हुआ ॥ १२ ॥ असमंजस के प्रेमपूर, प्रेमपूर के भानुराज हुआ ॥ १३ ॥ भानुराज के मानसिंह और हनुमान हुए. मानसिंह के धर्मपाल ॥ १४ ॥ और हनुमान के चित्रसेन हुआ जो धर्मपाल का उत्तराधिकारी बना, चित्रसेन के शंभु ॥ १५ ॥ शंभु के महासेन जो अधिक धनवान् होने से ऋद्धीश कहाया, महासेन के सुरथ,उस के रुद्रदत्त॥१६॥ वही रुद्रदत्त पृथ्वी में करणपाल प्रसिद्ध हुआ, रुद्रदत्त के हेमरथ हुआ जो सेनपाल कहाया ॥ १७ ॥ हेमरथ के चित्रांगद, चित्रांगद के चित्ररथ हुआ जो चन्द्रसेन कहाया ॥ १८ ॥ चित्ररथ के बाल्हीक हुआ वही वत्सराज कहाया,बाल्हीक के धृष्टद्युम्न हुआ जो वरुण कहाया ॥१९। धृष्टद्युम्न के उत्तम, उत्तम के

सुरथो३३भवत्सुबाहोः सुरथाद्भरतः३४सएवमदसेनः३४ ॥
अथसत्यकी३५भरततः सत्यक३५इति सात्विक३५श्च सत्र्या३ख्यः
शत्रुजि३६दथसत्यकिनः स हि केसरिदेव३६इत्यपि ख्यातः॥
शत्रुजितो विक्रम३७इति महीपतिर्विक्रमाच्च सहदेवः३८ ॥२२॥
शंतनुना दिग्विजये कौरवराजेन भीष्मजनकेन ॥
ऐन्द्रप्रस्थं राज्यं नीतं सर्वं जयश्च सहदेवात् ॥ २३ ॥
सहदेवेन च पौण्ड्रं कार्णाटं चाप्तमृद्धराज्ययुगम्२ ॥
तत्रैव राजधानी रचिता चहुवाणसंततितरणिना ॥ २४ ॥
सहदेवादुत्पेदेऽथ वीरदेवः३९स भीमसेनो३९ऽपि ॥
जज्ञेऽथ वीरदेवाद्वसुदेवः४०पुण्ड्रको४०ऽभिधाद्वयरभृत् ॥ २५ ॥
वसुदेवादत्पेदे समाख्यया वासुदेव४१इति विदितः ॥
काशीराजसहायो युध्वा कृष्णेन योऽगमन्मुक्तिम् ॥ २६ ॥
जातोथ वासुदेवाद्रणधीर४२ इति प्रतिष्ठिताभिख्यः ॥
रणधीराच्छत्रुघ्न४३श्चहुवाणकुलप्रदीपको जज्ञे ॥ २७ ॥
शत्रुघ्नाच्च सुमेरुः४४ ख्यातः स हि शालिवाहनो४४ नाम्ना ।
कृतवर्म्मा४५थ सुमेरोर्जातः कृतवर्म्मणोप्यथ सुवर्म्मा४६ ॥२८॥

सुनीक, सुनीक के सुबाहु हुआ जो मोहन कहाया ॥ २० ॥ सुबाहु क सुरथ, सुरथ के भरत हुआ वही मदनसेन कहाया,भरत के सत्यकी जिसको सत्यक, सात्विक और सत्र्य भी कहते हैं ॥ २१ ॥ सत्यकी के शत्रुजित् सोही केसरीदेव कहाया, शत्रुजित् के विक्रम. विक्रम के सहदेव ॥ २२ ॥ कौरवों का राजा भीष्म के पिता शंतनु ने दिग्विजय किया तब सहदेव से इंद्रप्रस्थ का राज्य जीत लिया ॥ २३ ॥ तब चहुवाण कुल के सूर्य सहदेव ने पौण्ड्र और कर्णाटक देश के समृद्धिवाले दो राज्य लेकर राजधानी बनाई ॥ २४ ॥ सहदेव के वीरदेव जिसका दूसरा नाम भीमसेन हुआ, वीरदेव के वसुदेव हुआ जिस का दूसरा नाम पुंड्रक था॥ २५ ॥वसुदेव के वासुदेव प्रसिद्ध हुआ जिसने काशिराजकी सहायता से युद्ध करके श्रीकृष्ण से मुक्ति पाई (मारा गया)॥ २६ ॥ वासुदेव के रणधीर, रणधीर के चहुवाण कुलदीपक शत्रुघ्न हुआ ॥ २७ ॥ शत्रुघ्न के सुमेरु, वही शालिवाहन कहाया, सुमेरु के कृतवर्मा, कृतवर्मा के सु-

उदभून्न दिव्यवर्म्मा४७ सुवर्मणो दानरणादयावीरः।
नाम्नाथ यौवनाश्वो४८ नरेश्वराद्दिव्यवर्म्मणो जातः ॥२९॥
नृपतेश्च यौवनाश्वाद्धर्य्यश्व४९ इति प्रसिद्धिमानुदभूत्।
हर्य्यश्वादजपालः ५० स चक्रवर्त्ती समस्तशास्ताऽभूत् ॥३० ॥
पूर्वरणादवशिष्टो दैतेयो रावणो हतोऽनेन।
पुष्करतीर्थसमीपं रचितं येनाजमेरनामपुरम् ॥ ३१ ॥
कृत्वाऽखिलदिग्विजयं जिगीषु५०रित्यपि स एव नाम्नाभूत्।
अभवंस्त्रयोदश१३ सुता अजपालात्तान् क्रमेण बुध्यस्व ॥३२॥
भटदलन५१।१महासेनौ५१।२तथामहाबाहु५१।३भीमसेनौ५१।४च।
दृढधन्वा५१।५ ऽश्वपती५१।६अथ
नृप [illegible]५१।७ जगत्पति५१।८ सुकर्म५१।९नामानः ॥ ३३ ॥
भवदत्त५१।१० इन्द्रदत्तो५१।११
धनेश्वरो५१।१२विष्णुदत्त५१।१३ इ[illegible] सर्वे ॥
अनुजा एषु द्वादश१२निहता बाल्ये हि जटमुखैरसुरैः॥ ३४ ॥
सुरथो३३भवत्सुबाहोः सुरथाद्भरतः३४ स एव भद्रसेनः३४।
रावणदैत्यविरोधा१त्प्रमतेः शापा२च्च नष्टमिद्धकुलम्।
त्रय३ आत्मजा उदभवन्मुख्यादजपालसूनुभट[illegible]लनात् ॥ ३५ ॥

र्मा ॥ २८ ॥ सुवर्मा के दान रण और दया में वीर दिव्यवर्मा हुआ, उसके यौवनाश्व हुआ ॥ २९ ॥ यौवनाश्व के विख्यात हर्यश्व, उसके सबका शासन करनेवाला चक्रवर्ती अजपाल हुआ ॥ ३० ॥ जिसने पहिले के संग्राम से बचेहुए दैत्य रावण को मारा और पुष्कर तीर्थ के समीप अजमेरनामक नगर बसाया (रामचंद्र ने मारा वह राक्षस रावण था यह दैत्य रावण उसके अतिरिक्त है) ॥ ३१ ॥ वहजीतने की इच्छावाला सम्पूर्ण दिग्विजय करके यही अजयपाल नाम से प्रसिद्ध हुआ जिस के तेरह पुत्र हुए जिनके नाम क्रम से ये जानो ॥ ३२ ॥ भटदलन १ महासेन २ महाबाहु ३ भीमसेन ४ दृढधन्वा ५ अश्वपति ६ नृपति ७ जगत्पति ८ सुकर्म ९ ॥ ३३ ॥ भवदत्त १० इन्द्रदत्त ११ धनेश्वर १२ विष्णुदत्त १३ इन में से बारह तो बालक अवस्था में ही जटा[illegible]र आदि दैत्यों से मारेगये ॥ ३४ ॥ रावण दैत्य के विरोध से और प्रमति के शाप से समृद्ध कुल नष्ट हुआ परंतु अजपाल के ज्येष्ठ पुत्र भटदलन के तीन पुत्र हुए

ज्यायांस्तु लोह राजो५२।१ऽथ निम्मराजो५२।२श्चनङ्गराज५२।३श्च।
तेषु द्वौर पूर्वभवौ दैतेयैरप्रजौ हतौ समिति॥ ३६ ॥
यौ चाहुवाणजननं धराऽमरत्रं धरेशधर्मधरम् ।
श्रीभटदलनतनूजौ रणरसिकौ मन्यते महापितरौ ॥ ३७ ॥
अभवत्तदा महीपतिरनङ्गराजो५२ हि राज्यमासाद्य ।
अभवन्ननङ्गराजाद्भीमाद्या एकविंशति२१स्तनुजाः ॥ ३८ ॥
भीम५३।१श्च धर्मपालो५३।२धर्मरतो५३।३रत्नपाल५३।४रुक्मरथौ३५।५
रुक्मेशा५३।६रुक्मकोशौ५३।७
पृथ्वीपाल५३।८श्च रुक्मसेन५३।९श्च ॥ ३९ ॥
हरिभानु ५३।१० चन्द्रभानु ५३।११
भानु५३।१२जगद्भानु५३।१३सोमदत्ताश्च ।
जयचन्द्रो५३।१५ऽन्वयचन्द्रो५३।१६ ॥
देवीचन्द्र५३।१७स्त्रिलोकचन्द्र५३।१८श्च ॥ ४० ॥
अमर५३।१९श्च दीपचन्द्रो५३।२०
ऽखिलाऽनुजो ब्रह्मदत्त५३।२१ इति वीराः ॥
एषु ज्येष्ठाद्भीमाद्गोगो५४ऽभून्नागभूभृदवतारः ॥ ४१
गोगादथ शुभकर्णः५५शुभकर्णादुदयकर्ण५६इति साह्वः ।
जसकर्ण५७उदयकर्णाद्धरिकर्णो५८ऽजायताथ जसकर्णात्॥४२॥
हरिकर्णात्कीर्त्तीशः५९कीर्तीशाद्बालकृष्ण६०इति भूपः ।

॥ ३५ ॥ तिन में बड़ा तो लोहराज १ दूसरा निम्मराज २ और तीसरा अनंगराज ३ इनमें पहिले दो तो युद्ध में दैत्यों से बिना संतान हुए ही मारे गये ॥ ३६ ॥ श्रीभटदलन के जिन दोनों रणरसिक पुत्रों को, ब्राह्मणों की रक्षा करनेवाला और राजाओं के धर्म को धारण करनेवाला चहुवाण वंश महापितर मानता है ॥ ३७ ॥ तब अनंग राज राज्य पाकर राजा हुआ, इस के भीम को आदि ले इक्कीस पुत्र हुए, जिनके नाम क्रम से मूल में स्पष्ट हैं उन में सब से छोटा ब्रह्मदत्त हुआ ॥ इन में सब से बडे भीम के शेषावतार गोग हुआ ॥ ४१ ॥ गोग के शुभकर्ण, उसके उदयकर्ण,उसके जसकर्ण, उसके हरिकर्ण ॥ ४२ ॥ हरिकर्ण के कीर्त्तीश, उसके बालकृष्ण, उसके महाप्रतापी

जातश्च बालकृष्णाद्धरिकृष्ण६१ इति ज्वलत्प्रतापमहाः ॥ ४३ ॥
हरिकृष्णादुत्पेदे समाख्यया रामकृष्ण६२ इति नृपतिः ।
अथ रामकृष्णतो बलदेवो६३ बलदेवतश्च हरदेवः६४ ॥ ४४ ॥
भूयो जज्ञे भीमो६५ हरदेवाद्भीमतश्च सहदेवः६६ ।
सहदेवाच्चाजायत महीपती रामदेव६७ आह्वातः ॥ ४५ ॥
रामाद्वसुदेवो६८भूद्वसुदेवाच्छ्यामदेव६९ ईड्यगुणः ।
श्यामाद्धरिदासो७०भूद्धरिदासादथ महीधरो७१ जातः ॥ ४६ ॥
उदभूच्च महीधरतो नरेश्वरो वामदेव७२ उच्चमनाः ॥
अथ वामदेवतः श्रीधर७३ इति धरणीधवः समुत्पेदे ॥ ४७ ॥
श्रीधरतो गङ्गाधर७४ इत्यथ गङ्गाधरान्महादेवः।७५ ।
शार्ङ्गधरो७६ऽथ महादेवाच्छार्ङ्गधराच्च मानसिंहो७७ऽभूत् ॥ ४८ ॥
जातश्च मानसिंहाच्चक्रधरः७८ शत्रुजि७९ च्चक्रधरात् ।
शत्रुजितो हलधर८० इति हलधरतोभून्महाधनु८१र्भूपः ॥४९॥
भूपश्च महाधनुषोऽजायत भुवि देवदत्त८२ इति विदितः ।
श्रीदेवदत्ततोऽभूद्दामोदर८३ आख्यया जगज्जेता ॥ ५० ॥
दामोदरतो जज्ञे काशीनाथः८४ प्रसिद्धिमान्भूपः ।
काशीनाथाल्लीलाधर८५इति दोर्दण्डदुर्जयो द्विषताम् ॥ ५१ ॥
लीलाधरतो धरणीधर८६इति धरणीधवः समुत्पेदे ।
धरणीधराच्च रमणेशो८७भगवद्दास८८आस रमणेशात् ॥ ५२ ॥

हरिकृष्ण ॥ ४३ ॥ हरिकृष्ण के रामकृष्ण, उसके बलदेव, उसके हरदेव ॥४४॥ हरदेव के फिर भीम, उसके सहदेव, उसके रामदेव ॥ ४५ ॥ रामदेव के पीछे वसुदेव, उसके स्तुति योग्य गुणवाला श्यामदेव, उसके हरिदास, उसके महीधर ॥ ४६ ॥ उसके उदारचित्त नृपति वामदेव, उसके श्रीधर ॥ ४७ ॥ उसके गंगाधर, उसके महादेव, उसके शार्ङ्गधर, उसके मानसिंह ॥ ४८ ॥ उसके चक्रधर, उसके शत्रुंजित, उसके हलधर, उसके महाधनु ॥ ४९॥ फिर देवदत्त, उसके जगत् को जीतनेवाला दामोदर ॥ ५० ॥ उसके प्रसिद्ध काशिनाथ, उसके भुजदंड से शत्रुओं को जीतनेवाला लीलाधर ॥ ५१ ॥ उसके धरणीधर, उसके रमणेश, उसके भगवद्दास ॥ ५२ ॥ उसके कृष्णदास, उसके चहु-

भगवद्दासादुदभूत्समाख्यया कृष्णदास८९इति राजा ।
जातश्च कृष्णदासाच्छिवदास९०श्चहुवाणकुचन्द्रः ॥ ५३ ॥
शिवदासाद्धरिपूर्णो९१देवीदास ९२स्तथैव हरिपूर्णात् ।
देवीदासाज्जातो धराधवः कर्म्मचन्द्र९३इति नाम्ना ॥ ५४ ॥
जज्ञेथ कर्म्मचन्द्रान्महीपती रामदास९४ओजस्वी ।
अथ च महानन्द९५इति प्रभुरभवद्रामदासतः ख्यातः ।५५।
तत एव महानन्दान्नष्टं कर्णाटवैषयिकराज्यम् ।
इति तेन महानन्देनाप्तो देशो रुमामहीगर्भः ॥ ५६ ॥
नगरे संभरनाम्नि स्कन्धावारो विनिर्मितस्तेन ।
तद्वंश्याः साम्भरिकाः सम्भरवाराश्च सम्भराश्चेति ॥ ५७ ॥
उदभूच्च महानन्दाद्धमर्धनो विष्णुदास९६इति नृपतिः ।
नाम्नाथ महारामो९७भूद्विदितो विष्णुदासतो भूपात् ॥ ५८ ॥
जातश्च महारामाद्देवादासो९८नृपो द्विषद्दलनः ।
देवादासाज्जातोऽमरसिंहो९९भरतखण्डगीतयशाः ॥ ५९ ॥
उत्पेदेऽमरसिंहाद्गङ्गादासो१००महीपतिर्विजयी ।
गङ्गादासाज्जातो यशोधनो मानसिंह१०१इति भूपः ॥ ६० ॥
मानाद्विश्वंभर१०२इति विश्वंभरतोप्यथ मथुरादासः १०३।
मथुरादासाज्जातो महीपतिर्द्वारकादिदास१०४इति ॥ ६१ ॥

वाणों में भूमि का चन्द्रमा शिवदास ॥ ५३ ॥ उसके हरिपूर्ण, उसके देवीदास, उसके कर्मचन्द्र ॥ ५४ ॥ उसके प्रतापी भूपति रामदास, उसके महानन्द. इस राजा तक कर्णाटक देश में राज्य करनेवाले क्रम से राजा हुए ॥ ५५ ॥ राजा महानन्द ने कर्णाटक देश का राज्य नष्ट हो जाने से सांभर भूमि है बीच में जिसके ऐसा देश पाकर ॥ ५६ ॥ सांभर नामक नगर में राजधानी बनाई ॥ उसके वंश के सांभरिक, संभरवार और संभर कहाये ॥ ५७ ॥ महानंद के धर्मधन जिसका दूसरा नाम विष्णुदास था राजा हुआ. उसके महाराम, महाराम के पीछे शत्रुओं का दलनेवाला देवदास, उसके अमरसिंह ॥५८॥ उसके विजयी गंगादास, उसके यश ही है धन जिसके ऐसा मानसिंह ॥ ६० ॥ उसके विश्वंभर, उसके मथुरादास, उसके द्वारकादास॥ ६१ ॥ उसके माधव-

तद्वारकादिदासान्माधवदासो१०५नरेश उत्पेदे ।
अभवच्चाथ सुदासो१०६माधवदासात्समिज्जयी भूपः । ६२
जाताः सुदासभूपाद्दश१०तनुजा वीरभद्र१०७।१ एष्वार्यः ।
अनुजः काशीनाथो१०७।२
मधुसूदन१०७।३वामनौ१०७।४मुरारि१०७।५श्च ॥ ६३ ॥
वाराह१०७।६हृषीकेशौ१०७।७
केशव१०७।८बलभद्र१०७।९कमलनयना१०७।१० श्च ।
काशीनाथा१०७।२दिनव९सुकुलं कतीनां स्थितं कियत्कालम्॥६४॥
वानस्थितमद्यावध्यऽतोऽत्र तत्तु प्रवृत्तिसंदेहः ।
ज्येष्ठाच्च वीरभद्राद्गोपाल१०८इति प्रसिद्धिसमुपेतः ॥ ६५ ॥
गोविन्ददास१०९एवं जातो गोपालतो महाराजात् ।
संभरनगराधीशः कीर्त्तिधनश्चाहुवाणचण्डांशुः ॥ ६६ ॥
गोविन्ददासतोऽसौ जज्ञे माणिक्यराज११०इति नाम्ना ।
भारतवर्षजयित्वाद्विश्वपति११०र्योऽखिलैर्जनैः कथितः । ६७ ।
अथ हनुमत्सुग्रीवौ२जातौ माणिक्यराजतः सहजौ ।
ज्यायाननयोर्हनुमां१११।१स्त्यक्त्वा सम्भरमियाय पूर्वदिशम् । ६८ ।
स धनुर्बाणसहायो जित्वा प्राचीमुवास तत्रैव ।
गङ्गातटजुषि नगरे पाटलिपुत्रे यदद्य पटनाख्यम् ॥ ६९ ॥

दास, उसके संग्राममें जीतनेवाला सुदास, ये क्रम से राजा हुए॥६२॥ सुदास के वीरभद्र को आदि ले दश पुत्र हुए, जिनके नाम क्रम से मूल में देखो काशीनाथ को आदि ले कमलनयन पर्यन्त नवों में किनका कितने समय तक कुल रहा अथवा न रहा इस वृत्तांत का आजतक संदेह है, परंतु बड़े वीरभद्र के प्रसिद्ध गोपाल हुआ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ इस रीति महाराज गोपाल के, कीर्ति ही है धन जिसके ऐसा चहुवाण वंश का सूर्य सांभर नगर का पति गोविन्ददास हुआ॥ ६६ ॥ गोविन्ददास के माणिक्यराज हुआ जो भारत वर्ष को जीत लेने से विश्वपति कहलाया ॥ ६७ ॥ माणिक्यराज के हनुमान और सुग्रीव ये दोनों जोड़ले (साथ उत्पन्न होने वाले) पुत्र हुए, इन में बड़ा हनुमान सांभर को छोड़कर पूर्वदिशा में गया ६८ ॥ वह धनुष बाण की सहायता से पूर्वदिशा को जीतकर वहीं रहा, और गंगा

तत्रत्यमाप्य राज्यं छत्रेणैकेन सोऽतपत्प्राच्याम् ।
तत्कुलपरंपरायां नाम्ना नृप आस विक्रमादित्यः ॥ ७० ॥
तस्माद्विक्रमराजाच्चन्द्रावत्यां बभूव भूपालः ।
नाम्ना वैजलदेवः पण्डितमणिरखिलशास्त्रपारगतः । ७१ ।
श्रीमद्वैजलदेवादजायत श्रीहिराधरो भूपः ।
सर्वे पूर्वभवत्वात्तत्कुलजाः पौर्विका१इति ख्याताः ॥ ७२ ॥
तेष्वार्य१।१वीर१।२मुख्या एकत्रिंश३१द्भिदोऽभवन्मुख्याः ।
एका१पि भिदाऽतः प्राग्भिन्नकुला न श्रुतोपटङ्कान्या॥ ७३ ॥
अपरोथ हनुमदनुजः सुग्रीवः१११।२सम्भरेऽभवन्नृपः ।
अथसुग्रीवादङ्गद११२इति जातः केसरी११३तथाङ्गदतः॥७४॥
केसरिणश्च जयन्तो११४नृपाज्जयन्ताद्बभूव जगदीशः११५।
जगदीशाज्जयरामो११६जयरामाद्विजयराम११७इति विदितः । ७५।
कृष्णो११८थ विजयरामात्कृष्णाज्जितयुद्ध११९इत्यभिख्यावान् ।
जितयुद्धादुत्पेदे भूपो गोवर्द्धनो१२०महेष्वासः ॥ ७६ ॥
गोवर्द्धनतो मोहन१२१इति मोहनतश्च गिरिधरो१२२जातः।
गिरिधरतउदयरामः१२३सउद्यमा१२३ख्योऽप्युपायशीलत्वात् ।७७।
जज्ञेथोदयरामाद्भरतो१२४भरतात्तथाऽर्जुनो१२५जातः ।

के किनारे से मिला हुआ पाटलीपुत्र जिसको पटना कहते हैं ॥ ६९ ॥ वहां का राज्य पाय एक छत्र से पूर्व में तपा, उसकी वंश परंपरा में राजा विक्रमादित्य हुआ ॥ ७० ॥ उस विक्रमादित्य के चंद्रावती नगरी में संपूर्ण शास्त्रों में पारंगत पण्डित शिरोमणि बीजलदेव नामक राजा हुआ ॥ ७१ ॥ बीजलदेव के हिराधर नाम राजा हुआ, उसके कुलवाले पूर्व देश में होने के कारण सब पूरबिया (पूरव्या चहुवाण) कहाये ॥ ७२ ॥ उन में आर्य और बीरता में प्रधान इकतीस मुख्य भेद हुए परंतु आज पहिले कुल को जुदा जनानेवाली दूसरी (पूरव्या चहुवाण के सिवाय) एक भी पदवी नहीं सुनी ॥७३॥ अब दूसरा हनुमान का छोटा भाई सुग्रीव सांभर में राजा हुआ उसके अंगद हुआ जिस पीछे केसरी, जयन्त, जगदीश, जयराम, विजयराम, ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ कृष्ण, जितयुद्ध, महापराक्रमी गोवर्धन ॥ ७६ ॥ मोहन, गिरिधर, उदयराम, जो उपाय में कुशल होने के कारण उद्यम कहाया॥७७॥ भरत, अर्जुन,

शत्रुजि१२६दर्जुनतोऽभूच्छत्रुजितः सोमदत्त१२७इति नृपतिः ॥७८॥
उदभूच्च सोमदत्ताद्दुःखन्तो१२८भीम१२९इति च दुःखन्तात् ।
भीमाल्लक्ष्मण१३०उदभूल्लक्ष्मणातः परशुराम१३१इति नृपतिः ॥७९॥
जातोथ परशुरामान्मद्यसखोऽभिख्ययैव रघुरामः१३२ ।
तं जित्वा प्रतिहाराः सजनपदं सम्भरं नगरमनयन् ॥ ८० ॥
उत्पेदेऽथ सुरापाद्रघुरामात्समरसिंह१३३ इति वीरः ।
अभवच्च समरसिंहाद्भूयो माणिक्यराज१३४इति साह्वः ॥ ८१ ॥
स विजित्य प्रतिहारानभजत्पुरि सम्भरे पुना राज्यम् ।
नाहरराजः१३४ कथितो द्वितीय२नाम्ना स एव विजयित्वात्॥८२॥
दश१०पुत्रा उदभूवन्नृपतो माणिक्यराजतस्तस्मात् ।
ज्येष्ठस्तेषु मुहुःकर्म्मा१३५।१यो दामोदरो१३५।१प्यपरनाम्ना॥८३॥
अनुजाश्च लालसिंहो१३५।२
हरिसिंहो१३५।३प्याख्ययाथ शार्दूलः१३५।४ ।
ज्ञेयश्च पर्णराजो१३५।५
मौक्तिकराज१३५।६ स्तथैव निर्व्वाणः१३५।७ ॥ ८४ ॥
अपि तदनु कृष्णराजो१३५।८
ऽथलशुनराजः१३५।९ प्रवालराज१३५।१०श्च ।
माणिक्यराजपुत्राः क्रमत इमे जज्ञिरे दश१० सगर्भ्याः ॥८५॥
एतेषु मुहुःकर्म्मा१३५स ज्येष्ठः सम्भराधिपत्यमितः ॥

शत्रुजित्, सोमदत्त ॥ ७८ ॥ दुःखन्त, भीम, लक्ष्मण, परशुराम ये क्रम से राजा हुए ॥ ७९ ॥ परशुराम के मद्यपी (बहुत मद्य पीनेवाला) रघुराम हुआ जिसको जीतकर पड़िहार क्षत्रियों ने देश सहित सांभर का राज्य लेलिया ॥ ८० ॥ सुरापी रघुराम के वीर समरसिंह, उस के माणिक्यराज हुआ ॥८१॥ जिसने पड़िहारों को जीतकर सांभर नगर में पीछा राज्य किया, वही विजय करने के कारण दूसरे नाम से नाहरराज कहाया ॥ ८२ ॥ माणिक्यराज के मुहुः कर्मा जिसका दूसरा नाम दामोदर हुआ, इस को आदि ले सहोदर दश पुत्र हुए, जिनके नाम मूल में स्पष्ट हैं ॥ ८३ । ८४ । ८५ ॥ इन में बड़ा मुहुः कर्मा सांभर का पति हुआ, उसने माणिक्यराज के सींचे हुए धर्म वृक्षों

माणिक्यराजसिक्तं ररत्त धर्मद्रुमं प्रभुः परितः॥ ८६ ॥
दोर्दमितमद्रदेशे स लालसिंह१३५श्चकार निजराज्यम् ।
तत्कुलजाश्चहुवाणा माद्रेचा १।२।२ इति नृगीःस्फुटा जाताः ।८७।
हरिसिंहो१३५ जित्वाऽरीन् सिन्धुविषयराज्यमाप्तवान् वीरः।
हरिसिंहाद्धुन्धेट१३६स्तस्माद्धौन्धेटिकाः२।२।३समुद्भूताः ॥ ८८ ॥
शार्दूलो१३५यः कथितो घन१३६।१ टङ्कौ१३६।२द्वौ२ततः प्रजज्ञाते ।
नृगिरा पञ्जाबाख्ये विषये राज्यं तयोश्चकार घनः१३६ ॥८९॥
पञ्जाबिन३।२।४ इति संज्ञा जाताः सर्वे घनान्ववायभवाः ।
टङ्कात्कनीयसो ये जाताष्टाङ्का४।२।५इति प्रसिद्धास्ते ॥ ९० ॥
माणिक्यराजजो यः पञ्चम५ उक्तोस्ति पर्णराज१३५इति।
तेन भदावरराज्यं चक्रे तस्माद्भदोरिया५।२।६जाताः॥ ९१ ॥
षष्ठो६मौक्तिकराजः१३५स्वर्णगिरिं प्राप्य राज्यमनुतस्थौ ।
तस्मात्सौवर्णगिरा६।२।७जाता नृगिरा त एव सोनगिराः६।२।७॥९२॥
निर्वाणात्सप्तम७तो जाता अभवंस्तथैव निर्वाणाः७।२।८।
प्रायः प्रथिता तेषां स्थितिर्मरूदक्स्थजङ्गले देशे ॥ ९३ ॥
निर्वाणेषु महात्मा देवट१इति विश्रुतो बभूव नृप : ॥

की चौतर्फ से रक्षा की ॥ ८६ ॥ इस के छोटे भाई लालसिंह ने भुजबल से द बाकर मद्रदेश में राज्य किया, उसके कुल के लोकभाषा में माद्रेचा चहुवाण कहलाये ॥ ८७ ॥ तीसरे भाई वीर हरिसिंह ने शत्रुओं को जीतकर सिंधु देश का राज्य पाया, हरिसिंह के धुन्धेट हुआ जिसके वंश के धुन्धेटे प्रसिद्ध हुए ॥ ८८ ॥ चौथे शार्दूल के घन और टंक दो पुत्र हुए, तिनमें से घन ने लोकभाषा में पंजाब नामक देश का राज्य किया ॥ ८९ ॥ उसके वंश के सब पंजाबी कहाये और छोटे टंक के वंशवाले टंक कहलाये ॥ ९० ॥ माणिक्यराज के पांचवें पुत्र पर्णराज ने भदावर का राज किया, जिसके वंश के भदोरिया कहाये ॥ ९१ ॥ छठे मौक्तिकराज ने स्वर्णगिरि को लेकर वहां राज्य किया, जिससके वंश के सौवर्णगिरा जिनको लोकभाषा में सोनगरा कहते हैं, हुए। ९ सातवें निर्वाण के जो हुए वे निर्वाण कहाये. वे विशेष विख्यात होकर मारवाड़ देश में उत्तर की ओर जंगल देश में रहे ॥ ९३ ॥ निर्वाणों में विख्यात महात्मा राजा देवराट् हुआ, जिसने अपने कुल की जन्मभूमि दे दीसिसान

येन स्वकुलजनुर्भू राजन्वानर्बुदोद्रिपोऽकारि ॥ ९४ ॥
अन्वष्ठायि सुराज्यं नगरी च भुवि विदिता शिरोहीति ॥
तत्कुलजा दैवटिका८।२।९न्गिरा सिद्धास्तु देवडा८।२।९जाताः ।९५।
यश्चाष्टम८उद्दिष्टो मितवीर्य्यः कृष्णराज१३५इति वीरः ॥
स चकार पाण्डयराज्यं तज्जा नृगिरैव पण्डिया९।२।१०जाताः ॥९६॥
नवमो९थलशुनराजो१३५गौर्जरजनपदप्राप्तवान्राज्यम् ॥
गुजरातिन१०।२।११इति नृगिरोट्टङ्का आसंस्तदीयसंततयः ॥ ९७ ॥
दशमः प्रवालराजो१३५बगसरदेशे स लोकवाक्सिद्धे ॥
अन्वभवद्राज्यसुखं बगसरिया११।२।१२स्तस्य बंशजा जाताः ।९८।
एतेषु मुहुःकर्म्मा१३५दशसु१०ज्येष्ठः स सम्भरेशोऽभूत् ॥
तस्मात्तु रामचन्द्रो१।३६।१थखिच्चिराजो१३६।२बभूवतुः पुत्रौ ॥९९॥
सम्भरपत्तनराज्यं समनुष्ठितवान् स रामचन्द्र१३६स्तु ॥
जाताश्च खिच्चिराजात्खिच्ची१।३।१३त्युपटङ्किनोऽस्य वंशीयाः॥१००॥
जाता ज्यायस एतस्य द्वादश१२नृपरामचन्द्रतः पुत्राः ॥
तेष्वग्रजस्तु सङ्ग्रामसिंह१२७।१इति सम्भरेऽकरोद्राज्यम्॥१०१॥
स्वाऽऽख्याङ्कितजननकरा बभूवुरेकादशै११तदनुजनुषः ॥
क्रमशस्तेवालेशो१३७।२बङ्कडदेव१३७।३श्चगोलपाल१३७।४श्च१०२

आबू पर्वत को राजन्वान् (राजावाला) किया अर्थात् वहां पर पहले केवल वन था जिसको राज्य बनाया ॥ ९४ ॥ और सुन्दर राज्य जमाकर पृथ्वी में प्रसिद्ध नगरी सिरोही बसाई, जिसके कुल के दैवटिक जिनको लोकभाषा में देवड़ा कहते हैं प्रसिद्ध हुए ॥ ९५ ॥ अमित पराक्रमी आठवाँ वीर कृष्णराज हुआ उसने पाण्ड्यदेश का राज्य किया जिसके कुल के लोकभाषा में पाण्डि या हुए ॥ ९६ ॥ नवमें लशुनराज ने गुजरातदेश का राज्य पाया जिसके कुल के लोकभाषा में गुजराती कहाये ॥ ९७ ॥ दशवें प्रवालराज ने बगसर देश में राज्य का सुख लिया जिसके वंश के लोकभाषा में बगसरिया कहाये ॥ ९८ ॥ इन दशों में बडा मुहुःकर्मा साँभर का पति हुआ जिसके रामचंद्र और खि-च्चिराज दो पुत्र हुए ॥ ९९ ॥ रामचंद्र तो सांभर का राजा हुआ, और खिच्चिरा ज वंश के खींची कहाये ॥१०० ॥ इसके बड़े भाई रामचन्द्र के बारह पुत्र हुए जिनमें ज्येष्ठ संग्रामसिंह सांभर का राजा हुआ ॥ १०१ ॥ इसके छोटे भाई

जातोऽनु पुष्टपालो१३७५थ मलयराज१३७६श्च षष्ठ६ आख्यातः ।
चाहोडदेव१३७७इत्यथ हरीणदेव१३७८श्चमल्हण१३७९श्च तथा
दशमो१०मोत्कलवारो१३७१०
थ चक्रडाण१३७११श्च शूकट१३७१२श्चेति ॥
एकादशभ्य११एभ्यो जाता एतदभिधानवद्वंश्याः ॥ १०४ ॥
वालेशेन तु नगरं वालेशा१ख्यं व्यधायि राज्यं२च ॥
तद्वंशीयाः सर्वे वालेशा१।४।१४इति बभूवुरवनितले ।१०५।
क्रमशोऽन्ये बङ्गडिया२।४।१५ ।
श्च गोलपाला३।४।१६श्च पुठवाला।४।४।१६श्च ॥
मलयेचा५।४।१८श्चाहोडा६।४।१९ ।
हरीण७।४।२०संज्ञाश्च माल्हणा८।४।२१श्च तथा ॥ १०६ ॥
एभ्योऽनुमुक्लारा९।४।२२
श्चचक्रडाणा११।४।२३श्चसूवटा११।४।२४श्चेति ॥
एकादशै११वमेते चहुवाणा भिन्नसंज्ञया जाताः ॥ १०७ ॥
एतेष्वग्रजनुर्यः कथितः सङ्ग्रामसिंह१३७१इति राजा ॥
तत आस शिवादत्तः१३८स साम्बदत्तो१३८पि संज्ञयेतरया ॥१०८॥
जातश्च शिवादत्ताद्भोगादित्यः१३९प्रतिष्ठितो भूपः ॥
भोगादित्यात्तनयौ२क्रमतः शिवदत्त१४०।१चित्रकौ१४०।२जातौ।१०९
चित्ता२।५।२५इति चित्रकतो जाता भिन्ना बभूवुरनुवंश्याः ॥

ग्यारह ही अपने अपने नाम से वंशचलानेवाले हुए जिनके नाम बालेश को आदि लेकर मूल में क्रम पूर्वक स्पष्ट लिखे हैं इन ग्यारह से उत्पन्न हुओं के वंश इन्हीं के नाम से चले ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ बालेश ने बालेश नामक नगर बसाया जिसके वंश के पृथ्वी में बालेशा कहाये बाकी के बंगडिया, गोलपाला, पुठवाला, मलयेचा, चाहोड़ा, हरीण, माल्हणा, मुकलारा, चक्रडाणा, सूवट, ये ग्यारह ही इसरीति चोहाण वंश की जुदीशाखा करनेवाले हुए ॥१०५॥ १०६ ॥ १०७ ॥ इनमें बड़ा संग्रामसिंह राजा हुआ, जिसके शिवदत्त, जिसका दूसरा नाम साम्बदत्त हुआ ॥ १०८ ॥ शिवदत्त के प्रतिष्ठित भोगादित्य, इसके शिवदत्त और चित्रक, जिसका दूसरा नाम चीता ये दो पुत्र

तज्ज्येष्ठःशिवदत्तः१४०सम्भरराज्यं चकार धर्मेण ॥११०॥
शिवदत्तादथ जातो नरेश्वरो रुद्रदत्त१४१इति विदितः ॥
जाताश्च रुद्रदत्तात्सप्त७सुता ईश्वरो१४२।१ऽग्रजस्तेषाम् ॥ १११ ॥
भैरव१४२।२इति तदनुजनुः
क्षयरव१४२।३इति तदनुजस्तृतीयो३ऽभूत् ॥
वीरस्तथाऽभ्रवाजो१४२।४
व्याघ्रोरा१४२।५ब्रध्नदेव१४१।६शरखेलौ१४२।७ ॥ ११२ ॥
एष्वीश्वर१४२स्तु चक्रे सम्भरराज्यं महामना विधिवत् ॥
षड्भ्यो६ऽपि तदनुजेभ्य :स्वाख्योट्टङ्काः प्रजज्ञिरे वंशाः॥११३॥
पूर्वाद्भैरव१।६।२६।संज्ञाः
क्षयरव२।६।२७संज्ञास्ततस्ततोऽभ्रावाः३।६।२८ ॥
वाघोरा४।६।२९ब्रध्नेचाः ५।६।३०
शरखेलाः६।६।३१ख्यातिमेवमधिजग्मुः ॥ ११४ ॥
तज्ज्येष्ठादीश्वरतः सम्भरभूपाद्बभूवुरष्ट८सुताः ॥
ज्येष्ठस्तूमादत्तो१४३।१ऽनुजा मयूरध्वजो१४३।२ बहुलक१४३।३श्च ॥
क्रमशोथ गजलदेव१४३।४–
स्तिलवाट११४३।५श्चीबक१४३।६स्तथा वीरः ॥
सर्प्यट१४३।७इति सप्तमको
ऽखिलाऽनुजश्चित्रराज१४३।८इत्यष्टौ८ ॥ ११६ ॥
ज्यायान् स उमादत्तः सम्भरराज्यं चकार धर्मपटुः ॥

हुए. चित्रक के वंश के जुदी शाख चलानेवाले हुए, और ज्येष्ठ शिवदत्त ने धर्म से संभर का राज्य किया ॥ १०९ ॥ ११० ॥ शिवदत्त के विख्यात नरेश्वर रुद्रदत्त हुआ, जिसके सात पुत्र हुए, जिनमें महाशय ईश्वर ने विधिपूर्वक सांभर का राज्य किया और छोटे छहों भाइयों का अपने अपने नामों से वंश चला ॥१११ ॥ ११२ ॥ ११३॥ क्रम से भैरव, क्षयरव, अभ्रवा, व्याघ्रोरा, ब्रध्नेचा सरखेला कहाये ॥११४॥ बड़े ईश्वर के आठ पुत्र हुए जिनमें बड़ा उमादत्त, छोटे मयूरध्वज, बहुलक, गजलदेव, तिलवाट, चीबक, वीरसर्पट और सब से छोटा चित्रराज हुआ ॥ ११५ ॥११६॥ इनमें धर्मकुशल उमादत्त ने सांभर का राज्य

तेषु मयूरध्वजतो मोरेचा१।७।३२ अस्य वंशजा विदिताः ॥ ११७ ॥
बहुषु मयूरध्वज१४२।२सूनुषु जातौ द्वौ २तु भिन्नकुलजनकौ ॥
पर्वत१४३।१इत्यभिधेय-
स्तुष्टनपाल१४३।२श्च दोर्विदलितद्विट् ॥ ११८ ॥
मोरेचा१।७।३२न्तर्भूताः पर्वततः पब्बयाः१।३३समुद्भूताः ॥
संचोरदेशनृपतेस्तुष्टनपालात्तथैव संचोराः२।३४ ॥ ११९ ॥
बहुलकतश्च बहोला२।७।३५ईश्वरतनयात्तृतीय३तो जाताः ॥
गयला३।७।३६।श्च गजलदेवा
त्तिलवाडा४।७।३७एवमेव तिलवाटात् ॥ १२० ॥
चीबकतोऽप्यथ चीबाः ५।७।३८
सर्प्पटतःसर्प्पटा५।७।३९स्तथा जाताः ॥
चित्रावा७।७।४०इति वाच्यास्तु चित्रराजाऽन्ववायसंततयः ॥१२१॥
बहुचित्रराजसूनुषु चण्डालीक१४३।१श्च चाहुड१४३।२श्च तथा ॥
वटराजो१४३।३मौरिक१४३।४रै-
वत१४३।५च दन१४३।६वङ्कटा१४३।७स्तु भिन्नकुलाः ॥ १२२ ॥
एषां कुलानि सप्तानां७शृणुतां चित्रराजसूनूनाम् ॥
चण्डालीकाच्चण्डालीका१।४१
अथ चाहुडाच्च चाहोडाः२।४२ ॥ १२३ ॥
वटराजाच्च बडेरा३।४३मौरिकतो मौरिणाः४।४४समुद्भूताः ॥

किया और उन छहों में मयूरध्वज के वंश के मोरेचा कहाये ॥ ११७ ॥ मयूरध्वज के बहुत से बेटों में से दो तौ जुदा वंश चलानेवाले हुए, जिनमें एक तो पर्वत और दूसरा भुजबल से शत्रुओं का नाश करनेवाला तुष्टनपाल ॥ ११८ ॥ मोरेचों के भीतर पर्वत के वंश के पब्बया हुए, और संचोर देश के राजा तुष्टनपाल के संचोरा कहाये ॥ ११९ ॥ ईश्वर के तीसरे बेटे बहुलक के बहोला कहाये, गजलदेव के गजयला ऐसे ही तिलवाटके तिलवाड़ा, चीबक के चीबा, सर्पट के सर्पटा और चित्रराज के चित्रावा कहाये ॥ १२० ॥ १२१ ॥ चित्रराज के बहुत से पुत्रों में से चंडालीक, चाहुड, वटराज, मौरिक, रैवत चन्दन, वंकट ये सात तो जुदे वंश चलानेवाले हुए जिनका कुल सुनो.

तेष्वभवच्चित्राङ्गो मोरीचित्तोडदुर्ग्गनिर्म्माता ॥ १२४ ॥
अथ मौरिकाऽनुजनुषो रैवततो रेवडा ५।४५इति प्रथिताः ॥
चान्दनसंज्ञा६।४६जाताश्चन्दनतो बङ्कटा७।४७श्च बङ्कटतः ॥१२५॥
चित्रावान्तर्भूताश्चण्डालीकादिमा भिदाः सप्त७ ॥
एषां दोर्जितभूमिर्नाभजदन्यं कदापि सत्स्वेषु ॥ १२६ ॥
मुख्यादीश्वरतनयादथ चत्वारः४सुता उमादत्तात् ॥
चतुरो१४४।१वत्सलराजः१४४।२
प्रवाचको१४४।३झम्मर१४४।४स्त्विमे जाताः ॥ १२७ ॥
चतुरः१४४सम्भरपोऽभूद्वत्सलतो वच्छलाः१।८।४८समुद्भूताः॥
अथ पावचाः२।८।४९प्रवाचक-
तो झम्मरतस्तथैव झम्मरियाः३।८।५० ॥ १२८ ॥
चतुरात्सम्भरराजादथ कुलपतयस्त्रयः३सुता जाताः ॥
ज्येष्ठः सोमेश्वर१४५।१इति सम्भरभूपो बभूव पितरमनु ॥ १२९ ॥
तुलसीरच्चण१४५।५इत्यथ
शल१४५।३स्तदनुजावथोभयान्वयजाः ॥
तुलसीरच्छण१।९।५१संज्ञा-
स्तुलसीभ्रातुः शलाच्छलाउत्ताः२।९।५२ ॥ १३० ॥
अथ सम्भराधिराजात्सोमेश्वरतः सुतावभूतां द्वौ२ ॥

चंडालीक के चंडालिका, चाहुड़ के चाहोड़ा, वटराज के वडेरा, मौरिक के मौरिया, जिनमें चित्रांग मोरी ने चीतोड़गढ़ बनाया, मौरिक के छोटे भाई रैवत के रेवड़ा, चंदन के चांदना, बंकट के बंकटा कहाये ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ चित्राओं के भीतर चंडालिका आदि सात भेद हुए जिनकी भुजाओं से जीती हुई पृथ्वी उनके रहते कभी किसी अन्य के सेवन में न गई ॥ १२६ ॥ प्रधान ईश्वर के बेटे उमादत्त के चार पुत्र हुए चतुर, वत्सलराज, प्रवाचक और झम्मर ॥ १२७ ॥ इन में चतुर सांभर का राजा हुआ, वत्सल के वत्सला, प्रवाचक के पावचा, झम्मर के झम्मरिया कहाये ॥ १२८ ॥ संभर के राजा चतुर के कुलपति तीन पुत्र हुए, जिनमें से बड़ा सोमेश्वर पिता के पीछे सांभर का राजा हुआ, दूसरा तुलसीरच्चण, तीसरा सल, इन दोनों भाइयों के वंश के तुलसीरच्छण और सलाउत कहाये ॥ १२९ ॥ १३० ॥ संभर के राजा

भरतो१४६।२ज्येष्ठकुमारोऽनुजस्तथा दोर्द्विषद्दमन उरथः१४६।२।१३१।
उरथकुलं तु निमित्तं काव्येऽस्मिन् वर्ण्यमेव तत्साङ्गम् ॥
मुख्यस्तु भरतवंशश्चहुवाणेष्वत उदीर्य्यते स प्राक् ॥१३२॥
युद्धेष्टो१४७भूद्भरताज्जातो युद्धेष्टतो महीसिंहः १४८ ॥
सिंह१४९श्च महीसिंहात्सिंहादपि चन्द्रगुप्त१५०इति जातः ॥१३३॥
जातौ च चन्द्रगुप्ताद्वौ२ सूनू वीरकुलजनयितारौ ॥
ज्येष्ठःप्रतापसिंहो१५१।१ऽनुजस्तथाऽऽरत्न१५१।२इत्यभिख्यावान् ।१३४।
अथ चारत्नाज्जातं कुलं समुद्दिश्यते मया पूर्वम् ।
आरत्नाच्चतुरङ्ग१५२श्चोरङ्गा।१०।५३अस्य संततय उक्ताः ॥ १३५ ॥
चतुरङ्गाज्जयधर१५३इत्युद्भूतो जयधरात्सुबाहु१५४श्च ॥
जज्ञे चापि सुबाहोर्महाबलः समरसिंह१५५इति वीरः ॥ १३६ ॥
जातश्च समरसिंहात्समाख्ययाऽऽखण्डलो१५६महासत्त्वः ॥
आखण्डलतो जातो रणरसिको वीरदेव१५७आख्यातः ॥ १३७ ॥
श्रीवीरदेवतोथ विशोक१५८श्च विशोकतो विपुलसेनः१५९॥
अथच नृसिंह१६०इतिविपुलसेनाच्च नृसिंहतस्तुबलराजः१६१॥१३८॥
बलराजाद्वरसिंहो१६२वरसिंहाद्विल्हणः१६३समुद्भूतः॥
विल्हणतो जयदेवो१६४जयदेवाज्जह्ददेव१६५इति वीरः ॥ १३९ ॥
जातश्च जह्ददेवाद्धनुर्द्धरो विजयपाल१६६इति नाम्ना ।
उदभूच्च विजयपालात्कर्णः१६७कर्णाच्च लक्ष्मणो१६८जातः ॥१४०॥

सोमेश्वर के बड़ा भरत, दूसरा भुजाओं से शत्रुओं को नाश करनेवाला उरथ ये दो पुत्र हुए ॥ १३१ ॥ इस काव्य में उरथ के कुल को अंगों सहित वर्णन करना ही हेतु है परंतु चहुवाणों में भरत का कुल प्रधान है इससे वह पहले कहा जाता है ॥ १३२ ॥ भरत के युद्धेष्ट, उसके महासिंह, उसके सिंह उसके चन्द्रगुप्त हुआ ॥ १३३ ॥ चन्द्रगुप्त के वंशचलानेवाला बड़ा वीर प्रतापसिंह और छोटा आरत्न दो पुत्र हुए ॥ १३४ ॥ अब मैं पहिले आरत्न का वंश कहता हूं. आरत्न के चतुरंग हुआ जिसके वंश के चारंगे कहाये ॥ १३५ ॥ चतुरंग के जयधर, उस के सुबाहु, सुबाहु के पीछे क्रमसे महाबलवान् वीरसमर सिंह, महापराक्रमी आखण्डल, रणरसिक वीरदेव, विशोक, विपुलसेन, नृसिंह, बलराज

लक्ष्मणातः सहदेवो१६९दुःशासन१७०इति बभूव सहदेवात् ।
दुःशासनान्महावीर१७१इति महावीरतोऽभवद्रामः१७२ ॥ १४१ ॥
रामाच्च विजयराजो१७३ऽथ विजयराजाद्बभूव हरसिंहः१७४ ।
हरसिंहाद्वरसिंहो१७५ऽजायत वरसिंहतश्च गोविन्दः१७६ ॥ १४२ ॥
गोविन्दादथ जातास्त्रयः३सुतास्तेषु पूर्वजो भीमः१७७।१ ।
अनुजौमौक्तिकराज१७७।२स्तथैवमाणिक्यराज१७७।३इतिवीरौ१४३
मौक्तिकराजाज्जाता मुत्तिय१।११।५४संज्ञास्तदन्वयचुहाणाः ॥
माणिक्यराजवंश्यास्ते माणिक्को२।११।५५पटङ्किनो जाताः ॥ १४४ ॥
भीमादनयोर्ज्येष्ठाद्धुरंधरो१७८भूद्धुरंधराच्चोभौ२ ।
ज्येष्ठः सहस्रमल्लो१७९।१
ऽथ देवराजो१७९।२ऽनुजो महासत्त्वः ॥ १४५ ॥
अनुजात्तु देवराजाच्छिवभक्तोभत्स आततायी१८०ति
यः कान्यकुब्जसमरे जयचन्द्रचमूँ विदार्य्य तनुमौज्झत् ॥ १४६ ॥
ज्येष्ठात्सहस्रमल्लात्संयमराजो १८०बभूव रणरमणः ।
यो हि महुब्बायुद्धे संरक्ष्य नृपाक्षिणी२ जहौ कायम् ॥ १४७ ॥
जातः संयमराजान्नाम्ना वीर्येण लङ्गरीराजः१८१ ।
योऽर्द्धाङ्गेन हि जित्वा जयचन्द्रभटाञ्जगाम शिवलोकम् ॥१४८॥

वरसिंह, विल्हण, जयदेव, वीर जद्देव, धनुर्धर विजयपाल, करण, लक्ष्मण, सहदेव, दुःशासन, महावीर, राम, विजयराज, हरसिंह, बरसिंह, गोविन्द ये राजा हुए ॥ १३६ ॥ १३७ । १३८ । १३९ । १४० । १४१ ॥ १४२ ॥ गोविन्दराज के तीन पुत्र हुए, जिनमें बड़ा भीम, दूसरा मौक्तिकराज, तीसरा माणिक्यराज, मौक्तिकराज के वंश के मोतियाचुहाण और माणिक्यराज के वंश के माणिक कहाये ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ इन दोनों से बड़े भीम के धुरंधर और धुरंधर के दो पुत्र हुए, जिनमें ज्येष्ठ सहस्रमल्ल और छोटा महापराक्रमी देवराज हुआ ॥ १४५ ॥ छोटे देवराज के शिवभक्त आततायी नाम पुत्र हुआ, जिसने कान्यकुब्ज की लड़ाई में जयचंद्र की सेना को काटकर शरीर छोड़ा ॥ १४६ ॥ बड़े सहस्रमल्ल के युद्ध में क्रीड़ा करनेवाला संयमराज हुआ जिसने महुब्बा ग्राम की लड़ाई में राजा के नेत्रों की रक्षा कर शरीर छोड़ा ॥१४७॥ संयमराज के पराक्रमी लंगरीराज हुआ, जो आधे शरीर से ही जय-

इत्यारत्नकुलीनाः कथिता वीरा महीतले ख्याताः ॥
एतेषामनुवंशो न ज्ञायत उत समाप्तिमगमत्किम् ॥ १४९॥
अथ चारत्नाज्ज्यायान्प्रतापसिंहो१५१।१बभूव सम्भरपः ॥
जातः प्रतापसिंहान्नरेश्वरः सिंहदेव१५२इति नाम्ना ॥ १५०॥
उदभूच्च सिंहदेवात्सिंहवरः१५३सिंहवरत उत्पेदे ।
मोहद्रूपो१५४मोहद्रूपान्नृपाच्च रत्नसिंह १५५इति ॥ १५१ ॥
जज्ञेथ रत्नसिंहान्महीपतिः सेनराज१५६आख्यातः ॥
जातश्च सेनराजात्संप्रतिराजो१५७महच्छूवा भूपः ॥ १५२ ॥
सम्प्रतिराजाज्जातः समाख्यया नागहस्त१५८इति विदितः॥
उदभूच्च नागहस्तात्स्थूलानन्दो१५९ऽथ सम्भराधिपतिः॥ १५३ ॥
स्थूलानन्दाज्जातो महामना लोहधार१६०इति भूपः ।
जज्ञे च लोहधाराद्धराधवो धर्म्मसार१६१आह्वाभृत् ॥ १५४ ॥
जातश्च धर्म्मसारान्नृपोऽभिधानेन वैरिसिंह१६२इति ॥
तस्माच्च विबुधसिंहः१६३सुतोऽभवद्वैरिसिंहतो भूपात् ॥ १५५ ॥
नाम्नाऽथ योगशूरो१६४महीपतेर्विबुधसिंहतो जातः ॥
जज्ञेऽथ योगशूराच्चहुवाणश्चन्द्रराज१६५इति राजा ॥ १५६ ॥
सम्भरनगरे सचिवान्संस्थाप्य स नगरेऽवसदजमेरे ।
स्वैश्वर्य्यराजधानी रचिता तेनोषितं च तत्रैव ॥ १५७ ॥
तस्मात्तु चन्द्रराजात्संजातः कृष्णराज१६६इति भूपः ।

चन्द्र के भटों को जीत कर शिवलोक गया ॥ १४८ ॥ ये आरत्न के वंश के पृथ्वी में प्रसिद्ध वीर कहेगये, इनके पीछे कां वंश नहीं जाना जाता कि क्या समाप्त ही हो गया, अर्थात् रहा वा नहीं रहा ॥ १४९ ॥ आरत्न का बडा भाई प्रतापसिंह सांभर का राजा हुआ जिसके नरेश्वर सिंहदेव हुआ ॥ १५० ॥ इसके पीछे क्रम से सिंहवर, मोहद्रूप, रत्नसिंह, सेनराज, संप्रतिराज, नागहस्त, स्थूलानन्द, महाशय लोहधार, पृथ्वीपति धर्मसार, वैरिसिंह, विबुधसिंह, योगसूर चहुवाण चन्द्रराज ये राजा हुए॥१५१॥१५२।१५३।१५४।१५५।१५६॥ चन्द्रराज सांभर का राज्य कामदारों को सौंप अजमेर में नगर बसाय अपने ऐश्वर्य से राजधानी रच वहीं रहा ॥ १५७ ॥ उस चन्द्रराज के पीछे क्रम से कृष्णराज

जातश्च कृष्णराजाद्धरिहरराजः१६७समाख्यया राजा ॥ १५८ ॥
हरिहरराजाज्जातो विल्हणराजो१६८ज्वलद्यशा नृपतिः।
जातौ विल्हणराजात्पृथ्वीराज१६९।१स्तथानुराजो१६९।२द्वौ२।१५९।
अनुराजस्य तु वंशो न ज्ञातः का गतिः कथं वाऽभूत् ॥
ज्येष्ठः पृथ्वीराजो१६९ऽपरनाम्ना डिड्डुरो१६९पि सोऽहिभजः॥१६०॥
तस्माड्डिड्डुरनृपतेरभवन्सर्वेऽन्वया हि डैड्डुरिकाः ।१।२।५६।
चहुवाणवंशमुख्या विदिता भूमण्डले विजेतारः ॥१६१॥
नृपतेः पृथ्वीराजात्समजायत डिड्डुरेतराऽभिख्यात् ॥
अजमेरपुराधिपतिर्भूपो धर्म्माधिराज१७०इति नाम्ना ॥१६२॥
धर्म्माधिराजतोऽभूद्वीसलदेवो१७१नृपो महासत्त्वः ॥
वीसलदेवात्सारङ्गदेव१७२इत्यन्तदेवसारङ्गात् ॥ १६३ ॥
विग्रहराजो१७३प्यन्नो १७३प्यन्नलदेवो१७३पि सोभिधात्रय३भृत् ॥
अन्नलदेवाज्जातो भूपो जयसिंहदेव१७४इति विदितः ॥ १६४ ॥
जयसिंहदेवतोऽभूद्भूपतिरानन्दमेय१७५आह्वावान् ।
सोमेश्वरो१७६।१ऽथ कृष्णो१७६।२द्वौ२तावानन्दमेयतो जातौ॥१६५॥
सोमेश्वरान्नरपतेः पृथ्वीराजो१७७ऽभवद्रणव्यसनी ।
यो मातामहराज्यं प्राप्य जयी दिल्ल्यधीश्वरो भूतः ॥१६६॥
जयचन्द्रराजपुत्रीं प्रसह्य नीत्वाऽखिलानयं जितवान् ।

हरिहरराज, यशस्वी विल्हणराज ये राजा हुए. विल्हणराज के पृथ्वीराज और अनुराज ये दो पुत्र हुए, परन्तु अनुराज के वंश का पता नहीं है कि उस की क्या गति हुई, बड़ा पृथ्वीराज जिसका दूसरा नाम डिड्डुर भी था जिसके वंश के डैड्डुरिक कहाये वे पृथ्वी में चौहाण वंश में प्रधान विजयी प्रसिद्ध हुए ॥ १५८ । १५९ । १६० । १६१ ॥ राजा पृथ्वीराज कि जिसका दूसरा नाम डिड्डुर था उसके अजमेर नगर का पति राजा धर्माधिराज हुआ जिस के पीछे क्रम से पराक्रमी वीसलदेव, सारंगदेव, विग्रहराज जिसको आना और अनलदेव भी कहते हैं वह, जयसिंहदेव, आनन्दमेय ये राजा हुए, आनन्दमेय के सोमेश्वर और कृष्ण दो पुत्र हुए जिन में राजा सोमेश्वर के रण का व्यसनवाला पृथ्वीराज हुआ जो विजय करनेवाले मातामह (नाना) का राज्य पाकर दिल्ली का स्वामी बना ॥ १६२ । १६३ । १६४ । १६५ । १६६॥

षट्कृत्वो यवनेन्द्रं बध्वा बध्वा मुमोच गोरीशम् ॥ १६७ ॥
तस्मात्पृथ्वीराजाज्जातौ वीरौ समात्तपितृचर्य्यौ ।
ज्यायांस्तु रत्नसिंहो१७८।१नुजश्च सामन्तसिंह१७८।२इत्युभयम्।
दिल्ल्यां समावृतायां चम्वा यवनाऽधिपेन तुमुलरणे ।
अनपत्यः स्वरगच्छत्स रत्नसिंहो१७७विहाय मर्त्यवपुः ॥ १६९॥
सामन्तसिंह१७८तो जय
मल्लः१७९।१ प्रल्हाद१७९।२इत्युभयरनामा ।
जयमल्लाद्गोविन्दः१८०स एव सोमेश्वरो१८०ऽप्यपरनाम्ना ॥१७०॥
गोविन्दाद्वौरज्यायाञ्छूरो१८१।१वीरः१८१।१ स एव वाग्भट्टः१८१।१
नारायण१८१।१इति चतुश्शाख्याभृत्तस्याऽनुजोऽथ जयपालः१८१।२
शूरादपि सूनू द्वौरज्यायाञ्जैत्रो१८२।१ऽनुजोस्य रणधीरः १८२।२।
कुण्डलनगरे म्लेच्छैश्छिन्ने जै ो १८२।१ यमापदतिदुस्थः ॥१७२॥
प्राप्य रणस्तम्भपुरं हत्वा भिल्लांश्चकार तद्राज्यम् ।
जैत्राज्जातो हम्मीरदेव१८३।१इत्याख्यया नृपो वीरः ॥१७३॥
योऽलावुद्दीनरणे वर्ष्म जहौ स्वशरणागतनिमित्तम् ।
हम्मीरात्सूनुरभूत्स पूर्णपाल१८४।१श्च रत्न१८४।१उभयाख्यः१७४

इसने जयचन्द्र की पुत्री को बल से पकड़ कर सब को जीत लिया, और छः वार यवनों के पति गोरि शाह को पकड़ पकड़ के छोड़ा ॥ १६७ ॥ पृथ्वीराज के भली भांति पिता का आचरण करनेवाले दो पुत्र हुए, जिनमें बडा रत्न सिंह और छोटा सामन्तसिंह ॥ १६८ ॥ बादशाह की सेना से घिरीहुई दिल्ली में घोर संग्राम के बीच विना संतान ही मनुष्य शरीर को छोड रत्नसिंह स्वर्ग गया ॥ १६९ ॥ और सामन्तसिंह के जयमल्ल हुआ जिसका दूसरा नाम प्रल्हाद, इसके पीछे गोविन्द जिसका दूसरा नाम सोमेश्वर॥१७०॥गोविन्द के दो पुत्र जिन में बडा शूर, जिसको वीर, वाग्भट्ट और नारायण भी कहते हैं छोटा अजैपालहुआ१७१ शूरके भी दो पुत्र हुए, बड़ा जैत्र और छोटा रणधीर,जिनमें जैत्र ने यवनोंसेघिरे हुए कुंडल नगर में कालरूप आपत्ति में अति दुःखित होकर रणस्त म्भपुर(रणतभँवर) जाय, भीलों को मार वहां का राज्य किया, जिसके हम्मी-रदेव राजा हुआ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ जिसने अपनी शरण में आयेहुए अलाउ-द्दीन के सेवकों को नहीं देने के कारण अलाउद्दीन के संग्राम में अपना शरीर

युध्वा च यन्निमित्तं वपुर्जहौ समिति लक्ष्मणो राणा ।
शूर१८१।१नुजो य उक्तो जयपाल १८१।२स्तस्य द्वौ२सुतौ जातौ१७५
गौरो१८२।१वाद्दल१८२।२इति तौ चक्रतुराजिं हि पद्मिनीहेतोः।
राणाभीमसहायं कृतवन्तौ विप्रलभ्य यवनेशम् ॥ १७६ ॥
हम्मीर१८३।१रत्न१८४।१जननेऽभवदेको निम्मराज इति भूपः।
तेन व्यधायि राज्ञा निवेशनं फल्गुनिम्मरानाख्यम् ॥ १७७ ॥
तत्रैव तस्य वंश्या अद्यावधि भूपभरतपरपुरुषाः ।
राणोपटङ्किनस्ते चहुवाणा डैड्डुरा १।१२।५६हि निवसन्ति॥१७८॥
सोमेश्वरानुजस्तु स कृष्णो१७५जयचन्द्ररणभटान् हत्वा ।
पुरकान्यकुब्जसमिति त्यक्त्वा प्राणानुवास दिवि वीरः ॥ १७९ ॥
कृष्णादीश्वरदासो१७६जातो धीरोऽहिचण्डदोर्दण्डः ॥
यो रत्नसिंहनिकटं हत्वा म्लेच्छाञ्छतान्यसूनौज्झत् ॥१८०॥
ईश्वरदासकुलीना नृपरामाऽद्यापि सन्ति चहुवाणाः ॥
डैड्डुरिका१।१२।५६मदनपुरीनाम्नि द्रङ्गे पुराऽऽगराप्रान्ते॥१८१॥

छोड़ा हम्मीरदेव के पूर्णपाल और रत्न इन दो नामोंवाला पुत्र हुआ ॥ १७४ ॥ जिसके निमित्त राणा लक्ष्मणसिंह ने शरीर छोड़ा, अर्थात् अलाउद्दीन के युद्ध से भाग कर पूर्णपाल ने चीतोड़ में राणा लक्ष्मणसिंह की शरण ली जिसको पीछा नहीं देने के कारण अलाउद्दीन से राणा का युद्ध होकर लक्ष्मणसिंह मारा गया । और सूर के छोटे भाई अजैपाल के भी गोरा और बादल नाम दो पुत्र हुए, जिन्होंने पद्मिनी रानी के निमित्त संग्राम किया और बादशाह को ठगकर राणा भीम की सहायता की ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ हम्मीर के बेटे रत्न सिंह (पूर्णपाल) के वंश में एक निम्मराज नामक राजा हुआ था जिसने छोटासा नीमराणाँ नामक ठिकाना बनाया ॥ १७७ ॥ जिसके वंश के, राजा भरत हैं पर पुरुषा जिनका ऐसे राणा पदवी को धारण करनेवाले डैड्डुर कुल के चहुवाण अब तक वहीं बसते हैं ॥ १७८ ॥ सोमेश्वर का छोटा भाई कृष्ण, जयचंद्र के वीरों को मारकर कान्यकुब्ज नगर के युद्ध में प्राणों को छोड़ स्वर्गवासी हुआ ॥ १७९ ॥ कृष्ण के सर्प के समान प्रचंड भुजवाला धीर ईश्वरदास हुआ जिसने रत्नसिंह के पास सैकड़ों यवनों को मार प्राणछोड़ा ॥ १८० ॥ हे राजा रामसिंह ! ईश्वरदास के वंश के डैड्डुरिक चुहाण मैनपुरी

इतिभूपभरत१४६।१वंशः कथितो राजेन्द्र रामसिंह मया ॥
अथ वच्म्युरथ१४६।२नृपस्याऽन्ववायमीड्यं भवच्छशिसमुद्रम्।१८२।
उरथात्पञ्च५तनूजा जाता ज्यायांस्तु चक्रपाणि१४७।१रिति ॥
अनुजाश्चाऽबरदेवो१४७।२
ऽथगोष्ठपाल१४७।३श्च जाम१४७।४बकुटौ१४७।५च॥१८३॥
तेषु ज्येष्ठो भ्राता स चक्रपाणिः१४७।१समस्थलीमजयत् ॥
तत्रैव मदनपुर्य्यां राज्यं चक्रे धनुःसहायोऽयम् ॥ १८४ ॥
जाताश्चाबरदेवाच्चहुवाणास्तेऽबरा१।१३।५७भवन्तिस्म ॥
अथ गोष्ठपालवंश्यास्तु गोठवाला२।१३।५८इति प्रसिद्धिमिताः।१८५।
जामा३।१३।५९श्च जामदेवाद्बकुटाद्बउडा४।१३।६०इतीतरे विदिताः।
ज्येष्ठात्तु चक्रपाणे १४७र्जातस्तनयोथ देवकीनन्दः१४८ ॥१८६॥
अथ च यशोदानन्दो१४९जज्ञे नृपतिर्हि देवकीनन्दात् ॥
तदनु यशोदानन्दादुत्पेदे नन्दनन्द१५०इति भूपः ॥ १७७ ॥
उदभूच्च नन्दनन्दात्केशवराजो१५१द्विषजयी राजा ॥
केशवराजान्मोहन१५२ इति मोहनतः समुद्रराजो१५३ऽभूत् ।१८८।
जातः समुद्रराजाद्गोपालो१५४भूपतिः स शिवभक्तः ॥

नामक नगर में आगरा प्रांत में अब भी हैं ॥ १८१ ॥ हे राजेन्द्र रामसिंह यह मैंने राजा भरत का वंश कहा, अब आप हैं चन्द्रमा जिसमें ऐसा समुद्र रूपी स्तुतियोग्य उरथ का वंश कहता हूं ॥१८२॥ राजा उरथ के पांच पुत्र हुए जिनमें बड़ा चक्रपाणि और छोटे अबरदेव, गोष्ठपाल, जाम, बकुट ॥ १८३ ॥ इन में बड़े भाई चक्रपाणि ने धनुष की सहायता से समस्थली प्रांत को जीतकर वहीं मैनपुरी में राज्य किया ॥ १८४ ॥ अबरदेव के वंश के चहुवाण अबरा कहाये, और गोष्ठपाल के वंश के गोठवाल ॥ १८५ ॥ और जामदेव के जाम और बकुट के बउड़ा कहाये. उरथ के बड़े बेटे चक्रपाणि के देवकीनन्द पुत्र हुआ ॥ १८६ ॥ उसके पीछे क्रम से यशोदानन्द, नन्दनन्द, शत्रुओं को जीतनेवाला केशवराज, मोहन, समुद्रराज ॥ १८८ ॥ शिवभक्त गोपाल ये राजा हुए ॥ गंगा यमुना दोनों के स्पर्श से पवित्र (अन्तर्वेद) देश में इस गोपाल के शासन करते समय दिग्विजय करनेवाले चीन देश के पति

शासत्यस्मिन्देशे गङ्गायमुनोभयरस्पृशि पवित्रे ॥ १८९ ॥
ऐशानी८दिक्सरणेः प्राप्तो म्लेच्छोत्र चीनदेशपतिः ॥
जित्वाऽऽप्राग्ज्योतिषतोऽर्वाग्देशान् सोस्य देशमप्यजयत् ।१९०।
तद्विजितान्तर्वेदीं त्यक्त्वा धरणीधवः स गोपालः ॥१५४॥
अधिगम्यदाक्षिणात्यं जित्वा दोर्भ्यामुवास तत्रैव ॥ १९१ ॥
तापीसरिदुपकण्ठे निर्म्मायाऽऽशेरनामवरदुर्ग्गम् ॥
चक्रे स तदधिरूढो गोपालो१५४राज्यमर्जितं स्वब ात् ॥ १९२ ॥
गोपालादुत्पेदे सुतोऽभिधानेन भौमचन्द्र१५५इति ॥
तस्याऽपराप्यभिख्या विदिताऽभूच्चन्द्रसेन१५५इति जगति ॥१९३॥
जातोऽथ भौमचन्द्रात्समाख्यया भानुराज१५६ ऊर्जस्वी ॥
एत्य गभीरारम्भस्तमस्थिशेषं चकार शिशुमसुरः ॥ १९४ ॥
जग्ध्वा च तद्वयस्यान्बालान्सोहार्य्यकन्दरे पिदधे ।
विपिने कथमपि जीवन्निपपात स भानुराजकङ्कालः॥१९५॥
तेनाऽर्भकेन मनसाऽऽशापूराचण्डिका स्मृता तत्र ।
स्मृतमात्राऽर्त्ताऽभयदा हरिमारूढाऽऽविरास सा स्वप्ने ॥१९६॥
स्वकमण्डलूदकेनाऽभिषिच्य तमुवाच वत्स मा भैषीः ।

यवन ने यहां आकर ईशान दिशा की चढ़ाई में प्राग्ज्योतिष देश ले ले इधर के देशों को जीतकर उसने इस (गोपाल) के देश को भी जीत लिया ॥१८९॥ १९० ॥ उस यवन से जीते हुए अन्तर्वेद देश को छोडकर वह भूपति गोपाल दक्षिण देश में जाकर भुजा के बल से उसको जीतकर वहीं रहा ॥ १९१ ॥ तापी नदी के पास आशेर नामक उत्तम गढ बनाय उस पर चढ़, उस गोप - ल ने अपने बल से पैदा किया हुआ राज्य किया ॥ १९२ ॥ गोपाल के भौमच न्द्र नामक पुत्र हुआ, जिसका दूसरा नाम पृथ्वी में चन्द्रसेन प्रसिद्ध हुआ ॥१९३॥ भौमचन्द्र के पराक्रमी भानुराज हुआ, जिसको बाल्यावस्था में ही गभीरारंभ नामक दैत्य ने आकर ऐसा मारा कि केवल हड्डियां बाकी रहीं ॥ १९४॥ और उसकी ऊमरवाले बालकों को भी चाब कर पर्वत की गुफा में बंद कर दिया. उस भानुराज का कलेवर जीताहुआ किसीप्रकार वन में गिरगया ॥ १९५ ॥ वहां पर उस बालक के आशापूरा नाम की देवी स्वप्न में प्रकट हुई ॥ १९६ ॥ अपने कमंडलु के जल से उस बालक को सींच करबोली, हे पुत्र

मद्ध्यानपरित्रातः कुरु राज्यं दाक्षिणात्यवैषयिकम् ॥१९७॥
पूर्णा हि जीवनाशा मया तवैतेन हेतुना पुत्र ।
आशापूराभिख्या ज्ञेया सफला ममेति कुलदेव्याः ॥ १९८ ॥
इषसितषष्ठीदिवसे त्वं प्रत्युज्जीवितो महावीर ।
अत एवास्मिन्नहनि त्वत्संततिभिर्विशेषतोऽर्च्याहम् ॥ १९९ ॥
जीवित इह सिक्त्वाऽस्थीन्यतस्त्वदभिधानमस्थिपाल१५६इति ।
गच्छाशेरं वत्साऽभिनन्दय च दर्शनेन बन्धुजनान् ॥ २०० ॥
इति तमुपदिश्य शक्तिस्तिरोहितेवाऽभवन्महामाया ।
सोपि प्रबुध्य बालो धातुभिरुपचित इवाञ्जसोत्तस्थौ ॥ २०१ ॥
तत आगमदाशेरं भूतं वृत्तान्तमुक्तवान् बन्धून् ।
श्रुत्वैवैनं सर्वे मुदमेयसमुद्रमत्स्यतामापुः ॥ २०२ ॥
आशापूराप्रतिमां निरमीमपदथ हिरण्मयीं महतीम् ।
राजापि भौमचन्द्रः१५५सकुटुम्बोऽपूपुजत्स्वकुलदेवीम् ॥२०३ ॥
अर्थेऽस्थिन हड्ड इत्यपि पर्य्यायो लोकवाच्यपि प्राहुः ॥
अत एव सोऽस्थिपालो हड्डो१५६ऽप्यनुकीर्त्तितोऽभवल्लोकैः॥२०४॥

तू मत डर, मेरे ध्यान से रक्षित होकर दक्षिण देश का राज्य कर ॥ १९७ ॥ मैंने तेरी जीवन आशा पूर्ण की, इस कारण पुत्र ! मुझ कुलदेवी का आशापूरा यह नाम सफल जान ॥ १९८ ॥ हे महावीर ! तू आश्विन सुदी छठ के दिन पीछा जीवित हुआ है इस कारण तेरे वंशवाले मुझको इस दिन विशेषकर पूजें॥१९९॥तू हाड्डियोंके सींचनेसे इस संसारमें जीवित हुआ है इसकारण तेरा नाम अस्थिपाल है. हे पुत्र! तू आशेर गढ़ जा और तेरे दर्शन से कुटुम्बवालों को आनन्द दे ॥२००॥ इसप्रकार उसको उपदेश कर महामाया शक्ति अंतर्धान होगई, वह बालक भी जागृत होकर रक्तमांसादि धातुओं से परिपूर्ण हो जैसे अचानक उठखड़ा हुआ ॥ २०१ ॥ तब आशेर गढ आकर सब पिछली बात कुटुम्बियों से कही, इस बात को सुनकर सब लोग हर्ष रूपी समुद्र के मच्छ हुए॥२०२॥इसके पीछे सुवर्ण की बड़ी भारी आशापूरा देवी की मूर्त्ति बनवाई राजा भौमचन्द्र ने भी कुटुम्ब के साथ अपनी कुलदेवी की पूजा की ॥ २०३ ॥ देशभाषा में भी अस्थि अर्थ में हड्ड यह पर्याय शब्द स्पष्ट है, इसीकारण

तत्संतानाः सर्वेऽतो हड्डा१।१४।६१रामसिंहराजेन्द्र ।
भवदधिराजा वीरा निवसन्ति धरातलेऽतिरणरसिकाः ॥२०५॥
कुलदेव्याशापूरा भवतां हड्डाधिराडतो हेतोः ।
इषविशदपक्षषष्ठ्यां६युष्माभिः सार्च्यतेऽत्र सविशेषम् ॥२०६॥
अवनीश्वरोऽस्थिपालो१५६ऽप्यभवत्पञ्चत्वमाप्तवति पितरि ।
आगौर्ज्जरजनपदतो दोरर्ज्जितराज्यमन्वतिष्ठत्सः ॥ २०७ ॥
गोदासरिदुपकूलं व्यधायि तेनैव चास्थिपालपुरम् ।
जित्वाऽऽरातीनतपच्छत्रेणैकेन दाक्षिणात्ये सः ॥ २०८ ॥
उदभूदथास्थिपालात्पृथ्वीपालः१५७स धारपालो१५७ऽपि ।
स हि चण्डकिरण१५७इत्यपि चतुर४ख्यश्चन्द्रराज१५७इत्यपि सः२०९
अथ तच्चतु४रभिधानात्पृथ्वीपालाच्च सेनपालो१५८ऽभूत् ।
नाम्नापि लोकपालो१५८प्याज्ञाकीर्त्ति१५८रपि सोऽभिधात्रय३भृत्
जातोऽथ सेनपालात्त्र्य३भिधानाच्छत्रुशल्य१५९इति भूपः ।
दामोदर१६०उत्पेदे महीपतेः शत्रुशल्यतो वीरः ॥ २११ ॥
दामोदरान्नृसिंहो१६१नृसिंहतोऽभूत्तथैव हरिवंशः१६२ ।
हरिवंशाद्धरिजस१६३इति हरिजसतोप्यथ सदाशिव१६४उदभवत् २१२

वह अस्थिपाल लोक में हड्ड भी कहाया ॥ २०४ ॥ इसकारण हे राजेन्द्र रामसिंह उसकी संतान के सब हाडे, आप हो स्वामी जिनके ऐसे अतिरणरसिक वीर धरातल में वसते हैं ॥ २०५ ॥ हे हाडों का राजा ! इसकारण आशापुरा आप की कुलदेवी है जिसको आश्विन सुदी छठ के दिन यहां पर आप भी विशेष कर पूजते हो ॥ २०६ ॥ अस्थिपाल भी पिता के मरजाने पर राजा हुआ, उसने गुजरात देश पर्यन्त अपने भुजबल से पैदा कियेहुए राज्य का शासन किया ॥२०७॥ उस अस्थिपाल ने गोदावरी नदी के तट के समीप अस्थिपाल पुर बसाया और शत्रुओं को जीत कर दाक्षिण देश में एक छत्र से तपा ॥ २०८ ॥ अस्थिपाल के पृथ्वीपाल हुआ. वह धारपाल, चण्डकिरण और चन्द्रराज इन चार नामों से कहाया ॥ २०९ ॥ इस पीछे उस चार नामवाले पृथ्वीपाल के सेनपाल हुआ, वह सेनपाल भी लोकपाल और आज्ञाकीर्ति इन तीन नामों से कहाया ॥ २१० ॥ तीन नामोंवाले सेनपाल के राजा शत्रुशल्य हुआ जिस पीछे क्रम से दामोदर ॥ २११ ॥ नृसिंह, हरिवंश, हरिजस, सदाशिव,

भूमिपतेश्चाऽऽजायत सदाशिवाद्रामदास१६५इति भूपः ।
जज्ञेथ रामचन्द्रो१६६यशोधनो रामदासतो भूपात् ॥२१३ ॥
जातोथ रामचन्द्राद्दानसखो भागचन्द्र१६७आख्येयः ।
उदभूच्चभागचन्द्रात्समाख्यया रूपचन्द्र१६८ओजस्वी ॥२१४॥
मण्डन१६९इत्यभिधानो रणजयिनो रूपचन्द्रतो जातः ।
मण्डनतो दैववशाद्गतमखिलं दाक्षिणात्यभूराज्यम् ॥२१५ ॥
तदनन्तरं स मण्डन१६९आयातो मेदपाटविषयान्तः ।
तत्रैवोपरमालं देशं जित्वा चकार निजराज्यम् ॥ २१६ ॥
मण्डनगढाऽभिधानं दुर्गं स्वाख्यं विनिर्ममे तत्र ।
आधुनिकजना दुर्गं यन्माण्डिलगढमिति व्यवहरन्ति ॥२१७॥
राजा स तदधिरूढोऽनुबभूव चिराय नव्यराज्यसुखम् ।
अथ मण्डनान्नरपतेरात्मारामो१७०ऽवनीश उत्पेदे ॥ २१८ ॥
आत्मारामाज्जातौ सूनू आनन्दराज१७१।१जयराजौ१७१।२ ।
जयराजेन तु मम्रे सोमेशभटेन कान्यकुब्जाजौ ॥ २१९ ॥
तत्पुत्रोऽक्षयराजो१७२ऽप्रजो ममार यवनेन्द्रगोरिरणे ।
आनन्दराजतो द्वौ२हम्मीरो१७२।१थाऽनुजश्च गम्भीरः१७२।२॥२२०
हम्मीरेण हि नीतं दोर्दण्डबलेन नयनपुरदुर्गम् ।

रामदास, यश ही है धन जिसके ऐसा रामचन्द्र, दान का मित्र भागचन्द्र, पराक्रमी रूपचन्द्र ॥ २१२ ॥ २१३ ॥ २१४ संग्राम को जीतनेवाला मण्डन ये राजा हुए. मण्डन से प्रारब्धवश दक्षिण दिशा की भूमि का सम्पूर्ण राज्य चला-गया ॥ २१५ ॥ उस पीछे वह मण्डन मेवाड़ देश में आया, वहीं ऊपरमाल नामक देश को जीतकर अपना राज्य बनाया ॥ २१६ ॥ वहां पर अपने ही-नाम का मण्डनगढ़ नामक गढ़ बनाया, जिसको इस समय के लोग मांडलगढ़ के नाम से कहते हैं ॥ २१७ ॥ उस राजा ने उस गढ़ पर चढ कर बहुत दिनों तक नवीन राज्य का सुख लिया. मण्डन के आत्माराम नामक भूप हुआ ॥ २१८ ॥ आत्माराम के आनन्दराज और जयराज दो पुत्र हुए जिनमें जयराज तौ सोमेश के योद्धा से कान्यकुब्जदेश के युद्ध में मारागया ॥ २१९ ॥ उसका बेटा अक्षयराज विना संतान बादशाह गोरी के संग्राम में मारागया. आनंदराज के हम्मीर और गम्भीर दो पुत्र हुए ॥ २२० ॥ हम्मीर ने भुजबल से नयन-

पश्चाद्दिल्लीनृपतेरुभौ ह्हि सामन्ततां गतौ वीरौ ॥ २२१ ॥
पृथ्वीराज१७७सहायौ सोदर्य्यौ तावमेयशौरडीर्य्यौ ।
वाराणसीनृपादीन्निहत्य जहतुर्महोदयरणोऽसून् ॥ २२२ ॥
हम्मीराच्च सुमेरु ७३र्नैव सुमेरोस्तु संततिर्विदिता ।
गम्भीराद्रणधवलो१७३जातो रणधवलतश्चशरदारः१७४ ॥ २२३ ॥
शरदारादथ जज्ञे महाबलो जोधराज१७५इति वीरः ।
चित्तोडदुर्गदयितं राणेशं योऽजयद्दिनकराख्यम् ॥ २२४ ॥
स हि भीमसेनसंज्ञो१७५वीरमदेवो१७५ऽपि रायचन्द्रो१७५ऽपि ।
चन्द्रः१७५कलिकर्णो१७५पीतिषड्डभिधानःस जोधराजो१७५भूत्॥
जज्ञेऽथ षडभिधानाद्धि जोधराजात्तु रत्नसिंह१७६इति ॥
स हि वत्सो१७६रेणु१७६रपीति त्र्यभिधानःप्रकीर्त्तितो लोकैः।२२६।
तं रत्नसिंहमाजौ चित्तोडनृपेण नागपालेन ॥
जित्वा बलेन हृद्धं नीतं मण्डनगढं महादुर्गम् ॥ २२७ ॥
बम्बावदाख्यदुर्गं तदा रचितमाशु रत्नसिंहेन ॥
तत्प्रान्तं च विजित्यासमृद्धराज्यं चकार तत्रैव ॥ २२८ ॥
जातौचरत्नसिंहात्कोल्हण१७७।१इतिविञ्झराज१७७।२इतिचोभौ२॥

पुर (नैणवा) का गढ़ लिया, पीछे वे दोनों वीर दिल्लीपति के उमराव हुए ॥ २२१ ॥ अत्यन्त पराक्रमी उन दोनों भाइयों ने पृथ्वीराज की सहायता कर काशी आदि के राजाओं को मारकर महोदय (महुवा) की लड़ाई में प्राण छोड़े ॥ २२२ ॥ हम्मीर के सुमेरु हुआ परंतु सुमेरु का वंश जाना नहीं गया गंभीर के रणधवल उसके सरदार ॥ २२३ ॥ उसके महाबली वीर जोधराज हुआ जिसने चित्तौड़गढ़ के पति राणा दिनकर को जीता ॥ २२४ ॥ भीमसेन, वीरमदेव रामचन्द्र, चन्द्र, कालिकर्ण इन छः नामों से वह जोधराज प्रसिद्ध हुआ ॥२२५॥ इन छः नामवाले जोधराज के रत्नसिंह हुआ. वही वत्स और रेणु इन तीन नामों से लोक में प्रसिद्ध हुआ ॥२२६॥ उस हाडा रत्नसिंह को बल से जीतकर चित्तौड़ के राणा नागपाल ने उस महादुर्ग मांडलगढ़ को लिया ॥२२७॥ तब रत्नसिंह ने शीघ्र बंबावदा नाम का गढ़ बनाया. और उस प्रांत को जीत कर वहीं पर समृद्धिवाला राज्य किया ॥ २२८ ॥ रत्नसिंह के कोल्हण और विण्डराज

वीरः स विञ्झराजो१७७ऽपरेण नाम्नाऽऽस हुन्नराजो१७७ऽपि॥२२९॥
विञ्झोल्याह्वयनगरं व्यधायि तेनैव नव्यमतिजीर्णम् ॥
रमन्दिराणि चासौ निरमीमपदिहशताऽधिकसहस्रम्११००॥२३०॥
तदनन्तरमनपत्यः स हुन्नराज१७७स्तु पञ्चतामाप ॥
बम्बावदाधिराजश्चक्रे राज्यं स कोल्हणः१७७शैवः ॥ २३१ ॥
ज्येष्ठात्कोल्हणभूपादजायत कुमार आशुपाल१७८इति ॥
सत्यपि पितरि स वीरो रुजा कयाचिन्ममार दैववशात् ॥२३२॥
जातस्तदाऽऽशुपालात्कुमारको विजयपाल१७९आख्यातः ॥
स पितामहे परेते बालो बम्बावदाधिराजोऽभूत् ॥ २३३ ॥
यूनोऽथ विजयपालात्तस्मादुत्पेदिरे सुताः पञ्च५ ॥
अभिधानान्यपि तेषां श्रूयन्तां रामभूपते भवता ॥ २३४ ॥
ज्यायांस्तु बङ्गदेवः१८०।१ ।
केसरखानो१८०।२ऽथ कर्म्मसिंह१८०।३श्च ॥
कुम्भो१८०।४वीरमदेव१८०।५स्तेष्वनुजा अप्रजा मृताः सर्वे॥२३५॥
ज्येष्ठात्तु बङ्गदेवाज्जातास्तनयास्त्रयोदश१३ऽतिबलाः ॥
ज्यायांश्च देवसिंहो१८१।१
थ कर्म्मणः१८१।२सिंहणो१८१।३नयनसिंहः१८१।४ ॥ २३६ ॥

दो पुत्र हुए, वह वीर बिञ्झराज दूसरे हुन्न नाम से भी कहाया ॥ २२९ ॥ उसी ने बीझोल्या नाम अतिजीर्ण नगर का जीर्णोद्धार करके नवीन किया,और इस नगर में इसने महादेव के ग्यारह सौ मंदिर बनाये ॥ २३० ॥ जिस पीछे वह हुन्नराज बिना संतान मरगया । शैवमत को धारण करनेवाले बंबावदा के राजा उस कोल्हण ने राज्य किया ॥ २३१ ॥ बड़े कोल्हण भूप के कुमार आशुपाल हुआ. यह वीर पिता के रहते ही प्रारब्धवश किसी रोग से मर गया ॥ २३२ ॥ तब आशुपाल के कुमार विजयपाल हुआ था जो अपने दादा के मरजाने पर बालक ही बंबावदा का राजा हुआ ॥ २३३ ॥ उस विजयपाल के युवा अवस्था में पांच पुत्र हुए. हे भूपति रामसिंह ! उनके भी नाम सुनो. बडा तो व्यंगदेव, छोटे केसरखान, कर्मसिंह, कुंभ और बीरमदेव. जिन में छोटे तो सभी बिना संतान मरे ॥२३५॥ बड़े व्यंगदेव के अत्यंत बली१३पुत्र

अर्डक१८१।५इति वर्डक१८१।६इति
नत्थू१८१।७पत्थ१८१।८श्च हिङ्गुलु१८१।९श्च तथा ॥
दशमस्तु खड्गखस्तो१८१।१०
ऽथमोहनः१८१।११स्वामिदास १८१।१२इति साख्यः ॥ २३७॥
तदनुजनुर्योताऽभूत्स कृष्णदासः१८१।१३समाख्यया ख्यातः॥
तेषां स देवसिंहो१८१ज्यायान्सर्वेष्वभून्महावीरः ॥ २३८ ॥
जैत्रं१विग्रहराजं२चेन्द्रद्युम्नं३निहत्य सकुटुम्बम् ।
जित्वा मेदानखिलान् सति जनके ह्ययमुपाददे बुन्दीम् ॥ २३९ ॥
करउर१षटूपुर२पट्टनि३लक्खैर्य्या४द्याः पुरः पुनर्जित्वा ।
तत्रापि जनकराज्यं सर्वत्राऽऽरीरचत्स पितृभक्तः ॥ २४० ॥
तदनुजनुष्षु तृतीया३त्सिंहणतो घुग्घुलः१८२समुद्भूतः ।
यद्घुग्घुलोत्त१।१संज्ञास्तद्वंशीया बभूवुरिह विदिताः ॥२४१॥
देवानुज एकादश११उदितो यो मोहनो१८१महावीरः ।
यन्मोहणोत्तसंज्ञा१।२स्तद्वंश्या रामभूपतेऽभूवन् ॥ २४२ ॥
श्रीबङ्गदेवतनुजा इतरे प्रेता दशै१०व निर्वंशाः ।
बम्बावदाधिराजः पितरि समाप्ते स देवसिंहो१८१भूत् ॥ २४३ ॥
जाताश्च देवसिंहाद्धड्डनृपाद्द्वादशा१२त्मजा वीराः ।

हुए जिनमें बड़ा देवसिंह, छोटे कर्मण, सिंहण, नयनसिंह, अरड़क, बरड़क, नत्थू, पत्थू, हिंगुलु, दसवां खड्गखस्त, मोहन और स्वामीदास ॥ २३६ ॥ २३७ ॥ इन सब से छोटा कृष्णदास नाम से प्रसिद्ध हुआ, जिनमें बड़ा देवसिंह सब में बीर हुआ ॥ २३८ ॥ जिसने कुटुम्ब सहित जैत्र, विग्रहराज और इन्द्रद्युम्न को मारकर, संपूर्ण मैणों को जीत, पिता के रहते ही बुन्दी को प्राप्त किया॥२३९॥ उस पिताभक्त (देवसिंह) ने करवाड़, खटकड़, पाटणि, लाखैरी आदि ग्रामों को फिर जीतकर वहीं पर सब जगह पिता का राज्य किया ॥ २४० ॥ उस के छोटे भाईयों में से तीसरे सिंहण के घुग्घुल हुआ, जिसके वंश के घुग्घुलोत कहाये ॥ २४१ ॥ हे राजा रामसिंह देवसिंह के ग्यारहवें भाई मोहन के वंश के मोहणोत हुए ॥ २४२ ॥ श्रीबंगदेव के बाकी के दश ही पुत्र बिना संतान मरे और पिता के मरजाने पर देवसिंह बंबावदा का राजा हुआ ॥ २४३ ॥ हाडा राजा देवसिंह के वीर बारह पुत्र

ज्यायांस्तेषु महात्मा हरराजो१८२।१ऽरिरमणीमुखाब्जग्लौः ॥२४४॥
आस तदनुजो हत्थः१८२।२स एव हप्पो१८२।२ऽप्यभिख्ययेतरया ।
तद्वंशीयाः सर्वे हत्थाउत्तो२।३पटङ्किनोऽभूवन् ॥ २४५ ॥
तदनुजनुर्भटशूरो१८२।३ द्वितीय२नाम्ना स एव भोजो१८२।३पि ।
तस्मादनुजो बग्घ१८२।४स्ततोनुबालः१८२।५ स एव कृष्णो१८२।५पि
बालादनुजश्चाहड१८२।६इति नाम्ना तदनुजः समरसिंहः१८२।७ ।
तदनुजनुर्मोत्कल१८२।८इति नाम्ना तु स एव कर्म्मचन्द्रो१८२।८ऽपि ॥
नवमो९ऽथ जैत्रमल्लः१८२।९
स एव सोण्डो१८२।९ऽपि संज्ञयाऽपरया ॥
गोविन्दराज१८२।१०इत्यनु
दशमो१०ऽथ ततोऽनु कुम्भपाल१८२।११इति ॥२४८॥
अनुजोऽथ कुम्भपालात्समाख्यया शालिवाहनो१८२।१२जातः ।
भ्रातर ए द्वादश१२हड्डेन्द्राद्देवसिंहतो भूताः ॥ २४९ ॥
एतेष्वौत्तम्यभृते सप्तम७पुत्राय समरसिंहाय ।
निजभुजविजिता बुन्दी दत्ता भूपेन देवसिंहेन ॥ २५० ॥
राधसिततृतीयायां३ गुरौ मृगकभे स बुन्द्यधीशोऽभूत् ।
अग्रयुग२वर्ज्जमपरे नवा९ऽग्रजा भ्रातरस्तनूरौज्भन् ॥ २५१ ॥

हुए, जिनमें शत्रुओं की स्त्रियों के मुख रूपी कमलों का चन्द्रमा बडा हरराज हुआ ॥ २४४ ॥ जिसका छोटा भाई हत्थ जिसको हप्प भी कहते हैं उस के वंश के हत्थाउत पदवीवाले कहाये ॥ २४५ ॥ उसका छोटा भाई भटसूर जिसका दूसरा नाम भोज हुआ, उसका छोटा भाई बाघ, उससे छोटा बाल, वह कृष्ण भी कहाया ॥२४६॥ बाल से छोटा चाहड, उससे छोटा समरसिंह, उससे छोटा मोकल, जिसका दूसरा नाम कर्मचन्द्र भी था ॥ २४७ ॥ नवमा जैत्रमल्ल, वह दूसरे नाम से सोंड कहाया. दशवां गोविन्दराज, जिससे छोटा कुंभपाल ॥ २४८ ॥ कुंभ से छोटा शालिवाहन नामवाला हुआ. ये बारह भाई हाडों के इंद्र देवसिंह के पुत्र हुए ॥२४९ ॥ राजा देवसिंह ने इन बारहों में उत्तमता को धारण करनेवाले सातवें पुत्र समरसिंह को अपने भुजा से जीता हुआ बुन्दी नगर दिया ॥ २५० ॥ वह समरसिंह वैशाख सुदी ३ बृहस्पति वार को मृगशिर नक्षत्र में बुन्दी का पति हुआ प्रथम के दो (हरराज

तज्ज्यायान्हरराजः१८२।१प्रेते जनयितरि देवसिंहे सः ।
बम्बावदाऽधिराजो बभूव शौण्डीर्य्यचुञ्चुराधिवीरः ॥ २५२ ॥
हरराजादपि जाता द्वादश१२तनया अभिख्यया त इमे ।
ज्यायांस्तु तेषु हल्लू१८३।१
रनुजा लल्लू१८३।२श्च लोहराज१८३।३श्च ॥ २५३ ॥
हम्मीरो१८३।४ बलिराजो१८३।५
ऽक्षयराज१८३।६श्चाथ सप्तमः श्यामः१८३।७
सुरताणो१८३।८हरदोलो१८३।९
ऽथ लवणकर्ण१८३।१०स्तथैव रोपालः१८३।११ ॥ २५४ ॥
अनुजो दुल्हपालो१८३।१२द्वादश त इति प्रसिद्धिमधिजग्मुः॥
ज्येष्ठस्तेषां हल्लूः१८३प्रेते जनके तदाधिपत्यमितः ॥२५५॥
मण्डोउरपुरनृपतिं प्रतिहारकुलं विजित्य हम्मीरम् ॥
अन्यांश्च विविधयुद्धान् हल्लूरभवत्कुमारिकाख्यातः॥ २५६॥
हल्लूवंश्याः सर्वे हल्लूपौत्रोपटङ्किनो२।४ऽभूवन् ॥
चञ्चावुत्ता४।१ऽऽदिभिदा हल्लूपौत्रेषु२।४पञ्च५पुनरासन् ॥
लल्ल्वादय एकादश११निःसंततयः समाप्तिमध्यगमन् ।
संकीर्त्यतेऽथ वंशो बुन्दीश्वरसमरसिंहसंभूतः ॥ २५८ ॥
उदभूवन्बुन्दीशाच्चत्वारो४ह्यात्मजाः समरसिंहात् ॥

और हत्थ) को छोड़कर बाकी के ९ भाई बिना संतान मरे ॥ २५१ ॥ पराक्रमी वीरों में श्रेष्ठ सबसे बड़ा हरराज पिता देवसिंह के मरने पर बंम्बावदाका स्वामी हुआ॥२५२॥हरराज के भी बारह पुत्र हुए जिनमें बड़ा हल्लू, छोटे लल्लू, लोहराज,हम्मीर,बलिराज,अक्षयराज,श्याम,सुरताण,हरदोल,लवणकर्ण, रोपाल, सब से छोटा दुल्हपाल ये बारहों प्रसिद्ध हुए, जिनमें बड़ा हल्लू पिता के मरने पर उस बम्बावदा का पति हुआ ॥२५३॥२५४॥२५५॥ मंडोवर पुर के राजा पड़िहार वंशी हम्मीर को जीत, अनेक प्रकार के युद्ध करके हल्लू कुमारिका क्षेत्र (भरतखण्ड) में प्रसिद्ध हुआ ॥ २५६ ॥ हल्लू के वंश के सब हल्लूपोता इस पदवी से प्रसिद्ध हुए और हल्लू के पोतों में चंचावत आदि पांच भेद हुए ॥२५७॥ लल्लू कोआदिले ग्यारहही पुत्र बिना संतान मरे-अब बुन्दीपति समरसिंह का वंश कहा जाता है॥२५८॥ बुन्दीपति समरसिंह के चार ४ पुत्र हुए, जिनमें पहिला नरपाल

तेष्वाद्यो नरपालो१८३।१नप्पो१८३।१ऽपि स आस संज्ञयेतरथा ॥
हरपालो१८३।३ऽथ तदनुजस्तस्याऽप्यनुजोथ जैतसिंह१८३।३इति॥
तदनुजडुङ्गरसिंह१८३।४श्चत्वारो भ्रातरोऽभवँस्त इमे ॥२६०॥
असति पितरि नरपालो१८३।१ज्यायांस्तेष्वाधिपत्यमधिगतवान् ॥
हरपालपौत्रसंज्ञाः१।३।५समजायन्त हरपालवंशीयाः ॥२६१॥
जैताउत्तोपाख्या२।३।६अभवन्नथ जैत्रासिंहसंभूताः ॥
जैताउत्तान्तर्गतखान्धिलतस्ते हि खान्धिलोत्ता२।३।६इच ॥२६२॥
खर्ज्जूर्य्याख्यो ग्रामो डुङ्गरसिंहाय दत्त आर्य्येण ॥
तद्वासित्वात्तज्जाः खर्ज्जूरीकोपटङ्किनो३।३।७ऽभूवन् ॥२६३॥
अथ नृपतेर्नरपालाद्धम्मीरो१८४।१ऽभूत्तथा च नवरङ्गः१८४।२॥
तदनुजनुः स्थिरराजो१८४।३वीरास्त्रय इति बभूवुराजिबुधाः ।२६४।
तज्ज्यायान्हम्मीरो१८४।१बुन्दीराज्यमुपभुक्तवान्समये ॥
नवरङ्गपौत्रसंज्ञा४।४।८नवरङ्गोद्भूतसन्ततिर्जाताः॥ २६५ ॥
स्थिरराजोद्गतवंश्याः ख्याताः स्थिरराजपौत्रसंज्ञा५।४।९स्ते ॥
द्वौ हम्मीरा१८४।१ज्जातौ
वरसिंहो१८५।१लालसिंह१८५।२इति सूनू ॥ २६६ ॥
श्रुतिमतधर्म्माऽवित्रा पित्रा तज्ज्यायसेऽर्पिता बुन्दी ॥
हम्मीरेणोत्सृष्टं गैणोल्याह्वं पुरं च लालाय ॥ २६७ ॥

जिसका दूसरा नाम नप्प भी था ॥ २५९ ॥ उस का छोटा भाई हरपाल जिससे छोटा जैतसिंह, जिससे छोटा डूंगरसिंह ॥ २६० ॥ उनमें बडा नरपाल पिता के न रहने पर स्वामी हुआ, हरपाल के वंश के हरपालपौत्र (हरपालोत) नाम हुए ॥ २६१ ॥ जैतसिंह के वंश के जैतावत नाम से कहाये, जैतावतों में खांधिला से खांधिलोत हुए ॥२६२॥ राजा ने डूंगरसिंह को खजूरी नामक ग्राम दिया वहां बसने से उसके वंश के खजूरिया इस पदवीवाले हुए ॥ २६३ ॥ इस पीछे राजा नरपाल के हम्मीर, नवरङ्ग और थिरराज ये तीन संग्राम के पण्डित पुत्र हुए ॥२६४॥ जिनमें बड़े हम्मीर ने समय पर बुन्दी का राज्य भोगा नवरङ्ग के वंश के नवरङ्गपोता कहाये ॥ ६५ ॥ थिरराज के वंश के थिरराजोत कहाये हम्मीर के वरसिंह और लालसिंह ये दो पुत्र हुए ॥ २६६ ॥ वेदमत के धर्म को पालनेवाले पिता हम्मीर ने बड़े को बुन्दी और छोटे लालसिंह को

तत्रैव तेन गत्वोषितं च राणात्मजो हतश्चाजौ ॥
हाम्मीरिणा सरभसं हाम्मीरिः चेत्रसिंह इति नाम्ना ।२६८।
लालादुद्वाववुदभूतां ज्यायांस्तनयस्तु जैत्रसिंह१८६।१इति ।
नाम्नास्य नवब्रह्मः१८६।२ कनिष्ठ एतौ स्ववंशवृद्धिकरौ ॥ २६९ ॥
तज्जैत्रसिंहवंश्या जैताउत्तो६।५।१०पटङ्किनो हड्डाः ।
जाताश्च नवब्रह्मात्तथा नवब्रह्मको७।५।११पटङ्का१।१३।२स्ते ॥ २७० ॥
वरसिंहादथ जातास्त्रयः३सुता वैरिशल्य१८६।१इति मुख्यः ।
अपरो नाम्ना जावदु१८६।२रनुजस्ताभ्यां स निम्मदेव१८६।३इति ।
ज्यायांस्तु तेषु समये बुन्दीराजः स वैरिशल्यो१८६।१ऽभूत् ।
सारण१८७।१इति सेव१८७।२इति द्वौ सूनू जावदोः समुद्भूतौ।२७२।
सारणतः सामन्तो१८७जातः सामन्तका८।६।१२अतस्तज्जाः
सेवान्मेवो१८७मेवान्मेवाउत्तो९।६।१३पटङ्किनो जाताः ॥ २७३ ॥
निम्माउतोपटङ्का१०।६।१४बभूवुरथ निम्मराजवंशीयाः ।
ज्येष्ठाच्च वैरिशल्याद्बुन्दीशादष्ट८सूनवो जाताः ॥ २७४ ॥
ज्यायांस्त्वक्षयराजो१८७।१
ऽनुजाश्च चुण्ड१८७।२स्तथा ह्युदयसिंहः१८७।३ ॥
तदनु च सुभाण्डदेवः१८७।४स भारमल्लो१८७।४ऽप्यभिख्ययेतरया

गैणोली नामक पुर दिया ॥ २६७ ॥ वह वहाँ जाकर रहा और संग्राम में हम्मीरसिंह के पुत्र लालसिंह ने राजा हम्मीरसिंह के पुत्र चेत्रसिंह [खेता] को युद्ध में वहीं पर वेग से मारा ॥ २६८ ॥ लालसिंह के दो पुत्र हुए बड़ा पुत्र जैतसिंह, छोटा नवब्रह्म ये दोनों पुत्र अपने वंश को बढानेवाले हुए ॥ २६९ ॥ उस जैतसिंह के वंशके जैतावत पदवीवाले हाडा हुए, और नवब्रह्म के वंश के नवब्रह्म पदवीवाले कहाये ॥ २७० ॥ वरसिंह के तीन पुत्र हुए, बडा वैरीसाल, दूसरा जावदू इन दोनों से छोटा नीमदेव ॥ २७१ ॥ जिनमें बडा वैरीसाल तो समय पाकर बुन्दी का राजा हुआ, और जावदू के सारण और सेव ये दो पुत्र हुए ॥ २७२ ॥ सारण के सामन्त हुआ, जिसके जाये साँवन्तका कहाये, सेव के मेव हुआ जिसके वंश के मेवावत पदवीवाले हुए ॥ २७३ ॥ निम्मराज के वंश के निंबावत हुए और बुन्दीपति बडे वैरीसाल के आठ पुत्र हुए ॥ २७४ ॥ बडा तो अक्षयराज और छोटे चुंड, उदयसिंह, सुभांडदेव

नाम्नाथ शौराडदेवो१८७।५थ लोहटः१८७।६कर्म्मचन्द्र१८७।७ऊर्ज्जस्वी
श्यामो१८७।८ऽष्टमः स नाम्ना
केशवदासो१८७।८ऽपि विदित इतरेण ॥ २७६ ॥
प्रकृतिभिरग्रभवांस्त्री३न्नृपाज्ञयाऽवेक्ष्य तत्पदानर्हान् ।
विहितः सुभाराडदेवो१८७।४हि वैरिशल्ये तनुत्यजि नृपत्वे ॥ २७७॥
अक्षयराजाज्जाता अक्खाउत्तो१।१।७।१५पटङ्किनोऽभूवन् ।
चुराडोद्भवसन्तानाश्चुराडाउत्तो१२।७।१६पवाचकाः ख्याताः ॥ २७८ ॥
ऊदाउत्तो१३।७।१७पाख्या अभवन्नप्युदयसिंहवंशीयाः ।
त्रय३इतरे शौराडादय आपुरसन्ततय एव पञ्चत्वम् ॥ २७९ ॥
सर्वानुजनुः श्यामो१८७।७ष्टमो य उदितः स वैरिशल्यसुतः ।
यवनेन्द्रेण गृहीत्वा मराडूपतिना कृतोऽर्भको यवनः ॥ २८० ॥
नृपतेः सुभाराडदेवादुदभूवन्नात्मजास्त्रयो३वीराः ।
तेष्वग्रजो महात्मा नारायणदास१८८।१इत्यभिख्यावान् ॥ २८१ ॥
अनुजौ तस्य सगर्भौ बभूवतुर्नरबदो१८८।२नृसिंह१८८।३श्च ।
अनुजोऽनयोर्नृसिंहो१८८।३ जगाम निर्वंश एव पञ्चत्वम् ॥ २८२॥
नरबदतोऽन्वयजनकाश्चत्वारः४सूनवः समुदभूवन् ।

जिसका दूसरा नाम भारमल भी था, सौंडदेव, लोहट, पराक्रमी कर्मचन्द्र, आठवाँ श्याम जिसका दूसरा नाम केशवदास भी था ॥ २७५ ॥ २७६ ॥ वैरीसाल के मरने पर प्रथम के (अक्षयराज, चुंड और उदयसिंह) को राज्य के योग्य न जान कर राजा की आज्ञा से राज्य के अमात्यादि प्रधान पुरुषों ने चौथे सुभांडदेव को राजा बनाया ॥ २७७ ॥ अक्षयराज के वंश के अक्खावत पदवीवाले हुए चुंड के वंश के चुंडावत उपपद से कहाये ॥ २७८ ॥ उदय के वंश के ऊदावत कहाये बाकी के सौंड आदि तीन विना संतान ही मरे । २७९। सब से छोटा आठवाँ जो श्याम कहा गया वह वैरीसाल का बेटा मांडू के मुसल्मान बादशाह से पकड़ा जाकर बालकपन में ही मुसल्मान कियागया ॥ २८० ॥ राजा सुभांडदेव के वीर तीन पुत्र हुए जिनमें बड़ा महात्मा नारायणदास नामवाला ॥ २८१ ॥ जिसके छोटे सगे भाई नरबद और नृसिंह हुए. इन दोनों में छोटा नृसिंह बिना संतान ही मरा ॥ २८२ ॥ नरबद के वंश चलानेवाले चार पुत्र हुए. अर्जुन, भीम, पूरण और छोटा मोकल ॥ २८३।

अर्ज्जुन१८९।१भीम१८९।२समाख्या
अथ पूर्णो१८९।३मोत्कल१८९।४श्च तदनुजनिः ॥ २८३ ॥
स्वस्वसमाख्याद्युत्ताश्चत्वार४स्तत्तदन्वया जाताः ॥
पूर्ण१८०।३कुलं हम्मीरा१९१।१द्विदिताद्धम्मीरको३पटङ्कं च ।२८४।
कुलमुख्यवैरिशल्याद्वैराउत्ता४स्तथैव मोत्कल१८९।४जाः ॥
अथसुर्ज्जना१९०।१दितनुजाःषडद्व्ज्जुना१८९।१दप्रजास्त्रयोजाताः२८५
त्रय३एषु जननजनका
आव्हाभिः सुर्ज्जनो१९०।१ऽक्षयो१९०।२रामः १९०।३ ॥
एतत्सप्तक७कुलजा नरबदपौत्रो१४।८।१८पटाङ्किनः सर्वे॥ २८६॥
तदपीह सुर्ज्जनो१९१।१यं सुरताणा१९०।१नन्तरं नृपो जातः ॥
इति हेतोस्तदनुजयोर्वक्ष्ये ते द्वे२पृथक्कुले७समये ॥ २८७ ॥
सोवसरे नारायणदासो१८८।१बुन्दीश्वरत्वमधिगतवान् ॥
त्रय३एवाथ तनूजा नारायणदासतः समुद्भूताः ॥ २८८ ॥
ज्यायांस्तु सूर्यमल्ल१८९।१स्तदनुजनू रायमल्ल१८९।२आजिपटुः ॥
कल्याणमल्ल१८९।३इति च त्रिषु३तेष्वग्रेभवोऽभवद्राजा ॥ २८९ ॥

उन उन वंशों में पैदाहुए चारों कुल अपने अपने नामों के अंत में "उत्त" शब्द लगानेवाले हुए अर्थात् अर्जुनोत, भीमोत, पूरणोत, मोकलोत इन नामोंवाले चारों कुल हुए, परंतु पूर्ण का कुल उस प्रसिद्ध हम्मीर के नाम से हम्मीर का इस पदवी से भी प्रसिद्ध हुआ ॥ २८४ ॥ मोकल का वंश मोकलोत भी कुल में प्रसिद्ध, वैरीसाल के नाम से वैरावत कहाया. इस पीछे अर्जुन के सुर्जन आदि छः पुत्र हुए जिनमें तीन तो विना संतानवाले ; और सुरजन, अक्षय, राम ये तीन वंश चलानेवाले हुए, इन सातों, (सुभांड का बड़ा पुत्र नारायण दास १ नरबद के पुत्र भीम २ पूरण ३ और मोत्कल ४ और उसी नरबद के बड़े बेटे अर्जुन के पुत्र सुर्जन५ अक्षय ६ और राम ७) के वंश में जो पैदा हुए वे सब नरबदपोता इस पदवी से कहाये ॥ २८५ ॥ २८६ ॥ नरबदपोता होने के कारण भी यह सुर्जन आगे होनेवाले सूर्यमल्ल के पुत्र सुरताणसिंह के पीछे समय पाकर बुन्दी का राजा हुआ इसकारण इस के दोनों भाइयों (अक्षय और राम) के दो कुल जुदे कहे गये ॥ २८७ ॥ वह नारायणदास समय पाकर बुन्दीका पति हुआ जिसके ३ पुत्रहुए॥२८८॥बड़ा सूर्यमल्ल,छोटेरायमल्ल और संग्राममें चतुर कल्याणमल्ल इन तीनों में से बड़ा सूर्यमल्ल राजा हुआ॥२८९॥

तावनुजौ तूभाव वपि तत्यजतुर्निष्प्रजौ रणे कायम् ॥
नृपतेश्च सूर्यमल्लात्पुत्रः सुरताणसिंह१९०इति जातः ॥ २९० ॥
प्राणैर्वियुज्य राणारविमल्ले पञ्चतामिते समिति ।
सुरताणसिंह१९०आपाधिपत्यमसमर्थ एष राज्यकृते ॥ २९१ ॥
सुभटान् मन्त्रिण आर्य्यानमात्यवर्गान्मनीषिवर्गांश्च ।
सोनादृत्य यथेच्छं प्रमत्त आरेभ इष्टमतदुचितम् ॥ २९२ ॥
समयं परिभाव्य तदा षड्भिः६प्रकृतिभिरथैनमपसार्य ।
सुमतिर्नरवदनप्ता स आर्ज्जुनिःसुर्जनः१९१कृतो नृपतिः ॥ २९३ ॥
तदनुजतोऽक्षयराजा१९०।२
अयो३दयालु१९१।१रुदयो१९१।२यशोराजः१९१।३ ॥
एतेषां संततयो
ऽर्जुना१८९।१ऽक्षय१८९।२पुरोगपौत्रका१५।९।१९आसन् ॥२९४ ॥
तदनुजरामा१८९।३ज्जाताश्चत्वारः४सूनवो विजय१९०।१मुख्याः ।
तेषां कुलानि चत्वार्याददिरे रामको१६।९।२०पटङ्कं हि ॥ २९५ ॥
सुरताणपौत्रसंज्ञा१७।१०।२१अभवन्सुरताणसिंहवंशीयाः ।

वे दोनों छोटे भाई तो संग्राम में विना संतान मरे. और राजा सूर्यमल्ल के पुत्र सुरताणसिंह हुआ ॥ २९० ॥ राणा रत्नसिंह को मारकर युद्ध में सूर्यमल्ल के मरने पर सुरताणसिंह स्वामी हुआ, परंतु यह राज्य करने में असमर्थ था ॥ २९१ ॥ उसने उमराव, मंत्रि, श्रेष्ठ लोग, कामदार लोग और बुद्धिमान् लोगों का अनादर करके उन्मत्तता से जो उसके योग्य न था ऐसा अपने अनुकूल मनचाहा करने लगा ॥ २९२ ॥ तब समय को विचार कर छहों प्रकृति (स्वामी सहित राज्य की सात प्रकृति हैं जिनमें स्वामी को छोड कर अमात्य, मित्र, कोशाध्यक्ष, प्रजा के मुख्य पुरुष, किलादार, सेनापति) ने इसको दूर करके श्रेष्ठ मतिवाले नरबदपोता अर्जुन के बेटे सुर्जन को राजा बनाया ॥ २९३ ॥ इसके छोटे भाई अक्षयराज के दयालु, उदय और यशोराज ये तीन पुत्र हुए जिनके वंश के अर्जुन और अक्षय शब्द के आगे है पौत्र शब्द जिनके ऐसे अर्जुनपोते अक्षयपोते कहाये ॥ २९४ ॥ उसके छोटे भाई राम के प्रधान विजयी चार पुत्र हुए. उनके चारों कुलों ने रामका इस पदवी का आदर किया ॥ २९५ ॥ सुरताणसिंह के वंशवाले सुरताणपोता कहाये. वह सुर्जन

मतिधर्मनयाचरणैः सर्वोपर्यास सुर्ज्जनो१९१भूपः ॥ २९६ ॥
यवनेन्द्रादकबरतोऽनन्यत्त्वार्हमाप्तमौन्नत्यम् ।
देशाश्च हगिषु५२सङ्ख्या आप्ता येन चरणाद्रि१काश्यरधिकाः।२९७।
अथ सुर्ज्जनान्नरेशान्मध्यमसुख्यास्त्रयः सुता जाताः ।
ज्यायान्दुर्ज्जनशल्ल्यो१९२।१
ऽनुजौ तु भोज१९२।२श्च रायमल्ल१९२।३ श्च॥ २९८ ॥
सिंहस्येव सुतस्य ज्येष्ठस्यावेक्ष्य केवलं शौर्यम् ॥
श्रीसुर्ज्जनेन यवनेन्द्रधिया राज्योचितो मतो भोजः१९२।२ ॥२९९॥
दुर्ज्जनशल्ल्याज्जाता ऊदाउत्तोपटाङ्किनो१८।११।२२ऽभूवन् ।
जाताश्चरायमल्लादुपनाम्ना ते तु रायमल्लोत्ताः१९।११।२३।३००।
हड्डेश्वराच्च भोजाश्चत्वारः४सूनवः समुदभूवन् ।
ज्यायांस्तु रत्नसिंहो१९३।१ ऽथ हृदयनारायणो१९३।२रणोत्कराठी।
केशवदास१९३।३श्च तथा मनोहरादिपददास१९३।४इति वीरः ।
एतेषामचतुर्था१९३।४ज्यायांसोऽन्वयधरास्त्रयो३जाताः ॥३०२॥
तेषां स रत्नसिंहो१९३।१ज्यायान्बुन्द्याधिपत्यमाधिगतवान् ॥
विप्रैर्यन्न्यायबलाज्ज्येष्ठोऽपि सुतो१९४।१हतो हि लाम्पट्ये॥३०३॥
हरदाउत्तो२०।१२।२४पाख्यास्तु हृदयनारायणोद्भवा अभवन् ।

राजा बुद्धि, धर्म और नीति के आचरणों से सर्वोपरि रहा ॥ २९६ ॥ जिसने अकबर बादशाह से क्षत्रियों के योग्य अद्वितीय उन्नति और चनारगढ व काशी है प्रधान जिनमें ऐसे ५२ परगने पाये ॥ २९७ ॥ इस पीछे राजा सुर्जन के मध्यपुत्र है प्रधान जिनमें ऐसे तीन पुत्र हुए जिनमें बड़ा दुर्जनशाह, छोटे भोज और रायमल्ल ॥ २९८ ॥ बड़े पुत्र का सिंह के समान केवल पराक्रम देख सुर्जन ने बादशाह की संमति से राज्य के योग्य भोज को माना ॥ २९९ ॥ दुर्जनसाल के जाये ऊदावत पदवीवाले हुए और रायमल्ल के जाये रायमल्लोत उपनामक हुए ॥ ३०० ॥ हाडों के ईश्वर भोज के चार पुत्र हुए बडा तौ रत्नसिंह, छोटे रण में उत्साह रखनेवाला हृदयनारायण, केशवदास और वीर मनोहरदास. इन में चौथे को छोड़ कर बाकी के तीन वंश चलानेवाले हुए ॥ ३०१ ॥ ३०२ ॥ जिनमें यड़ा रत्नसिंह बुंदी का पति हुआ, जिसके न्याय बल से उसके लंपटी बड़े बेटे को ब्राह्मणों ने मारा ॥ ३०३ ॥ हृदयनारायण

केशवदासोद्भूता ये केशवदासभोजपौत्रा२१।१२।२५स्ते॥३०४॥
रत्नाद्गोपीनाथो१९४।१
माधवसिंहो१९४।२हरि१९४।३र्जगन्नाथः१९४।४ ॥
अक्षयसिंह१९४।५श्च तथा सुजाणसिंह१९४।६इति षट्कमुत्पेदे।३०५।
तेषु स गोपीनाथो१९४।१ हतो द्विजैः पारदारिको व्यसनी ।
माधवसिंहाज्जाता माधाणयुर२२।१३।२६पटाङ्किनोऽभवन्हड्डाः॥३०६॥
जाता हरेस्तृतीयात्तु हरीजीको२३।१३।२७पटाङ्किनः सर्वे ।
ये चापि जगन्नाथोद्भवा जगन्नाथपौत्र२४।१३।२८संज्ञास्ते ॥ ३०७ ॥
एतेभ्योऽप्यनुजजनुषौ निर्वंशौ पञ्चतामगमतां द्वौ२ ॥
गोपीनाथाज्जातास्त्रयोदश१३सुताः शृणुष्व तान्नृपते ॥ ३०८ ॥
मुख्यस्तु शत्रुशल्ल्य१९५।१स्तथेन्द्रशल्ल्य१९५।२श्च वैरिशल्ल्य१९५।३श्च।
अनुजोथ राजसिंहो१९५।४
मुहुकमसिंह१९५।५स्तथा महासिंहः१९५।६ ॥ ३०९ ॥
तदनुजनुरुदयसिंहः१९५।७
शूरः१९५।८श्याम१९५।९श्च केसरीसिंहः१९५।१० ॥
एवं च कनकसिंहो१९५।११
नगराजो१९५।१२रामसिंह१९५।१३इति सर्वे ॥ ३१० ॥
तेषु ज्यायान्भ्राता स शत्रुशल्ल्यः१९५।१पितामहे प्रेते ।

के वंश के हरदाउत्त कहाये. और केशवदास के केशवदास भोजपोता कहाये ॥ ३०४ ॥ रत्नसिंह के गोपीनाथ, माधवसिंह, हरि, जगन्नाथ, अक्षयसिंह और सुरताणसिंह ये छः पुत्र हुए॥३०५॥जिनमें परस्त्री का व्यसन रखने वाला राजा गोपीनाथ ब्राह्मणों से मारा गया. माधवसिंह के वंश के माधानी पदवी वाले हाडा हुए ॥ ३०६ ॥ तीसरे हरि के वंश के तो सब " हरिजीका " इस पदवी से कहाये, और जगन्नाथ के जाये जगन्नाथपोता नाम से कहाये॥३०७॥ इन से छोटे दो विना संतान मरे. हे राजा ! गोपीनाथ के तेरह पुत्रों के नाम सुनो ॥ ३०८ ॥ बडा शत्रुशल्य, छोटे इंद्रशाल, वैरीसाल, राजसिंह, मुहुकमसिंह, महासिंह, उदयसिंह, शूर, श्याम, केसरीसिंह, कनकसिंह, नगराज और रामसिंह ॥ ३०९ ॥ ३१० ॥ जिनमें वह बड़ा भाई शत्रुसाल दादा के मरजाने

बुन्द्याधिपत्यमाप्नोच्छ्रीसुर्जनभोजरत्नविस्तीर्णाम् ॥ ३११ ॥
स दधीचिदा वीरोऽर्ज्जुनरणवीरोऽम्बरीषहरिभक्तः ।
जीमूतवाहन इवाभवद्दयावीर इन्दुकमनीयः ॥ ३१२ ॥
अनुजेन्द्रशल्ल्यवंश्याः ख्याता हि तदाह्वयेन्द्रसल्लोत्ताः२५।१४।२९ ॥
जाताश्च वैरिशल्ल्यादुपनाम्ना ते तु वैरिसल्लोत्ताः२६।१४।३० ॥३१३॥
अनुजास्तु राजसिंहाज्जाता आचिराय निधनमधिजग्मुः ।
मुहुकमसिंहोद्भूता मुहुकमसिंहोत्त२७।१४।३१ संज्ञका आसन्।३१४।
जाताश्च महासिंहोतोपाख्यां२८।१४।३२लेभिरे महासिंहात् ।
इतरेऽनुजाः समस्ता बाल्ये दैवेन मम्रुरप्रजसः ॥ ३१५ ॥
नृपतेश्च शत्रुशल्ल्यात्सप्त७सुता जज्ञिरे महासत्त्वाः ।
ज्यायांस्तु भावसिंहो१९६।१धर्मधुरीणो युधिष्ठिरो ह्यपरः ॥ ३१६ ॥
जनयितरि वीरशय्यासुप्ते छत्रं दधार स महात्मा ।
राज्यंसुयशश्चक्रे प्रसह्य धर्मं ररक्ष यवनेन्द्रात् ॥ ३१७ ॥
अनुजास्तु भीमसिंहो१९६।२भारतसिंह१९६।३स्तृतीय३आजिसखः।
भगवत्सिंहो१९६।४भूपति-
सिंहो१९६।५भूपालसिंह१९६।६इति षष्ठः ॥३१८ ॥

पर श्रीसुर्जन, भोज और रत्नसिंह से फैलायेहुए बुन्दी के राज्य को प्राप्त हुआ ॥ ३११ ॥ वह [शत्रुसाल] दधीचि के समान दानवीर, अर्जुन के समान रणवीर, अंबरीष के समान हरिभक्त, जीमूत [मेघ] के समान दयावीर और चन्द्रमा के समान सुन्दर हुआ ॥ ३१२ ॥ छोटे भाई इंद्रसाल के वंश के उसी के नाम से इंद्रसल्लोत कहाये ॥ और वैरीसाल के वंश के वैरीसालोत इस उपनाम से कहाये ॥ ३१३ ॥ छोटे भाई राजसिंह के हुए सो तौ शीघ्र ही मर गये, मुहुकमसिंह के हुए वे मुहुकमसिंहोत कहाये ॥ ३१४ ॥ महासिंह के जाये महासिंहोत इस नाम से कहाये. वाकी के सब छोटे भाई दैववश बाल्यावस्था में ही विना संतान मरे ॥ ३१५ ॥ राजा शत्रुसाल के महापराक्रमी सात पुत्र हुए, जिनमें बड़ा तौ धर्मधुरीण भावसिंह, जो मानों दूसरा युधिष्ठिर था ॥ ३१६ ॥ जिस महात्मा ने पिता के वीरशय्या पर सोजाने पर छत्र धारण करकें राज्य को यश युक्त किया और हठ पूर्वक बादशाह से धर्म को बचाया ॥ ३१७ ॥ छोटे भाई भीमसिंह जो युद्ध का मित्र, तीसरा भारतसिंह, चौथा

सर्वेभ्योऽनूद्भूतः स ईश्वरीसिंह१९६।७इत्यभिख्यावान् ।
तेषु द्वौ२पूर्वभवौ नसुतावन्ये तु मञ्जुरनपत्याः ॥ ३१९ ॥
नृपतेस्तु भावसिंहात्पृथ्वीसिंहो१९७।१बभूव सुत एकः१ ।
तेन स्तनन्धयेन हि मम्रे श्रामद्वया२ऽनुमितवयसा ॥ ३२० ॥
भीमाच्च कृष्णसिंहः१९७।१प्रयागसिंह१९७।२स्तथोदभतां द्वौ२।
लघुनाऽप्रजसा मम्रे जज्ञाते द्वौ२शृणुष्व तौ कृष्णात् ॥ ३२१ ॥
मुख्योऽनिरुद्धसिंहो१९८।१ऽथ कीर्त्तिसिंहः१९८।२स बाल्य एव मृतः।
ज्येष्ठो निजपुत्रत्वे मतो मृतसुतेन भावसिंहेन ॥ ३२२ ॥
स्वर्गत इति हड्डेन्द्रे यशोधने राज्ञि भावसिंहोऽथ ।
अधिगततदाधिपत्यो नरेश्वरः सोऽनिरुद्धसिंहो१९८ऽभूत् । ३२३ ।
अनिरुद्धान्नृपतेरुदभूवँश्चत्वार४आत्मजास्त इमे ।
बुधसिंह१९९।१योधसिंहो१९९।२
तथा ह्यमरसिंह१९९।३विजयसिंहो१९९।४च ॥ ३२४ ॥
अनुजास्त्रयो३ऽप्यपुत्रा युवा१शिशू२इत्यवस्थिता मम्रुः ।
ज्यायांस्तु स बुधसिंहः१९९कायत्यजि पितरि बुन्द्यधीशोऽभूत् । ३२५ ।
युववयसि वर्द्धितमसौ हारितवान् वार्द्धके सकलराज्यम् ।

भगवतसिंह, पांचवाँ भूपतिसिंह, छठा भूपालसिंह, सब से छोटा ईश्वरीसिंह जिन में प्रथम के दो तो पुत्रवाले हुए और बाकी के विना संतान मरे ॥३१८॥ ॥ ३१९ ॥ राजा भावसिंह के पृथ्वीसिंह एक ही पुत्र हुआ, वह स्तनपान करता ही दो वर्ष की अवस्था के लगभग मरगया ॥ ३२० ॥ भीमसिंह के कृष्णसिंह और प्रयागसिंह दो पुत्र हुए, जिनमें छोटा विना संतान मरा. कृष्णसिंह के दो पुत्र हुए तिनको सुनो ॥ ३२१ ॥ बड़ा अनिरुद्धसिंह और छोटा कीर्तिसिंह जो बालक ही मरगया. भावसिंह ने अपने पुत्र (पृथ्वीसिंह) के मर जाने पर बड़े (अनिरुद्धसिंह) को अपना पुत्र माना ॥ ३२२ ॥ यश ही है धन जिसके ऐसे हाडाओं के इंद्र भावसिंह के स्वर्गवासी होने पर उसके अधिकार को प्राप्त करनेवाला अनिरुद्धसिंह राजा हुआ ॥ ३२३ ॥ राजा अनिरुद्ध के चार पुत्र हुए बुधसिंह, जोधसिंह, अमरसिंह और विजयसिंह॥३२४॥ तीनों छोटे भाई तो कोई बालकपन में और कोई जवानपन में अपुत्र मर गये, और बड़ा बुधसिंह पिता के मर जाने पर बुन्दी का पति हुआ ॥ ३२५ ॥

बुधसिंहादुदभूवन्नथ षट्तनुजाः शृणुष्व तान्नृपते ॥ ३२६ ॥
ज्येष्ठस्तु देवसिंहो२००।१धोङ्कलसिंहो२००।१ऽपि स ह्यपरनाम्ना ।
तदनु च भावसिंहः२००।२स लालसिंहो२००।२ऽप्यभिख्ययेतरया।
अथ च भवानीसिंहः२००।३संदिग्धः केनचिन्निदानेन ।
जातश्च तदनुजन्मा चतुर्थ४उम्मेदसिंह२००।४इति वीरः ॥ ३२८॥
अनुजोऽस्य चन्द्रसिंहः२००।५स पद्मसिंहो२००।५प्यभूदपरनाम्ना
षष्ठो६ऽथ दीपसिंह२००।६स्तेषु चतुर्था२००।४न्तिमौ२००।६धृतायुष्कौ
उम्मेद२००।४ एष नृपतिर्विजित्य कूर्म्मेश्वरेश्वरीसिंहम् ॥
तद्धस्तामुद्धृत्य स्वमहीं बुभुजे स तीर्णसिन्धुयशाः ॥ ३३० ॥
ये दीपसिंहवंश्या आसंस्ते भूपदीपसिंहोत्ताः २९।१५ ३३ ॥
इतरे बुधसिंहसुताः शिशवः परलोकमध्यतिष्ठंस्ते ॥ ३३१ ॥
उम्मेदात्पञ्च५ सुतास्तेष्व२०१।१भवत्पूर्वमीडरेच्यां यः ॥
स२०१।१त्वभिधानविधानात्प्रागेवशिशुर्जगामपरलोकम् ॥ ३३२ ॥
पश्चाच्चाऽजितसिंहो२०१।२

इसने युवाऽवस्था में बढाये हुए राज्य को वृद्धाऽवस्था में गमाया. हे राजा बुधसिंह के छः पुत्र हुए उनको सुनो ॥ ३२६ ॥ बड़ा तो देवसिंह वही दूसरे नाम से धूंकलसिंह हुआ, छोटा भावतसिंह सो ही दूसरे नाम से लालसिंह ॥३२७॥ तीसरा भवानीसिंह किसी कारण से संदिग्ध हुआ अर्थात् यह निश्चय नहीं हुआ कि वह बुधसिंह का औरस पुत्र था वा कृत्रिम; उसका छोटा भाई चौथा वीर उमेदसिंह हुआ ॥ ३२८ ॥ इसका छोटा भाई चन्द्रसिंह वही दूसरे नाम से पद्मसिंह हुआ, और छठा दीपसिंह, जिनमें चौथा (उमेदसिंह) और अंतिम (दीपसिंह) ये दोनों आयु धारण करनेवाले हुए ॥ ३२९ ॥ समुद्र पर्यंत यश फैलानेवाले इस राजा उमेदसिंह ने कछवाहों के स्वामी ईसरीसिंह को जीत कर उस की दबाईहुई अपनी पृथ्वी को पीछी निकाल कर भोगी ॥३३०॥ हे राजा ! दीपसिंह के वंश के दीपसिंहोत हुए बाकी के बुधसिंह के पुत्र बालकपन में ही परलोक गये ॥ ३३१ ॥ उम्मेदसिंह के पांच पुत्र हुए ; जिनमें जो पहला ईडरेची रानी से हुआ वह लड़का नामकरण (नाम पड़ने) से पहिले

ऽथ बहादुरसिंह२०१३इति तृतीयोऽभूत् ॥
शरदारसिंह२०१४एते त्रिलोकसिंह२०१५न पञ्चमेऽ समम् ३३३
विधिवत्तमऽजितसिंहं महाऽऽधिपत्येऽभिषिच्य सुतमुचितम् ॥
उम्मेदसिंहनृपतिर्विरतो योगक्रियां समारेभे ॥ ३३४ ॥
ये च बहादुरसिंहादुद्भूतास्ते तदाह्वयायुक्ताः २०१६।३४ ॥
शरदारसिंहवंश्यास्तदभिख्यायुक्त३।१२६।३५संज्ञका अभवन् ३३५
जातौ द्वावजितनृपात्प्रतापसिंह२०२१श्च विष्णुसिंह२०२२श्च ॥
बालेऽग्रजे च पितरि च मृते नरेशः स विष्णुसिंहो२०२२ऽभूत् ३३६
नृपतेश्च विष्णुसिंहात्सूनव उत्पेदिरे तथा पञ्च ॥
अग्रजनिरिन्द्रसिंहो२०३१
ऽथादत्ताख्य२०३२ स्ततोऽनु बलदेवः २०३३ ॥ ३३७ ॥
कविबुधचातक ।रिदसंविद्गस्ताऽखिलप्रकृतिविकृते ॥
श्रीरामसिंह२०३४नृपतेभवांश्चभवतोऽनुजश्चगोपालः२०३५ ३३८
त्रिऽष्वग्रजेषु बालेष्वथ व्यसुषु पितरि चाधिरूढे स्वः ॥
राज्यं भवताऽन्वष्टाध्यरिमौलिन्यस्तशासनेन्दुयशाः ॥३३९॥

ही मर गया ॥ ३३२ ॥ और पीछे अर्जुनसिंह, बहादुरसिंह, सरदारसिंह और त्रिलोकसिंह ये मिल पांच पुत्र हुए ॥ ३३३ ॥ राजा उम्मेदसिंह उस योग्य पुत्र अजीतसिंह का विधिवत् महाराज्याभिषेक करके संसार से विरक्त हो योगाभ्यास में लगा ॥ ३३४ ॥ और जो बहादुरसिंह से हुए वे बहादुरसिंहोत और सरदारसिंह के वंश के सरदारसिंहोत नामवाले हुए ॥ ३३५ ॥ राजा अजीतसिंह के प्रतापसिंह और विष्णुसिंह दो पुत्र हुए. बालक बडा भाई और अपने पिता के मरजाने पर वह विष्णुसिंह राजा हुआ ॥ ३३६ ॥ राजा विष्णुसिंह के पांच पुत्र हुए बडा इन्द्रसिंह, छोटा जिसका नाम नहीं दियागया (नामकरण के पहले ही मरगया) उससे छोटा बलदेव ॥ ३३७ ॥ कवि और पण्डित रूपी चातकों का मेघ, ज्ञान पूर्वक ग्रहण किया है संपूर्ण प्रकृति विकृति अर्थात् सांख्य शास्त्र में कहा हुआ तत्व ज्ञान जिन्होंने ऐसे, हे राजा रामसिंह ! आप, और आप से छोटा गोपाल ॥ ३३८ ॥ तीनों बडे भाइयों के गतप्राण होने और पिता के स्वर्ग जाने पर शत्रुओं के सिर पर धरी है आज्ञा जिन्हों ने ऐसे चन्द्रमा के समान उज्वल यशवाले आपने राज्य करना आरंभ किया ॥ ३३९ ॥

भवतश्च भीमसिंहो२०४।१यशोधनो रङ्गनाथसिंह२०४।२श्च ॥
द्वाविति राजकुमारा उद्भूतौ भूभुजङ्गहड्डेन्द ॥ ३४० ॥
षट्‌द्तर्कार्णवमन्दरनास्तिकषट्‌द्तर्कतूलविहननभृत् ॥
श्रीरामसिंह२०३।४नरराडिति संक्षिप्तोऽन्वयोऽभवद्भवतः ॥ ३४१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ संक्षिप्त चहुवाणवंशोद्देशनमेकादशो११मयूखः ॥ ११ ॥　　॥ ६९ ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा ॥

दोहा

यह समास उद्देस[२] किय, बरनौं अब करि व्यास[३] ॥
सुनहु धराधव दै श्रवन, कुलचहुवान प्रकास ॥ १ ॥
ईतरन बिच अनपत्य मृत, चविहौं बिदित चुहान ॥
हड्डनको सब अक्खिहौं, बित्थर पुब्ब बखान ॥ २ ॥
गिनहु नयो या ग्रंथ मैं, नियम राम नरनाह ॥
जोहि साँवरि[१] कहियत जथा, रक्खि पुलक[२] कर राह ॥ ३ ॥

हे पृथ्वीपति हड्डेन्द्र आप के,यश ही धन जिसके ऐसा भीमसिंह और रंगनाथसिंह दो राजकुमार हुए. छहों शास्त्र(पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा,न्याय, वैशेषिक, सांख्य और पातञ्जल) रूपी समुद्र का मन्दराचल, और नास्तिकों के छहों शास्त्र(माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक, वैभाषिक, चार्वाक और दिगम्बर) रूपी रुई की पींजण को धारण करनेवाले[पींजारा]ऐसे हे नरपति रामसिंह यह आप के वंश का संक्षेप से वर्णन हुआ ॥ ३४१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में संक्षेप से चहुवाण वंश का वर्णन रूप ग्यारहवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ ११ ॥

यह तो संक्षेप से वर्णन किया अब विस्तार पूर्वक वर्णन करता हूं सो हे चहुवाण कुल के प्रकाश करनेवाले भूपति रामसिंह! कान देकर सुनिये ॥ १ ॥ हाडों के सिवाय और चहुवाणों में तो जो विना संतान मर गये हैं उनमें प्रसिद्ध प्रसिद्धों को कहूंगा और हाडा शाखवाले चहुवाणों का तो प्रसिद्ध अप्रसिद्ध सब का विस्तार पूर्वक वर्णन करूंगा ॥ २ ॥ हे नरपति रामसिंह! इस ग्रंथ में यह नवीन नियम जानो! केवल उस रोमांच करनेवाले मार्ग को अर्थात् सुंदर रीति को रख कर यथायोग्य कहता हूं तात्पर्य यह है कि इस ग्रंथ में एक पद्य में भी कई भाषाओं के शब्द आवेंगे इसकारण पाठकों के उपयोगी

प्राकृत १ संस्कृत२ पद प्रचुर, ब्रजदेसी३हु बिसेस ॥
ग्रंथ अपभ्रंस४हु अधिक, पैसाची५कहुँ पेस ॥ ४ ॥
ब्रज बिभक्ति जुतहैं बहुत, ए ५ पद संभरवार ॥
बहुठाँ ऐं ५हि बिभक्ति बिनु, अपभ्रंस अनुसार ॥ ५ ॥
पुर दिल्ली१ग्वालेर२पुर, बीच ब्रजादिक देस ॥
पिंगल उपनामक गिरा, तिनकी मधुर बिसेस ॥ ६ ॥
यातैं नरबानी यह हि, रक्खी तँहँ इक ओर ॥
कहुँ अर्थ१रु पद२दृढ करन, जोहु सुनहु मति जोर ॥ ७ ॥
व्यंजनगन को पंद्रहौं१५,बहुरि तीसमों३० बर्ण ॥
तिम रक्खो इकतीसमों३१,कहुँ मितथल कलिकर्ण ॥८॥
बक्तादिक बैशिष्ट्यबल, फुरै न आसय अत्थ१ ।
संयोगादिक सों हु पुनि, जानैं सद्दरन जत्थ ॥ ९ ॥

और प्राचीनों के अतिरिक्त नवीन नियम किये हैं; केवल वे ही कहेजाते हैं. इस दोहे में पुनरि शब्द केवल अर्थ में प्राकृत का अव्यय है ॥ ३ ॥ इस ग्रंथ में प्राकृत, संस्कृत, व्रजभाषा और अपभ्रंश भाषा के पद बहुत हैं और कहीं २ पैशाची भाषा के पद भी हैं ॥ ४ ॥ हे संभरवारे (चहुवाण) इन भाषाओं के बहुत से पद तो व्रजभाषा की विभक्तियों सहित हैं और ये ही पद बहुतसी जगह अपभ्रंशभाषा के अनुसार विना विभक्ति भी हैं ॥ ५ ॥ दिल्लीनगर और ग्वालेर नगर के बीच व्रज आदि देश हैं उन देशों की भाषा जिसका उपनाम पिंगल है बहुत ही मधुर है ॥ ६ ॥ इसीकारण से मैंने यही नरभाषा रक्खी है जिसमें अर्थ और पद को दृढ करने के लिये एक और नवीन रीति रक्खी है सो भी बुद्धि (ध्यान) लगाकर सुनिये ॥ ७ ॥ हे कलियुग के कर्ण रावराजा रामसिंह! व्यंजन गण का पन्द्रहवाँ वर्ण णकार, और तीसवां वर्ण तालव्य शकार, वैसे ही इकतीसवाँ वर्ण मूर्धन्य षकार ये तीनों वर्ण थोड़े ही स्थानों में रक्खे हैं, अर्थात बहुत स्थानों में णकार के स्थान में नकार और तालव्य मूर्धन्य इन दोनों के स्थान में दन्त्य सकार रक्खे हैं ॥ ८ ॥ क्योंकि जहां पर वक्ता और श्रोताओं को विशेष बुद्धिबल से भी अर्थ और अभिप्राय का भान न होवे और संयोग आदि (संयोग, वियोग साहचर्य विरोधिता, प्रयोजन, प्रकरण, लिंग, अन्य शब्द की संनिधि, सामर्थ्य. योग्यता, देश, काल, व्यक्ति, और स्वर आदि) साहित्य में कहेहुए इन चौदह कारणों से भी जहां पर शब्दज्ञान न होवे वहां

उदाहरन अणुमान १ अरु, वंश न चलैं लहि बात२ ॥
माषं मलिन हुव ब्याह मुख ३, इम बिरले थल आत ॥१०॥
संधि १ हु कहुँ फुटं अर्थ सन, ज्यों नायो१ मुरि जुद्ध ।
अच अच की यह हल रु अच, प्रभु जगदीस२ प्रबुद्ध ॥११॥
हल हल की मग पद्धरइ हि, रीति यहै नृप राम ।
कहुँ संस्कृत अव्यय१ क्रिया२, ज्यों खलुं१ जुद्ध जगाम२ ॥१२॥
स्वरहु सत्तमो ७ बांरहों १२, चंउद्दहों१४ लिय चाहि ॥
ऋत१ बुल्ल्यो नृप ऐल२ रन, अति कौसल३ इम आहि ॥१३॥
कहुंक हकार१ बिसर्ग को, ज्यों अंतंहपुर२ जानि ॥

पर वे (ण श ष) तीनों वर्ण वैसे के वैसे ही रक्खे हैं ॥ ९ ॥ जिनके उदाहरण क्रम से ये हैं कि जैसे "अणुमान" यहां पर णकार के स्थानमें नकार करदिया जावे तो "अनुमान" शब्द होकर परमाणु का वाचक न रहे, और "वंश न चलै लहि बात" यहां पर तालव्य शकार के स्थान में दंत्य सकार कर दिया जावे तो पवन के लगने से [उन्मत्त अर्थात् बावला] किसी के वश में नहीं चलता, यह अर्थ छूटकर पवन के लगने से वस्त्र चलता है ऐसा अर्थ हो जावे, इसी प्रकार "माषं मलिन हुव ब्याह मुख" यहां पर मूर्धन्य के स्थान में दंत्य सकार कर दिया जावे तो विवाह आदि मंगलीक कार्यों में माष (उड़द) धान्यविशेष मलिन [दूषित] हुए यह अर्थ छूटकर ब्याह आदि में महीने दूषित हुए यह अर्थ हो जावे इस प्रकार थोड़े स्थलों में उपरोक्त तीनों वर्ण आवेंगे ॥ १० ॥ संधियां भी कहीं २ स्पंष्ट अर्थ से रहेंगीं, जैसे न×आयो जिस का "नायो" यह स्वर के साथ स्वर की संधि हुई और जगत्×ईश जिसका "जगदीश" यह व्यंजन के साथ स्वर की संधि है ॥ ११ ॥ इसी प्रकार पद=धरैहि जिसका 'पद्धरहि' यह व्यंजन के साथ व्यंजन की संधि है. हे राजा रामसिंह ! संधियों की यह रीति है कि कहीं २ संस्कृत के अव्यय और क्रिया पद भी आवेंगे जैसे "खलुं" यह निश्चय अर्थ में अव्यय और "जगाम" यह गमन अर्थ में क्रियापद है जिसका अर्थ यह है कि निश्चय युद्ध में गया ॥१२॥ स्वरों में भी सातवाँ "ऋ" बारहवाँ "ऐ" और चौदहवाँ "औ" ये तीनों स्वर जान बूझकर लिये हैं जिनके उदाहरण क्रम से ये हैं कि ऋतका ऋकार, ऐल का "ऐ" कार और कौशल का "औ" कार ये तीनों स्वर हैं सो इसी प्रकार लिये जावेंगे इस का अर्थ है कि "ऐल नाम राजा युद्ध में सत्य बोला" कहीं पर विसर्ग का हकार जानो. जैसे अन्तःपुर का "अन्तहपुर"

कहुँक लोप१ पर द्वित्व२ गुन करि, निस्सँह२ दुक्ख३ प्रमानि । १४ ।
अरु पदआदि वकार सब, जे बकार१ बन२ जेम ।
आ को अँ१ हु पद आदि मैं, तहँ अकास२ कहुँ तेम॥ १५ ॥
संस्कृत सब्द हलंत सो, यामैं कहुँक अदंत१ ॥
कहुँ हल लुप्त२ सु जगंत१ जग२, सब इहिं रीति सुमंत ॥ १६ ॥
माता१ राजा२ चन्द्रमा३, आदि सब्द अनुहार ॥
संस्कृत प्रथमा१ इक बचन, सिद्धहु नाम प्रकार ॥ १७ ॥
ब्रजबिभक्ति पावैं बहुरि, ज्यौं माता कौं१ जल्प ।
जुहु बिकल्प करि लुप्त जिम, कियउ बिधाता२ कल्प॥ १८ ॥
पहिली१ दूजी२ अरु छठी६, अपभ्रंस लुपि जात ।
अंत्या७ अरु तीजी३ हुयँहँ, दूजे२ चरन दिखात ॥ १९ ॥

और कहीं पर विसर्ग का लोप करके आगे के अक्षर को द्वित्व किया है जैसे निः सह का " निस्सह " और दुःख का " दुक्ख " इस प्रकार जानो ॥ १४ ॥ और पद के आदि के जितने वकार हैं वे सब बकार जानो जैसे वन के स्थान में " बन " तैसे ही कहीं पद के आदि के आकार को " अँ " कार जानो जैसे आकाश को " अकाश " ॥ १५ ॥ जो शब्द संस्कृत में हलन्त (हल् है अंत में जिसके) है वह इस ग्रथ में कहीं तौ अकारान्त रक्खा है और कहीं उसके हल् का लोप किया है जैसे जगत् इसका " जँगत " और 'जग' हे श्रेष्ठ बुद्धिमान् रावराजा रामसिंह ! सब इसी रीति से जानो ॥ १६ ॥ माता, राजा और चन्द्रमा इनको आदि लेकर इनके जैसे ही और भी शब्द प्रथमा विभक्ति के एक वचन में संस्कृत के नाम (जिसके आगे स्वादि विभक्ति आवे उसको व्याकरण में नाम कहते हैं) की रीति से सिद्ध हुए आवेंगे॥१७॥ संस्कृत प्रथमा के एक वचन से सिद्ध हुए शब्द फिर व्रजभाषा की विभक्ति भी पाते हैं जैसे " माता कौं जल्प " यहां पर माता शब्द प्रथमा के एक वचन में सिद्ध है उसी ने माता का बोलना इस अर्थ में व्रजभाषा की षष्ठी विभक्ति 'कौ' पाई है॥ वहीं व्रजभाषा की विभक्ति विकल्प करके लुप्त भी हो जाती है जैसे " विधाता कल्प " यहां पर विधाता ने कल्प किया इस अर्थ में व्रजभाषा की तृतीया विभक्ति " ने " का लोप है ॥ अपभ्रंश भाषा में प्रथमा' द्वितीया, तृतीया, षष्ठी और सप्तमी इन विभक्तियों का लोप हो जाता है इसी छन्द के दूसरे चरण में दीखती है अर्थात् " अपभ्रंश लुपि जात" इस चरण का अर्थ है कि अपभ्रंश में लुप्त हो जाती है यहां पर अपभ्रंश इस पद की

क्लीब लिंग१ नरकौं भजैं, बहुठाँ जिम सो२ बारि॥
अरु कहुँ उरभी३ अंत इम, नृपबरं जो ह्वैनारि ॥ २० ॥

षट्पदी

पूज्यनाम इक१ बचन तास बहुबचन बिसेसन२,
कन्ह च ३ जिम कुपित महाब्रंत समुख महामन ।
जहँ पर ह्वै बहु बचन नामअर्थक नकार१ तहँ,
बहु बचनन की ठाँहु होय परिहरि प्रथमा१ कहँ ।
क्रमतैं उदाहरन सुरनकै१ सुरन तथा सत्रहि असन,
कहुँ प्राकृतादि अव्यय१ क्रिया२न गावि१ होई२ जिम गुनन गन।२१।

दोहा

कहुँ दुव२ अर्धन अंत अरु, कहुँ दुव२चरनन अंत ।

सप्तमी विभक्ति " में " का लोप हुआ है ॥ १९ ॥ भाषा में नपुंसकलिंग नहीं होता इस कारण से जो नपुंसकलिंग शब्द हैं वे बहुत जगह तौ पुल्लिंग होते हैं जैसे 'सो वारि' अर्थात् वह जल, यहां पर वारि शब्द नपुंसकलिंग है सो पुल्लिंग हुआ और कहीं पर हे श्रेष्ठ राजा वही नपुंसकलिंग स्त्रीलिंग हो जाता है जैसे 'उरभी अंत' इसका अर्थ है, कि आंत उलभी, यहां पर आंत शब्द नपुंसकलिंग है सो स्त्रीलिंग हुआ ॥२०॥ जहां पूज्य पुरुष का नाम एकवचनांत हो उसके विशेषण में बहुवचन किया जावेगा जिसका उदाहरण है कि मँनस्वी श्रीकृष्ण कुपित सदृश होकर भीष्म पर चले यहां चले इस कृदन्त क्रिया को विशेषण मान कर बहुवचन का विशेषण दिया है और जहां बहुवचन के लिये विभक्ति है वहां बहुत अर्थ के सूचन के लिये नाम के साथ नकार रक्खा है और किसी जगह बहुवचन की विभक्ति के स्थान में विभक्ति को छोड़ कर प्रथमा विभक्ति ही रहती है इन के क्रम से ये उदाहरण हैं 'सुरन कै सत्र हि असन' (देवताओं के यज्ञ ही भोजन) है बहुवचन के विषय में 'कै' यह षष्ठी विभक्ति है और बहुत्व के सूचन के लिये सुर शब्द के साथ नकार लगादिया गया है और दूसरे उदाहरण 'सुरन' यहां षष्ठी विभक्ति(कै)को छोड़कर बहुवचन सूचक नकार सहित सुर शब्द ही लगा दिया है यद्यपि भाषा में प्रथमा विभक्ति के स्थान में कोई प्रत्यय नहीं है तथापि संस्कृत की रीति के अनुसार ग्रन्थकार ने प्रथमादि व्यवहार किया है संस्कृत में विभक्ति के स्वरूप से ही एक वचन, द्विवचन और बहुवचन का बोध हो जाता है परंतु भाषा में विभक्ति से एक वचन, बहुवचन का बोध नहीं होता इसकारण से

अपभ्रंस मत लहि इहाँ, अनुप्रास१ बिलसंत ॥ २२ ॥
ऐक१ बरन सौं अष्टि१६ लग, करी अवधि इनकेर ॥
इनमैं व्यंजन आदि१ को, बदलत दूजी२ बेर ॥ २३ ॥

षट्पदी

उदाहरन क्रमतैंहि सुनहु सो१ जो१ पुनि जस२ तस ।
समर३ अमर३ सरसाय४ बहुरि दरसाय रीति बस ॥
रनकरन५ रु मनकरन५ सदन चहत६ रु मदन चहत६ ।
त्यौंहि सहल सरवर७ रु महल सरवर७ प्रबंध मत ॥
तैसैंहि बीरबिक्रमबलिय८ बलि हमीर बिक्रमबलिय८ ।
अनुप्रास अंत्यनामक इम सुलघु बढि बढि अग्ग हु चलिय॥२४॥

पादाकुलकम्

पुनि सभंगपद अरु१ अभंगपद, द्वै प्रकार दुवर करि याकी हद॥
उदाहरन षष्ठ६रु अष्टम८जँहँ, द्वै सभंग१ खिल मैं अभंग२ तँहँ॥२५॥

बहुत्व के बोध वास्ते नकारादि अक्षर लगाये जाते हैं ये नकारादि अक्षर विभक्ति के अवयव नहीं होते । इस ग्रंथ में प्राकृतादि के अव्यय और क्रिया भी रक्खे जावेंगे जैसे गुणों का समूह विपरीत न होवे वहाँ "णवि" यह प्राकृत का अव्यय है और भवति के स्थान में "होई" यह प्राकृत क्रिया पद है अपभ्रंश भाषा के मत से इस ग्रंथ में अन्त्यानुप्रास कहीं पर (दोहा आदि छंदों में) तो दोनों अर्ध अर्थात् पूर्वार्ध उत्तरार्ध के अंत में और कहीं पर (पादाकुलक आदि छंदों में) दो चरणों में अर्थात् चरण२ के अन्त में रहेगा ॥ २२ ॥ इस अंत्यानुप्रास का प्रमाण एक वर्ण से लेकर १६ वर्ण तक का है जिन में शब्द के आदि का व्यंजन उसी शब्द के दूसरी वार के उच्चारण में बदलता है ॥ २३ ॥ इस के उदाहरण क्रमसे ये हैं सो सुनो जैसे, "सो, जो" इस में आदि का व्यंजन सकार बदलकर जकार हुआ इसी प्रकार 'जस, तस; समर, अमर; सरसाय, दरसाय; रन करन, मन करन; सदन चहत, मदन चहत; सहल सरवर, महल सरवर; वीर विक्रम बलिय, मीर विक्रम बलिय । इस प्रकार अन्त्यानुप्रास में आदि का व्यंजन बदलकर आगे को भी लघुमात्रा बढ़२कर सौलह वर्ण तक चले हैं ॥ २४ ॥
इस अन्त्यानुप्रास के दो प्रकार हैं, जिनमें एक तो सभंगपद और दूसरा अभंगपद अर्थात् जिसका पदच्छेद होकर श्लिष्ट अर्थ होवे उसका नाम सभंग पद, और जिसका पदच्छेद न होकर अर्थ होवे उसका नाम अभंगपद है

अनुप्रास पदमुख केवल स्वर, सोहि सव्यंजन अपर इम हु बर ।
उदाहरन पुब्बहु यँहँ ऐसैं, करहु बिलंब श्रवन बिच कैसैं ॥२६ ॥
वृत्त चरन के आदिबरन जो, ताही के उपअंत बहुल सो।
इक१सौंलैरुच्यारि४लगअतिबर१,मध्यम२अधम३अधिकतरतमपर।
नाम बरन संबंध१ अलंकृति, अर्धनमैं हु करत यह अनुसृति
ग्रंथ चतुर्थ४भाग बिच नाँ यह,सेस माँहि सब ठाम नियम सह।२८।
स्वर१ रु यकार२ वकार२ सजाती, सप्तम७ तदपि रेफ संघाती ।
कहुँक त्रि३धा हि सकार याहि क्रम,सूचित कहुँ डं१ल२कारजातिसम
कहुँक डकार१ दकार२ साम्य लिय,कहुँक बकार१वकार२मेलकिय
कहुँ सवर्ग्य संबंध कहावैं, यह बिनु जतन सर्वथल आवैं ॥ ३० ॥
उ१दाहरन नृपराम अ२लोभित,सु१जस कियउ राकाससि सो२भित

जिनके उदाहरण ऊपर के छप्पय छंद में दिखाये गये हैं इन आठों उदाहरणों में छठा (सदन चहत मदन चहत) और आठवाँ(वीर विक्रम बलिय मीराविक्रम बलिय) ये दो तो सभंगपद और बाकी के छः उदाहरण अभंगपद के हैं ॥ २५ ॥ अनुप्रास के पद के आदि में केवल स्वर होवे अथवा उस स्वर में व्यंजन मिला हुआ होवे तो वह भी श्रेष्ठ है (अभिप्राय यह है कि स्वर वह का वही रहना चाहिये स्वर के बदलने से अंत्यानुप्रास विगड़ जाता है) जिस का उदाहरण इस प्रकार है "ऐसें" यह तो केवल स्वर है और "कैसे" यहां ऐकार में ककार व्यंजन है ॥ २६ ॥ अब आगे वर्णसंबंध [वैणसगाई] का नियम बताते हैं कि छंद के चरण के आदि का अक्षर होवे वही अक्षर उसी चरण के अंत के बहुत समीप फिर आना चाहिये, वह अंत के वर्ण से लेकर चार तक तो उत्तम, और चार से अधिकतर अर्थात् पांचवाँ होवे तो मध्यम, और परतम अर्थात् छठा होवे तो अधम है ॥ २७ ॥ यह वर्णसंबंध नामक अलंकार आधे आधे पदों में भी होता है सो यह वर्णसंबंध इस ग्रंथ के चौथे भाग में तो नहीं है बाकी के तीन भागों में नियम पूर्वक है ॥ २८ ॥ इस वर्ण संबंध में स्वरों के साथ यकार और वकार का सजातीयपन है और सातवाँ " ऋ " स्वर है तो भी रेफ (र) का साथी (ऋ से र का वर्णसंबध मिलाया गया) है कहीं २ तालव्य मूर्धन्य और दन्त्य सकार का मेल किया गया है, और कहीं पर डकार लकार को सजातीय माना है ॥ २९ ॥ कहीं दकार से डकार की समता ली गई है और कहीं बकार के साथ वकार का मेल किया है और कहीं सवर्गी (अपने अपने वर्गवाले) संबंध रखते हैं परन्तु ये

बी१रन मैं ब२२धी१२ धराध१न ऋृ१न, पितरन को मेटि जई र२न
य१ह जस सुनत द्विजन बहु आ२दरि, आ१यउ निज पुर होत निछावरि
उदाहरन इतिमुख सब जानहु, वृत्ति३अनुप्रास हु बहु मानहु।३२।
त्योंहीं छेक४ अल्प यह तासों, सबहि ग्रंथ बिच इम संधासों।
सब्द भजैं स्त्रीलिंग अदंत१ हु, ज्यों हद्द२ हलमल्ल३ प्रमुख पहुं।३३।

दोहा

ब्रजभाषा के पदन बिच, लघु सिर रेखा दोय२।
तँहँ न गिनहु स्वर बारहों१२, उच्चारन इम होय॥ ३४ ॥
लघु अदंत गुरु काल लों, जैसें बोल्यो जाय।
बुल्लहु तिम याकों बिबुध, नैन१ बैल२ जिम न्याय॥ ३५ ॥
या ब्रजभाषा मैं इहाँ, रक्खी ए सब रीति।
संधा ग्रंथ समाप्ति लों, प्रभु जानहु करि प्रीति ॥ ३६ ॥
संस्कृतादि छ६गिरा हु के, पद बिभक्ति निज सत्थ।
जे नभ१ताँरा२७ न्याय जिम, अक्खौं मिश्रित अत्थ ॥३७
सुद्दहु संस्कृत आदि सब६, भिन्न भिन्न कहुँ ठौर।

बिना ही यत्न के सब जगह आते हैं ॥ ३० ॥ इनके उदाहरण आगे स्पष्ट दिखाये गये हैं ॥ ३१ ॥ इनको आदि लेकर सब उदाहरण जानो और इस ग्रंथ में वृत्त्यनुप्रास (एक वर्ण की वा अनेक वर्णों की अनेकवार समता होने को वृत्त्यनुप्रास कहते हैं) भी बहुत हैं ॥ ३२ ॥ उस वृत्त्यनुप्रास से छेकानुप्रास (अनेक व्यंजनों की एकवार समता होने को छेकानुप्रास कहते हैं) इस ग्रंथ में कम है इस संपूर्ण ग्रंथ में इस प्रकार की प्रतिज्ञा जानो हे स्वामी रामसिंह ! अकारान्त शब्द भी स्त्रीलिंग होते हैं जैसे "हद्द" और "हलमल्ल" आदि ॥ ३३ ॥ ब्रजभाषा के पदों में लघु अक्षर के सिरपर दो रेखा (मात्रा) होवेगी जिसको बारहवाँ स्वर " ऐ ", मत जानना, किंतु गुरु अक्षर के उच्चारण में जितना समय लगता है उतने ही समय में लघु अकारान्त बोलाजावे ऐसे हे पंडितलोको! नेत्र को "नैन,, और वृषभ को "बैल,,कहकर बोलते हैं इस न्याय से बोलना ॥३४।३५॥ हे स्वामी रामसिंह!इस ब्रजभाषा में ये सब रीतियां इस ग्रंथ में रक्खी हैं सो ग्रंथ की समाप्ति तक प्रीति पूर्वक प्रतिज्ञा जानना ॥ ३६ ॥ संस्कृत आदि छहों भाषाओं के पद अपनी अपनी विभक्तियों के साथ नभतारान्याय (आकाश में अन्य ताराओं के साथ सत्ताईस नक्षत्र मिलेहुए

जे अकास१ग्रह९न्याय जिम, मन्नहु भूपति मौरै ॥ ३८ ॥
जवनन को वृत्तांत जँहँ, जवनगिरा१कहुँ जानि ॥
कहुँक इंगरेजी२कथित, बक्ता तास बखानि ॥ ३९ ॥
डिंगल उपनामक कहुँक, मरुबानी१हु बिधेय ॥
अपभ्रंस जामैं अधिक, सदा बीररस श्रेय ॥ ४० ॥
शुद्ध१अशुद्ध२हु जवनपद, कहुँ प्रयुक्त किय अत्थ ॥
सो ब्रजादिदेसीय मैं, स्फुट गिनि रक्खिय सत्थ ॥ ४१ ॥
उदाहरन हंकिय अतुल, फील१ सुतर२मय फोज३ ॥
हिम्मति१किम्मति२ हंद्द अरु३, अवरँग४अकबर५ओज ॥ ४२ ॥
कहुँ वृत्तार्णव१के कहुँक, नंदितांड्य२के छंद ॥
कहुँ पुनि पिंगलसूत्र३के, यँहँ नृप गिनहु अमंद ॥ ४३ ॥
नागराज४सूचित धरे, वृत्त बहुत या माँहिं ॥
सबहि तराजू तुलित से, त्रुटिमित अंतर नाँहिं ॥ ४४ ॥
कादि बरनजुत ए१ रु ओ२,केवल इं१ उंकार२॥

दीखते हैं ऐसे) से मिलेहुए कहूंगा ॥ ३७ ॥ किसी जगह पर संस्कृत आदि छ-हों भाषा शुद्ध रीति से जुदी जुदी कही जांयगीं वे आकाशग्रहन्याय (आ-काश में नवग्रहों की गति भिन्न होने के कारण अन्य तारागण से भिन्न दीख ते हैं ऐसे) से हे राजाओं के मुकुट रामसिंह उनको भिन्न मानना ॥ ३८ ॥ क हीं कहीं यवनों के वृत्तान्त में उनकी भाषा (फारसी आदि) और इंगरेजों के वृत्तान्त में उनकी भाषा (इंगलिश) के शब्द कहेजावेंगे ॥ ३९ ॥ डिंगल है उपनाम जिसका ऐसी मरुभाषा भी कहीं कहीजावेगी, जिसमें अपभ्रंश भा षा अधिक होने से वीर रस में श्रेष्ठ है ॥ ४० ॥ इस ग्रंथ में फारसी आदि भा षा के शब्द कहीं कहीं कहेगये हैं जिनमें कितने ही शुद्ध और कितने ही अशु द्ध हैं, परंतु उनको ब्रजभाषा आदि देशभाषा में स्पष्ट मानरक्खा है. जैसे फी लं, सुतरँ, फौज हिम्मत, किम्मत, हंद, अवरंग और अकबर इत्यादि ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ इस ग्रंथ में कहीं वृत्तार्णव नामक ग्रंथ के और कहीं नंदितार्ड्य नाम क ग्रंथ के, और कहीं पिंगल सूत्र के मतानुसार छंद धरे हैं सो हे भूपति ! स ब ही आनन्द [दिव्य] जानो ॥ ४३ ॥ शेषनाग के कहेहुए बहुत जाति के छंद इस ग्रंथ में हैं सो सब ही तराजू में तुलेहुए से हैं जिनमें लेशमात्र भी अंतर नहीं है ॥४४॥ ककारादि वर्णों के साथ 'एकार' और 'ओकार' और किसी से

हं१ हिं२हुं३ लघु कहुँ इत७, अपभ्रंस अनुसार ॥ ४५ ॥
नागराजमत मैं लिखे, ए१ओ२मिलित रु सुद्ध ॥
इं१हिं२रह१संजोग के, आदि लघु हु१लघु बुद्ध ॥ ४६ ॥
दुव२मतमैं हि इते ७।५न कै, कहिय गुरुत्व बिकल्प ॥
यहहि जनावन हित हमहु, अक्खे कहुँ अति अल्प॥ ४७ ॥
संस्कृत मैंहु प्रजोग सौं, पुब्बलघु१हु लघुकेर ॥
हम सुहु आदि१मयूख मैं, बिदित कियउ इक१बेर ॥ ४८ ॥
कहुँक नाम सौं स्वार्थ मैं, कहुँक इक१ बचन ठोर ॥
है हकार बुद्धह लख्यो, अनिरुद्धह सुत घोर ॥ ४९ ॥
देसी प्राकृत काव्य मैं, रीति और इक१ तत्थ
जु लघु१आदिसंजोग के, सु गुरुगविभासा सत्थ ॥ ५० ॥
हम रक्खी जो छंद हद, नव्य सु सुनहु नरेस ॥
सजातीय संजोगके, आदि सदा गुरु एस ॥ ५१ ॥
यकारांत सयोग बिनु, बिजातीय संयोग ॥

बिना मिलेहुए [केवल] 'इं उं हं हिं हुं' ये सात वर्ण अपभ्रंशभाषा के अनुसार कहीं लघु हैं ॥ ४५ ॥ शेषनाग के मत में एकार और ओकार से मिले हुए सब वर्ण, और ये दोनों शुद्ध अर्थात् केवल स्वर, और इं हिं ये दोनों वर्ण इसी प्रकार रकार हकार के संयोगी अक्षरों के आदि का लघुवर्ण, इन सब को लघु ही जानना ॥ ४६ ॥ वृत्तार्णवे-नन्दिताख्य और नागराज इन दोनों के मत में ऊपर के ४५ वें दोहे में कहे हुए सात वर्ण और ४६ वें दोहे में कहे हुए पांच वर्ण विकल्प करके गुरु कहे हैं सो ईसी बात को जतलाने के लिये हम (ग्रंथकर्त्ता सूर्यमल्ल) ने भी इस ग्रंथ में बहुत थोड़े कहे हैं ॥ ४७ ॥ संस्कृत में भी ऐसा प्रयोग है कि इनके आदि का लघुवर्ण लघु ही रहता है सो हमने भी प्रथम मयूख में एक बार प्रसिद्ध किया है ॥ ४८ ॥ कहीं तो नाम के साथ स्वार्थ में और कहीं एक वचन के स्थान में हकार किया है जैसे बुद्ध के स्थान में बुद्धह और अनिरुद्ध के स्थान में अनिरुद्धह ॥ ४९ ॥ देशी प्राकृत के काव्य में एक और रीति है कि जो संयोगी का आदि लघु है वह विकल्प करके गुरु होता है ॥५०॥ हम (ग्रंथकर्त्ता सूर्यमल्ल) ने जो छंदों की नवीन मर्यादा रक्खी है सो हे नरेश सुनो जितने सजातीय अपने २ वर्ग के संयोगी हैं उन के आदि का वर्ण तो सदैव गुरु ही रहेगा ॥ ५१ ॥ और यकार है अंत में जिसके ऐसे संयोगी

आदि ल१ कौँ ग२ करैं यहै, लेहु समुझि बुधलोग ॥ ५२ ॥
सर्वनाम तद आदि के, बहुबचनन आदिष्ट ॥
नादि हांत संजोग सौँ, आदिलघु सु लघु इष्ट ॥ ५३ ॥
बहुरि हांत संजोग तँहँ, आदिमकार१ लकार२ ।
पूरब लघु कौँ लघु करैं, जेम सम्हार१ खिल्हार२ ॥ ५४ ॥
संस्कृत सम देसीयँ मैं, पदबिच को संजोग ।
गुरुहि करैं रु बिकल्प सौँ, पहिलो हे भूभोग ॥ ५५ ॥
जु पद अनादि समासमैं, तास आदि संजुत्त ।
ग करत लघुहिँ विकल्पसौँ, मकरध्वज प्रभुपुत्त ॥ ५६ ॥
सत्त७स्वरन बिच ग्राम प्रति, स्वादु श्रुतिन के व्रातं ।
जिन्ह समुझ्यो तिन्ह श्रवन है, इंतरन बिवँर दिखात ॥ ५७ ॥
सब इत्यादि निदर्सनौं, बुधजन लेहु बिचारि ।

को छोड़कर बाकी के जितने विजातीय संयोगी हैं वे आदि लघु को विकल्प करके गुरु करेंगे यह पण्डित लोग समझलेवें॥५२॥ सर्वनामों में तदादिकों को बहुवचन का आदेश होवेगा और नकार है आदि में जिसके ऐसे हकारान्त संयोगी के आदि का लघु लघु ही रहेगा॥५३॥ फिर मकार लकार है आदि में जिनके ऐसे हकारांत संयोगी के आदि का लघु भी लघु ही रहेगा जैसे "सम्हार" और "खिल्हार" इनके आदि का वर्ण गुरु नहीं हुआ॥५४॥ संस्कृत के समान देश भाषा की कविता में भी पद के मध्यवर्ती संयोगी के आदि का लघुवर्ण विकल्प करके गुरु होता है सो हे भूपति रामसिंह! यह रीति इस ग्रंथ में जानो ॥ ५५ ॥ जो पद समास के आदि में नहीं होवे उस उत्तर पद के आदि का संयोगी वर्ण पूर्व लघु को विकल्प करके गुरु करता है जैसे "मकरध्वज-प्रभुपुत्त" मकरध्वज इस समास में उत्तर पद ध्वज के आदि संयोगी "ध्व" ने पूर्व रकार को गुरु किया, और मकरध्वजप्रभु इस समास में उत्तरपद प्रभु के आदि संयोगी "प्र" ने पूर्व जकार को गुरु नहीं किया ॥ ५६ ॥ संगीत के सात स्वरों में ग्रामँ (स्वरों के समूह को ग्राम कहते हैं जो षड्ज, मध्यम और गान्धार इन नामों से प्रसिद्ध है) की श्रुतियों के [सात स्वरों के साथ बाईस श्रुतियां हैं] समूहं का स्वाद जिन्हों ने समझा उन के कान हैं और दूसरों के केवल छिद्रं हैं ॥ ५७ ॥ इनको आदि लेकर सब उदाहरणों को पण्डित लोग विचार लेवें. हमारी (ग्रंथ कर्त्ता सूर्यमल्ल) की प्रतिज्ञा से बाहिर

संधा बाहिर सव्द जो, हैं अशुद्ध सुहि हारि ॥ ५८ ॥
अनुस्वार पद आदि जो, अनुनासिक कहुँ तास ।
ज्यों अँगुष्ठ अंगुष्ठ इम, अतिहि बिरल थल आस ॥ ५९ ॥
सूरसेनि१मागधि२ कहुँक, जिम अेव्दनमैं जाम१ ।
दाव रमदि येँ लंकशे, रावन जावँ न राम ॥ ६० ॥
डिंगल बानी वृत्त कहुँ, गीतादिक हु विधेय ।
कहुँ कहुँ जवनन चरित बिच, उन्ह वृत्तहु आकेय ॥६१॥
वृत्त चरनके अंत लघु, सु यँहँ कबहु गुरु नाँहिं ।
त्यों अनुनासिक जुत्त लघु, इहिं गिराहु लघु आँहिं ॥६२॥
ब्रजभाखाके बिखयमैं, कथित प्रतिज्ञा काम ।
सुद्ध इतरं निजरीतिसौं, ठाई निज निज ठाम ॥ ६३ ॥
विहित विशेष्य१विशेसन२हु, वृत्तिमाँहिं बदलाय ॥

जो शब्द हैं वे ही हमारी हार (पराजय) है ॥ ५८ ॥ पद के आदि में जो अनुस्वार है उसको कहीं अनुनासिक कर दिया है जैसे अंगुष्ट का अँगुष्ठ. इस प्रकार बहुत ही थोड़े स्थलों पर है ॥५९॥ इस ग्रंथ में शौरसेनी और मागधी भाषा के शब्द भी आवेंगे उन की संख्या इतनी न्यून होवेगी कि जैसे वर्षों में प्रहर होवे जिसके ये उदाहरण हैं; जब तक रामचन्द्र नहीं है तब तक यह रावण राक्षस रमता है अर्थात् प्रसन्न रहता है यहां शौरसेनी के अनुसार तावत् शब्द का 'दाव' और रमते शब्द को 'रमदि' होगया है और यह के स्थान में 'ये' मागधी के अनुसार हुआ है. यावत के स्थान में ' जाव ' प्राकृत के अनुसार हुआ है ॥६०॥ गीतों को आदि लेकर डिंगल (मरु) भाषा के छंद भी कहे गये हैं और कहीं २ यवनों के चरित्र में उनके छंद [शैर, गजल, बैत आदि] कहे हैं॥६१॥ छंदों के चरण के अंत का जो लघु है वह इस ग्रंथ में कभी गुरु नहीं है (पिंगल सूत्र के मत से विकल्प करके गुरु होता है वैसा इस ग्रंथ में नहीं है) तैसे ही अनुनासिक सहित लघु है, वह इस ग्रंथ की भाषा में लघु ही है ॥६२॥ यह कहीहुई प्रतिज्ञा ब्रजभाषा में काम की है. बाकी की शुद्ध भाषायें अपने२ स्थलों पर अपनी २ रीति से रक्खी हैं ॥ ६३ ॥ कहेहुए विशेष्य विशेषण (गुण को बतानेवाला विशेषण और जिसकेगुण बताये जावें उसको विशेष्य कहते हैं) दोनों व्याकरण की रीति से समास में बदलजाते हैं जैसे ' वीरसिंह, इस वाक्य में वीर शब्द विशेषण और सिंह शब्द विशेष्य है ; इन दोनों का

अंत्यस्वर लघु दिग्धपन, अपभ्रंस मग आय ॥ ६४ ॥
पुष्ट होय बीरादि३तँहँ, लै द्वित्व२हु हल अंत ॥
क्त्वा१लौं क्त२रु इक१लोट६बच, मध्य२पुरुख इ लसंत ॥६५॥
या प्रबंध बिच अंकहू, धेर अर्थहित मानि ॥
कहुँ क्रम१ पर कहुँ व्यक्ति२ पर, कहुँक जाति३पर जानि ॥६६॥
कहुँ उद्देश्य४बिधेय५पर, जथासंख्य६पर जेम ॥
कहुँ संख्या७पर ते कहुँक, कुलपुरुखन८पर तेम ॥ ६७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ कृतिमर्य्यादाप्रतिज्ञानिश्चयनं द्वादशो १२ मयूखः ॥ १२ ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

दोहा

जन्मदिवस चहुवान१को, या ग्रंथ२हुको आहि ॥
गनित तँहाँ सर्गादि तैं, किय सिद्धांत निबाहि ॥ १ ॥
गनिततंत्र सिद्धांतकी, फिरि लिखिहैं कहुँ ठाम ॥

समास करने से वीरसिंह विशेष्य होगया ; और अपभ्रंश भाषा में चरण के अंत का लघु स्वर दीर्घ होजाता है सो उसकी रीति से इसमें भी आवेगा ॥ ६४ ॥ जहां वीर, भयानक और रौद्र ये तीनों रस पुष्ट होते होवें वहां अंत का हल् द्वित्व कियाजायगा और क्त्वा व त प्रत्यय और लोट् लकार के प्रथम और मध्यम पुरुष के एकवचन में ह्रस्व इकार होवे. जैसे कृत्वा, कृतम्, करोतु, और कुरु, इन संस्कृत रूपों के स्थान में 'करि' यह रूप होवेगा ॥ ६५ ॥ अर्थ का स्पष्ट बोध होने के लिये इस ग्रंथ में अंक भी धरे हैं वे कहीं तो गणना का क्रम बताने के लिये कहीं व्यक्ति (समुदाय का नाम जाति और एक एक के जुदे नाम को व्यक्ति कहते हैं) कहीं जाति, कहीं प्रयोजन, कहीं योजना (एक के साथ दूसरे का संबंध जोड़ना] कहीं यथासंख्या, कहीं गिनती और कहीं पीढियां बतलाने के लिये अंक दिये हैं ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में ग्रंथ की मर्यादा और नियम दृढ करने का बारहवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ १२ ॥

चहुवाण का जो जन्मदिन है वही इस ग्रंथ का जन्मदिन है तहां सर्गादि [सृष्ट्यादि अर्थात् कल्पादि] से सिद्धांत में गणित का निर्वाह कियागया है ॥ १ ॥ वह गणित तंत्र और सिद्धान्त की रीति [युगादिक गणित तंत्र से और

तो तत्थहि लिखिजायहैं, नियत जथाविधि नाम ॥ २ ॥
और गनित सब ग्रंथमैं, गिनहु करन अनुसार ॥
सक इक विक्रमराजको, इतर न गिनहु उदार ॥ ३ ॥
इहैं वाक्यसमाप्ति कहुँ, अर्ध१सार्ध२मुख अंत ॥
गाथावृत्तहिं तत्थ गिनि, मेटहु दोस महंत ॥ ४ ॥
कहुँ बहुवृत्तन लंघिकैं, जुरत जु अन्वय जाय ॥
वडे प्रवंधनमैं सु विधि, समुझहु बुधसमुदाय ॥ ५ ॥
संसमसन१ विस्तर२स्रवनकैं, इष्ट श्रवन हितआँहिं ॥
इहिं क्रम सिंहवलोकिनी, मंजुकथा यामाँहिं ॥ ६ ॥
सूचीकोहु समासकरि, अब करियत उद्देस ॥
सुनन देहु अवसर सु पहु, नामित निखिल नरेस ॥ ७ ॥
प्रथम वंस चंडासि१को, विधिक्रमजुत विस्तार ॥

कल्पादिक गणित सिद्धांत में और शकादिक करण में होती है] से फिर कहीं लिखेंगे तौ वहीं उसकी रीति और उसका नाम लिखदेंगे ॥ २ ॥ और गणित जो इस ग्रंथ में है वह ग्रहलाघव आदि करण ग्रंथों के अनुसार जानो परन्तु ज्योतिष के मत से संवत् कई प्रकार के होते हैं उन सब को छोडकर केवल विक्रम राजा का ही संवत् जानो जिसका चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से प्रारम्भ होता है इसके सिवाय अन्यमत जानो ॥ ३ ॥ इस ग्रंथ के छंदों में वाक्य की समाप्ति कहीं आधे छंद में कहीं डेढ छंद में और कहीं आदि अंत में होवेगी. वहां बडे लोग गाथावृत्त अर्थात् कथा के वृत्तांत को अच्छीतरह जानकर वाक्ययोजना के भ्रम को मिटालेवें कथा के संबंध से भी अन्वय योजना का बोध होता है ॥ ४ ॥ कहीं बहुत छंदों को लांघ कर [दूर पर जाकर] अन्वय जुडेगा यह बडे ग्रंथों की रीति है सो पंडित लोग समझ लेवें ॥ ५ ॥ पहले संक्षेप से और फिर विस्तार से कथा सुनना सब को लाभदायक और प्रिय है. इसीक्रम से इस ग्रंथ में सिंहावलोकिनी [सिंह आगे को चलताजाता है और पीछे को देखताजाता है इसीप्रकार एकवार कहीहुई कथा को फिर वारंवार कहना सिंहावलोकिनी कथा कहलाती है] सुंदर कथा है ॥ ६ ॥ संक्षेप से जतलाईहुई कथा का अब विस्तार से कीर्तन करते हैं सो हे सपूर्ण राजाओं को नमानेवाले श्रेष्ठ प्रभु रामसिंह! सुनने को समय देओ ॥ ७ ॥ हे राजाओं के कंधे झुकानेवाले रावराजा रामसिंह इस ग्रंथ में पहले तौ चहुवाण का वंश

इतर छत्रियन २बंसजुत, बहुर सु बीरप्रसार ॥ ८ ॥
असुर१ अमर२ मुनि३ आदिकैं, बिबिधसर्ग१गुन२बंस३ ॥
बिस्तरसौं कबिबंस४ बलि, याबिच नृपउत्तंस ॥ ९ ॥
इम अग्गैं पुरुषार्थ चउ,४धर्म१अर्थ२ अरु काम३ ॥
मोक्ष४हु अंगउपांगजुत, रचिहौं कृति अभिराम ॥ १० ॥
बिद्या१४।६४।७२ सब इनमैं हि बलि, सूची१फलस्तुति२सत्थ॥
कहिँ सअंग पूरन करहिँ, अंजनमतिदृग अत्थ ॥ ११ ॥
बंसप्रकासक ग्रंथ यह, कविकुलपूरन काम ॥
जानहु याको सुकविजन, बंसभास्करहि नाम ॥ १२ ॥
एक१अयन बिच बंसबिधि, नानानृपनचरित्र ।
अपर२अयनबिच अंगजुत, चउ४पुरुषार्थ पवित्र ॥ १३ ॥
या रविके ए दुव२अयन, इनके बारह१२अंस ।
तेही बारह१२भेद हैं, दिनकरके निर्दंस ॥ १४ ॥
बंशचरितबिच अट्ठ८रशि, पुरुषार्थनबिच च्यार४ ।

विधि पूर्वक क्रम के साथ विस्तार से और दूसरे क्षत्रियों के वंश सहित बहुत वीर रस का प्रकाश ॥ ८ ॥ दैत्य, देवता, मुनियों को आदि लेकर गुण और वंश के साथ नाना प्रकार की सृष्टिरचना, फिर विस्तार पूर्वक कवि [ग्रंथ कर्त्ता सूर्यमल्ल] का वंश ॥ ९ ॥ इसी प्रकार आगे चारों पुरुषार्थ-धर्म, अर्थ, काम और अंग उपांग सहित मोक्ष भी इस ग्रंथ में सुंदर रचूंगा ॥ १० ॥ इन्हीं चारों पुरुषार्थों में पहले कही हुई १४ विद्या ६४ कला और मतान्तर से ७२ कला भी मानी जाती हैं जिनको फिर फलस्तुति के साथ कहकर अंजनमतिदृग (नेत्रों को कज्जल से शोभित करते हैं ऐसे अथवा काव्य के मत से " नेत्रांजन " एक न्याय है, जिसका भावार्थ यह है कि नेत्रों में लुकांजन लगाने से छिपी हुई वस्तुएें दीखने लगतीं हैं, इसी प्रकार मति (बुद्धि) रूपी नेत्रों में अंजन करके सब विद्याएें दिखाऊंगा) अर्थ से पूर्ण करूंगा ॥ ११ ॥ यह ग्रंथ वंश का प्रकाश करनेवाला और कवियों की कामना को पूर्ण करने वाला है इस कारण से श्रेष्ठ कवि लोग इस का नाम वंशभास्कर ही जानें ॥ १२ ॥ एक अयन में वंश के भेद (प्रकार) और अनेक राजाओं के चरित्र और दूसरे अयन में पवित्र चारों पुरुषार्थ हैं ॥ १३ ॥ इस सूर्य के दोनों अयन, और इन अयनों के बारह अंश (विभाग) हैं वे ही सूर्य के निर्दोष बारह भेद

याबिच सहँस१०००मयूख हैं, तेहि मयूख निहारि ॥ १५ ॥
चविहँ धर्मादिक चउर४,अक्खि जनन चहुवान ।
प्राकृत देसी प्रक्रियाँ, बरनहिं तँहँ सविधान ॥ १६ ॥
सब्दनके संस्कार सब,ह्वैहैं तत्थहि ख्यात ।
संज्ञासब्दनिपात जे, कछुक कहे यँहँ जात ॥ १७ ॥
सत्रुसल्ल१ कहियत सता२,दूदा१दुर्ज्जनसल्ल२ ।
अजितसिंह१अर्ज्जुन१उभय२,उभय२अजा२अजमल्ल ॥ १८ ॥
अभयसिंह१अभमल्ल२करि, हम्मीँ१करि हम्मीर ।
गोपीनाथ१हिं नाथ२करि, व्यवहार४हु कविबीर ॥ १९ ॥
उदयसिंह१ऊदा२कहत,फतैसिंह१फतमल्ल२ ।
भावसिंह१भाऊ२तिमहिं, तेजसिंह१तेजल्ल२ ॥ २० ॥
त्यौं प्रतापसिंह१सु पता२,पृथ्वीसिंह१सु पित्थ२ ।
पित्थल३ सुहि जसवंत१ पुनि, जसा२हय न अवहित्थ ॥२१॥
खंग१कहत खंगार२कौं, कृष्ण१किसन२ कहुँ गेय ।
विष्णु१बिसन२करि कहुँ बिहित, जैत१जयी२अभिधेय ॥२२॥
अन्न१गिनहु अनिरुद्ध२कहुँ, बल्ल१रु बल्लू१बलवंत२ ।
अरिसिंह१सु अरसी२ उदित, हेम१गँदित हेमंत२ ॥ २३ ॥
संगा१कहुँ संग्राम२हू , कल्ल१कला२ कल्ल्यान३ ।

हैं ॥ १४ ॥ इन में से आठ सूर्य (राशि) तो वंशचरित्र [इतिहास] में और चार राशि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरुषार्थों में हैं. ग्रंथकर्त्ता ने पूर्व दोहे में सामान्य नियम बता कर यहां विशेष नियम बताया है. और इस ग्रंथ में एक हजार मयूख हैं उनको ही सूर्य के सहस्र किरण जानो ॥ १५॥ चहुवाण के वंश को कहकर धर्मादिक चारों पुरुषार्थ कहेंगे वहां पर देशी प्राकृत की शब्दसाधनिका रीति पूर्वक वर्णन करेंगे ॥ १६ ॥ वहीं पर शब्दों के संस्कार प्रसिद्ध होवेंगे, परंतु थोड़े से नामवाची शब्द निपात [व्याकरण की एक क्रिया है] से सिद्ध हैं उन्हें यहां कहते हैं ॥ १७ ॥ जैसे शत्रुसाल को 'सता' दुर्जनसाल को 'दूदा' अजितसिंह को 'अजा' अर्जुन को 'अजमल्ल' इत्यादि उदाहरण आगे स्पष्ट हैं ॥ १८ ॥ ४ व्यवहार में लाना ५ यह आकार को गुप्त करने वाला [छिपा रहनेवाला] नहीं है ६ नामवाले ७ कहा.

नरपाल१हिं नप्पा२ गिनहु, जिम सूजा१हु सुजान२ ॥२४ ॥
विजयसिंह१बिजपाल२कहुँ, हप्पा१कहुँ हरपाल२ ।
जयलाल१सु जल्ला२ जला, गुल१गुलाब२रु गुलाल ॥ २५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो प्रथमराशौ नियतशक१गणित२कथान्वय३समस्तसूची ४ ग्रन्थाभिधान५तत्तपनतादात्म्य६संज्ञानिपात७समर्थनं त्रयोदशो१३मयूखः ॥ १३ ॥

अथ यथातथसविस्तरवन्हिवंशप्रारम्भः । शुद्धप्राकृतभाषा ॥

गीई ॥

सुरमउडघट्टचलणं सङ्खगयाचक्कपोम्मसेहिअरं ॥
लच्छीकोच्छुहरञ्जिअवच्छं वन्देम्मिणिहिलपहुं ॥ १ ॥
णवरि कउहपङ्गुरणं णमो वि वामङ्गचाउँडासुहग्रं ॥
तइअ३विलोअणभिउडीवङ्कपडणदड्ढ वम्महं हीरं ॥ २ ॥
जास किवा पिहुलसुहा कव्वं कारेइ मुद्धमइणा वि ।
सो सुरनअपावीढो मए पसाअं करेउ गणरायो ॥ ३ ॥
भसलरुअराअरसिओ सुणडाडणडेर नट्टपच्चूहो ॥

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में संवत् का निश्चय, गणित, कथा का अन्वय अर्थात् संबध जोड़ने का कथन, सब सूची, ग्रंथ का नाम, इस ग्रंथ की सूर्य के साथ समानता और निपात से सिद्ध हुए नामों का निश्चय करनेवाला तेरहवां मयूख समास हुआ१३।अब यथार्थ विस्तार पूर्वक अग्निवंश का प्रारंभ किया जाता है.देवताओं के मुकुटों से घिसे जाते[सेवन किये जाते]चरण जिनके शंख,गदा,चक्र,पद्म इन से शोभित हैं हस्त जिनके,लक्ष्मी और कौस्तुभ से शोभित है वक्षःस्थल(हृदय)जिनका ऐसे संपूर्ण के स्वामी विष्णु भगवान् कोप्रणाम करता हूं॥१॥केवल दिशा ही है वस्त्र जिनके,वाम अंग में चामुंडा (पार्वती) से शोभित,तीसरे नेत्र की भृकुटी के टेढेपड़ने से दग्ध किया है कामदेव को जिन्हों ने ऐसे महादेव [शिव]को नमस्कार करता हूं॥२॥बहुत सुख को करनेवाली जिनकी कृपा है सो मूर्ख बुद्धिवाले पुरुष से भी काव्य करवालेती है और जो देवताओं करके प्रणाम कियागया है पादपीठ(चरणचौकी)जिनका ऐसे गणेश मुझ

गीतिः॥ सुरमुकुटघृष्टचरणं शंखगदाचक्र पद्मशोभिकरम्। लक्ष्मीकौस्तुभरञ्जितवत्सं वंदे. विष्णुमखिलप्रभुम् ॥१॥
केवलककुप्प्रवरणं नमामि वामांगचामुण्डासुभगम्। तृतीयविलोचनभृकुटीवक्रपतनदग्धमन्मथं हीरम् ॥ २ ॥
यस्य कृपापृथुलसुखी काव्यं कारयति मुग्धमतिनापि। स सुरनतपादपीठो मयि प्रसादं करोतु गणराजः ॥ ३ ॥

लम्बअरो सिरिणाढो महं वियासउ मणं सुणायणेहिं ॥ ४ ॥
वीणाज्झणिचलसीसा चन्दमुही सरअचन्दिमाव्व सिआ ॥
अत्ता सरस्सई सा जयउ पउमपण्णलोअणमणोण्णा ॥५॥
अह अ सिरिं दुग्गांवि भाणुं वासाइणो तहा मुणिणो ॥
गुरुणो पिउणो कइणो णन्तूण किसाणुवंसमम्हि भणं ॥ ६ ॥
प्रायोब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

दोहा

संतचितघनआनंदनिज, आश्रयके आभास ॥
सत्वरजस्तम३समप्रकृति, लयो छोह सुखलास ॥ ७ ॥
[२]ज्यौं चुंबक सामीप्य सन, चेष्टित व्है जड लोह ॥
अधिष्ठान बिच प्रकृति इम, सुवन लगी संदोह ॥ ८ ॥
चेष्टित[३] अय मुनि चुंबकहिं, घिसि जिम जनहिं कृसानु ॥
त्यौं महान१ हुव प्रकृति सन, प्रज्ञा रूप प्रमानु ॥ ९ ॥
जिहिं कृसानु सन होत इम, ज्वाल१ताप२आलोक३ ॥

पर अनुग्रह करो॥३॥भ्रमरों की गुंजाहट रूपी राग के सुनने में रसिक और सुण्डा-रूपी दंड करके नष्ट किये हैं विघ्न जिन्होंने ऐसे भक्तों पर स्नेहवाले लंबोदर (गणेश) सुंदर नेत्रों (कृपादृष्टि) करके मेरे मन को प्रफुल्लित करो ॥ ४ ॥ वीणाध्वनि की प्रशंसा के लिये हिलाया है शिर जिन्होंने, चंद्रमा के तुल्य है मुख जिनका, शरद् ऋतु की चांदनी के तुल्य श्वेतवर्ण और श्वेत कमल पत्र के तुल्य हैं नेत्र जिनके ऐसी मनोज्ञ (सुन्दर) पूज्य सरस्वती अपने उत्कर्ष को प्रकट करे ॥ ५ ॥ इस से अनंतर लक्ष्मी, दुर्गा देवी, सूर्य, व्यासादि मुनि, पिता और कवि इनको नमस्कार करके अग्निवंश को कहता हूं ॥ ६ ॥

सत्वगुण, रजोगुण, तमोगुण की साम्यावस्था (प्रकृति), अपने आधार सच्चिदानन्द के प्रकाश से उत्साह और सुख पूर्वक नृत्य करनेलगी ॥ ७ ॥ जैसे चुम्बक की समीपता से जड़ लोह चेष्टा युक्त होता है ऐसे ही प्रकृति जो जड़ है वह परब्रह्म में समूहों को जनने लगी । ८ । जिस प्रकार मुनि लोग चुम्बक से चेष्टित लोहे को घिसकर अग्नि पैदा करते हैं इसी प्रकार प्रकृति से बुद्धि रूप महत्तत्व पैदा हुआ ॥ ९ ॥ जिस प्रकार अग्नि से ज्वाला-

भ्रमररुतरागरसिक: शुण्डादण्डेननष्टप्रत्यूहः । लम्बोदरः स्निग्धो मम विकासयत मनः सुनयनैः ॥ ४ ॥
वीणाध्वनिचलशीर्षा चन्द्रमुखी शरच्चन्द्रिकेव सिता ॥ आर्या सरस्वती सा जयतु पद्मपर्णलोचनमनोज्ञा ॥५
अथ च श्रियं दुर्गामपि भानुं व्यासादींस्तथा मुनीन् ॥ गुरून् पितॄन् कवीन् नत्वा कृशानुवंशमहं भणामि ॥६

यौं महान सन त्रि३बिध हुव, अहंकार जगओक ॥ १० ॥
बासुदेव१ चुंबकतरह,संकरखन२अयसंग ॥
सुचि पज्जुरण३रु तापमुख,अनिरुद्ध४जु अहमंग ॥ ११ ॥
अहमज्वाल जिम सात्विक जु,बैकारिक१ अभिधान ॥
दूजो२राजस ताप जिम, तैजस२नाम प्रमान ॥ १२ ॥
जो तामस आलोक जिम, सो भूतादि३तृतीय३ ॥
तिन तीनन३सन देव१अरु, गो२पुनि भूत३गरीय ॥ १३ ॥
दिसा१पवन२रवि३बरुन४पुनि,दस्र्त्रं५अनल६देवेस७ ॥
विष्णु८रु मित्रं९प्रजेस१०ससि,११बैकृत१भव गन एस ।१४।
श्रुति१त्वक२दृक३जिब्भा४नभा५, ज्ञानकरन ए५जानि ॥
वाक१।६पानि२।७पय३।८गुद४।९सिसन५।१०,
कर्मकरन त्यौं मानि ॥ १५ ॥
ए दस१०इंद्रिय ग्यारहौं११,मन जु उभय२गतिमान ॥
यह गन तैजस२तैं भयो, बैकारिक१भवथान ॥ १६ ॥

(झाळ), ताप और आलोक (प्रकाश) होता है इसी प्रकार महत्तत्व से संसार का घर रूपी तीन प्रकार का अहंकार हुआ ॥ १० ॥ चुम्बक की भांति श्रीकृष्ण, लोहे के संग के समान बलदेव, अग्नि समान पज्जुरण (प्रद्युम्न) और ताप आदि के समान अनिरुद्ध ये अहंकार के अंग से अंतरात्मा हैं ।११। ज्वाला के समान सत्वगुण अहंकार, जिसका वैकारिक (देवताओं की उत्पत्ति का कारण) नाम है, ताप के समान दूसरा रजोगुण, जिसका तैजस (इंद्रियों की उत्पत्ति का कारण) नाम है ॥ १२ ॥ जो प्रकाश के समान तीसरा तमोगुण है वह भूतादि (सब जगत् की उत्पत्ति का कारण) नामवाला है इन सत्त्वगुण, रजोगुण, तमोगुण तीनों अहंकारों से देवता, इंद्रिय और पंचभूत क्रम से उत्पन्न हुए ॥ १३ ॥ प्रकृति, विकृति और प्रकृतिविकृति यह तीन प्रकार की सृष्टि है जिनमें से सत्वगुण विशिष्ट अहंकार की विकृति सृष्टि से दिशा, पवन, सूर्य, वरुण, अश्विनीकुमार, अग्नि, इन्द्र, विष्णु, मित्र (देवता विशेष) प्रजापति और चन्द्रमा उत्पन्न हुए ॥ १४ ॥ कान, त्वचा, नेत्र, नासिका, जिह्वा ये पांचों ज्ञानेन्द्रिय और वचन, हाथ, पग, गुदा, लिंग ये पांचों कर्मेन्द्रिय और ग्यारहवां मन जो ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय दोनों में माना जाता है ये रजोगुण विशिष्ट तैजस अहंकार के विकार से हुए ॥ १५-१६ ॥ आकाश का

शब्द१गगन१सपरस२पवन२, रूप३तेज०रस४बारि४ ॥
गंध५मही५भूतादिभव,यहै दसक१०निरधारि ॥ १७ ॥
भये अनुक्रमतैं दस१०रु, नभगुन सब्दहि एक ।
सब्द१रु सपरस१ पवनगुन, जानहु बिहित बिवेक ॥ १८ ॥
तीन३तेज गुनरूप जुत, जलगुन रसजुत च्यारि४ ।
पंच५गंधजुत भूमिगुन, ए इम मिलित निहारि ॥ १९ ॥
जैसैं होवत ज्वालतैं, धपडाहट बिख्यात ।
तिम करनन के देवता११,वैकारिकैं सन जात ॥ २० ॥
जैसैं होवत तापतैं, पाकादिक फल सिद्ध ।
इम तैजस सन उप्पजिय, इंद्रिय ग्यारह११इद्ध ॥ २१ ॥
अरु होवत आलोकतैं, वस्तुन दरसन जेम ।
भूतादिकतैं पंच५गुन, पंच५भूत हुव एम॥ २२ ॥
अप्रमेय अव्यक्तसन, भयो जु तोक महान ।
दस१०म अंस ताको त्रि३विध, अहम गिनहु चहुवान॥२३॥
अहंकारको दसम१० लव, सब्दगुन सु आकास ।

गुण शब्द, पवन का गुण स्पर्श, तेज [अग्नि] का गुण रूप, जल का गुण रस, पृथ्वी का गुण गन्ध, यह दश का समुदाय तमोगुण विशिष्ट भूतादि अहंकार से हुआ जानो ॥ १७ ॥ ये दशों अनुक्रम से हुए और आकाश में गुण केवल शब्द,पवन में शब्द स्पर्श दोनों,अग्नि में शब्द स्पर्श रूप तीनों, जल में शब्द स्पर्श रूप रस चारों, और पृथ्वी में शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध ये पांचों मिले हुए जानो ॥ १८-१९ ॥ जिस प्रकार ज्वाला से " धड़पड़ धड़पड़ " इस प्रकार का शब्द प्रसिद्ध होता है तैसे ही एकादश इन्द्रियों के देवता सत्वगुण से उत्पन्न हुए ॥ २० ॥ जिसप्रकार अग्नि से पाक आदि फल सिद्ध होते हैं इसी प्रकार रजोगुण से निर्मल ग्यारह ईन्द्रियां उत्पन्न हुई ॥ २१ ॥ और जिसप्रकार प्रकाश से वस्तुओं का दर्शन (दिखाई देना) होता है तैसे ही तमोगुणसे पांच गुणवाले पंचभूत इस प्रकार हुए ॥ २२ ॥ जिसका प्रभाव नहीं जानाजावे और जो दीखने में नहीं आवे ऐसी प्रकृति से जो महत्तत्व पैदा हुआ उसके दशम अंश को हे चहुवाण रामसिंह ! तीन प्रकार का अहंकार जानो ॥ २३ ॥ उस अहंकार के दशमांश से शब्द गुणवाला आकाश हुआ, उस आकाश से

सपरसगुन पवमान पुनि, दसम१०अंस हुव तास ॥ २४ ॥
दसम१० अंस पवमानको, तेज रूपगुन जानि ।
दसम१०भाग पुनि तेजको, रसगुन बारि बखानि ॥ २५ ॥
दसम१०अंस हुव नीरको, भूगुन गंधउपेत ।
ए महदादिक आवरन, सप्त७भये सब खेत ॥ २६ ॥
अंत यहै छिति आवरन,भित्तिरूप इहिं मान ।
जोजन अर्बुद पंच५०००००००० मित, सुनियत तंत्रै निदान ॥ २७ ।
अरु अंतर या भित्तिके, इहिं ५०००००००० प्रमान अवकासै ।
तिहिं बिच पंचक५ भूतभव, बहुबिध सुनहु बिलास ॥ २८ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ प्रकृति सर्गपरम्परोद्देशनं चतुर्द्दशो १४ मयूखः ॥ १४ ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

दोहा

अंडकटाहकउभय२ बिच, अर्णवछीर निधान ।

दशमांश से स्पर्श गुणवाला पवन, और पवन के दशमांश से रूपगुणवाला अग्नि हुआ, अग्नि के दशमांश से रस गुणवाला जल और जल के दशमांश से गंध सहित भूमि हुई ये महदादिक सात *आवरण तो सब क्षेत्र रूप हुए ॥ २४--२५--२६ ॥ और अंत का आवरण यह भूमि भींति के आकार हैं जिस का प्रमाण पांच अड़ब (पचास करोड़) योजन का शास्त्रों में निश्चय किया सुना है और इस भांति के बीच में इतना ही आकाश है जिसके बीच में पंच-भूत हुए जिनके बहुत प्रकार के विलास सुनो ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में प्रकृति और सृ-ष्टि परंपरा के कथन का चौदहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १४ ॥

पुराण का मत है कि सृष्टि के आदि में ब्रह्मा ने एक अंडा बनाया फिर उसके दो टुकड़े करके एक टुकड़े से स्वर्ग और दूसरे से पृथ्वी बनाई और इन दोनों के बीच में आकाश रचा, इन दोनों अंडकटाहों के बीच में क्षीरसागर

*विष्णुपुराण के प्रथम अङ्क के दूसरे अध्याय में सात आवरण इस प्रकार लिखे हैं कि अंडकटाह के पहला आवरण पृथ्वी का, जिस से दशगुणा आवरण जल का, जलसे दश गुणा अग्नि का, अग्नि से दशगुणा पवन का, पवन से दशगुणा आकाश का, आकाश से दशगुणा तामसावरण और तामस से दशगुणा अहंका-र का आवरण है ॥

नारायन तँहँ व्यक्तहुव, आलुक तल्पसयान ॥ १ ॥
नारायन की नाभिसन, लंबनाल हुव पद्म¹।
चतुरानन हुवपद्मसन, जो सब सर्गन² सद्म ॥ २ ॥
गगन³ गिरा उपदेसकरि, तपस बिसेस कुमाय ।
पहिलैं मानस सर्ग किय, लोकेस्वर हित लाय ॥ ३ ॥
तँहँ मरीचि⁴मुख सप्त७ऋषि, पुनि नारद भृगु दच्छ ।
इत्यादिक बिधिदेहसौं, उपज्यो सर्जन अच्छ ॥ ४ ॥
पुनि निजतनु द्वै२भाग करि, किय बिधि मिथुन⁵२बिचारि ।
इक स्वायंभुव१आदिमनु, सतरूपा२पुनि नारि ॥ ५ ॥
सतरूपा मनुसौं जन्यौं, संतति पंचक५बाम ।
दुव२सुत इक उत्तानपद१,अपर⁶ प्रियव्रत२नाम ॥ ६ ॥
तनया त्रय३आकूति१अरु,देवहूति२पुनि जानि ।
त्यौं प्रसूति३इनके रमन⁷, तीन३हि कहत बखानि ॥ ७ ॥
बिधि सुत रुचि१⁸व्याही यहै, मनुदुहिता आकूति ।
बिधिसुत कर्द्दम२मध्यमो⁹२,बिधिसुत दच्छ¹⁰३प्रसूति३॥ ८ ॥
रुचिसौं तिय आकूति बिच, बिष्णुजज्ञ१अवतार ।
अंस रमा¹¹को दच्छिणा २,यह हुव मिथुन२उदार॥ ९ ॥
जनैं दच्छिणा जज्ञ¹²सौं द्वादस१२सुत तोसा¹³दि ।

रूपी घर में शेष शय्या पर श्रीनारायण प्रत्यक्ष हुए १ कमल २ सृष्टि रचना का घर है ३ आकाश वाणी के उपदेश से बहुत तपस्या करके उस लोकेश्वर (ब्रह्मा) ने प्रथम मनुष्यों की सृष्टि रची ४ मरीचि को आदि लेकर ॥ इनको आदि लेकर ब्रह्मा के देह से उत्तम सृष्टि उत्पन्न हुई ॥ ४ ॥ फिर अपने शरीर के दो भाग करके ब्रह्मा ने जोड़ा५बनाने का विचार किया जिससे आदि मनु स्वयंभू और शतरूपा नामक स्त्री हुई ॥ ५ ॥ ६ दूसरा ७ इनके पयों के नाम कहते हैं ॥ ७ ॥ मनु की पुत्री आकूति तो ब्रह्मा के पुत्र रुचि को ८व्याही, इसी प्रकार ब्रह्मा के पुत्र कर्दम को देवहूति और दक्ष को प्रसूति व्याही ॥ ८ ॥ रुचि से आकूति के गर्भ में विष्णु का अंश यज्ञावतार और लक्ष्मी का अंश दक्षिणा नाम कन्या यह जोड़ा उत्पन्न हुआ ॥ ९ ॥ उस यज्ञावतार

तुसितदेव संज्ञक भये,ते सब इंद्रभटादि ॥१०॥
देवहूति बिच दसक१० हव, कर्द्दमतैं सुभकार ।
नव९कलादि तनया तनय, कपिल१०सु हरिअवतार ॥ ११ ॥
कला१सुता कर्द्दम दई, मुनि मरीचि१के अत्थ ।
अनसूया२श्रद्धा३उभय२,अत्रि२अंगिरा३।२सत्थ ॥ १२ ॥
त्यौं मुनिराज पुलस्त्य४कौं, सुता हविर्भू४दीन ।
पुलह५हिं गति५क्रतु६कौं क्रिया६,भृगु७कौं ख्याति७प्रबीन। १३ ।
अरुंधती८जु बशिष्ठ८हित, सांति९अथर्वा९काज ।
जामाता[2] विधिसुत बरे,ए९कर्द्दम मुनिराज ॥ १४ ॥
पुनि मरीचि[3] सन पुत्र दुव२,कला[4] जनैं अभिराम ।
इक्क१कस्स्यप१जगको जनक[5], अपर पूर्णिमा२नाम ॥ १५ ॥
अनसूया बिच अत्रि सन, हरि हुव दत्तात्रेय१ ।
सिव दुर्वासा२द्रुहिन सासि, ३इन नामन अभिधेय[6] ॥ १६ ॥
श्रद्धा बिच मुनि अंगिरा, संतति छक्क६उपाय ।
सुत दुव२इक्क१उतत्थ्य१पुनि, सुरगुरु जीव[7]२सुभाय ॥ १७ ॥
सुता सिनीवाली३।१कुहू४।२,राका५।३अनुमति६।४नाम॥
दीर्घतमा१सु उतत्थ्यतैं, कच१गुरुतैं[8] हुव ताम ॥ १८ ॥
मुनि पुलस्त्यतैं दुव२तनय, भये हविर्भूजात[9] ।
इक अगस्ति१वातापिरिपु, अपर बिश्रवा२ख्यात ॥ १९ ॥
तनय बिश्रवातैं भयो, धनद[1]१इडविडामाँहिं ।

से दक्षिणा ने तोष आदि बारह पुत्र प्रकट किये जो इंद्र के आदि उमराव तुषित नाम के देवता हुए ॥ १० ॥ कर्दम से देवहूति में कला आदि नव कन्यायें और एक पुत्र दश संतान हुए जिनमें कपिलदेव हरि (विष्णु) का अवतार हुए ॥ ११ ॥ २ ब्रह्मा के इन नव पुत्रों को कर्दम मुनि ने जमाई (दामाद) किया. ३ मरीचि से ४कला ने सुंदर दो पुत्र प्रकट किये ५ एक कश्यप जो संपूर्ण संसार का पिता है ६ नामवाले हुए ७ बृहस्पति ८ बृहस्पति के कच नामक पुत्र हुआ ९ पुलस्त्य से हविर्भू नामक स्त्री में १०वातापि नामक असुर को मारनेवाला अगस्त्य ११ इडविडा के गर्भ से कुबेर हुआ १ विश्रवा के केशिनी के गर्भ में रावण कुं-

रावनादि४रक्खस भये,उदर केसिनी ऑंहिं ॥ २० ॥

कर्मश्रेष्ठ मुख३पुलहतैं, गति सुत तीन३उपाय ।

सट्ठि सहँस ६००००क्रतुतैं क्रिया, बालखिल्ल्य उपजाय ॥२१॥

अरुंधती हु वशिष्ठ सन, चित्रकेतु१निजजामैं ।

पुनि सुरोचि२विरजा३तथा, मित्र४रु उल्वण५नाम ॥ २२ ॥

वसुभृद्यान६द्युमान७अरु, सक्ति८तनय इत्यादि

महासती जननी भई,सुफल पतिव्रतसाँदि ॥ २३ ॥

सांति अथर्वा तैं जनैं,पुत्र तथा मतिपीनें ।

तेहु धृतव्रत१दध्यच२रु, अश्वसिरा३ए तीन३ ॥ २४ ॥

ख्याति जनैं भृगुसौं तनय,तीन३रु तनयतीन३ रु तनयाँ एक१।

धाता१रु विधाता२रु कवि३,बहुरि रमा१।४सुविवेक । २५

मेरुसुता आयति जन्यौं, धाता हिंतुं मृकंड१ ।

मार्कंडेय१मृकंडसुत, हुव मुनि योगअखंड ॥ २६ ॥

नियति बिधातातैं जन्यौं, पुत्र प्रान१अभिधान ।

बेदसिरा१हुव प्रानकैं, तनय महामतिमान ॥ २७ ॥

कवि३भृगु सुत तीजो३कह्यो,सुक्र४भयो तस ख्यात ।

बहुरि पुलोमामैं च्यवन४,चोथो४भृगुसन जात ॥ २८ ॥

जनी प्रसूति हु दच्छतैं घनी सुता अभिरामैं[१२] ।

तिनमैं तेरह१३धर्मकौं, श्रद्धादिक१३दिय बामैं ॥ २९ ॥

पितरनकौं दीनी स्वधा१।१४,पावककौं स्वाहा रु १।१५।

पतिव्रता सिवकौं सती१।१६,दई सोलहीं१६चारु ॥ ३० ॥

ससिकौं अश्विनि आदि१७दिय,तनया सत्ताबीस२७ ।

कर्या और विभीषण हुए१कर्मश्रेष्ठ आदि पुलह से गति नामक स्त्री में तीन पुत्र हुए२क्रतु से क्रिया नामक स्त्री में साठ हजार२बालखिल्य ऋषि हुए३पुत्र ४पति-व्रतनिष्ठि५तीव्र बुद्धिवाले६तीन पुत्र और एक पुत्री७से८प्राणनामवाला ९भृगु का तीसरा पुत्र जो कवि कहा गया है वह "शुक्र" इस नाम से १०प्रसिद्ध हुआ११भृगु से हुआ १२सुन्दर१३श्रद्धा को आदि ले तरह स्त्रि यां दीं. १४सुदर

कश्यपकौं अदिती प्रमुख१३, अति जगती अवनीस३०।६०।३१।
भये धर्मतैं मूर्त्तिमैं, नर१नारायन२देव ।
त्यौं श्रद्धादिक१२मैं हु सुत,भये सुभादिक१२एव॥ ३२ ॥
स्वधा पितरगनतैं जनी, द्वि२सुता उत्तमज्ञान ।
इक वयुना१पुनि धारिणी२,ए जिनके अभिधानैं॥ ३३ ॥
स्वाहामैं हुव अग्निसौं, पावक१सुचि२पवमानु३ ।
तिनतैं पैंतालीस४५ ए, सब गुनचास४९कृसानु ॥ ३४ ॥
सती अप्पसूता[३] जरी, जाय जनकमख माँहिं ।
हैमवती ह्वै पुनि बरे, अखिलईस सिव आँहिं ॥ ३५ ॥
तामैं ह्व२सुत संभुसन, उपजे पूज्य बिसेस ।
इक कुमार१तारककदन, गजमुख अपर गनेस ॥ ३६ ॥
नारद१भृगु२सनकादिक४।६रु, अरुणि७हंस८इत्यादि ।
एऊब्रह्मचारी वहुत, ब्रह्मबोधसंवादि ॥ ३७ ॥
मृषाँ अधर्म्म उभैरहि मिलि,मिथुन उपायो एक१।
दंभ१रु माया२तिन दुहन२,हुव अघकर्म अनेक ॥ ३८ ॥
कश्यपतैं हुव अदिति बिच, इंद्रादिक सव देव ॥१॥
दितिमैं दनुमैं दैत्य२अरु, दानव३दृढ अहमेवँ ॥ ३९ ॥
पसु४पच्छी५अहि[११]६वारिचँर[१२], गिरि८तरु९आदिकसर्ग ।
कश्यपतैं उपजे बहुत, थावर[१३] जंगम[१४] वर्ग ॥ ४० ॥

---

१ हे राजा रामसिंह ! कश्यप को अदिति आदि तेरह कन्या दीं २ नाम है ३ विना संतान ही अपने पिता दक्ष के यज्ञ में जलीं ४ फिर हिमालय की पुत्री होकर शिव को वर किया जो संपूर्ण के स्वामी हैं ५ स्वामिकार्तिक ६ तारकासुर का नाश करनेवाला और दूसरा हाथी के मुखवाला गणेश ७ मृषा नामक स्त्री और अधर्म ने मिलकर ८एक जोड़ा पैदा किया, एक दंभ[पाखंड] और माया, इन दोनों से अनेक पाप कर्म हुए ९ कश्यपसे अदितिके गर्भ से इंद्र आदि देवता और दितिके गर्भ से दैत्य इसीप्रकार दनु नामक स्त्री के गर्भसे दृढ १० अहंकार वाले दानव हुए ॥ ११सर्प १२जलचर १३ जड़ पदार्थ (जो आप से आप नहीं चल सके) चर१४ (आप से आप चलनेवाले) ॥४०॥ मनुष्य सृष्टि का

स्वायंभुव मनुतैं भयो, मनुज सर्ग बिस्तार ।
मिथुन कर्म उतपत्तिको, हव तबतैं हि प्रचार ॥ ४१ ॥
रचना चउदह१४लोककी, सब लोकेस बनाय ।
आन्सें मोहनें सर्ग रचि, किय जग प्रानीप्रायँ ॥ ४२ ॥
सत्यलोक१तपलोक२जन, लोक३त्यौं महरलोक४ ।
सर्ग५भुवरलोक६रु यहै, भूमिलोक७ नरओक ॥ ४३ ॥
अतल८प बितल९ सुतल१०रु तलातल११रु रसातल१२नाम ।
महातल१३रु पाताल१४ए, क्रम ऊरध अध धाम ॥ ४४ ॥
त्यौं तिरछे भूलोक पर, द्वीप शिलोच्चय अब्धि ।
रचि पहिलैं पुनि यौं द्रुहिनें, लई प्रजा सुख लब्धि ॥ ४५ ॥
सत्यलोक निज धामतैं, महरलोक लग च्यारि ।
निस्पृह सत्वनको रचे, श्रीलोकेश सुधारि ॥ ४६ ॥
चाहैं फल अति पुराय करि, नाक लोक तिन हेत ।
भुवरलोक बिच भूत मुख, रक्खे खगन समेत ॥ ४७ ॥
उल्लवजं१अंडज२घर्म्मजं३रुउद्भेजं४चउ४खानि ।

विस्तार स्वायंभुव मनु से हुआ तभी से उत्पत्ति करनेवाले मैथुन कर्म का प्रचार हुआ ॥ ४१ ॥ ब्रह्मा ने चौदह लोक की रचना बनाकर १ मन से २ मैथुनी सृष्टि रचकर संसार में विशेष ३ प्राणी किये ॥ ४२ ॥ सत्यलोक से लेकर भुवर्लोक तक के छः लोक ऊपर कहे और यह भूमि जो मनुष्यों का घर है ॥ ४३ ॥ अतल से लेकर पाताल तक नीचे के, ये क्रम से ऊपर और नीचे के लोक रचे ॥ ४४ ॥ इसी प्रकार इस टेढे (पुराण में इस भूमितल को भींती के आकार कहा इस से यहां पर टेढा लिखा है) भूमि लोक पर द्वीप, ४ पर्वत और ५ समुद्र पहिले रचकर ६फिर ब्रह्मा ने प्रजा के सुख की प्राप्ति ली ॥ ४५ ॥ अपने लोक ७ (सत्यलोक) से लेकर महर्लोक तक चार लोकों में इच्छा रहित जीवों को रचा ॥ ४६ ॥ जो पुराय का फल ८ चाहनेवाले जीव हैं उनको स्वर्ग में रचा और भूतों (देवयोनि विशेष, अथवा शिव के गणों) को आदि लेकर पक्षियों को ९ भुवर्लोक में रचा ॥ ४७ ॥ १० जरायुज (मनुष्य आदि) ११ अंडज (अंडा से पैदा होनेवाले सर्प आदि,)१२ गरमी से पैदा होनेवाले जुवां आदि और भूमि को १ फोड़कर निकलने वाले (वृक्ष आदि)

बरसखंड भूलोक बिच,रचे कर्म्मभू[1] ठानि ॥ ४८ ॥
इतर खंड फल भोगके, दिव्यसत्व[2] तँहँ रक्खि ।
नागादिक असुरादिकन, अतलादिन७बिच अक्खि ॥४९॥
गिरिदिग्गज दिक्पाल करि, थिर अवनीकौं थप्पि ।
भूमिराज्य मनुकौं दयो, त्रिदिवै[3] इंद्रहितअप्पि ॥ ५० ॥
पावकतैं१पवमानतैं२, रवितैं३बेद निकासि ।
ऋक१यजु२साम३प्रवर्त्त किय, हिय चतुरास्य[6] हुलासि ।५१।
अष्ठ प्रयुत चउ लक्ख८४००००मित, नाना जीवन जोनि ।
रचि बिरिंचि पूरे अखिल, स्वर्ग१ अधोबिल२छोनि३ ।५२।
मुखतैं१करतैं२संथितैं[11]३, द्विजमुख बरन३बनाय ।
पंजादिक[12]४ सब पयनतैं४, सरजे जन समुदाय ॥ ५३ ॥
काल१देस२सागर३सरित४,कुलाचलादिक५ठानि ।
सीमा१आयु२समस्तके, बिरचे भिन्न बखानि ॥ ५४ ॥
पसु१पिसाच२ रक्खस३मनुज४,उल्लवज१इतिमुख[13] सर्ग ।
आसीबिख[14]१खग२नक्र[15]३झख[16],४इतिमुख अंडज१बर्ग । ५५ ।

ये चार खान भूमिलोक जंबुद्वीप में १ ब्रह्माने रचे ॥ ४८ ॥ दूसरे द्वीपों में कर्म फल भोगनेवाले २ दिव्यजीवों को, और सर्पों व असुरों को आदिलेकर अतलादिक (नीचे के) लोकों में रक्खा ॥४९॥ पर्वत, दिशाओं के हस्ति, दिक्पाल (दिशाओं के पति) बनाकर भूमि को स्थिर [अचल, पुराणों के मत से भूमि नहीं फिरती सूर्य फिरता है और वेद व ज्योतिष के मत से भूमि सूर्य के चारों ओर फिरती है सो यहां ग्रंथकर्ता ने पुराण का मत लिया है] थापकर भूमि का राज्य मनु को और ३ स्वर्ग का राज्य इन्द्र को दिया॥५०॥ ४ अग्नि, ५ वायु और रवि से वेद निकाल कर हृदय से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद को प्रवृत्त किया ॥ ५१ ॥ नाना प्रकार के जीवों की चौरासी लाख योनि को रचकर ६ ब्रह्मा ने ७ स्वर्ग ८ पाताल और ९ भूमि को पूर्ण किया ॥ ५२ ॥ मुख से ब्राह्मण, हाथों से क्षत्रिय, १० जंघा से वैश्य ११ आदि वर्ण बनाकर और पैरों से १२शूद्रादि, इस प्रकार मनुष्यों के समुदाय को रचा ॥ ५३ ॥ काल, देश, समुद्र, नदी, कुलाचल आदि पर्वत बनाकर सीमा और आयु ये सबके जुदे जुदे बनाये ॥ ५४ ॥ पशु, पिशाच (देवयोनि विशेष)राक्षस, मनुष्य,इनको१३आदि लेकर जरायुसे उत्पन्न होनेवालों की सृष्टि और १४सर्प, पक्षी, १५मकर(मगर) मच्छ, इनको आदि लेकर अंडे से पैदा

मस्क१दंस२जूका३प्रमुख, लघुतनु घर्मज३खानि ॥
गुच्छ१गुल्म२तरु३तृन४लता५, इतिमुख२ उदभिद४जानि ॥ ५६ ॥
ऐसैं बिधि सब सर्ग्ग रचि, कर्म्मप्रवृत्ति बिधाय।
पुण्य पाप सुख दुख प्रमुख, दिय सब संग लगाय ॥ । ५७।

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ विकृतिसर्ग्गपरम्परोद्देशनं पञ्चदशो१५ मयूखः ॥ १५ ॥

पादाकुलकम् ॥

त्रुटि सत१००मित तत्पर इक१जानहु,
तत्पर तीस३०निमिखं इक मानहु ॥
दृग निमेस ह्वै जब अट्ठारह१८,
काष्ठा इक१परिमान काल वह ॥ १ ॥
काष्ठा तीस३० कला इक१अक्खिय,
कला तीस३०घटिका इक१रक्खिय ॥
सो नाच्छत्र मान मित धारहु,
द्वि२घटी एक१ मुहूर्त्त बिचारहु ॥ २ ॥

होनेवाले समूह ॥ ५५ ॥ मच्छर, डांस, जुवां आदि छोटे शरीरवाले गरमी से उपजनेवाली खान और गुच्छे (झाड बोझा आदि फैले हुए वृक्ष) ठूंठ (विना शाखा के वृक्ष) समान्य वृक्ष, तृण और बेलाड़ियां आदि उद्भिद सृष्टि जानो॥५६॥ इस प्रकार ब्रह्मा ने सब सृष्टि रचकर कर्म में लगाकर पुण्य पाप, सुख दुःख, आदि सब साथ में लगादिये ॥ ५७॥

श्रीवंशभास्कर के महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में विकृति (प्रकृति विकृति और प्रकृति विकृति यह तीन प्रकार की) सृष्टि है जिसमें इस विकृति (विकारवाली) सृष्टि के परम्परा कथन का पंद्रहवाँ मयूख समाप्त हुआ॥ १५ ॥

बहुत सूक्ष्म समय को त्रुटि कहते हैं ऐसी सौ त्रुटि का एक तत्पर, तीस तत्पर का एक निमेष, जब नेत्र के अठारह निमेष (आंख टमकारने को निमेष कहते हैं) होवें उस समय का नाम काष्ठा है ॥ १ ॥ तीस काष्ठा की एक कला और तीस कला की एक घड़ी होती है, इसी प्रमाण को नाक्षत्र (दिन के तीसवें भाग का नाम नाक्षत्र) कहते हैं, इन दो घड़ियों का एक मुहूर्त जानो ॥ २ ॥ इन

अहोरात्रे इक१ तीस३० मुहूर्त्तन,
द्युनिस तीस३०इक१मास गिनहु जन ।
बारह१२मास होत इक१ हायनं,
तिँहिँ करि सौरं कहत कालायँन ॥ ३ ॥
च्यारि लक्ख बत्तीस सहँस४३२०००मित,
रवि हायन कलिजुग इक१अंकित ।
अष्ठ लक्ख चउसट्ठि सहँस८६४०००पुनि,
द्वापर२जुग परिमान रचित गुनि ॥ ४ ॥
बारह लक्ख हजार तर्क नव१२९६०००,
त्रेता३जुग परिमान गनित भव ।
ख नभ गगन बसु दृग हयभू१७२८०००मित,
कृत४जुग मान बिचारहु बुध चित ॥ ५ ॥
जुग चतुष्कं४एकत्र होत जब,
एक१ महाजुग काल होत तब ।
ख ख नभ नख गुन बेद४३२००००मानँ सन,
होवत सकल महाजुग१हायनं ॥ ६ ॥

षट्पदी

कृत जुग मित निजसंधि समां१७२८०००समुपेत इक्क मनु ॥

तीस मुहूर्तों का एक दिनं रात और तीस दिनं रात्रिका एक मास जानो, ऐसे बारह मास का एक वर्ष होता है इसी को समय के जाननेवाले ज्योतिषी अथवा ज्योतिष शास्त्र सौर वर्ष कहते हैं ॥ ३ ॥ ऐसे सौर वर्षों से चार लाख बत्तीस हजार वर्ष कलियुग का प्रमाण है और आठ लाख चौसठ हजार वर्षों का रचा हुआ द्वापर का प्रमाण मानो ॥ ४ ॥ बारह लाख छिनवै हजार वर्ष का त्रेता युग और सत्रह लाख अठाईस हजार वर्षों का सतयुग विद्वान् लोग जानैं ॥ ५ ॥ ये चारों युग इकट्ठे होते हैं तब एक महायुग का समय होता है, इस महाँयुग के सम्पूर्ण वर्ष तैंतालीस लाख बीस हजार होते हैं ॥ ६ ॥ जितने सत्ययुग के संवंत् हैं इतने ही सम्वत् एक मनु की सान्धि के होते हैं जिन सहित इकहतर महायुग के समय को भोगकर एक मनु शरीर छोड़ता है इसी

कुमुनि७१महाजुग काल भुग्गि अधिकार तजत तनु ॥
मनु चउदह१४जब होत अधिक इक१ अंत संधि१७२८०००सह
तबहि महाजुग सहँस१०००होत सुहि इक१बिरिंचि अहे१ ॥
याही प्रमान वाकी निसा ते मनुजनके कल्प दुव२ ।
नृपरामसिंह लोकेसके इँहिं प्रमान दिनरत्ति हुव ॥ ७ ॥

दोहा

तीनि३लोक दिनमैं रचत, निसमैं सब मिटवाय ।
सोय रहत प्रत्यूषहीं, बोलि जगि देत बनाय ॥ ८ ॥
जो क्रम पहिले सग्ग बिच, सोही लै पुनि सग्गे ।
प्रतिदिन मनु इंद्रादि बिधि,बिरचत संसृति बग्ग ॥ ९ ॥
होत तीन सत सट्ठि३६० जब, अहोरात्र इँहिं मान ॥
ब्रह्माको इक१अब्द तब,होवत नृप चहुवान ॥ १० ॥
ऐसे सत१००हायन जियत, बिधि करि सग्ग निबाह ॥
महाप्रलय होवत तदनु, बिगरत अंडकटाह ॥ ११ ॥
गंध१होय भू१नीरमैं, मिलत नीर२रस२होय ॥
तेजमैं रु वह३रूप३व्है, बात मिलत गुन खोय ॥ १२ ॥
बात४हु व्है सपरस३सु हू , मिलत गगन बिच जाय ॥

प्रकार अन्तसन्धि सहित चौदह मनु अपना अपना अधिकार भोगकर समाप्त होजाते हैं तब एक हजार महायुग होते हैं वही ब्रह्मा का एक दिन है और इतनी ही उस की रात्रि है वही मनुष्यों के दो कल्प होते हैं सो हे राजा रामसिंह! इस प्रमाण से ब्रह्मा के दिन और रात हुए ॥ ७ ॥ वह ब्रह्मा दिन में तीनों लोक रचता है और रात्रि में मिटाकर सोजाता है फिर प्रातःकाल में जगकर बना देता है ॥ ८ ॥ जो क्रम पहिले सर्ग में कहा उसी क्रम को लेकर ब्रह्मा अपने प्रत्येक दिन में इन्द्र को आदि लेकर नाना प्रकार की सृष्टि (रचना) रचता है ॥९॥इस प्रमाण के तीन सौ साठ दिन रात होते हैं तब हे चहुवाण राजा रामसिंह! ब्रह्मा का एक वर्ष होता है ॥ १० ॥ सृष्टि का निर्वाह करके इस प्रकार के सौ वर्ष तक ब्रह्मा जीता है जिसके पीछे महाप्रलय होता है जिसमें अंड कटाह (स्वर्ग और भूमि) विगड़ जाता है॥११॥ भूमि गंध रूप होकर जल में मिलजाती है और जल रस रूप होकर अग्नि में मिलजाता है इसी प्रकार अग्नि

अहंकार बिच शब्द५०है, जावत गगन५समाय ॥ १३ ॥
०है लय अहम६महान बिच, वह७प्रधान मिलि जाय ॥
वह प्रधान८अय पुनि नचत, चुंबक पुरुष९कहाय ॥ १४ ॥
लोह घिसैं ज्यौं काल लहि,यौं प्रधान परिनाम ॥
फैलत समिटतही रहत, निजाधार चिद्धाम ॥ १५ ॥
सकल जीव संस्कारजुत, लयमैं प्रकृति समात ॥
निज आसय जुत सर्ग्गमैं, सब कढि कर्म्म चलात ॥ १६ ॥
जो तुम सम नृपराम जन, दृढ स्वरूप करि लेत ॥
अधिष्ठान या जंत्रको, होवत सोहि सुचेत ॥ १७ ॥
यह अरघट्ट घटीन जिम, लयँ सर्ग्गादि स्वभाव ॥
नचत रहत मायानटी, इंद्रजाल उफनाव ॥ १८ ॥
तामैं यह ब्रह्मांड हुव, अबके द्रुहिन अधीन ॥
ऋतु बिच ऋतुके लिंगँ जिम, हुव सब सर्ग नवीन ॥ १९ ॥
अबके बिधिके आयुके, बीते बरस पचास५० ॥

तेज रूप होकर पवन में मिलजाता है ॥ १२ ॥ पवन भी अपने स्पर्श रूप से आकाश में मिलजाता है और आकाश शब्द रूप होकर अहंकार में मिलजाता है ॥ १३ ॥ अहंकार महत्तत्व में लय होजाता है और वह महत्तत्व प्रकृति में मिलजाता है, वह प्रकृति रूप लोहा फिर नाचता है और परमात्मा चुम्बक कहलाता है ॥ १४ ॥ समय पाकर लोहा घिसता है इसी माफिक प्रकृति का परिणाम होता है और अपने आधार परमेश्वर में फैलती सिमटती रहती है ॥ १५ ॥ संसार के संपूर्ण जीव हैं वे प्रलय होने पर प्रकृति में मिलजाते हैं और सृष्टि रचना के समय सब निकलकर अपने अपने अभिप्राय सहित कार्य चलाते हैं ॥१६॥ हे राजा रामसिंह तुम्हारे समान जो मनुष्य दृढ स्वरूप (आत्मज्ञान) करलेता है वही इस यंत्र प्रकृति के फैलने सिमटने रूप सृष्टि (रचना) का स्थान अर्थात् ब्रह्म (मोक्ष होकर ब्रह्म में मिलजाता है) होजाता है ॥ १७ ॥ रैहँट की घड़ियों के समान यह प्रलय और सृष्टि रचना का स्वभाव है सो माया रूपी नटनी इस इन्द्रजाल के उफनाव से नाचती रहती है ॥१८॥ जिस में यह ब्रह्मांड इस समय के ब्रह्मा के अधीन हुआ। जैसे प्रत्येक ऋतु में प्रत्येक ऋतु के चिन्हँ उत्पन्न होते हैं इसी माफिक सब सृष्टि रचना नवीन हुई ॥१९॥ अब का जो ब्रह्मा है उसकी उम्र के पचास वर्ष बीते हैं और मनुष्यों के

स[illegible] अठारह१८०००नरनके, इहाँ प्रलय गत आस।२०।
कि[illegible] कहत बिधिके बरस, सारध अठ८जेगाम ॥
गे[illegible] कोऊ रहो, बर्त्तमानसौं काम ॥ २१ ॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ पारिभाषिककालावयवोपेतसर्गलयादिप्रधानस्वभावसूचनपूर्वकवर्त्तमानब्रह्मायुर्गतकथनं षोडशो१६मयूखः ॥ १६ ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

दोहा

अबको कल्प बराह यह, याके सर्ग प्रकार ॥
बैष्णव नाम पुरान बिच, कहौं तास अनुसार ॥ १ ॥
बिधिके पूर्व परार्ध बस, पद्मकल्प जिम सर्ग ॥
सितबराह अब यह अपर, बिरचे पुनि सब बर्ग ॥ २ ॥
लग्यो बरस एकावनम, प्रथम मास तिथि आदि ॥
सरजे धाता लोक सब, सूचित क्रम संपादि ॥ ३ ॥

षट्पदी

पुनि मरीचि मुनि आदि प्रकटि बिधि पुत्र प्रजापति,

अठारह हजार प्रलय गत हुए ॥२०॥ कितनेक कहते हैं कि ब्रह्मा के साढा आठ वर्ष गये हैं परन्तु गयेहुए वर्ष इस समय के गणित में उपयोगी नहीं होने के कारण निकम्मे हैं सो चाहे सो रहो हम को तो वर्तमान वर्ष से काम है।२१।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में आधुनिक (इस समय के) संकेत जतानेवाले समय के अवयवों सहित सृष्टि रचना और प्रलय आदि प्रकृति का स्वभाव जताने पूर्वक वर्तमान ब्रह्मा की गईहुई उमर के कथन का सोलहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १६ ॥

अबका यह वाराहकल्प है जिसकी सृष्टि रचना का प्रकार विष्णुपुराण में है उसी के अनुसार कहता हूं ॥ १ ॥ ब्रह्मा की सौ वर्ष की आयु है जिनमें पहिले के पचास वर्ष का पूर्वपरार्ध और पिछले पचास वर्ष का उत्तर परार्ध कहाता है उस पूर्व परार्ध में पद्म कल्प की जैसी सृष्टि थी वैसी ही इस श्वेत वाराह नामक दूसरे कल्प में ब्रह्मा ने सब सृष्टियां रचीं ॥ २ ॥ इस ब्रह्मा की आयु का यह इक्कावनवां वर्ष लगा जिसका यह प्रथम महीना और प्रथम ही दिन है जिसमें ब्रह्मा ने ऊपर कहे हुए क्रम को सम्पादन

लखि बिनष्ट त्रय३लोक रचन जग धरत भये [1]रति ।
[2]उज्झित बपु मनु आदि बहुरि बिधि सोंहिं प्रकट हुव,
[3]कथित सिद्ध जन कतिक [4]जथाथित ही स्वसर्ग भुव ।
सुरलोक१भूमि२पाताल३सह क्रम पूरब सब सिद्ध किय,
समयानुसार अमरादि इम रीति सहित [5]संसृति रचिय ४॥
पंकज[6]भव जगि प्रात सून्य लखि लोक प्रनति करि,
[7]जलनिमग्न भुव जानि होय थिर मनचिंते हरि ।
नारायन तहँ नित्य [8]धवल सूकर बपु धारिय,
बेद जज्ञमय बिहित बहुरि जल अंत बिहारिय ।
आवत निहारि किय [9]नुति अवनि जय [10]दर पंकज चक्रधर,
उद्धरहु मोहि अच्युत [11]अजनि भक्तन टारहु सोक[12]भर ॥ ५ ॥
[13]निखिल ईस सुनि प्रनति होय सकरुन प्रसन्न हरि ,
ऊपर थप्पिय आनि धरनि निज दड्ढ अग्ग धरि ।
द्वीप सप्त७आदिक बिभाग क्रम सिंधु कुलाचल,
त्रिदिव१भूमि२पाताल३जथापूरब थप्पिय थल ।
बिधि रचन सर्ग संकल्प किय [14]अमति पूर्ब तहँ सर्ग हुव,

(भेला) करके सब लोक बनाये ॥ ३ ॥ १ प्रीति २ छोड़े हुए शरीर ३ कहे हु
ए सिद्ध लोग ४ जैसे आगे थे वैसे ही अपनी सृष्टि में हुए५ सृष्टि ॥४॥६ब्रह्मा
ने प्रभात में जगकर लोकों को शून्य देखकर और भूमि को जल में ७ डूबी हु
ई जानकर स्थिर होकर विशेष नम्रता के साथ हरि (विष्णु) का चिन्तवन
किया, उस अविनाशी नारायण ने ८ श्वेत वराह का रूप धर वेदों के साथ
यज्ञ रचने को फिर जल में प्रवेश किया जिनको आते हुए देखकर पृथ्वी ने९स्तु-
ति की कि हे १० शंख , कमल, चक्र को धारण करनेवाले अच्युत (पत
न रहित) ११ अजन्मा मेरा उद्धार करके भक्तों के भार १२ को टारो ॥ ५ ॥
१३ सब के स्वामी विष्णु ने विनती सुनकर करुणा के साथ प्रसन्न होकर पृ-
थ्वी को अपनी डाढ पर धरके ऊपर स्थापन की और क्रमपूर्वक विभाग कर
के सातों द्वीप आदि समुद्र, पर्वत, स्वर्ग, भूमि,पाताल जैसे पहिले थे उसी प्र
कार सब स्थलों को स्थापन किया,फिर ब्रह्मा ने सृष्टि रचने का संकल्प किया
तो प्रथम१४ दुष्ट तामसी सृष्टि हुई जिसके प्रबल पांच पर्व कहे जाते हैं सो हे

जिहिँ पंचपर्ब कहियत प्रबल सुनहु तेहु बिसनेस सुव । ६ ।

दोहा

अंधादिक तामिस्र१ अरु, महामोह२ तम३ मोह४ ।
जिम तामिस्रक५ पर्बजुत, प्रकटिय भ्रांति प्ररोह[3] ॥ ७ ॥

षट्पदी

बहुरि सृष्टि संकल्प करत बिधिहिंतुँ प्रकट हुव,
सोहि मुख्य नँग सर्गभेद पंच५हि तदीय धुव ।
द्रुम१रु गुल्म२बीरुध३लता४रु तृन५नाम प्रमानहु,
तैसैं तिरियंक स्रोत सर्ग प्रकट्यो पुनि जानहु ।
तस मुख्य भेद बसु८बीस२०मिलि२८
इक१सफ दव२सफ खट६रु नव९,
बलि पंच५नखरें तेरह१३प्रमित भयउ एम२८पसु सर्ग भव ।८।
हय१खर२बेसर३गउर४सरभ५चमरी६इक१सफधर,
कृष्ण१गवय२महइ३कोल४धेनु५सल६रुरु७अबि८बर्कर९ ॥

१ विष्णु सिंह के पुत्र रामसिंह वे भी सुनो ॥ ६ ॥ २ अन्धतामिस्र, महा मोह, तम, मोह और तामिस्र सहित ३ भ्रम को पैदा करनेवाली अविद्या की ये पांच पर्व (गांठें) उपजीं ॥ ७ ॥ फिर सृष्टि का संकल्प करते हुए ४ ब्रह्मा से वही (ऊपर कहे हुए पांच पर्वों से) मुख्य ५ नग (अचल) सर्ग प्रकट हुआ ६ जिसके पांच भेद ये हैं सामान्य वृक्ष, ७ अप्रकांड (विना शाखा के ताड़, खजूर, नारियल आदि) वृक्ष, ८ फैली हुई लता (झाड़, बांठ, बोझा, इत्यादि नामों से प्रसिद्ध] लता (वेल) तृण (घास) इन नामों से जानो, इसी प्रकार इन्द्रियोंवाली ९ पशु सृष्टि प्रकट हुई जिसके मुख्य अट्ठाईस भेद हुए अर्थात् १० एकशफ (जिनका खुर फटा हुआ नहीं होवे) वाले छः और दो खुर (जिनके खुर फटे हुए होवें) वाले नव, और पंच ११ नखवाले तेरह ये सब मिलाकर पशुओं की २८ प्रकार की सृष्टि हुई ॥ ८ ॥ घोड़ा गधा, खच्चर, गौर, शरभ और चमरी "खरोश्वोऽश्वतरो गौरः शरभश्चमरी तथा । एते चैकशफाः क्षत्तः शृणु पंचनखान्पशूनिति भागवतम् ॥" ये छः तो एक १२ शफ वाले और कृष्ण (पशुविशेष) रोझ, महिष, सूअर, गौ (गाय) उष्ट्र, रुरु [मृग विशेष सांभर आदि) मेष (मींढा भेड़) और बकरा (अज) इन नौ को आदि

इत्यादिक दुवं२सफ रु सिंह१वृक२व्याघ्र३फेरु४सुनि५,
गोधा६सल्लक७ओतु८मकर९गज१०कीस११कमठ१२पुनि॥
संस१३सहित त्रयोदस१३पंच५नखभेद मुख्य ए२८पसु भये,
पुनि देवसर्ग प्रकटिय प्रथित तस प्रकार बहुलहि ठये ॥९॥

दोहा

बहुरि रच्यो नर सर्ग बिधि, अति रज१तम२उद्रेक।
क्रम सन पुनि सुनिये कथित, अधिपति सर्ग अनेक॥१०॥

षट्पदी

महत सर्ग१हुव प्रथम ब्रह्मसर्ग१हु सुहि जानहु,
पुनि हुव गोचर सर्ग२भूतसर्ग२हु तिहिं मानहु।
इंद्रिय सर्ग३ बहोरि सोहि कहियत वैकारिक३,
ए प्राकृत त्रय३सर्ग रीति पूरब अनुसारिक।
नग सर्ग१तिमहि पसुसर्ग२पुनि देवसर्ग३नगसर्ग४जुत,
इंद्रिय अधीस आनुग्रहिक५पंच५एहि वैकृत प्रनुत। ११।

दोहा

अष्ट८सर्ग ए आदिभव, समुझह संभरवार।

लेकर दोसफवाले हैं और सिंह, भेड़िया, वघेरा (छोटासिंह) कुत्ता सियाल, गोह (गोहिली) सेळी (सेहेळी), बिल्ली, मगर, हाथी, बंदर, कछुवा (काछवा) खरगोस (सुसल्या) ये तेरह भेद पंचनखवालों के मिलाकर अट्ठाईस प्रकार के पशु हुए जिस पीछे देवताओं की प्रसिद्ध सृष्टि हुई जिसके अनेक प्रकार हुए ॥ ९ ॥ फिर ब्रह्मा ने अत्यन्त रजोगुण तमोगुण के प्रथम आरंभ से नरसर्ग रचा सो हे स्वामी रामसिंह! क्रम से कहे हुए सुनो वे अनेक सर्ग हैं ॥ १० ॥ प्रथम महत्सर्ग हुआ उसीको ब्रह्म सर्ग जानो फिर गोचर (आकाश में विचरनेवालों का) सर्ग हुआ उसीको भूतसर्ग मानो, फिर इन्द्रिय सर्ग हुआ उसीको वैकारिक कहते हैं येतीनों प्रकृतिसर्ग पहिले की रीति अनुसार हुए, फिर नग (जड़) सर्ग और इसी प्रकार पशुसर्ग और देवसर्ग, नगसर्ग जिसमें पर्वतों की उत्पत्ति है इसीके साथ इन्द्रियों के देवता, अनुग्रहसृष्टि, जिसमें देवता और मनुष्य दोनों की उत्पत्ति है ये पाँच प्रकार की स्तुतियोग्य विकृतिसृष्टि है ॥ ११ ॥ हे

प्रकृति१बिकृति२ मिश्रित भयउ, नवम९सर्ग कौमार९ ।।१२।।
हुव चतुरानन जघन सन, सर्ग असुर१अभिधान ।
तनु निज छोरिय बिधि तब सु, हुव रजनी१चहुवान ।।१३।।
धाता बपु अपरहि धरयो, तासों हुव सुरसर्ग२ ।।
सोहु तज्यो बपु दिन२भयो, बहुरि सुनहु बहुबर्ग ।। १४ ।।
काय अपर बिधि ग्रहन किय,तासों पितर३प्रकास ।।
संध्या३हुव सो तनु तजत, निसादिन बिच जिहिं बास ।।१५।।
अज पुनि बपु धारिय इतर, मनुजसर्ग४तिहिं जात ।।
जुराँहा४हुव जो बपु तजत, अमलकांति अवदात ।। १६ ।।
इम तामस तनुतैं असुर१,बने रजनि१बलवान ।।
सात्विक बपुतैं सुर२पितर३,अहं२सांयं३अतिप्रान ।। १७ ।।
राजस बपु सन मनुज४हुव, प्रबल चंदिमों४काल ।।
पुनि बिधि बपु राजस धरिय,तासों भूख बिहाल ।।१८।।

चहुवाण रामसिंह ये आदि में होनेवाले आठ प्रकार के सर्ग प्रकृति और विकृति से हुए जानो और प्रकृति विकृति (दोनों मिलकर) से नवमा कौमारसर्ग जिसमें सनकादि ऋषि और महादेव की उत्पत्ति है ॥ १२ ॥ तमोगुणी ब्रह्मा की जंघाओं से असुर नामवाली सृष्टि हुई उस शरीर को ब्रह्मा ने छोड़ दिया तब हे चहुवाण ! ब्रह्मा की रात्रि होगई ॥ १३ ॥ ब्रह्मा ने दूसरा शरीर धारण किया जिससे देवताओं की सृष्टि हुई वह शरीर भी ब्रह्मा ने छोड़ दिया तब फिर दिन हुआ जिसमें बहुत वर्ग हुए । १४ । ब्रह्मा ने फिर दूसरा शरीर धारण किया जिससे पितरलोक हुए उस शरीर को छोड़ते ही संध्या होगई. जिस संध्या का दिन और रात्रि के बीच में वास है । १५ । इस प्रकरण की टीका यहां बहुत संक्षेप से लिखीगई है सो जिनको विस्तार पूर्वक देखना होवे विष्णुपुराण के प्रथम अंश के पांचवें अध्याय में देखें. ब्रह्मा ने फिर दूसरा शरीर धारण किया जिससे मनुष्यों की सृष्टि हुई. ब्रह्मा ने वह शरीर छोड़ा तब निर्मल श्वेत कांतिवाला प्रभात होगया । १६ । इस प्रकार तमोगुण शरीर से रात्रि में होने के कारण असुरलोग रात्रि में बलवान् बने, और सतोगुणी शरीर से दिन में देवता, और संध्या समय पितर हुए इससे इन दोनों समय में ये बलवान् हैं । १७ । रजोगुण शरीर से पूर्व संध्या में मनुष्य हुए इससे प्रातःकाल में मनुष्य प्रबल रहते हैं. ब्रह्मा ने फिर रजोगुणी

भये कतिक तिन माँहिं सौं, चले कतिक बिधिखान ॥
ते जक्खन[1] सन जच्छ५हुव, रक्खसें[2]६रच्छक आन ॥१९॥
बिधिके सिरसौं हीन है, चिकुर[3] चढे पुनि मत्थ ॥
ते सर्पनें[4] करि सर्प७हुव, हीनभाव अहि७अत्थ ॥ २० ॥
बिधिमुखतैं प्रकटे बहुरि, गान करत गंधर्व८ ॥
बिधिके बयतैं सकुन[5]९बहु, उरतैं एडकँ१०सर्व ॥ २१ ॥

रोला

बिधि मुख सन हुव छाग११ धेनुसंघात१२ उदरसन ,
चरनन करि गज १३ बाजि१४ सरभ१५मृग१६उंट१७गवय१८गन।
न्यंकु[1]१९अश्वतर२०आदि रु अब बिरचे रोमन करि ,
बहु औषध२१फल२२मूल२३भूमि इम दिय सर्गनें[2] भरि।२२।
त्रिवृत तोम१गायत्रछंद२ऋकवेद३रथंतर४ ,
अग्निष्टोम५बिरिंचि प्रथम मुखतैं सरजे बर।
त्रैष्टुभछंद१रु यजुर्वेद२पुनि तोमें[3] पञ्चदस३ ,
बृहतसाम४अरु उक्थ[4]५भये दक्खिन मुखतैं तस ॥ २३ ॥
एकविंस तोम१रु अथर्व२वैराज३अनुष्टुभ४ ।

शरीर धारण किया जिससे क्षुधा (भूख) प्रकट हुई. उससे घबराकर कितने ही लोग ब्रह्मा को खाने चले उनमें जिन्होंने कहा कि हम ब्रह्मा को खावेंगे उनका नाम यक्ष और जिन्होंने कहा इनकी रक्षा करो उनका नाम राक्षस हुआ। १८। १९। ब्रह्मा के शिर से बाल गिरपड़े उनमें कितनेक तो पड़े ही रहे और कितनेक आप से आप चलकर फिर शिर पर जा जमे,जिनमें पड़ेरहनेवाले बाल सर्प हुए जिनका नाम सर्पने(चलने) के कारण सर्प प्रसिद्ध हुआ। २०। फिर ब्रह्मा के मुख से गान करतेहुए गंधर्व हुए और ब्रह्मा के बय से पक्षी और उर से मींढे (मेंढ़) उपजे ॥ २१ ॥ ८ सिंह ९ रोझ १० सांभर ११ खच्चर १२ सृष्टियों से। २२। फिर ब्रह्मा ने तीन बार पढ़जानेवाला स्तोत्र, गायत्री छंद, ऋग्वेद, रथन्तर (साम विशेष) अग्निष्टोम (यज्ञ विशेष) पूर्ववाले मुख से बनाये, और त्रिष्टुप् छंद,यजुर्वेद फिर पंन्द्रह बार पढाजानेवाला स्तोत्र, बृहत्साम, उक्थ (सोमसंस्थ यज्ञ) ये दक्षिणवाले मुख से बनाये। २३। "सामवेद, जगती छंद, सत्रह बार पढाजानेवाला स्तोत्र, स्तोम" (एक

उत्तरमुख सन रचिय द्रुहिन सब रीति पूर्व सुभ ।
सुर१मुनि२मनुज३न नाम जथापूरब पुनि थप्पिय ,
अप्पअप्प अधिकार अप्प अप्पहिं सब अप्पिय ॥ २४ ॥
बिधि मुखतैं हुव बिप्र१बाहुसन छत्र२ छत्रधर ,
ऊरुन बिसं३अरु पयन सूद्र४चउ४बर्ण भये बर ।
प्राजापत्य१रु ऐंद्र२थान मारुत३ गांधर्वक४ ,
धर्म निरत चउ४बर्ण अर्थ बिरचिय गत गर्बक ॥ २५ ॥
भृगु१पुलस्त्य२क्रतु३पुलह४ अंगिरा५ मुनि मरीचि६ जुत ।
अत्रि७बसिष्ठ८रु दत्त९ भये बिधिके [2]मानससुत ।
इन न सृष्टि बिच बुद्धिदई बिधि क्रुद्ध भये जब,
अर्द्ध नारि नर अर्द्ध भाल[3] सन रुद्र१० कढे तब ॥ २६ ॥
करहु रूप बहु अक्खि भये लोकेस तिरोहितं ।
सु सुनि रूप दसएक११रुद्र धारे सब सोहित ।
बिधि बपुतैं किय मिथुन प्रथम१तँहँ मनु स्वायंभुव१ ,
सतरूपा२ रानी सतीहु ताकेहि संग हुव ॥ २७ ॥

प्रकार का साम) अतिरात्र, सोमसंख्या, ये पश्चिम के मुख से निकाले,, यह वर्णन मूल में नहीं होने से त्रुटि पाईजाती है परंतु हमने विष्णुपुराण के अनुसार लिख दिया है ॥ इक्कीस बार पढाजानेवाला, अथर्व वेद, वैराज नामक सामवेद, अनुष्टुप् छंद, ये सब उत्तरवाले मुख सेपहिले की रीति पूर्वक ब्रह्मा ने रचे. और देवता, मुनि, मनुष्यों के नाम जैसेपहिलेसर्ग में थे वैसे ही फिर रखकर अपने२ अधिकार अपने अपने को दिये ॥२४॥ ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण, भुजों से छत्र धारण करनेवाले क्षत्रिय, जंघा से वैश्य और पगों से शूद्र. ये चार श्रेष्ठ वर्ण हुए. वे प्रजापति, इंद्र, पवन और गंधर्व इन धर्मनियुक्त चार स्थानों से चारों वर्ण गर्वरहित रचेगये ॥ २५ ॥ २ मन के संकल्प मात्र से हुए परंतु इन्होंने सृष्टि रचने में बुद्धि नहीं दी तब ब्रह्मा ने क्रोधकिया जब ब्रह्मा के ललाट से आधा शरीर स्त्री का और आधा पुरुष का ऐसे रुद्र (महादेव) निकले ॥ २६ ॥ जिनसे ब्रह्मा ने कहा कि बहुत रूप धारण करो, फिर ब्रह्मा तौ अंतर्धान होगये और शिव ने अपने ग्यारह रूप धारण किये और ब्रह्मा ने अपने शरीर से एक जोड़ा बनाया जिसमें स्वायंभुव मनु और शतरूपा रानी उन्हींके साथ हुई ॥ २७ ॥

सालि१सुमन२ जव३तिल४प्रियंगु५ कोद्रव६पुनिचीनक७
अणु८उदार९मुद्ग१० मसूर११निष्पाव१२ कुलत्थक१३ ॥
मांस१४चनक१५सन१६ तुवरि१७आदि ग्राम्यमं ओषध किय।
पुनि जर्तिल१ सामाक२ आदि बन अन्न बनाविय ॥ २८ ॥
इनकरि करि अध्वर प्रवृत्त बहु बिध सब जीवन।
दिय त्रय३ लोक लगाय कर्म निज निज हंसासन ॥
क्रोध१ काम२मद३लोभ४बढिग जब नरन परस्पर।
रचन लगे तब दुर्ग१ खेट२ खर्बट३पत्तन४ घर५ ॥ २९ ॥

दोहा

स्वर्ग१नरक२ रचना सकल, बनी बिबिध बिधि तत्थ।
मनुकों पुनि भुवराज्य दिय, सासन सबन समत्थ ॥ ३० ॥
हुव अधर्म१बिधि पिट्ठिसन, दक्खिन थन सन धर्म२।
नारदादि इतरह बहुत, बिधिसों हुव सुभकर्म ॥ ३१ ॥

पज्झटिका

मनुसों सतरूपामाँहिं जात, दुव२पुत्त प्रियब्रत१प्रथमख्यात।
उत्तानपाद२दूजो२अभंग,कन्यादुव२सोदर इनहि संग॥३२॥

हुई ॥ २७ ॥ फिर मनुष्यों की वृत्ति के अर्थ ब्रह्मा ने चावल सुमन (गोधूम अर्थात् गेहूं) जव तिल राँई, कोदूं, काँगणी चीणा उदार (धान्यविशेष) मूंग, मसूर, मोठ, कुळथ, उडद, चंना, संण, तूर इनको आदि लेकर ग्रामों में और ग्रामों के समीप होनेवाली औषधियां (अन्न) और वन के तिल, साँवां आदि यज्ञ के धान्य बनाये ॥ २८ ॥ इन औषधियों करके जीवों की यज्ञ में प्रवृत्ति कराकर ब्रह्मा ने जीवोंको तीनों लोक में अपने अपने कर्मों में लगादिया. जब मनुष्यों में परस्पर क्रोध, काम, मद, लोभ बढे तब अपनी अपनी रक्षा के अर्थ गढ खेडे (छोटे ग्राम) खर्बट (पर्वतों के घेरे में व नदी किनारे के ग्राम) शहर और घर रचनेलगे । २९ । स्वर्ग नरक की सब नाना प्रकार की रचना बनी तहां ब्रह्मा ने फिर सब को आज्ञा में रखने को भूमि का राज बलवान् मनु को दिया । ३० । ब्रह्मा की पीठ से अधर्म हुआ और दाहिने स्तन से धर्म हुआ, नारद को आदि लेकर ब्रह्मा से औरें भी बहुत पैदा हुए जो शुभ कर्म करनेवाले थे । ३१ । मनु से शतरूपा नामक स्त्री में दो पुत्र उत्पन्न हुए जिनमें बड़ा प्रियव्रत प्रसिद्ध है और दूसरा

तिनमैं प्रसूति१दिय दच्छहेत, आकूति२रुचिहिँ दिय हितउपेत ।
रुचिकै सुत हुव यज्ञावतार१,श्रीअंसदक्खिना२जुत उदार । ३३।
तिनकै सुत बारह१२याम जेहि, पहिले मन्वंतर देव तेहि ।
हुव दच्छ सुता चउवीस२४ताम, तिनमैं हुव तेरह१३धर्मबाम ॥३४॥
श्रद्धा१धृति२लच्छी३बुद्धि४तुष्टि५मेधा६क्रिया७रुवपु८सांति९पुष्टि १०॥
लज्जा११रु ऋद्धि१२पुनि कीर्त्ति१३चाहि,
ए धम लई बिधिजुत बिबाहि ॥ ३५ ॥
पुनि ख्याति१४।१सती१५।२संभूति१६।३नाम,
स्मृति१७।४प्रीति१८।५छमा१९।६संतति२०।७ललाम॥
अनसूया२१।८रु जया२२।९गुननिधान,
स्वाहा२३।१० रु सुधा२४।११सब ही सुजान ॥ ३६ ॥
जिन जिन ए ग्यारह११लिय बिबाहि,तिन्ह नाम सुनहु अनुक्रम निबाहि
भृगु१भव२मरीचि३विज्ञान परस्य, पुनि अंगिरा४रु मुनिबर पुलस्त्य५
पुलह६रु क्रतु७अत्रि८बसिष्ठ९सुद्ध,
पुनि बह्नि१०पितरगन११ ए प्रबुद्ध ॥
अब सुनहु धर्मसंतान नाम, श्रद्धा बिच उपजिय कुमरकाम१ ।३८॥
धृतिपुत्र नियम २ लच्छीज दर्प ३, बुद्धिसुत बोध४ त्रैलोक्यतर्प ।
संतोष५तुष्टि औरस कुमार, मेधासुत जानहु श्रुत६उदार ॥ ३९ ॥
नय७।१दंड७।२विनय७।३तीन हिक्रियाज,व्यवसाय८बपुजहेराजराज

उत्तानपाद अभंग हुआ. इन दोनों के साथ इनकी सहोदर दो कन्या हुई ।३२। इनमें प्रसूति तो दक्ष को और आकूति रुचि को हित के साथ दी रुचि के यज्ञावतार नामक पुत्र, लक्ष्मी की अंश दक्षिणा नामक कन्या के साथ हुआ ।३३। इस दक्षिणा में यज्ञ से बारह पुत्र हुए जिनके नाम याम हुआ.वेही प्रथम (स्वायंभुव) मनु के समय में देवता हुए और दक्ष से प्रसूति में चौवीस कन्या हुई वहां उनमें से तेरह तो धर्म की स्त्रियां हुई ।३४। ६सुन्दर ७ विज्ञान के घर८पंडित९धर्म केपुत्रों के नाम,श्रद्धा नामक स्त्री के१० कामदेव॥३७॥३८॥धृति के नियम,लक्ष्मी के अहंकार, बुद्धि के तीनों लोकों को तृप्त करनेवाला बोध, तुष्टि के संतोष नामक औरस पुत्र, मेधा के श्रुत, क्रिया नामक स्त्री के नय, दंड और विनय तीन पुत्र हुए बपु के व्यवसाय,

सांतेय छेम९पौष्टेय लाभ१०,लाज्जेय बिनय११पुनि अतुलआभ४०
सुख१ऋद्धितनय जस१३कीर्त्ति पुत्र, यह धर्मसर्ग हैं तस तनुत्र ॥
धाता१रु विधाता२दोय२भ्रात,त्यौं श्री१सुताहु भृगु ख्याति जात।४१।
श्री करत भई हरि उर निवास ,रति दयित पुत्र प्रद्युम्न१जास ॥
भृगु सुतन मेरुतनया ललाम,परनी दुव२आयति१नियति२नाम।४२।
धातासन आयति जनिय प्रान१, द्युतिमान२भयो ताकै सुजान ॥
तस पुत्र प्रजावान३सु नरेस, तासौं हिं बढ्यो भृगुकुल बिसेस।४३।
भृगुसुत कनिष्ठ सन नियति जात,हुव मुनि मृकण्ड१सबगुन सुहात॥
ताकै सुत मार्कंडेय२सिद्ध,तस बेदसिरा३तपबोधइद्ध ॥ ४४ ॥
मुनिबर मरीचि सुत पूर्णमास१,कस्यप२द्वितीय२जगसर्ग जास ॥
दुव२पूर्णमास सुत हुव उदार,बिरजा१अरु सर्बग२बोध सार॥४५॥
स्मृतिमाँहिं अंगिरासौं कुमारि, प्रकटी नृप संभर सुनहु च्यारि४।
इक नाम सिनीवाली१ अनूप, दूजी सु कुहू२हुव राम भूप ॥ ४६ ॥
पुनि राका३अरु अनुमति४प्रमानि,पुनि अत्रिसर्ग अब लेहु जानि।
अनसूयामैं हुव अत्रि जात, सोम१रु दुर्बासा२दत्त३ख्यात ॥ ४७ ॥

शांति के क्षेम, पुष्टि के लोभ, लज्जा के विनय, जो अतुल कांतिवाला हुआ. ऋद्धि के सुख, कीर्ति के यश, हे राजाओं के राजा रामसिंह यह धर्म की सृष्टि और उस (धर्म) के कवच हैं ॥भृगु से ख्याति नामक स्त्री में धाता विधाता नाम के दो भाई और श्री (लक्ष्मी) नाम की कन्या हुई ।३९॥४०।४१। लक्ष्मी ने विष्णु के उर में निवास किया जिसके प्रद्युम्न नामक पुत्र हुआ जो रति का पति है. भृगु के पुत्र धाता और विधाता ने मेरु की कन्या आयति और नियति से विवाह किया । ४२ । धाता से आयति ने प्राण नामक पुत्र जना. उसके बुद्धिमान् द्युतिमान् हुआ. हे राजा रामसिंह ! उसके प्रजावान् नामक पुत्र हुआ. उसीसे भृगु का विशेष वंश बढा । ४३ । भृगु के छोटे पुत्र विधाता से नियति नामक स्त्री में मृकंड नामक पुत्र हुआ, उसके मार्कंडेय, उसके तप और बुद्धि में निर्मल वेदशिरा हुआ । ४४ । श्रेष्ठमुनि मरीचि के पूर्णमास और कश्यप दो पुत्र हुए. इसी कश्यप की संतान सब जगत् है. पूर्णमास के दो पुत्र विरजा और सर्वग तत्त्वज्ञानी हुए । ४५ । हे चहुवाण रामसिंह ! अंगिरा से स्मृति नाम स्त्री में सिनीवाली १ कुहू २ राका ३ अनुमति ४ नाम की चार कन्या उत्पन्न हुई. अब अत्रि की संतान जानो.

किय प्रीतिमाँहिँ सुत मुनि पुलस्त्य, दत्तात्ति१पूर्वभवे जो अगस्त्य॥
मैत्रेय२तास अब पुलह पुत्त, हुव तीन३छमा बिच जोगजुत्त॥४८॥
कर्दम १रु अर्वरीवान २नाम, तीजो ३सहिष्णु ३ गुनधर्म धाम ॥
क्रतुसंततिसुत छअयुत६००००सुजान,सब बालखिल्य अंगुष्ठमान।४६।
अक्खी जया१सु ऊर्जा२द्वि२नाम,सुत हुव वसिष्ट सन सप्त७ताम ॥
ते रज१रु गात्र२पुनि ऊर्द्धबाहु३,बलि बसव४अनघ५त्योँहि सुतपाहु६
अरु सुक्र७सप्त७ऋषि एहि श्रेय,मन्वंतर उत्तम३मैं प्रमेय ॥
स्वाहा बिच सुत किय वन्हि तीन३,पावक१पवमान२रु सुचि३प्रबीन
तिनकै हुव पैंतालीस४५पुत्त,इम बन्हि ताम४९सित सबन जुत्त ॥
पतनी स्वधाहु जुत गर्भ होय,पितरन सन कन्या जनिय दोय२।५२।
मेना१रु धारिनी२न पति मानि,हुव ब्रह्मवादिनी जोग जानि ॥
श्रद्धा बिच धर्मज हुव जु काम, नंदी बिच तस सुत हर्ष१नाम५३
हिंसा अधर्मतिय हुव बिचारि,तस मिथुन२अनृत१पति निकृति२नारि

अत्रि से अनसूया नामक स्त्री में सोम, दुर्वासा और दत्त ये तीन प्रसिद्ध पुत्र हुए। ४६। ४७। पुलस्त्य मुनि ने प्रीति नामक स्त्री में दत्तात्ति (दम्भोलि) नामक पुत्र उत्पन्न किया. इन्हीं का पूर्वजन्म में अगस्त्य नाम था. दूसरा मैत्रेय जिसके पुलह हुआ. इस पुलह से क्षमा नामक स्त्री में योग सहित गुण और धर्म के धाम कर्दम, अर्वरीवान् और सहिष्णु तीन पुत्र हुए. क्रतु की संतान में अंगूठे के आकार साठ हजार बालखिल्य नामक ऋषि हुए।४८।४९। वशिष्ठ से जया और ऊर्जा इन दो नामवाली स्त्री में सात पुत्र हुए रज १ गात्र २ ऊर्ध्वबाहु ३ सवन ४ अनघ ५ सुतपा ६ और शुक्र ७. ये सातों उत्तम नामके तीसरे मनु के समय में श्रेष्ठ और ज्ञानवान् सप्तऋषि थे. ब्रह्मा के पुत्र अग्नि ने स्वाहा नामक स्त्री में पावक १ पवमान २ और शुचि ३ नामक निपुण तीन पुत्र पैदा किये इन प्रत्येक के पन्द्रह पन्द्रह पुत्र होकर पैंतालीस हुए. जो अपने बाप दादा को मिलाकर तमोगुणी उनपचास ४९ अग्नि हुए. और पितरों से गर्भ धारण करके स्वधा नामक स्त्री ने दो कन्या उत्पन्न करीं।५०।५१।५२। जिनके नाम मेना और धारिणी थे. जो किसी को पति नहीं मान योग को जान ब्रह्मवादिनी हुईं. धर्म के श्रद्धा नामक स्त्री में काम नाम पुत्र हुआ. उस काम के नन्दी नामक स्त्री में हर्ष नामक पुत्र हुआ। ५३। अपने योग्य पति विचार कर हींसा अधर्म की स्त्री हुई. उससे एक जोड़ा पैदा हुआ. जिसमें अनृत

दुव२मिथुन२अनृत सन निकृति जात,
पति भय १तिय माया२जगबिघात॥५४॥
धर्व नरक१वेदना२तिय तथाहि,भय सन माया सुत मृत्यु१आहि॥
लय१व्याधि२सोक३तृष्णा४रु क्रोध५,इत्यादि मृत्यु सुत हे सुबोध५५
अरु अपर मिथुन सुत दुख१अैस्वर्ब, ए नित्यप्रलय के हेतु सर्ब ॥
चउ४प्रलय भये मरजाद रूप, सुनिये अभिधानहुँ भूपभूपँ ॥५६॥
नैमित्तिक१प्राकृत२नित्य३नाम,चोथो आत्यंतिक४दुलभ धाम ॥
बिधि सयन निमित्तक प्रथम१तत्थ,सब प्रवृतिलयन दूजो२समत्थ॥
लै जन्म मरन संतत सु तृतीय३,गुन भिन्न बोध तुरिय४सु गरीय॥
इम प्रलय च्यारि४सर्ग सु त्रिधा३हि,दैनंदिन१प्राकृत२नित्य ३आहि
बिधि अंकं प्रकट जब रुद्र जात,वरज्यो हु रुवत हुव बेर सात७॥
इम अष्ट८नाम बिधि ताहि दीन, तँहँ प्रथम रुद्र१सुनिये प्रबीन।५९।
भव२सर्ब३महेसान४ हु बखानि,पसुपति५रु भीम६तिम उग्र७जानि॥

नामक पति और निकृति नामक स्त्री हुई. अनृत से इस निकृति में दो जोड़े उपजे. जिनमें जगत् का नाश करनेवाला भय नामक पति और माया नाम की स्त्री । ५४ । और इसी प्रकार नरक नामक पति और वेदना नामक स्त्री हुई. भय से माया का पुत्र मृत्यु हुआ. उस मृत्यु के हे श्रेष्ठ ज्ञानवाले रामसिंह ! लय व्याधि शोक तृष्णा और क्रोध आदि पुत्र हुए । ५५ । और दूसरे जोड़े (नरक और वेदना) से बड़ा पुत्र दुःख हुआ. ये सब नित्यप्रलय के कारण हैं. मार्यादा रूप चार प्रल्य हुए. जिनके नाम हे राजाओं के राँजा सुनो । ५६ । नैमित्तिक, प्राकृत, नित्य और चौथा दुर्लभ स्थानवाला आत्यन्तिक है जो ब्रह्मा के शयन करने पर होता है उसका नाम नैमित्तिक प्रलय,और जो सब पदार्थों को प्रकृति में लय करने को समर्थ है उसका नाम प्राकृतिक प्रलय है॥५७॥ और प्राणीमात्र जन्म लेकर निरंतर मरते हैं सो तीसरा नित्य प्रलय है और ज्ञान करके सतोगुण रजोगुण तमोगुण से भिन्न (ब्रह्म में लय) कर देता है वह चौथा "आत्यन्तिक" बड़ा प्रलय है. इस प्रकार चार प्रलय और दैनन्दिन, प्राकृत और नित्य यह तीन प्रकार की सृष्टि है ॥ ५८ ॥ यह ब्रह्मा की तामसी सृष्टि कही गई. अब रुद्र की सृष्टि कहते हैं. जब ब्रह्मा की गोद में से रुद्र प्रकट हुआ वह होते ही रोने लगा तब ब्रह्मा ने कहा कि क्यों रोते हो? तौ रुद्र ने कहा कि मेरा नामकरण करो. इस समय ब्रह्मा के मना करने पर

पुनि गिनहु महादेव८सु प्रसिद्ध,इम नाम८थप्पि दिय थान इद्ध।६०।
रवि१जल२भू३पावक४पवन५व्योम६,
दीक्षित द्विज७अष्टम८त्योंहि सोम८ ॥
ए जानहु अष्ट८हि ईस कायँ,तिन्ह तियन सुनहु चहुवानराय ॥६१॥
पहिली सुबर्चला१पुनि उषा२रु, वलि नाम बिकेसी३चतुर चारु ॥
स्वाहा४रु सिवा५काष्टा६समेत,दीक्षा७रु रोहिनी८क्रमउपेत ॥६२॥
सनि१सुक्र२कुज३रु गुह४नामधेय,तैसैं हि मनोजव५स्वर्ग६श्रेय ।
क्रम सन संतान ७रु बुध८कुमार, ए अष्ट८अष्टतनुभव उदार ॥ ६३ ॥
ऐसे प्रकार हुव भूतनाथ, दाक्षी सती सु परनैं सुगाथ ।
जिहिं जनक सत्र बिच छंद जाय, किय पतिनिंदा सुनि भरम काय ६४
हिमवान सुता है तिहिं बहोरि परनैं सिव अंचलबंध जोरि ।
इम सर्ग कतिक बरनैं सुमंत, कहियैं कति मानव बंस अंत ।६५।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम १ राशौ विद्यमानवराहकल्पसर्गसूचनं सप्तदशो १७ मयूखः ॥ १७ ॥
प्रायोव्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

सात वार रोया इस कारण से रुद्र के सिवाय भव, शर्व, ईशान (महेशान) पशुपति, भीम, उग्र, और महादेव ये सात नाम ब्रह्मा ने दिये. इस प्रकार आठ नाम देकर निर्मल स्थान दिये ॥ ५९ । ६० ॥ सूर्य, जल, पृथ्वी, अग्नि, पवन, आकाश, यज्ञ की दीक्षा लिया हुआ द्विज, तैसे ही आठवां चन्द्रमा ये आठों ही महादेव के स्थान और इन में निवास करने से ये ही महादेव के आठ शरीर हुए. हे चहुवाण राजा ! अब उनकी स्त्रियों को सुनो ॥ ६१ ॥ पहिले तो सुवर्चला, फिर उषा और फिर चतुर और सुन्दर विकेसी नामवाली, स्वाहा, शिवा, काष्टा, दीक्षा और रोहिणी ये क्रम सहित हैं ॥ ६२ ॥ इसी प्रकार महादेव के आठ शरीरों से क्रम से आठ पुत्र हुए. जिनके नाम मूल में स्पष्ट हैं. ४ आठ शरीरों को धारण करनेवाले (महादेव) के पुत्र ५ महादेव ६ दक्ष प्रजापति की पुत्री ७ श्रेष्ट कथावाले ८ पिता के यज्ञ के बीच में ९ अपनी इच्छा से. १० वस्त्र की गांठ (गंठजोड़ा) जोड़कर ११ सृष्टिरचना १२ बुद्धिमान् १३ मनु के ।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में वर्तमान वराहकल्प की सृष्टि के जनाने का सत्रहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १७ ॥

पज्झटिका

बडवामुखसौं लग अप्प ओक, रचि द्रुहिन चतुर्दस१४रम्य लोक।
बलि सीम कुलाचल भुव बनाय, सब ठाम सत्व अधिकृत बसाय। १।
स्वायंभुव को भुव राज्य अप्पि, दीनौं नरसासन करन थप्पि।
मनुकै जु तनय उत्तानपाद ७, अवनीस भयो वह अप्रमाद ॥२॥
हुव२रानी तस सुरुचि१रु सुनीति२, तिन माँहिं सुरुचि सन पिहुल प्रीति।
हुव तास उदर उत्तम३।१कुमार, अपर सु सुनीति उर ध्रुव३।२उदार।३।
उत्तमहिं लयो नृप कबहु अंक, तँहँ ध्रुवहु लग्यो बैठन निसंक ॥
तब सुरुचि कहे ध्रुवसौं कुबैन, आयो वह रोवत जननि ऐन। ४।
सिसुसौं सुनीति सुनि यह उदंत, अक्खिय वह उत्तम पुण्यवंत॥
जो सकत पुत्त पुण्यहिं कुमाय, तो करहु तुष्ट हरि बिपिन जाय। ५।
यह सुनत पौंछि दृग निकासि बाल, आयो पुर परिसर बनबिसाल।
मुनि सप्त७लखे तँहँ बोध धाम, बुल्ल्यो कुमार तिन्ह करि प्रनाम। ६।
सुनि मैं सपत्नजननी कुबैन, आयो प्रभु तुम ढिग सिक्ख लैन ॥
जँहँ गो न कोउ ध्रुव थान जोहि, कैसे उपाय करि मिलहिं मोहि ।७।
सब मुनिन कहिय ह्वै हरि प्रसन्न, ह्वै तबहि थान वह तव प्रसन्न।
ध्रुव सु सुनि आय मधुबन सटेक, तप किय जमुना तट बिधि बिबेक ८
मधुपुत्र असुर जँहँ लवन मारि, सत्रुघ्न रची मथुरा सधारि।
रहि तत्थ खरो इंद्रिय समेटि, तप करन लग्यो हरि हृदय भेटि॥९॥
जिहिं चरन छुवैं ध्रुव तप जमात, जितकौंहि कंपि भुव लचकि जात ॥

---

१ पाताल लोक २ अपना स्थान ३ ब्रह्मा ने ४ पुनि ५ पुराणों के मत से भूमि के चौतर्फ कुलाचल नामक पर्वत का घेरा है ६ जीव ७ अध्यक्ष (अधिकारी) ८ भूमि का राज्य दिया ९ मनुष्यों पर आज्ञा चलाना १० पुत्र ११ राजा १२ प्रमाद रहित १३ सुरुची से १४ बहुत १५ दूसरी(सुनीति) १६ उत्तमकुमर को १७ गोदी में १८ माता के घर १९ वृत्तान्त २० उत्तमकुमर २१पुण्यात्मा (पुण्यवान्) २२प्रसन्न २३वन में जाकर २४नगर के समीप २५ज्ञान का घर २६माता की सोक (मांई मा) २७ शिक्षा २८ निश्चल २९ लवणासुर को ३० तहां

जब रहिय टेकि अंगुष्ठ अग्र,चलबिचल भई भू तब समग्र ॥ १० ॥
सुरराज सहित सुर याम नाम, हरि रचत भये माया प्रकाम ।
छलमय तसँ माता करि सुनीति, ग्लानी गहि क्रंदत भनत भीति ।११।
ध्रुव तउ न तज्यो तप इष्टध्यान, हरिसरन गये सुर मनमिलानें ।
दृढ भक्तभक्ति लखि त दयाल, आये गरुड़ध्वज तहँ उताल।१२।
अक्खिय जिहिं चिंतत हृदय ऐनें, सो मैं बर मंगहु खुल्लि नैन ।
तब,तजि समाधि ध्रुव लखिय विष्णु, दर१चक्र२गदा३पंकज४धरिष्णु
सुकिरीट चतुर्भुज सघनस्याम, लावण्य१दया२अँग३निधि ललाम ।
ध्रुव कहिय बाल मैं जाड्य धार, यह देहु करौं तव थुति उदार ।१४।
निज संख छुवायउ जब मुरारि,ध्रुव तब नुति कीनी प्रनति धारि ।
हरि कहिय अपरं बर बहुरि लेहु,अक्खिय ध्रुव जानत अप्प एहु ।१५।
अच्युत मम जननी सुरुचि छोहि,नृप आसन अनुचित कहिय मोहि।
थिर यातैं सब जग दुलभ थान,निज मोहि देहु करुनानिधान ॥ १६॥
हरि कहिय पूर्वभव तू कुमार, हो बिप्र कन मम कलुखहार ।
इक राजपुत्र किय मित्र तोहि, लखि तस समृद्धि तैं चहिय सोहि ।१७।
इहिं कारन तू किय राजपुत्त, मनुबंस रत्न जय धर्मजुत्त ।
अब सब दुलभ ध्रुवथान पाय, जोइग्गनें ऊपर रहहु जाय । १८ ।
सुर कति आयु इक१मन लहंत, जुग एक१कतिक जीवत रहंत।
तू कल्प अवधि ध्रुव रहहु तत्थ,उडुबपु सुनीति निज जननि सत्थ।१९।

---

१ अंगूठा २ सब ३ इन्द्र ४ देवता ५ यामनाम के ६ अपनी इच्छानुसार ७ उस ध्रुव की८रोती हुई९देवता१०मन मलीन करके११विष्णु१२हृदय रूपी घर में१३शंख१४पद्म१५धारण करनेवाला १६ सुन्दर १७ऐश्वर्य १८बुद्धिविहीन जड़ता को धारण करनेवाला मैं बालक हूं सो मुझे बुद्धि दो१९स्तुति२०दूसरा वर२१आप२२हे परमेश्वर २३क्रोध करके २४राजा के सिंहासन पर बैठने योग्य नहीं है ऐसा मुझे कहा२५ पहले,जन्म में २६ब्राह्मण था २७ पाप को मिटानेवाला २८उस की संपदा (लक्ष्मी) को २९राजा का पुत्र ३० युक्त (सहित) ३१ ज्योतिगण (नक्षत्रमंडल) के ऊपर ३२ कितने ही देवता एक मन्वन्तर तक और कितनेक एक युग तक की आयु लेते हैं और जीते हैं हे ध्रुव तू कल्प पर्यंत वहां रह,और तारों का शरीर धारण करके तुमारी माता सुनीति भी साथ रहेगी ॥ १९ ।

कछुकाल करहु भुवराज्य बच्छ,[1]उद्दिष्ट[2] लहहु पुनि थान अच्छ ॥
हरि पिहित[3] भये बर अप्पि एस, ध्रुव आय समय पर हुव नरेस ।२०।
ध्रुवके पटरानी संभु नाम, उपजे सुत सुष्टि ४।१रु भव्य४।२तोम ॥
स्नी सच्छाया उदर आय, सुत पंच ५सुष्टिके हुव सुभाय ॥२१॥

रिपु५।१बहुरि रिपुंजय५।२बिप्र५।३नाम,
वृकण५।४रु वृकतेजा५।५धामधाम ॥

वृहती बिच चक्षुष६रिपु तनूज, मनु षष्ठ६जनक जो प्राप्तपूज ॥२२॥
पत्नी पुष्करिनी नाम तास, अनरण्य प्रजापति पुत्रि जास ॥
चक्षुषसुत ताबिच हुव महंत, चाक्षुष७जिंहिं छट्ठो ६ मनु कहंत ।२३।
बैराज प्रजापति पुत्रि व्याहि, दिय मनुहिं नड्वला नाम चाहि ॥
चाक्षुष सन ताबिच धर्मधीर, बलवान भये दस१०पुत्र बीर ॥२४॥
उरु८।१बहुरि भये पुरु८।२नामधेय, ऐसैंहि सतद्युम्न८।३हु अजेय॥

बलि सुनहु तपस्वी ८।४सत्यवाक८।५,
सुचि८।६अग्निष्टोम८।७हु कलिकजाक ॥ २५ ॥
अतिरात्र८।८तथाप्रद्युम्न८।९सूर,
अतिमन्यु ८।१०अनुज पानिप प्रपूर ।

उरुसौं आग्नेयी नारि पुत्त, खट६जनतभई जय धर्मजुत्त॥२६॥
ते अंग९।१। रु सुमनस९।२। बहुरि स्वाति ९।३,
क्रतु ९।४। अंगिरस९।५। रु सुत ९।६ जितअराति ॥

१हे पुत्र २ कहा हुआ ३ अन्तर्धान ॥ २० ॥ ध्रुव के शंभु नामक पटरानी में तहां सुष्टि और भव्य नामक दो पुत्र हुए सुष्टिके सुच्छाया नामक स्त्री में रिपु, पुरंजय, विप्र, वृकण और वृकतेजा पांच पुत्र किरणों के घर (सूर्य स मान) हुए रिपु से वृहती नाम स्त्री में चाक्षुष नाम पुत्र हुआ.जो छठेमनु का पिता पूजनेवालों से स्थापित (पूजनीय) हुआ. ॥ २१ ॥ २२ ॥ जिसकी स्त्री वरुणवंशी अनरण्य नामक प्रजापति की पुत्री पुष्करणी में चाक्षुष का पुत्र महंतचाक्षुष हुआ. जिसको छठा मनु कहते हैं ॥ २३ ॥ वैराज नामक प्रजापति की पुत्री नड्वला मनु को व्याही. जिसमें चाक्षुष मनु से धर्मधीर बलवान् और वीर दश पुत्र हुए. जिनके नाम मूल में स्पष्ट हैं ॥ २४ ॥ उरु

नृप अंग९ सुनीथा नाम तत्थ, परन्यौं सु मृत्युतनया समत्थ ।२७।
तामाँहिं अंग सुत भयउ बेन१०, इहिं लाय दर्प किय अतुल एनं ॥
मातामहकी गति पकरि कूर, क्रूर हुकम किय धर्म दूर ॥२८॥
मम अर्थ करहु सब हवन सत्र, को विष्णु१भर्ग२ विधि३अघ अमत्र।
तब मुनिन कहिय नृप करहु यौंन, तव हित हम भाखत जदपि मौंन२९
हरिकेहि अर्थ मख करन देहु, तामैं बिभाग अब तुमहु लेहु ॥
यह सुनत कुप्पि आक्खिय नरेस, आम्नाय पुकारत न्याय एस॥३०॥
हरि१हर२अजे३इंद्र४रु गंधवाह५, जम६अनल७बरुन८रवि निधिनाह
ससि११भूमि१२अमर इत्यादिसर्ब, अवनीसदेह निबसत अखर्ब ।३१।
मैंही गति सेवहु अखिल मोहि, यह सुनत कुपित मुनि छिप्रछोहि ॥
हनि राख्यो पुब्बहि पाप जाहि, ते हनत भये कुस मारि ताहि।३२॥
बिनु भूप मचे भुवधाटिपात, सब मुनिन करन तब सब नसात ॥
नृप ऊरु मथी तहँ हुव निषाद, दवदग्ध दंडछबि आमिषाद*॥३३॥
बिंध्याचल निबसत तास बंस, यह कढिय बेन कृत पाप अंस ॥

आग्नेयी नामक स्त्री ने छः पुत्र पैदा किये. राजा अंग ने मृत्यु की पुत्री सुनीथा से विवाह किया ॥ २७ ॥ उस सुनीथा में अंग का पुत्र वेन हुआ जिसने घमंड लाकर बहुत पाप किये. और उस मूर्ख ने कठिन आज्ञा देके अपने नाना "मृत्यु" की रीति पकड़ कर धर्म को दूर किया ॥ २८ ॥ और कहने लगा कि होम और यज्ञ मेरे लिये करो विष्णु, शिव और ब्रह्मा पाप के पात्र कौन हैं. तब मुनियों ने कहा कि हे राजा ! हम मौन रखनेवाले हैं तौ भी हमारे कल्याण के लिये बोलते हैं कि ऐसा मत कर ॥२९॥ वेद भी यह न्याय कहता है ।३०। विष्णु, शिव, ब्रह्मा, इन्द्र, पवन, यमराज, अग्नि, वरुण, सूर्य, कुबेर, चंद्रमा और भूमि आदि देवता सब राजा के शरीर में बसते हैं ॥ ३१ ॥ तुमारी गति करनेवाला मैं ही हूं, सब मुझ को ही सेवो, यह सुनते ही मुनियों ने शीघ्र क्रोध करके जिसको पाप ने पहले ही मार रक्खा है उसको कुश (डाभ) का प्रहार करके मारडाला ॥ ३२ ॥ विना राजा के पृथ्वी पर धाड़े पड़नेलगे और मुनियों की सब कार्यसिद्धि का नाश होने लगा तब राजा को पैदा करने के लिये मुनियों ने राजा वेन की जंघा का मथन किया जिसमें से भील हुआ जो दावाग्नि (लाय) में जले हुए दंडे की छवि के समान काले रंगवाला मांसभोजी हुआ ॥ ३३ ॥ यह निषाद वेन के कियेहुए पाप अंश से निकला जि-

*निषाद मिषाद अन्त्यानुप्रास.

हुव तदनु मथत अपसव्य हत्थ, श्रीहरिवतार नृप पृथु११ समत्थ॥३४॥
तिँहिँ समय आजगव नाम चाप१, दंसन२ रु तूनें३मु विसिख दुरॉप।
इत्यादिक नभ सन सस्त्र आय,सब मिलत भये जगसुख सहाय।३५।
नहु ततकालहि नाकपत्त, छितिपाल भयो पृथु धारि छत्त ॥
सुर आये तस अभिषेककाल, जलधि रु नदी हु लै रत्नजाल ।३६।
लखि चक्र चिन्ह पृथु भूप हस्त, श्रीहरि गिनि मोदित हुव समस्त॥
ताबिच प्रजा हु किय तीव्ररंग, भो इँहिँ निदानें राजा सुभाग।३७।
नीरधि जिहिँ चालत थंभि नीर, सबहोतभये पत्थर शरीर ॥
अद्रिहु जिम केतनभंग है न,इम देत भये तिँहिँ उचित अैन ॥३८॥
अैसो हुव जो नृप पृथु उदार, सँवे रचत भयो विधिहित सुढार ॥
सुतिमाँहिँ सोम अभिषेव अनेहँ, हुव सूत१ रु मागध२ दिव्यदेह ।३९।
मुनि जनन कहिय तिन प्रति सुबैन, उभय२हितुम पंडित सुमति अैन॥
अरु उभय२ सत्यवादी उदार, पृथु की स्तुति बरन पटु प्रकार।४०।
तब दुहुन २कह्यो धरि सत्यधर्म,कछु नाँहि करिय पृथु अबहि कर्म॥

सका वंश विन्ध्याचल में बसता है. जिसे पीछे दाहिने हाथ को मथने से उसमें से श्रीविष्णु का अवतार समर्थ राजा पृथु हुआ ॥३४॥ इस समय महादेव का अजगव नामक धनुष,कवच,भाथा और दुर्लभ बाण इनको आदि देकर शस्त्र आकाश से आकर संसार के हित के लिये सहाय के अर्थ राजा को मिले ॥ ३५ ॥ वेन भी तुरंत ही स्वर्ग में पहुंचा और छत्र धारण करके पृथु राजा हुआ उसके अभिषेक के समय देवता, और रत्नों का जाल लेकर समुद्र और नदी आये ॥ ३६ ॥ १० प्रीति ११ इस कारण से सौभाग्यवान् ॥ ३७ ॥ जिस राजा के चलते समय मार्ग देने को समुद्र अपने जल को थांभ कर पत्थर रूप कर लेते थे और पर्वत भी जिस प्रकार राजा की ध्वजा टूट न जावे इस प्रकार उचित मार्ग देनेलगे ॥ ३८ ॥ ऐसा उदार राजा पृथु हुआ उसने ब्रह्मा के निमित्त श्रेष्ठ रीति से यज्ञ रचा उसमें से अवभृथ (यज्ञ के अंत में स्नान कियाजावे उसको अवभृथस्नान कहते हैं) स्नान के समय दिव्य देह को धारण करनेवाले सूत और मागध नाम के दो पुरुष उत्पन्न हुए ॥ ३९ ॥ उनसे मुनि लोगों ने कहा कि तुम दोनों पंडित सुबुद्धि के घर और दोनों उदार सत्य बोलनेवाले हो सो चतुरता से पृथु की स्तुति करो ॥ ४० ॥ तब दोनों ने सत्य बोलने के धर्म को धारण करके कहा कि अभी पृथु ने कोई कार्य नहीं किया और इस

याको न जसहु भुव विदित आँहिं, नुति होवत आश्रयहीन नाँहिं ।४१।
बुल्लिय पृथु११ तुम दुव सत्य बर्म, कहिहो तथाहि करिहौं सुकर्म ।
जुग२ पूज्य बतैहो बर्जनीय, मन्नौं न कबहु कज्ज सु मदीय ॥४२॥
इन्ह दुहुन२करिय नुति सुनत एह, तू सत्यवाक१ दाता२ सुनेह ॥
ह्रीमान३ सत्यसंधेर४ रु धनेस५, बिक्रांत६मैत्र७यज्वा८जनेस ।४३।
ब्रह्मण्य९साधुमते१० धर्मधैर्य११, प्रियबादी१२दुष्टन दंडदैन१३ ॥
सुसहन१४कृतज्ञ१५करुनानिधान१६,समदिट्ठि१७मान्यमानद१८सुजान
इम कहिय सूत१ मागध२ प्रकार, ऐसोहि बेन सुत हुव उदार ॥
आनर्त्तदेस दिय सूत१ अर्थ, मागध२हिं मगध अप्पिय समर्थ ।४५॥
अर्ची निजरानी सहित सूर, बहु करत भयो मख बित्त पूर ॥
पहिं जु अराजक होत देस, भुव गिलिय अन्न औषध असेस ।४६।
तबतैंहि प्रजा लहि भूखभार, क्रंदत अब आय रु किय पुकार ॥
पृथु सुनत आजगव धनु चढाय,टंकारि लग्यो भुव पिट्ठि आय४७
गौ रूप धरनि लग सत्यलोक, भजि भजि पृथु देख्यो अखिल ओक

का यश भी भूमि पर प्रसिद्ध नहीं है इस कारण से बिना आधार के स्तुति नहीं होती ॥ ४१ ॥ पृथु ने कहा तुम दोनों सत्य के कवच (रक्षक) हो सो जैसा कहोगे वैसा ही श्रेष्ठ कार्य करूंगा और तुम दोनों पूज्य जो नहीं करने योग्य कार्य बताओगे उन कार्यों को मैं कभी मेरे नहीं समझूंगा अर्थात् कभी नहीं करूंगा ॥ ४२ ॥ उन सूत और मागध ने यह सुनते ही यह स्तुति की कि हे राजा ! तुम सत्यवादी, उदार (देनेवाले) श्रेष्ठ प्रीति और लज्जा को धारण करनेवाला, सची प्रतिज्ञा रखनेवाला, कुबेर के समान धनपति, वीर, सब का मित्र, यज्ञ करनेवाला, मनुष्यों का ईश, विष्णु श्रेष्ठ बुद्धिवाला,धर्म का घर, प्यारा बोलनेवाला, दुष्टों को दंड देनेवाला, सहनशील, उपकार को माननेवाला, करुणा का घर अथवा करुणा ही है धन जिसके सब में समदृष्टि रखनेवाला, विद्वानों को मान देनेवाला है ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ इस प्रकार सूत और मागध ने कहा वैसा ही वेन का पुत्र पृथु उदार हुआ उस समर्थ राजा ने सूत (जो चारणों का मूलपुरुष है उस) को आनर्तदेश (द्वारकाप्रान्त) और मागध (भाटों का मूलपुरुष था उस) को मगध देश दिया ॥ ४५ ॥ १८ पृथु ने अपनी रानी अर्चि के साथ १९ बिना राजा का २० संपूर्ण ॥ ४६ ॥ २१ रोती हुई॥४७॥भूमि गौ का रूप धरकर भूमि से लेकर ब्रह्मलोक तक सब स्थानों

अवनी प्रकंपि तब कहिय एस, नारी हनि न करहु अघ नरेस ।४८।
अरु क्यों प्रजा रहि है अखर्ब, पृथु कहिय मरत इक१ जियत सर्ब ॥
आधार जोगबल मैं बनाय, करिहौं जगपालन तिहिं निकाय ।४९।
पुनि कहिय भुम्मि करि प्रभु प्रनाम, करिये उपाय यह उक्त काम॥
औषध मैं जारे जठर भूप, दोहहु मुहिं देहौं छीररूप ॥ ५० ॥
बच्छा मम अैसो देहु लाय, जासौं थन प्रस्नव प्रकटिजाय ।
पुनि करहु मोहि सम हे प्रबुद्ध, ज्यौं प्रसरिसकैं सब ठाम दुद्ध ॥५१॥
तब चाप अग्र करि बिसम टारि, समभूमि करी पृथु सब सम्हारि ।
बहु गिरि डिगाय किय दूर दूर, किन्नैं बहुगिरि बन दुर्ग चूर ॥ ५२॥
पुर ग्राम आदि बिधिजुत बसाय, दिय सबन सुलभ बार्त्ता चलाय॥
स्वायंभुव मनुकौं बिरचि बच्छ, अरु पात्र करिय निज हत्थ अच्छ।५३।
कढ्ढिय सब औषध सुवहिं दोहि, पृथ्वी पृथुनिर्मित बजिय सोहि।
देवन मिलि इंद्र१ हिं बच्छ२ठानि, पुनि मित्र१ तत्थ दोग्धा२ प्रमानि।५४।
करि कनक१ पात्र२ बल१ छीर२ दोहि, लीनौं निजइच्छित सबन सोहि॥
ससि१ बच्छ२ मुनिन श्रुति१ पात्र२ कीन,
गुरु१ दोग्धा२ पय१ तप२ ब्रह्म३ लीन ॥ ५५ ॥

में भाग भाग कर गई वहां पृथु को साथ ही देखा तब भूमि ने धूजकर कहा कि हे राजा ! स्त्री को मार कर पाप मत कर ॥ ४८ ॥ और मेरे बिना यह बडी प्रजा कहां रहेगी ? तब पृथु ने कहा कि एक के मरने से सब जीवित रहते हैं और मैं योगबल से आधार (सब के ठहरने का स्थान) बना कर उस स्थान में सब का पालन करूंगा ॥४९॥ ६ कहा हुआ कार्य ७ पेट में ८ दुग्धरूप से ॥ ५० ॥ ९ थनों में दूध का प्रवाह आजावे १० बराबर ११ हे बुद्धिमान् राजा ! १२ दुग्ध ॥ ५१ ॥ तब धनुष के अग्रभाग से ऊंचानीचापन मिटाकर भूमि को बराबर करदिया ॥ ५२ ॥ १० बछड़ा ॥ ५३ ॥ तभी से पृथु के बनाने के कारण भूमि का नाम पृथ्वी हुआ. देवताओं ने इंद्र को बछड़ा बना कर सूर्य को दोहनेवाला बनाया और सोने के पात्र में बल (पराक्रम) रूपी दुग्ध दोहकर अपनी २ इच्छानुसार सब ने लिया और मुनियों ने चंद्रमा को बछड़ा, वेद को पात्र और बृहस्पति को दोहनेवाला करके तप

असुरनहु विरोचन१ विरचि वच्छ२, दनुजात द्विमूर्द्धा१ दुहन२ दच्छ ॥
करि लोह१ पात्र२ माया१ सुदुद्ध२, लीनों सब है निजहित प्रबुद्ध ॥५६॥
रक्खसन सुमाली१ वच्छ२ रक्खि, जतुनाभ१ हि दोग्धा२ उचित अक्खि।
रु कपाल१ पात्र२ पय१ रुधिर२ रूप, इन निज अभीष्ट दोह्यो अनूप ॥५७॥
इहिं क्रम सन अद्रिन मेनकेस१, अरु मेरु२ सिला३ ओपध४ असेस ॥
गंधर्वन चित्ररथाख्य१ ज्यों हिं, तँहँ सुवसु२ पंकज३ रु गंध४ त्यों हिं ॥५८॥
नागेन तच्छक१ धृतराष्ट्र२ नाम, तुंबी३ रु गरल४ क्रम सहित ताम ॥
धनद१ रु सुकर्ण२ तिम आमँगारि३, अंतरधान४ सु जच्छन विचारि ॥५९॥
पितरन जम१ अंतक२ जातरूप३, अपनी स्वधा४ सु दोही अनूप।
विटपिन पलक्ख१ तिम साल२ पत्र३, करि छिन्न प्ररोहन४ लहिय तत्र
औपध१ लिय अद्रिन इक्क सेस, तँहँ अपर रत्न२ जानहु नरेस।
इम हुव महीप पृथु हरिवतार, धर द्वीपसप्त७ इक छत्रधार ॥६१॥

और ब्रह्मरूपी दूध लिया ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ असुरों ने भी प्रल्हाद के पुत्र विरोचन को बछड़ा और दनु के पुत्र चतुर द्विमूर्धा को दोहनेवाला बना कर लोहे के पात्र में माया रूप दूध अपने हित में पण्डित होकर सब ने लिया ॥५६॥ राक्षसों ने सुमाली को बच्छा रख कर जतुनाभ राक्षस को दोहनेवाला उचित कहकर कपाल के पात्र में अपना प्रिय रुधिर रूपी दूध दुहा ॥ ५७ ॥ इसी क्रम से पर्वतों ने मेनकेश को बच्छा, मेरु को दोहनेवाला और शिला का पात्र करके सम्पूर्ण ओषधी रूप दूध दुहा। गंधर्वों ने चित्ररथ को बछड़ा सुवसु को दोहनेवाला कमल का पात्र बना कर गंध रूपी दूध लिया ॥ ५८ ॥ सर्पों ने तक्षक को बच्छा, धृतराष्ट्र नामक सर्प को दोहनेवाला और तूंबी (तुम्बा) का पात्र रख कर दोषवाला जहर रूपी दूध निकाला। यक्षों ने कुबेर को बच्छा, सुकर्ण नामक यक्ष को दोहनेवाला और कच्चेमांस का पात्र बना कर अन्तर्धान (छिपजाने) रूप दूध दुहा ॥ ५९ ॥ ॥ पितरों ने कांकपक्षों को बच्छा यमराज को दोहनेवाला और सोने का पात्र बना कर उपमार्राहत अपनी स्वधा (पितरों के अर्थ अन्न वा जल दिया जावे उसको स्वधा कहते हैं) दुहा वृक्षों ने प्लक्ष (वृक्ष विशेष) को बच्छा, साल वृक्ष को दोहनेवाला और पत्ते का पात्र करके कटहुए में फिर अंकुर पैदा होजाने रूप दूध लिया ॥ ६० ॥ हे राजा रामसिंह! पर्वतों ने औषधी ली वहां बाकी का दूसरा रत्न भी जानो अर्थात् पर्वतों ने औषधी और रत्न ये दोनों पदार्थ लिये ॥ ६१ ॥

यह चरित सुनैं एकाग्रचित्त, अघ[1] तिहिं लिपैं न बलि[2] बढहि बित्त[3] ॥
पृथुकै सुत अंतर्द्धान१२।१नाम आर्द्धित१२।२द्वितीय२ए हुव ललाम[4]६२।
अग्रज सिखंडिनी नाम नारि, परन्यौं सुरूप१कुल२बय३निहारि ॥
सुत तास हविर्द्धानाभिधान१३,आग्नेयी धिषणा दारवान॥ ६३ ॥

प्राचीनबर्हि१४।१मुख छ६सुत तास,
सुक१४।२रु गय१४।३कृष्ण१४।४रु प्रज१४।५सुभास ॥

पुनि अजित१४।६अब सु इनमाँहिं ज्येष्ठ,प्राचीनबर्हि१४हुव पुहवि प्रेष्ठ
प्रागग्र[5] जास मख कुस बिसेस, छिति सर्ब छये इम नाम एस ॥
रानी समुद्रतनया तदीयँ, सुत तास प्रचेतस१५।१०दस१०बलीय६५।
ते सर्गरचन सुनि पितुनिदेस, मातामह[10] जल प्रबिसे असेस ॥
तप घोर अयुत१००००हायन[11] समर्थ,जलमैं हि करिय तिन विष्णुअर्थ
पिच्छैं सन नारद संग पाय,प्राचीनबर्हि बन रहिय जाय ।
तब अवनि[12] अराजक[13] कृषि[14] बिहीन,बिटपिन[15] सब बढि बढि दुर्ग[16]कीन।६७
इत करि प्रचेतसन विष्णुतुष्ट[17], लिय सर्गरचन[18] हित बर अदुष्ट[19] ॥
दस१०ही जल बाहिर बहुरि आय,कृषिहीन लखी भुव तरु[20] निकाय६८
तब सुचि१रु पवन२मुखतैं निकारि,द्रुम बहु प्रचेतसन दिय उजारि॥

१पाप२ पुनि ३ धन ४ सुन्दर॥६२॥बडे भाई अन्तर्द्धान ने शिखंडिनी नाम स्त्री से विवाह किया जिसके हविर्द्धान नामक पुत्र हुआ उस हविर्द्धान से अग्नि कुल की धिषणा नामक स्त्री में।६३।प्राचीन बर्हि को आदि लेकर छः६पुत्र हुए, इनमें बडा प्राचीनबर्हि पृथ्वी का प्रियतम(पति)हुआ।६४।५पहिले जिसके अधिक यज्ञों में डाभ के अग्र भागों से सब भूमि छागई थी इस कारण से इस का नाम प्रसिद्ध है। समुद्र की पुत्री सवर्णा नामक इस की राणी में बलवान् दश पुत्र हुए जिन दशों का नाम प्रचेतस हुआ ॥ ६५ ॥ उन प्रचेतस को पिता (प्राचीनबर्हि) ने आज्ञा दी कि तप करके विष्णु की आराधना से सृष्टि बढाओ तब इन्हों ने अपने नानां (समुद्र) के जलमें प्रवेश करके दश हजार वर्ष तक विष्णु के अर्थ घोर तप किया ॥ ६६ ॥१२भूमि१३विनाराजा के १४ खेती विना १५वृक्षों ने १६ कठिनाई से जाने योग्य स्थान ॥ ६७ ॥ १७ प्रसन्न १८ सृष्टि रचना के अर्थ १९ श्रेष्ठ २० वृक्षों का घर।६८। तब प्रचेतसों ने अपने मुखों से अग्नि और पवन निकाल

निज बिभव जरत लखि आय सोम[1], बुल्लिय तुम न करहु तरुन होम।६९।
तनया[2] इक१ इनकी सब बिबाहि, तिय करहु मारिषा भजहु[3] ताहि।
यह होनहार[4] गति प्रथम जानि, पोखी सु मैं हि तुम हित प्रमानि ॥७०॥
अद्धो मिलि तुमरो तेज अंस, अरु अर्द्ध मम हु मिलि नृप वतंस॥
तुमरे सुत याबिच अग्गिधाम[6], हैहै सु प्रजापति दच्छ नाम॥ ७१ ॥
इक १ समय कंडु मति रचिय अग्ग, तपघोर रोकि इंद्रिय समग्ग॥
जिहिं ठगन गोमती तीर जत्थ, प्रम्लोचा पठई सुरन[8] तत्थ ॥ ७२ ॥
कल सुन तदीय डिगि कंडु चेत, सु भजी स्मर[10] सूदित[11] हित समेत॥
मंदर[12] गिरि कंदर बहुत वर्ष, रहि कंडु रम्यो ताजुत सहर्ष॥ ७३ ॥
जब जानलगी तब तिहिं निवारि, रक्खी हठ करि करि वेर च्यार।७४।
इक समय कहिय मुनि दिन अतीत[13], करिहौं अब संध्या पुराय प्रीति॥
तिय कहिय बरस नव सत रु सत्त९०७ बित्ते छ६ मास अह[14] तीन३ अत्त॥
मैं गर्भ धरिय मुनि अप्प संग, यह बज्ज सुनत तजि रति उमंग॥७५॥

कर बहुत वृक्षों को जला दिया इस प्रकार अपने वैभव को जलता हुआ देखकर वृक्षों के राजा चंद्रमा ने आकर कहा कि तुम वृक्षों को मत जलाओ ।६९। मारिषा नामक इनकी एक कन्या है उसको तुम सब विवाह कर सेवन करो, इस होनेवाली गति को जानकर तुमारे लिये मैंनेही उसका पोषण किया है।७०।आधा तुमारे तेज का अंश और आधा हमारा मिल कर तुमारा पुत्र राजाओं का मुकुट अग्नि का धाम श्रेष्ठ प्रजापति दक्ष नामवाला होवेगा ॥ ७१ ॥ अब वृक्षों की कन्या मारिषा की उत्पत्ति का इतिहास कहते हैं. एक समय कंडू मुनि ने बुद्धि रचकर सब इंद्रियों को रोककर आगे घोर तप किया था जिसको ठगने के लिये गोमती की तीर पर देवताओं ने प्रम्लोचानाम अप्सरा को भेजी थी ॥ ७२ ॥ उस का कोकिल समान शब्द सुनकर कंडु का चित्त डुल गया और कामदेव के हने हुए [पकाये हुएं] मुनिने उसका हित के सहित सेवन किया और मंदराचल की कंदरा में बहुत वर्षों तक हर्ष के साथ कंडु उसके साथ रमण करता रहा ॥ ७३ ॥ जब वह पीछी स्वर्ग को जाने लगी तब हठ के साथ चार वार मना करके रक्खी, एक समय मुनि ने कहा कि दिन बीत गया अब संध्या समय है सो पुण्य से प्रीति करके अब संध्या करूंगा ॥७४ ॥ तब अप्सरा ने कहा कि आपको मेरे साथ रमण करते नौ सौ सात वर्ष छः महीने और तीन दिन बीत गये जिनमें तो कभी सन्ध्या नहीं की आज ही क्या अधिकता

दिन्नी बिडारि[1] तिय पाय खेद,सु गई तरु पत्रन पौंछि स्वेद[2] ॥
तस गर्भ कढ्यो वह होय घर्म[3],तरु दलन[4] लग्यो सुनिये सुधर्म॥७६॥
घर्म सु समेटि किय इक्क बात[5], हुव कन्या तामय छबि सुहात ॥
पोखी हम रक्खी तरुन जाहि, तजि कोप प्रचेतस लेहु ताहि॥७७॥
कंडू१तरु२मैं[3] ३अरु पवन४ च्यारि४,तुम स्वसुर करहु सु बिबाहि नारि
ही अग्ग यहै भूपतिकलत्र[8], बैधव्य पाय तप तपिय तत्र ॥ ७८ ॥
हरि सौं जिहिं जच्चिय[9] इष्ट[10] एहु, भव भव धव[11] उत्तम मोहि देहु ॥
पुनि देहु प्रजापति तुल्ल्य पुत्र, जो होय बीर जगको तनुत्र[12] ॥७९॥
हरि कहिय इक्क१भव[13]मैं हि आनि,पति दसक१०तोहि मिलिहैं प्रमानि
अरुसुतहु प्रजापति नाम दच्छ,ह्वैहै त्वदीय[14] जग जनक[15] अच्छ । ८० ।
सो यहहि मारिषा है उदार, बिधिजुत बिबाहि तुम करहुदार[16]*
ससि[18]बच प्रचेतसन सुनि बिबाहि,आनी सु मारिषा सर्ग[18] चाहि ।८१।
तामाँहिं दच्छ[19]१९तिनं[20] सन तनूज[21],प्रकट्यो सु प्रजापति प्रकट पूज।

है और मैंने आप से गर्भ भी धारण किया है, इस बज्र रूपी वचन को सुनके अपनी तपस्या का भंग समझकर मुनि ने रति की उमंग छोडदी ॥ ७५ ॥ और खेद पाकर स्त्री को निकाल दी सो वृक्षों के पत्तों से पसीना पौंछकर चली गई उसका गर्भ पसीना होकर निकला सो वृक्षों के पत्तों में लग गया सो हे श्रेष्ठ धर्म को धारण करनेवाले(प्रचेतस) सुनो ॥ ७६॥ उस पसीने को पवन ने समेट कर एकत्र (इकट्ठा) करदिया उस पसीना सहित सुहावनी छबि की कन्या हुई जिसको हम(चंद्रमा)ने पोषण किया और वृक्षों ने रक्खी ॥ ७७ ॥ तुम इ-स श्रेष्ठ स्त्री का विवाह करके कंडु मुनि, वृक्ष, मुझ (चंद्रमा) और पवन को श्वसुर (सुसरा) करो यह आगे राजा की स्त्री थी जिसने विधवापन पाकर तप किया ॥ ७८ ॥ जिसने विष्णु से बर मांगा कि जन्म जन्म में मुझे उ-त्तम पति दीजिये और प्रजापति समान पुत्र दीजिये जो वीर संसार की र-क्षा करनेवाला होवे ॥७९॥ विष्णु ने कहा कि एक ही जन्म में तुझे दश पति मिलेंगे और पुत्र भी तेरे दक्ष नाम का प्रजापति संसार का पिता होवेगा ॥ ८० ॥ १६ स्त्री १७ चन्द्रमा के १८ सृष्टि की चाहना करके ॥ ८१ ॥ १९ दक्ष प्रजापति २० तिन प्रचेतसों से २१ पुत्र. जो पहले ब्रह्मा के अंगुष्ठ (अंगूठे)

---

* उदार हुदार अन्त्यानुप्रास.

जो पूर्व द्रुहिन अंगुष्ट जात,सुहि दच्छ दच्छ यह अपर ख्यात। ८२।
बीरणा प्रजेस तनया ललाम, बिवह्यो सु असिक्नी नाम वाम ॥
हुव पंचसहँस५०००तामाँहिं पुत्त,सब बीर नाम हर्यश्व१७जुत्त ॥८३॥
तप करत तिन्हैं नारद सिखाय,भुव अंत लेन दिन्हैं पठाय।
ते समुझि गये दिस दिसन दोरि, ह्वै ब्रह्मरूप नांये बहोरि ॥८४॥
पुनि दच्छतनय सरजे हजार१,०००,मुनिराज योंहिं पठये उदार।
सुनि सोहु दच्छ दिय कुपित साप,अविरत मुनि नारद भ्रमहु आप।
मंजुल तदनंतर सष्ठि६०मान, सुभ दच्छ सुता सरजी सुजान ॥

तिनमैं दस१०दिन्नी धर्मग्रत्थ,

सँसि स्वसुरहिं बीस२०रु सप्त७ २७सत्थ ॥ ८६ ॥

कस्यप हित तेरह१३दिय प्रवीन,रु अरिष्टनेमि हित च्यारि४दीन॥
बहु पुत्र१अंगिरा२उभय२काज,द्रुव२द्रुव२दिय कन्या दच्छराज८७
दीनी कृसाश्व हित द्रुव२नरेस, इन की ही संतति जग असेस ॥
उत्तानपाद नृप कुल चरित्र, पापहु नर होवत सुनि पवित्र ॥ ८८ ॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ विद्यमान-

से दक्ष उत्पन्न हुआ था वही यह दूसरे दक्ष नाम से प्रसिद्ध हुआ ॥ ८२ ॥ वीरण नामक प्रजापति की सुन्दर असिक्नी नामक पुत्री के साथ विवाह करके दक्ष ने अपनी स्त्री बनाई जिसमें हर्यश्व नामक पांच हजार पुत्र हुए ॥८३॥ उन तप करते हुओं को नारद ने सिखाकर पृथ्वी का अन्त लेने को भेजदिया सो दशों दिशा को दौड़ गये और ब्रह्म रूप होकर पीछे नहीं आये ॥ ८४॥ दक्ष ने फिर एक हजार पुत्र उत्पन्न किये जिनको भी नारद ने उसी प्रकार भेजदिये सो सुनकर दक्षने नारद को श्राप दिया कि हे मुनि तुम भी निरंतर (विनाविश्राम लिये) फिरते रहो ८५ जिसपीछे यह सोचा कि पुत्रोंको तो नारद रहने नहीं देवेगा, सुन्दर साठ है प्रमाण जिनका ऐसी श्रेष्ठ कन्या उत्पन्न कीं जिनमें से दश तो धर्म को दीं और सत्ताईस अपने सुसरे चन्द्रमा को ॥ ८६ ॥ तेरह कश्यप को चार अरिष्टनेमि को, दो बहुपुत्र को, दो अंगिरा को और दो कृशाश्व को, राजा दक्ष ने दीं ॥ ८७ ॥ इन ही की सन्तान में सारा संसार है, राजा उत्तानपाद के कुल के इस चरित्र को सुनकर पापी मनुष्य भी पवित्र होजाता है ॥ ८८ ॥

श्री वंशभास्करमहाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में वर्तमान बाराह

वाराहकल्पप्रथमसर्गसूचनान्तर्गतस्वायम्भुवसूनूत्तानपादवंशवर्णन मष्टादशो१८मयूखः ॥ १८ ॥

प्रायोब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥ पज्झटिका

सुनिए ऽब दच्छ दुहितान नाम, जिनसौंहि प्रपूरन धाम धाम ॥
पहिली अरुंधती१गुनन गोरि,वसु२जामी३लंबा४त्यौं बहोरि ॥ १ ॥
भानु५रु मरुत्वती६सर्ग थान, संकल्पा७रु मुहूर्त्ता८सुजान ॥
साध्या९अरु बिश्वा१०धर्मगेह, सुनिए ऽब तास संतति सनेह ॥२॥
भूविषय१अरुंधति उदरजात,बसु पुत्र अष्ट८बसुदेव ख्यात॥
आप १ ध्रुव २ सोम ३ धर ४ अनिल ५ जानि,
अनल ६ रु प्रत्यूप ७ प्रभास ८ मानि ॥ ३ ॥
ए अष्ट८रु अग्रज आप पुत्त, वैतंड्य१श्रम२रु ध्वनि३श्रांत४जुत्त ॥
ध्रुव पुत्र काल१सब खानहार,इम सोम तनय बर्चा उदार ॥ ४ ॥
धर तिय मनोहराजनिय ताह, सुत पंच५द्रविण१हुतहव्यवाह२॥
जिम सिसिर३प्रान४पुनि रमन५ज्यौंहि,
अनिलोत्त सिवा बिच उभय२त्यौंहि ॥ ५ ॥
तिन माँहि पुरोजव१भो गरीय,रु अविज्ञातगति२यह द्वितीय२ ॥
चउ४अग्नितनय इक गुह१अजेय,पुनि साख२विसाख३रु नैगमेय ॥

के प्रथमसर्ग की सूचना के भीतर स्वायम्भुवमनु के पुत्र उत्तानपाद के वंशवर्णन का अठारहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १८ ॥

अरुंधती के उदर से संसार के सब विषय उपजे, और वसु के पेट से आठ पुत्र हुए जो वसु के नाम से आठों देवता प्रसिद्ध हुए जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं ॥ ३ ॥ इन आठों में बड़े आप नामक वसु के वैतंड्य, श्रम, ध्वनि और श्रान्त ये चार पुत्र हुए ध्रुव के सब को खानेवाला काल नामक पुत्र हुआ, इसी प्रकार सोम के वर्चस नामक उदार पुत्र हुआ ॥ ४ ॥ धर नामक वसु से मनोहरा नामक स्त्री ने द्रविण, हुतहव्यवाह, शिशिर, प्राण और रमण नाम के पांच पुत्र जने, इसी प्रकार शिवा नामक स्त्री में अनिल के दो पुत्र हुए ॥ ५ ॥ जिन में बडा पुरोजव और दूसरा अविज्ञातगति हुआ । अग्नि के गुह, शाख, विशाख और नैगमेय नाम के किसी से नहीं जीते जावें ऐसे चार पुत्र हुए ॥ ६ ॥

कार्तिक सरजन्मा ते कहात,मुनि देवल१अथ प्रत्यूष जात ॥
मुनिकै हु छमावान१रु मनीसि२,हुव दोहु२सिद्ध दिय पापपीसि॥७॥
सुरगुरु भगिनी पत्नी प्रभास,त्रैलोक्य पूज्य सुत पंच५तास ॥
जेठो सु बिस्वकर्मा१प्रजेस, कर्त्ता सब सिल्पन उदित एस ॥ ८ ॥
रु अजैपाद२दूजो२सुजान, तीजो३सु अहिर्बुध्न्याऽभिधान३ ॥
त्वष्टा४रु रुद्र५ए भ्रात पंच५,जिन्ह चिंति रहैं नहिं दुरित रंच ॥९॥
अग्रजकै संज्ञा१गुन उदर्क, तनया भई सु पत्नी जु अर्क ॥
चोथे४त्वष्टाकै बिश्वरूप१,त्रिसिरा जो मार्‍यो त्रिदिवभूप ॥ १० ॥
सब अनुज रुद्र जो कहिय अत्थ,एकादस११आत्मज सो समत्थ ।
तस भेद हर१रु बहुरूप२जानि,त्र्यंबक३अपराजित४बलि बखानि ११
तैसैंहि वृषाकपि५संभु६नाम,रु कपर्दी७रैवत८अखिलधाम२ ।
श्रुत नवम९मृग१०व्याध६हु प्रसस्त३,पुनि सर्व१०कपाली११ए समस्त १२
यह धर्मबधू बसु सर्ग आहि,जामिभव नागबीथी१सु ताहि ।
लंबाकै घोस१रु भानु पुत्त,हुव सबहि भानु अभिधान जुत्त ॥१३॥
प्रकटे मरुत्वती सुत जितेक,अभिधान मरुत्वानहि तितेक ।

ये चारों कृत्तिका के उदर से उत्पन्न होने के कारण कार्तिकेय और षड्जन्मा कहाते हैं, प्रत्यूष से देवल मुनि जन्मा इस देवल मुनि के भी क्षमावान् और मनीषि नाम के दो पुत्र हुए जिन सिद्धों ने पाप को पीस डाला ॥ ७ ॥ प्रभास नामक वसु ने कामवैरिणी नामक बृहस्पति की बहिन के साथ विवाह किया इस के तीन लोक के पूज्य बडा विश्वकर्मा नामक प्रजापति सब शिल्प विद्या को उत्पन्न करनेवाला हुआ ॥ ८ ॥ दूसरा अजैपाद तीसरा अहिर्बुध्न्य नामवाला त्वष्टा और रुद्र ये पांच पुत्र हुए जिन का स्मरण करने से लेशमात्र भी पाप नहीं रहता ॥९॥ विश्वकर्मा के गुणों के साथ सूर्य की स्तुति करनेवाली संज्ञा नामक पुत्री हुई जिस को सूर्य ने पत्नी, चौथे त्वष्टा के विश्वरूप, (त्रिशिरा) हुआ जिस को इन्द्र ने मारा ॥ १० ॥ इहां पर सब से छोटा जो रुद्र कहा उस के बलवान् ग्यारह पुत्र हुए जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं ॥ ११ ॥ २ सब का घर ३ प्रसिद्ध ॥ १२ ॥ यह धर्म की वसु नामक स्त्री की संतान है, धर्म से जामि नामक स्त्री में नागवीथी, लम्बा नामक स्त्री में घोष हुआ और भानु नामक स्त्री के पुत्र हुए सो सभी भानु नाम कहाये ॥ १३ ॥ मरुत्वती नामक स्त्री के जितने पुत्र हुए उन सब का नाम मरुत्वान्

संकल्पाकै संकल्प सर्ग, रु मुहूर्त्त मुहूर्त्ताकै सुबर्ग ॥ १४ ॥
विश्वाकै तैरह१३विश्व एव,साध्याकै द्वादस१२साध्यदेव ।
तेरह१३सुनौं अब कस्यप कलत्र,अदिती१दिती२रु दनु३नाम तत्र १५
रु अरिष्टा४सुरसा५सुरभि६जानि,बिनता७ताम्रा८रु इडा९बखानि ।
क्रोधबसा१०कद्रू११मुनि१२जथाहि,प्राधा१३त्रयोदसी१३तिय तथाहि
जे चाक्षुस मनु छत तुषित देव,इहिं७मनु हुव अदिती तनय एव ।
ते बिष्णु१सुक्र२धाता३गणेय,त्वष्टा रु अर्यमा५नामधेय ॥१७॥
पूषा६सबिता७भग८बरुन९मित्र,१०पुनि अंस११बिबस्वान१२हु पवित्र
दितिसुत कनककसिपु१कनकनैन, २ अरु सिंही३तनया दुरितै अैन
जिहिं बिप्रचित्ति दानव बिबाहि,सुत राहु जन्यौं ग्रह कहत जाहि ।
हुव कनककसिपु सुत च्यारि४धीर,प्रल्हाद१ल्हाद२संल्हाद३बीर॥
अनुल्हाद४चुत्थ इनमैं बिरक्त, प्रल्हाद१भयो हरिमुख्यभक्त ।
खल जनक दयो जो ज्वलन जारि,दिय पासबद्ध पुनि उदधि डारि।२०।
प्रहराविय सस्त्रन असुर प्रेरि, पन्नगन डसाविय हित न हेरि ।
भृगुसौं गिराय दिग्गजहु हुल्लि,मर्दाविय बालक खीज खुल्लि ॥२१॥
अर्भक मर्‍यो न कसमहु उपाय,थक्क्यो सब करि करि दैत्यराय ॥

हुआ, संकल्पा नामक स्त्री की संतान संकल्प और मुहूर्ता के श्रेष्ठ समुदाय वाले मुहूर्त्त नामक पुत्र हुए ॥ १४ ॥ विश्वास नामक स्त्री के तेरह विश्वेदेवा और साध्या के बारह साध्यदेव हुए, अब कश्यप की तेरह स्त्रियों के नाम सुनो जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं ॥ १५ ॥ १६ ॥ ये चाक्षुषमनु के समय में तुषितदेव थे वेही इस वर्तमान (वैवस्वत) मनु में अदिति के पुत्र बारह आदित्य हुए जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं और दिति के हिरण्यकश्यप, हिरण्याक्ष नाम के दो पुत्र और सिंही नामक एक पुत्री पापं की घर पैदा हुई ॥ १७ ॥ १८ ॥ जिस सिंही ने विप्रचित्ति नामक दैत्य से विवाह करके राहु नामक पुत्र जना जिस को ग्रह कहते हैं ॥ १६ ॥ ४ हिरण्यकश्यप के चार पुत्र हुए जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं इन में चौथा अनुल्हाद तो विरक्त हुआ और प्रल्हाद मुख्य हरि भक्त हुआ जिस को दुष्ट पिता ने ५ अग्नि में ॥ २० ॥ ६ सर्पों से ७ पर्वत से (जिस पर्वत से गिरनेवाले को बीच में कोई आधार नहीं मिलै उस को भृगु कहते हैं और लौकिक में उस का नाम किराय प्रसिद्ध है) ॥ २१ ॥ ८ बालक ९ किसी उपाय से नहीं मरा·

भो अनल[1] जल रु जल ग्राव अंग,हुव सस्त्र बिफलअहि दंतभंग॥ २२॥
भृगुसौं[2] गिरंत बढि भूमि उद्ध[3], झेलि रु अधअंन्यौं[4] सु[5] सिसुद्ध[6] ।
मऽकुन[7] हुव दिग्गज रदतुराय,कृत्याहु बिफल हुवभयनिकाय ॥ ३॥
संसोखन बात रु गेरल दत्त,संबर माया जुत हुव असत्त ।
जनकहि इम लग्गो हनन याहि,हरि तबहि प्रकट हुव भक्त चाहि।२४
बर दिय तँहँ मंगिय भक्ति तासें[11],अरु स्वीय जनकें[12] कृत पापनास॥
दै दुवहि२पिहितैं[13] हुव जगनिकाय[14],प्रल्हाद लग्यो पितु चरन आय।२५।
पुनि व्है नृसिंह जब हनिय दुष्ट, प्रल्हाद लयो तब राज्य पुष्ट ॥
यह चरित सुनैं मिटि तास ताप,व्है नष्ट अंहोनिस रचित पाप ॥२६॥
प्रल्हाद बिरोचन २ पुत्र पाय, दै ताहि राज्य गो[16] हरिनिकाय[17] ॥
येक्षै सुत दानी बलि३नरेस,जिहिं लहि हरि जाचक दिय असेस॥२७॥
बिंध्यावलिमैं[20] बलिसौं प्रबीर, सत१००हुव बाणादिक समरधीर ॥
बानासुरकै सुत बहु बलिष्ठ, चंडासि[21] हनैं दुव२पापनिष्ठ[22] ॥ २८ ॥
प्रल्हादकेहि कुलमाँहिं धुंत्त[23], प्रकटे निवातकवच हु बहुत्त ॥
संल्हाद पुत्र सुनिये प्रबीन, सिबि१बाष्कल२आयुष्मान ३तीन ॥२९॥
अनुल्हाद १ ल्हाद २ के कुल अनेक, अैसैंहि बढे बहु बीर टेक ॥

अग्नि जल रूप हो गया और जल पत्थर समान होगया ॥ २२ ॥ २ पर्वत से ३ ऊपर को ४ नीचे ५ सो (उस) ६ शुद्ध बालक को ७ हाथी दांत तुड़ाकर मुकना होगया और दैत्यराज के पुरोहितों ने प्रल्हाद को मारने के अर्थ भय का घर ऐसी कृत्या उत्पन्न की थी सो ॰ विफल होगई ॥ २३ ॥ सम्बरासुर की ब॰ाई हुई अनेक भांति की माया के साथ प्राण शोषण करनेवाला पवन चलाया, जहेर दिलाया, सो सभी मिथ्या होगये और जब पिता (हिरण्यकश्यप) ही प्रल्हाद को मारनेलगा तब विष्णु प्रकट हुए ॥ २४ ॥ ११ उस (प्रल्हाद) ने १२ अपने पिता के किये हुए १३ अन्तर्धान १४ संसार के घर ॥ २५ ॥ १५ दिन रात्रि के ॥२६॥ १६गया १७विष्णु के स्थान में १८प्रल्हाद के पुत्र इस विरोचन के दानी पुत्र राजा बलि हुआ जिस ने विष्णु जैसे याचना करनेवाले पाकर संम्पूर्ण(तीनों लोक) देदिये ॥२७॥२० विन्ध्यावलि नामक स्त्री मेंहुवाण ने मारे २२पाप की निष्ठावाले धूम्रकेतु और जम्भासुर इन दोनोंको ॥२८॥ [23]धूर्त॥२९॥

प्रकटे हिरंगयहगकै छ६पुत्त, भर्भ्भरि१रु भूतसंतापर२धुत्त ॥३०॥
सकुनि३महाबाहु४रु कालनाभ५,त्यौं अपर महानाभ६हु दुराभ ॥
द३नुके अब आत्मज बिप्रचित्ति१,जिहिंलिय अनेक रन सुरनं जित्ति३१
संकुर २ रु द्विमूर्द्धा३कपिल४रुष्ट,रु अयोमुख५संकुसिरा६हु दुष्ट ॥
तारक७संबर८सुर हृदयपक्कं,स्वर्भानु९पुलोमा१०एकबक्त्र११॥३ ॥
तैसैं वृषपर्वा १२ देवद्रोहि, हुव नृप ययातिको स्वसुर सोहि ॥
इत्यादि असुर दनुसुत बहुत्त, अब बिप्रचित्ति सिंहीज पुत्त ॥ ३३ ॥
वातापि१जंभ२इल्वगा३रु सल्य४,व्यंस५रु मृग६नमुचि७हु इंद्रसल्य।
खल अजक८नरक९पुनि कालनाभ१०, अरु राहु११बकयोधी१२अगाभ
गंधर्ब अरिष्टाकै अदर्प, सुरसाकै खेचर सहँस १०० सर्प ॥
सुरभीकै गोगन१महिख२व्रात,बिनतासन अरुगा१रु गरुड२भ्रात३५
ताम्राकै तनया छ६हव भूप, स्येनी १ सुकी २ रु भासी ३ अनूप ॥
सुग्रीवी४गिद्धी५सुचि६समेत,इनके हु सर्ग हुव क्रम उपेत ॥ ३६ ॥
　　द्विय त्रितय ३ सेन १ सुक २ भास ३ खोलि,
　　सुग्रीवी ४ कै हय १ खर २ रु भोलि ३ ॥
गिद्धी५कैगिद्ध१रु सुचि६ज सर्ग,बारिचर बिहग१अरु घूक बर्ग।३७
रु इडा तृन१बीरुध२बल्लि३रुक्ख४,जनि एहि तज्यो अनपत्य दुक्ख॥

१हिरण्याक्ष के २खोटी कांतिवाला ३अब दनु के पुत्रोंको कहते हैं ४देवताओं को ५देवताओं के हृदय को पकानेवाला ॥३२॥ अब विप्रचित्ति से सिंही नामक स्त्री में पुत्र हुए जिन को कहते हैं जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं॥३३॥ ६पर्वत के समान छविवाले ॥३४॥ कश्यप से अरिष्टा नामक स्त्री में घमंड रहित गन्धर्व उत्पन्न हुए और सुरसा नामक स्त्री में आकाश में विचरनेवाले हजारों सर्प हुए। सुरभी नामक स्त्री मे गौओं भैंसियों के समूह, और विनता नामक स्त्री में अरुण और गरुड ये दो भाई उत्पन्न हुए ॥३५॥ हे राजा रामसिंह! कश्यप से ताम्रा नामक स्त्री में छः कन्या हुईं जिन के नीचे लिखे क्रम के अनुसार सृष्टि हुई ॥३६॥ सेनी के सेनपक्षी, सुकी के सुक (सूवे) और भासी नामक स्त्री के भास (पक्षिविशेष) हुए, सुग्रीवी नामक स्त्री के घोड़े, गधे और ऊंट हुए इसी प्रकार गिद्धी के गीध, और शुचि नामक स्त्री के जलचर पक्षी और घूक (उलूक) ॥ ३७ ॥ कश्यप से इडा नामक स्त्री ने तृण, बोभा, (पसरी हुई बेलि) लता और वृक्ष,

हुव क्रोधवसाकै बिबिध बार,जलथलके सब पल खानहार॥३८॥
कद्रू अनंत१मुख जनिय नाग,मुनिकै अच्छरिगन रमन राग ॥
गंधर्ब बहुरि याकै हु पुत्त,गोपति१सुपर्ण२धृतराष्ट्र३जुत्त ॥ ३९ ॥
कलि४बरुन५चित्ररथ६भीमसेन ७,नारद८सुनेत्र९तिम उग्रसेन *॥
सालिसिरा११प्रयुत१२रु अर्कपर्ण१३,पर्जन्य१४सूर्यबर्चा१५सुबर्ण॥४०
जु कह्यो सुनेत्र९सुहि सत्यबाक९,अरु भीम१६जु गायननिपुन नाक॥
प्राधाकै तीन३प्रकार सर्ग,देवी१अच्छरि२गंधर्ब३बर्ग ॥ ४१ ॥
क्रमतैं अनवद्या१अनुवसा२रु,असुरा३प्रिया४रु भासी५हु चारु ।
सुभगा६रु अनूपा७मार्गणा८हु,यह प्रथम१सर्ग प्राधेय साहु ॥ ४२ ॥
अच्छरि अलंबुसा१मिश्रकेसि२,बिद्युत्पर्णा३अरुणा४सुबेसि ॥
रंभा५तिलोत्तमा६रक्षिता७हु,सरजा८सुरता९केसिनि१०सुबाहु ।४३।
तैसैंहि सुप्रिया१२इम बहुत्त,हुव अच्छर सागुनरूपजुत्त ।
बिश्वाबसु१हाहा२भानु३पूर्ण४,हूहू५तिम तुंबुरु६गानघूर्ण ॥ ४४ ॥
पूर्णायु७ब्रह्मचारी८रु सिद्ध९,बर्ही१०सुपर्ण११रतिगुण१२हु इद्ध ।
अतिबाहु१३सुचन्द्रा१४ऽऽदिक अनेक,गंधर्व भये हे बरबिबेक॥४५॥
रु अरिष्टनेमि सन चउन४माँहिँ,सुत अष्ट१६दच्छ दौहित्र आँहिँ ।
दुव२दच्छसुता बहुपुत्र नारि,तिन्हमाँहिँ भई तडिता हि च्यारि४ ।४६।

जन कर सन्तान न होने [बांझपन] का दुःख तजा, क्रोधवशा नामक स्त्री के मांस खानेवाले जलचर और थलचर नाना प्रकार के बालक हुए ॥ ३८ ॥ कद्रू ने शेष को आदि लेकर सर्प जने और मुनि नामक स्त्री से रमण में प्रीति रखनेवाली अप्सरायें हुई और फिर इसी के गन्धर्व पुत्र हुए जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं नवमे स्थान पर जो सुनेत्र कहा उसीका दूसरा नाम सत्यवाक् है, ये सोलह गन्धर्व स्वर्ग की गानविद्या में निपुण हुए । प्राधा नामक स्त्री के तीन प्रकार की सन्तान हुई जिनमें प्रथम देवियों में अनवद्या को आदि लेकर आठ और अप्सराओंमें अलम्बुषा को आदि लेकर रूप और गुण के साथ बहुत हुईं और गन्धर्वों में विश्वावसु को आदि लेकर हे श्रेष्ठज्ञानवाले रामसिंह अनेक गन्धर्व हुए ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ दक्षप्रजापति ने अपनी चार पुत्रियां अरिष्टनेमि को दी थीं जिनमें अरिष्टनेमि से दक्ष के सोलह दौहित्र हुए और दो पुत्रियां बहुपुत्र को दी थीं जिनमें चार विद्युत् (बिजुलियां] हुईं । ४६ ।

---

* मसेन प्रसेन अन्त्यानुप्रास

इक कपिल१चंडमारुत निदान,अरु अरुन१करैं आतप उफान॥
दुरभिच्छ करैं तीजी सु स्याम३,पीता४सु चतुर्थी वृष्टिकाम॥४७॥
दुव२अंगिराहिं दीनी जु दच्छ,उनमाँहिं ऋचा हुव पूज्य अच्छ ॥
दुव२पुत्रि कृसाश्वहिं दच्छ दीन,सुर सस्त्र जने तिन हे प्रबीन ।४८।
कस्यपकै इतरहु बहुत नारि,दिय बिबिध सर्ग तिन हू बिथारि ॥
बैश्वानरतनया दुव२तथाहि,काली१रु पुलोमा२लिन्न व्याहि ॥४९ ॥
तहँ कालखंज१पौलोम२बार,कस्यप सुत आसुर खछ६०हजार ६०००
दिति गर्भ कट्टि इक१मरुतवान,किय देव मरुतगन तान४९मान५०।
इक१सिंहिका १हु कस्यप कलत्र,तम आदि असुर हुव च्यारि४तत्र॥
तम१चंद्रप्रमर्दन२अरु सुचंद्र३,रु चउत्थ४चन्द्रहंता४अतंद्र॥ ५१ ॥
यौंही दनायु३तँहँ च्यारि४बीर, बिह्वर१लव२वृत्र३रु बीर४धीर ॥
काला४कै चउ४कालेय पुत्त,जे असुर बिनासन१क्रोध२जुत्त ॥५२॥
तैसैंहि क्रोधहंता३तृतीय, पुनि क्रोधसत्रु४घन कपट हीय ॥
कपिला६बिच ब्राह्मण१अमृत२गाय३,गंधर्व४कतिकअच्छरि५सुभाय
जाये मृगी७हु मृगसर्ग केक, बलि सुनहु इतर अबिरत बिबेक ॥

जिनमें एक तो नीले, पीले मिश्रित रंगवाली है जो प्रचंड पवन पैदा करती है, और दूसरी लाल है सो ताप करती है, तीसरी काले रंगवाली दुर्भिक्ष करती है और चौथी पीले रंगवाली बर्षा करती है ॥ ४७ ॥ दक्ष ने अपनी दो पुत्रियां अंगिरा को दीं उनमें वेद के पचीस २५ ऋचाओं की अधिष्ठात्री उत्तम और पूज्य देवता हुई । दक्ष ने दो पुत्रियां कृशाश्व को दीं जिनने हे प्रवीण राजा रामसिंह ! सुरशस्त्र (देवप्रहरण नामक पुत्र) जने ॥ ४८ ॥ और भी नाना प्रकार की सृष्टि इसी प्रकार वैश्वानर की काली और पुलोमा नाम की दो कन्या कश्यप ने बिवाही ॥ ४९ ॥ जिन काली और पुलोमा के बालक कश्यप के पुत्र कालखंज और पौलोम नामवाले साठहजार असुर हुए और दिति ने मरुत्वान् नामक अपने एक गर्भ को काट कर मरुतगण नाम के उनपचास देवता उत्पन्न किये ॥ ५० ॥ १ स्त्री २ आलस्यरहित ॥ ५१ ॥ ३ दनायु नामक स्त्री ने ४ काला नामक स्त्री के ॥ ५२ ॥ ५ हृदय में घने कपटवाले चार पुत्र हुए ६ कपिल नामक स्त्री में ॥ ५३ ॥ ७ मृगी नामक स्त्री ने ८ मृगों की सृष्टि ९ पुनि १० और ११ [illegible] १२ विवेकवाली क्रूरी महामन्दा नामक स्त्री

मृगमंदा६रिच्छ१रु चमर२जाय,हुव मुदितहरि७हु हय१पुत्र पाय।५४।
बानर२गोपुछ३हु त्यौंहिं तास, भद्रमना८त्यौं तस इक्क१आस ॥
सु इरावानक१अभिधान जुत्त,ऐरावत२बारन जास उत्त ॥ ५५ ॥
सार्दूली९के उर सिंह१जात, बलि ताकै द्वीपी२ब्याघ्र३ब्रात ॥
मातंगी१०उर गज और जूंह,श्वेता११संतति दिग्गज समूह ॥ ५६ ॥
दूजी२ हु इक्क१सुरसा१२हि ताम,हुव पंच५सुता सुनिये ऽब नाम॥
रोहिनिका१भद्रा२बिमलिका३रु,गंधर्बिका४रु अनला५हु चारु।५७।
रोहिनिकैं गोगन प्राप्तपूंज,त्यौं हय गंधर्वीकै तनूज ॥
तरुजाति पिंडफल नाम तत्थ,अनलाकै उपजे सप्त७सत्थ ॥ ५८ ॥
इतर हु दानव दनुके अपत्य,सुनिये जे उद्धत इष्ट हत्य ॥
असिलोमा१केसी२नामधेय,दुर्जय३अयस्सिरा४पापप्रेय ॥ ५९॥
अस्वपति५गगनमूर्द्धा६ रुअस्व७,कपट८कुपट९अश्वसिरा१०अघस्व।
सरभ११अयस्संकु१२रु बेगवान१३,सुच्छम१४तुहुंड१५पुनिकेतुमान॥
अश्वग्रीव१७रुइपुपात१८जानि,पुनि सलभ१९बिरूपाक्ष२०हु प्रमानि।

रु निकुंभ२१महोदर२२तिमहि चन्द्र२३,

मृतपा२४सठ२५सूर्य२६तथाहि चन्द्र*२७ ॥ ६१ ॥

रीछ और चमरी (सुरागाय) जनकर आनन्दित हुई और हरि नामक स्त्री ने घोड़ा जना॥५४॥ इसी प्रकार उसी हरिनामक स्त्री के बानर और गोपुच्छ (लंगूर) हुए भद्रमना के इरावान्नामवाला एक पुत्र हुआ जिसके ऐरावत नाम हाथी हुआ सार्दूली के उर से सिंह, चीता और ब्याघ्र के समूह हुए, मातंगी के उर से हाथी और जूंह,श्वेता के उर से दिशाओं के हाथियों का समूह हुआ ॥ ५६ ॥ तहां एक अन्य सुरसा नामवाली बारहवीं स्त्री थी जिस के पांच पुत्रियां हुई जिन के नाम अब सुनो ॥ ५७ ॥ इन में रोहिणी के पूज्य गौवों का गण प्राप्त हुआ और चौथी गन्धर्वी के घोड़े हुए और ७ वृक्ष (पिंड अर्थात् दाब टहनी से लगनेवाले और फल अर्थात् बीज से लगनेवाले सात प्रकार के वृक्ष अनला के हुए) ॥ ५८ ॥ और भी दनु के पुत्र दानव बडे उद्धत और इष्ट को नाश करनेवाले हुए जिन के नाम सुनो, १२ नामवाला १३ पाप ही है प्यारा जिस के ॥ ५९ ॥ १४ पाप ही है अपना जिस के ॥ ६० ॥ १५ अरु

---

* निचन्द्र हिचंद्र अन्त्यानुप्रास.

एकाक्ष२८प्रलंब२९हु पापनिष्ट[1], रुदनायु३०दीर्घजिभ३०रु गरिष्ठ३१
बिनताकै[2] अपर हु च्यारि४बाल,ते ताक्ष्र्य१अरुण२बारुण३बिसाल
चौथो अरिष्टनेमि४हु कहंत,ए सब सुपर्णसंज्ञा लहंत।
काकी१हु इक कस्यप कलत्र,हुव कांक१रु घूक२हु सर्ग तत्र॥६३॥
धृतराष्ट्री२मैं कलहंस१हंस२,भद्रा३हु माँहि सुक१कोक२वंस॥
कुंभ१रु निकुंभ२प्रल्हादकैहु,सिबि१बाष्कल२अनुल्हादक तनैहु॥
गरुडाग्रजकै स्येनी कलत्र,संपाति१जटायुव२तनय तत्र॥
इहिं किरनमाँहिं तार्तीय३अंस,वरन्यौं श्रीभारत उक्तबंस॥६४॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ विद्यमानकल्पसर्जनान्तराऽवसर्यप्राचेतसदक्षदौहित्रसुराऽसुरादिसूचनमेकोनविंशो१९ मयूखः॥१९॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा॥

दोहा

स्वायंभुव१मनुकै कह्यो, तनय प्रियव्रत२नाम।

---

१ पाप की निष्ठावाला २ विनता नामक स्त्री के और भी चार बालक हुए ये सब पक्षियों की संज्ञा (नाम) वाले हैं और कश्यप के एक काकी नामक स्त्री भी थी जिस के काकों (कागलों) घूकों (उलूकों) की सृष्टि हुई॥ ६३॥ धृतराष्ट्री नामक स्त्री के कलहंस और हंस हुए और भद्रा नामक स्त्री के सूवे और चकवे हुए। प्रल्हाद के भी कुंभ और निकुंभ नामक पुत्र और अनुल्हाद के शिवि और बाष्कल हुए॥ ६४॥ गरुड़ के बड़े भाई (अरुण) के सेनी नाम की स्त्री में सम्पाति और जटायु नामक पुत्र हुये। इस मयूख में तीसरा अंश महाभारत की कथा से वर्णन कियागया है अर्थात् इस सृष्टि के क्रम में दो तृतीयांश तो विष्णुपुराण के मत से और अन्तिम एकतृतीयांश महाभारत के मत से वर्णन कियागया है इसी से कहीं कहीं पुनरुक्ति और विरुद्ध दीखता है सो इस में उक्त ग्रन्थों का मत भेद जानना चाहिये॥ ६५॥

श्रीवंशभास्करमहाचम्पूके पूर्वायणके प्रथमराशि में वर्तमानकल्प की रचना के समय में दक्षप्रजापति के दोहिते प्रचेतस, देवता असुर आदि के जताने का उन्नीसवां मयूख समाप्त हुआ॥ १९॥

स्वायंभुव मनु के दो पुत्रों में उत्तानपाद का वंश तो ऊपर कहागया

तास बंस भूभागपति,सुनिये संभेरराम ॥ १ ॥

पादाकुलकम्

कर्द्दमनाम प्रजापति कन्या,धीर बिबाहिलही तिय धन्या ।
समयपाय तिहिं राज्य सम्हार्‌यो,निजभुव प्रति निस कुहर निह र्‌यो।
रचि प्रतिदिन चढि द्विगुन चक्ररथ,रजनि तप्यो रु चल्यो रविके पथ॥
याको रथ इक१ चक्रफिरतभुव,प्रधिसौं खुदि खुदि सिंधु सप्त७हुव॥३॥
समुझि काल१ अरु कर्म मिटत सब,बरज्यो जब गुरुजनन रुक्यो तब

दस १० मित भये प्रियव्रतके सुत,
तहँ आग्नीध्र ३।१ रुअग्निबाहु ३।२ नुत ॥ ४ ॥
बपुष्मान ३।३ द्युतिमान ३।४ प्रमानहु,
जिम मेधा ३।५ मेधातिथि ३।६ जानहु ॥
भव्य ३।७ सवन३।८पुनि पुत्र ३।९ नाम हुव,
सुनिये ज्योतिष्मान ३।१० दसम१०सुव ॥ ५ ॥

अग्निबाहु१मेधा२रु पुत्र३त्रय३,राज्यहिं छोरि भये समाधि लयें ॥

प्रियव्रत का वंश और भूमि का विभाग (?) और उन भूमि के बंटों के स्वामिपन का वर्णन है चहुवान रामसिंह अब सुनो ॥ १ ॥ कर्दम नामक प्रजापति की पुत्री जिस का कन्या नाम था उस को धीर (प्रियव्रत) ने विवाह ली और समय पाकर अपना राज्य सम्हाला उस समय अपनी भूमि पर रात्रि और कुहर (धोंहर) छाया हुआ देखा ॥ २ ॥ तब प्रतिदिन रथ पर चढकर सूर्य से द्विगुण चक्र रचकर अर्थात् सूर्य एक दिन रात्रि में एक चक्कर लगाता है उस के स्थान में प्रियव्रत ने दो चक्कर लगाये इस से रात्रि में भी तपा और सूर्य के मार्ग चला, इस का रथ एक पहिये से भूमि पर फिरा जिस की पूंठी से खुद खुद कर सात समुद्र होगये ॥ ३ ॥ इस से समय को और सब कर्मों को मिटते हुए जान (समय की गणना सूर्य के उदय अस्त से होती है और प्रियव्रत ने प्रतिदिन पृथ्वी के दो चक्कर लगाकर अपने तेज से रात्रि को मिटाकर सदैव प्रकाश करदिया तो काल (समय) की गणना मिटगई) गुरु लोगों ने मना किया तब रुका, इस प्रियव्रत के दश पुत्र हुए ८ स्तुति योग्य ॥४॥ दशवां पुत्र ॥५॥ इन में से अग्निबाहु, मेधा और पुत्र नाम के तीन पुत्र तो राज्य को छोडकर समाधि में लीन होगये, बाकी के सातों को प्रियव्रत

द्वीप सप्त७दिय खिलन प्रियव्रत,सुत जनु अंजु अबांटि महामत ॥६॥
आग्नीध्र१हिं जंबू १यह अप्प्यो,प्लक्ष२राज्य मेधातिथि२थप्प्यो ॥
बपुष्मान३कँहँ सम्मलि३दिन्नौं,कुस४नृप ज्योतिष्मान४नि किन्नौं ।७।
क्रौंच द्वीप५दयो मतिमान५हिं,साकद्वीप६भव्य६अभिधानहिं ॥
सवन७सुताहि पुष्कर७पति ठान्यौं,इम उपरामैं प्रियव्रत आन्यौं ।८।
जंबूपति आग्नीध्र तनय नव९,भये बीर कैलिमल अटवीदव ॥
जे नव९खंड अधीस्वर जानहु,पज्झटिका करि नाम प्रमानहु ।९।

पज्झटिका

जहँ नाभि४।१बहुरि किंपुरुष४।२जानि,
हरिबर्ष ४।३ इलावृत ४।४ पुनि प्रमानि ॥
रम्यक ४।५ रु हिरण्मान ४।६ हु नृपाल,
कुरु४।७पुनि भद्राश्व४।८रु केतुमाल४।९ ॥ १० ॥

इनकौं जंबूके नव९हि भाग,दै भूप गयो बन लहि बिराग ॥
लवणोद हिमालय मध्यदेस१,अप्प्यो नृप नाभि१हिं यह असेस११
अपनौं सुनि भारतखण्ड१ख्यात,जिहिं नाम नाभिखण्ड१हु कहात॥
हिमवान हेमकूटांतरोल२,अप्प्यो किंपुरुष२हिं पुहविपाल ॥१२॥
गिरि हेमकूट सन निषध अंत३, सौंप्यो हरिवर्ष३हिं यह२सुमंत ॥
गिरिनिषधनील विच जो प्रदेस४,जहँ मेरु सुरन आलय बिसेस॥१३॥

ने सात द्वीप बांट दिये ॥ ६ ॥ १ यह जंबूद्वीप दिया २ शाल्मलि द्वीप ॥ ७ ॥ ३ नाम वालों को ४ विरक्तपन ॥ ८ ॥ जंबूद्वीप के पति आग्नीध्र के पाँप रूपी वन को जलानेवाले अग्नि रूप नौ वीर पुत्र हुए उन्हींको जंबूद्वीप के नव खंडों के स्वामि जानो. जिनके नाम आगे के पज्झटिका नामक छन्द में हैं ॥ ९ ॥ १० ॥ इन नव ही पुत्रों को जंबूद्वीप के नौ ही खंड देकर राजा (आग्नीध्र) वैराग्य लेकर वन में गया. खार समुद्र और हिमालय पर्वत के बीच का सम्पूर्ण देश राजा नाभि को दिया ॥ ११ ॥ वही यह अपना भरतखंड प्रसिद्ध है इसी को नाभि खंड भी कहते हैं। हिमवान् और हेमकूट नामक पर्वतों के बीच का देश राजा ने किंपुरुष को दिया ॥ १२ ॥ हेमकूट नामक पर्वत से निषध नामक पर्वत के बीचें का देश उस श्रेष्ठ बुद्धिवाले ने हरिवर्ष को दिया। निषध गिरि और नीलगिरि के बीच का देश जहां पर देवताओं का

चउ४कोनखगड यह पुरायपत्त, आग्नीध्र इलावृत ४कौं सुदत्त ॥
थिरनील ४श्वेतगिरि मध्य थान५,सो दिन्नौं रम्यक५हित सुजान।१४।
गिरि श्वेतशृंगधर मध्यभाग६,सु हिरण्मान६हि दिन्नौं सराग ॥
शृंगी गिरिसौं लवणोद मेयं, सो७खगड दयो कुरु७अर्थ श्रेय।१५।
ए दक्खिन उत्तर खण्ड सत्त७,जेठे सुत सत्त७न लहिय तत्त ॥
इक पूर्व इलावृतसौं प्रदेस८,भद्राश्व८कियउ ताको धरेस ॥ १६ ॥
प्रातीच्य इलावृतसौं जु भाग९,सो केतुमाल९हित दिय सुभाग* ॥
ए खगड सुभगफल भोग इद्ध,पति नाम बजे नव९ही प्रसिद्ध॥१७॥
इहिं नाभिखगड१बिनु अट्ठ८देस,सब भौमस्वर्ग जानहु नरेस ॥
जँहँ सिद्धि निसर्गहिसौं अनेक,न जरा१न मृत्यु२जँहँ बहु बिवेक।१८।
न अधर्म३धर्म४चउ४जुगबिधान५,नहिं, बर्णभेद६सब जँहँ समान॥
हिमगिरिसौं दक्खिनखगड ऐस,यामैं हि जरा भय मुख असेस।१९।
आग्नीध्र भूप सुत नाभि४।१ नाम,धरनीस भयो यँहँ धर्मधाम ॥

घर सुमेरु पर्वत है वह पुण्य प्राप्त होनेवाला चौकोण देश राजा आग्नीध्र ने इलावृत को दिया. और नीलगिरि व श्वेतगिरि के बीच का स्थिर स्थान है वह रम्यक को दिया ॥ १३॥ १४ ॥ श्वेतगिरि और शृंगधर पर्वत के बीच का भाग हिरण्मान को प्रीति सहित दिया। और शृंगीपर्वत से उत्तर खार समुद्र तक है प्रमाण जिस का ऐसा श्रेष्ठ खंड कुरु को दिया ॥ १५ ॥ ये दक्षिण और उत्तर दिशा के सात खंड तो बड़े सात पुत्रों को दिये और इलावृत से पूर्व दिशा का एक देश है उस का राजा भद्राश्व को किया ॥ १६ ॥ इलावृत से पश्चिम दिशा का जो खंड है सो केतुमाल को दिया ये श्रेष्ठ निर्मल फल भोगने वाले खंड नव ही पतियों के नाम से प्रसिद्ध हुए ॥ २७ ॥ इस नाभि (भरतखंड) के विना बाकी के आठों देश हैं जिन को हे राजा रामसिंह भूमि के स्वर्ग जानो जहां पर स्वभाव से ही अनेक सिद्धियां हैं वहां न तो वृद्धावस्था होती है न मृत्यु होती है और बहुत ज्ञान है ॥ १८ ॥ वहां धर्म, अधर्म भी और सत्ययुग आदि चार युग की रचना भी नहीं है और वर्ण भेद भी नहीं सब बराबर हैं, हिमालय पर्वत के दक्षिण दिशा में यह (भारत वर्ष) है जिसी में बुढापे आदि का सब भय है ॥१९॥राजा आग्नीध्र के बड़ा पुत्र नाभि नामक राजा हुआ जिस धर्म धाम के मरु देवी

*जुभाग सुभाग अन्त्यानुप्रास.

रानी मरुदेवी नाभि दार, इनकै तनूज ऋषभावतार५ ॥ २० ॥
सत१००पुत्र ऋषभ नृपकै सधीर,[1]बड्डयर भयो तँहँ भरत६बीर ॥
इनमैं असी रु इक८१बिप्र इंद्द[2], सुत नव९हुव कविमुखं[3] जोगसिद्ध।२१।
दस१०सेंसरहे[4] तिन्ह बंटि देस,करि अस्वमेधमुख मख असेस ॥
पट्टाभिसेकै[5] रचि भरतसीस, गो तपन पुलह आश्रम महीस॥२२॥
तप घोर सह्वि करि खीनकाय,बिनु बस्त्र बदंन[6] बीटाँ[7] बनाय ॥
दुख सुख प्रसन्न श्रीऋषभदेव५,अवधूत लह्यो निज रूप एव॥२३॥
भरत६हु हुव भूपति अद्वितीय,सुत सुमति७भयो ताकै बलीय ॥
दै याहि राज्य बन भरत जाय,किय तप कृस[8] सालग्राम[9] काय।२४।
इक दिवसगयो नदितीर न्हान, तँहँ फंद फस्यो बिधिके[10] बिधान॥
अग्गैं इक ऐंनी[11] पिबत तोयं[12], गज्ज्यो मृगेसं[13] तँहँ ढिगहि होय।२५।
हरिनी सु भजी सुनि मलपि फालं[14],गिरि गर्भ गयो तस ताहिकाल ॥
आन्यौं दयालु मुनिबर उठाय,दै उचित भोग पोख्यो लडाय।२६।
कुलराज्य जदपि छोरे नरेस,मृगपोतं[15] तदपि मन्न्यौं बिसेस ॥
तामाँहिं प्रीति रचि निर्बिबाद[16],स्वसमाधि संग कियलहि प्रमाद[17]।२७।
तनु[18] तजतहु मृगबिच चित्त लाय, ऐंनी उर प्रबिस्यो[19] भरत आय ॥
चर्म्मलि[21] तट पट्टनि[22] प्रांत सेस,अघहर बनजंबूमार्ग एस ॥ २८ ॥
सीमा सु गवरी तीर्थसत्थ,[23]जातिस्मर मृग हुव भरत जत्थ ॥

नामक राणी हुई जिस स्त्री में ऋषभ अवतार पुत्र हुए ॥ २० ॥ १ बड़ा २ निर्मल ३ कवि को आदि देकर ॥२१॥ ४बाकी ५भरत के शिर पर पाट का अभिषेक करके राजा ऋषभ तप करने को पुलह ऋषि के आश्रम में गये ॥ ॥२२॥६ मुख में ७बीटा (डाट)॥२३॥८ शालिग्राम में जाकर तप से शरीर को ९क्षीण किया ॥२४॥ वह भरत तपस्वी एक दिन स्नान करने को नदी के तीर पर गया वहां पर ब्रह्मा की रचना के फन्दे में पड़ा अर्थात् आगे एक ११हरिणी १२पानी पी रही थी १३सिंह ॥२५॥१४छलांग मारकर ॥२६॥१५मृग के बच्चे को १६विवाद रहित १७चित्तविक्षेप (मोह भूल)।२७। १८शरीर छोड़ते समय भी १९हिरणी के पेट में प्रवेश किया २१चांमल नदी के किनारे २२पाटण नामक नगर के पास के देश में पाप के हरने वाले इस जम्बू मार्ग नामक वन में ॥२८॥ हेमहारावराजा रामसिंह तीर्थ के साथ आपकी सीमा में भरत अपनी पूर्व २३जन्म

तजि पूर्बमोह धरि चित्त ध्यान, पुनि सालग्रामहि गो सयान।२९।
सूके तृन पलन तत्थ खाय, मृगदेह तज्यो मन सुद्धि पाय ॥
जोगी द्विजकै तब जन्म लीन, पुनि आत्मबोध[1] पकरयो प्रबीन ।३०।
पठनादि सकल द्विजधर्म छोरि,भो बीर त्रि[2]गुन बाहिर बहोरि ॥
संध्यादिकर्म न करत निहारि,बंधुन कुपात्र कहि दिय बिडारि[3]।३१।
जँडलौं[4] सु अटत द्विज अप्रमत्त,पटु बीरराजके देस पत्त ॥
वह[5] बीरराज मुनि कपिलपास, सुश्रूषु[6] जातहो सांख्य आस।३२।
जडभरत हु छँत्ता पुष्ट जानि,नृपके नृजार्न जोस्यो सु आनि ॥
तेरज्यो नृप मंथरँ चलत ताहि,अध्यात्म दयो द्विज तत्थ याहि ॥ ३३ ॥
[11]ऋभु१ अरु निदाघ२गुरु१ छात्र२रूप,अजसुत१पुलस्त्यसुत२जे अनूप॥
अग्गैं हुव तिनको कहि उदंत,समुझायो नृप भरतहि महंत ॥३४॥
पहुँच्यो न इ[12]च्छुमति सरित तीर,बीचहि इम मोरयो भरत बीर ॥
नृप ऋषभपुत्र इम [13]आत्मनेह,उ[14]द्भव दुव२लै हुव मुक्त एह ॥ ३५ ॥
तस नाम अंस इतको प्रदेस,यह भरतखंड कहियत नरेस ॥
नृप भरत पुत्र हुव सुमति७[15]ख्यात,जाके सुत इंद्रद्युम्न८[16]जात ॥ ३६ ॥

की जाति को याद रखनेवाला मृग हुआ सो पहिले के मोह को छोड़ कर चित्त में ध्यान धर कर वह बुद्धिमान् फिर शालिग्राम में ही गया ॥२९॥ १तत्वज्ञान ॥ ३० ॥ त्रिगुण बाहिर (गुणातीत अर्थात् ब्रह्म ज्ञानी हो गया) ३निकाल दिया ॥ ३१ ॥ जँड (मूर्ख) के समान फिरता हुआ सावधान वह द्विज, बीरराज नामक चतुर राजा के देश में गया. ५ यह वीर कपिल मुनि के पास सांख्य शास्त्र सुनने को जाता था ॥ ३२ ॥ जडभरत को मोटा ताजा जानकर द्वारपाल (छड़ीदार) ने राजा की पालखी में लगा दिया जिसको धीरे चलने के कारण राजा ने धमकाया तहां उस जडभरत ने उस बीरराज को आत्मज्ञान दिया ॥ ३३ ॥ ब्रह्मा के पुत्र ऋभु ने गुरु होकर पुलस्त्य के पुत्र निदाघ को शिष्य बनाकर ब्रह्मज्ञान दिया था जिसकी कथा विष्णुपुराण के द्वितीय अंश के पन्द्रहवें और सौलहवें अध्याय में सविस्तर है॥३४॥इच्छुमती नदी के तीर पर कपिल मुनि के पास नहीं पहुंचा और उस बीर भरत ने उस राजा को बीच से ही पीछा मोड़ दिया, इस प्रकार राजा ऋषभदेव का पुत्र(भरत)आत्मा के स्नेह से दो जन्म लेकर मुक्त हुआ।३५।१५प्रसिद्ध१६हुआ

परमेष्ठी९तसु प्रतिहार१०तास,तस पुत्र११तास उद्गीथ१२आसे॥
ताकै प्रस्ताव१३रु पृथु१४तदीय,तस नक्त१५तास सुत गय१६गैरीय
नर१७तास बिरोहित१८तास जानि,पुनि तास महाबीर्य१९सु प्रमानि
श्रीमान२०तास ताकै महांत२१,तस गोमन२२त्वष्टा२३तास कांते३८
त्वष्टाकै बिरज२४रु रज२५तदीय,ताकै सुत सतजित२६हुव बलीय
सतजितकै आत्मजं सत१००सयान,विष्वग्ज्योति२७सु तिनमें प्रधान
पहिले मन्वंतर यहहि बंस, अवनीस रह्यो इतरनवतंसँ ॥
स्वारोचिष आदिक मनुन काल,उत्तानपाद कुल भूमिपाल ॥४०॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ विद्यमानविशदवराहकल्पसर्गान्तर्भूतपूर्वमनुस्वायम्भुवप्रियव्रतवंशवर्णनंविंशो२०मयूखः ॥ २० ॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

पज्झटिका

इम द्रुहिन रचिय नरसर्ग एस,अरु रचिय नष्टलोकहु असेस ॥
नैमित्तिकें लयमैं च्यारि४लोक,आये न सत्यलोकादि ओकें ॥ १ ॥

हरिगीतम्

इक१कोटि सरबसु८५लक्ख१८५०००००जोजन हेट्ठे अंडकटाहसौं,
तहँ सत्यलोक१सु कोटि बारह१२००००००मेयँ जोजन राहसौं॥

१ह आ२उसके३भारी॥३७॥ ४प्यारा॥३८॥५पुत्र ६ बड़ा ॥३९॥ पहिले (चाक्षुष) मन्वन्तर में यही वंश और राजाओं का मुकुट होकर रहा और स्वारोचिष आदि क मन्वन्तरों के समय में उत्तानपाद का कुल भूमि को पालनेवाला रहा॥४०॥

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के प्रथमराशि में वर्त्तमान श्वेत वाराह कल्प की सृष्टि रचना के भीतर प्रथम मनु स्वायंभुव में प्रियव्रत के वंश वर्णन का बीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २० ॥

इस प्रकार ब्रह्मा ने यह मनुष्य सृष्टि रची और दृष्टि में नहीं आनेवाले सम्पूर्ण लोक भी रचे तिन में सत्यलोक को आदि लेकर चार लोकों के स्थानें नैमित्तिकें (ब्रह्मा के शयन करने पर होने वाले) प्रलय में नहीं आये ॥ १ ॥
१२ नीचे का अंडकटाह १३ प्रमाण का

रत आत्मबोध बहोरि जन्म न लैनहार जहाँ रहैं,
मद१काम२क्रोध३न दर्प४मोह५न लोभ६ठाम जहाँ लहैं ॥ २ ॥
ताकै तरैं तपलोक२जोजन अष्टकोटि८००००००००सु जानिये,
बैराज नामक देव आदिन तत्थ बास बखानिये ॥
ताकै तरैं जनलोक३जो दुव कोटि२००००००००जोजन मानें है,
सु सनंदनादिक ब्रह्मपुत्रन बासकौं थिर थान है ॥ ३ ॥
महराख्य लोक४सु ताहुसौं तर कोटि१००००००००जोजन धारिये
भृगु आदि जे मुनिराज तत्थ निवास निष्ठ बिचारिये ॥
तर स्वर्गलोक५रच्यो चउद्दह लक्ख१४००००००जोजन मानसौं,
ध्रुव उच्च ह्वाँ ऋषि सप्त७२ए कछु हेठ है तैस थानसौं ॥ ४ ॥
इनके तरैं इक्क लक्ख १०००००जोजन सौरि३मंडल थप्पयो,
सनिके तरैं दुव लक्ख२०००००जोजन थान गीष्पति४को ठयो॥
सुरके पुरोहितके तरैं दुव लक्ख२०००००जोजन आर५है,
अरु आरसौं दव लक्ख२०००००जोजन हेठ सुक्र६उदार है ॥ ५ ॥
दुव लक्ख२०००००जोजन सुक्रसौं तर चन्द्रको सुत७ह्वाँ बसैं,
दुव लक्ख२०००००जोजनपैं भपंजर८चन्द्रके सुतसौं लसैं ।
नच्छत्र मंडलके तरैं दुव लक्ख२०००००जोजन है ससी९,
इक लक्ख१०००००जोजन तातरैं छबि भानु१०मंडलकी लसी ।६।
यह यौं चउद्दह लक्ख१४०००००जोजन स्वर्गलोक५बनायकैं,
सुर१अच्छरी२पुनि देवगायन३तत्थ तप्पिय चायकैं ।
मयु४सिद्ध५चारन६जच्छ७गुह्यक८आदि तैंत्थहि ए रहैं,
करि अप्प अप्पन उच्च नीच निवास भोगनकौं लहैं ॥ ७ ॥

---

१ तत्वज्ञान में रत २ प्रमाणवाला ३ धर्म में श्रद्धा रखनेवाले ४ प्रमाण से ५ उस स्थान से ध्रुव तो ऊपर है और सप्त ऋषि कुछ नीचे हैं॥४॥ ६ शनैश्चर का मण्डल ७ बृहस्पति का स्थान रक्खा ८ मंगल ॥५॥ ९ बुध १० नक्षत्र चक्र ११ चन्द्रमा ॥ ६ ॥ इस प्रकार चौदह लाख जोजन का स्वर्गलोक बनाकर देवता, अप्सरा और गन्धर्व वहां रक्खे और किन्नर १२ यक्ष १३ उसी स्वर्गमें ॥ ७ ॥

रविसौं तरैं भुवलौं रच्यो भुवराख्य[1] लोक६निहारिये,
इक लक्ख[2]०००००जोजन उछ्रयी यह धाम धीधन[3] धारिये।
खर्ग१भूत२डाकिनि[5]३साँकिनी४रु पिसाच५आसिर[6]६खेचरी७,
बेताल[7]८भैरव[12]९जोगिनी[13]१०इनकी इहाँ अवली[14] भरी ॥ ८ ॥
अज[15] द्वीप सप्त७उपेत[16] त्यौं यह भूमिलोक७हु निर्मयो,[17]
गिरि मेरु जोजन लक्ख१०००००लंब सु रोपि अंतरमैं दयो।
भुवमाँहि सोलह लक्ख१६००००जोजन सेस उप्पर जो रयो,
यह भर्म[18] पर्वत भूत्रिविष्टप[19] भौन देवनको कयो ॥ ९ ॥
प्रभु[20] व्यास तासु हजार सोलह १६०००मूल मान प्रमानिये,
जिमही बतीस हजार३२०००जोजन मत्थ आयत[22] जानिये।
बिच मेरु मस्तकपैं बिरंचिन[23]नैं रची अपनी पुरी,
परिणाह[24] इंद्र१४हजार १४०००जोजन जू[25] जास मिती जुरी॥१०॥
तँहँ लोकपालनकेहु पासन अष्ट८धाँ[26] पुर निर्मये,
भव इंद आदिक तत्थहू इक रूपसौं बसते भये॥

१भुवर् है नाम जिसका (भुवर्लोक) २ ऊंचा ३ बुद्धि ही है धन जिसके ऐसा पंडित हे रामसिंह! ४ देव (मार्गण) ५ देव योनि विशेष ६ कालीगण (देवी विशेष) ७ देवी की दासी विशेष ८ देवयोनि विशेष ९ राक्षस १० विद्याधरों की स्त्रियां और विद्याधर ११ शिवगण विशेष (शिव के द्वारपाल) १२ रुद्र विशेष १३ देवी विशेष जो संख्या में ६४ हैं. १४ इनकी वहां पर पंक्तियां भरी हुई हैं ॥ ८ ॥ ब्रह्मा ने सात द्वीपों सहित इस सातवें भूमि लोक को बनाया जिसके बीच में सुमेरु पर्वत लाख जोजन (चार लाख कोस) लम्बा रक्खा जिस में सौलह हजार जोजन तो भूमि के भीतर और बाकी ऊपर को रहा. इहां पर मूल में सौलह लाख योजन भूमि में लिखा सो पाठान्तर से अशुद्ध मालूम होता है इस कारण से हमने यहां विष्णुपुराण के दूसरे अंश के दूसरे अध्याय के अनुसार लिख दिया है.यह सोने का पर्वत जो भूमि का स्वर्ग है देवताओं का घर हुआ ॥ ९ ॥ हे स्वामि रामसिंह उस सुमेरु के मूल का विस्तार सौलह हजार योजन प्रमाण; और इसी प्रकार बत्तीस हजार जोजन चौड़ा मस्तक जानो. उस मेरु के मस्तक के बीच में ब्रह्मा ने अपनी पुरी रची जिसका विस्तार चौदह हजार जोजन का है इसमें इस प्रमाण से समूह जुड़ा ॥ १० ॥ इस पुरी से आठों ही ओर

अंगुष्ठसौं किय बिष्णु बामन बिद्ध अगडकटाहकौं,
तँहँ होय बाहिरको धस्यो छल दाहिबे भवदाहकौं ॥ ११ ॥
कहिये अमर्त्यन आपगा करि लोकपावन उद्ध जो,
बिधि दुर्ग चत्वरमैं परैं सुरसैलकैं सिर सुद्ध जो ॥
करि मेरुसौं चउ४रूप जो दिस च्यारि४मैं चलती लसैं,
जलजंत्रलौं झिलि वर्ष अद्रिनपैं रु अर्णवमैं धसैं ॥ १२ ॥
झिलि गंधमादन पूर्व१घाँ भद्राश्वमैं सीता२बहैं,
निषधादि त्रय३झिलि अलकनंदा२दोख दक्खिन२के दहैं ॥
इत३माल्यवानहिं लंघि चच्छुं३सु केतुमालहिं उद्धरैं,
भद्रा४सु उत्तर५नीलश्वेतहिं लंघि शृंगियतैं ढरैं ॥ १३ ॥
भुव मध्यमैं यह भर्म भूधर यौं बिरंचनैं घरयो,
लगि मेरुकैं चउ४कोद ठंभ चतुष्क अद्रिनको धरयो ॥
तँहँ पुब्ब१मंदर२नाम पब्बय छीरसागर मंथ जो,
गिरि दूसरो इक गंधमादन२थंभदक्खिन२पंथ जो ॥ १४ ॥
बिपुलाख्य३पच्छिम३भाग ओट सु मेरुके नग निर्मयो,

को लोकपालों के पुर बनाये जहां शिव इन्द्र आदिक सभी एक रूप से बसे जब विष्णु के अवतार बामन ने अपने अंगूठे से अंड कटाह को फोड़ा वहां होकर संसार के पापों को जलाने के लिये जल बाहर को घुसा उसको देवनदी कहते हैं जिस ने लोक को पवित्र किया जो ब्रह्मा के पुर के चौक में होकर देवताओं के पर्वत (सुमेरु) के मस्तक पर पड़ती है। वह देवनदी सुमेरु से चारों धारा करके फुहारे के समान चलती हुई शोभायमान भारतवर्ष के पर्वतों पर झिलकर समुद्र में घुसती है ॥ १२ ॥ इन में से सीता नामक नदी गन्धमादन पर्वत पर झिलकर भद्राश्व (इलावृत) खंड में पूर्वदिशा को बहती है और निषध आदि तीन पर्वतों पर झिलकर अलकनन्दा नदी दक्षिण देश के पापों को जलाती है। इधर चंचु नाम नदी माल्यवान पर्वत को लांघकर केतुमाल नामक पश्चिम खंड का उद्धार करती है और भद्रा नामक नदी उत्तर दिशा के नील और श्वेतगिरि को लाँघकर ढलती (बहती) है ॥ १३ ॥ भूमि के बीच में यह सोने का पर्वत ब्रह्मा ने इस प्रकार घड़ा, मेरु के चारों दिशा में ठामने के लिये चार पर्वतों को धरे, वहां पूर्व में मंदराचल जिस से क्षीर सागर मथागया और दूसरा गन्धमादन पर्वत दक्षिण की ओर का थंभा हुआ ॥ १४ ॥ विपुल नामक

अरु उत्तर४दिस अद्रिराज सुपार्श्व४ओटकनाँ दयो ॥
समतुंग पंक्ति१०हजार१००००जोजन मेरु थंभन च्यारि४जे,
क्रमतैं कदंब१रु जंबु२पिप्पल३त्यौं रहे बट४धारि जे ॥ १५॥
चउ४रुक्ख लंब हजार जोजन इकसे जुत११००जे रचे,
जिनतैंइलावृत खण्डमैं सुख स्वर्गतैं मँहँगे मचे ॥
इनके बडे फल पक्किकैं झरि छ्वैकैं सुभगा छिती,
सत अठ्ठ८००ओ इकसठ्ठि६१ह्वै जिनकी अरत्निसौं मिती ॥ १६ ॥
दिस पुब्ब१मैं मधु धार पंच५कदंब१कोटरतैं चलैं,
अरु जंबु२के रसकी नदी फल फुट्टि दक्खिन त्यौं हलैं ॥
जांबूनदाख्य सुवर्ण जो रस मृत्तिका छुवतैं बनैं,
यह द्वीप जंबुव१नामहू जिहिं अंकसौं जगमैं भनैं ॥ १७ ॥
सुरनारि हाटक सोहि लै बहुभंति भूखन ह्वाँ रचैं,
रस पानसौं हु जरा१कुगंध२हृषीक हानिन३तैं बचैं ॥
इम बोधि३सौं बट४सौं हु पच्छिम१और उत्तर४ओरलौं,

पर्वत पश्चिम के भाग की आड बनाया गया और उत्तर दिशा में पर्वतराज (सुमेरु) के सुपार्श्व नामक पर्वत का ओटकना (रोकनेवाला पदार्थ) दिया. मेरु के ये चारों खंभे ऊँचाई में बराबर और पंक्ति में दश हजार जोजन हैं ये पर्वत क्रम से कदम्ब, जम्बू, पीपल और बड़ के वृक्षों को धारण करते हैं॥१५॥ ये चारों वृक्ष ग्यारह सौ योजन लंबे रचे जिस से इलावृत खंड में स्वर्ग से भी मँहँगे सुख मचे। इन के बडे फल पककर झरते हैं जो भूमि को स्पर्श करके सौभाग्यवाली करते हैं उन फलों का प्रमाण आठ सौ इकसठ अरत्नि का है (चिटी कानिष्ठिका अंगुली के मस्तक से लेकर कोनी तक के हाथ को अरत्नि कहते हैं) अर्थात् बिना मोड़ दिये सीधे हाथों से आठ सौ इकसठ हाथ का फल का प्रमाण है॥ १६ ॥ पूर्वदिशा में कदम्ब के कोटर से सहत की पांच धारा चलती हैं और जम्बू के वृक्ष के फल फूट कर दक्षिण में उसके रस की नदी बहती है उस रस से मिट्टी का स्पर्श होते ही जाम्बूनद नामक सोना होजाता है उसी के अंक (चिन्ह) मे इस देश को जम्बूद्वीप कहते हैं ॥ १७ ॥ वहां पर उसी सोने को लेकर देवताओं की स्त्रियां भूषण बनाती हैं और उसी रस के पीने से वृद्धपने दुर्गन्ध और इंद्रियों की हानि से बचते हैं। इसी प्रकार पीपल और बड़ के वृक्ष से भी पश्चिम और उत्तर की ओर कामना पूर्ण करनेवाली दो

कढि कामपूरक धार द्वै२प्रसरैं इलावृत दोरें लौं ॥ १८ ॥

इन च्यारि४अद्रिनपैं रचे आँराम१ओ सरें२जे सुनौं,
क्रम हिंतु चैत्ररथाख्य१ओ अरुणोद१सुंदर सो गनौं ॥
तिम गंधमादन२बाग ताल महाँदिभद्र३ललाँम है,
वैभ्राज ३अरु सीतोद३नंदन४ओ सुमानस४नाम हैं ॥ १९ ॥

करि थंभ ए चउ४केसराचल बीस२०हू लगते रचे,
वेकंक१कुरर२रु माल्यवान३कुसुंभ४सीत५इतैं१खचे ॥
सिसिर६रु रुचक७निषध८रु पतंग९त्रिकूट१०दक्खिन२घां सुधी,
सिखिबास११इत३वैदूर्य१२कपिल१३रु गंधमादन१४जारुधी ॥२०॥

ऋषभाख्य१६हंस१७रु नाग१८संख१९रु कालजंघ२०उदीच४ए,
क्रमपूर्वसौं गिरि पंच५पंच५हि मेरु थंभन बीच ए ॥
बिधि मेरु यौं रचि अद्रि ओरहु खंडकी अवधी धरे,
क्रम तीन३दक्खिन तीन३उत्तर इक१इक१दुँ२घाँ करे ॥ २१ ॥

चौरे रु उच्च समान दोय हजार२०००जोजन जानिये,
खट६पुर्ब्ब पच्छिम लंब जे लवणोद लौं पहिचानिये ॥
तँहँ नाम निषध१रु हेमकूट२तथा हिमाद्रि३यहै त्रई३,
क्रमसौं प्रजापति मेरु दक्खिन खंडभाजैक निर्मई ॥ २२ ॥

हरिवर्ष१किंपुरुषाख्य२भारतखंड३ए३तिनसौं बनैं,
चौरे ति जोजनें नोहजार९०००रुँ लंब सागर लौं भनैं ॥
तिम नील१श्वेत२रु सृंगवान३सुमेरु उत्तरघाँ दये,
तिनसौं त्रि३खंडतिरम्म्यकाख्य१हिरण्मयाख्य३कुरू४भये॥२३॥

हरिवर्ष आदिक तुल्य है इनको प्रमानहु उच्चर्यो,

धारा इलावृत खंड के फैलाव तक फैली है ॥ १८ ॥ २ पर्वतों पर ३ बाग ४ तालाब ५ से ६ महाभद्र ७ सुन्दर ॥ १९ ॥ ये चार थम्भ करके कन्धे के ऊपर बीस पर्वत उस सुमेरु से लगे हुए रचे जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं ९ ब्रह्मा ने १० पर्वत ११ दोनों ओर को ॥ २१ ॥ ये छहों पर्वत पूर्व और पश्चिम को खार समुद्र तक लम्बे हैं १४ ब्रह्मा ने १५ विभाग करनेवाले ॥ २२ ॥ १६ ते (वे) १७ और १८ (तरफ) ॥ २३ ॥

अरु गंधमादन१पुब्ब पच्छिम माल्यवान१गिरी घरयो ॥
निषधाख्यसैं अरु नीलसौं इनके भिरे दुव२प्रांत है,
इनसौं बनैं भद्राश्व१खंड रु केतुमाल१हु कांत है ॥ २४ ॥
दुव२एकतीस हजार३१०००जोजन खंड ए लवणोद लौं,
चउतीस सहस३४०००प्रमानि निषध१रु नील२पुब्बय कोदं लौं॥
निषधाख्य१नील२रु गंधमादन३माल्यवान२बिचैं रह्यो,
सम बेद बन्हि३४हजार३४०००जोजनसौं इलावृत१जो कह्यो॥२५॥
तहँ मेरुके चउ४कोदं अद्रि उभै२उभै२बहुग्यौं रचे,
तहँ पुब्ब जठर१रु देवकूट२ति नील नैषध लौं खचे॥
कैलास१ओ करबीर२दक्खिन ओर अर्णव लौं बनैं,
जिम पुब्ब निषध१रु पारियात्र२उभै२हि पच्छिममैं तनैं ॥ २६ ॥
जिम अद्रि दक्खिनके तैंथाहि त्रिशृंग१जारुधि२उत्तरा,
गिरि अष्ट८उच्च असीति८०जोजन मान एहु धरैं धरा ॥
नव९खंड यौं इनमैं इलावृत मुख्य देवन भोग है,
जँहँ मृत्यु१व्याधि२कुरूप३आधि४जरा५दिको नहिं जोग है॥२७॥
अरु खंड भारत१ओ इलावृत२हीन सप्तक७खंड है,
दस१०वा दु२अग्ग१२हजार१००००॥१२०००हायनैंआयु तत्थ अखंड है*॥
त्रेता सदाहि रहैं तहाँ कुरु खंड१मैं हारि मच्छै२है,
भद्राश्वमैं हयसिर२वराह१सु केतुमाल२हि अच्छ है ॥ २८ ॥
अरु कूर्म१भारतबर्ष२मैं यह खंड दक्खिन सर्वसौं,
जँहँ कृत्यं लार लगैं सु अप्पन ओक भाग्य अखर्बसौं ॥

१प्रिय॥२४॥ २ पूर्व दिशा तक ३ चारों दिशा में४पर्वत५समुद्र पर्यन्त ॥२६॥६इसी प्रकार त्रिशृंग और जारुधि नामक उत्तर के मर्यादा पर्वत७ पृथ्वी ८ मन की पीड़ा ।२७।९ भारतखंड और इलावृत खंड के विना बाकी के सात खंड हैं१० दश व बारह हजार वर्ष की अखंड आयु है और इन खंडों में सदैव त्रेतायुग ही रहता है और कुरुखंड में मत्स्य भगवान्, भद्राश्व खंड में हयग्रीव भगवान्, केतुमाल खंड में वराह भगवान्, ॥ २८ ॥ और भारत वर्ष में कूर्म भगवान् की मूर्तियां रहती हैं,यह भरत खंड सब से दक्षिण में है जहां पर मनुष्य के किये हुए कर्म

*कखण्ड है अखण्ड है शब्दानुप्रास.

नव९खंड ए इनमैं ह कुलगिरि सप्त७सप्त७रचे जथा,
यामैं महेंद्र१रु पारियात्र२रु विंध्य३ सह्य४घरे तथा ॥ २९ ॥
मलयाद्रि५ऋक्ष६रु सुक्तिमान७कुलाद्रि भारतमैं इते,
नाना नदीजनि भूमि औरहु निर्मये सिखरी किते ॥
नव९भेद भारतके भये तँहँ इंद्रद्वीप १कसेरु२ज्यौं,
पुनि ताम्रपर्ण३गभस्तिमान४रु नागद्वीप५रु सौम्य६त्यौं ॥३०॥
गांधर्व७बारुन८ओ यहै नवमौं९जहाँ थिति अप्पनी,
सब ए परस्परमाँहिं सागरसौं अगम्य गिनौं धनी ।
इहिं खंडमध्य द्विजादि४वर्ण रु पुच्छ प्रांत किरात है,
बहुजाति१संभव२भिन्न पच्छिम प्रांत जवनन व्रात है ॥ ३१ ॥
सरजू१सतद्रु२रु चन्द्रभागा३आदि हिमगिरिजा धुनी,
ऋषिकुल्यिका१रु त्रिसामिका२ऽऽदि महेंद्र१तैं निकसी सुनी॥
बेदश्रुती१मुखपारियात्र२नितंबतैं तटिनी कढी,
बलि नर्मदा १सुरसा२दि पावन बिंध्य३पब्बयतैं बढी ॥ ३२ ॥
गिरि सह्य४तैं गोदावरी१ह्रदिनी रु भीमरथी२गई,
कृष्णा३तथा बेणा रु ४औरहु याहि भूधरतैं भई ॥
मलयाद्रि५तैं कृतमालिका१ तिम ताम्रपर्णि२मुखा चली,
तापी१पयोष्णी२त्यौंहि निर्बिंध्या३दि ऋक्ष६भवा भली ॥३३॥

साथ रहते हैं सो बडे भाग्य का घर है. ये नव खंड हैं इन प्रत्येक खंडों में सात सात कुल (मर्यादा) पर्वत रचे ॥ २९ ॥ ये सातों मर्यादा पर्वत भारत में बनाये, इस भूमि में अनेक नदियां उत्पन्न कीं और कितने ही पर्वत भी बनाये । इस भारतवर्ष के नव भेद (खंड) हुए जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं, इन में नवमा यह खंड जिस में अपनी स्थिति है हिमालय पर्वत से लेकर सगर पुत्रों के खोदे हुए दक्षिण समुद्र के बीच में है, हे स्वामि रामसिंह उपरोक्त नव ही देश आपस में समुद्रों के कारण अगम्य हैं अर्थात् एक खंड से दूसरे खंड में जा नहीं सक्ते हैं । अपने इस खंड के बीच में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि वर्ण वसते हैं और पूर्व में भील व पश्चिम में अनेक जातियों से पैदा हुए जुदे जुदे यवनों के समूह हैं ॥३०॥ ३१ ॥ १० हिमालय पर्वत से पैदा हुई ११ नदियां १२ आदि १३ महेन्द्र पर्वत से १४ आदि १५ शिखर से १६ नदी १७ पुनि १८ विन्ध्याचल ॥ ३२ ॥ १९ पर्वत से ॥ ३३ ॥

ऋषिकुल्यिका१रु कुमारिका२दिक सुक्तिमान७प्रबाहिनी,
इत्यादि भारतखंडमैं तटिनी भई अघदाहिनी ॥
बिधि जंबु१नामक द्वीप भूबिच लक्ख१०००००जोजन व्यासमैं,
यह यौं रच्यो घटकार्चक्र समान प्रेरक पासमैं ॥ ३४ ॥
पुनि व्है प्रियव्रत द्वार सागर सप्त७वेष्टित भू करी,
इनमांहिं द्वीप पलक्ख२आदि तहाँहु पुराय प्रजा भरी ॥
राकेसके परिबेसलौं लवणोद१जंबुव२कै अरयो,
इक लक्ख१०००००जोजन मान आयत त्यौंहि आगमैं उच्चरयो।३५।
लवणोदसौं परैं जो पलक्ख२दुलक्ख२०००००जोजन द्वीप है,
मेधातिथी सुत सत्त७नामन खंड७तत्थ महीप है ॥
ते सांतभय१सिसिर२रु सुखोदय३ले अनुक्रम जानिये,
आनंद४सिव५छेमक६तथा ध्रुव७प्लक्ष८खंड प्रमानिये ॥ ३६ ॥
कुलअद्रि तँहँ गोमेद१चंद्र२तथाहि नारद३नाम है,
दुंदभि४रु सोमक५रु सुमना६वैभ्राज७सप्त ललाम है ॥
क्रमतैंहि अनुतप्ता१सिखी२रु बिपापिका३नंदि तत्त हैं,
त्रिदिवा४क्रमू५अमृता६तथा सुकृता७बडी इम सत्त७है ॥ ३७ ॥
जँहँ छुद्र पब्बय आपगाहु अनेक रंजनकौं रहैं,
नर आयु पंच हजार५०००हायन रोगवार्जित व्हाँ लहैं ॥
त्रेता सदा बरतैं रु वर्ण चतुष्क४आर्यक१ओ कुरू,

१शुक्तिमान पर्वत से वहनेवाली२नदियां३पापों को जलानेवाली४ब्रह्मा ने५विस्तार में६कुम्हार के चाक के समान ॥३४॥७फिर राजा प्रियव्रत के द्वारा८घिरीहुई९भूमि को१०चन्द्रमा के११चारों ओर की कुंडली के समान१२क्षार समुद्र१३जम्बूद्वीप के १४ प्रमाण १५ चौड़ा १६ विष्णु पुराण नामक शास्त्र ने कहा है ॥ ३५ ॥ १७ परैं (आगे) उस द्वीप का राजा मेधातिथि था जिस के सात पुत्रों के नाम से सात खंड हैं जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं ॥ ३६ ॥ और वहां पर सात ही मर्यादा [सीमा] के पर्वत हैं १८ और क्रम से ही सात नदियां हैं ॥ ३७ ॥ जहां पर छोटे पर्वत और नदियां मन प्रसन्न करने को २२ वर्ष की. वहां पर सदैव त्रेतायुग रहता है और चार वर्ण हैं जिन में ब्राह्मणों को आर्य क्षत्रियों को कुरु, वैश्यों को विविंस और शूद्रों को भावि कहते हैं

क्रमतैं त्रिविंस३रु भाविं४ए चउ जाति व्यास कही गुरू ॥ ३८ ॥
यँहँ जंबु१त्यौं बिटपी पलंक्ख२उहाँ इतेहि बिथार है,
तसेंसात है नृप द्वीप नाम पलक्ख२यैं व्यवहार है ॥
जँहँ सोमरूप हरी जजैं तस अग्ग इच्छुंरसोद२है,
दुव लक्ख२००००००जोजन जो हु आयत कुंडलीचउ४कोद है।३६।
तस अग्ग साल्मलि३रुक्ख अंकित द्वीप साल्मलि३नाम जो,
सुत सप्त७ही जिहिंठाँ बपुष्मतके भये तिन्ह धाम जो ॥
चउलक्ख४००००००जोजन मान अो गिरि सप्त७ताथहु रम्य है,
क्रमतैं कुमुद१उन्नत२बलाहक३द्रोन४कपिपति गम्य है ॥४०॥
पुनि कंक५अो महिषाख्य६त्यौंहि ककुद्मदाख्य७बिचारिये,
हुव खंड तिन करि सप्त७निज निज स्वामि नामक धारिये ॥
स्वेत१रु हरित२जीमूत३रोहित४बर्षवैद्युत५नामतैं,
पुनि मानसाख्य६बहोरि सुप्रभ७पूर्णभोगन ग्रामतैं ॥ ४१ ॥
हरि बायुरूपहिं जे जजैं ह्रदिनीहु सप्त७बडी जहाँ,
योनी१तथा तोया२बितृष्णा३त्यौं धुनी चंद्रा४तहाँ ॥
सुक्रा५नदी रु बिमोहिनी६निवृती७रु बर्णहु च्यारि४ये,
क्रमतैंहि कपिल१रु अरुन२पीत३रु कृष्ण४नाम निहारिये ॥ ४२ ॥

ये चारों बडी जातियां वेदव्यास ने विष्णुपुराण में कही हैं ॥ ३८ ॥ इस जंबू द्वीप में जैसा जम्बू का है वैसा ही प्लक्षद्वीप में इतने ही विस्तार का पीपल का वृक्ष है इसी पीपल वृक्ष के कारण से उसे प्लक्ष द्वीप के नाम से व्यवहार में लाते हैं वहां चन्द्रमा रूपी विष्णु की पूजा करते हैं उस के इक्षुरसोद नामक समुद्र चारों दिशा में घेरा लगाये है ॥ ३९ ॥ उस के आगे शाल्मलि वृक्ष से पहचाना जानेवाला शाल्मलि नामक द्वीप है। जिस के अधिपति का नाम वपुष्मान था जिस के सात पुत्र हुए. उन के नाम से सात खंड हुए, वह शाल्मलि द्वीप चार लाख जोजन का है जिस में कुमुदादिक सात पर्वत हैं, वपुष्मान के सात पुत्रों के नाम से सात द्वीप हुए जिन के नाम स्वेत आदि मूल में स्पष्ट हैं ॥ ४० ॥ ४१ ॥ वहां पवन रूपी विष्णु को पूजते हैं जहां पर सात नदियां बडी हैं और ब्राह्मण को कपिल, क्षत्रिय को लाल, वैश्य को पीत और शूद्र को श्याम कहते हैं. ये ही चार वर्ण जानो ॥ ४२॥

खिल तत्त तत्त पलक्खलौं सुरभोग्य हू दुव२देस है,
इहिं४०००००मान सम्मलि३अग्गसिंधु सुरोद३को परिवेस है॥
कुसद्वीप४जोजन अट्ठलक्ख८०००००सुरोद अग्ग प्रमानसौं,
कुस४तंबकरि फुटै सप्त७ही सुत तत्थ ज्योतिष्मानसौं ॥४३॥
तिन्ह नाम उद्भिद१वेणु मान२तथाहि द्वैरथ३ए कहे,
लंबन४धृती५तिमही प्रभाकर६ओ कपिल७नृपते रहे ॥
गंधर्व१किन्नर२जच्छ३आसुर४देव५नर६निवसैं जहाँ,
रु दर्मी१रु शुष्मी२स्नेह३अरु मंदेह४वर्ण चऊ४तहाँ ॥४४॥
हरिब्रह्म रूप जजैं रु अद्रि हु तत्त सत्त७हि जानिये,
तिन्ह नाम विद्रुम१हेम२ओ द्युतिमान३पुराय प्रमानिये ॥
पुनि पुष्पवान४कुशेशय५रु हरि६मंदराचल७नाम ते,
तिन्ह सीम सप्त७हि खराड निज निज स्वामि नाम सुधाम ते॥४५॥
रु बडीहु सप्त७हि धूतपापा१त्यौं सिवा२सरिता कही,
तीर्जा३पवित्रा४अग्ग सम्मति४विद्युदंभा५ओ रही६ ॥
पुनि सर्व पापहरा७रु सेस उदंत तत्थहु पुव्वलौं,
तस अग्ग सिंधु घृतोद४जोजन अट्ठलक्ख८०००००प्रमानसौं।४६।
तस अग्ग सोलह लक्ख१६०००००जोजन क्रौंच५नामक द्वीप है,

बाकी की सम्पूर्ण बातें तहां पर प्लक्ष द्वीप के समान है, ये दोनों देश देवता ओं के भोग करने के हैं। इतने ही प्रमाण का [चार लाख जोजन का] सुरोद नामक समुद्र का इसके घेरा है. सुरोद के आगे कुश द्वीप है वहां कुश [डाभ]के स्तम्व[विना शाखा के वृक्ष]होने के कारण स्पष्ट नाम कुश द्वीप हुआ जहां का राजा ज्योतिष्मान् था ॥ ४३ ॥ उस ज्योतिष्मान् के सात पुत्र हुए जिन के नामों से सात खंड हुए उन के नाम मूल में स्पष्ट हैं, वहां पर गंधर्वादिक रहते हैं और वहां पर चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र हैं जिन को क्रम से दर्मी, शुष्मी, स्नेह और मंद कहते हैं ॥४४॥ वहां ब्रह्म रूप विष्णु की पूजा करते हैं और पर्वत भी वहां पर सात हैं जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं ॥ ४५ ॥ और सात ही बडी नदियां हैं जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं और बाकी का वृत्तांत वहां भी पहिले कथन के अनुसार ही है उस के चौतर्फ घृतोद नामक समुद्र है ॥ ४६ ॥

द्युतिमानके सुत सप्त७कहियत तत्थ आदि महीप है ॥
ते कुसल१मनुज२रु उष्ण३पीवर४अंतकारक५धारिये,
मनु६दद्युति७निज निज नाम खंडनके अधीस बिचारिये ॥४७॥
सीमाद्रि सप्त७हि क्रौंच१जिहिँ करि नाम द्वीपँहुको बजैं,
त्यौं सैल बामन२अंधकारक३श्रो दिवाव्रत ४हाँ रजैं ॥
पुनि पुंडरीकवदाख्य५दुंदुभि६श्रो महादिक सैल हैं,
पुष्कर१रु पुष्कल२धन्य३तिष्य४हि नाम बरणन गैल है॥४८॥
गौरी१कुमुद्वतिका२नदी संध्या३रु रात्रि४मनोजवा५,
तिम मुख्य ख्याति६रु पुंडरीका७क्रौंच द्वीप५समुद्भवा ॥
हरि रुद्ररूप जजैं रु दधिमंडोद५अग्ग इतो१६०००००हि है,
रद लक्ख३२०००००जोजन द्वीप अग्गहु साक६नामक सोहि है।४९।
अति दिग्घ है जँहँ साक६पादप तास नाम यहै ठयो,
तँहँ त्यौं प्रियव्रत पुत्र भव्य तनूज सप्तक ७ही भयो ॥
पहिलो१जलद१दजो२कुमार२तृतीय३त्यौं सुकुमार भो,
चोथो४मरीचक४पंचमो५कुसुमोद५नाम उदार भो ॥ ५० ॥
छट्टो सुद६काकि६महाद्रुमाभिध७सप्तमों७पहिचानिये,
तिन्ह नामसौं तहँ सप्त७खंड रु बर्षगिरि अब जानिये ॥
उदयाद्रि१श्रो जलधार२रैवत३स्याम४अंभगिरी५जथा,
तिम अंबिकेय६रु केसरी७सरिता८ह सप्त७बडी तथा ॥५१ ॥

उस के आगे क्रौंच द्वीप है, जिस का पति द्युतिमान् था जिस के सात पुत्र अपने अपने नाम के [illegible] द्वीपों के स्वामी हुए ॥४७॥ क्रौंच नामक सीमा का पर्वत है इसी से उस का नाम क्रौंच द्वीप हुआ जिस में मूल में लिखे सात पर्वत हैं और ब्राह्मणादिक [illegible] को क्रम से पुष्कर पुष्कल धन्य और तिष्य कहते हैं ॥४८॥ गोरी आदि सात नदियां हैं और रुद्र स्वरूप विष्णु की पूजा करते हैं और दधिमंडोद नामक समुद्र का इस के घेरा है जिस के आगे शाक द्वीप है ॥ ४९ ॥ जहां पर शाक नामक वृक्ष बहुत लम्बा है उसी के नाम से इस का शाक द्वीप नाम रक्खा, प्रियव्रत का पुत्र भव्य नामक वहां का राजा था उस के भी सात पुत्र ही हुए " यहां पर सातों का समुदाय बताने के कारण एक वचन का प्रयोग किया है ,, जिन के नाम मूल

सुकुमारिका१रु कुमारिका२नलिनी३रु बेणु४महाधुनी,
इच्छी५तथा नदिरेणुका६रु गभस्तिका७सुभद्रा सुनी ॥
हरि सूर्यरूप जजैं रु बर्ण चतुष्क४हू सुनिये जहाँ,
मग१मागधाख्य२रु मानसाह्वय३मंदगाभिध४ए तहाँ ॥ ५२ ॥
खिल पुब्बलौं अरु छीरसागर६अग्ग या३२००००हि प्रमानसौं,
तसअग्ग पुष्कर द्वीप७पुष्कर७उच्चके अभिधानसौं ॥
चउसट्ठि लक्ख६४०००००प्रमान जोजन घेरि छीरधिकौं रह्यो,
सवनाख्य भूपतिकै तहाँ सुत जुग्ग२कृष्ण मुनी कह्यो ॥ ५३ ॥
पहिलो१महाँदिकबीर१धातकि२दूसरो२भुवपाल भो,
बलयाकृती गिरि मानसोत्तर१बीच तत्थ विसाल भो ॥
सौपै पचास हजार५००००जोजन उच्च आयत तुल्लयही,
जिहिं उंच सप्त तुरंगके रथचक्रकी थिरता कही* ॥ ५४ ॥
जिहिं अद्रिपैं हु रची जथा दिसलोकपालन८की पुरी,
जिहिं अद्रिकी छबितैं घनैं सिखरीनकी सुखमा दरी ॥
जिहिं अद्रितैं बलयानुकार उभै रहि पुष्करखंड जे,

में स्पष्ट हैं उन के नामों से वहां भी सात खंड हुए, उस शाक द्वीप के पर्वतों के और नदियों के नाम मूल में स्पष्ट हैं। वहां सूर्य रूपी विष्णु को पूजते हैं अर्थात् सूर्य के निमित्त यज्ञ करते हैं और ब्राह्मणादि चारों वर्णों को मग, मागध, मानसे और मन्दग नामवाले कहते हैं ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ बाकी सब व्यवहार पहिले कहा उसी प्रकार का है जिस के आगे इस द्वीप के प्रमाण के समान ही चीर सागर का घेरा है, जिस समुद्र के आगे पुष्कर नामक द्वीप है जिस में बहुत ऊँचा कमल का पेड है इसी से इस का नाम पुष्कर है जिस के भी चीर सागर का घेरा है जहां के राजा सवनाख्य के दो पुत्र विष्णुपुराण में वेदव्यास मुनि ने कहे हैं ॥ ५३ ॥ पहला महावीर (महा शब्द है आदि में जिस के ऐसा वीर) और दूसरा धातकी नामक राजा हुए. इस द्वीप के कंकण [गोलाकार) की आकृतिवाला मानसोत्तर नामक पर्वत है सो भी ऊँचा और चौड़ा बराबर है उस पर्वत के ऊपर सात घोड़ोंवाले [सूर्य के] रथ के पहिये की स्थिरता है अर्थात् उस पर सूर्य का रथ है ॥ ५४ ॥ उसी पर्वत पर लोकपालों की पुरियां अपनी अपनी दिशा में रची हैं उस पर्वत की शोभा से अन्य पर्वतों की शोभा छिपगई. उस पर्वत से कंकण के आकार दोनों पुष्कर खंड हैं वे अपने

* यहां कहीं अन्त्यानुप्रास.

निजनाम अंक महादिबीर१तथाहि धातकि२ते भजे ॥ ५५ ॥
जिनमाँहिं अब्द हजारदस१००००नर आयु रोग बिना लहैं,
जँहँ सर्ब बर्ण समान उत्तम१मध्यमा२ऽधम३ता न है* ॥
नै नदी१न पब्बय२और तत्थ न बर्ण१आश्रम२धर्म है,
दुव२बर्ष स्वर्ग समान वे न बिधेय१हेय२हु कर्म्म है ॥ ५६ ॥
जँहँ दिग्घकंज७कह्यो तहाँहु सदा बिरंचनकी थिती,
सुद्धोद७नामक सिंधु है तस अग्ग पुष्करकी मिती ६४००००००॥
इक१चक्रके अनुकार औ बलयानुकार छ६द्वीप यौं,
बलयानुकार कही रचे बिधि सप्त७ए तँटिनीप यौं ॥ ५७ ॥
जलहू समस्तनमैं सदाहि समान सिंधुनमैं रहैं,
जल अग्गितैं उफनात ज्यौं ससिवृद्धितैं बढिबो गहैं ॥
दस१०अग्ग अंगुल पंचसै५१०जल सिंधु पुण्णिमलौं बढैं,
रु घटैं अमा लग जो इतो५१०हि पुरान बैष्णव यौं पढैं॥५८॥
दलमेरुतैं इम भूमि सप्तम७सिंधुलौं वरनीगई,
दुव२कोटि त्रेपन५३ लक्ख रु अयुत पंच२५३५०००० जोजन जो भई
तसअग्गभूदस१०कोटिसकारि१४लक्ख१०१४००००० जोजन कांचनी

पति महावीर और धातकी के नामों से नाम धारण करते हैं ॥ ५५ ॥ २ वर्ष ३ अधम ४ नहीं है ५ वहां न तो नदी है न पर्वत है ६ वे दोनों वर्ष (खंड) स्वर्ग के समान हैं जहां न तो वेदोक्त कर्म है और न त्यागने के योग्य कर्म है ॥ ५६ ॥ जिस पर बड़ा कमल पहिले कहा उसी पर ब्रह्मा रहते हैं, पुष्कर द्वीप के समान प्रमाण वाला ही उसके आगे शुद्धोद नामक समुद्र है। एक द्वीप तो चक्र के समान और छः द्वीप कंकण (कड़े) के सदृश और सातों समुद्र ब्रह्मा ने कंकण के समान गोलाकार ही रचे ॥५७॥ इन समुद्रों का जल बढता घटता नहीं सदा बराबर ही रहता है, परन्तु जिस प्रकार अग्नि से जल उफणता है तिसी प्रकार चंद्रमा की वृद्धि के साथ जल बढता रहता है अमावस्या से लेकर पूर्णिमा तक समुद्र का पानी पांचसौदश अंगुल बढता है और इतना ही पूर्णिमा से अमावस्या तक घटता है यह विष्णुपुराण में कहा है ॥ ५८ ॥ मेरुखंड से सात समुद्र पर्यन्त यह भूमि कहीगई है इस के आगे

*लहै नहै अन्त्यानुप्रास.

सब सत्वहीन रु चौ४गुनी प्रथमोक्त भूमि तितैं भनी ॥ ५९ ॥
गिरि अयुत१००००आयत कोटि१०००००००उच्च तदग्र लोकालोक है,
तस अग्ग भानु प्रकास नाँहिं कटाहलौं तम ओक है ॥
रवि१२कोटिलक्ख बतीस३२रु अयुत च्यारि४जोजन१२३२४००००थ्वांतं यौं
दलमेरुतैं इक ओर कोटिपचीस२५००००००० भूतिमिरांत यौं ।६०।
दूजोरदिसाहु इती२५०००००००समेत पचास कोटि५००००००००यहै भई,
भूलोक७नामक लोककी रचनाहु बिधि इम निर्मई ॥
इहिं भूमि उच्छ्रय मान इक हजार१०००जोजन त्यौं रच्यो*,
तस हेठ्ठ उच्छ्रितं अतल८लोक हजार नव९०००मितिलौं रच्यो ।६१।
पुटदै बहोरि हजार१०००जोजनको तरैं बितलारव्य९हू,
क्रमसौंहि यौं सुतल१०रु तलातल११ओ रसातल१२हू पैंहू** ॥
तिमही महातल१३अंतमैं पाताल१४लोक बिधानसौं,
बिरच्यो बिरंचन सर्बए पुट लोकसूचितं१०००।९०००मानसौं॥६२॥

चौदह करोड़ योजन भूमि सुवर्णमयी है वह सब जीवों करके रहित है २ पहिले की कहीहुई ॥ ५९ ॥ इस के आगे दश हजार जोजन चौड़ा और करोड़ योजन ऊँचा लोकालोक नामक पर्वत है जिस के आगे सूर्य का प्रकाश नहीं है अंडकटाह तक अन्धेरे का ही समूह है ७ अन्धेरा है ८ इस प्रकार ९ मेरु खंड से १० अन्धेरे के अन्त तक भूमि है ॥ ६० ॥ दूसरी दिशा में भी इतनी ही है जिस सहित यह पचास करोड़ भूमि हुई इस प्रकार भूलोक नामक लोक की रचना ब्रह्मा ने रची इस भूमि की ऊँचाई का प्रमाण एक हजार योजन का रचा (मोटापन में एक हजार योजन है) इस के नीचे नव हजार योजन का ऊँचा अतल नामक लोक रचा ॥ ६१ ॥ इस ग्रन्थ में जहां तहां " अन्त्यानुप्रासः ,, ऐसा लिखा हुआ है वहां जानना चाहिये कि अन्त्यानुप्रास तो प्रत्येक छन्द में सम्पूर्ण ग्रन्थ में है परन्तु जहां तहां सभङ्ग पद से अन्त्यानुप्रास मिला है वहां वहां पर ही " अन्त्यानुप्रास,, ऐसा लिखागया है सो सर्वत्र ऐसा ही जानना, और अभंग पद, सभंग पद के लक्षण हम ऊपर लिख आये हैं ॥ १४ हे स्वामी रामसिंह १५ विधि पूर्वक १६ ब्रह्मा ने १७ ये सब पुट (आवरण) और लोक कहेहुए प्रमाण अर्थात् एक हजार योजन का प्रत्येक आवरण और नव हजार योजन के प्रत्येक लोक रचे ॥ ६२ ॥

त्यो रच्यो त्यो रच्यो अन्त्यानुप्रास *रव्यहू पहू अन्त्यानुप्रास.

सित१कृष्ण२लोहित३पीत ४सर्कर५सैल६कांचन७भू जथा,
क्रमसोंहि सप्त७हि रम्य सप्त७हि स्वर्गसौं हु घनैं जथा ॥
जिनमांहिं दानव१दैत्य२जच्छ३रु नाग४आदि सुखी बसैं,
रवि१तापकों२ससि सीतकों२जिनैंमैं न ल्हादहिकों लसैं।६३।
जिनमैं नदी१बन२ताल३पुष्कर४रम्य कोकिललाप५व्है,
जिनैंमांहिं भोगनतैं अहो निस कालके खिन माप व्है ॥
जिनमैं सदा मुरजादिबाद्य१रु नृत्य२गान३बनैं रहैं,
दितिजात दानव गान आदि सुता बिलासनकों बहैं ॥६४॥
बहुभक्ष्य१भोज्य२रु लेह्य३चोष्य४रु पेय५व्हां सुखगम्य है,
गहनैं अनेक प्रकार मानिमय बस्त्र बांछित रम्य है ॥
पातालके पुट हेठ सोहु हजार१०००जोजन जानिये,
पातालसोंहि समस्त नीरधि निम्न मान प्रमानिये ॥६५॥
पातालतैं तस सेस तीस हजार३००००जोजनपैं रहैं,
सुहि तामसी तनु बिष्णुकी गुन तास धीधर को कहैं ॥
इहिं हेतु नाम अनंत जे प्रभु व्हां हजार१०००फटा धरैं,

इन सातों लोकों में क्रम से श्वेत काली, लाल, पीली, रेतीली, पर्वतोंवाली और सोने की भूमि है जो सातों ही स्वर्ग से भी बहुत रमणीक हैं. ९ यक्ष १० जिन लोकों में सूर्य ताप नहीं करता और चन्द्रमा शीतलता नहीं करता अर्थात् केवल प्रकाशमात्र ही करते हैं और वहां केवल आनन्द ही शोभायमान है ॥ ६३ ॥ १२ तालाब १३ कमल १४ सुन्दर कोकिलों का बोलना १६ जिन लोकों के भोग भोगने में दिन रात्रि क्षण के समान जाते हैं १७ मृदंग आदि बाजे १८ दैत्य उन बिलासों को १९ प्राप्त होते हैं ॥ ६४ ॥ जहां पर भक्ष्य (दांतों से चबाकर खाया जावे वह मांस आदि) भोज्य (जिसको विशेष चबाना नहीं पड़े वह हलवा आदि) लेह्य (जो अंगुली से चाटा जावे वह मधु (सहत) आदि] चोष्य (जो चूसा जावे वह आम्र आदि) और पेय (जो पिया जावे वह दूध आदि) पांचों प्रकार के भोजन सुख से मिलते हैं २६ भूषण २७ मनोहर २८ पाताल के नीचे का आवरण पाताल से हजार जोजन गंहरे समुद्र का जानो ॥ ६५ ॥ उस पाताल से तीस हजार जोजन पर शेषनाग रहते हैं जो विष्णु की तामसी मूर्ति है जिसके गुण कौन विद्वान् कह सकता है अर्थात् कोई नहीं कह सकता इसी कारण से उनका नाम अनन्त है जो हजार फण

ते सर्व स्वास्तिक अंक अंकित दीप्यमान दिसाकरैं ।६६।
मनि मंजु फन फनपैं प्रकासित एक१कुण्डल कानसौं,
हतओज असुरनकौं करैं मदघूर्ण दिष्ठिप्रदानसौं ॥
पट१नील२हार१वदाँत२हत्थ अयोग्र१लांगल२उल्लसैं,
सु किरीट माल्यैं सगंग ज्यौं कइलास यौं सुखमा हसैं ॥ ६७ ॥
विभु बारुनीकिरि सेव्यमान रु पुष्पलौं सिर भू बहै,
लय काल कढि जिहिं वक्रतैं ज्वलनात्म रुद्र सबै दहै ॥
जिन्ह पुजिकैं मुनि गर्ग ज्योतिष१ ओ निमित्त२ पटू भये
पातालके तल वे प्रभू बनिकैं धराधर यौं ठये ॥ ६८ ॥
जब होत जृंभन सेसकै तब कंपकौं अवनी भजै,
जिन्ह अंग मंडन हरित चंदनसौं सुगंधि दिसा रजै ॥
तिनके तरैं बहुभेदसौं नरकाख्य१ पापिन धाम है,
तिन माँहिं रौरव१ कूटसाक्खि१ असत्य२ बादिन काम है ॥ ६९॥
पुनि भ्रूण१ गो२ गुरु३मारि स्वाँसनिरोध२ नामकमैं परैं,
थीति हेमं तस्कर१ ब्रह्महा२ रु सुराप३सूकर३ मैं करैं ॥

धारण करते हैं वे सब फण नील रेखा के चिन्ह से चिन्हित हैं जो सब दिशाओं को प्रकाशित करते हैं ॥ ६६ ॥ मनोहर मणियां फण फण पर प्रकाशित हैं और कान में एक ही कुंडल है और मद से घूमती हुई दृष्टि देने से असुरों के प्रतापैं (पराक्रम) को हरते हैं । इनके नीले वस्त्र, स्वेतहार हाथ में लोहे का उग्र हल शोभायमान है । श्रेष्ट मुकुट और माला से ऐसी शोभा धारण करते हैं जैसे गंगा से कैलाश पर्वत ॥ ६७ ॥ वह व्यापक अंगस्ति मुनि करके सेये जाते हैं और पुष्प के समान भूमि को शिर पर धारण करते हैं जिनके मुख से प्रलय के समय अग्नि निकलती है जिससे रुद्र स्वरूप विष्णु सब को भस्म करते हैं जिन (शेष) को पूजकर गर्ग मुनि ज्योतिष और शकुन शास्त्र में चतुर हुए वह प्रभु भूमि का आधार होकर रहे ॥ ६८ ॥ शेष को जब जँभाई (उबासी) आती है तभी पृथ्वी धूजती है जिनका अंग हरे चंदन से लेप किया हुआ सब दिशाओं को सुगन्धित करता है २४ नरक नामक २५ रौरव नाम नरक २६ खोटी साक्षी देनेवालों के और झूठ बोलने वालों के लिये है ॥ ६९ ॥ फिर बालक गौ और गुरु को मारकर २८ स्वास रुक जानेवाले नरक में २९ वास ३० सोना चोरनेवाला ३१ ब्राह्मण कोमारनेवाला ३२ सूकर नामक नरक में यज्ञ करनेवाले क्षत्रिय वा वैश्य को मारनेवाला ।७०।

मखानिष्ठ छत्रिय४वैश्य५मारि रु भुग्गि गुरु तिय ६तात्थ३ही,
हित१ संग २ पापिनकौं करैं तिनकी ह सोहि गती कही ॥७०॥
नर जामिकामुक १ राजभीप्रद २ तप्तकुंभ ४ डरे रहैं,
तजि भर्त्त ३ १ बेचि सती २ जरी ३ सिसु४तप्तलोह५व्यथा ७६३
भजि पुत्रि१ पुत्रबधू २रु निंदि गुरू ३ महाँदिक ज्वाल६ मैं,
अरु बेचि१ वा करि दुष्ट२वेदहिं जात लोन७ करालमैं॥७१
क्रोष्टां१अगम्यगं२ रीतिलोपक३ चोर४ जात विमोहं८ मैं ॥
द्विज१ रत्न२पितृ३सुर४ दुष्ट करि कृमिभक्ष ९ नामक कोहं मैं॥
नर१ देव२पितर३न पुब्ब खाय अनि ४ आचरि पाप जे,
लालादिभक्ष१० हिं रु सर टंकं११हिं प य पावत ताप जे ॥७२॥
जे सस्त्र चोरनकौं रचैं१ति कुबद्धि विससनं ११ मैं फसैं,
अरु दान अनुचितको लहैं१ ति गिरे अधोमुख१२ मैं त्रसैं॥
नक्षत्रसूचक१ या१२हिमाँहिं अयाज्ययाजक ३ जानिये,
अरु जात पूयवहाख्य१३ एक १हि मिष्टखादक१ मानिये ॥७३॥
अरु नीलिकौ २ रस ३लौंन ४तिल५जंतु६ आदि बिक्रय जे करैं,

जो पुरुष बहिन के साथ भोग करते हैं, जो राज्य को भय देते हैं वे तप्तकुंभ नामक नरक में पड़े रहते हैं और शरणागत को, पतिव्रता स्त्री को, वृद्ध को और बालक को छोडदेनेवाले व पतिव्रता स्त्री को बेचदेनेवाले तप्त लोहे की पीड़ा लेते हैं। पुत्री से और पुत्र की स्त्री से संभोग करनेवाले, गुरु की निन्दा करनेवाले महाज्वाल में पड़ते हैं और वेद को बेचने अथवा उसको बिगाड़नेवाले छेदन होने को कराल नामक नरक में जाते हैं ॥ ७१ ॥ क्रोष्टा (कोसनेवाला) अगम्य में गमन करनेवाला, उत्तम आचार की रीति को लोपनेवाला, चोरी करनेवाला, विमोह नामक नरक में जाते हैं ११ माता पिता १२देवता १३ दोषल गानेवाला १४ नरक१५अतिथि आदि मनुष्यों से १६ पहिले १७ मारण मोहनादि का अनिष्ट आचरण करैं वे लालाभक्ष नामक नरक में पड़ते हैं और बाण बनानेवाले २० मणि आदि के भेदने को टांकी बनानेवाले भी यही नरक पाकर ताप पाते हैं ॥ ७२ ॥ चोरों के लिये शस्त्र बनानेवाले २१ विशसन नामक नरक में २२ त्रास पावैं २३नक्षत्रों के फलाफल दिखानेवाले ज्योतिषी २४नहीं यज्ञ करने योग्य को यज्ञ करानेवाले इसी विशसन में पड़ते हैं और २५ अकेला मीठा खानेवाला पूयवह नामक नरक में जाता है ॥७३॥ २६नील २७विष२८लाख२९बेचते हैं

मांर्जार७कुक्कुट८छाग९सूकर१० श्वान११पच्छि१२न जे भरैं ॥
तैं या१३हि अरु माहिषिक१रंगोपजीवक२ ए जथा ॥
कैवर्त्त३सूचक४कुंडभोजक५ पर्बकामुक६ हू तथा ॥ ७४ ॥
आगारदाहक७गरलदायक८मित्रघातक९दुर्मती,
रुधिरांध१४सकुनि१० रु ग्रामजाचक११ सोमक्रीणक१२लै गती॥
सरघाविघातक१ ग्रामघातक२ आदि बैतरनी१५ लहैं,
बिनु अर्थ बनछेदी१ डरे असिपत्र बन १६ बिधुरा बहैं ॥ ७५ ॥
धनमत्त १ जुव्वनमत्त२ ओ मरजाद भेदक३ ए जिते,
अपवित्र४ ओ खल छद्म जीवक ५कृष्णा१७के निरई तिते ॥
औरभ्र१ओ मृगव्याध २ बन्हिद ३ बन्हिज्वालक १८ मैं तचैं,
ब्रतभंग आश्रमभंग२कर संदंस१९पीडन मैं पचैं ॥ ७६ ॥
अरु पुत्र पाठित१आदिके जन स्वानभोजन२० मैं दहैं,
इत्यादि नारक थान तत्थ रचे हजारन को कहैं ॥
निरई अमर्त्यनकौं लखैं निरईनकौं सुर सर्वदा,

१बिल्ली २मुरगा ३बकरी ४सूवर ५कुत्ता ६पक्षियों को पालते हैं ७वे भी इसीमें पड़ते हैं ८और भैंसे से अपनी वृत्ति चलानेवाले, ९रंगरेज धीवर (नाव खेनेवाले) चुगली करनेवाले, यज्ञ कुंड की बाकी रही वस्तु को खानेवाले१३ अमावस्या पूर्णमासी आदि पर्वों में स्त्री संग करनेवाले १४ घर जलानेवाले विष देनेवाले मित्र को मारनेवाले शकुन से जीविका करनेवाले, ग्राम के सब लोकों को माँगनेवाले सोमलता आदि यज्ञ की औषधी बेचनेवाले रुधिरांध नामक नरक में जाते हैं, मधुमक्खी को और ग्राम को मारनेवाले आदि वैतरणी में पड़ते हैं विना प्रयोजन वन काटनेवाले असिपत्र नामक बन में विकलपन को प्राप्त होते हैं ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ छल से जीनेवाले २५ कृष्ण नामक नरक में जाते हैं और भेड़ पालनेवाले, शिकारी और अग्नि लगानेवाले वन्हिज्वालक नामक नरक में क्षीण होते हैं। व्रतभंग करनेवाले और आश्रम भंग करनेवाले संदंश नामक नरक की पीड़ा में पचते हैं॥७६॥ अपने पुत्र से ही पढ़नेवाले आदि कितने ही मनुष्य ३३श्वानभोजन नामक नरक में दुःख पाते हैं, इन को आदि लेकर नरक के हजारों स्थान तहां पर रचे उन को कौन कह सकते हैं। नरकगामी सदैव देवताओं को देखते हैं कि हम ने उत्तम कर्म किये होते तो इन की भांति

मन१ बचन२ कर्म३गती त्रि३धा इम स्वर्ग १नरक १ अखबेदा।७७।
इक लक्ख १०००००जोजन माँहिं या नरकांत ए२०अधलोक है,
नृप राम इम अबके प्रजेस रचे चउद्दह १४ ओक है ॥
सुनिये ऽब नारक जीव छुट्टि रु ज्योनि ज्यौं क्रमतैं लहैं,
हरि नामको महिमा तथा ग्रह आदि ज्यौं फिरते रहैं ॥ ७८ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ विद्यमा-नकिरिराजकल्पसर्गाऽधिष्ठानचतुर्दश १४ लोकसंस्थानप्रमाणवि-भागवर्णनमेकविंशो२१मयूखः ॥ २१ ॥

प्रायोब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

दोहा

नरक१जीव यह भुग्गि दुख, पावत थावर१जोनि* ॥
पुनि कृमि२जलचर३पच्छि४पन,ज्यौं पसुपन५नरजोनि६ ॥ १ ॥
धार्मिकपन ७ सुरपन ८ धरि रु,मुक्ति ९ हु लहत कितेक ॥
उत्तर उत्तर ए अर्लप, सहँस १००० गुनैं सुबिबेक ॥ २ ॥

रहते इसी प्रकार देवता लोग नरक वासियों को देखते हैं कि हमारे पुण्य क्षीण होजायँगे तब हम को भी वहां वास करना पड़ेगा। मन से, वचन से और कर्म से तीन प्रकार के पुण्य पाप होते हैं वेही अत्यन्त स्वर्ग, नरक को देनेवाले हैं। ७७। नरक के अन्त के ३ नीचे के ४ हे राजा रामसिंह ५ प्रजापति ने॥ अब यहां पर नरकों की यातना और उन का स्वरूप आदि विशेष जानना चाहैं वे विष्णुपुराण के द्वितीय अंश के छठे अध्याय में देखलेवैं विस्तार के भय से हम ने यहां पर ऊपर की वार्ता छोडकर अक्षरार्थ ही करदिया है।७८।

श्रीवंशभास्करमहाचम्पू के पूर्वार्ध के प्रथमराशि में वर्त्तमान वाराह कल्प की सृष्टि क्रम में चौदह लोकों की आकृति (कौन कैसा है) प्रमाण (कौन कितना है) और विभाग (वंटहोने) के वर्णन का इकीसवां मयूख समाप्त हुआ.

नरक के जीव यह दुःख भुगत कर वृक्षादिक स्थावर योनि पाते हैं फिर कीडे, जलचर, पक्षी, पशु और मनुष्य की योनि पाते हैं ॥ १ ॥ इस मनुष्य योनि से धार्मिकपन के कारण देवयोनि धारण करते हैं और कितनेक मुक्ति भी पाते हैं। इन योनियों में उत्तरोत्तर जन्म कर्म होतेजाते हैं और ज्ञान

---

*थावरजोनि नरजोनि अन्त्यानुप्रास.

लेत किते बिधिलौं हु बढि, बहुरि नरक बिच बास ॥
उतरत चढत समस्त इम, बिनु नि– बोध बिलास ॥ ३ ॥
–रचत प्रायश्चित्त बिधि, पापहु करि पछिताय ॥
मन्नि श्रुति १ स्मृति २ मग्गकौं, जे नर नरक न जाय ॥ ४ ॥
प्रायश्चित्तनमैं प्रथित, हरि सुमिरन सम है न ॥
–हा अनलको लघुहु कन, दुर्गम बिपिन दै– न ॥ ५ ॥
चित्तहि अकंप– चाहिये, वह अनुपम रिझवार ॥
व्है प्रमादिक वा न व्है, पुनि अघ तो इम पार ॥ ६ ॥
स्वर्ग १ नरक २ दुहुँ – ठोर सम, अबिरत इक आनंद ॥
बडो बिखय सुखतैं सु बिभु, मुक्ति इतर पद मंद ॥ ७ ॥
कर्म १ भक्ति २ अरु ज्ञान ३ क्रम ४, पंथ त्रि३बिध प्रकटाय ॥
अप्प अप्प अधिकारमैं, दिय सब द्रुहिन लगाय ॥ ८ ॥
ग्रह १ तारा २ नच्छ– ३ गन, थप्पि कथित निजथान ॥
काल बरस १ मासा२दि क्रम, सब किय प्रकट सयान ॥ ९ ॥

॥ पज्झटिका ॥

रबिकै रथ जोजन नव हजार ९००,

हजार गुना बढताजाता है ॥ २ ॥ कितने ही बढते बढ– ब्रह्मा तक पहुंचजाते हैं और घटते घटते फिर नरक में बास करते हैं इसी प्रकार अपने में ज्ञान होने और नहीं होने के कारण सभी उतरते चढते रहते हैं॥३॥ पापकरके पछतावे के साथ वेद और धर्म शास्त्र के मार्ग से प्रायश्चित्त करते हैं वे मनुष्य नरक में नहीं जाते ॥४॥ ४प्रसिद्ध ५ अग्नि का ६ वन को ७ नहीं जलाता अर्थात् जलाही देता है ॥ ५ ॥ ८ निष्कपट ९ परमात्मा १० उपमा रहित ११ज्ञान आदि होवे अथवा न होवे परन्तु चित्त के निष्कपट होने से पाप के तो पार होजाता है ॥ ६ ॥ जिस के हृदय में ब्रह्म ज्ञान का निरन्त– आनन्द है उस के स्वर्ग और नरक दोनों –ौर समान है, क्योंकि सुख से उस व्यापक मुक्ति का विषय बडा है और उस (मुक्ति) के विना दूसरे पद मन्द हैं ॥ ७ ॥ कर्म भक्ति और ज्ञान ये तीन प्रकार के मार्ग क्रम से प्रकट करके १५ ब्रह्मा ने सब को अपने अपने अधिकार में लगादिया ॥ ८ ॥ १६ कहेहुए १७ समय का १८ उस बुद्धिमान् ब्रह्मा ने ॥ ९ ॥ रथ का ओदण जिस में घोडे या बैल जोतेजाते

ईसादंड सु द्वि२गुनित१८०० उदार ॥
ख ख ख नभ व्योम हय तिथि १५७००००० प्रमान,
जिहिं अक्ष कील इक १ हे सुजान ॥ १० ॥
इक १ चक्र तत्थ पचौं ५ ऽऽ२ एस, नृप फिरत मानसोत्तर नगेस ॥
तस नाभि तीन ३ पूर्बान्हं १ ज्यौंहि, मध्याह्न२ तथा अपरान्ह ३ त्यौंहि ।११।
संबत्सर१ परिबत्सर२ ललाम, इद्वत्सर३ अनुबत्सर४ सनाम ॥
अरु बत्सर५ ए तस पंच५ आर, ऋतु ख८ प्रधि जानहु क्रम प्रकार ।१२।
अब्दात्म कालमय चक्र एह, आबर्त्त अटत बिभु सब अनेहं ॥
ख ख सर सर कृत४५५०० मित अपर२ अक्ष,
देवाद्रि सिर सु थिर रहत दक्ष ॥ १३ ॥
जुग अक्ष उभय२ मितं बितत जास, ईसाग्र बद्ध बिचसौं सु आंस ॥
जुग अर्द्ध जुग२हि यातैं समान, दक्खिन न बढन उत्तर न हान ।१४।
इनमांहिं जु दक्खिन अर्द्ध उक्त, जहँ छंद रूप हय सप्त७ जुक्त ॥
गायत्री१ वृहती२ नाम जानि, उष्णिक३ जगती४ त्रिष्टुप५ प्रमानि ।१५।
ज्यौं छंद अनुष्टुप६ पंक्ति७ जत्थ, स्यंदन रबि खैंचत फिरत सत्थ ॥
उत्तर जुगार्द्ध१ अरु अक्ष२ बांधि, ध्रुव थंभिरह्यो गुनं पवन संधि ।१६।

लाहरं (रथ की नाभि में रहन की लोहे की कील) एक ही है ॥ १० ॥ रथ के एक पहिया है जिस के पांच अरे हैं ये रथ हे राजा रामसिंह मानसोत्तर पर्वत पर फिरता है उस के तीनों संध्या रूपी तीन नाभि (नाही) हैं ॥ ११ ॥ संवत्सरादि सुन्दर पांच अरे और छः ऋतु हैं येही इस रथ के पहिये की क्रम से पूठियाँ जानो ॥ १२ ॥ यह सम्वत् रूपी समय का चक्र व्यापक होकर सब समय में गोलाकार फिरता है और हे चतुर रामसिंह इसी रथ का दूसरा भाग जिस में पहिया लगायाजाता है और वह बिना पहिये का है पैंतालीस हजार पांच सौ योजन का है सो सुमेरु पर स्थिर रहता है ॥ १३ ॥ दोनो अक्षों के प्रमाणं जितना जूड़े का विस्तार है उस जूड़े के बीच में रथ के ओदण का अग्र भाग बंधा हुआ है इस कारण से जूड़े के दोनों अर्धभाग बराबर के हैं न तो दक्षिण में अधिक है और न उत्तर में कम है ॥ १४ ॥ इन में जो दक्षिण दिशा का आधा भाग कहागया उस में छन्द रूपी सात घोड़े जुते हुए हैं जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं वे सूर्य के रथ को खैंचते फिरते हैं और उत्तर की ओर का आधा भाग अक्ष है उस को पवन रूपी रस्सी बांधकर ध्रुव थांभे हुआ है ॥ १५ ॥ १६ ॥

भुवसौं जोजन इक लक्ख१००००० मानें,
मेरु सु चउरासी सहँस८४००० मा[२]नु ॥
ध्रुव धाम पंचदस लक्ख१५००००० ग्रा[३]स,
गिरि मानसोत्तर सहँस पचास५०००० ॥ १७ ॥
सोलह हजार१६०००तँहँ मेरुसीस,
दल लक्ख५००००मानसोत्तर गिरीन ॥
इँहिँ मान पवन परिबद्ध थान,जिनपैं थिर रबिरथ है सुजान ।१८।
पुहवीसौं उप्पर क्रम प्रबंध,
किय द्रुहि[६]न सप्त७मित पवन कंध ॥ १९ ॥
आबह१रु प्रबह२उद्बह३गरोय,संबह४तथा सुबह५नामधेय ॥
परिबह६रु पराबह७सत्त७पोन,ग्रह तारा इनबिच करत गोन॥२०॥
ग्रह७चल[?] बाम मेरुहिँ बिधाय, लैजात अनिल दाहिन उडाय ॥
घटकां[१]र चक्र पर बामचाल,चलि [?]ीटि[२] जात पच्छो उताल॥२१॥
पूरब मुख ग्रह७इम पिछि जात,हठ सोहि[२]रांजि तजि लहि दिखात ॥
गिरि कहिय मानसोत्तर सनाम,तिहिँ सीस च्यारि४दिस च्यारि४धाम
दिस पुब्ब१पुरी बासैव१निवास,बस्वौकसारिका१नाम तास ॥
संजमिनि२दक्खिन२समैन थान,पच्छिम३सुखा३सु अप्पति३प्रधान
उत्तर४बिभावनी४सोमगेह,इम पुर चतुष्क४तहँ गिनहु एह ॥

१सूर्य२प्रमाण३है ॥१७॥४आधालाख५इस प्रमाण के स्थान पर पवन से बंधाहुआ है सुजान रामसिंह सूर्य का रथ है ॥ १८ ॥ इस पृथ्वी के ऊपर ब्रह्माने क्रम से मेघ के समान सात पवन बनाये जिनके नाम मूल में स्पष्ट हैं इन्हींमें ग्रह और तारे फिरते हैं ॥ १९ ॥ २० ॥ ग्रह मेरु को बांया रखकर जाते हैं जिन को पवन उडाकर दाहिनी ओर लेजाता है जैसे कुंम्हार के फिरते हुए चाक पर बांई [चक्र की गति के विरुद्ध] ओर जाता हुआ कीडी शीघ्रता से पीछा जाता हुआ दीखता है ॥ २१ ॥ और इसी तरह पूरब की ओर जानेवाले ग्रह अपनी वीथी (गैली) को छोडकर पीछे (पश्चिम) को जाते हुए दीखते हैं मान[?]त्तर पर्वत जो पहिले कहा उसके ऊपर चारों दिशा में चार धाम हैं ॥ २२ ॥ जिनमें पूर्वदिशा में वस्वौकसारिका नामक इन्द्र की, दक्षिण में संजमिनी नामक यमराज की पुरी है जो नाश का स्थान है, पश्चिम में सुखा नामक वरुण की, और उत्तर में विभावनी नामक चन्द्रमा की पुरी है,

तिनसौँहि प्रात१मध्याह्न२काल, सायं३निसीथ४प्रकटत नृपाल॥
इंद्र१पुर जबहि रबि छुवत आय,दिन मध्य१काल तब तहँ दिखाय॥
अरु अग्नि२कोन थल प्रथम१जाम२,
जिम उदय३काल जमराज३धाम ॥ २५ ॥
निस जाम१ सेस४क्रव्याद४कोन,भासत निसीथ५तँहँ बरुन५भौन ॥
इक१पहर जात निस६पवन६थान,सोम७पुरनिसामुख७करत भान॥
ईसान८दिसा दिन जाम१सेस८, इम सब समय बदलत दिनेस ॥
भूबलय अर्द्ध१परदिन१दिखात,ज्यौं अपर२अर्द्ध निस२फिरत जात।
है जब रबि आतपकेर हानि, जग गहिँ लेह तब दूर जानि ॥
दिस तीन३रु बिचके द्व२हि कोन, रबि परसत अबिरत करत गोन॥
नहि उदय१अस्त२है तस नरेसँ दरसन१रु अदर्सन२ भय२एस ॥
इम भानु उदय सुहि पूर्व आहि, सबसौं सुमेरु उत्तर सदाहि ।२९।
रवि ब्रह्मसभा बिनु मेरु मत्थ, सब ठाम तपत तानि किरन सत्थ ॥

इन्हीं से प्रभात, मध्यान्ह, सायंकाल और आधीरातें होती है ॥ २३ ॥ २४ ॥ २ पहर ॥ २५ ॥ ३ नैर्ऋत्यकोण में ४ आधीरात ५ पश्चिम में ६ वायु कोणमें ७ सायंकाल उत्तर में करता है और यह दिन बाकी रहते सूर्य ईशान कोण में जाता है अर्थात् सायंकाल को उत्तर से चलकर प्रत्येक दिशा में प्रत्येक पहर होता हुआ प्रभात को दक्षिण में पहुंचता है और फिर सायंकाल को उत्तर में पंहुचजाता है इस प्रकार आधे भूगोल पर दिन दीखता जाता है और आधे पर रात्रि फिरती जाती है ॥ २६ ॥ २७ ॥ जब सूर्य की गरमी की हानि होती है तब सूर्य को दूर जानना चाहिये, उपरोक्त चारों पुरियों में से जिस पुरी में सूर्य जाता है उसको और उसके आगे की दो पुरियों को प्रकाशित करता है और उन आगेवाली दो पुरियों के बीच की दो कोणों को भी प्रकाशित करता है इस प्रकार तीन दिशा और दो कोणों को स्पर्श करता हुआ सूर्य निरंतर फिरता है ॥ २८ ॥ हे राजा रामसिंह इस सूर्य का न तो उदय है और न अस्त है किन्तु जहां इसके दर्शन होते हैं वहीं उदय और जहां दर्शन नहीं होते वह अस्त है इस प्रकार जहां से जिनको सूर्य का उदय दीखता है वही उनका पूर्व है १४ और सुमेरु तो सदैव सबके उत्तर दिशा में ही है ॥ २९ ॥ मेरु के मस्तकपर १३ ब्रह्मा की सभा है उसके विना सब स्थानों

जब किरन कतिक बिधि पुरहु जाय, तस तेज देत तब इन्द्ह मिटाय ३०
उत्तर१पर काष्टा निस१अजस्र, दक्खिन२पर काष्टा संतत घस्र२॥
अष्टमि-ससिदल जिम दुव२दुरभास,
इम मिलित रहत तिमिर१रु प्रकास२ ॥ ३१ ॥
अस्त समय रवि छबि पावँ ४ अंस, पावक बिच प्रबिसत सुप्रसंस॥
पावक चतुर्थ ४ लवे उदय काल, पूषा बिच प्रबिसत हे नृपाल।३२।
यातैं अतिभासत निस १ कृसानु २, भासत अतीव द्युति दिवस भानु॥
इम अग्नि १ ज्योति अरु ज्योति सुज्ज २, आहुति स्वाहांत प्रदोस१ पुज्ज॥
रवि१ ज्योति ज्योति पावक २ कहात, स्वाहा जुत आहुति यह प्रभात२
रजनीमुख१ जलबिचदिन२रहंत, लहिप्रात२निस२हु जलगृह लहंत॥
यातैंहिबिसँद१ जलनिस२अँनेह, अरुमलिन१ दिवस२बिचलसतएह
ख ख ख ख पचास कृतअंक ९४५०००००० मान,
जो एक १ अहंनिस रवि प्रयान ॥ ३५ ॥
तसअंसँ सट्ठितम ६० सुनहु राय,

में सूर्य अपनी किरणों को फैलाकर तपता है जब कितनीक किरण ब्रह्मा के पुर में चली जाती हैं उनको ब्रह्मा का तेज मिटा देता है ॥ ३० ॥ सूर्य जब उत्तर दिशा में रहता है तब निरंतर रात्रि; और दक्षिण दिशा में रहता है तब निरंतर दिन रहता है और जिस प्रकार अष्टमीका आधा चन्द्रमा उजाले में और आधा अंधेरे में दीखता है इसी प्रकार अन्धेरा और प्रकाश मिलारहता है ।३१।अस्त समय (रात्रि) में सूर्य का चतुर्थांश तेज अग्नि में प्रवेश होजाता है और हे राजा रामसिंह उदय समय (दिन में) अग्नि का चतुर्थांश तेज सूर्य में प्रवेश होजाता है ॥ ३२ ॥ इसी कारण से रात्रि में अग्नि का और दिन में सूर्य का तेज अधिक दीखता है और इसी कारण से अग्नि और सूर्य की ज्योति, आहुति और स्वाहा अंत, प्रदोष काल में पूजनीय है ॥ ३३ ॥ सूर्य की ज्योति स्वाहा और अग्नि की ज्योति आहुति कहलाती है सो प्रभात में स्वाहा के साथ आहुति होती है। जब रात्रि होजाती है तो दिन जल में प्रवेश करजाता है और प्रभात होता है तब रात्रि जल में प्रवेश करजाती है ॥ ३४ ॥ इसी कारण से जल रात्रि को उज्वल और दिनको मलीन (काला) दीखता है, एक दिन रात्रि में सूर्य नौ करोड़ पैंतालीस लाख योजन चलता है ॥ ३५ ॥ हे राजा रामसिंह इस का साठवां भाग पन्द्रह लाख पचहत्तर हजार

ख ख ख सर तुरग तिथि १५७५००० प्रमित आय ॥
जोजन इतेक इक १घटिय माँहिं, अवनी रबि छेकत अटत आहिं ॥
जब रासि मकर १० दिनकर प्रबेस, तब लगत अयन उत्तर१ नरेस॥
तिहिं भुग्गि भुग्गि पुन कुंभ ११ मीन १२,
अवि १ रासि छुवत जब जवँ अधीन ॥ ३७ ॥
तादिनविषुवतगति पाय अर्क, दिन १ रत्ति २ करत सम मितिउदर्क॥
मृग१०सौं दिनबाढतमिथुन ३ ताम, कर्कट सौं धनु लग अयन याम२
रत्ती सु बढत इहिं अंतराल, अयनन करि रबि मंथर उताल ॥
दिन१मंथर२तँहँ निस१ लघु२दिनेस,
अह१सीघ्र २ तबहि निस १ मंद २ एस ॥ ३९ ॥
परकाष्टाउत्तर१ अयनपाय, धृति १८ मित मुहूर्त दिन बिच बिताय ॥
लहिसार्द्धत्रयोदस१३।½ऋक्ष भोग, जिहिं अग्ग लहत पुनिअस्तजोग॥
नक्षत्र इते १३।½ पुनि रजनि पाय, जगती२२मुहूर्तकरिभुग्गिजाय॥
व्यत्यय करि दक्खिन२अयन एस, निस १ दिवस २ चलत जानहुनरेस

योजन पृथ्वी को सूर्य एक घड़ी में छेकता (लांघता) फिरता है ॥ ३६ ॥ सूर्य जब मकर राशि में प्रवेश करता है तब उत्तर अयन लगता है और वेगों के अधीन हुआ जब मेष राशि को स्पर्श करता है उस दिन सूर्य विषुवत गति (मेष राशि में सूर्य प्रवेश करता है उस को विषुवत कहते हैं और इसी विषुवत को मध्य रेखा मानते हैं) को पाकर दिनरात्रि को बराबर करता है मकर राशि से लेकर मिथुन राशि तक दिन बढता है और कर्क राशि से लेकर धन राशि तक दक्षिण अयन है ॥ ३८ ॥ इस दक्षिण अयन में रात्रि बढती है ये अयन सूर्य के धीरे और शीघ्र चलने से होते हैं, जब सूर्य दिन में धीरे चलता है तब दिन बडे और रात्रि छोटी होती है और दिन में शीघ्र चलता है तब दिन छोटे और रात्रि बड़ी होती है ॥ ३९ ॥ उत्तर दिशा में उत्तर अयन पाकर दिन भर में अठारह मुहूर्त (छत्तीस घड़ी) बिताकर साढे तेरह नक्षत्र भोगकर अस्त होता है ॥ ४० ॥ इतने ही (साढे तेरह) नक्षत्र पाकर बारह मुहूर्त (चौबीस घड़ी) रात्रि भोगकर जाता है हे राजा रामसिंह दक्षिण अयन में रात्रि का इस प्रकार व्यतिक्रम (उलटा पलटी)

लघु झख[1]१२अबि[2]१घट[3]११वृख२कछु बिसाल,
मृग[4]१०मिथुन३इमहुसौं पृथु नृपाल ॥
धनु९कर्क४दीर्घतर जुगल२एह, अलि[5]८सिंह५दीर्घतम दुहुन२देह ॥
सम उभय२तुला७कन्न्या६प्रवीन,इनसौंहि निसा१दिन२वृद्ध१हीन२
रत्ति१सु उषा[6]२रु दिन१०व्युष्टि[7]१नाम,संध्या इन्ह अंतर सुपहु[8] राम ॥
इहिं समय लरत क्रव्यादं[9] आय,रबिसौं द्रुतं[10] दारुन रन रचाय ॥
मंदेह नाम रक्खसन अग्ग,दिय साप प्रजापति रिस उदग्ग ।४४॥
तुम नित्य मरहु जीवहु समस्त, इहिं साप तेहु लहि उदय अस्त॥
रबि सम्मुख आत खावन बिचारि,रवि रक्खस मंडत तुमुल[11] रारि४५
द्विजबर तँहँ अंजलि अर्घ[12]भूत, जुत ब्रह्म प्रणव[13] गायत्रि पूत[14] ॥
अर्पंत[15] निबाहि बिधि सब उदार,तिनकरि जरि रक्खस होत छार ॥
प्रथमाहुति जो सुचिहोत्र[16] देय,रबि बहुरि दिपत तिहिं करि अमेय ॥

क्रमके सूर्य को चलताहुआ जानो ॥ ४१ ॥ मीन[1] संक्रांति की रात्रि और मेष[2] के दिन बराबर होते हैं और थोड़ी सी वृद्धि होती है, कुंभ[3] की रात्रि और वृष के दिन समान होते हैं और कुछ अधिक वृद्धि पाते हैं मकर[4] की रात्रि और मिथुन के दिन बराबर के होकर अधिक बड़े होते हैं, धन संक्रांति की रात्रि और कर्क संक्रान्ति के दिन समान, और बहुत बड़ी वृद्धि करनेवाले होते हैं. वृश्चिक[5] की रात्रि और सिंह के दिन अत्यन्त वृद्धि करनेवाले और समान होते हैं ॥ ४२ ॥ तुला संक्रान्ति की रात्रि और कन्या संक्रांति के दिन बराबर होते हैं और इसी तुला और कन्या संक्रांति से रात्रि की वृद्धि और दिन की हानि होती है, रात्रि का नाम उषा[6] और दिन का नाम व्युष्टि[7] है, हे राजा[8] रामसिंह इन दोनों के बीच में सन्ध्या है ॥ ४३ ॥ इसी (सन्ध्या) समय में राक्षस[9] शीघ्र[10] आकर सूर्य से भयंकर युद्ध करके लड़ते हैं इन मन्देह नामक राक्षसों को आगे ब्रह्मा ने भयंकर श्राप दिया था ॥ ४४ ॥ कि तुम सब नित्य मरो और नित्य ही जीवो उसी श्राप को लेकर सूर्य के उदय और अस्त समय में सूर्य को खाने को आते हैं और सूर्य व राक्षस घोर[11] युद्ध करते हैं ॥ ४५ ॥ उस समय ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ब्रह्मस्वरूप ओंकार[13] मंत्र और पवित्र[14] गायत्री सहित अर्घ युक्त[12] विधि पूर्वक अञ्जली देते[15] हैं जिस से वे राक्षस भस्म होजाते हैं ॥ ४६ ॥ अग्निहोत्र[16] में प्रथम आहुति देते हैं उस से अपार महिमावाला सूर्य फिर प्रकाशमान होता है फिर मन्देह नामक

पुनि लहि रक्खस मंदेह देह,संध्या प्रति जुज्झत इम अछेह ॥४७॥
रबि बिष्णु प्रणव बाचक तदीय, यातैं संध्या बिधि यह गरीय ॥
सावित्री१वाचक१उभय२सत्थ, लहि अर्घ भानु होवत समत्थ ॥४८॥
यातैंहि चलत जे बेद ऐनें,ते संध्योपासन क्रम तजैं न ॥
रवि घातक व्है करि नहिं सुकर्म,धरनीस मुख्य इम यहहु धर्म ॥४९॥
इक१इक१मुहूर्त्त संध्या प्रमान,खिल अष्टाविंशति२८द्युनिस२थान ॥
पंद्रह१५निमेष काष्टाख्य१काल,जे तीस३०कला कहियत नृपाल ॥
जे तीस३०मुहूर्ताभिध१अनेहं,जे तीस३०अहोनिस इक्क१एह ।
रबि अर्द्ध उदय सन प्रात१काल,सुमुहूर्त तीन३परिमित नृपाल ॥५१॥
तिहिं अग्ग काल संगव२तितोहि,जिहिं तुल्य अग्गमध्यान्ह३जोहि
तस अग्ग कहत अपराह्ण४ताहि,इहिं अग्ग काल सायान्ह५आहि।५२।
दिन पंच५भाग ए सब समान,घटि बढि हु होत दु२अयन निदान
पंद्रह१५मुहूर्त विषुवत अनेहं,सरद१रु बसंत२उभयत्र एह ॥ ५३ ॥

राक्षस देह धारण करके सायंकाल को अपार युद्ध करते हैं ॥ ४७ ॥ सूर्य विष्णु का तेज और प्रणव विष्णु का वाचक है इस से सन्ध्या विधि से सूर्य बढता है. और गायत्री इन दोनों (सूर्य और विष्णु) का वाचक है इस कारण गायत्री का अर्घ लेकर सूर्य समर्थ होता है ॥ ४८ ॥ इसी कारण से जो वेद मार्ग में चलते हैं वे सन्ध्योपासन का कर्म नहीं छोडते और जो ये कर्म नहीं करते हैं वे सूर्य को मारनेवाले होते हैं इस कारण से हे राजा राम सिंह यह धर्म मुख्य है ॥ ४९ ॥ दिन रात्रि के तीस मुहुर्त (दो घडी का एक मुहूर्त होता है) होते हैं जिन में दो मुहूर्त तो दोनों सन्ध्या के और बाकी अट्ठाईस मुहूर्त का दिन रात होता है पन्द्रह बार नेत्र के पल मारने में जितना समय लगै उस को एक काष्टा कहते हैं. और तीस काष्टा को हे राजा एक कला कहते हैं ॥५०॥ इसी तीस कला के समय का नाम मुहूर्त कहते हैं इन तीस मुहूर्तों का एक दिन रात होता है आधा सूर्य उदय होने से लेकर तीन मुहूर्त तक प्रातःकाल माना जाता है ॥ ५१ ॥ इस के आगे तीन मुहूर्त का संगव नामक काल (समय) है इस के आगे तीन मुहूर्त का मध्यान्ह काल है मध्यान्ह के आगे अपरान्ह और अपरान्ह के आगे सायंकाल है ॥५२॥ दिन के ये पांचों भाग बराबर हैं परन्तु दोनों अयनों के कारण घटा बढी भी होजाती है मेष और तुला के सूर्य को विषुवत कहते हैं उस वसंत और शरद के समय में पन्द्रह

संबत्सरादि पंचक५बिबेक,जो कहिय सोहु जुग१बजत एक१ ॥
उत्तरकुरु सीमा शृंगवान,तस तीन३सिखर सुनियत सुजान ।५४
दक्खिन दिस दक्खिन१नाम जत्थ,उत्तरदिस उत्तर२नाम तत्थ
बिच दुहुन२स्टृंग जो बिषुव३नाम,सु सरद१बसंत२रबिभुक्ति धाम५५
जब उतरि अमा३०पड़िवा१लगंत,इक१क्रांति लहैं ''ा पुष्पवंत२ ॥
तबतैंहि लगत चउ४भेद मास,ते सौर१रु सावन२बिधि बिलास ।५६॥
पुनि चांद्र३तथा नाक्षत्र४च्यारि४,इकसत्थ प्रबर्तत संग धारि ॥
तबसौं इकहायन१अवधि पाय,ससिदिनसौं रबिदिन छ६घटि जाय ॥
इम निज निजमिति सर्न पंच५अब्द,जुग इक्क१ह हु संकेत सब्द ॥
जुगमाँहिं सट्ठि६०रबि मास जत्थ,सावन्नै इकसाठि६१मास तत्थ५८।
दुव२सट्ठि६२चांद्र पावत प्रकास,अरु सत्तसट्ठि६७नाक्षत्र मास ॥
बहुला३पूरब१पद जब दिनेस,राधा१६चतुर्थ४पद जो छपेस ॥५६॥
राधा१६चतुर्थ४पद दिवसराय,जो चंद्रकृत्तिका३प्रथम१पाय ॥

मुहूर्त का दिन होता है ॥ ५३ ॥ संवत्सर १ परिवत्सर २ इडावत्सर ३ अनुवत्सर ४ वत्सर ५ इन पांच वर्षों का जो विवेक कहा वही एक जुग कहलाता है. उत्तर की सीमा पर शृंगवान् नामक पर्वत है उस के तीन शृंग (शिखर) सुनते हैं ॥ ५४ ॥ उन में दक्षिण उत्तर के शृंग तो दक्षिण उत्तर के नामों से प्रसिद्ध हैं और वीच के शिखर का नाम "विषुव,, है सो शरद ऋतु और वसन्त ऋतु में सूर्य के भोगने का स्थान है ।. ५५ ॥ जब अमावस्या उतर कर एकम लगती है और सूर्य चन्द्रमा एक ही क्रांति लेते (सूर्य चन्द्रमा का संगम होना) है तब से ही चार प्रकार के मास लगते हैं वे सौर१ सावन २ चांद्र ३ नाक्षत्र ४ इन नामों से एक साथ ही लगते हैं जब से लेकर एक वर्ष पर्यंत चांद्र मास की गणना से सौर मास की गणना के छः दिन घटजाते हैं ॥ ५६ ॥ ।५७। इस प्रकार अपने अपने प्रमाणों से पांचों वर्षों का एक जुग होता है यह सांकेतिक शब्द है इस एक जुग में सौर मास के साठ महीने होते हैं वहां सावन मास के इकसठ मास होते हैं ।५८। इसी प्रकार चान्द्र मास के बासठ६२ महीने और नाक्षत्र मास से सड़सठ ६७ महीने होते हैं। जब सूर्य कृत्तिका नक्षत्र के प्रथम चरण पर जाता है तब चन्द्रमा विशाखा नक्षत्र के चौथे चरण पर जाता है ॥ ५९ ॥ और जब सूर्य विशाखा के चौथे चरण पर जाता है तब चन्द्रमा कृत्तिका के प्रथम पाये [चरण] पर जाता है यह दोनों " विषुव ,, नामक समय है

तो दुव२हि महाविषुवाख्य काल,जँहँ दत्त होत अक्षय नृपाल ॥६०॥
माघ१रु तपस्य२मधु३राध४ज्येष्ठ,५अरु सुचि६ए उत्तर१अयन श्रेष्ठ
सावन१रु भद्द२इस३उज्ज४मग्ग५,रु सहस्य६इते दक्खिन२उदग्ग ॥
वरन्यौं गिरि लोकालोक नाम,सो लोकपाल चउ४केर धाम ॥
जँहँ उभय२सुदामा१साख्यवान२कर्द्दम प्रजेसके सुत सुजान ।६२
अपर सु हिरण्यरोमा३तृतीय३,तिम केतुमान४जानहु तुरीय४॥
या गिरिको उत्तरसृंग जोहि,मुनिवर अगस्तिको थान सोहि ।६३
तासौं अजबीथी अवधि प्रांत,कहियत पितृयान१सु अवनिकांत ॥
अरु नागबीथिकासौं प्रमान,इत सप्त७ऋषिन लग देवयान२।६४।
तीन३हि भचक्रके रहन थान,उत्तर ऐरावत१सौंभिधान ॥
मध्य सु जारद्गव२नामधेय,वैश्वानर३दक्खिन दिस गणेय ॥६५॥
इक१इक१प्रतिबीथी तीन३तीन३,बीथी प्रति तारा त्रय३प्रवीन ॥
तँहँ अश्विनी१रु भरनी२तथाहि,बहुला३यह बीथीनाग१आहि ।६६।
ब्राह्मी४सुख तारा त्रितय३पाय,गजबीथी२नामक पथ कहाय ॥
उडु तीन३पुनर्बसु७सो नरेस,ऐरावती३सु बीथी बिसेस ॥ ६७ ॥
ऐरावत१मैं त्रय३बीथिकाहि,सोहत उत्तर१दिस ए३सदाहि ॥
नच्छत्र मघा१०सन तीन३तीन,ज्येष्ठा१८लग जारद्गव२अधीन॥६८॥

जिसमें दियाहुआ हे राजारामसिंह! अक्षय होता है ॥६०॥ १ फागण २ चैत्र ३ वैशाख ४ आषाढ ५ आश्विन ६ कार्ती ७ मृगशिर ८ पौष ॥ ६१ ॥ ९ नीचेलिखे चारों लोकपालों का धाम है ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ हे राजा अगस्त्य के स्थान से लेकर अजवीथी तक जो प्रदेश है उसको पित्रीश्वरों का मार्ग कहते हैं और नागवीथी से लेकर सप्तऋषियों तक देवताओं का मार्ग है ॥ ६४ ॥ सत्ताईस नक्षत्रों के रहने के तीन स्थान हैं, उत्तर में ऐरावत नामक, मध्य में जरद्गव नामक और दक्षिण में वैश्वानर नामक जानो ॥ ६५ ॥ इनप्रत्येक में तीन तीन वीथी (गली) हैं और प्रत्येक वीथी में तीन तीन नक्षत्र हैं जिन में अश्विनी भरणी और कृत्तिका ये नागवीथी में हैं ॥ ६६ ॥ रोहिणी आदि तीन नक्षत्रों को पाकर गजवीथी कहाती है और हे राजा पुनर्वसु को आदि लेकर तीन नक्षत्रों की ऐरावत वीथी है ॥ ६७ ॥ उत्तरदिशा में ऐरावत में यही तीन वीथी सदा शोभित हैं और मघासे लेकर ज्येष्टा तक तीन तीन नक्षत्रों की

तिनमाँहिं आर्षभी१बीथिका रु,क्रमतैं गोबीथी२अपरं चारु ॥
जारङ्गवी३सु तीजी३प्रमानि,जारङ्गव२मैं ए३लेहु जानि ॥ ६९ ॥
मूल१९हिसों त्रय३त्रय३पौष्ण२७अंत,बैश्वानर३बीथी त्रय३बसंत॥
अजवीथी१मृगबीथी२ललाम३,बैश्वानरी३हु इम तिन्ह त्रि३नाम ।७०॥
त्रय३उत्तर१दाक्खिन२बिषुव३चाल,इन वीथिन करि जानहु किंवाल॥
ऋषि सप्तक७सौं ध्रुव लग प्रदेस,अतिमुख्य विष्णुपद१नाम एस।७१॥
जामैं ध्रुव२सबको मेढिरूप,ध्रुवमैं भचक्र ३सब गिनहु भूप॥
रु मुदिर४भचक्र६ अंतर रहंत,मुदिरनँ बिच वृष्टि५सु थिति लहंत ॥७२॥
सब अन्न६वृष्टि बिच रहत पुष्ट,अरु अन्नमाँहिं मख८७त्रि३जुगं जुष्ट॥
मखमैं सब देवन८पुष्टि माँहिं,निवसत सुभिच्छ९सुर पुष्टिमाँहिं ॥७३॥
गंगाहु गिरत ध्रुवकौं न्हवाय,पुनि सप्त७ऋषिनसिर परस पाय॥
ससिमंडल ह्वै परि मेरु सीस,इत आत अलकनंदा मँहीस[12] ॥७४॥
सत१००अर्ब्द[13] अग्ग कछु अधिक साथ,रक्खी जु जटा बिच भूतनाथ॥
पुनि निकसि तहाँसन धोय पाप,दिय सगरसुतन६००००गति अति दुराप[14]
जाको जल पितरन देत जोहि,करिदेत त्रि३हायनँ[15] तृप्ति सोहि॥
अति दूरहु नर गंगा उचारि,त्रि३जनम समुत्थँ[16] अघ देत जारि॥६७॥

वीथी जरङ्गव के अधीन है जो मध्य में है ॥ ६८ ॥ इसजारङ्गव में क्रम से आर्षभीवीथी गोवीथी और जारङ्गवी वीथी सुन्दर जानो ॥ ६९ ॥ मूल नक्षत्र से लेकर रेवती नक्षत्र के अन्त तक दक्षिण में वैश्वानरमें तीनवीथी वासकरती हैं जिनके अजवीथी मृगवीथी और वैश्वानरीवीथी ये सुन्दर तीन नाम हैं ।७०॥ उत्तरदक्षिण और मध्य की जो तीनों चाल हैं सो हे कृपाले रामसिंह इन्हीं वीथियों से जानो और सप्तऋषियों से लेकर ध्रुव तक का जो प्रदेश है उसका नाम विष्णुपद है ॥ ७१ ॥ आप अपनी कीलि पर फिरैं और अन्य उसके चारों ओर फिरैं उस कीलियालेको मेढि कहते हैं.६नक्षत्रगण ६ मेघनक्षत्रों में रहते हैं और मेघों में वृष्टि रहती है॥७२॥८ यज्ञ९तीन जुगोंमें सेवन योग्य१०है॥देवताओं की पुष्टि में सुभिक्ष [सुकाले श्रेष्ठ सम्वत्) रहता है ॥ ७३ ॥ हे राजे[12] वह गंगा यहां आकर अलकनन्दा के नाम से प्रसिद्ध हुई ॥ ७४॥ १३ वर्ष १४ दुर्लभ ॥ ७५ ॥१५ तीन वर्ष तक ॥३ जो मनुष्य बहुत दूर से भी गंगा का उच्चारण करता है उसके तीन जन्म के इकट्ठे हुए पापों को जला देती है ॥७५॥

यह तारापुंजहु विष्णुरूप,सिसुमार समाकृति सुनहु भूप ॥
ताकोहु कुंडलाकार कार्य[2],है नमित दक्षिणावर्त्त लाय ॥ ७७ ॥
मुख ढिग्गहि पुच्छ ध्रुव तास अग्ग,सु फिरावत जोइगनं[3] समग्ग॥
अरु ध्रुवहु फिरत सिसुमार छंदं[4],तस अनुगंत[5] तारागनन कंद ॥७८॥
ध्रुवकेहि ग्रह१अं[6]र२नच्छत्र३सर्ब,बंधे समीरँ[7] रज्जुनं सुपर्ब[8] ॥
आवह मुख मारुत जे अकास,सुनिये प्रभु सप्त७हि 'गन तास ।७९।
भू१मेघ२मध्य आवह१कहात,बांरिद २रवि३अंतर प्रवह२बात ॥
रबि३चन्द्र४बीच च दह१४रहंत.बिधुं४भगन५बीच संवह४बहंत ।८०
भगन५रु खिलं[12]ग्रह६लिच निवह५भाव,
रु'गरावह६ग्रह६ऋषिसप्त७।७जाँव[13] ॥
ऋषिसप्त७।७रु ध्रुव८परिवह७प्रमान,ए सप्त७पवन इम चाहुवान।
सिसुमारकोहु है हृदय जत्थ, तारांकृति[14] श्रीहरि[15]१रहत तत्थ ॥
तिनके आधारहि सु सिसुमार२,यांके[16] आधार ध्रुव३उदार ।८२।
ध्रुवके आधार दिनेसँ[17]४आहि[18],रवि धारि रह्यो जग[19]५विधि निबाहि।
जगको जल लै बसु[20]८मास काल,पुनि देत मास चउ४विच नृपाल

हे राजा रामसिंह यह तारों का समूह शिशुमार चक्र की आकृति में विष्णु का स्वरूप है जिसका शरीर कुंडल के आकार दक्षिणावर्त है ॥७७॥ उस गोलाकार शिशुमार के मुख के पास ही पूंछ के अग्रभाग पर ध्रुव है जो सब तारों को फिराता है औरशिशुमार के वंस में ध्रुव भी फिरता है जिसके साथ चलनेवाले तारागन और मेघ हैं ॥ ७८ ॥ ग्रह तारा और नक्षत्र पवन की रस्सियों से उत्तम गांठों के साथ ध्रुव के बन्धे हैं और आवह नामक पवन को आदि लेकर जो पवन आकाश में हैं उनके सातों ही स्थान हे स्वामी रामसिंह सुनो ॥ ७९ ॥ भूमि और मेघ के बीच में आवह नामक पवन है मेघ और सूर्य के बीच में प्रवह नामक पवन है सूर्य और चन्द्रमा के बीच में उद्वह नामक पवन, चंद्रमा और नक्षत्रों के बीच में सम्वह नामक पवन चलता है ॥ ८० ॥ नक्षत्र और बाकी के ग्रहों के बीच में निवह नामक पवन और ग्रह और जहांतक सप्तऋषि हैं उनके बीच में परावह नामक पवन है इसी प्रकार सप्तऋषि और ध्रुव के बीच में परिवह नामक पवन है. हे चहुवाण रामसिंह इस प्रकार ये सात पवन हैं ॥ ८१ ॥ १४ तारा की आकृति १५ विष्णु १६ इस शिशुमार के आधार ॥८२॥ १७ सूर्य १८ है १९ जगत् को २० आठ मास तक

रबिसौं सुनीर ससिमाँहिं जात,अभ्रनें बिच ससि सन एह आत॥
पवमान१हव्यबह२धूम३रूप, भाखे त्रि३धाहि जीमूत भूप ॥ ८४॥
ते मारुत प्रेरित तजत तोय, जिनकरि जगजीवन जुष्ट होय ॥
बिनु घन जो रबि छत बुंद पात, सुहि रबि नभगंगा जल गिरात
जो मानव सपरस करत जास,नरक सु न जाय यह बदत व्यास
बहुलादि बिसम उडु रबि फिरंत,बिनु घन दिन जलकन जे परंत
सोहू नभगंगा जल असेस,दिग्गज तिहिं डारत अवनि देस ॥
ए दिव्य न्हान दुव२पुण्य पूर,पहिलो यहँ सम उडु रहत सूर ॥८७॥
उत्तर पर काष्टा१तैं बिधान,दक्खिन पर काष्टा२लग प्रमान ॥
है मंडल इक सत अरु असीति१८०,रबि परम मार्ग यह अटनरीति ।
ध्रुव ऐंचत जब जुग१अक्ष२दाम,उत्तर१तब चढत कठोरधाम ॥
दुव२गुन जब ढीले देत दूर,उतरत तब दक्खिन२अयन सूर ॥८९॥

जगत् का पानी लेकर ॥८३॥ वह पानी सूर्य से चंद्रमा में और चंद्रमा से मेघों में आता है, हे राजा वह मेघ पवन अग्नि और धुएं से बनते हैं और इन्हीं के रूप से हैं ॥ ८४ ॥ वे मेघ पवन की प्रेरणा से पानी छोड़ते हैं जिस से जगत् जीवों को सेवन (धारण) करनेवाला होता है। सूर्य के होतेहुए विना बाद-ल बुन्दें पड़ें तो जानना चाहिये कि सूर्य आकाश गंगा से लेकर जल गिराता है ॥ ८५ ॥ उस आकाश गंगा के जल को जो मनुष्य स्पर्श करता है वह नरक में नहीं जाता यह बात "विष्णुपुराण,, में वेदव्यास कहता है। कृत्तिका को आदि लेकर विषम (एकीकी) गणनावाले नक्षत्रों पर सूर्य होवे तब विना बादल दिन में पानी की बून्दें गिरें ॥ ८६ ॥ वह भी सब नभगंगा का जल है जिस को भूमि पर दिशा के हाथी डालते हैं ये पुण्य के समूहवाले दोनों दिव्य स्नान हैं अर्थात् ऐसी वर्षा में न्हाना उत्तम है। इन में प्रथम कहा हुआ रोहिणी आर्द्रा आदि सम (दोकीकी) गणनावाले नक्षत्रों पर सूर्य होवे तब विना बादल बूंदें पड़ें जिस को सूर्य का गिराया हुआ आकाश गंगा का पानी जानो ॥ ८७ ॥ उत्तर दिशा से लेकर दक्षिण दिशा तक एक सो अस्सी मंडल हैं वे ही सूर्य के फिरने की रीति के परम मार्ग हैं ॥ ८८ ॥ ध्रुव जब सूर्य के रथ के जूंडे और अक्ष (पहिया रहने के काष्ट) की रस्सियों को खींचते हैं तब सूर्य उत्तर को चढता है और जब उपरोक्त दोनों रस्सियों को ढीली देता है तब सूर्य दक्षिण अयन में उतरता है ॥ ८९ ॥ सूर्य के घूमने

दिन१प्रति इक१ मंडलगति दिखात, त्रय३मास जात त्रय३बहुरि आत॥
अभ्यंतर उत्तर१मग्ग आहि, जो दक्खिन२बाहिर करत जाहि ।९०।
प्रतिमास१सूर्य१ढिग ऋषि१रु नाग२, जच्छ३रु गंधर्व४हु क्रम बिभाग
अच्छरि५अरु रक्खस६जे रहंत, सुनिये तिन्ह नामहु कवि कहंत॥
मधु४ मैं रवि धाता१मुनि जु श्रेय३, सुपुलस्त्य१रु बासुकि२काद्रवेय॥
रथकृत३तुंबुरु४भूतस्थला५हि, अरु हेति६तत्थ क्रब्याद आहि ।९२।
बैशाख२अर्य्यमा१गिनहु वीर, ऋषि पुलह१नाग तँहँ कत्थ नीर२॥
रथौजा३नारद४नाम एति, पुनि पुंजिकस्थला५तिम प्रहेति६ ।९३।
अरु ज्येष्ठ३मित्र३पुनि अत्रि१ज्यौंहि, तक्षक२रु रथस्वन३जच्छ त्यौंहि
हाहा५रु मेनका६नानधेय, सुनिये तँहँ रक्खस पौरुषेय६ ॥ ९४ ॥
आषाढ४गिनहु बरुन४रु बशिष्ठ१, रथचित्र२।३नाम अग्गैं द्विरनिष्ठ॥
हूहू४सहजन्या५रंभ६नाम, सावन५अब सुनिये सुपंहु राम ॥ ९५ ॥
रवि इंद्र५अंगिरा१मनिहु जत्थ, तिम एलापत्र२रु स्रोत३तत्थ ॥
बिश्वाबसु४प्रम्लोचा५बखानि, सरपाख्य६रात्रिचर लेहु जानि ॥
रविभद्र६विवस्वान६हि महीस, भृगु१मुनि रु संखपाल२सुअहीस।९६।
क्रम सन आपूरन३उग्रसेन४उम्लोचा५व्याघ्र६तथा धरेनं ॥ ९७ ॥

के ८० मंडल ऊपर बताये जिन में प्रतिदिन एक एक मंडल में जाता है एक अयन में तीन महीने जाता है और तीन महीनों में पीछा आता है इस प्रकार एक अयन के छः मास में १८० मंडल पूरे होते हैं और ये ही छः मास दूसरे अयन में लगते हैं तब १८० के दुगने ३६० दिन होते हैं। और भीतर का मार्ग उत्तर का और बाहिर का दक्षिण का है ॥ ९० ॥ एक एक महीना प्रति सूर्य के पास ऋषि, नाग, यक्ष, गन्धर्व, अप्सरा और राक्षस रहते हैं उन के वर्णने का क्रम सुनो, इन ऊपर बताये हुए सूर्य १ ऋषि २ सर्प ३ यक्ष ४ गन्धर्व ५ अप्सरा ६ और राक्षस ७सातों के नाम प्रत्येक मास में यथाक्रम से जानना चाहिये ॥ ९१ ॥ ४ चैत्र मास में ५ धाता नामक सूर्य ॥ ९२ ॥ ६ अर्यमा नामक सूर्य ॥ ९३ ॥ ७ज्येष्ठ मास में मित्र नामक सूर्य॥९४॥ ८ वरुण नामक सूर्य ९ हे श्रेष्ठ स्वामी रामसिंह ॥ ९५ ॥ १० श्रावण मास में इन्द्र नामक सूर्य ॥ ९६ ॥ ११भाद्रवे में विवस्वान् नामक सूर्य १२ हे भूपति ॥९७॥

इसें[१]७पूषा[२]७गोतम१बहुरि आहि,जो नाग धनंजय२कहत जाहि ॥
रु सुसेन३सुरुचि४गंधर्व जच्छ,अच्छरि पुनि जो तँहँ नटन अच्छ॥९८॥
सु घृताची५रक्खस नाम बात६,सुनिये अब कत्तिय[३]८जे सुहात ॥
पर्ज्जन्य[४]८ओ भरद्वाज१नाम,ऐरावत२सेनजिताख्य३नाम ॥ ९९ ॥
बिश्वाबसु४बिश्वाची५बहोरि,रक्खस हु सेनजित६लेहु जोरि ॥
मार्गसिर९अंसु[५]९कास्यप१सुदच्छ,नाग महापद्म२रु तार्क्ष्य३जच्छ १००
पुनि चित्रसेन४उर्बसि५प्रसिद्ध,अरु बिद्युत६राछस एहि इद्ध ॥
तिम पोस१०भग[६]१०रु क्रतु१अह पढेमि,कर्कोटक२त्यौं रु अरिष्टनेमि
ऊर्णायु४पूर्बचित्ती५सु गान,ज्यौं स्फुर्ज६नाम तहँ जातुधान ॥
माँघ[७]११सुत्वष्टा[८]११जमदग्नि१जानि,कंबल२तस जित३धृतराष्ट्र४मानि
अच्छरि तिलोत्तमा५नचत जत्थ,निकषासुत ब्रह्मापेत६तत्थ ॥
फग्गुन१२मैं दिनकर बिष्णु[९]१२नाम,मुनि बिश्वामित्र१हु अतुलधाम
अश्वतर२सत्यजित३क्रम्म बिधान,गंधर्ब सूर्यवर्चा४भिधान* ॥
रंभा५अरु यज्ञापेत६एहि,प्रतिमास तपन[१०] तोषक[११] कहेहि ॥ १०४ ॥
रबिकी नुति[१२] निज निज ऋषि१रचात,बलि नद्ध[१३] करत रथ नाग२व्रात[१४]
जच्छ[१५]३सु अभीषु[१६] संग्रह बनात,गंधर्ब४रिझावन अग्ग गात ॥१०५॥
अग्गैंहि नटत अच्छरि५असेस,क्रव्याद[१७]६चलत रथ पिट्ठि देस ॥
पुनि बालखिल्य[१८]छ६अयुत६००००प्रमान,ए करत सदा नुति सावधान
अधिकार यहै बिधि रबि१हिं दिन्न,तिम चंद्र२हिं ताराधीस[१९] किन्न

१ आश्विन में २ पूषा नामक सूर्य ॥९८॥ ३ कार्तिक में ४ पर्ज्जन्य नामक सूर्य ५ अंसु नामक सूर्य ॥ १०० ॥ ६ भग नामक सूर्य ॥ १०१ ॥ ७ माघ मास में ८ त्वष्टा नामक सूर्य ॥ १०२ ॥ ९ विष्णु नामक सूर्य ॥ १०३ ॥ १० सूर्य को ११ प्रसन्न करनेवाले ॥ १०४ ॥ ऋषि लोग तो अपने अपने सूर्य की १२ स्तुति करते हैं सर्पों के १३ समूह रथ को बांधते हैं यक्ष घोड़ों की १६ रस्सी (रास अथवा बाग) बनाते हैं गन्धर्व लोग प्रसन्न करने को आगे गाते हैं ॥ १०५ ॥ सब अप्सरायें आगे नाचती हैं और १७ राक्षस रथ के पीछे चलते हैं इसी प्रकार ब्रह्मा के पौत्र साठ हजार बालखिल्य नामक ऋषि सावधान होकर स्तुति किया करते हैं १९ तारापति

*विधान मिधान अन्त्यानुप्रासः

अरुपक्ख असित लगतहि उमाँहि, चउदसि१४लग पीवत अमर याँहि
पुनि करत अमा दिन पितर पान, याँके त्रिउचक्र रथ बर बिधान॥
कुँदाभ बहत दश१०हय ललाम, दुहुँ२ओर रहे दक्खिन रु बाम।१०८
रबि हयन जिमहि बिधुरा बहंत, इक१बेर जुतेही कल्प अंत॥
जलसौं इन तुरगन जन्म आँहि, बिचरत उडुबीथी क्रमनिबाहि १०९
राकौं लग लै पख आवदातं, बिधुकौं रबि इक१करसौं बढात॥
तेतीस सहँस३३०००सुर सत तिते३३००हि,
तेतीस३३बहुरि सँसि पिबत ए३६३३३हि॥११०॥
ससि जबहि कलाद्वय२खिल रहंत, जलबास प्रथम तद्दिन रहंत॥
प्रबिसत पुनि बीरुध ब्रातमाँहिं, बर्जित तब बीरुध छेद आहिं।१११।
जु अमादिन बीरुध छेदकार, सुहि लहत ब्रह्महत्या अपार॥
रबि किरन अमा अभिधान जोहि, बीरुध तजि ससि पुनि लहत सोहि
इम दिन सु अमावास्याऽभिधान, तब करत कला इक१पितर पान
सुर तृप्ति लहत इक१पख अनेह, इक१मात पितर गन लहत एह॥

॥ १०६ ॥ १ कृष्ण पक्ष २ प्रसन्न होकर ३देवता ४ चन्द्रमा को ॥ १०७ ॥ ५ अमावास्या के दिन ६ इस चन्द्रमा के रथ के श्रेष्ठ रचना से बनाये हुए तीन पहिये हैं. और मोगँरा के पुष्प की कांति जैसे सुन्दर दश घोड़े दहिने और बांये दोनों ओर बहते हैं ॥ १०८ ॥ ८ दोनों धुरों में बहते हुए सूर्य के घोड़ों के समान एक बेर के जुते हुए कल्प के अन्त तक जुते ही रहते हैं ९ है१० क्रम का निर्वाह करके उडुबीथी में फिरते हैं-॥१०९॥ शुक्ल पक्ष के प्रारंभ से लेकर पूर्णमासी तक चन्द्रमा को सूर्य एक किरण से बढाता है जिस को छत्तीस हजार तीन सौ तेतीस देवता पान करते हैं ॥ ११० ॥ चन्द्रमा की जब दो कला बाकी रहती हैं उस दिन जल में बास करता है फिर वृक्षों के समूह में रहता है उस दिन वृक्षों का काटना मना है ॥ १११ ॥ जो अमावास्या के दिन वृक्षों को काटता है वह ब्रह्महत्या को पाता है फिर वृक्षों को छोड़कर चन्द्रमा सूर्य की अमा नामक किरण को लेता है ॥ ११२ ॥ इस कारण से उस दिन का नाम अमावास्या है, उस दिन चंद्रमा की एक कला पितीश्वर पीते हैं देवता लोग पन्द्रह दिन और पित्रीश्वर एक महीना तक तृप्ति लेते हैं ॥ ११३ ॥

ते सौम्य१बर्हिषद२पितर ब्रात,पुनि अग्निष्वात्त३हु मोदपात ।
ससिकेर कला इक१खिल रहैंसु, बलि रवि बढात सितपक्खमैं सु॥
सिसुमारमाँहिं इम ससि२हु थप्पि,बुंध३हू विधि थप्पिय थान अप्पिँ
बुध रथके मारुत१बह्नि२जात,हय कपिल रंग अष्टक८सुहात।११५।
कबि४कै रथ बर केतन१बरूथ२,जुतअष्ठ८भूमिभव तुरग जूथ ॥
कुज५कै कांचन रथ अष्ठ८बाजि,भूजात पद्मरागाभ राजि ॥११६॥
गुरु६कै हु कनक रथ अष्ठ८बीति, राजत छबि पंडुर रुचिर रीति।
सनि७कै सुभ स्यंदन अरु तुरंग,आकास जात छबि संबल अंग ।११७।
सिंहीसुत८कै रथ धूसराभ,अष्ठ८हि तस घोटक भृंग आभ ॥
अष्ठ८हि हय आदिक९रथ रहंत, धुम्र धूम१लाख रस२रुचि बहंत॥
सबही ग्रह तारा भिन्नभास,बंधे ध्रुवकै गुन पवन पास ॥
सब उडुन रचिय सिसुमार थान,सन्न्यास तास सुनिये सुजान ।११९।
उत्तानपाद सुत ध्रुव१सनाम,उत्तर हनु२याको नृपति राम ॥
अरु यज्ञ२अधर हनु२धर्म३सीस३,नारायन४हिय४बिच अखिल ईस
आश्विन५।६दुव२पूरबपयन५।६माँहिं,

१समूह२वाकी३फिर४शुक्ल पक्ष में ॥११४॥ ५चंद्रमा को६ बुध को भी७देकर. बुध का रथ पवन और अग्नि से उत्पन्न हुआ है जिस में पीले रंग के आठ घोड़े जुते हैं॥११५॥ शुक्र का रथ श्रेष्ठ ध्वजा और बरूथ (रथ कवच, पराये शस्त्रों से बचने के लिये लोहे का पड़दा) के सहित भूमि से उत्पन्न आठ घोड़े जुते हैं और मंगल के सोने के रथ में भूमि से उपजे हुए माणक के रंग के आठ घोड़े हैं ॥ ११६ ॥ बृहस्पति के भी सोने के रथ में स्वेत रंग के सुन्दर आठ घोड़े शोभित हैं और शनैश्चर के शुभ रथ में आकाश से उत्पन्न अपने रंग के समान अर्थात् काले रंग के घोड़े हैं ॥ ११७ ॥ राहु का रथ धूसर रंग का है जिस में भ्रमरों के रंग जैसे आठ घोड़े जते हैं केतु के रथ में भी धुएं की और लाख के रस की शोभा को धारण करनेवाले आठ घोड़े हैं ॥ ११८ ॥ सभी ग्रह और नक्षत्र भिन्न दीखते हैं जो पवन की रस्सी से ध्रुव में बंधे हैं सब तारों को शिशुमार में रचे हैं उन के रहने के स्थान हे सुजान रामसिंह सुनो ।११९। हे राजा रामसिंह इस शिशुमार की उत्तर ठोडी तो उत्तानपाद का पुत्र ध्रुव है और दूसरी ठोडी (डाढी) यज्ञ है धर्म इस का मस्तक और हृदय में सम्पूर्ण के स्वामी विष्णु हैं ॥ १२० ॥ अश्विनीकुमार

दव२सक्थि७।८अर्यमा७बरुन८आँहिं
संबत्सर९मेहन९लहत थान, अरु मित्र१०तथा आश्रित अपानं ।१२१।
बालधि११महेंद्र११अरु अग्नि१२धारि,
कस्यप१३ध्रुव१४अस्त न होय च्यारि ४॥
इम ताराग्रहमय चक्र एह, बिरच्यो बिधि जगसर्जन अनेहँ ॥१२२॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ ग्रह१ तारा२नक्षत्र३गतिस्थानविभागादिवर्णनं द्वाविंशो२२मयूखः ॥ २२ ॥

प्रायोब्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा ॥

पज्झटिका

स्वायंभुव१हुव मनु पूर्व नाम, तिम इंद्र बिस्वभुक२नाम ताम ॥
सुर१याम नाम बारह१२सुभाय, रु मरीचि आदि ऋषि१सप्त७राय ।१।
मनुपुत्र१प्रियव्रत१नामधेय, उत्तानपाद२ए उभय श्रेय ॥
दजो२मनु स्वारोचिष २उदार, सुरराज बिपश्चित२त्रिदिवसार ॥ २॥
सुर२तुषित१परावत२द्वै२समाज, ऋषि२सप्त७सुनहु राजाऽधिराज॥
दत्तात्रि१ऊर्ज२त्यौं स्तंब३द्रोन४, निश्चर५रु ऋषभ६जगभद्र भोन ।३।
सप्तम७सु अर्वरीवान७श्रेष्ठ, मनुपुत्र२चैत्र१किंपुरुष२ज्येष्ठ ॥
मनु उत्तम३पुनि सुरपति सुसांति३, सुर३भेदपंच५तँहँ कमनंकांति ॥

चरण, अर्यमा और वरुण दोनों जंघा हैं संवत्सर लिङ्ग और गुदा के स्थानमें है ॥ १२१ ॥ पूंछ के स्थान पर इन्द्र, अग्नि, कश्यप और ध्रुव हैं. ये चारों कभी अस्त नहीं होते हैं, इस प्रकार ग्रह और तारोंमयी यह शिशुमार चक्र सृष्टि रचना के समय में ब्रह्मा ने रचा है ॥ १२२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायणके प्रथमराशि में ग्रह, तारा और नक्षत्रों की गति, स्थान और विभाग आदि के वर्णन का बाईसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २२ ॥

प्रथम स्वायंभुव नाम मनु, ऐसे ही विश्वभुक् नाम इन्द्र, याम नामक देवता, मरीचि आदि सप्त ऋषि और प्रियव्रत व उत्तानपाद नामक श्रेष्ठ दो पुत्र हुए । आगे इसी प्रकार मनु, इन्द्र, देवता, सप्त ऋषि और मनु पुत्रों के नाम हैं सो यथाक्रम से जान लेना चाहिये ॥ १ ।२ ॥ ८ हे राजाओं के स्वामी रामसिंह९, संसार के भवन का कल्याण करनेवाले ॥३॥ १०सुन्दर कांति वाले

सित्र१सत्य२प्रतर्द्दन३ओ सुधाम४,संबर्त्तो५ए दुव२छ६।१२संख्यग्राम
रु कहे वसिष्ठ सुत सप्त७जेहि,अधिकारी ऋषिपन केर एहि ॥५॥
अज१परसु दिव्य२सुखं मनु तनूज३,चौथा४मनु तामस४पुरायपूज।
।सबि४इंद्रदेव४गन चउ४सुजान,गन गन प्रति सत्ताबीस२७मान ।६।
ते सत्य१सुधी२हरि३अरु सुराप४,अब जानहु ऋषि४गन मति अमाप
ज्योतिर्धामा१पृथु२काव्य३चैत्र४,अनि५बरकु६पीवर७ए सुमैत्र ।७।
नर१ख्याति२सांतभय३जानुजंघ४,इत्यादिक मनुकै सुतन संघ४॥
पंचम७मनु रैवत७बिभु५सुरेस,बिबुध५नके चउ४गन तँहँ बिसेस ॥८॥
अमिताभ भूतरय२नामधेय,बैकुंठ३सुमेधस४ए गणेय ॥
प्रतिगनँचउदह१४संख्यप्रमान,ऋषि५सप्त७सुनहु नय बलनिधान९
पर२ऊर्ध्वबाहु१पर्ज्जन्य३ज्याँहि,तँहँ देवश्री४रु सुमेध५त्याँहि ॥
छट्ठो६हिरएयरोमा६मुनीस,सप्तम७सुबाहु७ए गिनहु ईस ॥ १० ॥
बलबंधु१सत्य२संभाव्य३नाम,या मनुके आत्मज धर्मधाम ॥
स्वारोचिषसौं मुनि एहु च्यारि४,हिय लेहु प्रियब्रत पुत्र धारि।११।
मनु चाक्षुस६रु मनोजव६सुरेस, बिबुध६नके पंच५हि गन सुबेस॥
भाव्य१रु पृथग्ज२साध्य३रुप्रभूत४,रु महानुभाव५पुनि पुरायपूत।१२।
गन गन प्रति ए सुर सत्त७सत्त७,मुनि सत्त७सुनहु अब अप्रमत्त ॥
बिरजा१रु सुमेधा२मधु३सुहिष्णु४,उत्तम५अतिनामा६चित्त जिष्णु॥
सप्तम७सु हविष्मानाख्य७नत्थ,पुरु१ऊरु२ आदि मनुसुत६समत्थ ॥
लग्गो अब सप्तम७विद्यमान,सो श्राद्धदेव७बिसुत सुजान ॥१४॥
आदित्य१तुषित२वसु३विश्व४रुद्र५,इत्यादि देव७है गुनसमुद्र ॥
इन्ह ईस पुरंदर७इंद्र नाम,जो अब ऋषि७सप्तक८सुनहु राम ॥१५।

१आदि २ पुत्र ३ देवताओं के चार गण हैं इन में प्रत्येक गण के साथ सत्ताईस सत्ताईस देवता हैं ॥ ६ ॥ ४ समूह ५ देवताओं के ॥ ७ ॥ ८ ॥ ६ नामों वाले ७ इन एक एक गण में चौदह चौदह की गिनती है ॥९॥८हे स्वामी रामसिंह! ९पुत्र १०देवताओंके । ११ । सावधान होकर १२हविष्मान नामवाला १३ वर्तमान॥१४॥१४ रामसिंह का विशेषण है १५ इन का स्वामी १६हे रामसिंह॥१५॥

जमदग्नि१अत्रि२कस्यप३बसिष्ठ४,गोतम५रु भरद्वाज६हु सुनिष्ठ[1]॥
अरु सप्तम७बिश्वामित्र७आँहिं,मनुके सुत७तीजे३राशिमाँहिं।१६।
पहिले१मनु हरि यज्ञावतार१,दूजैं २ तुषिता सुत अजित२फार[3]॥
सत्या सुत तीजैं३सत्य३नाम,हर्यासुत चोथैं४हरि४ललाम ॥ १७॥
पंचम५मन्वंतरमैं प्रमेय[4],संभूति भूत संभूत५श्रेय ॥
छट्ठे६मनु हरि बैकुंठ६देव,औरस बैकुंठा पुत्र एव ॥ १८ ॥
सप्तम७मनु अंतर अदितिजात[6],बामन७वतार हुव बिष्णु ख्यात ।
कपिलादि१रूपकृत१मैं करंत,रामादि२रूप त्रेता२धरंत ॥ १९ ॥
व्यासादि३रूप द्वापर३बहोरि, कल्की४कलि४उतरत लेहु जोरि॥
सप्तम७मनु अंतर यह लहंत,हुव बेद बिभार्जक तिन्ह कहंत ।२०।
पहिले१द्वापर बिच बिधि[9]१हि व्यास,दूजे२हु माँहिं द्रुहिन[10]२हि सुभास
कबि[11]३तीजैं३चोथैं४गुरु[12]४कहाय,पंचम५सबिता[13]५व्यासत्व[14] पाय।२१।॥
छट्ठैं६सु मृत्यु[15]६सप्तम७सुरेस[16],अष्टम८बसिष्ठ८मुनि व्यास एस ॥
सारस्वत९द्वापर नवन९माहिं,अरु दसम१०त्रिधामा[17]१०व्यास आँहिं॥
एकादस११कृत्तिसिरा११सुजान,द्वादस१२भारद्वाजाऽभिधान ,॥

१श्रेष्ठनिष्ठावाले२हैं।१६। ऊपर कहे हुए प्रत्येक मनु में एक एक अवतार विष्णु का हुआ बताते हैं पहिले मनु में यज्ञावतार,दूसरे मनुमें तुषिता के पुत्र नहीं जीतने में आवे ऐसे तुषित नामक देवताओं का समूह,तीसरे मनु में सत्या के पुत्र सत्यनारायण चौथे मनु में हर्या के सुंदर पुत्र हरि ॥ १७ ॥ पांचवें मनु में प्रमाण रूप संभूति से उत्पन्न हुए हिरण्यगर्भ, छठे मनु में वैकुंठा के औरस पुत्र वैकुंठ।१८ सातवें मनु में अदिति से उत्पन्न वामन अवतार विष्णु प्रसिद्ध हुए सत्ययुग में कपिलदेव आदि, त्रेतायुग में रामचन्द्र आदि रूप धारण करते हैं ॥ १९ ॥ द्वापर में वेदव्यास आदि और कलियुग के अंत में कल्कि अवतार होवेगा सो भी इन में जोड़ (मिला) लो. सातवें मनु के समय में जो वेद का विभाग करनेवाले हुए उनको कहते हैं ॥ २० ॥ इस वर्तमान (वैवस्वत) मनु के समय में सत्ताईस चौकड़ी (चार युग की एक चौकड़ी के हिसाब से) बीत चुकी और यह अठाईसवीं चौकड़ी है जिस के द्वापर युगों में जो जो वेदव्यास हुए उनके नाम क्रमशः मूलमें स्पष्ट हैं।९ब्रह्मा१०ब्रह्मा११शुक्राचार्य१२बृहस्पति१३सूर्यने१४व्यासपन पाया१५यमराज१६इन्द्र१७शिव१८भारद्वाजनामक

यौं अंतरिच्छ१३बर्चस्व१४व्यास,अग्गैं त्र्यारुणि१५नाम आसं २३
रु धनंजय१६रु कृतंजय१७तथाहि,अष्टादस१८व्यास ऋताच्छ१८आहि
रु भरद्वाज१९रु गोतम२०मुनीस,उत्तम२१रुबेन२२क्रमसन अधीस
तृनबिंदु२३बहुरि बल्मीकि२४नाम,
मुनि सक्ति२५परासर२६पुनि ललाम ॥
इन्ह अग्गैं जातूकर्ण२७व्यास,बेदन विभाग किय भाँति विलास।२५।
अष्टावीसम२८द्वापर२८उतार,द्वैपायन२८हुव व्यासत्व धार ॥
इक बेदकेर करि पंच५भाग, छात्रन पढाय दिय रक्खि राग ॥२६॥
ऋक१बेद पढायउ पैल१अत्थ,यजु२बैसंपायन२कौं समत्थ ॥
मुनि जैमिनि३कें हित साम३सर्ब,
अरु मुनि सुमंतु४हित दिय अथर्ब४ ॥ २७ ॥
पंचम५इतिहास पुरान५नाम,सो पढिय लोमहरखन५ललाम ॥
जिहिं सूत५महामुनि बाढ बुद्धि,श्रुति पंचम५पढि किय सबन सुद्धि
दुव२छात्रन हित ऋक१पैल२दीन,ते इंद्रप्रमति१बाष्कल२प्रबीन ॥
मुनि इंद्रप्रमति १कै सुत मुनीस,मंडूक२नाम हुव अवनिईस ॥२९॥
ऋकसंहिता सु दिय जनकें ताहि,शाकल्य३पढ्यो यासौं उमाहि ॥
शाकल्य पढाये पुनि छ६छात्र,
मुद्गल४।१।रु बात्स्य।५।२गोमुख६।३सुपात्र ॥ ३० ॥
शालीय७।४रु शैशिर८।५पठन सार,अरुशाकरूणि९।६एखट६उदार
कियशाकरूणि९६त्रयसंहिता३रु,चोथो४निरुक्त४४तिहिं रचिय चारु

१ हुए २ अरु ३ हे स्वामी रामसिंह४सुन्दर५बुद्धि बल से इस अठाईसवें युग में द्वैपायन मुनि व्यासपन को धारण करनेवाले हुए जिन्होंने एक वेद के पांच भाग करके प्रीति सहित अपने शिष्यों को पढा दिये ॥ २६ ॥ ६ पैल नामक शिष्य को ७ लोमहर्षण नामक सूत ने ८ मनोहर ९ पांचवां वेद ॥ २८ ॥ १०पैल ने दो शिष्यों को ऋग्वेद पढाया ११ हे भूपति रामसिंह ॥२९॥ उस मंडूक को उस के पिता इन्द्रप्रमति ने ऋग्वेद की संहिता दी, उस मंडूक से शाकल्य पढा और शाकल्य ने छः शिष्यों को पढाया जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं इन में शाकरूणि ने तीन संहिता और चौथा सुन्दर निरुक्त रचा।३०-३१॥

कालायन१०।१गार्ग्य११।२कथाजवाख्य१२।३,
संहितिकों३इन३करि त्रय३हि साख्य ॥
ए१२इंद्रप्रमति१साखाबिभेद,है मुख्य[2] बिहित ऋक१नाम बेद । ३२ ।
तिमशाकरूणि९।६जो किय निरुक्त,
जिहिं च्यारि४छात्र[3] पटु[4] पढिय जुक्त ॥
क्रौंच१रु बैतालिक२त्यों बलाक३,चौथो४सु महामति४सत्यबाक ३३
बाष्कल१हु रचे ऋक१भेद च्यारि४,सिखये ति च्यारि४छात्रन सुधारि
हुव अष्ठ८भेद इनसों हु फेरि, तिनमाँहिं मुख्य कहियत निबेरि[5]।३४।
जँहँ याज्ञवल्क्य१अरु बौध्य२जानि,माठर३रु पराशर४मुख्य मानि
बाष्कलि२साखा ऋक[6]१नाम बेद,इत्यादिक तँहँद्वादस१२प्रभेद।३५।
साखा तेईस२३रु मूल दोय२,रु निरुक्त च्यारि४ऋक१मुख्य होय
बैसंपायन२यँजु२पढि मुनीस,बिस्तारिय साखा सप्तवीस२७॥३६॥
हुव याज्ञवल्क्य१तस मुख्य छात्र,सततहि गुरु सासन रत सुपात्र ।
मिलि मुनिन कबहु किय समस बात, जु न मेरु[9] चलहु सुहि ब्रह्मघात ।
तँहँ सर्ब जुरे मत एक१धारि बैसंपायन न सके पधारि ॥
तदनंतर[10] जावत कछुक काल,पयतल[11] दबि जामिज[12] मरिय बाल।३८।
तब सोचि कहिय सिस्यन समच्छ[13],ब्रत सब हत्यापह[14] करहु बच्छ[15]॥
तँहँ याज्ञवल्क्य कहि मृदु उचारि,इक मैंहु सकौं हत्या निवारि॥३९॥

---

१ संहिता २ मुख्य रचना ॥ ३२ ॥ ३ शिष्यों ने ४ चतुराई से ॥ ३३ ॥ ५ निबेड़ा (निर्धार करके) ॥ ३४ ॥ ६ ऋग्वेद में ॥ इन को आदि लेकर बाष्कलि की शाखा के बारह भेद हुए ॥ ३५ ॥ इस प्रकार ऋग्वेद में तेईस शाखा दो मूल और चार निरुक्त ये मुख्य भेद हुए और वैशम्पायन ने यजुर्वेद पढ कर सत्ताईस शाखा फैलाई ॥ ३६ ॥ वैशंपायन के मुख्य शिष्य याज्ञवल्क्य हुआ जो सुपात्र निरन्तर गुरु की आज्ञा में रहा ९ जो सुमेरु पर्वत पर (ऋषि समाज में) नहीं चलै वह ब्रह्मघाती होवेगा ॥ ३७ ॥ १० जिस पीछे ११ पग नीचे दब कर १२ बहिन का बेटा (भाणेज) ॥ ३८ ॥ १३ समच्छ (रूबरू) १४ हत्या मेटने का १५ हे बच्चाओ ॥ ३९ ॥

---

*कधारि पधारि अन्त्यानुप्रास

क्यौं देहु सबन श्रम ब्रत कराय, यह सुनत कह्यो गुरु कोप लाय ॥
खल उगालि देहु मदधीत सर्ब, अपमानत बिप्रन गाढ गर्ब ॥ ४० ॥
यह सुनत याज्ञबल्क्यहु प्रबीन, यजु निज अधीतैं सब छड्डिदीनैं ॥
तैं रुधिरलिप्त छर्दित उम्हार्य, खरकोन होय गय इतर खाय ।४१।
ते तैत्तिरीय१साखा प्रपन्न, अरु याज्ञबल्क्य किय रबि प्रसन्न ॥
हत्यार्पह ब्रत जिन्ह चरिय ताम, ते सब हुव चरकाध्वर्यु२नाम ।४२।
यजु याज्ञबल्क्य रबिसौं अधीत, है बाजि पढायउ रबि सुप्रीत ॥
पढि यौं यजु२सुद्ध अयातयाम, बहुछात्र पढाये आय धाम ॥ ४३॥
ते दस१०रु पंच५।१५वाजी३कहात, यजु२साखा हुव इत्यादि ख्यात
" मिनि३हु साम३किय दुव२प्रकार, इक१सुत सुमंतु१हित दिय उदार
सुन्वान२नाम नोंती द्वितीय२, दिय ताहि भाग दूजो२गरीय ॥
सुन्वानकै हु सुत हुव सुकर्म३, पितु ताहि पढाविय धन्य धर्म । ४५।
रु सुकर्म३संहिता किय हजार, दुव२छात्र पढाये दुरितहार ॥
तँहँ इक१कौशल्य हिरण्यनाभ४१पौष्यंजि५२अपर२तिम अतुलआभ
इनके हु छात्र सत पंच५००पंच५००, बिख्यात भये पढि ते अबंच॥

१मुझसे पढा हुआ२बड़े गर्व से ब्राह्मणों का अपमान करता है ।४०। ३अपना पढा हुआ यजुर्वेद था जिस को ४ वान्त कर (उगल) दिया ५ उन रुधिर से लिपे हुए उगले मंत्रों को ६ उत्साह के साथ दूसरे मुनि लोग तीतर (पक्षि विशेष) होकर खागये ॥ ४१ ॥ इसी कारण से वे मंत्र तैत्तिरीय शाखा युक्त (तैत्तिरीय शाखा के नामवाले) हुए और उधर याज्ञवल्क्य ने सूर्य को प्रसन्न किया और गुरु की हत्या मिटाने के व्रत का जिन शिष्यों ने आचरण किया उन का नाम चरकाध्वर्यु हुआ ।४२। याज्ञवल्क्य ने सूर्य की तपस्या की तब सूर्य ने घोड़े का स्वरूप धारण करके याज्ञवल्क्य से वर मांगने को कहा तब उसने मांगा कि यजुर्वेद के जो मंत्र मेरे गुरु नहीं जानते हैं वे मुझे पढाइये इस पर सूर्य ने घोड़े के स्वरूप से ही 'अयातयाम, नामक यजुर्वेद पढाया फिर याज्ञवल्क्य ने अपने घर पर आकर बहुत शिष्यों को पढाया ॥ ४३ ॥ यजुर्वेद की वे पन्द्रह शाखा वाजि (घोड़े) के नाम से प्रसिद्ध हैं, जैमिनि ने भी साम वेद के दो भेद किये ॥ ४४ ॥ १२ पोते को १३ भारी ।४५। १४ सुकर्म ने हजार संहिता बनाई १५ पाप मिटानेवाली ॥ ४६ ॥ १६ नहीं ठगनेवाले

पहिले१उदीच्य सामग५००कहात,
अरु प्राच्य सामग५००सु अपर२ब्रात[2] ॥ ४७ ॥
पौष्यंजि छात्रगनमैं प्रधान,सोमाक्षि१बहुरि कुप्रिमि२सुजान
रु कुसीदी३लांगलि४नामधेय,ए बिदित भये मुनि हे अजेय॥४८॥
हैहिरणयनाभके इक१छात्र,चउबीस२४संहिता किय सुपात्र ॥
अब मुनि सुमंतु४सिख्यो अथर्व,४सु कबंध१पढ्यो तस छात्र सर्ब।
तासौं द्विरभेद दुव२छात्र तास,पढि दर्श२।१पथ्य३।२आचार्य आस॥
किय दर्श संहिता चउ४बिनीत, मोदादि मुनिन ते किय अधीत ॥५०॥
ते मोद३।१ब्रह्मबल४।२पिप्पलाद५।३।
सौल्कायनि६।४ए. चउ४अप्रमाद ॥
तिमपथ्य२संहिता रचिय तीन,३पढि लिय ति तीन३छात्रन प्रबीन
जाजलि३।१सौनक४।२कुमुदादि५।३जानि,
सोनक४।२हु करे दुव भेद तानि ॥
बभ्रु५।१ हिं इक दीनी पुराय प्रीति,अरु अपर२सैंधवायन५।२अधीति॥
किय सैंधवायनहु खट६बिभेद,बिथरयो अथर्ब ४तिन्ह नाम बेद॥
नक्षत्रकल्प१बलि बेदकल्प२,अरु संहितादि कल्प३हु अनल्प ॥५३॥
आंगिरस४सांतिकल्प५हु उदार,आथर्वन४कहियत ए प्रकार ॥
है प्रथमकल्प१उहुपूजनादि१,दूजो२बैतानिक ब्रह्मबादि२ ॥ ५४ ॥
तीजो३सुमंत्रबिनियोग रूप३,अभिचारकर्म४चोथो४अनूप ॥
पंचम५गजादि धृति१८सांतिकर्म,सामान्य६षष्ठ६तँहँ हे सुधर्म।५५

१पहिलेकेपांचसौ शिष्य उत्तर साम वेद को गानेवाले और दूसरे पांचसौ शिष्यो का समूहपूर्व साम वेद गानेवाले कहाते हैं॥४७॥पौष्यंजि नामक शिष्य के गण में हे अजेय रामसिंह, सोमाक्षि, कुप्रिमि, कुसीदी और लांगलि नामोंवाले प्रसिद्ध हुए ॥ ४८ ॥ ३ अरु ४ एक शिष्य ने ५ सुमन्तु ने अथर्ववेद को सीखा उस से उस का कवन्ध नामक शिष्य पढा ॥ ४९ ॥६ आचार्य हुए ७पढे ॥५०॥ ८प्रमाद रहित ९ ते (वे) १० निपुण तीन शिष्यों ने॥५१॥११दूसरी १२ पढा ५२ ॥१३पुनि१४बडा ॥ ५३ ॥ १५ अथर्ववेद के१६नक्षत्र १७मंत्रों की योजना

पंचम५सु लोमहरखन५मुनीस,इतिहास पुरानक५पढिय ईस ॥
आख्यान१उपाख्यान२न उपेतं[1], सो कल्पसुद्धि३गाथो[2]४समेत ।५६।
तँहँ प्रथम ब्राह्मय१नामक पुरान,ब्रह्मा मरीचि संबादवान ॥
सब पुव्व रच्यो जो व्यासदेव,दस सहँस१००००अनुष्टुपप्रमितं[3] एव ॥
पुनि पाँद्मय[4]२सु पंचावन हजार५५०००,जँहँ कथित पुरट[5] पंकजप्रकार
तेवीस सहँस२३०००बैष्णाँव[6]३तृतीय,अबकेहि कल्प पर गुनँ[7] गरीय ॥
पुनि शैर्व[8]४वायवीय४हु कहात,बरनिय शिव महिमा जत्थ बात ॥
सुहि श्वेतकल्प वृत्तांत जुक्त,इहिं मॉन[9] सहँस चउवीस२४०००उक्त ॥
सारस्वत कल्प उदंतं[10] सार,पंचम५सु भागवतं[11] धृति१८हजार१८०००
अतिकृति२५हजार२५०००पुनि नारदीय६,
जँहँ कहिय वृहत्कल्पहि महीय ॥ ६० ॥
बरनिय चउ४पच्छिनं[12] जँहँ बिधान,मार्कंडेय७ सु नवसहँस९०००मॉन[13] ।
ईसानकल्पको लै उदंत, बरन्यौं बसिष्टसौं अग्गिमंत[14] ॥ ६१ ॥
नृपति सु पुरान आग्नेयं[15]८नाम,सोलह हजार१६०००मितधर्म धाम ॥
रु अघोरकल्पकी बत्त आनि,रबिमाहिमा१भावी२जुत बखानि ।६२।
हंसासनं[16] मनुसौं कहिय जाहि,सुभविष्यं[17]९चउदहसहँस१४०००आहि
अरु रीतिरथांतरकल्प लाय,सावर्णिहिं नारद दिय सुनाय ॥६३॥
महिमा वराह१बिधि२कष्ण३कोहि,धृति१८सहँस१०००ब्रह्मवैवर्त्त१०सोहि
जँहँ ईस अग्निमय लिंगधारि, आग्नेयकल्प बार्त्ता विचारि ।६४।
चउ४वर्ग विविध बरने ललाम,ग्यारह११सहँस११०००सु लैंग्यनामं[18] ।
महिमा वराहको लै महंत,अवनीप्रति आक्खिय हरि उदंत ।६५।
वाराह१२नाम पुराय सु पुरान,चउवीससहँस२४०००नृप चाहुवान
तत्पुरुषकल्प अधिकार सत्थ,उत्तममाहेश्वर धर्म जत्थ ॥ ६६ ॥

---

१ सहित २ कथा ३ प्रमाण ४ पद्मपुराण ५ स्वर्ण कमल ६ विष्णुपुराण ७ गुणों में वडा ८ शिवपुराण जिस को वायुपुराण भी कहते हैं ९ प्रमाण १०वृत्तान्त का११भागवत१२चार पक्षियों ने१३प्रमाण१४ अग्निमंथ ने१५अग्नि पुराण १६ ब्रह्मा १७ भविष्यपुराण १८ लिंगपुराण.

सो स्कांद१३कह्यो स्वामी कुमार,
इत सत१००जुत एकासी हजार८११००॥
सिवकल्प रक्खि अधिकृत अभंग, श्रीबामन महिमामय प्रसंग ।६७।
बरन्यौं बिरंचि जो सुभ बिचार, बामन१४पुरान सो दसहजार१००००
रहि लोक रसातल कूर्मराज, श्रोता लहि इंद्र रु पुनि समाज ॥६८॥
बरनिय जँहँ लक्ष्मीकल्प बेर, प्रस्तावहु इंद्रद्युम्नकेर ॥
चउ४बर्ग बिहित महिमा बिचार,
सु पुरान कौर्म१५सत्रहहजार१७००० ॥ ६९ ॥
अरु सात७कल्प बार्त्ता उपेत, श्रीनारसिंह महिमा समेत ॥
मनुसौं कह्यो जु मत्स्यावतार,
सो मात्स्य१६नाम सकरि१४हजार१४००० ॥ ७० ॥
जँहँ गरुडकल्प वृत्तांत जुक्त, अच्युत खगेसं प्रतिबिहित उक्त ॥
मंजु सुपुरान गारुड१७महीस, अभिमित सहस्स एगोणाईस१९००० ।
अरु जँहँ भविष्यकल्पन उदंत, सुभ ब्रह्म अंड महिमा लसंत ॥
बरन्यौं बिधि सो ब्रह्मांड१८नाम,
बारह हजार दुव२सत१२२००ललाम ॥ ७२ ॥
अट्ठारह१८ए अघहर पुरान, श्रीव्यास कहे क्रम सन सुजान ॥
इनमाँहिं सर्ग१प्रतिसर्ग२आँहि, बंस३रु मन्वंतर४बलि निबाहि ।७३।
बंसानुबंस चरितन५उपेत, हुव पुराय प्रकट जग भद्रहेत ॥
इतिहासमहाभारत१९बहोरि, जो व्यास रच्यो पुनि प्रीति जोरि ।७४।
हरिबंस सहित इक लक्ख१०००००मेयं,
सब ए१९मिलि पंचम५बेद श्रेय ॥
यनको प्रमान नृप लक्ख३तीन,
पुनि नवति९०सहँस सतत्रय३९०३००प्रबीन ॥ ७५ ॥
श्रीव्यास छात्र[12] मुनिराज सूत, यह पढिय लोमहर्षण५प्रभूत[13]॥

---

१ ब्रह्माने२नृसिंह की३विष्णु ने४गरुड से५प्रमाण६पापों का नाश करनेवाले७ हैं. ८सहित९संसार के कल्याण के लिये१०प्रमाण११हे प्रवीण रामसिंह १२शिष्य १३ज्ञान और ऐश्वर्य से सम्पन्न(यह मुनिराजलोमहर्षण नामक सूतका विशेषण है

खट छात्र सूत सन पढिय याहि, तिन्ह मुनिन नाम सुनिये उमाहि ७६
इक१सुमति१रु दूजो२अग्गिबर्ष२, मित्रयु३रु सांसपायन४सहर्ष ॥
अकृतब्रण५पुनि सावर्णि६नाम, इन्ह दिय छ६संहिता करि ललाम७७
पुनि सूत बिरचि इनको समास३, किय अपरसंहिता त्रय३प्रकास॥
गत द्वापरके उतरत अनेह, इम हुव साखा गन भिन्न एह ॥ ७८ ॥

इतिश्रीबंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ बर्त्तमानबाराहकल्पाऽतीतेन्द्र१मन्वन्तराऽऽद्युद्देशनबिद्यमानबैबस्वत७यातमहायुगादिमानप्रतिद्वापरबेदबिभाजकब्यासबिबेचनसन्निहितगतद्वापराऽवसानाऽऽविर्भूतश्रीद्वैपायनावतारपञ्चधा५बेदबिभजनशिष्यप्रशिष्यस्वाध्यायसंज्ञाऽनुसारशाखा१प्रतिशाखा२ऽऽदिप्रसारणं त्रयोविंशो२३मयूखः ॥ २३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा॥

दोहा

इम रवि सुत सप्तम७लग्यो, मनु बैवस्वत७नाम ॥
इंद्र पुरंदर७ तेहि अब, बिद्यमान नृप राम ॥ १ ॥
गये महाजुग इनहुकों, बरतत सत्तावीस२७ ॥
तिन ऊपर इक१कृत१गयो, इक१त्रेता२अवनीस ॥ २ ॥

---

१ सुन्दर २ फिर लोमहर्षण नामक सूत ने ३ संक्षेप से ४ दूसरी तीन संहिता ५ समय में ६ वेद और पुराणों की जुदी जुदी शाखा हुई ॥ ७८ ॥

श्रीवंशभास्करमहाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में वर्तमान वाराहकल्प में व्यतीत इन्द्र मन्वन्तर आदि का कथन और वर्तमान वैवस्वत मनु के गये हुए महायुगादि का प्रमाण और प्रत्येक द्वापर युग में वेद के विभाग करनेवाले व्यास का विवेचन और समीप में गये हुए द्वापर युग के अंत में उत्पन्न श्री द्वैपायन अवतार का पांच प्रकार से वेद का बिभाग करके शिष्य प्रशिष्यों को वेद पढाना और उन के नामों के साथ शाखा प्रतिशाखा आदि के फैलने का तेईसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २३ ॥

७ वर्तमान ८ हे राजा रामसिंह ९ सतयुग १० हे राजा.

तीजे१द्वापर चरनके,उतरत संध्या अंस ॥
दैत्य दोय२बहुतहि बढे३बलि अधीसके बंस ॥ ३ ॥
लोहित[3] पुरपति बानके,उभय५हि आत्मजघोर ।
बिधि[6]सौं पाय अभीष्ट[7] बर,जिन्ह पकरयो अति जोर ॥४॥
धूम्म्रकेतु१भाई बडो,जंत्रकेतु२अनुजात[8] ॥ ५ ॥
तास नाम जंभासुर२हु,भयो भूमि बिख्यात ॥

नाराचम् ॥

बडो तनूज[9] धूम्रकेतु१दैत्यबाणके भयो,
कनिष्ठ[10] जंत्रकेतु२तास नाम जंभ२हू दयो॥
बडे बलिष्ठ दोय२ए अभंग जंग[11] रंगमैं,प्रचंडबाहु दंड त्यौं अखर्ब[12] उग्र[13] अंगमैं
बिडाल[14]नैंन घोरबैन लंबमान नासिका,
रु[15] जीह[16] तालु मध्य सांद्र[17] नीलता[18] प्रकासिका ॥
कठोर उत्तमांग[19] रोम सल्लकीज[20] सूल से,
प्रबाल[21] लाल गोधि देस[22] भौंह केस थूलसे ॥ ७ ॥
कुदाल दंत जा की कराल नील राजिका[23],
बपा[24] बिलास चिक्कनी म कुगंध भाजिका[25] ॥
बराहतुंड[26] कूट[27] मुंड ओ करोटि[28] संबसी[29],
कृपान[30] ज्यौं भयान भेस भ्रूलता प्रलंबसी ॥ ८ ॥
कपोल[31]नैंन लोल[32] ए पिसंग[33] रंगमैं खसैं,
प्रचंड बात पातसे निसर्ग सास निक्खसैं ॥

१द्वापर के तीसरे चरण का सन्ध्यांश उतरते समय२बलि राजा के वंश में ३ शोणितपुरके पति४बाणासुर ने ५ पुत्र ६ ब्रह्मा ने ७ इच्छानुसार८छोटा भाई ९ पुत्र १० छोटा ११ रणभूमि१२बहुत१३दारुण कर्म करनेवाले१४बिल्ली जैसे नेत्र १५ और १६ जीभ और तालुवे में१७अत्यन्त१८नीलेपन को प्रकाश करनेवाले १९ मस्तक२०सेली (सेह) के सूलियों जैसे २१ मूंगे के समान लाल २२ ललाट २३ पंक्ति २४ मेद (मींजी) अथवा रोमकूप (बालों के छिद्र) २५ पात्र २६ सूवर जैसा मुख २७ घण (ऐरण) के समान मस्तक २८ कपाल २९ वज्र जैसी ३० खड्ग जैसी भयानक ३१ गंडस्थल (गाल) ३२ चपल ३३ पीले

पलास[1] कास दंतवास[2] धूम्र रूप सृक्कणी[3],
बहंत बिस्र[4] स्वास संग भेद भेद चिक्कणी ॥ ९ ॥
रु[5] संकु[6] कान लंबमान छिद्र अद्रिखोहसे[7],
चकोर[8] एंत अंस[9] जे छुयें कठोर लोहसे ॥
बिसाल[10] लाल कंधरा कणीरमालकों[11] धरें,
रु मुच्छभाग सुल्व[12] राग आकपोल[13] उब्भरें ॥ १० ॥
रु मेचकाभ[14] जीह मध्य लोह[15] लाल लग्गई,
अमर्ष[16] खानि दिट्ठि ठानि ज्वाल जानि जग्गई ॥
अकुंठभाव[17] बड्ढिकी[18] जु दड्ढिका[19] कटारसी,
पिशंगपानि[20] थाप जानि वज्रके प्रहारसी ॥ ११ ॥
सुतिक्ख पानि सूकहू[21] कडार राग अहरैं,
रु सेतबाहु मूल जे गढूल कांतिकौं धरैं ॥
अतीव लंब रीढकाख्य[22] अस्थि पिट्ठि उप्पयो,
मनौं द्विसैलै[23] संधि मध्य तालदंड[24] रुप्पयो ॥ १२ ॥
बडे पिचंड[25] बच्छ औ गंभीर[26] तुंदकूपिका[27],
उदुंबराभ[28] रोमपंति तोर घोर रूपिका ॥
कटिप्प्रदेस[29] थूलमैं बतीस३२चांप[30] सप्तकी[31],
महाभयान जास शिंजितैं[32] भूमि तप्तकी ॥ १३ ॥

---

१ ढाक के पत्तों जैसे २ होठ ३ होठों का किनारा ४ आमगन्धी (कच्चे मांस की गन्ध) ५ और ६ काले और लम्बे कान ७ पर्वत की गुफा जैसे ८ चकोर पक्षी के समान चित्र विचित्र कन्धे १० लंबी और लाल गरदन ११ कणीर वृक्ष के फूलों की माला को धारे हुए १२ तांबे के रंग के समान १३ कपोलों पर्यन्त उठे हुए १४ काले रंग की जीभ में लाल क्षीर लगी हुई १६ क्रोध की खान १७ तीक्ष्ण १८ बढी हुई १९ दाढ २० उन पीले हाथवालों की २१ तीखे नख भी पीले रंग को धारण करते हैं २२ रीढक नामवाला हाड (पीठ में बांसे की हड्डी) २३ दो पर्वतों की संधि में २४ ताड वृक्ष का दंड २५ पेट और छाती २६ गहरी २७ नाभी २८ तांबे की कांति जैसी २९ मोटी कमर में ३० धनुष की ३१ मेखला ३२ जिसके शब्द से.

बिसालसंत्थि थंभ लाल मेघनील पिंडुरी,
सपीतबेस जानुदेस अंघ्रि नोह ज्यौं छुरी ॥
प्रचंड पाद स्याम रंग लंबमान अंगुली,
बडे बिरूप भ्रात द्वै२करैं त्रि३लोक व्याकुली॥१४
समस्तधर्म बेदकर्म जग्य जाप उत्थपैं,
रचैं अनेक बिघ्न तेन भारक्रांत भू तपैं ॥
त्रिसूल सक्ति चाप रोप खग्ग हेति संग्रहैं ।
कुठार दंड भिंदिपाल प्रास चर्म निब्बहैं ॥ १५ ॥
रहैं अजस्र रातिदीह सीधुपान मत्त जे,
मनुष्य मेदलालसी अधर्म अध्व रत्त जे ॥
जितैं जिनैं चलैं तितैं त्रि३लोक हंतकार है,
सुरेंद्र आदि दै ऋभून बेदनाँ अपार है ॥ १६ ॥
उभै२बलिष्ट दैत्य जे हिमाद्रि प्रांतमैं गये,
बिरिंचि हेत साहसी तपोविधानमैं ठये ॥
पचीस२५वर्ष बैठिकैं अहारकंदको लयो,
रु बीष२०बर्ष तिष्ठमान साकपत्र भक्खयो ॥ १७ ॥
बिधाय फेरि देह कष्ट इक्क१पादसौं रहे,
कबंधपान जीववान बर्ष च्यारि४निब्बहे ॥
अँगुष्ठ अग्र इक्क१सौं रहे बहोरि तिष्ट जे,
अहारहीन अब्द इक्क१उग्रकष्टनिष्ठ जे ॥ १८ ॥

१लालथंभा के समान लंबी जंघा२नीले मेघ के समान पिंडुलियें३विशेष पीले पन के साथ घुटने ४ पगों के नख मानों छुरी जैसे ५ भयंकर पग ६ उस भार से पीडित होकर भूमि तपने लगी ७ बर्छी ८ धनुष ९ बाण १० खड्ग ११ ये शस्त्र १२ कुल्हाडा १३ गोफण १४ भाला १५ ढाल धारण करते हैं १६ निरंतर १७ मद्य पान में १८ मनुष्य के मांस की चाहना करनेवाले १९ अधर्म के मार्ग में रत २० नाश करनेवाले २१ इन्द्र आदि २२ देवताओं को २३ पीड़ा २४हिमालय पर्वत के२५देश में २६ ब्रह्मा के२७खड़े रहकर२८खाया २९ कर के ३० जल पान से ३१ जीनेवाले ३२ वर्ष ३३ उग्रकष्ट में है निष्ठा जिन की

दुहून[२]यौं तपोबिधानकैं हृषीक[१] जित्तये,
सह्यो निदाघ[२] सीत श्रो पचास५०अब्द बित्तये ॥
भये द्वि[२]बंधु अस्थि[३]सेस प्रानमात्र ही रह्यो,
यहैं बिरिंचि[४] जानि बैंन भक्तपाल निब्बह्यो ॥ १९ ॥
गये बिरिंचि दुक्ख देखि धूम्रकेतु जंभको,
कियो र[५] सेक[६] आस्यपैं कमंडलुस्थ[७] अंभको ॥
समाधि जग्गि नेत्र नीर सीत पर्स[९]तैं खुले,
समीप जानि अंष्ट८कर्ण[१०] स्वांत[११] मोद संकुले[१२] ॥ २० ॥
दुहून२अंघ्रिकं[१३]जमैं किरीट अप्पनैं दये,
प्रणाम्य दंडलौं परे रु बिश्व[१४]बीज बिन्नये[१५] ॥
मिले हिरण्य[१६]गर्भ सो भलोहि भागधेय[१७] है,
दयालु दिट्ठि देखिकैं हमैं समस्त श्रेय[१८] है ॥ २१ ॥

गीर्वाणभाषा ॥

नमोऽस्तु सर्वरेतसे नमोऽस्तु हंसगामिने,
नमस्तथाऽष्ट८कर्ण ते बिरिञ्चि सर्गकामिने ॥
नमोऽस्तु वेदगर्भ ते नमोऽस्तु शुद्धचेतसे,
नमोऽस्तु सात्त्विकाय ते नमोऽस्तु बिश्वरेतसे॥२२॥
नमोऽस्तु ते चतुर्मुखाय साक्षिणे स्वयंभुवे,
नमोऽस्तु लोकपाल सर्वबीज ते जगत्सुवे ॥
नमो नमो नमः पुराणगाय कञ्जजाय ते,

१इन्द्रियों को २गरमी ३हड्डियां ही हैं बाकी जिन के ४ब्रह्मा ने ५सिंचन ६मुख पर ७कमंडल में भरे हुए ८जल से ९ठंडे पानी का स्पर्श होने से १०ब्रह्मा को ११मन में १२भर गया १३चरण कमल में १४ब्रह्मा को १५विनय किया १६ब्रह्मा १७भाग्य १८कल्याणकारी॥ हे सब के कारण रूप, हंसवाहन, आठ कानवाले, सरजनहार, सृष्टि की कामना वाले, वेद है गर्भ जिस के, शुद्ध चित्तवाले सतोगुणवाले, संसार के उत्पादक ॥२२॥ चार मुखवाले, सब के साक्षी, अपने आप उत्पन्न होनेवाले, लोकपाल, सब के बीज, जगत् का पिता, पुराण से गाया हुआ

नमो नमो नमो नमो नमो बिराडजाय ते ॥ २३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा॥

तुही अखंडज्योतिरूप ब्रह्मनामतैं लसैं,
तुही समस्तलोकमाँहिं पंचभूत ह्वै बसैं ॥
तुही मृगांक[2] चं[3]भानु बीतिहोत्र[4] ह्वै रहैं,
तुही कृतांत[5] अप्पती[6] सुरेस[7] गुह्यकेस[8] हैं* ॥ २४ ॥
तुही त्रिकालजाल[9] जो अजंस्र[10] घैस्र[11] रैन हैं,
तुही कृपाल लोकपाल लोककाल[12] ऐन हैं ॥
सुनी बिरंचि[13] यापकार दोय २बंधु बिन्नती,
कह्यो प्रसन्न होय पुत्र लेहु इष्ट[14] जो मैंती[15] ॥ २५ ॥
सुनैं इतीक धूम्रकेत१जंत्रकेतु यौं कह्यो,
दराप[16] देखिवे तुम्हैं हमैं जु इष्टतैं लह्यो ॥
चवैं[17]ऽब[18] इष्ट[19] आपसौं सुनौं सु चित्त धारिकैं,
अपत्यमांग[20] जात जे हमैं सकैं न मारिकैं ॥ २६ ॥
द्वि[21]बाहुसौं मरैं न ज्यौं लरैं न कोउ गज्जिकैं,
मरैं न जंग बिष्णुसौं जुरैं न इंद्र सज्जिकैं ॥
अहो यहै दयालु पुत्रपाल इष्ट दीजिये,
सुनी बिरंच[22] हू कह्यो तथास्तु सर्व कीजिये ॥ २७ ॥
सरोजभू[23] अदेय[24] दै गये निकाय[25] अप्पनैं,
रू[26] धूम्रकेतु१जंत्रकेतु२इष्ट[27] लै बढे घनैं ॥

कमल से उत्पन्न, विराट् रूप, अजन्मा तेरे अर्थ नमस्कार होवे ॥ २३ ॥
१ शोभायमान २ चन्द्रमा ३ सूर्य ४ अग्नि ५ यमराज ६ बरुण ७ इन्द्र ८ कुबेर ९ भूत, वर्तमान, भविष्यत्काल की जाल है सो १० निरन्तर ११ दिन रात बनी रहती है १२ संसार के काल का घर भी तुही है १३ ब्रह्मा ने १४ वरदान १५ तुम्हारी मति होवे सो १६ दुर्लभ १७ कहते हैं १८ अब १९ वांछित २० योनि से उत्पन्न होनेवाले २१ दो हाथों वालों से २२ ब्रह्मा ने भी २३ ब्रह्मा २४ नहीं देने योग्य देकर २५ स्थान २६ अरु २७ वरदान

*रहें सहे अन्त्यानुप्रास

रहैं प्रमत्त जे अदेव बंधिकैं चमू अनी,
फिरैं पताल स्वर्गलौं करैंहि चाह अप्पनी ॥ २८ ॥
जुरे बकारि इंद्रसौं वहै तऊ न अंकुर्‌यो,
रहे सिटाय आदितेय कोपि जंग नाँ जुर्‌यो ॥
वसैं समस्त लोकपाल भागधेयँ भेट दै,
लख्यो कहो न ऐरिसो जु फोजबंधि फेट दै ॥ २९ ॥
भये अँजेय बाणके तनूज दोहु२दुर्मती,
दई थकाय भक्ति धर्म जज्ञ जापकी गती ॥
न बिष्णुपैं मृदंगताल झल्लरी झनंक व्है,
न साधुभक्तके सरीर संख चक्र अंक व्है ॥ ३० ॥
न शैव बैष्णवी कथा न बिप्र बेद उच्चरैं,
न अग्निहोत्र अध्वरादि कर्म गुप्त हू करैं ॥
समाधिनिष्ठ जो मुनीस दिट्ठि दोहुकी परैं,
उठाय ताहि देत दुष्ट अर्द्धचंद्र दै गरैं ॥ ३१ ॥
फुरैं जु नैक सप्ततंतु धूम हू निगाहमैं,
बिगारि देत ताहिपै चलैं न मूढ राहमैं ॥
गिनैं न उच्चनीच जे जँथेच्छ मत्तसे रहैं,
करैं अनीति यौं अनेक सर्बभूतकौं दहैं ॥ ३२ ॥
करैं प्रछन्न भूमिभोन बेद पाठ बिप्रके,
भखैं तिन्हैं निकासि ज्यौं बराह कंद छिप्रके ॥
तथापि बान रुद्ये करो न तांत ऐरिसी,

दैत्य२सेना की अणी बांधकर३नहीं उठा४आदिति का पुत्र(इन्द्र)५कर(खिराज) ६ईदृश ऐसा ७ नहीं जीतने योग्य ८ बाणासुर के पुत्र ९ चिन्ह १० यज्ञादि ११ समाधि में निष्ठा रखनेवाले १२ गले में अर्धचन्द्र [गलहूंपा, अंगूठा और तर्जनी अंगुली को फैलाने से अर्ध चन्द्र की आकृति बनजाती है सो] देकर १३ यज्ञका धुआं भी १४ अपनी इच्छानुसार १५ उन्मत्त के समान १६प्राणियों को १७ भुवारों [तहखानों] में १८ भूमिकन्द को सूवर निकाल लेवें जैसे १९बाणासुर ने रो रो के २० हे पुत्रो २१ ऐसी ॥

सु पै गिनी न सिक्ख होत दुष्ट देय केरिसी ॥३३॥
बशिष्ठ नंदिसौं कह्यो पवित्र थान होनकौं,
कर्‌यो करैं सु चिंति जज्ञ देस दोस धोनकौं ॥
रहैं सुगुप्त द्रोनिमैं प्रचंड दुष्ट जानिकैं,
तऊ तिन्हैं दयो बिगारि अर्बुदादि आनिकैं ॥ ३४ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ वर्त्तमानवैवस्वतमनुगतकथनपूर्वकाष्टाविंशतितमद्वापरान्तसमयबाणदैत्यतनूजधूम्रकेतु१जम्भा२तङ्कपतनवशिष्ठमखविध्वंसनं चतुर्विंशो २४ मयूखः ॥ २४ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा

दोहा

समये कुहवि पुरायणे,उत्तंको वइरेण ॥
काही गड्डं दीहरं, णाआ विइआ गेण ॥१॥
हयावणपज्जाउलं,रसायलं काऊण ॥
पत्तो गोअमतणकुडिं,कुंडलाइँ घेत्तूण ॥ २ ॥

वशिष्ठ ने नन्दी नामक पर्वत को आबू स्थान के पवित्र करने को कहा था उस को याद करके उस देशके पाप धोने को मुनि यज्ञ किया करता था परन्तु उन दुष्टों को प्रचंड जान कर पर्वत की गुफा (खादेरी, खोलों) में रहता था तो भी उन असुरों ने अर्बुद पर्वत पर आकर यज्ञ को बिगाड़ दिया ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में वर्तमान वैवस्वत मनु के गयेहुए कथन पूर्वक अठाईसवें द्वापर के अन्त समय बाण दैत्य के पुत्र धूम्रकेतु और जम्भ के भय पटकने और वशिष्ठ के यज्ञ का नाश करने का चौबीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २४ ॥

किसी पहिले समय में उत्तंक ने तक्षक से कुंडल पीछे लेने के कारण, वज्र से पृथ्वी खोद कर बड़ा भारी गढ़ा करवाया था उस मार्ग से तक्षक का वासस्थान पाताल में जान लिया ॥१॥ महाभारत के आदि पर्व की कथानुसार इन्द्र के घोड़े की गुदा से उत्पन्न हुए अग्नि और धुएँ से रसातल अर्थात्

समये क्वापि पुरातने उत्तंको वज्रेण ॥ अकारयत् गर्त्तं दीर्घं नागा विदितास्तेन ॥ १ ॥ हयापानपर्याकुलं रसातलं कृत्वा ॥ प्राप्तो गोतमतृणकुटीं कुण्डले गृहीत्वा॥२॥

॥ गीई ॥

उत्तंकखणिअगड्डे तत्थ वसिट्ठस्स णन्दिणी सुरही ॥
वेरुलिअहरिअदुव्वं गहिरे पडिआ कहंपि ढुणढन्ती ॥ ३ ॥
मोत्तुं किर णिअगाविं मिच्चुमुहत्तो अयाहविअरत्तो ॥
भवणीरहितरिआए सुरसरिआए थुई कया इसिणा ॥४॥
दे सयरउत्ततारिणि उच्छारिणि पावपब्बयाणबले॥
भत्तविवइसंघारिणि सुहकारिणि मामिमं पसिअ गङ्गे॥५॥
इअ झाणणवरविरयातालाच्चहुवीअपायडं अम्बा ॥
तारेहीअविलत्तोवसिट्ठहेणुंपवाहपूरेहिं ॥ ६ ॥
जीबपडणदुहभीरूमन्तूणसगड्डपूरणंगिरिणा ॥
तुहिणायलंवसिट्ठोएक्कसुअंमागहीअसेलवइं ॥ ७ ॥
तेणातयाअणचलणोदिणणोइसिणोसुवोसुओणन्दी ॥

तक्षक आदि सर्पों को व्याकुल करके कुंडल लेकर गोतम की तृणकुटी को आया ॥ २ ॥ उत्तंक के खोदे हुए उस खड्डे में वशिष्ठ मुनि की धेनु नंदिनी वैदूर्य मणि सदृश हरी दूब को ढूंढती हुई किसी प्रकार गिरपड़ी ॥ ३ ॥ तब अपनी गौ को उस मृत्यु रूप अगाध गढ़े में से छुड़ाने के लिये वशिष्ठ ऋषि ने संसार रूप समुद्र को पार करने में नाव रूपी गंगा की स्तुति करी ॥ ४ ॥ हे सगर के पुत्रों को उद्धार करनेवाली, पाप के पहाड़ों को दूर भगानेवाली, भक्तों की विपत्ति को दूर करनेवाली और सुख करनेवाली गंगे मुझ पर प्रसन्न हो ॥ ५ ॥ इस प्रकार ध्यान मात्र से वर देनेवाली गंगा ने प्रकट होकर उस गढ़े को अपने प्रवाह से भरकर उस नन्दिनी धेनु को तिराकर बाहर निकाल दी ॥ ६ ॥ अपनी धेनु के निकल आने पीछे फिर भी इस में कोई जीव पड़कर दुःख पावेंगे इस भय से कायर वशिष्ठ ने विचारा कि किसी पर्वत से यह गढ़ा पूरण हो सकता है इस कारण पर्वतराज हिमाचल से उस का एक पुत्र मांगा ॥ ७ ॥ वशिष्ठ के मांगने से हिमाचल ने चरण रहित नन्दी

गीतिः ॥उत्तंकखातगर्ते तत्र वसिष्ठस्य नन्दिनी सुरभिः ॥वैदूर्यहरितदूर्वागंभीरे पतिता कथमपि ढुण्ढन्ती ॥३॥ मोक्तुं किल निजगवीं मृत्युमुखादगाधविवरात्॥भवनीरधितर्याः सुरसरितः स्तुतिः कृता ऋषिणा ॥४॥ हे सगरपुत्रतारिणि उत्सारिणि पापपर्वतानां ननु ॥ भक्तविपत्तिसंहारिणि सुखकारिणि ननु मयि प्रसीद गंगे॥५॥इति ध्यानमात्रवरदा तदा भूत्वा प्रकटमम्बा ॥ तारयामास विलात् वशिष्ठधेनुं प्रवाहपूरैः ॥ ६ ॥ जीवपतनदुःखभीरुर्मत्वा स गर्तपूरणं गिरिणा ॥ तुहिनाऽचलं वशिष्ठ एकं सुतं मार्गयामास शैलपतिम् ॥ ७ ॥ तेन तदा

अब्बुअणाआरूढो विप्पेण स आणिओ अवडनिअडं ॥ ८ ॥
णंपाडिऊण सेलं सयलोगहिरो विपूरिओ गड्डो ॥
तम्मिगिरिस्साणिमग्गं सयलङ्गं णवर नक्कमवसिट्ठं ॥ ९ ॥
अद्दीअव्वुअणामो स हुवीअतहिंमुणी महंकाही ॥
बाणादइच्चतणूआ विद्धंसंतस्सकरइरेदोण्णि ॥१० ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा

पज्झटिका

अब सुनहु बंस उद्भवे[२] उदंत,मुनि अग्गभये गोतम महंत ॥
बहुछात्रनं[३] दिय बिद्याबिसेस, बेदादि रु निजकृत[४]न्यायबेस ।११।
उत्तंक नाम इक दयितछात्र, सु रह्यो बिरेस सेवत सुपात्र ॥
इकदिवस जटानिज पलित[६] जानि,अबगुरु सनमंगिय सिक्खआनि॥
गुरु कहिय जाहु तबकहिय एहु,लखि उचितदाच्छिनाकछुकलेहु ॥
गुरुकहिय जाहु हैं हम प्रसन्न, हुव शिष्यतदपि साहस प्रसन्न ॥ १३ ॥
गोतम तब अक्खिय ध्रुवहि देय[९],तो देहु अहल्यां कथित प्रेय ॥
गुरुनारि निकट तब छात्रजाय, बुल्ल्यो अभीष्ट कछुलेहु माय ॥१४॥

नामक अपना पुत्र दिया उस पर्वत को वशिष्ठ अर्बुद नाम नाग पर रख कर उस खड्डे के पास ले आया ॥ ८ ॥ उस पर्वत को उस गढ़े में डालकर वह सारा गढ़ा पूर दिया और वह पर्वत भी सारा डूबगया केवल नासिका मात्र बाहर रही ॥ ९ ॥ वह पर्बत अर्बुद नाम से प्रसिद्ध हुआ. उसी पर्वत पर वशिष्ठ ने यज्ञ किया उस को बाण दैत्य के पुत्रों ने विध्वंस कर दिया ॥१०॥ हे राजा रामसिंह अब तुम्हारे वंश १ उत्पन्न होने का २ वृत्तान्त सुनो ३ बहुत शिष्यों को ४ अपना बनाया हुआ न्याय ५ प्यारे शिष्य उस उत्तंक ने, एक दिन अपनी जटा को ६ स्वेत हुई जानकर गुरु से सीख मांगी ७ हठ प्रास ८ निश्चय ही ९ देना है तो १० अहल्या (गोतम की स्त्री का नाम है) के कहने अनुसार जो उस को प्रिय होवे ११ शिष्य १२ जो तुमको बांछित होवे १३ हे माता

गतचरणो दत्त ऋषये स्वीयः सुतो नन्दी ॥ अर्बुदनागाऽऽरूढो विप्रेण आनीतोऽअवटनिकटम् ॥ ८ ॥ तं पातयित्वा शैलं सकलो गम्भीरोपि पूरितो गर्तः ॥ तस्मिन् गिरिर्निमग्नं सकलांगं केवलं नक्रमवशिष्टम् ॥ ९ ॥ अद्रिरर्बुदनामा स बभूव तत्र मुनिर्मखमकारयत् । बाणदैत्यतनूजौ विध्वंसं तस्य कृतवन्तौ द्वौ ॥ १० ॥

तब कहिय अहल्ल्या याहि आहु[2],सौदास भूप पँहँ बच्छ[3] जाहु ॥
रानी मदयंती नाम तास,श्रुति[4] धरत दिव्यकुंडल सुभास[5] ॥ १५ ॥
ते देहु आनि यह सुनत बिप्र,मग्गन[6] जुग२ कुंडल चलिय छिप्र[7] ॥
पुब्बहि[8] वसिष्ठ सन[9] पाय साप,सौदास भयो रक्खस[10] सपाप ॥१६॥
सो करत दुर्ग[11] कानन[12] निवास,दिन पंच५ न रक्खत असन आस[13] ॥
दिन छट्ठ६[14] परैं निज दिट्ठि जोहि,सत्वरे[15] गहि खावत सत्त्व सोहि[16] ।१७।
रानीहु तास पतिधर्म सत्थ,पतिसौं[17] कछु दूरहि रहत तत्थ ॥
आवै न कबहु धँव दिट्ठि[18] एह,इक गैह्वर[19] रहि कहैं[20] अनेह ॥ १८ ॥
आयउ जब आसिर[21] असनकाल[22],उत्तंक गयउ तब तँहँ नृपाल[23] ॥
खावन वह दोरिय लखत याहि,तब कहिय प्रयोजन बिप्र ताहि।१९।
अहौं दै कुंडल मैं बहोरि,तब लेहु खाय अब देहु छोरि ॥
कौणँप[24] तब अक्खिय[25] सत्य कोल,मंगहु तो कुंडल है अमोल ।२०।
इहिँ ओर जाहु इक१ अद्रि[26] आँहिँ,मम नारि रहत तस विवरँ[27] माँहिँ
जँचि[28] कुंडल तासन[29] जाय देहु,इंत[30] मोहि तृप्ति पुनि आय देहु ॥२१॥
सुनि बिप्र खोजि रानी निकाय[31],सौदास निदेस[32] सु दिय सुनाय ॥
तब भूखन कुंडल जुगल२ जोहि,सौदास दिवाय मोहि सोहि ।२२।
प्रत्यय[33] जब चाहिय नृपति नारि,बलि[34] गो द्विज[35] रक्खस[36] पँहँ बिचारि।
अक्खिय वह प्रत्यय चहत आज,सो देहु मिलैं तब इष्ट[37] राज[38] ।२३।
क्रव्याद[39] कहिय यह कहहु जाय,जिन बिनु नहिँ नारी सुगति पाय

---

१ उत्तंक को २ आओ ३ हे वत्स (पुत्र) ४ कानों में ५ श्रेष्ठ कांतिवाले ६ मांगने को ७ शीघ्र ८ पहिले से ही ९ से १० राक्षस ११ दुर्गम १२ वन में १३ पांच दिन तक तो भोजन की आशा नहीं रखता १४ छठे दिन १५ शीघ्र १६ जो जीव हाथ आजावे उसी को १७ पति की १८ दृष्टि में १९ गुफा में २० समय २१ राक्षस के २२ भोजन का समय २३ हे राजा रामसिंह २४ राक्षस ने २५ कहा २६ पर्वत २७ गुफा २८ मांगकर २९ उस से ३० शीघ्र ३१ रानी के रहने का स्थान ३२ आज्ञा ३३ निश्चय (सबूत) ३४ पुनि ३५ ब्राह्मण ३६ राक्षस के पास ३७ वांछित पदार्थ ३८ हे राजा ३९ राक्षस ने

तिन कोन अतिक्रम[1] करत दच्छे[2],यह कहहु लेहु द्विज इष्ट अच्छ ॥२४॥
उत्तंक कहिय जब यहहि ताहि,बानैं[3] तब कुंडल दिय उमाहि[4] ॥
रु कहिय जो करिहो औन चुक[5],तो हरिहै तच्छक[6] दंदसूक[7] ॥२५॥
बिस्मित[8] द्विज गो पुनि नृपति पास,बुल्ल्यो किम रानिय किय बिसास
नृप कहिय कहाई एह तत्थ,करि बिप्र बिमुख नहिं लहत अत्थ ॥२६॥
ज्यौं मैं वसिष्ठ किय अप्रसन्न,तो जातुधान[9] पुद्गल[10] प्रपंन्न ॥
रानी प्रति यह प्रत्यय[11] निदान[12],यातैंहि मिले कुंडल अमान[13] ॥२७॥
अद्यावधि[14] हो यह साप मोहि,छुटिगो सु प्रश्न[15] समुझात तोहि ॥
यह कहत लह्यो निज रूप राय[16],उत्तंक चल्यो तब गुरु निकाय[17] ।२८।
मग माँहिं भूख करि पीड्यमान[18],इक बिल्व[19] लख्यो फल पक्कवान[20] ॥
कुंडल सु बंधि निज अजिन[21] अंत,तलै[22] रक्खि चढ्यो श्रीफल[23] तुरंत ॥
अवसर यह तच्छक पाय आय,लैकैं द्रुत[24] कुंडल गो पलाय[25] ॥
उत्तंक हु तस्कर[26] परत दिट्ठि[27],पकरन तिहिं उत्तरि लागिय पिट्ठि[28] ।३०।
दक्खिन दिस धावत[29] नागराज[30],विप्रहिं ढिग आवत लखि सवाज[31] ॥
बिल लहि इक कुहरित[32] करि प्रवेस,पाताल गयो वह पन्नगेस[33] ।३१।
जो द्विजगति अनुचित बिवर[34] जानि,लग्गो तिहिं खोदन दंडपानि[35] ॥
ज्यौं भू खुदी न त्यौं सोकलीन,यह देखि इंद्र द्विज इष्ट[36] कीन ।३२॥
प्रबिसाविय निज पबि[37] तास दंड,खनि[38] घोर[39] अवट[40] किय तिहिं अखंड

---

१ उल्लंघन २ चतुर ३ उस रानी ने ४ हर्ष युक्त होकर ५ इस की रचा में चूक करेगा तो ६ तचक ७ सर्प ८ आश्चर्य करता हुआ ९ राचस के शरीर को १० प्राप्त हुआ ११ सबूत १२ निश्चय होगया १३ जिन के समान दूसरा नहीं अर्थात् अनुपम १४ राजा ने कहा कि अबतक १५ तुम्हारे प्रश्न का उत्तर समझाने से १६ उस राजा ने १७ गुरु के घर को १८ पीडित हुआ १९ बील का वृच्च २० पके हुए फलों का २१ चर्म वस्त्र के कोने में २२ भूमि पर २३ वील के वृच्च पर २४ शीघ्र २५ भागा २६ चोर पर २७ दृष्टि २८ पीछे लगा २९ दोड़ता हुआ ३० सर्पों का राजा तचक ३१ वेग के साथ ३२ छिद्र करके ३३ नागराज ३४ उस ब्राह्मण ने छिद्र में जाना अनुचित जानकर ३५ हाथ में दंड लेकर ३७ ब्राह्मण की वांछा को सिद्ध किया ३६ उस ब्राह्मण के दंड में अपना वज्र प्रवेश करादिया ३८ खोद कर ३९ भयंकर ४० खड्डा

बडवामुख लौं[1] अतुलित बिथार,किय पद्धति[2] भूतन[3] भीतिकार[4] ।३३।
तिहिँ मग्ग होय पायाल[5] पत्त,उत्तंक लख्यो इक बाजि[6] तत्त ॥
बपु सित[7] बह बुल्ल्यो सुनहु बिप्र,धमि मम अपान[8] फल लहहु छिप्र[9]।
उत्तंक करत तब सुनि निदेस[10],कचमाल[11] कढ्यो हयसौं बिसेस ॥
तानैं बडवामुख व्याप्त किन्न[12],सब नाग[13] भये तिहिँ खेद[14] खिन्न[15]।३५।
अग्गैं करि तच्छक[16]कौं समस्त[17], दै कुंडल लग्गे पयन त्रस्त[18] ॥
उत्तंक हु नागन[19] सिक्ख[20] अप्पि,मन सोच्यो कालरु देसमप्पि[21] ॥
तब अश्व कह्यो मैं आश्रयास[22],आरुहि[23] मुहिँ पहुँचहु गुरु निवास[24] ॥
अर्चन[25] ममतैं किय बहुत अग्ग,यातैं सहाय तव किय उदग्ग[26] ।।३७।।
उत्तंक चढ्यो तब तिहिँ[27] तुरंग,आयो गुरु आलय[28] धरि उमंग ॥
उत सततं[29] अहल्या लखत राह[30],जिम जिम बिलंब तिम सपनचाह[31]
इतनैं बिच पहुँच्यो बिप्र तत्थ,अप्पे[32] कुंडल गुरुनारि अत्थ[33] ॥
उत्तंक पाय तासन[34] असीस,बंदे[35] बहोरि गोतम मुनीस ॥ ३९ ॥
तिन कहि कृतार्थ[36] दिय सिक्ख ताहि,आयउ गृहस्थ होन सु उमाहि
करि हित बिबाहि बिधि जुत कलत्र[37],संपन्न[38] करे संतान[39] सत्र[40]।।४०।।
पबिके[41] प्रभाव इम पूर्बकाल, बिल भो जहँ अर्बुद[42] तहँ बिसाल
नृप[43] राम सोहि तुम कुल निमित्त, अब अर्बुद संभव धरहु चित्त ॥

१पाताल पर्यन्त २मार्ग ३प्राणियों को ४भय करनेवाला ५पाताल में पहुंच कर ६घोड़ा ७श्वेत शरीरवाला वह घोड़ा बोला कि ८मेरी गुदा में फूंक मारकर ९शीघ्र १० उतङ्क ने उसी आज्ञा का पालन किया ११ उस घोड़े में से केसों की जाली निकली १२ जिस ने पाताल को ढक लिया १३ सर्प १४ उस की खेद से १५ छीण १६तत्तक को १७सब १८कांपते (डरते) हुए १९सर्पों को २०सीख देकर २१उस देश काल को तोलकर अर्थात् उस समय उस देश से पीछा जाने का विचार किया २२ तब उस घोड़े ने कहा कि मैं अग्नि हूं २४मुझ पर चढकर २४गुरू के स्थान पर २५ पूजा २६ उच्च २७ उस घोड़े पर २८ गुरु के घर २९ निरन्तर ३० मार्ग ३१ श्राप देने की ३२ दिये ३३ अर्थ ३४ उस गुरु की स्त्री से ३५ नमस्कार किया ३६ तू कृतकार्य हुआ यह कहकर ३७ स्त्री ३८ सम्पत्ति सहित ३९ सन्तान और यज्ञ किये ४० वज्र के प्रभाव से ४१ पहिले ४२ जहां अब आबू पर्वत है वहां बडा भारी विल हुआ ४३ हे राजा रामसिंह वही वि

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ बलभेदिभिदुरभेदितमहागर्त्तोद्गमनिगदनंपञ्चविंशो२५ मयूखः ॥ २५ ॥

इति श्रीमदखिलमहीभृन्मुकुटमल्लीमाल्यमकरन्दमद्यमत्तमिलिन्दमुखरितचरणचिन्हिताऽऽरातिचूडबुन्दीपूर्विलासिनीविलासिचाहुवाणचूडामणिभारतीभागधेयहड्डोपटङ्किमहाराजाऽधिराजमहारावराजेन्द्रश्रीरामसिंहदेवाऽऽज्ञया गीर्वाणगीरादिषड्भाषावेशसुभ्रूभुजङ्गकाव्याऽकूपारकर्णधारवीरमूर्त्तिचक्रिचरणारविन्दचञ्चरीकचारुचमत्कृतचेतनचारणचक्रचण्डांशुचण्डीदानात्मजामिश्रणसुकविसूर्य्यमल्लविहितवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे स्तव्यस्तवमङ्गलादिहड्डेन्द्रराजधानीसूचनप्रबन्धप्रारम्भनिदानसङ्क्षिप्तचण्डासिवंशोद्देशविद्यमानब्रह्मायुर्गतप्रकृतिपुरुषस्वभावविद्यमानवराहकल्पसर्गसमर्थनचतुर्द्दश१४लोकरचनारचनवैवस्वतमन्वन्तर७गताऽऽगतकालविवेचनपञ्चधा ५ विभक्तवेदविटपिशाखाप्रतिशाखाऽऽदिसूचनगतद्वापराऽवसानदैत्येश्वरबाणसूनुद्वय२वशिष्ठमखविध्वंसनमहीध्राऽर्बुदाऽधिष्ठानमहागर्त्तोद्गमनिगदनं पञ्चविंशति२५मयूखमयः प्रथमो१राशिस्समाप्तः१।

अस्मिन्राशौ भूर्त्तच्छन्दांसि अनुष्टुप्छन्दांसि २८६५

॥ श्रीगोवर्द्धनो जयति ॥

ल तुम्हारे कुल के उत्पन्न होने का कारण हुआ अब आबू के होने की कथा को चित्त में धारण करो ॥ ४१ ॥

श्रीवंशभास्करमहाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में इन्द्र के वज्र से खोदे हुए बड़े खड्डे के कथन का पच्चीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २५ ॥

श्रीमान् समस्त राजाओं के मुकटों में रहे हुए मोगरे के पुष्प सम्बन्धी मकरन्द (पुष्प रस) रूपी मद्य से मस्त हुए भ्रमरों से शब्दायमान चरण कमल से चिन्ह युक्त किये हैं शत्रुओं के मस्तक जिन्हों ने, बुन्दीपुरी रूपी स्त्री के विलासी, चहुवाणों के शिरोमणि, सरस्वती है दाय भाग में जिन के अथवा सरस्वती से कर लेनेवाले अर्थात् पूर्ण विद्वान्, हाडा पदवीवाले महा राजाधिराज महाराव राजेन्द्र श्रीरामसिंह देव की आज्ञा से, संस्कृत भाषा आदि छः भाषा रूपी गणिकाओं के पति "भुजङ्गो गणिकापतिः" ॥ इति हैमः काव्य रूपी समुद्र के कैवर्तक (खेवटिया) वीरमूर्ति, विष्णु भगवान् के

चरणारविन्द के भ्रमर, मनोहर चमत्कारिक बुद्धिवाले, चारणगण के सूर्य, च
राडीदान के पुत्र मिश्रण शाखा के श्रेष्ठकवि सूर्यमल्ल के रचे हुए वंशभास्क-
र नामक महाचम्पू के पूर्वायण में, स्तुति करने योग्यों (देवता आदि) की
स्तुति रूप मंगल आदि, हाडा क्षत्रियों के इन्द्र की राजधानी का सूचन, ग्र-
न्थ प्रारम्भ का कारण, संक्षेप से चहुवाणों के वंश का कथन, वर्तमान ब्रह्म
की आयु के गये हुए वर्ष, प्रकृति पुरुष का स्वभाव, वर्तमान वाराहकल्प की
सृष्टि का समर्थन, चौदह लोकों की रचना की रचना, सातवें वैवस्वतमनु के
गत और आनेवाले समय का विवेचन, पांच प्रकार से विभाग किये हुए
वेद रूपी वृक्ष की शाखा प्रशाखा आदि का जनाना, गये हुए द्वापरयुग के
अन्त में दैत्यों के राजा बाण के दो पुत्रों द्वारा वसिष्ठ के यज्ञ का नाश होना
आबू पर्वत की स्थापना, बड़े खड्डे की उत्पत्ति के कथन का पच्चीस मयूखों
का प्रथमराशि समाप्त हुआ ॥

इतिश्री नीतिनिपुण बुद्धिविशारद सज्जनशिरोमणि हरिभक्तिपरायण
धर्ममूर्ति वीर वदान्य सौदा बारहठ चारणकुलाऽवतंस शाहपुराप्रतोलीपा-
त्र सुयोग्यपितुरवनाड़सिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्याः शृंगारनामजनन्या प्राप्त
प्रतत्रपालनबालशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितैराज्ञाकारिभिरात्मजैः केसरी
सिंह किशोरसिंह जोरावरसिंहैर्विगतभार्याऽऽधिना कविकोविद निजमा-
तुल कविराज श्यामलदासादाऽऽप्तकाव्यशिक्षेण, सन्तोऽऽषादि सद्गुण स-
म्पन्नविप्रच्छिरोमणि परमवैष्णव रामानुजसम्प्रदायिन श्रीमदाचार्य सीता-
रामाऽऽह्वयगुरोरासादितसंस्कृतविद्येन, सूर्यवंशोद्भव रघुवंशीय राणोत्तशाह
पुराधिप राजाधिराजोपटांकि नाहरसिंहवर्म आर्यदिवाकर रविकुलशिरोरत्न
रघुवंशीय गुहिलोत्त मेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराधीश सज्जनतादि सद्गुणसम्प
न्न महाराणा सज्जनसिंहवर्म ; तथैव तदुत्तराधिकारिमहाराणा फतहसिंह व-
र्म ; भानुवंशभूषण राष्ट्रकूटकुलावऽवतंस मरुधराधिप जोधपुरेश राजराजे
श्वर महाराज यशवन्तसिंहवर्मभ्यो लब्धातीवदानमान स्वर्णरचितपादभूष-
णाऽऽदिसत्कारेण, अधीतविद्यां सफलयितुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रैर्ल
ब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवासिना कविवरद्वारहठ कृष्णसिंहेनविरचि
तायामुदधिमन्थनीटीकायां प्रथमो राशिः समाप्तः ॥

भाषानुवाद—श्रीयुत नीतिनिपुण बुद्धिविशारद सज्जनशिरोमणि
हरिभक्तिपरायण धर्ममूर्ति वीर उदार (दातार) सौदा बारहठ शाखा के चा
रणकुल के मुकुट शाहपुरा के पोलपात्र " गोपुरं हि प्रतोल्यां च नगरद्वारयो
रपि " इति महीपः । * (शाहपुरा के राजद्वार पर नेग " दस्तूर " लेनेवालों
में पात्र) सुयोग्य पिता ओनाड़ (अनभ्र) सिंह के पुत्र ने, पण्डिता शृंगार

* यह प्रमाण निर्णयसागर प्रेस मुद्रित दशकुमार चरित के १४५ पेज मे टीका की प्रथम पक्ति मे है

बाई नामक माता मे पाया है जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जिसने श्रेष्ठ शिक्षा पाये हुए आज्ञाकारी पुत्र केसरीसिंह किशोरसिंह और जोरावरसिंह करके मिटगई है आगामी समय में होनेवाली मानसिक चिन्ता जिस की, पण्डित कवि अपने मामा कविराज श्यामलदास से पाई है काव्यशिक्षा जिसने, सन्तोष आदि गुणों से समृद्धिवाले विद्वानों के शिरोमणि परमवैष्णव रामानुजसम्प्रदायी श्रीमत् आचार्य सीताराम नामक गुरु से प्राप्त की है संस्कृत विद्या जिस ने, सूर्य वंश में पैदाहुए रघुवंशी राणावत शाहपुरा के पति राजाधिराज पदवी(खिताब)वाले नाहरसिंह वर्मा और आर्यों के सूर्य सूर्यकुल के शिरोमणि रघुवंशी गुहिल राजा के वंश के मेवाड़ देश के पति उदयपुर के स्वामी सज्जनता आदि सद्गुणों से समृद्धि वाले महाराणा सज्जनसिंह वर्मा और उन्हीं के समान उन के उत्तराधिकारी (उन की गद्दी पर बैठनेवाले) महाराणा फतहसिंह वर्मा और सूर्य वंश के भूषण राठोड़ कुल के मुकुट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर के स्वामी राजराजेश्वर महाराजा यशवन्तसिंह वर्मा से पाया है दान पूज्यपन (बड़प्पन) और पैरों में सुवर्ण के बनेहुए भूषण आदि सत्कार जिसने, मिलगया है पढी हुई विद्या को सफल करने का समय जिस को, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह जिस ने, शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे सुकवि बारहठ कृष्णसिंह की रची हुई उदधिमन्थनी नामक टीका में प्रथमराशि समाप्त हुआ ॥ ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ श्रीगणेशजी ॥

अथ द्वितीयराशिप्रारम्भः ॥

तत्र पूर्वं कविर्निजजनकस्तवरूपमङ्गलमाचरति ॥

गीर्वाणभाषा ॥ गीतिः ॥

वन्देऽहं निजपितरं चण्डीदानं द्वयेरभकेसरिणम् ॥
तत्त्वमसीतिविवेकं संसारस्थोऽपि योऽदधान्नित्यम् ॥ १ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

षट्पदी ॥

स्वारण्यक बन मध्य नगर है अब सिरोहि जँहँ ।
द्विज उत्तंक खन्यौं सु रह्यो अतिकाय अवट तँहँ ॥
अतुल घेर आकास घोर अंधार पृथुल घर ।
आबडवा मुख निम्न लखत भव भूत भयंकर ॥
गिरि अर उपेत भूचक्र कै मनहुँ दैव यह नाभि किय ।
सकुटुंब तत्थ कोउक समय ऋषि वसिष्ठ आश्रम रचिय ॥ २ ॥

अब द्वितीय राशि के आरम्भ में पहले कवि (ग्रन्थकर्त्ता सूर्यमल्ल) अपने पिता की स्तुतिरूप मङ्गल का आचरण करते हैं ॥ मैं द्वैतमतरूपी हाथी के लिये सिंह समान मेरे पिता चण्डीदान को नमस्कार करता हूं जिसने संसार में रहने पर भी सदा ब्रह्मज्ञान धारण किया ॥ १ ॥ स्वारण्य नामक बन जहां अब सिरोही नगर है उसमें उत्तंक नामी ब्राह्मण का खोदाहुआ बडा भारी खड्डा था वह बहुत ही आकाश को घेरेहुए घोर अन्धकार का बडा घर पाताल तक गहरा देखते ही संसार के प्राणियों को भय देनेवाला मानों परमेश्वर ने पर्वतरूपी अरों सहित पृथ्वी रूपी पहिया के यह नाभि (लोहर रहने का काष्ठ जिस को नाही कहते हैं) बनाई हो. तहां पर वसिष्ठ ऋषि ने कुटुम्ब सहित रहने के

तँहँ वसिष्ट कै धेनु नाम नंदिनि प्रसिद्ध अति ।
कामधेनु [1]तनया सु मन्नि पसुधर्म रीति मति ॥
चरन गई बन मध्य फिरत हेरत बर [2]साद्वल ।
बज्र खनितं[3] तिहिँ [4]गर्त बीच परि हुव बिहीन बल ॥
[5]समयांत धेनु पहुँची न यह जानि [6]अक्षमाला कहिय ।
हेनाथ सुनहु [7]अद्यावधि हु [8]नाँई आश्रम नंदिनिय ॥ ३ ॥
[9]जायोदित सुनि बचन चले मुनिवर तिँहिँ हेरन ।
[10]ब्रह्मदण्ड निज हत्थ सत्थ समुपेतं[11] छात्रगन[12] ॥
[13]उत्तरीय निज [14]अंस पावरी पयन बिराजत ।
परसत जँहँ जँहँ [15]पुहवि पाप तँहँ तँहँ परिभाजत ॥
द्विजराज जाय [16]कांतार इम नंदिनीति[17] कहि टेर[18] दिय ।
यह सुनत धेनु निज थान [19]खंव [20]अंवट मध्य हंभार किय ॥ ४ ॥

दोहा॥

[20]क्रंदन कातर मुनि सुनत, धेनु [21]खात गत जानि ॥
गंगा [22]स्तुति बिरचनलगे, बहुधा किंत्ति बखानि ॥ ५ ॥

गीर्वाणभाषा ॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

नमस्ते नमस्ते नमो देवि गङ्गे नमो जह्नुजे पूतपाथस्तरङ्गे ॥
नमस्ते कपर्दासने भर्गजाये, नमस्ते ज्वलत्सम्बरे मूलमाये॥६॥
नमः सर्वसूरर्च्यजङ्घालनीरे, नमो मुक्तिसोपानभूते ऽच्छतीरे ॥

लिये किसी समय आश्रम रचा था ॥ २ ॥ १ कामधेनु की बेटी २ हरा घास ३ वज्र से खोदाहुआ ४ खड्डा ५ गाय के आने का समय बीतजाने पर ६ वशिष्ट की स्त्री का नाम है ७ अबतक ८ नहीं आई ९ अपनी स्त्री का कहाहुआ १० वशिष्ठ की सिद्ध लकडी का नाम है ११ लिये १२ शिष्यगण १३ उपवस्त्र (उत्तरासण) १४ कन्धे पर १५ भूमि १६ वन में १७ नन्दिनी यह कहकर १८ शब्द १९ खड्डे में २० रोने का कायर शब्द २१ खड्डे में पड़ीहुई २२ स्तुति ॥ नमस्ते इति ॥ हे देवि गंगा जन्हु की पुत्री, पवित्र जल की तरंगवाली जटा का आसनवाली, महादेव की स्त्री, उज्ज्वल जलवाली, महामाया ॥ ६ ॥ सबको उत्पन्न करनेवाली, पूजनीय है अतिवेगवान् जल जिसका ऐसी मोक्ष की सीढी रूप सुन्दर तटवाली तेरे अर्थ नमस्कार है. तू यहां पर रक्षा कर, हे इन्द्र की शक्ति लक्ष्मी

अवेह त्वमैन्द्रीरमोमादिभूते नमस्तेऽघसंहारिके भास्वदूते ॥७॥
नमस्ते सुपर्वापगे शुद्धभावे, नमस्तेऽस्तु संसारपाथोधिनावे ॥
नमस्ते तटिन्न्युत्तमे तुङ्गकूले नमोऽस्त्वम्ब ते सागरोद्धारमूले ॥८॥
नमस्ते स्वभक्ताय कैवल्यदायै, नमो हेलयैवाऽघशैलापहायै ॥
नमस्ते सुवर्णाऽद्रिकूटस्त्रवलन्त्यै, नमो मेनकेशादगादुच्छलन्त्यै ।९।
नमो जन्मभेत्र्यै नमो विष्णुपद्यै, नमोऽनूननेत्र्यै नमो नाकनद्यै ॥
इमां नन्दिनीमुद्धराऽशु त्वमार्ये, नमस्ते नमस्तेऽस्त्वकूपारभार्ये।१०।
नमोस्तूर्मिचञ्चद्द्युवस्थानमीने,नमस्तारकामण्डलाऽऽस्फाललीने॥
नमस्त्र्यध्वगे भर्म्मभूभृत्पताके, नमः पीतसिक्पत्तडित्वद्बलाके।११।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीयराशौ महागर्त्तनन्दिनीपतनवशिष्ठगङ्गास्तवनं प्रथमो१मयूखः ॥ १ ॥ आदितः षड्विंशः ॥ २६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा

दोहा॥

सुनि निर्लिंपतटिनी सुजस, मुनि वशिष्ठसौं एम ॥

पार्वती आदि में होनेवाली पापों का संहार करनेवाली, देदीप्यमान है प्रवाह जिसका ॥ ७ ॥ ऐसी देवगंगा शुद्धभाववाली, संसाररूपी समुद्र की नाव, उत्तम नदी ऊंचे किनारोंवाली, माता, सगर वंश का उद्धार करने का मूल ॥८॥ अपने भक्तों को मुक्ति देनेवाली लीला से ही पापरूपी पहाड़ का नाश करनेवाली, सुमेरु पर्वत से वहनेवाली हिमालय पर्वत से उछलनेवाली ॥ ६ ॥ जन्म को काटनेवाली, विष्णु के पद से निकलीहुई बडी भारी नदी, स्वर्गनदी, हे आर्या तू शीघ्र इस नन्दनी को निकाल. हे समुद्र की स्त्री ॥ १० ॥ तरंगों से उज्ज्वल आकाश को नापनेवाली, आकाश मण्डल को लांघकर छिपजानेवाली, स्वर्ग भूमि पाताल तीन मार्ग को जानेवाली, सुमेरु पर्वत की ध्वजा, पीताम्बर धारण करने से विजलीवाले मेघ में बुगले के समान शोभित है चरण जिसके ऐसी तुझ गंगा को नमस्कार है ॥ ११ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायणके द्वितीय राशिमें बडे खड्डे में नान्दिनी के पडजाने पर वशिष्ठ से गंगा की स्तुति करना रूप पहिला मयूख समाप्त हुआ ॥ १ ॥ ॥ प्रथम से छब्बीस मयूख हुए ॥

१देवनदी ने.

प्रकट अवट[1] मध्यहि भई, ओत[2] बिरचि सह प्रेम ॥ १ ॥
तिँहिँ प्रबाह सुरभी[3] तिरत, अतिसुख निकसी आय ॥
गंगा सागरकौँ गई, सरिता रूप सुभाय ॥ २ ॥
तबतैँ बाशिष्ठी नदी, यहै[4] अवनि तल आसँ ॥
ताहि लोक सब आधुनिक[5], बरनत भाखि बनास ॥ ३ ॥

षट्पदी

अब बशिष्ठ धेनुहिँ निकासि चिंताप्रपन्न[6] हुव ।
अतिगभीर[7] यह अवट दुक्ख भवभूत लहहिं ध्रुव[8] ॥
जो परिहै इहिँ मध्य तास बहुरि न निष्कासन ।
यह पूरन जिम होय तिमहिँ करिये बिचार मन ॥
इम सोचि बिप्र कछु ध्यान धारि करि बिल पूरन चिंत मन ।
जान्यौँ वशिष्ठ हिमवानसौँ पुत्र जचहिँ धरि अर्थिपन[10] ॥ ४ ॥
हिमगिरि अंगज[11] लाय खात[12] पूरौँ यह दुर्गम ।
इम बिचारि मुनिराज गये गिरि पँहँ अति विक्रम ॥
आवत पिक्खि[13] वसिठ्ठ[14] समुह गिरि धाय समेनक[15] ।
पाद्य १ अर्घ्य २ मधुपर्क ३ आदि पूजे रहि इकटक ॥
पीँढ[16] ढारि बैठारि तिन्ह इम उँदगद्रि[17] हु अरज किय ।
जिहिँ काज गेह मम आगमन कहहु नाथ जो इष्ट जिय ॥ ५ ॥
मुनि बसिष्ठ तब कहिय सुनहु उदगद्रि चित्त धरि ।
स्वारण्यक बन मध्य अवट उल्बण[18] अगाध परि ॥
सुरपति के आदेस जाय दंभोलि[19] खन्यौँ वह ।
भुजग लोक उत्तंक गयो जँहँ होय अग्ग अहं[20] ॥
सुहि खात पृथुल[21] भूतन भयद पाय गाय मम गिरत हुव ।

---

१ खड्डे में ही २ प्रवाह (धारा) ३ गाय ४ है ५ इस समय के ६ प्राप्त ७ गहरा ८ निश्चय ९ हिमालयपर्वत १० याचकपन ११ पुत्र १२ खड्डा १३ देखकर १४ वशिष्ठ १५ अपनी स्त्री मेनका सहित १६ पीढा (बाजोट) १७ हिमालय (उत्तर दिशा का पर्वत) १८ स्पष्ट (सीधा) १९ वज्र ने २० अगले दिनों में २१ बड़ा

हिमवान ताहि पूरन हमहिं अप्पहु इक १आत्मीय[1] सुव[2] ॥ ६ ॥
मैं समर्थ सब भाँति धेनु काढी गंगा बल।
अवर मध्य जो परहिं तो न निकसहिं अति बिव्हल ॥
हम दयालु अजबंस[3] देखि परदुक्ख सहैं नन।
तनुज इक्क १ तुम देहु करहिं तासौं तिहिं पूरन ॥
सुनि मुनि निदेस अंबा जॅनक[4] तत्थ बुल्लि निज पुत्र लिय।
सबहिन सुनाय द्विज आगमन अद्रिराज आलोच[5] किय ॥७॥
ए बसिष्ट ऋषिराज अच्छमालेस[6] तपोबल।
आये अप्पन निलयँ[7] धन्न्य अपनौं संचित फल ॥
आर्ज आज कोउ काज पुत्त मोसौं इक १ मंगत।
भागधेयं[9] मम भव्य इक्क १ इन संग जाहु बंत ॥
सुनि पुत्र सकल हिमवानके रीति उचित कर जोरि रहि।
अष्टांग[11] सहित बंदन विरंचि बुल्लिय[10] मति अति प्रनति गहि ॥८॥

पज्झटिका ॥

जाचक बसिष्ठसे गेह आय, जजमान हिमालय गोत्रराय[12] ॥
हम कतिक बत्त असुहु[13] न अदेय, जनकोक्त[14] हमहिं करतव्य श्रेय।९।
पितु बचन राम बन दुख लयोहि, पितु बचन पूरु[15] जुब्बन दयोहि ॥
आरोपि[16] जनक जननी स्वअंस, श्रवनहु गो तीर्थन सुप्रसंस।१०।
सब तीर्थ पुत्रकै जनकैं[17] एव, जनकहि बिच निबसत सर्ब देव।
हम धन्न्य आज पितु हमहि देत, अरु मंगि आज मुनिराज लेत।११।
हमकौं अनेहं[19] अैसो मिलै न, सुनिये परंतु इक १ उर अचैन ॥

१ अपना २ पुत्र ३ ब्रह्मा के वंश में ४ पार्वती के पिता ने ५ विचार ६ अच्छमाला नामक स्त्री का पति ७ घर ८ ब्रह्मा का पुत्र (अज का पुत्र) ९ भाग्य १० आमंत्रित (निमंत्रण किया हुआ) ११ आठ अङ्गों सहित प्रणाम (उर, शिर, दृष्टि, मन, वचन, पग, हाथ और घुटनों से किया जावे उसको साष्टाङ्ग कहते हैं) १२ पर्वतों का राजा १३ प्राण भी १४ पिता का कहना १५ पिता ययाति के मांगने पर उसके छोटे पुत्र पूरु ने अपना यौवन देदियाथा १६ मातापिता को अपने कन्धे पर रखकर श्रवण भी तीर्थ गया था १७ पिता ही है १८ ब्रह्माका पुत्र १९ समय

स्वारण्यक वह कुत्सित[१] अरण्य, अघवान[२] थलन बिच अग्रगण्य१२
जो चहत प्रान तो लेहु नाथ, पै तत्थ नाँहिं लै चलहु साथ ॥
हम लहहिं वृजिन[३] फल तत्थ जाय, तसमात[४] यह न करिये उपाय १३
अघसों तुम वारन करनहार, अघमाँहिं न डारहु हेउदार ॥
वह बिपिन[५] चिंति आवत गलानि, मुनि दासन बिन्नति लेहु मानि१४
तुम पूरि सकत मनसों हु खात[६], क्यों तपनिधान लै हमहिं जात॥
सुनि एम हिमालय सुतन बैन बोले बसिष्ट तँहँ तुमहिं भैन ।१५।
निंदित जु देस संदेह नाँहिं, मैं पै[७] निवास किय तासमाँहिं ॥
पुनि बहि निर्लिंपतटिनी[८] प्रवाह, दुरगो तिहिं थल को अघसदाह १६
इक१बिप्र पुरा[९] तिंहिं गहन[१०] आस,बिगरी मति सबरन[११] संग तास ॥
अभ्यास सस्त्र धनु बिसिख[१२] आदि,पथ रोकि पथिक[१३] मारत प्रमादि१७
करि लहि कुसंग इम तेयं[१४] कर्म्म,पालत कुटुंब वह द्विज अधर्म्म ॥
इमें[१५] समय सप्त ७ ऋषि तत्र आय,तिन्ह बसन लैन दिय बिप्र दायँ[१६]।१८।
करि सज्ज्य कठिन कार्मुक[१७] तयार, आयो रचि टंकृति हेउदार ॥
बुल्ल्यो सु मुनिन प्रति अति अजान,पट छोरि जाहु जो चहत प्रान ।१९।
अघ मुनिन कह्यो क्यों करत एह, बुल्ल्यो वह पालत कुल सनेह॥
पुनि मुनिन कह्यो रे ब्रह्मबंधु[१८],यह अघ कुमाय क्यों परत अंधु[१९] ॥२०॥
याको कुटुंब हू लहहिं प्रंस, वा तूहि दंड सहिहै नृसंस[२०] ॥
इमसुनि[२१]मुनिबुल्ल्यिय द्विजअधर्म्म,मोहि न सुधि अघफलसहन मर्म्म
सुनि मुनिन बहुरि अक्खिय[२२] सुभाइ, पूछहु कुटुंब सब गेह जाइ॥
बिप्राधम तब निजगृह जँगाम[२३], पूछिय कुटुंब सब पाप काम ॥२२॥
तुम काज करत मैं अघ अपार, तुम सबन जिवावत तेयकार[२४] ॥
मेरो अघ लैहो तुमहु बंटि, मैंही वा सहिहौं सुकृत संटि[२५] ॥२३॥

१नीच२पापी३पापों का४इस कारण से५वन को ६ खड्डा ७ परन्तु ८ देवनदी ९पहले१०वन में हुआ११भीलों की संगति से१२बाण१३मार्ग चलने वालों को १४चोरी का कर्म१५इसी समय में१६दाबदिया१७धनुष१८नीच ब्राह्मण १९ कुए में २० हे पापी २१ मुनियों से२२कहा२३गया।२४चोरी के कर्म से२५धर्म के बदले.

बुल्ले तब बांधव हे प्रवीन, हम देव किये तेरे अधीन ॥
करि सुकृत तथा कल्मष[1] कुभाइ, तुम देत आनि हम लेत खाइ२४
कर्त्ता हि लहत फल कर्म जोर, सुख दुक्ख पुण्य पापन झकोर।
सुनि बिप्र मुनिन ढिग बहुरि आइ, सब दिय कुटुंब आसय सुनाइ ।२५।
पुनि मुनिन कहिय हिय किय प्रसत्ति[2], करि कुकृत तूहि लहिहै बिपत्ति
तसमात[3] करत क्यौं घोर कर्म्म, विष्णुहिं सम्हारि धरि साधु धर्म्म ।२६।
यह सुनत बिप्र हिय बोध आइ, बुल्ल्यो सु देहु पद्धति[4] बताइ ॥
तब मुनिन कह्यो धरि विष्णु ध्यान, आसन रचि बैठहु जलवान ॥२७॥
बैकुंठ हरे विष्णो उचारि, जप करहु निरंतर तत्व धारि ॥
नासाग्र दिठ्ठि संतत[5] लगाइ, पुनि लेहु हृदयपंकज[6] फुलाइ ॥ २८ ॥
तिहिं कंजकोसं[7] बिच भव्य[8] भासँ, वे हरि सदैव धारत निवास ॥
मन करि तिन्ह पूजहु धैर्य मानि, जे प्रभुहि मुक्तिदातार जानि ॥२९॥
दै सिक्ख गये मुनि इष्टदेसं[9], इहिं बिप्र कथितं[10] कीनौं अंसेस[11] ॥
बैठो अंचेष्ट[12] आसन बनाइ, लिय दिठ्ठ नक्क अग्गहि लगाइ ॥३०॥
उच्चरत विष्णु हरि हरि अजंस्र[13], घन बित्तिगये इम जपत घस्र[14] ॥
सुधि खानपान बपु की रही न, लगि चित्त भयो हरि रूप लीन ॥ ३१॥
तनु पैं किय बाम्रिनें[15] नाकुं[16] तास, वह रटत मध्य रहि श्रीनिवास ॥
अतिचिरं[17] बिताइ मुनि पुनि हु आइ, रट बिप्र रह्यो हरि हरि लगाइ
सुनि निनद[18] मुनिन चउ ४ दिस निहारि, नाकुहि बिच जान्यौं भजनकारि
मिलि तिन्ह बिडारि वह बामलूर[19], काढ्यो द्विज मनहु सुक्रंसूर[20] ॥ ३३॥
जे मुनि समर्थ वल्मीकजात[21], बाल्मीकि भये यह बिदित बात ॥
जिनसौं हु भयो पावन जु देस, आश्रम हम हू किय हे अगेसं[22] ।३४।

१पाप २कृपा ३इस कारणसे ४मार्ग ५निरंतर ६हृदयकमलमें ७देदीप्यमान कान्तिवाले ८ध्यानयोग्य ९अपने वाञ्छित देश को १०कहा हुआ ११सम्पूर्ण १२निश्चल १३निरन्तर १४दिन १५वामले (उदेही के बिल) १६उदेही (दीमक) ने १७बहुत ही समय बिताकर १८ नाद (शब्द) १९ वामले को २० ज्येष्ठ मास के सूर्य के समान २१ वामला से पैदा होने के कारण २२ हे पर्वतराज.

त्रिस्रोता पुनि बहि काढिय तत्थ, इम हुव पवित्र संसय न अत्थ ॥
अब तत्थ हैमवत चलहु एक, बहुरिहु थल सुधरहिं मम बिबेक ॥३५॥
तीरथ सब करिहैं तत्थ बास, सब देव तत्थ करिहैं निवास ॥
सुभ करहिं हमहु पुनि वह सुथान, बिरचहिं अनेक अध्वर विधान ।३६।
इम करि पवित्र बिपिनं सु असेस, बन अष्ट ८ तुल्ल्य करिहैं नगेस
तसमात चलहु हे इक १ निसंक, पूरहु जुँ गर्त्त लिंपिहैं न पंक।३७।
यह सुनि गिरिपुत्रन कहिय फेरि, बन अष्ट ८कोन भाखहु निवेरि॥
अक्खिय तब मुनिबन अष्ट८ नाम, गिरिपुत्र सुनहु जे पुण्यधाम ।३८।
दंडक १ अरण्य है प्रथम सुद्ध, बन है द्वितीय सैंधव २ प्रबुद्ध ॥
ज्यों जंबूमार्ग ३ तृतीय जानि,पुष्कर४ चतुर्थ कानन प्रमानि ।३९।
पंचम सु उत्पलावर्त्त५ गण्य, अरु गिनहु षष्ठ नैमिष६अरण्य ॥
सप्तम कुरुजांगल७ पुण्यरूप, अष्टम सु हैमवत८ यह अनूप।४०।
व्हैहैं अब वह बन नवम श्रेय, अर्बुद९ अरण्य इति नामधेयं ॥
इक१ हायन[12] तप कासी प्रदेस, तउ तँहँ इक१दिन को तप बिसेस ४१
औसो अब करिहैं वह अरण्य, तीरथ गणना बिच अग्रगण्य ॥
तसमात चलहु इक१ गिरि अँपत्य,सो गर्त्त भरहु यह जानि सत्य ४२

दोहा

सुनि मुनि बचन हिमाद्रिसुत, नंदीवर्द्धन नाम ॥
बोल्यो सिर आदेस धरि, करि स्वीकृत मुनिकाम ॥ ४३ ॥

॥ षट्पदी ॥

नंदी कहिय मुनीस अँवट पूरौं नहि संसय ।
इक परंतु अवरोध नाथ सुनिये निहारि नैय ॥
छेदे सुरपति पच्छ पंगुं पुनि मैं रु दूर पंद ॥
इक १ उपाय अव कथित[22] करहु ह्वै ज्यों अभीष्ट[23] हद ॥

१गंगा२हिमालय के पुत्र३यज्ञ४वन५हे पर्वतों के राजा६इसकारण से७जो८खड्डा ९नहीं लगेगा१०पाप११नामवाला१२वर्ष१३पुत्र १४खड्डा१५आज्ञा१६अंगीकार१७खड्डा१८रुकावट१९नीति२०पाँगला२१स्थान.२२मेरा कहाहुआ २३पूरा मनचाहा

मम मित्र नाग अर्बुद[1] रहत नाग लोक अतिकाय वह ।
धर्मिष्ठ रु परउपकारकर गिनत दुक्ख भूतन असह ॥ ४४ ॥
तिहिँ बडवामुखं[2] जाइ अत्र आनहु द्विज पुङ्गवं[3] ।
वह अहि मोहि उठाइ जत्थ लैचलहिँ बडे जवें[4] ॥
सक्तिजनक[5] यह सुनत गये अहिलोक तपोधन ।
जाच्यो अर्बुद नाग कहिय हित बैन महामन[6] ॥
उत्तंक बिप्रबरके अरथ सँक्र[7] संबं[8] खातक[9] खनिय ।
तव मित्र नंदि लेजाइ तिहिँ करन पूर्ण हम चित्त किय ॥ ४५ ॥

दोहा

वह नंदी हिमसैलसुत, आजनि[10] अंघ्रि[11] बिहीन ॥
स्वच्छंद[12] न तँहँ चलि सकत, पूरन गैर्त्त[13] प्रबीन ॥ ४६ ॥
तासौं तुम अर्बुद उरगैं[14], तिहिँ निज पिठ्ठि चढाइ ॥
रवारण्यक बन लैचलहु, पूरहि बिल बल पाइ ॥ ४७ ॥

मुक्तादाम

कह्यो अहि अर्बुद हेमुनिराज, कहा तुम नाथ समर्थ न आज ॥
चलौं मम मित्रहि लै कसमातैं[15], तपोबलसौं तुम पूरहु खातैं[16] ॥ ४८ ॥
रु जो तुमकौं यह ही करतव्यं[17], ततो सुनिये जिम व्है मम भव्यं[18] ॥
चलौं मम मित्रहि लै तिहिँ देस, करौं वह पूरन गर्त्त असेसैं[19] ॥ ४९ ॥
अहो बिधिनंदनं[20] आत्तबिबेकं[21], परंतु चहैं मम मानसैं[22] एक ॥
धरैं मम नामहु तीर्थ[23] सु धाम, मरुअद्रिअरण्य[24] बजैं मम नाम ॥ ५० ॥
वशिष्ठहु अक्खियं[25] यौं सुनि ताहि, यहै तव इष्ट सु स्वीकृत[26] आहि ॥

१ अर्बुद नामक सर्प २ पाताल में ३ श्रेष्ठ ४ वेग से ५ शक्ति के पिता (वशिष्ठ ऋषि के ज्येष्ठ पुत्र का नाम शक्ति है) ६ महाशय ७ इन्द्र के ८ वज्र ने ९ खड्डा खोदा १० जन्म से ही ११ चरणों से हीन (पाँगला) है १२ स्वतंत्रता से (अपने आप) १३ खड्डे को १४ सर्प १५ किसकारण से १६ खड्डे को १७ करना है १८ कल्याण १९ संपूर्ण २० हे ब्रह्मा के पुत्र २१ विवेक को ग्रहण करनेवाले २२ मन २३सो२४पर्वत और वन दोनों मेरे नाम से कहावें. २५ कहा २६है.

भयैं परिपूरन गर्त्तजे देस, वहै बजिहै तव नाम नगेस[2] ॥ ५१ ॥
अरण्य रु तीर्थ तवाऽऽंहय[3] छाप, महीतलकौं करिहै गतपाप ॥
महाबल अर्बुद व्हाँ [4]तसमात, चलो धरि पिट्ठि हिमालयजात[5]।५२।
इती सुनि अर्बुद भो मुनि सत्थ, गयो तु[6] हिमालय आलयँ[7] तत्थ॥
मिले गिरिनंदिय ओ वह नाग, रच्यो सुख पुच्छि बडो अनुराग ५३
कह्यो तब नंदिय हे अहि मित्र, मिले चिरकाल बिताइ सु चित्रं॥
करो अब जो मुनि जंपिउं काज, चलो मुहिं लै तँहँ पन्नगराज ५४

दोहा॥

सुनत नंदिबर्द्धनें[11] बचन, अर्बुद हिय मुद पाइ ॥
मुनिवर संग महीध्रकौं[12], चाल्लिय पिट्ठि चढाइ ॥ ५५ ॥
स्वारग्यक पँत्ते[13] सकल, नगँ[14]१पन्नग२मुनि३संग ॥
डारयो नंदिय खड्डमैं, गो[15] समाइ सब अंग ॥ ५६ ॥
अहि अर्बुद तब सिक्खलहि, डुंगर इम बि–डारि ॥
निजनगरी भोगावती[16], गो बिधि[17] प्रबल बिचारि ॥ ५७ ॥

षट्पदी

सब गिरि अंग समाइ रहिय अवसेस[18] नेंक्क[19] जब।
पुंहप[20] बुंठि[21] हुव पिहुल[22] त्वरित जय जय बानी तब ॥
[23]अवटोदर गत अद्रि गत्तँ[24] व्याकुल डगमग्गिय।
धरनि धुज्जि धसमसिय गाढ भूतन भय लग्गिय ॥
इम [25]अचल [26]चलत मुनिबर [27]अरहि हिय चिंते नुतिपुब्ब[28] हर[29] ॥
जय ईस उमाउर[30]आभरन सूल१ [31]कपर्द पिनाक[32] ३ धर ॥ ५८ ॥

१खड्डा पूर्ण होजाने से जो देश होवेगा वह तेरे नाम से कहावेगा२हे पर्वतों का ईश ३ तेरे नाम की छाप से ४इस कारण से५हिमालय पर्वत के बेटे को६ तब ७ घर ८ स्नेह ९ अच्छे चित्रामोंवाला १० कहाहुआ ११ आनन्द बढ़ाने वाले वचन १२ पर्वत को १३पहुंचे १४ पर्वत १५गयो १६ सर्पों की नगरी को १७ भाग्य को १८ बाकी १९नासिका २० पुष्पों (फूलों) की २१ वर्षा २२ बहुत २३ खड्डे के भीतर.२४शरीर२५पर्वत२६हिलते ही२७शीघ्र ही२८स्तुति पूर्वक२९शिवको३०हे पार्वती के उर का आभरण ३१ जटा जूट ३२ धनुष को.

॥ पद्धतिका ॥

जय जय महेस संकर जडाल, कंदर्प१ जलंधर२ त्रिपुर३काल ॥
गंगाकिरीट जय जय गिरीस, अजएक महानट अखिलईस ॥५९॥
रचनाप्ररोह जय संभु रुद्र, सिव जय अनादि करुणासमुद्र ॥
दुरितादिदलन जय बामदेव, दिवपट जय परिजितकामदेव ।६०।
जय गरलकंठ विभु गहन जोग, भव भर्ग्ग भीम जय त्यक्तभोग ॥
लय१ सर्ग२ चरित जय ऊर्द्धलिंग, प्रभु जय मित्रीकृत एक पिंग ६१
नुत अष्ट८ मूर्ति जय जय त्रिनैन, अगराज स्वसुर करबीर ऐन ॥
पावन एकांबक एकपाद, वृषकेतु भालदृग जय बिषाद ॥ ६२ ॥
हेरंबजनक जय अट्टहासि, बिबुधेस महाव्रत गुनविलासि ॥
जय मृड अनंत बिध्वस्तजाग, बिस्वांतरात्म साधितबिराग ॥६३॥
मायाअतीत जय अस्थिमाल, भावक अनिच्छ जय इंदुभाल ॥

जयइति। हेमहेश, शंकर, जडाल(समाधि में जड के समान)कामदेव जलन्धर असुर और त्रिपुरासुर के काल, गङ्गा है मस्तक में जिनके, कैलासपति, अजन्मा अद्वितीय महानट, सम्पूर्ण का ईश ॥५९॥ रचना उत्पन्न करनेवाले, शम्भु, रुद्र, शिव, अनादि, दयासागर, पापादि को नाश करनेवाले, वामदेव, आकाश ही है वस्त्र जिनके, जीता है कामदेव को जिन्होंने ॥ ६० ॥ जहर है कण्ठ में जिन के, व्यापक, गहरे योगी, भव, जगत् को पचानेवाले, भयानक, छोड दिये हैं भोग जिन्होंने, संहार और उत्पत्ति के करनेवाले ऊर्द्धलिंग प्रभु किया है कुवेर को मित्र जिन्हों ने ॥६१॥ स्तुति योग्य आठ [पृथिवी (सर्व) जल (भव) अग्नि (रुद्र) वायु (उग्र) आकाश (भीम) यजमान (पशुपति) चंद्रमा (महादेव) सूर्य (इशान)] मूर्त्ति है जिनकी, तीन नेत्रवाले, हिमालय है ससुर जिनके, श्मशान ही है घर जिनका पवित्र करनेवाला है एक नेत्र जिनके, एक है पग जिनके, (अर्द्धनारीनाटेश्वर स्वरूप में) बैल के चिन्ह की है ध्वजा जिनके, कपट के नेत्रवाले, विष को भक्षण करनेवाले, ॥ ६२ ॥ गणेश के पिता, अट्टाट्ट हास्य करनेवाले, देवताओं के ईश, बडे नियम के धारण करनेवाले, सतोगुणादि से विलास करनेवाले, मृड (सुखस्वरूप) अनन्त, दक्ष के यज्ञ का नाश करने वाले संसार के अन्तरात्मा, सिद्ध किया है वैराग्य को जिन्होंने ॥ ६३ ॥ मायारहित, हाडों की माला वाले, भावक (सत्तारूप) इच्छा रहित, चन्द्रमा है मस्तक पर जिनके.

सिपिविष्ट कलित बिचग्रह बिसेस, कल्पान्तनटन जय व्योमकेस६४

पावक हिरण्यरेता प्रसन्न, छबि सित महान अणु प्रकट छन्न ॥

सितिकंठ कृत्तिपट नित्यशुद्ध, पशु१प्रमथ२भूत३पति जय प्रबुद्ध।६५।

धूर्जटि करोटि १ खट्वांग २ धार, हेलाजित अंधक उरगहार ॥

श्रीखंड परसु थिरचर सहाय, कृतरुक्मअचल केलीनिकाय ।६६।

षट्पदी

जय महेश जोगेस निखिल अघफंद निवारक।

नित्य जरा१जनि २ रहित तथ्य जोगी जगतारक ॥

ईस फटिक अवदात भक्त भय भूरि बिभंजक।

जय सरनागत जगर बिबिध प्राकृत गुन व्यंजक ॥

ईसान नीललोहित अभय चंद्रचूड नन करहु चिर।

है विकल अद्रि बिल बिच हलत स्वस्थ करहु रहि तास सिर ।६७।

दोहा

इम वासिष्ठ वंदित अरहि, आये अच्युत ईस ॥

शिपिविष्ट(पशुपाते)धारण किया है विशेष शरीर जिन्होंने, कल्पान्त में नाचनेवाले, गङ्गा को धारण करने के लिये फैलाये हैं आकाश में केश जिनने ॥ ६४ ॥ विद्युताग्नि और होमाग्नि स्वरूप, सदा प्रसन्न रहने वाले, उज्वल छबि वाले, स्थूल और सूक्ष्म स्वरूप, प्रकट और छिपे हुए, नीलकण्ठ, मृगचर्म ही का है वस्त्र जिनके, सदा पवित्र, पशुपति, प्रमथ [पारिषदगण] पति, भूतपति, सदैव जागृत ॥ ६५ ॥ भार रूप हैं जटा जिनके, कपाल और खट्वाङ्ग(जिसके ऊपर मनुष्य का मस्तक लगा होवे ऐसा दण्डा)को धारण करने वाले, लीला से ही जीत लिया है अन्धकासुर को जिनने, सर्पों के हारवाले,शोभायुक्त खण्डन करने वाला है परशु (कुठार) जिनके, स्थावर जंङ्गम के सहायक, किया है धतूरे ने अचल जिनको, क्रीडा के घर॥ ६६ ॥ हे योगियों के ईश, महादेव संपूर्ण पाप फन्दों को दूर करने वाले जन्म और बुढापे से सदा रहित सच्चे योगियों को संसार से तारनेवाले स्वामी स्फटिक के समान उज्वल, भक्तों के भय को अत्यन्त नाश करने वाले, हे शरणागतों के कवचं नाना प्रकार के सांसारिक गुणों को जानने वाले हे शिव अभय ऐसे हे चन्द्रचूड [चन्द्रमा है मस्तक में जिनके]आपकी जय हो विलम्ब मत करो विकल होकर पर्वत बिल में हिलता है जिसके सिर पर रहकर अचल करो ॥ ६७ ॥५ शीघ्र ६निविकार.

जान्यों व्याकुल ताप[1]जुत, गड्ढे[2] हलत गिरीस[3] ॥ ६८ ॥

बुल्ले मुनिवर पयन परि, हे हर निखिल[4] निवास॥

कंपत गिरि निश्चल करहु, बिरचि सिखर निजवास ॥ ६९ ॥

षट्पदी

भक्त भीरु[5] भूतेस पानि सिर धरि गिरि चंपियं[6] ।

अचल अचल पुनि अचल जाप वारत्रय ३ जंपियँ[7]॥

श्रृंग तास रचि वास नाम अचलेस कहायउ ।

बलि[8] तँहँ त्वरित बसिष्ट बिबुध[10]१मुनि[9] २तीर्थ ३ बुलायउ ॥

जो जो करार किय सैल सनें[11] सोहि उपक्रमें[12] सब सजिय ।

संभरेनरेस[13] धारहु श्रवन[14] इम अर्बुदे[15] गिरि उप्पजिय ॥ ७० ॥

दोहा ॥

नंदीसुत तुहिनांगको[16], आन्यों अर्बुदे[17] नाग ॥

इहिं कारन अभिधान[18] हुव, भोगीको गिरि भाग ॥ ७१ ॥

नाग तीर्थ आदिक बहुत, तीर्थ भये गिरि सीस ॥

कहिहैं तजि ३राशिमें, महिमा तास महीस[19] ॥ ७२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशौ पाताल गङ्गाप्रवहन-नन्दिनीसमुद्धरण-वाशिष्ठहिमवद्याचन -तन्नन्दिवर्द्धननिवेदन-तदर्बुदाचलस्थापनं द्वितीयो मयूखः ।२। आदितः सप्तविंशः २७॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा

१सन्ताप २ खड्डे में३ शिव ने४सबका५भक्तों के लिये कायर६दबाया ७कहा ८शिखपर ९ पुनि १० देवताओं को ११ से १२ आरम्भ १३ हे चहुवाण राजा सुनो १४ आबू १५ हिमालय पर्वत १६ अर्बुद नामी सर्प ने १७ नाम१८ उस अर्बुद सर्प के नामसे १९ हे भूपति

इति श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के दूसरे राशि में पातालसे गङ्गा प्रवाह के साथ नन्दिनी गौ का निकलना वाशिष्ठ ऋषि का हिमालय से याचना करना उससे नन्दिवर्द्धन का दिया जाना तिससे आबू पहाड़ का स्थापन होने का दूसरा मयूख समाप्त हुआ। आरम्भ से सत्ताईस मयूख हुए ॥

॥ दोहा ॥

अर्वटमध्य गिरि थप्पि इम, अर्बुद करि अभिधान ॥
अति पवित्र पुनि तिंहिं करन, किय सब कथितं[2] प्रमान ॥ १॥

षट्पदी ॥

इंद्र१अग्नि२जमराज३प्रथितं[3] निर्ऋति[4]४ कुपीटपति[5]५।
अनिल ६ऐलाबिल[6]७ईस८थप्पि गिरितटन महामति ॥
तुषित१साध्य२बसु३बिश्व४बुल्लि[7] आदित्य५मरुद्गन६।
आभास्वर७अभिधेय महाराजिक८सम्मदसन ॥
इत्यादि देव१ तीरथ२ अखिल थलपावन तँहँ थप्पि दिय ॥
पब्बयं[11] करार मुनि चिंति पुनि करन सत्रं[12] आरंभ किय ॥ २ ॥
बन पावन यह होहु नाम अर्बुद प्रसिद्ध भुव ।
इम बिचारि मनधारि रचे अध्वरं[13] अनेक ध्रुव ॥
जब जब अवसर मिलिय आय तब तब अर्बुद गिरि ।
करन तास उपकार सत्र दीक्षों[14] लिय फिरि फिरि ॥
इम होत गये जुग बित्ति बहु सप्ततंतु[15] बिधि अनुसरत ।
मुनिबर वसिष्ठ त्योंही रहे अंगीकृत्त[16] पालन करत ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

छ६मनु गये या कल्पके, बिधि के बासर[17]मांहिं ॥
बैबस्वत सप्तम७लग्यो, बिद्यमानं[18] अब आंहिं ॥४॥
गये महाजुग याहुकौं बरतत सत्तावीस २७॥
तिन अग्गैं इक१कृत गयो, इक१त्रेता अवनीसं ॥५॥
तीजे३द्वापर चरनके, मूल अब्द कढि जात ॥

१खड्डा२कहने के अनुसार ३प्रसिद्ध ४ दिक्पाल (नैऋतकोण का पति) ५ वरुण (जल का पति)६कुबेर(इलविडा का पुत्र)७बुलाकर८नामवाले९ मोद से १० सब११पर्वत को १२यज्ञ१३यज्ञ१४यज्ञ की दीक्षा (नियम पूर्वक यज्ञ में लगना)१५यज्ञ की१६स्वीकार कियेहुए का१७दिन १८वर्तमान (मौजूद) १९ है २० वैवस्वत मनु के सत्ययुग २१ हे भूपति२२ हे भूपति २३ सन्ध्या के वर्षों को छोड़कर मूल के वर्ष

रहत सेसं संध्यांसं कछु,मचे अवनि उतपात ॥ ६ ॥
ते बानासुरके तनुंज,धूम्रकेतु १ अरु जंभ २ ॥
बिधिके बर अतिसंय बढे, द्विजन हनत सह दंभं ॥ ७ ॥
प्रबल निर्गम मग उत्थपत , थप्पत अ सब थान ॥
उतरत द्वापर जे असुर , गये अवनि अकुलानँ ॥ ८ ॥

षट्पदी ॥

तिनहु दिनन मुनिवर बसिष्ठ बहुरिहु लहि अवसर ।
रचिय सत्र आरंभ आनि अर्बुदगिरि उप्पर ॥
वर्तुलं कुंड १बिधायं यूपं२ मंडप३ आच्छादित ।
आज्यांदिक उपकरंन सकल होमन किय संचितं ॥
सब मुनि निमंति बुल्ले सजवं बिबिधं रूप १ अभिधान२ बर ।
तिन्ह नाम सुनहु चहुवानमनि रामसिंह इक्कछत्रधर ॥ ९ ॥

॥ पद्धतिका

मुनिबर मरीचि१पुलह२रु पुलस्त्य३,
क्रतु४अत्रि५अंगिरा६मित अगस्त्य ७ ॥
आत्रेय८ कुसंारशि ९ कपिल १० आय,
सनंकादि चउ ४। १४ रु कश्यप १५ सुभाय ॥ १० ॥
नारद १६ ऋचीक १७ भृगु १८ च्यवन १९ नाम ,
प्राचेतंस २० व्यास २१ रु परसुराम २२ ॥
जोगेस्वंर २३ पाणिनि २४ गाधिजांत २५ ,
खगम २६ रु उतत्थ्य २७ जमदग्नि २८ ख्यात ॥ ११ ॥

---

१ बाकी २ सन्ध्या के वर्षों का कुछ अंश (एक युग उतर कर दूसरा लगै जिनके बीच के समय को युग सन्ध्या कहते हैं) ३पुत्र ४ अत्यन्त ५ छ— (अन्तःकरण में कपट और बाहर धार्मिकता दिखानेवाले को दंभी कहते हैं) ६वेद के मार्ग को ७ व्याकुल करने के लिये ८ गोलाकार ९ रचकर १० यज्ञ के खम्भे को ११घृत को आदि लेकर १२ सामग्री १३ इकट्ठी १४ नूंना भेजकर१५शीघ्र१६नाना प्रकार के रूप और श्रेष्ठ नामों वाले १७ दुर्वासा १८ सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार१९वाल्मीकि२०याज्ञवल्क्य २१ विश्वामित्र

एकत २९ द्वित ३० चित ३१ गालव ३२ कणाद ३३ ,
आसुरि ३४ अकृतव्रण ३५ अक्षपाद ३६ ॥
उद्दालक ३७ देवल ३८ असित ३९ ऐल ४०,
पर्वत ४१ ऋभु ४२ मुद्गल ४३ गर्ग ४४ पैल ४५ ॥१२॥
कौंडिन्य ४६ परासर ४७ थूलकेस ४८ ,
जिम दाल्भ्य ४९कवस ५० सौभरि ५१ द्विजेस ॥
वामन ५२मेधातिथि ५३ इध्मवाह ५४ ,
उसनाँ ५५ रु बृहस्पति ५६ अतिउछाह ॥ १३ ॥
पंचासिख५७पतंजलि५८पिप्पला ५९मांडव्य६०चणक६१मुनि अप्रमाद
बसु६२दम६३कात्यायन६४चैत्य६५जानि,
खग६६कंबु६७सतानंद६८हु बखानि ॥ १४ ॥
नलि६९थूलसिरा७०सकटाक्ष७१नाम,
थूलाक्ष७२यवक्रीत७३ ,अकाम ॥
सांडिल्य७४भरत७५सरभंग७६सौम्य७७,
धृति७८जन्हु७९कण्व८०रु मतंग८१धौम्य८२ ॥ १५ ॥
संवर्त्त८३साकटायन८४सुमंतु८५,
जाबालि८६कुत्स८७आपिसलि८८जंतु८९
जैमिनि९०सुभांड९१मधुछंद९२जानि,
मित्राबरुण९३रु लोमस९४प्रमानि ॥ १६ ॥
सातातप९५वत्स९६रु और्व९७संत,
मैत्रेय९८सुनक९९सौनक१००महंत ॥
भागुरि१०१मुनि आपन्वान१०२भव्य,
हारीत१०३अथर्वा१०४सालिहॅव्य१०५ ॥ १७ ॥
संख१०६लिखित१०७अरुण१०८रु बीरसेन१०९,
ज्यौं पालकाव्य११०श्रीसुक१११द्विजेन ॥
द्विजसालंकायन११२चंद्र स११३,

१गोतम २कालमेध ३शुक्र ४ शालिहोत्र ५ ब्राह्मणों में सूर्य

सुचि११४कवि११५मृकंड११६आहूतसत्त ॥ १८ ॥

दोहा

भुवन११७सुधन्वा११८मित्रभू, ११९भूति१२०सुवर्चा१२१साति१२२
पार१२३मंकि१२४तुंबुरु१२५प्रमद१२६,सुकृस१२७समीक१२८सुकांति
सुमेधा१२९रु ऋतवाक१३०सुभ, सुतपा१३१बिपुलस्स्वान१३२ ॥
बलि निवृत्तचेता१३३बिबुध,ब्रह्ममि¯१३४मतिमान ॥ २० ॥
सुसामा१३५रु सोमश्रवा१३६,ऋष्यसृंग१३७अभिरूप ॥
आर्ष्टिसेन१३८वृहदश्व१३९अरु,भारद्वाज१४०हु भूप[२] ॥ २१ ॥
मुनि कामंदक१४१गृत्समद१४२, आपस्तंब१४३उदार ॥
अष्टावक्र१४४शिलूष१४५अरु, सरद्वान१४६तपसार[३] ॥ २२ ॥
मुनि अरिष्टनेमि१४७हु सुमति,बैसंपायन१४८बुद्ध ॥
दीर्घतमा१४९असुहोत्र १५०द्विज,इंद्रप्रमद१५१अलुब्ध ॥ २३ ॥
कक्षीवान१५२रु प्रस्कणव१५३,आग्निवेश्य१५४बालिबर्ण्य ॥
जैगीसव्य१५५सुदर्सन१५६रु, बर्द्धन१५७जातूकर्ण्य१५८ ॥ २४ ॥
वेदसिरा१५९कच१६०प्रमति१६१बलि, सार¯वत१६२रुरु १६३सिद्ध
मल्लिनाग१६४इत्यादि मिलि, आये मुनि तपइद्ध ॥ २५ ॥
स्वागत किन्न समस्तको,मिलि बसिष्ठ सनमानि ॥
सत्र रचन लग्गे सुमति,अद्रिकूट तत आनि ॥ २६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीयश्राशौ मुनिसमाव्हयनवशिष्ठदीक्षाग्रहणसत्रप्रारम्भणं तृतीयो ३ मयूखः ॥ ॥
आदितोऽष्टाविंशः २८ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा

१यज्ञ में बुलाये हुए२हे राजा३तप ही बल जिनके४पण्डित५निर्लोभी ६मुनि ७ तप से निर्मल ८ आये हुओं का आदर ९ यज्ञ १० पर्वत के शिखर पर ॥

श्री वंशभास्कर के महाचम्पू के पूर्वायण के दूसरे राशि में मुनियों का बुलाना वशिष्ठ ऋषि का यज्ञ दीक्षा लेना और यज्ञ का आरम्भ होने के वर्णन का तीसरा मयूख समाप्त हुआ. और प्रारंभ से अट्ठावीस मयूख हुए ॥

दोहा

उत बानासुर सुत उभय२, प्रबल बढे बर पाइ ॥
अर्बुदगिरि तट मुनिन इत, आरंभिय मख आइ ॥ १ ॥

षट्पदी

उत सोदर दुव२असुर बढे दारुन बिरिंचि बर[2] ।
दीक्षित[3] सुमुनि बसिष्ठ रचन लग्गे इत अध्वर[4] ॥
बासिष्ठी[5] जल छिरकि कोस बारह१२मित[6] मण्डल ।
सीमा बन करि सुद्ध थप्पि जूपादि[7] उचित थल ॥
निज निज निकाय[8] थित रक्खि नुत[9] सुर[10]१तीरथ२दिकपाल३सब ।
अचलेस पूजि अक्खिय अरज आवन विघ्न न देहु अब ॥ २ ॥
इम अवहित[11] मुनिराज लगे बिरचन बिधान मख ।
कुण्ड मध्य विधि[12] कलित[13] धर्यो मंत्रित समीर[14]सख ॥
अद्रितुंग[15] उपहार[16] समिध[17]१आज्यादिक[18]२संजुत ।
महँघे द्रव्य मिलाइ हव्य[19] उत्तम अनेक हुत[20] ॥
भृगुनंद च्यवन१ब्रह्मा[21]२भये होता[22]१मुनि जाबालि२जँहँ ।
सामग[23]३अगस्ति३द्विजबर सुमति तिम ऋचीक४अध्वर्यु[24]४तँहँ ।३।
ऋत्विज[25] मुनिबर इतर लगे श्रुतिध्वनि उच्चारन ।
स्वाहा१फट्२बषडा३दि नाद छायो स्वर तारन ॥

१सगे भाई२ब्रह्मा के वर से३दीक्षा लेकर४यज्ञ५वशिष्ठ के पुत्र ने६प्रमाण७यज्ञ स्तंभ आदि८स्थानपर९स्तुति योग्य१०देवता॥२॥इस प्रकार११सावधान होकर वशिष्ठ मुनि यज्ञ विधान करने लगे १२ ब्रह्मा की१३आज्ञा से यज्ञ कुंड में १४अग्नि स्थापित किया१५और ऊंचे पर्वत की ओर से१६भेट की हुई१७होम की लकडियों को१८ घृत आदि के साथ मंहगे अनेक उत्तम पदार्थ मिलाकर १९ होम ने योग्य वनाकर२०होम किया तहां पर भृगु के पुत्र च्यवन तो२१ ब्रह्मा (सब वेदों को जानने वाला) ऋत्विज हुए. जाबाली२२होता(ऋग्वेद के मंत्रों से देवताओं का आवाहन करके होम करने वाला)हुए.अगस्त्य२३सामग (सामवेद के मंत्रों से होम करनेवाला) हुए. तैसे ही श्रेष्ठ ब्राह्मण बुद्धिमान् ऋचीक२४अध्वर्यु (यजुर्वेद के मंत्रों से होम करनेवाला) हुए ॥३॥२५बाकीके ऋत्विज (यज्ञ में१६ऋत्विज होते हैं जिनमें चार तो ऊपर बता ये बाकी१२रहे जो)

सुचि१हविष्य२संजोग अर्चि उट्ठिय अंबर लग।
हवनगंध आघ्राइ आइ इन्द्रारि ऊर्ध्वमग ॥
आज्ञेयँ१पललं२बल्लूर३अरु दूंष्य४मेदँ५कीकस६बरसि ॥
किलकारि सिंह आरावँ करि दियउ त्रास दितिजनँ दरसि ॥४॥
कचँ १कौसिकँ२पुनि गोदँ३ बंक्रि४ मज्जाभव५कर्परद६।
धमनि७पिष्टि का८किट्टँ९मूत्र१०बर्च क११भस्म१२भर ॥
सृणिका१३ रु सिंहाण१४ नखर१५ पिंजूसन१६ डारत।
सप्तंतंतु करि भ्रष्ट फिरत गर्जत किलकारत॥
बलि उपल१ मद्य२ रज३ बृष्टि करि मेटि हवन बिस्तारि नंत॥
बुझवाइ बन्हि कुंडहिं गये सर्व मुनिन करि सोकरत ॥ ५॥

दोहा

धूम्रकेतु१अरु जंभ२इम, असुरन कटक उपेत ॥
गिरि अंध्वर लुट्टि रु गये, चलितभये मुनिचेत ॥ ६ ॥
हतसंकल्प वसिष्ट व्है, अखिलन करि एकत्थ ॥
सत्रमंत्र सोधनलगे, समय देस गुन सत्थ ॥ ७ ॥

और श्रेष्ठ मुनि वेद ध्वनि उच्चारण करने लगे तब स्वाहा फट् वषट् आदि होम के इन शब्दों का नाद ऊंचे स्वर से छा गया १ अग्नि और होम की वस्तुओं का संयोग होने से २ ज्वाला ३ आकाश तक उठी उस होम की गन्ध को ४ सूंघकर ५ इन्द्र के शत्रु ६ आकाश मार्ग से आये ७ रुधिर ८ मांस ९ सूखा मांस रांध (पीप) मज्जा और हड्डियों की वर्षा करके सिंह के समान शब्द कर दैत्यों ने दृष्टि में आकर भय दिया ॥ ४ ॥ केश, मज्जा, भेजा, पांसली, वीर्य खोपरी नसें दांतों का मल. शरीर का मल, मूत्र विष्टा, खाक भरके लाल नासामल (सेड़ा) नख, कान का मल [मली] डालकर यज्ञको भ्रष्ट करके किलकियें करके गाजते फिरने लगे, फिर पत्थर, मदिरा रेत की वर्षा कर यज्ञ को मेटि अपना मंत फैलाय, अग्नि कुंड को बुझाय संपूर्ण मुनियों को शोकलीन कर गये ॥ ५ ॥ धूम्रकेतु और जंभासुर इस रीति दैत्यों की सेना के साथ आबू पर्वत के यज्ञ को लूट कर गये तब मुनियों के चित्त चलायमान हुए ॥ ६ ॥ अपने संकल्प का नाश होने पर वशिष्ठ सबको इकट्ठा कर देश, काल और गुण के साथ यज्ञ करने की सलाह करने लगे ॥ ७ ॥

तोटकम् ॥

सबही मुनि सोचत मंत्र करैं, यह अध्वर पूरन क्यों निवरैं ॥
बल पाइ अदेव[2] अजेय भये, बिधिसौं बर लै पद उच्च गये ।८।
बिसतारत कर्म अधर्म फिरैं, नहिँ कोउ इहां इनसौं जु भिरैं ॥
नहिँ गाधि१ययाति२महीपति जे,नहिँ सृंजय३सैव्य४महामति जे ९
नहि नाप५भलंद६बलीक्षुप७है, न मरुत्त८महारन लोलुप है ॥
खनिनेत्र९खनित्र१०करंधम११नाँ,रु अवेक्षत१२धुंधुजई१३दम१४नाँ

नहि ऐल१५दिलीप१६रघू१७नल१८से,
नहिँ संकृति१९राम२० हद्दल२१से ॥
नहिँ नाभि२२प्रियव्रत२३आज मही,
हरिश्चंद२४सुसेन२५सुभूम२६नही ॥ ११ ॥
अनरण्य२७सुहोत्र२८मनु२९ध्रुव३०नाँ,
कुरु३१त्यौं सिवि३२कंक३३त्रिसंकुव३४नाँ ॥
न बृहद्रथ३५श्वेत३६उसीनर३७है,
न भगीरथ३८संभु३९जदू४०पर४१है ॥ १२ ॥
बल४२अर्क४३निमी४४द्रुम४५त्यौं गय४६नाँ,
ससबिंदु४७अनू४८जनमेजय४९नाँ ॥
युवनाश्व५०न पुंड्र५१बडो कुरु५२त्यौं,
न सुचिव्रत५३बंधु५४बृहद्गुरु५५त्यौं ॥ १३ ॥
अणुहाख्य५६न अंग५७बिजै५८परसू५९,
सगराख्य६०न सुक्रतु६१देव६२बसू६३॥
कृतवीर्य६४सर्चा६५तप्तांबर६६नाँ,
मदनो६७भरतो६८हयकंधर६९नाँ ॥ १४ ॥

सुरलोक बसे गुरु[3] भूप सबै,इनकौं जुरि मारक कोन अबै॥
कछुही बिधि जो नहिँ ए मरिहैं,भुव तो अघके भरसौं भरिहैं॥ १५ ॥
नहिँ आसय[5] एक१हि अध्वर[6]को,उपजैं दुख देवनलौं डरको ॥

१सलाह२दैत्य३बड़े राजा ४भार५ अभिप्राय ६ यज्ञ

इक[1] अध्वर जो न असेसे बनैं,तब संकि द्वितीय[2] हिं कोन तनैं ॥ १६॥
इम सत्रबिधान सबै बिगरैं;तब इंद्रहु उग्र[3] बिपत्ति भरैं ॥
बिधि देवन अन्न रच्यो मखही,यह रीति अनादि सदा निबही ॥ १७ ।
जब देव नहीं मखभाग लहैं, तब वृष्टि बिनाँ सब लोक दहैं ॥
अरु अप्पन लोक अनामय[4] कों अब को बिधि दूर करैं भयकों ॥१८॥
बिधिको बर ज्यों नहि नष्ट परैं,तिम जो कछु भेद गली निकरैं॥
तब साध्य[5] उपाय चतुष्टय४जो, दम१सांत्वन२भेद३रु दान४सजो ।१९॥
अथवा अब दंडहि श्रेय[6] बली,करि जो इन्ह मारहु सोहि भली॥
अरु अप्पन जो न उपाय करैं,तब संसृति[7] को हित कोन धरैं।२०॥
नहिं अर्थहि[8] अध्वर है करनौं,सबको भय अप्पनकौं हरनौं ॥
इनके डर जो मखहू न करैं,तब लोकनमैं महिमा बिगरैं ॥ २१ ॥
ताकि बास्तव जो महिमा न चहैं,श्रुतिसासित सत्र अपूर्ण रहैं ॥
अरु एकहि अध्वर है न यहै,करने बहुतैं किम जे निबहै ॥ २२ ॥

हठि[12] अप्पन जो तिन्ह प्रान हरैं,बिधिको अपराध असह्य परैं ॥
अरु है द्विज धर्म न एह सही;कब हिंसकता इन्हैं[13] सील कही।२३।
अब व्यर्थ कहा हठ आग्रहसौं, मिलि पूछहु मंत्र पितामह[14] सौं ।
करिबे कछु तर्क गली कहिहैं, करि सो अरिनास क्रिया लहिहैं॥२४॥

दोहा

इम ईंकत मुनिवर अखिल, सुमति मंत्र[16] संलापि ॥
पुनि पैत्ते संभ्रम७भवन, बिधि पुच्छन मत थापि ॥ २५ ॥

नाराचम्॥

---

१ संपूर्ण २ यज्ञ ३ भारी ४ रोगरहित(वर्षा नहीं होवे तो नैरोग्यता नहीं रहती इस भय को किस रीति से दूर करें) ५ होने योग्य चारउपाय-दण्ड, साम, भेद और दान हैं सो करो) ६ श्रेष्ठ (अथवा इनमें बलवान् दण्ड ही श्रेष्ठ है) ७ संसार का ८ यहीं यज्ञ नहीं करना है अर्थात् अनेक जगह करने हैं ९ यज्ञ १० परमार्थ ११ वेदोक्त (वेद में कहाहुआ) १२ हठपूर्वक १३ ब्राह्मणों को१४ब्रह्मा से१५इकट्ठे होकर १६ सलाह १७ कहकर१८पहुंचे१९सत्यलोक में

गये बिचारि यौं मुनीस सत्यलोकईसपैं,
जहाँ बिरिंचि[1] राजमान[2] सर्व सर्ग[3] सीसपैं॥
जहाँ न लोभ क्रोध मोह ब्रह्मबाद[4] ही रहैं,
जहाँ समस्त बासना मनोबिकारकी दहैं ॥२६॥
जहाँ षडंग[5]६बेद च्यारि४देह धारिकैं बसैं,
जहाँ छ६ऊनबीह[6]१४ सक्क[7] दीह इक्क१ मैं नसैं ॥
तहाँ मुनीनको समूह जाय द्वारपैं ठयो,
निवेदि सावकास जानि द्वारपाल लै गयो ॥ २७ ॥
प्रणाम्य अंजली[8] उपेत जाय व्हाँ खरेरहे,
बहोरि कंजभू[9] निदेस[10] पीठ[11] सर्वनैं लहे ॥
कह्यो हिरंण्यगर्भ[12] मंदहास[13]कैं मुनीनसौं,
समस्त तात[14] क्यों दिखात चित्त सोकलीनसौं ॥ २८ ॥
बिरिंचिसौं सुनैं इती कह्यो बासिष्ठ१उच्चर्यो,
तनूज[15] बान दैत्यके त्रिलोक व्याकुली कर्यो ॥
किये स्वतंत्र आप जे बलिष्ठ ईष्ट[16] दो२नदै,
न अध्वरादि[17] कर्म जे प्ररुष्ट[18] दुष्ट होनदै ॥ २९ ॥
त्रि३कालबोध[19]हू सुनौं हमैं जु सत्र[20] जो रच्यो,
अतीत[21]कालतैं नृलोक[22] खात इक्क हो खँच्यो[23] ॥
सु सक्र संब[24]के प्रभाव भिन्न भो पतालसौं,
परी मदीयँ[25] गाइ जाइ ताहिमैं बिहालसौं ॥३०॥

१ब्रह्मा २ शोभायमान ३ सृष्टिके ४वेदपाठ ५शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त छन्द ज्योतिष ये छः वेद के अंग हैं जिन सहित चारों वेद ६ चौदह (छः हैं कम जिसमें ऐसे बीस) ७ इन्द्र ८ हाथ जोड़कर ९ब्रह्मा की १० आज्ञा से ११ आसन १२ ब्रह्मा ने १३ करके १४ हे पुत्रो १५ पुत्र १६ दोनों को वरदान दे-कर १७यज्ञादि १८ क्रोध युक्त (रूसे हुये) १९ हे ब्रह्मा (भूत, वर्तमान, भ-विष्य, तीन समय का बोध है जिनको) २० यज्ञ २१ गतसमय २२ मनुष्य लोक में एक खड्डा था २३ खुदा हुआ २४ इन्द्र के बज्र के २५मेरी

लइ सुधेनु कढ़ि मैं बिधाय गंग बिन्नती,
परैं जु भूत ओर तो कढैं न पाइ दुर्गती ॥
सु खात तात नंदि नाम अद्रि आनि पूरयो,
रु देस पै पवित्र होन नेम सत्रको लयो ॥ ३१ ॥
तिन्हैं जु सत्रहू दयो बिगारि बेग आयकैं,
रु हैं अतीव मत्त आपतैं अभीष्ट पायकैं ॥
तिं लोकपाल थान छिन्नि ईस अप्पकौं चहैं,
अहं१ममत्व२मूढ जेम अप्प देहकौं कहैं ॥ ३२ ॥
बर प्रदानके प्रभाव बेदधर्म यौं छुपैं,
अबोध के प्रभाव ज्यौं प्रबोध लीनता लुपैं ॥
कृपा अतीव शावरी सु विश्ववृत्ति वे हरैं,
स्वयंप्रकास१जोगसौं क्रिया प्रधान२ज्यौं करैं ॥ ३३ ॥

दोहा ॥

गर्ग१कह्यो तिन्हें नासको, निश्चय हमहिं न आँहिं ॥
गनित बिना कछु रासिगत, निश्चित ज्यौं ग्रह नाँहिं ॥ ३४ ॥
ज्यौं चलकेंद्र कुजादि जुत, ससि रबिके नहिं संग ॥
त्यौंहिं करत यह लोक तजि,भुवननकौं खल भंग ॥ ३५ ॥
उदय अस्त औरादि५के, याही केंद्र अधीन ॥

१सो (वह)खड्डा२यज्ञ करने का३वरदान४ते (वे)५अपने को ६ यह मैं हूं७य ह मेरा है ८ अज्ञान अथवा अविद्या ९ ज्ञान में लीन होना १० संसार की जीविका को ११ योग स्वयं प्रकाश है परन्तु उससे भी क्रिया (कर्म) मुख्य हो जाती है ॥३३॥ गर्ग ने कहा कि कौनसा ग्रह कौनसी राशि में गया यह गणित किये विना निश्चय नहीं होता इसी प्रकार उन दैत्यों के नाश का हम को निश्चय नहीं है ॥ ३४ ॥ जैसे भौमादि के (मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर) के चलकेन्द्र (शीघ्रकेन्द्र) हैं और सूर्य चन्द्रमा के साथ चलकेन्द्र नहीं अर्थात् स्पष्ट गणित में सूर्य चन्द्रमा का मंदकेन्द्र से ही संबंध है, चल से नहीं, तैसे ही ये दैत्य संसार का साथ छोड़कर भूमि आदि भवनों (लोकों) का भङ्ग करते हैं ॥ ३५ ॥ मंगल आदि पांच ग्रहों का उदय अस्त और वक्रमार्ग इसी चलकेन्द्र के आधीन है इसी प्रकार उन

तिन्के बस भवभूत त्यौं, किय बिधि सुन बिधि कानि ॥३६॥
कोन गली गहि बर दयो, कहैं परैं भ्रम थाग ॥
रवि सपातें भुजलैव बिनु न, निश्चित ससि उपराग ॥ ३७ ॥
ते लवहूं मनु १४ मानसौं, ज्यौं ज्यौं पावत ऱ्हास ॥
त्यौं त्यौं अति उपराग अरु, लव न रहैं खग्रास ॥ ३८ ॥
त्यौंही तिन पर रावरो, ज्यौं ज्यौं अल्पप्रकोप ॥
त्यौं त्यौं वे अतिही बढत, लाज धर्म करि लोप ॥ ३९ ॥
भरत६ कह्यो बर एरिसो, दै सरजहु जिन भीति ॥
गुरु२ लघु१लघु१गुरु२ ऽ।।ऽ क्यौं करहु, ताल चाचपुट रीति ।४०।
दैत्यकुली इक स्वरन बिच, है निषाद७ सुहि तिक्ख ॥

दैत्यों के वंश में संसार के प्राणियों को किया सो हे ब्रह्मा यह विधि नहीं की ॥ ३६ ॥ आपने किस गली से वरदान दिया है सो आपके कहने से ही भ्रम की थाह पडेगी, क्योंकि राहु सहित सूर्य के भुज (गणित की एक क्रिया का नाम है) के अंशों विना चन्द्रमा के ग्रहण का निश्चय नहीं होता ॥ ३७ ॥ वे भुज के अंश चौदह के प्रमाण से जैसे जैसे न्यून होते जावेंगे त्यों त्यों चंद्रमा का विशेष ग्रहण होता जावेगा और अंश नहीं रहे केवल कला विकला मात्र ही रहे तो खग्रास हो जाता है ॥३८॥ इसी प्रकार उन दैत्यों पर आपका क्रोध न्यून होता जाता है ज्यों ज्यों वे (दैत्य) लज्जा और धर्म का लोप करके अत्यंत बढते जाते हैं ॥ ३९ ॥ भरत मुनि ने कहा कि ऐसा वरदान देकर भय उत्पन्न मत करो सङ्गीत के चाचपुट (इसका सविस्तर वर्णन भरतप्रणीत नाट्य शास्त्र के ३१वें अध्याय में देखो)नामक ताल की तरह गुरु को लघु और लघु को गुरु क्यों करते हो ॥४०॥ सातों स्वरों में दैत्य कुलवाला सातवां स्वर एक निषाद ही है सो ही तीक्ष्ण है (जिस स्वर के साथ जितनी श्रुतियां हैं वे सब उसके साथ लगा दीजाती हैं तभी वह तीक्ष्ण होता है उन सब में निषाद इस कारण से तीव्र माना गया है कि किसी स्वर के साथ तीन, किसी स्वर के साथ चार और किसी किसी के साथ पांच श्रुतियां हैं जिन सबके लगादेने से वे तीव्र होते हैं और इस निषाद के साथ केवल दो श्रुतियां हैं जिनके लगाने से ही तीव्र होता है और इसके साथ दोनों श्रुतियां लगाई जाती हैं तभी इसका उच्चारण होता है इस कारण से इसको सदैव तीव्रही माना है) ऐसे ही ये दैत्य भी आपके वरदान से बढकर तीक्ष्ण हुए तब श्रुति (वेद) की शिक्षा क्यों न घटे. भावा-

वे दैत्यहि वरलह्द तब, क्यौं न घटैं श्रुतिसिक्ख ॥ ४१ ॥
उच्च२ नीच१ अरु नीच१ कौं, उच्च२ करहु जिन देव ॥
भयो न्याय तिन्ह वर मिलत, च्यावितगमक स एव ॥ ४२ ॥
बर दैबोहि बुरो सदा, जानि दुष्टतम जाति ॥
ज्यौं प्रातहि कपिकान्डा१, अरु भैरव अधराति॥ ४३ ॥
गानमाँहिं ज्यौं अंस२ स्वर, पुनि पुनि आवत जात ॥
वे खल त्यौं सब धर्मको , पुनि पुनि करत निपात ॥४४॥
आरोही स्वरतैं अधिक, उच्च बढे लहि दाव ॥
कबलग तिनको रक्खिहो, थाईलौं थिरभाव ॥ ४५ ॥
नित्यदोसं ज्यौं उर दहत, काव्यबिगारनहार ॥
यौंही सब जगको अहित, दैत्यनको उपकार ॥ ४६ ॥

र्थ यह है कि दैत्यकुली होने के कारण से ही निषाद स्वर के साथ भी श्रुतियां घट गई हैं ॥ ४१ ॥ हे देव ऊंचे को नीचा और नीचे को ऊंचा मत करो उनको वर मिलने से च्यावितगमक न्याय हो गया ॥ ४२ ॥ अत्यन्त दुष्ट जाति को वर देना सदैव बुरा है जैसे हनुमान के मत का कानडा रागजिसके गाने का समय आधीरात का है उसको प्रभात में; और भैरव का समय प्रभात का है जिसको आधीरात में गाना बुरा है ॥ ४३ ॥ गाने में जैसे अंशस्वर (स्वर तीन प्रकार के होते हैं जिनमें जहां से स्वर उठै उसको गृह और जहां जाकर स्वर ठहरे उसको न्यास,और जो वार वार आता रहे उसको अंशस्वर कहते हैं) वार बार आता है तैसे ही वे दुष्ट धर्म का बारबार नाश करते हैं ॥ ४४ ॥ वे दुष्ट आरोही स्वर (प्रथम स्वरसे सप्तम स्वर तक जो क्रम से चढता है उसको आरोही और सप्तम से प्रथम स्वर तक क्रम से पीछा उतरता है उसको अवरोही कहते हैं और एक स्वर में वारंवार उसी स्वर का प्रयोग हुआ करै उसको स्थाई कहते हैं) से भी अपना दाव पाकर अधिक बढ गये हैं तो अब कहां तक स्थाई स्वर के समान उनको स्थिर रक्खेंगे ॥ ४५ ॥ काव्य का बिगाडनेवाला नित्यदोष (काव्य में जो दोष हैं उनकी तीन अवस्था हैं कि,कहीं तो दोष ही गुण हो जाता है, कहीं उनका दोष मिट जाता है और कहीं दोष ही बने रहते हैं इसी तीसरी अवस्था को नित्यदोष कहते हैं) जैसे छाती जलाता है उसी प्रकार उन दैत्यों का उपकार करना सब जगत् का अहित है ॥ ४६ ॥ विभाव अनुभाव और संचारी भाव ये तीनों मिल कर रस होता है, तैसे ही

ज्यौं विभाव१ अनुभाव२ व्यभिचारी३ मिलि रस व्है हि ॥
त्यौंही दुष्ट१ रु इष्ट२ तस, मिलैं बिना सक द्वैहि ॥ ४७ ॥
बयो कहांलग नहिं फलैं, सिंचमानैं विख रुक्खैं ॥
अलंकार परिवृत्त जिम, दै बर लीनो दुक्ख ॥४८॥
बिरत भयैं अभिधादि ज्यौं, लखत व्यंजना३ ओर ॥
त्यौं हतउद्यम हमहु सब, चहत रावरो जोर ॥ ४९ ॥
सुचि अरि बीर१ भयानक२ रु, उग्र३ करुन४ बीभच्छ५ ॥
करुन१ भयानक२ हास्यके, ज्यौं ए उभय२ बिपंच्छ ॥ ५० ॥
करुनारसके सत्रु जिम, हास्यरस १ रु श्टंगार २॥
सुचि १ दारुनं २ हसं ३ रौद्रके, ए तीन ३ हि खयकार ॥५१॥
सांत १ भयानक २बीरके,दोखी दुव २ पहिचानि ॥

दुष्ट दोनों दैत्य और उनका इष्ट (वरदान) मिलके दोनों नाश करनेवाले हुए ॥ ४७ ॥ बोकर सींचाहुआ विष का वृक्ष कहां तक नहीं फले अर्थात् अवश्य फलता है। एक वस्तु देकर उस के पलटे में दूसरी वस्तुलेने को परिवृत्ति अलंकार कहते हैं ऐसे ही आपने दैत्यों को वर देकर उनसे दुक्ख लिया ॥ ॥४८॥ अर्थ करने के तीन साधन हैं, अभिधा, लक्षणा और व्यंजना, इन में जिस किसी एक वस्तु का नाम लेने से उसी वस्तु को जान लेना जैसे घोड़ा इस नाम के कहने से घोड़े का ज्ञान होना, यह अभिधा वृत्ति है; और जहां पर मुख्य अर्थ का होना संभव न हो वहां पर किसी दूसरे संबंध से अर्थ किया जावे जैसे कि " गंगा में घर है " यह कहने से गंगा में घर होना असंभव होने के कारण गंगा के संबंध से गंगा के किनारे घर होने का अर्थबोध होता है,इसका नाम लक्षणा है,और जहां पर अभिधा और लक्षणा इन दोनों से अर्थज्ञान न हो तब व्यंग से तीसरे प्रकार से अर्थ लाया जावे उसको व्यंजना वृत्ति कहते हैं। यहां पर इसी बात का दृष्टान्त दिया है कि अभिधा और लक्षणा के नहीं रहने पर जैसे व्यंजना की तरफ देखते हैं तैसे ही हम भी सब निरुपाय होकर आपकी सहायता चाहते हैं ॥ ४९ ॥ शृंगार रस के शत्रु वीर, भयानक, रौद्र, करुण और वीभत्स हैं; और हास्य के शत्रु करुण और भयानक हैं ऐसे ही वे दोनों (दैत्य) शत्रु हैं ॥ ५० ॥ करुण रस के शत्रु हास्य और शृंगार हैं और रौद्र रस के शत्रु शृंगार भयानक और हास्य हैं ॥ ५१ ॥ वीर रस के शत्रु शान्त और भयानक ये

रौद्र १बीर २ शुचि ३ सांत४हस५ , दारुनके अरि जानि ॥५२॥
सांतरहित दारुन सहित, एहि सांत अरि पंच ५॥
सुचिरस १ अरि बीभच्छको, रहन दै न तिंहिं रंच ॥ ५३ ॥
बैरी कविजन चित्तके, ज्यौं अर्थादि अपुष्ट ॥
त्यौं सब बेदबिधानके, दुव हि विरोधी दुष्ट ॥ ५४ ॥
कह्यो पतंजलि४ज्यौं मिटैं, क्लेस अबिद्या आदि५ ॥
तबहि पुरुषको स्वस्थपन, अनुभव सिद्ध अनादि ॥ ५५ ॥
पुरुष १ बुद्धि२संजोगही, होवत हेयं निदान ॥
दुष्टसंग इम आपकौं,उचित न प्रकट प्रमान ॥ ५६ ॥
संजमके जयके विरहं,होय न प्रज्ञालोक ॥
दुष्टनके जय बिनु कहुँ न, भद्रभाव त्रय३ओक ॥ ५७ ॥
ज्ञान१अर्थ२अरु सब्द३इन्ह, मिलित न भिन्न छुराय॥

दो हैं; भयानक के शत्रु रौद्र, वीर, शृंगार, शान्त और हास्य हैं ॥ ५२ ॥ और इनमें से शान्त रस को निकालकर भयानक को शामिल करने से ये पांचों शान्त रस के शत्रु हैं, वीभत्स का शत्रु शृंगार रस है सो उस (बीभत्स) को लेश मात्र भी नहीं रहने देता ॥ ५३ ॥ जिस प्रकार अपुष्टार्थ दोष कवियों के चित्त का विरोधी है (जिसका लक्षण यह है कि जिस विशेषण के देने से विशेष्य की कुछ अधिकता न हो उसको अपुष्टार्थ दोष कहते हैं जैसे किसी ने कहा कि खंजन समान कान्तिवाले नायिका के कटाक्ष हृदय में घुसते हैं यहां पर खञ्जन पक्षि में घुसने की शक्ति नहीं होने के कारण अपुष्टार्थ दोष है । यदि खंजन के स्थान में बाण कहा होता तो दोष नहीं रहता) तैसे ही संपूर्ण वेद विहित कर्मों के वे दोनों ही दुष्ट विरोधी हैं ।५४। पतञ्जलि ने कहा कि जैसे अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश ये पांचों क्लेश मिटें तभी आत्मा स्वस्थ होता है॥ यह बात अनादि अनुभव सिद्ध है॥५५॥ आत्मा और बुद्धि का संयोग ही दुःख का कारण होता है इस रीति आप को उन दुष्टों का संग उचित नहीं यह स्पष्ट प्रमाण है॥५६॥संयम सिद्ध किये (धारणा,ध्यान,समाधि इन तीनों का एककरना) बिना प्रज्ञा (साक्षात् अनुभव सिद्ध ज्ञान) का प्रकाश नहीं होता इसीप्रकार इन दुष्टों को जीते बिना तीनों लोकों में कहीं भी कल्याण नहीं॥५७॥शब्दार्थ के समझने में शब्द, अर्थ और ज्ञान ये तीन बातें मिली हुई हैं अर्थात् घट शब्द के कहने से घट यह तो शब्द है और

तीनन३म संजमं क्रियँ, सबरुत समुझ जाय ॥ ५८ ॥
त्योँही तिनके प्रान१ वपु२, भिन्न भयँ जग भव्य ॥
यात अति सुखकाज वे, चित्तवृत्ति हंतव्य ॥ ५९ ॥
धर्म प्रबर्त्तक दुष्ट दमि, इतर अप्प सम कोन ॥
ज्या औषध भूलोक पर, पाँरद सम दूजो न ॥ ६० ॥
साधु१ भक्त२ सबही भजे, बढत खलनको दोर ॥
अमृता१ मधुर२ घन३ हरर४ तैं, ज्यों बिसमज्वर घोर ॥ ६१ ॥
उपसंय रूप उपाय कछु, हेरि अनामय होन ॥
होहु अंत्र कृमि खलन पर, तक्र१ राजिका२ लोन३ ॥ ६२ ॥
जोगेश्वर५ बोले जबहि, कहत पतंजलि ठीक ॥
द्विजहत्या१ तैं लोक२ जिम, तिनतैं१ सकल२ संभीक ॥६३॥
सौच१ सत्र२ तप३ सत्य४ छत, पापहिं बढन न ठोर ॥
प्रभु तुम छत इनको इतो, बढिबो यह दुख घोर ॥ ६४ ॥

घट कहने से जो जल भरन का पात्र जानाजावे वह अर्थ है, और घट कहने से यह जानलेना कि इसीको घट कहते हैं यह ज्ञान है. इसकारण से इन तीनों को जुदा करके जानना तो शब्दार्थज्ञान है, और तीनों के समुच्चय (जुदे-जुदे नहीं जानने) में केवल शब्दमात्र ही जानाजाता है, जिससे कुछ फल नहीं ॥ ५८ ॥ ऐसे ही उन दैत्यों के प्राण और शरीर जुदे होने से ही जगत् में कल्याण है इसकारण अत्यन्तसुख के अर्थ वे दोनों चित्तवृत्ति के समान नाशकरने के योग्य हैं; क्योंकि चित्तवृत्ति के निरोध से ही सुख की प्राप्ति होती है ॥ ५९ ॥ धर्म का प्रचार करनेवाला और दुष्टों का नाश करनेवाला आप जैसा और कौन है जिसप्रकार भूमि पर पारा के समान दूसरा औषध नहीं ॥ ६० ॥ दुष्टों का प्रचार बढने से साधु भक्त सब भगगये जैसे पीपल गिलोय सहित मोथा और हरड़े से घोर विषमज्वर भागता है ॥ ६१ ॥ शान्ति रूप कुछ उपाय नैरोग्य होने के लिये हेर कर आंतों के कीडे (पटाट) रूप दुष्टों पर छाछि, राँई और लवन समान होइये ॥ ६२ ॥ उसी समय याज्ञवल्क्य बोले कि पतञ्जलि ठीक कहते हैं; क्योंकि जिसप्रकार ब्रह्महत्या से लोग डरते हैं इसीप्रकार उनसे सब डरते हैं ॥ ६३ ॥ पवित्रता, यज्ञ, तप और सत्य इनके रहते पाप को बढने की जगह नहीं रहती परन्तु महाराज! आपके रहते इनका इतना बढना बडा भारी दुःख है ॥ ६४ ॥ अपनी

लहत पाप जिन लंघि नर, निजपतनी ऋतुकाल ॥
त्यौं संध्यादिक नहिं बनत, तिनतैं बिप्र बिहाल ॥ ६५ ॥
संसकार सब मेटि खल, व्रात्य करत द्विजबर्ग ॥
भयेजात भूलोकबिच, सूद्र बहुल सब सर्ग्ग ॥ ६६ ॥

॥ षट्पदी ॥

मुनि पाणिनि६ पुनि कहिय चिंति व्यवहार बुद्धिबल ।
न गुन१ वृद्धि२ के पात्र धातु दीधी१ वेवी२ खल ॥
होत क्रियासुकरत्व होत कर्म१ हि कर्त्ता२ जिम ।
प्रभु प्रसाद सुकरत्व वे२हु कर्त्ताहि बनैं इम ॥
अव्यय१ बिभक्ति२ ङित१ टी२ उभय२ हनहु वेग करि धर्म हित ।
जो कारकत्व१ संबंधका२ तो उनकौं१ बैभव२ उचित ॥ ६७ ॥

स्त्री के ऋतुकाल में ऋतुदान नहीं देने से मनुष्य जिन (घोर) पापों को पाता है तैसे ही सन्ध्या आदि छः ६ कर्म नहीं बनने से ब्राह्मण, विकल हैं ॥ ६५ ॥ षोडश संस्कारों को मेट कर वे दुष्ट द्विजाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) को पतित करते हैं जिससे भूलोक पर सब सृष्टि बहुत शूद्रोंवाली हुईजाती है ॥ ६६ ॥ इस पीछे पाणिनि मुनि ने बुद्धिबल से व्यवहार को चिन्तकर कहा कि व्याकरणभर में दीधी और वेवी ये दो ही धातु गुण और वृद्धि के पात्र नहीं हैं अर्थात् इन दोनों धातुओं को गुण और वृद्धि नहीं होती ; जैसे इकार को एकार होना गुण, और इकार को ऐकार होना वृद्धि कहाता है. वे उपरोक्त दोनों धातुओं को नहीं होते इसीप्रकार ये खल भी वृद्धि के पात्र नहीं हैं. जैसे व्यापार में सुगमता होने से कर्म ही कर्त्ता होजाना है जैसे शीघ्र पकने वाले चावलों के लिये कहाजाता है कि ये चावल अपने आप ही पकजाते हं, इस अवस्था में कर्म ही कर्ता होजाता है इसीप्रकार आपकी कृपा रूप सुगमता से वे दोनों ही कर्ता बनगये हैं । और जैसे अव्यय तो विभक्ति का और ङित् टि का तुरत ही नाश करदेता है तैसे ही उन दोनों को धर्म का हित करके शीघ्र मारो (व्याकरण में जहां अव्यय शब्द आजाता है उसके आगे की विभक्ति का लोप होजाता है और जहां ङित् प्रत्यय होता है वहां टि का लोप होजाता है, जहां पर ङकार को इत् संज्ञा होवे उसको ङित् और शब्द के अन्त्य स्वर को टि कहते हैं) और जो संबंध को कारकपन उचित होवे तो उन (दैत्यों) को भी वैभव देना उचित है अर्थात् कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, संबंध और अधिकरण, इन सातों में छः की तो कारक संज्ञा

॥ दोहा ॥

करहु अप्प नारद७ कह्यो, बीणा१ उचित प्रबाल२ ॥
कोणा१ अंगुलीर२ बिहित करि, लखहु अनिष्ट दयाल ॥ ६८ ॥
जथा ज्ञान१ बैराग्य१ जुगर२, उचित भक्तिसुत आँहि ॥
साधु बानके खल सुतर२न, नैंक उचितपन नाँहि ॥ ६९ ॥
हरिभक्तन जिम संग लहि, अधम जनन उद्धार ॥
प्रभु वर संगति पाय तिम, वे२खल बढिग अपार ॥ ७० ॥
जैमिनि८बुल्ले जोहि हो, कर्म निगम पुरुषार्थ ॥
कमलज दैत्य निबाजि किय, पति वहहि अपार्थ ॥ ७१ ॥
सादीके बस साप्ति ज्यौं, सकल जास अनुसारि ॥
पुरुषकार करतार प्रभु, बिधि११ सुहि बोर्‌यो बारि ॥ ७२ ॥
ज्यौं न अनीदृश कबहु जग, एह अनादि अनंत ॥
ज्यौंहि अनीदृश भव तिन्ह, व्है न तो न सुभहंत ॥ ७३ ॥
व्यास कह्यो तुमकौं द्रुहिन, कैसैं न फुरत क्रोध ॥

होती है परन्तु छठे सम्बन्ध को कारक संज्ञा नहीं होती तो फिर कारक धर्म कहां से होवे ॥ ६७ ॥ नारद ने कहा कि आप वीणा के योग्य दंड कीजिये अर्थात् वीणा के दोनों तूंबों के ऊपर दंड रहता है इसी माफिक इन दोनों दुष्टों पर दण्ड करें और वीणा बजाने के पूर्व अंगुली में नजरांफ पहन कर स्वरों की मिलावट देखीजाती है कि कौन स्वर ऊंचा चढकर स्वरों को बिगाडता है वही अनिष्ट है इसीप्रकार हे दयाल इन दुष्टों का भी अनिष्ट (नाश) देखो ।६८। जैसे भक्ति के पुत्र ज्ञान और वैराग्य दोनों ही उसके योग्य हैं ऐसे श्रेष्ट बाणासुर के सुतों में कुछ भी योग्यता नहीं है ।६९। हरिभक्तों की संगति से अधमजनों का उद्धार होता है ऐसे ही आपके बरदान की संगति पाकर वे दोनों दुष्ट बहुत बढगये हैं ॥ ७० ॥ जैमिनि बोले कि आपने असुरों को वरदान देकर जो वैदिक कर्म रूपी पुरुषार्थ का मार्ग था उसको व्यर्थ करादिया ।७१। जैसे सवार के वश में घोडा होता है तैसे ही सब संसार पुरुषार्थ के वशीभूत है. उस करतार रूपी प्रभु पुरुषार्थ को हे ब्रह्मा आपने जल में डुबोदिया ॥ ७२ ॥ जैसे यह जगत् अनादि और अनंत होने पर भी कभी अद्वितीय नहीं अर्थात् अद्वितीय केवल ब्रह्म ही है तैसे ही उन दोनों दैत्यों को भी अद्वितीयपन नहीं होवे तो कल्याण का नाश नहीं होवे ॥ ७३ ॥ व्यास ने

जुग ७ खल प्राकृत जालपैं, बनहु अबहि चिद्बोध ॥ ७४ ॥
होत वास्तविक तत्वमैं, कलित भेदको भेद ॥
त्यों उनके उत्कर्षमैं, अमर१निगम२उच्छेद ॥७५॥
नभमैं जैसैं नीलिमा२,बिंब१मुकुरतल२बीच ॥
वर उपाधि तिम ते बढे, निजबल मानत नीच ॥ ७६ ॥
सुभ इच्छा१तैं सप्तमी७, भूमि तूर्यगों७भान ॥
तुम सब सुभ इच्छा तकहु, होय तबहि अघहान ॥ ७७ ॥
कौत्स१०कह्यो जिम सब सकुन, छिक्कातैं दबिजात ॥
त्रि३भुवनकौं आक्रम्य तिम, घल्लत आसुर घात ॥ ७८ ॥

षट्पदी ॥

स्यामा१मंडल२काक३सिवा४पिंगलिका५ए जिम ।
सकुननके अधिराज लोक अधिराज अप्प तिम ॥
पथिक काज सिद्धिहित गजि गज१करत उद्धकर ।
दक्खिनतैं दिस वाम सुनि२हु आवत तोरन पर ॥
नखरी३चलंत अग्गैं उमगि करत इष्ट हय४वाम किल ।

कहा कि हे ब्रह्मा तुमको क्रोध कैसे नहीं होता है उन दोनों दुष्ट रूपी माया जाल पर अभी ब्रह्मज्ञान रूप बनो ॥ ७४ ॥ यथार्थ तत्वज्ञान होने में जैसे द्वैत भाव का नाश होता है तैसे ही उन (दैत्यों) की वृद्धि में देवता और वेद का नाश है ॥ ७५ ॥ आकाश में जैसे नीलापन, और काचके भीतर का बिंब ये दोनों आकाश और काच के नहीं हैं किन्तु उपाधि से हैं तैसे ही वे दोनों नीच (दैत्य) वरदान रूपी उपाधि से बढकर अपना ही बल मानते हैं ॥७६॥ जब शुभ इच्छा होती है तभी सातवीं (अज्ञान, आवरण, भ्रांति, द्विविध, ज्ञान, शोकनाश, अतिहर्ष, वेदान्त में ये सात भूमियां मानीजाती हैं) भूमि में चौथी अवस्था में (विवेक, विराग, शम दमादि षट् सम्पत्ति, मुमुक्षुता,)ये चार भूमियां हैं) ज्ञान होता है ऐसे ही आप भी सब की शुभ इच्छा देखो तभी पाप का नाश होगा ॥ ७७ ॥ १२ छींक १३ घेरकर ॥७८॥ कोलचिड़ी, कुत्ती, कौवा, श्यागस्याली, कोचँरी ये जैसे शकुनों के स्वामी हैं तैसे ही आप सब लोकों के स्वामी हैं. मार्ग चलनेवाले को कार्यसिद्धि के शुभकारक हाथी का सूंड उठाकर गर्ज्जना करना और द्वार पर कुत्ते का दक्षिण दिशा से बाईं ओर आना, और नखवाले पशु का उमंग के साथ आगे चलना, इसीप्रकार

मुनि जनन इष्ट मख सिद्धिमें, अप्प प्रजापति क्यों सिथिल ।७९।

दोहा ॥

प्रभु मिलाय तिन्ह मन्न्यु१पथ२,साप१सरट२अनुकार ॥
घूक१करहु खल घरनमैं, अपनी किर्त्ति२उदार ॥ ८० ॥
प्रभुके नैंकहि कोपतैं, दितिकुल निबल दिखात ॥
ज्यों सरितादिक अंतरितें, सकुन निबल परिजात ॥ ८१ ॥

षट्पदी ॥

बुल्ले मुनि कर्नभच्छ१द्रव्य गुनको जिम आश्रय ।
यों सब भूतन अप्प कोन मेटैं द्वितीय भय ॥
लिंगपरामर्श जिम हेतु अनुमितिको हे विधि ।
वाक्यबोधको योग्यता१रु आकांक्षा२सन्निधि३॥

घोड़े का ब[illegible] तरफ शब्द करना शुभकारक है तो फिर मुनिजनों के प्रियम खसिद्धि में हे ब्रह्मा आप शिथिल क्यों हो ॥ ७९ ॥ हे महाराज उन सर्प के समान टेढे चलने और किरकाँटिया के समान रंग बदलनेवाले दैत्यों को क्रोध के मार्ग में मिलाकर हे उदार आपकी कीर्ति रूपी उल्लू (घूघू) को उन दुष्टों के घरो में करो. इस का भावार्थ यह है कि जिस घर में घूघू रहता है वह शून्य होजाता है ॥ ८० ॥ ४ नदी के ५ बीच में आजाने से ॥८१॥ कणाद मुनि बोले कि जैसे गुण का आश्रय द्रव्य है अर्थात् चौबीस गुण हैं वे नव ९ द्रव्यों में रहते हैं इसीप्रकार आप सब प्राणियों के आश्रय हैं फिर डर मेटनेवाला दूसरा कौन है. हे ब्रह्मा जैसे अनुमिति ज्ञान (जो अनुमान से जानाजावे) में लिङ्गपरामर्श ज्ञान (जिस से अनुमिति होवे वह तो हेतु कहाता है, और जिस की अनुमिति करै वह साध्य कहाता है इन दोनों के साहचर्य ज्ञान को व्याप्ति कहते हैं. और व्याप्ति सहित हेतु का ज्ञान होना परामर्श ज्ञान है) कारण है. और वाक्य बोध में योग्यता, आकांक्षा और संनिधि ये तीन कारण हैं (इन में किसीने भोजन समय में सैंधव मांगा तब भोजन के साथ घोडे की योग्यता न होने के कारण घो[illegible] नहीं लाकर लवण लाना यह योग्यता है. जहां पर योग्यता नहीं हो वहां अर्थ भी नहीं होता जैसे अग्नि से सींचना यहां सींचने के साथ अग्नि की योग्यता नहीं है. इसीप्रकार भोजन के समय कहना कि लवण, यहां दूसरे पद की आकांक्षा है इस से जानलिया कि लवण मंगवाते हैं, इसीको आकांक्षा कहते हैं. यदि भोजन समय के विना खाली लवण का नाम लिया जावे तो वहां आकांक्षा नहीं होने के

तिम तुम अदेव अभ्युदयके हेतु भये सुन लोकहित ।
इन्ह प्रागभाव१जानहु असुभ अब प्रध्वंस२हि है उचित ॥८२॥
आत्माबिच१जिम बोध२सीत सपरस१जल बिच २जिम ।
संख्यादिक गुन पंच५रहत नँव९द्रव्यमाँहिं तिम ॥
ज्यौं परत्व१अपरत्व२भूमि मुख चउ४भूतनमैं ।
अरु मनमैं५यौं सहजसिद्ध खल मति खलजनमैं ॥
चउबीस२४गुनन बिच बुद्धि१६जिम सब बिबेक साधन लसत ।
साधन समस्त सुभधर्मको दुष्टदमन सबके सुमत ॥ ८३ ॥

दोहा ॥

द्रव्यादिक छंँ६पदार्थ ही, ज्यौं भासत सब ठोर ॥
यौं भयतैं भूतन भई, आसुरमय सब ओर ॥ ८४ ॥
कपिल१२कह्यो ॥

कारण कुछ अर्थ नहीं होता और पदों की समीपता को संनिधि कहते हैं जैसे किसीने किसी से कहा कि घोडा लाओ, यहां तो संनिधि होने से अर्थ समझ लियागया और इसी पद को प्रथम "घोडा" इतना कहकर कुछ समय बीच में छोड कर फिर "कहा" लाओ, तो यहां दोनों शब्दों की समीपता नहीं होने के कारण अर्थ नहीं होता) ऐसे ही आप उन दैत्यों की वृद्धि में कारण हुए हैं ॥ हे लोक के हित करनेवाले सुनो इन के प्रागभाव (होना) को अशुभ जानो और अब इनका प्रध्वंसाभाव (नाश) ही उचित है ॥ ८२ ॥ जैसे आत्मा में ज्ञान, जल में शीतस्पर्श, और नवँद्रव्यों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा, मन) में संख्या आदि (संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग , विभाग) पांच गुण रहते हैं इसीप्रकार पृथ्वी, अप् तेज, वायु और मन में परत्व और अपरत्व गुण स्वतःसिद्ध रहते हैं तैसे ही दुष्ट जनों में दुष्ट बुद्धि स्वतःसिद्ध रहती है ॥ चौबीस गुणों (रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, संस्कार, धर्म, अधर्म, शब्द) में जैसे सब ज्ञान का साधन करनेवाली बुद्धि शोभित है ऐसे ही दुष्टों को मारना सब धर्म का साधन सब के अनुमत है ॥ ८३ ॥ जैसे द्रव्य आदि छंः (द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय) पदार्थ ही सब जगह दीखते हैं तैसे ही प्राणियों को डरके कारण सब दिशायें असुरमय हो गई हैं ॥ ८४ ॥

॥ ८५ ॥

॥

॥ ८६ ॥

॥

॥ ८७ ॥

॥

॥ ८८ ॥

सालिहोत्र१४बुल्ले द्रुहिन, नाभि१पुच्छ२गुद३थान ॥
जा हयकै ए त्रय३भ्रमन, सो नहिँ श्रेय निदान ॥ ८९ ॥
अध१ऊरध२आवर्त्त दुव२,संपुट परसैं नाँहिँ ॥
सो सुभकर कबहु न सुन्यौं, क्यौं तस पोखन आँहिँ ॥ ९० ॥
भये बरस छब्बीस२६ बय, हय रद करत प्रयान ॥
त्यौं तिनकी कबलौं अवधि, होत सर्ग उत्थान ॥ ९१ ॥
बढ्यो रुधिर जो नहिँ कढैं, घोटकको सुचिमास ॥
तौ बिनास पावत तिमहि, इन्ह छत लोकबिनास ॥ ९२ ॥
मंजामूल मिलाय पुनि, तैल१सिर्वा३जुत देत ॥
एकर्बिस२१दिन तब हय सु, व्है नीरोग सुचेत ॥ ९३ ॥
त्यौं इन्ह मरन अनंत रहि, थप्पि बहुरि श्रुति मग्ग ॥
पीन करहु जग१सप्ति२कौं, यह१कारि रक्त२अलग्ग ॥ ९४ ॥
मल्लिनाग१५बुल्ले मिट्यो, उन२करि जग आनन्द ॥
अस्वं१बेग चिरं२चंडं३ज्यौं, मृगी१वेग द्रुत२मंद३ ॥ ९५ ॥

---

१ आषाढ मासमें२दैत्य३बकरी का४हलदी ५ वेदमार्ग ६ पुष्ट ७ संसार रूपी घोड़े को ८ दैत्य रूपी रक्त को अलग करके ।१४। मल्लिनाग बोले।कि उन (दैत्यों) से संसार का आनन्द मिट गया जैसे प्रबल और अधिक ठहर नेवाले अश्व (कामसूत्र के मत से शश, मृग और अश्व से तीन प्रकारके पुरुष, और मृगी, बडवा और हस्तिनी ये तीन प्रकार की स्त्रियां होती हैं इन में यथासंख्या अर्थात् शश को मृगी, मृग को बड़वा, और अश्व को हस्तिनी के समागम में आनंद होता है और इनके व्यतिक्रम में दुःख और अतृप्ति है) पुरुष के साथ कोमल और शीघ्र छूटनेवाले वेग को मृगी

बर पुब्बहि वे२ स्तब्ध१बलि, अघकर चपल२अछेह ॥
प्रथम सुरत ज्यौं चंडपन १,द्रुतपन२पुरुषन देह ॥ ९६ ॥
सबको सुख पकरयो संयन, मीचि नयन दृढमंत ॥
ऊर्ध्वभाग निज उदरको, कसत जुवति१जिम कंत२॥९७॥
सातन ही तिनको सुखद, मन्नत लोकनमाँहिं ॥
मंथन ज्या अतिमोदकर, उपसृप्तन बिच आँहिं ॥ ९८ ॥
बुल्ले मुनि पिंगल१६ बहुरि, सबन हृदय खल सूल ॥
नगन॥। करहु तिन्ह धारि नय, मंगनSSS न रक्खहु मूल ॥९९॥
कब मरिहैं आसुर कुटिल, बरहू सत्य निबाहि ॥
बंधु१रु दोधक२वृत्त विधि, संसय रहत सदाहि ॥१००॥
प्रसरि बर्ण प्रस्तारगति, कबलौं बढहिं कराल ॥
नंष्टगनितके न्याय करि, गुमैं निकासे काल ॥ १०१ ॥

स्त्री का आनंद मिट जाता है ॥ ९५ ॥ वर मिलने से पहले ही वे अनम्र थे और फिर वर मिलने से पापी अपार चपल होगये हैं जैसे प्रथम समागम में पुरुष अनम्र और चपल होता है ॥ ९६ ॥ इन दोनों ने नेत्र मींचकर संपूर्ण का सुख हाथों से काठा पकड़ लिया है जैसे आलिङ्गन में स्त्रीपुरुष उदर के ऊपर के भाग (छाती) को भुजा से पकड़ते हैं ॥९७॥ उन (दैत्यों) का सातन (नाश) ही लोगों में सुखदायी है, उधर स्त्री पुरुष के सम्बन्ध में सातन का अर्थ पतलापन है, जैसे काम शास्त्र में कहे हुए दश उपसृप्तों में मंथन ही अत्यन्त मोद करने वाला है. यहां स्त्री पुरुषों के संबन्ध में तो मंथन शब्द उपसृप्तवाची है और दैत्यों के संबंध में नाश का बोधक है काम शास्त्र के१०उपसृप्तों का वर्णन अश्लील होने के कारण हमने छोड़ दिया है सो जिनको देखना होवे वे वात्स्यायन कामसूत्र के सांप्रयोगिक दूसरे अधिकरण के आंठवें अध्याय में देख लेवें ॥ ९८ ॥ फिर पिंगल मुनि बोले कि ये खल (दुष्ट) सब के हृदय में सूल हैं तिनको नीति धारण करके नगन अर्थात् सर्वलघु करो और प्रस्तार का मूल (आदि रूप) मगन है सो मत रक्खो, अर्थात् सर्वगुरुSSSमत करो ॥ ९९ ॥ बंधु छंद और दोधकछंद इन दोनों में संदेह ही रहता है कि यह कौनसा है इसी प्रकार ॥ १०० ॥ वर्ण प्रस्तार के फैलाव के समान वे (दैत्य) विकराल कहां तक बढेंगे इसका निश्चय नहीं है और जिस प्रकार प्रस्तार के नहीं जाने हुए रूप को नष्ट से निकाल लेते हैं इस प्रकार इनका काल निकालो ।१०१।

सब प्रस्तारन अंतसम, सरलभाव भजि सुद्ध ॥
वे२जो रहते अध्वमैं, को होतो तब क्रुद्ध ॥ १०२ ॥
अंत्य अंक उद्दिष्टको, मत्ता प्रसर प्रमान ॥
यौं प्रमान खल आयुको, निश्चित कबलग वान ॥ १०३ ॥

मनोहरम् ॥

मेरुवारे कोठनलौं उच्च उच्च थोरे करि,
नीच नीच बाढे बहु सो नहि खटावती ।
मेरु अंक थान गिनती जिम पताकामाँहिं,
प्रसरके अंकमाँहिं माँहिं मिटैं पावती ॥
माँहिं माँहिं यौं खल मिटैं तो जन पावैं प्रान,
पावैं प्रान तो न पावैं पुहवि प्रजावती ।
मर्कटी ज्यौं छंद सरबस्व ऐंचि आनैं ऐसैं,
ऐंचि घर लेहैं अलका १ रु अमरावती२ ॥ १०४ ॥

॥ दोहा ॥

दोहा१ गाहा२ आदि दे, वृत्त कला गनबंध ॥
सुद्धरचन ज्यौं नाहि सहज, यौं तिन्ह मृत्यु असंध ॥ १०५ ॥

सब प्रस्तारों के अंत में सर्वलघु का रूप होता है ऐसे ही वे दोनों (दैत्य) जो यज्ञ में सरल भाव से मार्ग में रहते तो उन पर क्रुद्ध कौन होता॥१०२॥ मात्रा प्रस्तार के उद्दिष्ट का अंतिम अंक में से गुरु सिरका अंक घटाने से प्रश्न का उत्तर होता है ऐसे ही उन दुष्टों की आयु जानने का निश्चय कब होगा ॥ १०३ ॥ मेरु के बनाने में ऊपर १ कोष्ठ करके नीचे के कोठे एक एक करके क्रम से बढते जाते हैं ऐसे उच्चों को घटाकर नीच को बढाना यह नहीं सहा जाता। और मेरु के अंकों के स्थानों की गिनती जैसे पताका के दंड में प्रस्तार (संख्या) के अंक परस्पर मिटने से मिलती है जैसे वे दुष्ट परस्पर मिटें तो लोग जीवन पावें और जो ये दुष्ट जीवन पावेंगे तो पृथ्वी प्रजावाली नहीं पावेगी। जिस प्रकार वृत्ति, भेद, मात्रा, वर्ण, गुरु, लघु इन छः कोठों में छन्दों के संपूर्ण कर्मों को खींचकर मर्कटी अपने में ले आती है ऐसे ही ये भी कुंबेर की पुरी और इन्द्र की पुरी को खींचकर अपने घर में लेलेवेंगे ॥ १०४ ॥ दोहा और गाहा (आर्या) आदि मात्रों गण बद्ध के छन्दों की शुद्ध रचना करना जैसे सहज नहीं है

मनोहरम्

परसुधरन१७ बोले स्वीय प्रानसौं जो चाप,
न्यून कछु होय सोही लक्ष्य लैनहार है।
दिव्य चाप अर्ध १ सह चउ ४ कर ३ मान होत,
अर्ध१ बिनु सो ३ हि ४ चाप मानुष उदार है॥
सोहु जो विसमपर्व तो सुभ बिचार्यो त्यौं,
कलंबहु धनुख प्रान मान सुभकार है।
आप बररूप चाप ऐसो दयो जो खल,
बलसौं बिसेस तोहू बिजय बिफार है॥ १०६॥
पट्टसूत्र१जो नैं तो हरिन२गो३महिर्ष४सिरा,
तिनके अभाव चर्म्म बस्त५गोकर्न६के।
तेहु नाँतो पक्क बंस छल्ली७शिवमल्ली चोच८,
भाद्रमैं वा गुन इन्ह८से न अरनके॥
सर नर१ पीछै थूल जोग्य दृढ भेदिबेके,
अग्गे थूल नारी२दूरपात बितरनके।

तैसे ही उनकी मृत्यु भी प्रतिज्ञा नहीं होने योग्य है॥१०५॥ फरशुराम बोले कि अपने बल से जो धनुष कुछ कम होवे वहीं निशाना लेने वाला होता है और देवताओं के योग्य धनुष साढे चार हाथ के प्रमाण का होता है और चार हाथ का धनुष मनुष्यों के लिये श्रेष्ठ है॥ वो भी जो विषम (एक, तीन, पांच, आदि एकीवाली गणना) गांठ वाला होवे तो शुभ है इसीप्रकार बाण भी धनुष के बल के प्रमाण से शुभ कारक होता है परन्तु आपने वरदान रूपी धनुष ऐसा दिया है कि जो उन दुष्टों के बल से अधिक है तो भी विजय की टंकार करने वाला है॥१०६॥ जिस की प्रत्यंचा रेशम के सूत की, और वो नैं हो तो हरिण, गाय, भैंसे के नस (ताँत की, यह भी नैं होवे तो बकरा, खच्चर, अथवा मृग विशेष के चाम की, और वे भी न हों तो पके हुए बाँस और शिवमल्ली (वृक्षविशेष) के छाल की इन दोनों (बांस और शिवमल्ली के छाल) से भादवा में बनानी औरं की नहीं. यहा भादवा वर्षा काल का वाची है जो बाण पीछे से मोटा होता है वह नर कहाता है सो दृढ वस्तु को भेदने योग्य है और जो बाण आगे से मोटा

क्लीब३ बान सबंसम लछ्यके उचित अैसैं,
दैत्यनसे ओर कोन नासक नरनके ॥१०७॥

दोहा ॥

पूरक१सौं सर अैंचि पुनि, कुंभक२सौं थिर थापि ॥
सह हंकृति१ छोरयो जु सर, क्रमच्युत व्है न कदापि ॥ १०८ ॥

षट्पात ॥

प्रथम तैल१ बहु पाइ इष्ट सस्त्रहिं बहोरि इम ।
अर्कदुग्ध१हुंड शृंग भस्म मूसक पुरीस३तिम ॥
पारावतजपुरीस४लै रु इन्ह४करि करि लेपित ।
तैल१मथित२को पान बहुरि तिहिं देत अंबेपित ॥
सस्त्र सु बहोरि करि सानसितं पटकहु जँहँ तँहँ उपलपर ।
नन लहत भंग तिम खल हनन रचहु उपाय अमोघ अर॥१०९॥

पादाकुलकम् ॥

मंथित१रु कदलीक्षार२मिलायैं, परिउसित सु करि सस्त्रहिं पायैं।

होवे वह स्त्री कहाता है सो दूर पटक देने के काम का है और आगे पीछे ब राबर मोटा होवे वह बाण नपुंसक कहाता है सो निशाने के योग्य है इसी प्रकार दैत्यों के सिवाय मनुष्यों का नाश करनेवाला दूसरा कौन है ॥ १०७ ॥ पूरक (स्वास का खींचना) से बाण को खींचकर कुंभक (स्वास का रोकना) से थिर रख के हुंकारा करने के साथ जो तीर छोडाजावे वह कभी अपनी गति को नहीं छोडता अर्थात् लक्ष्यतक पहुंच ही जाता है॥१०८॥अपनी इच्छाऽनुकूल शस्त्र को पहले तेल (तपाये हुए शस्त्र को तेल में डबोना) बहुत पिला कर फिर इसीप्रकार आक का दूध मेंढे के सींग की भस्म ऊंदरा की मींगणी कबूतर की बीट लेकर इनका वारवार लेप करना, फिर तेल और विना थरवाले दही का घोल्या [मट्ठा] की अक्षेपित [निरंन्तर] पाण देवे फिर उस शस्त्र को शाण से तीखा करके जहां चाहो तहां पत्थर पर पटको सो कभी नहीं तूटेगा इसीप्रकार दुष्टों को मारने का खाली नहीं जावे ऐसा शीघ्र उपाय करे ।१०९। दही की थर को दूर करके उसका घोल्या (मट्ठा) बनाकर उस में केले का खार मिलाकर पड़ा रक्खे जब वह सडजावे तब उसकी पाण देवे फिर उस

-चि सित उपल१लोह२पर झारहु, व्है न कुंठ इम मंत्र सम्हारहु ।११०।

मनोहरम् ॥

सारस्वत१८बोले जलहीन देसमैं जो खनि,
काढ्यो जलचाहैं तो ए लच्छन निहारिये ।
बेतस१ककुभ२जंबू३कोबिदार४भूतांबास५,
जन्तुफल६फल्गु७बिल्व८बदरी९बिचारिये ॥
सप्तपर्णा१०तिलक११मधूक१२ करंज१३नीप१४,
नालिकेर१५दंती१६ताड१७त्रिवृंता१८हु धारिये ।
बीरणा१९निवाली२०पीलुपर्णी२१नौकु२२पास खनैं,
जानि दिगभेद नीर तबही निकारिये ॥ १११ ॥
मस्तक उभय२की खजूरि१जँहँ होत अथ-
वा सित प्रसून होत किंसुक१कनीर२हैं ।
पुब्ब१सौं प्रतीची१किंसुकादि२सौं उदीची२ततो,
क्रम ढिग खोदैं तीन३द्वै२पुरुष नीरहैं ॥
भूमैं घर्म१व्है वा धूम२तो तहाँ रु खेतमैं जो,
स्निग्ध१सित२अन्नसिरा निकट घनी रहैं ।
दुष्टनके नासमैं उपाय ऐसैं हेरि हाय,

शस्त्र को तीखाकरके पत्थर और लोहे पर पटको सो कभी भोटा (मुड़ना) नहीं होवेगा इसीप्रकार आप भी मंत्र [सलाह) करो ॥ ११० ॥ ६खोद के ७ बेत, ८ ककुभ (वृक्षविशेष जिसको अर्जुन वृक्ष कहते हैं) जामूनि, कंच नार, बहेडा, ऊंमरा, कालागूलर, बील, बोर, सप्तपर्णा, (वृक्ष विशेष जिस के प्रत्येक गांठ में सात सात पत्ते होते हैं) तालमखाना, महुआ, करंज, (किंणि गच) कदंब, नालेर, बज्रदंती [बोंली] ताड, निसोत, गांडर, नेवारी [नवमालि का] पीलुपर्णी (वृक्षविशेष) उदेही [दीमक] के बामला के पास खोदे दिशा का भेद जानकर, तभी पानी निकालें ।१११। दो माथे की खजूरी होवे अथवा स्वेत फूल का ढाक और कणीर होवे, वहां पहले कहे हुए बेत आदि खजूर पर्यन्त वृक्षों के तो पश्चिम दिशा में और पलाश [छीला] कणीर के उत्तर दिशा में क्रम से पास ही खोदे तब तो दो तीन परसे [ऊबदा] नीचे पानी है और भूमि में गर्मी होवे वा धुआं होवे तहां पर और जो खेत में

देर न करो तो घोर बेर न बनारहैं ॥ ११२ ॥
[२]रक्तभू१मैं तोरो२स्वेत१कपिल[३]२मैं खारो।३जैसैं,
स्याम१नील२भूमैं कढैं मिष्ट३जल जानिये ॥
भूमि [४]खनत जो सिला टं[५]कहु गिनैं न तापैं,
[६]अनल प्रजारिकैं [७]सवर्ण तिहिं आनिये ॥
[८]बदर१कु[९]लत्थ२कल्कैं[१०] तक्र१[११]सुरा२कांजिकैं[१२]३मैं,
सप्त७दिन राखि ताको [१३]सेकैं तहँ ठानिये ।
सीचैं वा [१४]सुधा१को जल तो जो भंगपावैं ऐसैं,
दुष्टनमैं१हत्या२तिन्ह१भंग२मनमानिये ॥ ११३ ॥
[१५]कटुक१कुगंधि२खार३[१६]आवि—४वि[१७]रस५नीर,
कूपमैं जो व्है तो [१८]उपचार यह प्रेरिये ।
[१९]आमलक१[२०]कतक२[२१]उसीर३राजको[२२]सातक४,
[२३]अर्जुन५पयो[२४]द६नको [२५]छोदैं तहँ गेरिये ॥
तो जल प्रस[२६]न्न१लघु२सुरस३सुगंधि४होत,
यौं [२७]वाँ समुझाइ मति दुष्टनकी फारिये ।

चिकना, तीखा अन्न होवे वहां पर पानी की सीर बहुत नजीक रहती है इसी प्रकार उन दुष्टों के नाश में भी उपाय हेर कर देरी नहीं करैं तो दुःख कारक भयंकर समय नहीं बनारहै ।११२। लाल भूमि में तोरा और स्वेत व पीली भूमि में खारा इसी प्रकार काली और नीली भूमि में मीठा पानी निकलता है और भूमि को खोदते समय ऐसा पत्थर आवे कि जो टांकी को नहीं माने तो उस पर अग्नि जलाकर अग्नि के समान लाल करलेवै फिर झड़बेरी और कुलत्थ को शामिल पीस कर छांछ मद्यै और कांजी [धान्य को सात दिन सड़ाकर कांजी बनाते हैं] में सात दिन तक राखे उस मद्यै के पानी से उस शिला को सींचै तो वह टूटजाता है तैसे ही इन दैत्यों में हत्या का सिंचन करके इनके नाश में मन कीजिये ॥ ११३ ॥ जिस कुए में पानी कडवा, दुर्गंधी, खारा, गदैला हुआ विना स्वाद का होवे तो यह इलाज करना कि आँवला, निर्मली, खश, बड़ी तोरों, अर्जुन वृक्ष जिस को ककुभ कहते हैं और पयोद, (नागरमोथा) इन सब का चूर्ण उस में डाले तो जल निर्मल, हलका, स्वादिष्ट और सुगंधिवाला होता है ऐसे ; अथवा समझा कर उन दुष्टों

सारस्वत१८बैन ऐसैं सुनत बिरंचनसौं,
पालकाप्य१९बोले इनकौंहु हित हेरिये ॥ ११४ ॥
मधुनिभ१दंत२जाके जंघन१बराहसम२,
चापसम१बंस२मदको जल१हरित२है ।
रक्त१मुख२ओठ३तालु४नैन१मधुपिंगल२है,
वृत१कर२ अंग१मृदु२लोम आवरित३है ॥
वृत्त१पीन२कंधरा३पयोदसम१बृंहित१है,
सप्त७कर१ऊंच१मद सुरभी२ झरित है ।
नखर१ अठारह१८२वा बीस२०१३ ऐसो जा नृपकै,
भद्र१गज होइ तासौं दुर्जन दरित है ॥ ११५ ॥
कक्षा१ उर२ सिथिल३ प्रलंब१ थूल२ कुक्षि३ गल४,
पेचक५ मृगेंद्र१ दृष्टि२ मंद२कै ए मानैं हैं ।
ह्रस्व१ रद२ सुंडा३ कंठ४ मेहन५ उदर६ लोम७,
कर्ण८ पय९ थूल१ नैन२ मृग३कै बखानैं हैं ॥
मिश्र४कै ए चिन्ह सब मिश्रित मुनिन कहे,
इन्ह करि ऐसैं च्यारि४ जाति गज जानैं हैं ।

की बुद्धि को फैरो, सारस्वत के ऐसे बचन सुनकर ब्रह्मा से पालकाप्य बोले, कि इन (नीचे कथन किये हुए) को भी अच्छे जानिये ॥ ११४ ॥ महुवे के कच्चे फूलों के समान है दन्त जिस के जांघे सूवर जैसी धनुष के समान पीठ का हाड, मद का जल हरारंग का, मुख, ओठ, और तालु लाल होवैं, पके हुए महुवे के फूल के समान लाल और पीले नेत्र, गोलाकार सूंड, कोमल और केशों से ढकाहुआ शरीर, गोल और पुष्ट कंधों मेघ के समान गाजनेवाला, सात हाथ ऊंचा, जिस का मद सुगन्धित झरनेवाला होवै और जिस के अठारा या बीस नखें होवें उसको भद्रजाति कहते हैं ऐसे हाथी जिस राजा के पास होवें जिस से शत्रु पीडित होते हैं ॥ ११५ ॥ कांखें और छाती ढीली हो, कूखें, गला और पूंछ का मूल भाग लम्बा और मोटा होवे सिंह की सी दृष्टि होवे, ये लक्षण मंदजाति के हस्ती के हैं, और जिस के दांत, सूंड, गला, लिंग, उदर, केश, कान और पग छोटे होवें और कान पग नेत्र वडे होवें ये लक्षण मृगजाति के हाथी के हैं और जिस हाथी में ये ही सब लक्षण मिले हुए होवें उसको मुनि लोगोंने मिश्रित जाति का हाथी कहा है.

तैसै दुष्टभाव करि धूम्रकेतु१ जंभ२ दोहु२,
मारिबे उचित महादुष्ट पहिचानैं हैं ॥ ११६ ॥

॥ दोहा ॥

कण्व१ कह्यो जिम कुणपजल, सब तरु पोषक सिद्ध ॥
अघपोषक तिम दुष्ट वे२, अज प्रसाद बरइद्ध ॥ ११७ ॥

॥ मनोहरम् ॥

कोल१ मृग२ मच्छ३ खड्गी४ छगल५ उरभ्र६नके,
मेद१ पल२ मज्जा३दिक जथाभाग लीजिये ।
एककरि नीरमाँहिं चुल्लीपैं पकाइ तामैं,
दुग्ध१ घृत२ माक्षिक३ओ सीझे मास४ दीजिये ॥
तिल खल५ चूरि डारैं जो तजैं न घनभावता,
तो जल उष्ण डारि तास द्रव कीजिये ।
भांड भरि एक१ पक्ष गोमयमैं राखैं बनैं,
कुणप सो सर्वतरु पोषक पतीजिये ॥ ११८ ॥
तिल१ मधुयष्टि२ मधु३मिश्रित कुणप४ सींची,
बदरी फलत जिन्ह फलन सिता दबैं ।
बिच्छू१ अलि बिद्ध करि१धेनुघृत धूप दैर रु,

इस रीति चार जाति के हाथी जानेजाते हैं तैसे ही खोटे अभिप्राय वाले धूम्रकेतु और जंभ दोनों हस्ती मारने योग्य पहिचाने हैं ॥ ११६ ॥ कण्व ने कहा कि जैसे कुणपजल,सब वृक्षों के पोषण करने में सिद्ध है तैसे ही वे दोनों दुष्ट ब्रह्मा के प्रसन्नता के बरदान से बढे हुए पापों के पोषक हैं ॥ ११७ ॥ सूवर, हिरण, मच्छी, गैंडा, छाली, मेष, (मींढा) के चरबी, मांस, मींजी आदि सब बराबर भाग लेकर पानी में मिलाकर चूल्हे पर पकावें जिस में दूध, घी, सहत ये तीनों मांस के सीझने पर डाले और पीछे तिलों की खल का चूरा डाले, जो काठोंपन नहीं मिटै तौ गरम जल डाल कर ढीला करलेवे उसको भांडे में भरकर पन्द्रह दिन तक गोबर में राखे उसको कुणप कहते हैं, वह सब वृक्षों को बढानेवाला है ॥११८॥ तिल, मुलहटी, और सहत मिलाकर कुणप से सींचै तो बोरडी का वृक्ष फलता है जिस के फलों से मिश्री भी दबजाती है. और बीछू के डंक से वेधन करके गाय के

आखुं१ किटिर२ मेदं सींची फलत लता सबैं ॥
बालतरु जे बढैं न तास घृतधूप दै१ रु,
दुग्ध१सौं कुणप२ सौं वा जवजल३सौं जबैं ।
सींचिकैं बिडंग१ तिल२ कल्कको बिलेप कियैं,
बालतरु तेते वृद्धि परम लहैं तबैं ॥ ११९ ॥

दोहा

एक१बेर फलि१फूलि२तरु, बहुरि फलैं१फूलैं२न ॥
कुणप१दुग्ध२जुग२सेकतैं, उपजैं फल१ सुमं२ ऐन ॥ १२० ॥
विखतरु खल इम अतिबढे, पूंभुवर औषध पाइ ॥
अब तिनको सातन उचित, ज्यौं न प्रजा मिटिजाइ ॥ १२१ ॥

मनोहरम्

पारासर२१बोले जाके अरुन १मृदुल२ ओठ३,
जिव्हा४ तालु५ व्हर्स्व१ कर्ण२ सुंदर१उदर हैं ॥
पृष्ठ१ हुंडे तुल्य२ जंघा३ संहत१ अरुन२ सुर३,
व्यूढ१ उर२ पुष्ट१ रु बडो२ ककुद३ बर हैं ॥
अरुन अपांग२ अति१ उच्छ्रित२ मृगेंद्र१खंध२,

सास्ना१ मृदु२ अल्प३ भूलौं१ पुच्छको प्रसर२ हैं ॥

घृत का धूप देवै और चूहा सूवर की चरबी को सींचै तो सभी वेलाड़ियां फलती हैं और जो छोटे वृक्ष नहीं वढते होवैं उनको घृत का धूप देकर दूधसे, कुणप से अथवा जव के जल से सींच के वायविडंग और तिलों को शामिल पीसँ कर उस का लेप करे तो वे सब छोटे वृक्ष पूरे बढते हैं ॥ ११९ ॥ जो वृक्ष एक वेर फल कर फिर नहीं फूले फलै तो कुणप और दूध इन दोनों के सींचने से फल और पुष्पों का घर वनता है ॥ १२० ॥ खल रूपी जहर के वृक्ष आंप के वर रूपी औषध पाकर इसीप्रकार वहुत वढे हैं जिनका अब नाश करना उचित है कि जिस से प्रजा नहीं मिटे ॥१२१॥ पराशर बोले कि जिस वृषभ (वैल) के लाल और कोमल ओठ,जीभ और तालु छोटे, कान और पेट सुन्दर, मींढाँ [भेड] के समान पीठ मिली हुई और लाल जंघा मोटा स्वर (जोर से टांडनेवाला) पुष्ट छाती और वडी खूंदंड पीठ के ऊपर का मांस पिंड श्रेष्ठ है. नेत्रों के कोये लाल, सिंह के समान वहुत ऊंचा

तांम्र१ लघु२ सृंगे३ त्यौंही स्निग्धं१ तनुं२ लोम३ चर्म४,
जो वृषभ ऐसो सो सदाही सुभकर हैं ॥ १२२ ॥
बाम अंग१ बामावर्त२ दक्खिन१ बिलोमावर्त२,
नासादेसँ१ सबल२ बिडाल सो१ बदन२ हैं ।
मल्लि१ वालवायज२ से बुद्बुदं३ से नेत्र४ जैतु१,
उत्पल२ कमल३ रंग४ सुस्वर१ नर्दन२ हैं ।
अंडकोस १ ह्रस्व रु उरभसो१ उदर२ जाकै,
सोही वृख भारसोढा१ जवको सदन२ हैं ।
ऐसैं सुभभाव वर रावरेतैं पायो तिन्ह,
करत तथापि दुष्ट जगको कर्दन ह ॥ १२३ ॥

दोहा

सुभ वृख लच्छन ए कहे, धेनुं उचित इनमाँहिं ॥
जो जो व्है सो तास सुभ, ऊधं१ पुष्ट२ पुनि३ ऑहिं ॥ १२४ ॥

मनोहरम्

मूसकसम१ रु अस्र आविलं२ नयन३ जाकै,
प्रचल१ चिपिटं२ शृंग३ खरसम१ रंग व्है ।

कंधा, कोमल और छोटी सास्ना (गले के नीचे की कम्मल) भूमि तक लंबी पूंछ, तांबा के रंग के समान छोटे सींग, इसी प्रकार शरीर के केश (बाल) और चर्म (खाल) कोमल, ऐसे होवें वह सदैव शुभकारी है ॥ १२२ ॥ बांये शरीर में बांये मुख की भंवरी और दहिने शरीर में उलटे मुख की भंवरी, नाक का स्थान बलवान् अथवा सलवट (झुरियां) पड़ती होवें बिल्ली के जैसा मुख बैडूर्यमणि के समान अथवा मल्ली (बेला का फल) के समान वो जलके बुद्बुदों के समान नेत्र, लाख, कुमोदनी और कमल के समान रंग, अच्छे स्वर से नाद करना छोटे अंड (आंड) भेड़ के जैसा पेट जिसके होवे वही बैल भार खींचने में समर्थ और वेगें का घर है इसी प्रकार उन दैत्यों ने आपके वरदान से शुभभाव पाया है तो[२०] भी वे दुष्ट जगत् का नाश करते हैं ॥ १२३ ॥ ये बैल के शुभ लक्षण कहे उन में से ही गाय के भी जो जो होवें वह शुभ है इन के सिवाय उवाँड़ा स्तनप्रदेश पुष्ट मोटा होना अच्छा है[२४] ॥ १२४ ॥ जिस गाय के चूहा के समान काले वाले और नेत्र, चौड़े और चिपटे

रद१ चउ ४।२ सप्तम ७।३ वा तथा दस१०।४ रु लंबो१तुंड२,
ह्रस्व१ अरु थूल२ ग्रीवा ३ पिट्ठि नैंत अंग२ हैं ॥
शीर्ण१ खुर२ स्याम१ दिग्घ२ जिव्हा३लघु१ दिग्घ२ गुल्फ३,
जर्वसम१ मध्य२वडी१ ककुद२ कुबंग३ व्है ।
दह१ कृस२ ग्रैसी धेनु ग्रसुभ सदा ज्यौं त्यौंही ,
ग्रसुभ ग्रदेवनको ग्रब कब भंग व्है ।। १२५ ॥
धेनु चिन्ह ग्रसुभ कहे जे वृखमैंहु ते रु,
ग्रधिक हुए जो ग्रंडकोस१ लंब२ थूल३ व्है ५।
नसमय१ क्रोडदेस२ नसमय१ थूल२ गंड३,
मेहन१ त्रिनस२ लंब३ ग्रतिकृस मूल है ।
तालु १ ग्रोठ२ स्याम३ ग्रोतुंसे१ हग२ कँपिल१ रंग२,
थूल१ मंणि२ थूल१सृंग४देह१ कारे फूल२ व्है ।
ग्रैसो वृख ग्रसुभ तथा वै दुव दुष्ट करैं,
ग्रसुभ प्रजाको त्यौं त्यौं सालै हिय हूल है ॥ १२६ ॥

दोहा

पय उठात जिम पंकतैं, वृख वह भार बहैं न ॥

सींग, गधा के समान रंग; चार, सात, तथा दश दांत, लंबा मुंख, छोटी और जाड़ी गरदन (गला) और पीठ, अंग झुके हुए शीर्ष (सींग) और खुर काले, लंबी जीभ, छोटे और लंबे पगों के टिकूने (गँट्टे) जिसके, बराबरीवालों से मध्यमवेर्ग, मोटी और बांकी कूँधड़, काले शरीर, ऐसी गाय सदैव अशुभ है इसी प्रकार दैत्य अशुभ हैं जिन का अब कब नाश होवेगा ॥ १२५ ॥ गौओं के जितने अशुभ लक्षण कहे वे ही बैलों के अशुभ हैं इनके सिवाय लंबे और मोटे आंड, नसोंवाला दोनों अगले पगों के बीच का स्थान, मोटी और नसोंवाली गुदा, तीन नसोंवाला, लांबा और मूल से पतला लिंग, तालुआ और ओंठ काले, बिल्ली के जैसे नेत्र, नीला, हरा मिला हुआ (धूसर) रंग, लिंग का अग्रभाग मोटा, मोटा सींग, शरीर पर काले छींटे ऐसा बैल अशुभ है इसी प्रकार वे दोनों दुष्ट प्रजा का अशुभ करते हैं ज्यों ज्यों हृदय में शूल हो कर सालते हैं ॥ १२६ ॥ कीचड़ में पग उठाकर चले इस माफिक पग उठा-

कृष्णसारनिभ १भस्मनिभ२, वृख ढिग थूल रहैं न ॥ १२७ ॥
यौं वे ।२१ धर्मवेहैं न२अरु, प्रभु रहैं न१जगप्रान२ ॥
अरहि बिचारहु३ अप्प सब, दुष्टन नास निदान ॥ १२८ ॥

मनोहरम्

छाग सित१ होइ जाके दाहिन प्रतीकमाँहिं२,
व्है असितचक्र३ तो जो सब सुभकारी है ।
ऋष्यमृगरंग१ स्यामरंग२ वा अरुनरंग३,
धारैं सितचक्र४ सोहू सुभ अनुकारी है ॥
दंत१ दस१०।२ वा नव ९।३तथा व्है अष्ट८।४ जाकैं अरु,
कंठमनि१ एक१।२ त्यौंहीं मुंडभाव१ धारी२ है ।
सर्व१ सित२ सर्व१ स्याम२ अर्ध१ सित२ अर्ध१ स्याम,
अर्ध१ वा कपिल२ सो पै मांगलिकं भारी है ॥ १२९ ॥
नयन अरुन२ बहै३ यूथ१ पुरोग रहै१,
जल अवगाह१ सब पुब्ब२ चहैं बस्त जो ।
गौरवर्ण१ कृष्णपय२ कृष्णवर्ण१ गौरपय२,

कर चलने वाला बैल भार को नहीं खींचसकता ऐसा बैल समूह में कभी नहीं रहता अर्थात् जहां वह रहेगा वहां पशुओं का झुंड नहीं रहता जैसे काले हिरणों का और भस्मी का समूह एक स्थान पर नहीं रहता ॥ १२७ ॥ इसी प्रकार वे दोनों दुष्ट न तो धर्म को धारण कर सकते हैं और न उनके साथ जगत् के प्राणी रह सकते हैं इस कारण से हे प्रभु ! आप उन दुष्टों के नाश को निश्चय शीघ्र ही विचारो ॥ १२८ ॥ श्वेत बँकरा के दहिने अंग में काले छिड़के होवें तो वे सब सुख करने वाले हैं रोझ के समान रंग में अथवा काले और लाल रंग में श्वेत चक्र होवें तो भी शुभ है, जिसके दश, नव, अथवा आठ दांत होवें जिसके एक कंठमनि[गले के स्तन] होवे और मुंडभाव को धारे अर्थात् मस्तक पर बाल नहीं होवै सब श्वेत होवे, सब काला रंग होवे, अथवा आधा श्वेत और आधा काला वा आधा पीला रंग होवे सो भी शुभकारी है ॥ १२९ ॥ लाल नेत्र होवे और समूह(एवड)के आगे चले जल में घुसने में जो बँकरा सब से पहिले घुसना चाहै स्वेत रंग वाले के काले पग और काले रंग वाले के स्वेत पग और इसीप्रकार स्वेत रंग वाले के काले आंड और काली पूंछ

गौरवपु१ त्यौंहीं स्याम२ मुष्क३ बालहस्त४ जो ॥
एक १।१ पय२ स्याम३ वपु४ गौर५ वा·चरैं१ जो मंद २,
अरु सहं सब्द३ जैसैं ²गल प्रसस्तं जो ।
तैसैं दुव२ दुष्टन हनौं तो सुभभाव लोक,
निखिल लहैं यौं अब करहु अत्रस्त जो ॥ १३० ॥
गल१ मनि२ व्है अनेक३ जाकै रदं१ सप्त७।१ अरु,
खरसर्म१ नाद२ खोटे१ नख२ रु बरन६ व्है ।
जिव्हा१ तालु२ स्याम३ रु मंतगज सो१ सीस२भासैं,
प्रज्वलितं१ बालंधि२ कटेसे१ त्यौं करनं२ व्है ॥
ऐसो अजं असुभ धनीकै विधुंरा करन,
त्यौंही दुष्ट वे२ जगकै विधुरा करन व्है ।
जितातित ढूँढि ढूँढि प्रानिन बितायैं जात,
आप न सुनौं तो जग कोनके सरन व्है ॥ १३१ ॥

॥ दोहा ॥

अजलच्छन ए सुभ१ असुभ२, अंजा उचित इनमाँहिं ॥
व्है जो तो सो सो तसहु, निजफल टारत नाँहिं ॥ १३२ ॥

मनोहरम् ॥

पंचनखवारे१ पय२ तीन ३।² व्है जा कुंकुरकै,

होवे अथवा स्वेत रंग वाले के एक पग काला होवे मंद चरने वाला और स ब के साथ बोलनेवाला बकरा शुभ है ऐसे ही इन दोनों दुष्टों को मारो तो सब लोकं शुभ भाव को लेवे जिन को अब इसप्रकार भय रहित करो।१३०। जिस बकरा के गले में अनेक स्तंन होवें,सात दांत, और गधे के समान श ब्द, बुरे नख, और बुरा रंग होवे जिस की जीभ और तालु काला, हाथी के जैसा माथा, जली हुई होवे ऐसी पूंछ, कटे हुए से कांन होवें; ऐसा बकरा अशुभ और स्वामी के वियोगं कराने वाला है.त्योंही वे दुष्ट दैत्य जगत् के वियोग कराने वाले हैं जो जिधर तिधर हेर हेर कर प्राणियों को बिताये जाते हैं अब आप नहीं सुनो तो संसार किसके शरण में है ॥१३१॥ ये बक रे के शुभ अशुभ लक्षण हैं वे ही बकरी के शुभ अशुभ हैं वे जो जो उस बकरी में होवें वे अपना फल नहीं टालते ॥१३२॥ जिस कुत्ते के तीन पगों में पांच

अग्रपय१ दाहिनौं२ जो छ६ नखरवान३ व्है ।
ओठ१ नासा२ अरुन३ मृगेंद्रसो१ गमन७चलैं१,
सुंघत२ धरनि३ जाकै लंब१ मृदु२ कान३व्है ।
पुच्छ१रु सटा २ व्है जाकै लोमसैं३ महामृदुल,
नयन जुगल २।१ जाकै भल्लुक समान३ व्है ।
ऐसो जहँ स्वान व्है१ तो लच्छीको निधान व्है२ज्यौं,
आप बरदान व्है१ तो बानसुत मान व्है२ ॥ १३३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

पंच५ पंच५ नख जास चरन त्रय३, छ६नख बिराजित अग्र बाम पय॥
करन१प्रलंब२पुच्छ१मुख२पिंगल३,मल्ली१दृग२संरमा सो सुभफल ॥
यो सुभभाव लोककैं आनहु, महाखलन अब नास प्रमानहु॥
सुनत परासर२१बचन अबंचन, बररुचि२२बोले सुनहु बिरंचन ।१३५।

मनोहरम् ॥

प्राकृतगिरामैं ज्यौं इवर्ण१रु उवर्ण२दोहू२,
मिलत सवर्णहीसौं त्यौं मिले स्वकुलसौं ।
ए१ओ२कार जैसे स्वरमात्रसौं मिलैं न त्यौं,
मिलै न सुरमात्रसैं बढे बल बिपुलसौं ॥

पांच नख और अगले दाहिने पग में छः नख होवें ओठ और नाक लाल होवे चलने में सिंह की चाल होवे, और भूमि को सूंघताहुआ चले, जिस के लंबे और कोमल कान, पूंछ और गरदन के ऊपर के बालें वहुत कोमल, और जिस के दोनों नेत्र रीछ के जैसे होवें ऐसा कुत्ता जिसके होवे तो उसके लक्ष्मी का आश्रय होवे इसीप्रकार आप का बरदान होने में बाण केपुत्रों का मान है ॥१३३ ॥ जिस के तीन पगों में पांच पांच नख, और अगले बायें पगमें छ नख होवें; लंबे कान मुख और पीले रंग की पूंछ, मोगरा की कली के जैसे नेत्र, जिस कुत्ती के होवे वह शुभ फल देनेवाली है ॥ १३४ ॥ इसप्रकार शुभ फल लोक में आनकर अब बडे दुष्टों का नाश करो. ऐसे पराशर मुनि के नहीं ठगनेवाले (सत्य) वचन सुनकर वररुचि बोले कि हे ब्रह्मा सुनो ।१३५। प्राकृतभाषा में जैसे इवर्ण और उवर्ण सवर्ण अक्षरों से ही मिलते हैं तैसे ही वे (दैत्य) अपने कुल (सवर्ण) से ही मिलते हैं और जैसे एकार और

इकल१अनादि२ज्यौं कगादि९।३लुपैं४ऐसैं धर्म१,
इकल२ अनादि३ लुप्यो४ पातक पृथुलसौं।
सर्वठाम ल१ व२ र३ लुपैं४ ज्यौं मिले व्यंजनसौं५,
वेद१ हु लुपैं२ यौं मिल्यो बाधक बहुलसौं३॥ १३६ ॥
सौरसेनीमाँहिं त१ थ२ द्वै२ के द१ ध२ द्वै२ ज्यौं होत,
मागधीमैं र१ स२ द्वै२ के ल१ श२ द्वै२ ज्यौं जानिये।
भूतभाखामैं ज्यौं झर्ब१ प्रत्याहारको खपै२,
णकार१ को नकार२ श१ ष२ द्वै२ को स३हि ठानिये ॥
अपभ्रंसमाँहिं जैसैं क्त्वा१ प्रत्ययको इकार२,
तुं१ प्रत्ययको त्यौं अण२ होत पहिचानिये।
व्रात्य१ भयेजात यौं द्विजादि चउ४ वर्णनके२,
पूख्यो जगत्रास खलनास मन मानिये ॥ १३७ ॥
जातूकर्ण्य२३ बोले जँहँ गोधा१ सर्प२ वृश्चिक३ ए,

ओकार स्वर मात्र से नहीं मिलते तैसे ही बहुत बल से बढे हुए वे दैत्य देव मात्र से नहीं मिलते। जैसे अनादि (किसी वर्ण के आदि में नहीं होने की अवस्था में) अकेले (किसी से नहीं मिले हुए) क, ग, च, ज, त, द, प, य, व, इन न— अक्षरों का लोप होजाता है तैसे ही अनादि अकेले (असहाय) धर्म का इन बडे पापियों से लोप हो गया है। सब ठौर जिस प्रकार ल, व, र, ये तीन अक्षर व्यंजन से मिलने पर लुप्त हो जाते हैं ऐसे ही बहुत बाधा करने वाले इन दैत्यों से वेद का लोप होता है ॥ १३६॥ शौरसेनी भाषा में जैसे तकार को दकार और थकार को धकार होता है, और जैसे मागधी भाषा में रकार को लकार और दन्त्य सकार को तालव्य शकार होता है इसी प्रकार पैशाची भाषा में झब प्रत्याहार(झ ढ घ घ भ ज ड द ग ब)कोखप प्रत्याहार(ख फ छ ठ थ च ट त क प)होता है और णकार को नकार, व तालव्य 'श' और मूर्धन्य 'ष' को दन्त्य सकार होता है तैसेही अपभ्रंश भाषा में क्त्वा प्रत्यय को इकार (पूर्वकालिक क्रिया जैसे मारयित्वा का 'मारि') होता है और तुम् प्रत्यय को अण (जैसे कर्तुं को 'करण' होता है इसी प्रकार ब्राह्मणादि चारों वर्ण वाले संस्कारहीन अर्थात् भ्रष्ट हुए जाते हैं और जगत् में त्रास भर गया है इस कारण से उन दुष्टों का नाश करने का मन में विचार कीजिये ॥ १३७ ॥

सीतकालमैं४ वा बरखामैं५ वा घनैंरहैं६।
इंधन रहित१ जँहँ पावकेर ज्वलित होइ३,
खंजरीट१ भूपैं२ जँहँ सुरत३ तनैंरहैं४॥
अप्ररोह तरु१ के प्ररोह२ कदली१ कै कंटर२,
नीरमैं१ अकारन२ ही भ्रमन३ बनैंरहैं४।
द्वै२ सिर१ के पंकज२ वा ताड३ जँहँ होइ ४ तँहँ,
भू१मैं निधि२ होइ३ ताहि कोबिदं खनैंरहैं ॥ १३८ ॥

॥ दोहा ॥

रबिकौं१ लखि२ भुव३ सुंघि४ वृखभ५, नादकरैं६ जिहिं थान ॥
पुष्प१ होइ२ वा पुष्प पर३, निहचै तत्थ१ निधान२ ॥ १३९ ॥
असुरनमैं निहचै इमहिं, भासैं निर्दयभाव ॥
द्रुया करहु जग पर द्रुहिनं, देहु खलन पर दाव ॥ १४० ॥

॥ मनोहरम् ॥

हीरक१ मैं पंच५ गुन पंच५ दोस च्यारि४ छाया,
हे द्रुहिनं ते सब अनुक्रमतैं धारिये ।
अतिलघुता१ रु बसु८ कोनता२ छ६कोनता३ त्यौं,
तिच्छनता४ निर्मलता५ ए५ गुन बिचारिये ॥

जातूकर्ण्य ने कहा कि जहां पर गोहिली (गोह) सर्प और बिच्छू शीतकाल में वा वर्षा में अथवा सदैव ही बहुत रहते होवें, जहां पर विना बलीते के अग्नि जलती होवे, खंजन पक्षी भूमि पर बैठकर जहां पर रत (मैथुन) करे, वृक्ष के नहीं ऊग कर केले के कांटे लगे, विना ही कारण जल में भ्रमर (भँवर) पड़ते रहें, अथवा दो माथे के कमल और ताड़ वृक्ष जहां पर होवे वहां भूमि में धन होता है जिसको पंडित लोग खोदते हैं ॥१३८॥ जिस स्थान पर बैल सूर्य को देखकर भूमि सूंघकर शब्द (टांडे) करे अथवा फूल के ऊपर फूल होवे, वहां पर निश्चय ही धन है ॥ १३९ ॥ इसी प्रकार असुरों में निर्दयीपन दीखता है सो हे ब्रह्मा संसार पर दया करो और दुष्टों पर दाव दो ॥ १४० ॥ हे ब्रह्मा हीरे में पांच गुण, पांच दोष और पांच छाया (जाला) हैं वे आगे क्रम से जानो. अत्यंत हलकापन, आठकोन (आठपहलू) छकोन (छपहलू) त्योंही तीक्ष्णता और निर्मलता

मल१ अरु बिंदु२ रेखा३ त्रास४ अरु काकपद५,
बज्रमैं ए५ उक्त दोस निहचै निवारिये ।
सित१ रु अरुन२ पीत३ स्याम४ च्यारि४ छाया ए,
अनुक्रमसौं वर्ण च्यारि४ उचित विचारिये ॥ १४१ ॥
गुनजुत बज्रकौं जो बिप्र१ करैं धारन तो,
तप१ मख२ दान३ सौं मिलै जो फल सो लहैं ।
बाहुजैं२ जो धारन करैं तो अरिनास१ करि,
बिक्रम२ बिजय३ आदि गुनगनकौं गहैं ॥
ऊरुज३ करैं जो ताहि धारन तो ताकै छेम१,
प्रज्ञा२ धन३ सुजस४ कलाकुसलता५ रहैं ।
पज्जं४ करैं धारन तो परउपकारिता१ रु,
दच्छता२ रु बाहुलता धान्य३ धन४ की बहैं ॥ १४२ ॥
भाखे पंच५ दोस तिनमैं मल१ मलिनभाव२,
जातैं व्याधि१ अग्निभय२ दंष्ट्रिभय३ जानैं हैं ।
बिंदुरूप१ बिंदु२ जातैं कुल१ धन२ आयु३ गज४,
अस्वन५ को नास भय६ रोग७ पहिचानैं हैं ॥

(जिसमें कोई जाला अथवा रंग गैरे नहीं होवे) ये पांच गुण हैं, मल, विन्दु, रेखा, त्रास और काकपद ये पांचों ऊपर कहे हुए हीरे में दोष हैं जिसको निश्चय ही निवारण करदेना चाहिये स्वेत, लाल, पीली और काली ये चार छाया हैं सो क्रम से चारों वर्णों के उचित जानो ॥ १४१ ॥ स्वेत छाया वाले हीरे को ब्राह्मण धारण करे तो तप, यज्ञ और दान से जो फल मिले सो फल लेवे और लाल छाया वाले को क्षत्री धारण करे तो शत्रुनाश करके पराक्रम विजय आदि गुण गण को पावे, पीली छायावाले को वैश्य धारण करे तो उस के कुशल बुद्धि धन यश और कला कुशलता रहे, और काली छायावाले को शूद्र धारण करे तो परो पकारीपन चतुरता और धन धान्य की वृद्धि प्राप्त होवे ॥ १४२ ॥ ऊपर पांच दोष कहे जिनमें मैलेपन का नाम मल है, जिससे रोग, अग्नि का भय, दाढवाले पशु का भय है, जिसमें विन्दु (टीकी) के समान छिद्रका हो उसको विन्दुदोष कहते हैं. जिससे कुल, धन, आयु, हाथी घोड़ों के नाश

रेखारूप१ रेखा२ जातैं सस्त्रभय१ बंधुनास२,
भिन्नभ्रम दै सो चिन्ह१ त्रास२ त्रास ठानैंहैं ।
काकपद जैसा चिन्ह१ काकपद२ जानौं जासौं,
नास सरबस्वको१ कै मृत्यु२ धुव मानैंहैं ॥ १४३ ॥

॥ दोहा ॥

इन दोसन५ बिच बिंदु१ अरु, रेखा२ चउ४ चउ४ भेद ॥
इक इक सुभ तिनमैं इतर३।३, असुभ करत उच्छेद ॥ १४४ ॥

॥ मनोहरम् ॥

मुक्ता१ ईभ१ मच्छ२ किंटि३ नागन४के सीस होत,
बंस१ संख२ सुक्ति३नके गर्भ उपजतुहैं ।
अष्टम जनम याको बारिद८ मैं बिंदु करि,
ऐसैं अब याकी योनि अष्टधा८ रजतुहैं ॥
धात्रीफल तुल्य १गजमुक्ता२ रक्तछाया३ गुंजा,
तुल्य१ मैंनि२ जाके रंग पाटला लजतुहैं३।
कंकोलके मान१ कोलमुक्ता२ कोलदंष्ट्रा छबि३,
ऐसे रत्न भागधेयहीन न भजतुहैं ॥ १४५ ॥

और रोग का भय है; जिस हीरे में लकीर सी खिची होवे उसको रेखा दोष कहते हैं जिससे शस्त्र का भय बन्धुनाश होता है, जिस हीरे में टूटे हुए का भ्रम दिखाई देता होवे उस दोष का नाम त्रास है सो त्रास दिखाता है, और काक (कागला) के पग के जैसा जिसमें चिन्ह होवे उस दोष का नाम कौकाचिन्ह है, जिससे सर्वस्व का नाश होता है, और निश्चय ही मृत्यु का भय है ॥ १४३ ॥ इन ऊपर के पांच दोषों में बिन्दु और रेखा के चार चार भेद हैं जिनमें एक एक शुभ और बाकी के तीन तीन अशुभ और नाश करने वाले हैं ॥१४४॥ मोती, हाथी, मच्छ, सूवर और सर्पों के मस्तकों में और बाँस, शंख और सीप के गर्भ में होते हैं; और इसकी आठवीं उत्पत्ति मेघ की बूंद से भी होती है इस प्रकार अब इसकी आठ योनि (उत्पत्तिस्थान) शोभित हैं, हस्ती के शिर का मोती आँवले जैसा मोटा लाल छायावाला, मछली के शिर का मोती चिरमी जैसा मोटा जिसके रंग से पाटला (पुष्पविशेष) भी लजाता है, सूवर के शिर का मोती कंकोल का सा मोटा, सूवर की दंतुली जैसी छवि होती है ऐसे रत्न भाग्यहीन नहीं पाते हैं

वर्तुलता रम्य१ अहिमुक्ता२ नीलछायाधर३,
कोलमुक्ता मान१ बंसमुक्ता२ ससिभास३ व्है ।
पारावत अंडके प्रमान१ कंबुमुक्ताफल२,
स्वच्छ करकोपल समान छबि३ जास व्है ॥
नानामान१ सुक्तिभवं मुक्ताफल२ नानाछबि३,
ताको च्यारि४ देसनमैं आकर निकास व्है ।
सिंहल१ रु आरबाट२ पारसीक३ बर्बर४ त्यौं,
जन्म इनमैं जिम परिच्छा तिम तास व्है ॥ १४६ ।

॥ पादाकुलकम् ॥

अर्क स्वाति उडु पर जब आवत, बारि बिंदु तब घन बरसावत ॥
सुक्तिनगर्भ गिरे ते सीकर, बनत निंद सम सम मुक्तावर ॥१४७॥
ज्योति१ वृत्तपं२ मान३ बढै जिम,
तिन्ह मुक्तिन गुन१ रूप२ बढै तिम ॥
व्है इक सुक्ति रुक्मिनी आह्वय,
मुक्ता गुन तस सुनहु दयामय ॥ १४८ ॥

॥ मनोहरम् ॥

सर्प के सिर का मोती गोलाई में मनोहर, निछाया (झांई) को धारण करनेवाला, सूवर के मोती जैसा मोटा, बांस का मोती चन्द्रमा की कांतिवाला, और कबूतर के अंडे जैसा मोटा, शंख का मोती स्वच्छ ओलों (गड़ा) के समान छविवाला, और सीप से उपजे हुए मोती अनेक प्रकार के प्रमाण (मोटाई) वाले अनेक प्रकार की छविवाले जिनके निकास की चार देशों में खानि है, सिंहलद्वीप (लङ्का) अरब का समुद्र, पारस का समुद्र, बर्बर (मायापुरीं समारभ्य सप्तशृंगाच्चथोत्तरे । बर्बराख्यो महादेशः प्रोक्तः श्री शक्तिसङ्गमे) इन में जैसे उनके जन्म हैं वैसी ही उनकी परीक्षा है ॥१४६॥ सूर्य जब स्वाति नक्षत्र पर आता है जब मेघ जल बुन्दे बरसाता है वे जल के कण सीपों के गर्भ में पड़ते हैं वे विन्दु के समान ही श्रेष्ठ मोती बन जाते हैं ॥१४७॥ कान्ति, गोलाई और तोल बढे त्योंही उन मोतियों के गुण और रूप बढते हैं, एक रुक्मिनी नामक सीप होती है उसके मोती के गुण हे दयावान रामसिंह सुनिये ॥ १४८ ॥ रुक्मिनी नामक सीप में मोती होता है

रुक्मिनी मैं१ मुक्ताफल२ होत जो अनर्घ३ अति,
कुंकुम छबि४ रु जातीफल मित५ जानिये ।
स्निग्धता घनी६ रु अतिनिर्मलता७ जामैं सांहि,
नृपन उचित महादुर्लभ प्रमानिये ॥
आकर प्रदेश च्यारि४प्रथम कहे जे अब,
तिन्ह करि भिन्न भिन्न मुक्ता पहिचानिये ।
थूल१मध्य२सुच्छम३जथा प्रमित होइ ज्यौं ज्यौं,
पितामह त्यौं त्यौं तिन्ह अर्घ उर आनिये ॥ १४९ ॥
सिंहलको१मुक्ता स्निग्ध२है कछु मधुरकांति३,
आरबाटको१बिमल२पीतकांति३चहिये ।
पारसीकमुक्ता१होत स्वच्छ२रु बिसदकांति३,
बर्बरको१रूच्छ२कछु स्यामकांति३लहिये ॥
कुक्कुटके अण्डमित मेघमुक्ता२भानुछबि३,
वृत्त४रु निबिड५गुरु६दुर्लभ सो कहिये ।
मुक्तायोनि अष्ट८ए कही है इनमांहिं अब,
सुनहु बिरंचनें जे दोस दस१०रहिये ॥ १५० ॥
दोस च्यारि४मोटे खट६छोटे तिन्ह लच्छन१रु,
नाम२फल३सुनहु जितेक मुनि गावैंहैं ।

वह बहुत महंगा होता है और कंकू के जैसी छबि.जायफल जैसा मोटा, बहुत स चिक्कण, बहुत निर्मल, बड़ी कठिनाई से मिलनेवाला, राजाओं के योग्य जानों ऊपर जो मोतियों की चार खानि कही जिनके मोती जुदे जुदे पहिचानों इनमें बडा, मध्यम (औसत दरजे का) और छोटा प्रमाण का होवे वैसाही हे ब्रह्मा उनका मूल्य (मोल) जानों ॥ १४९ ॥ सिंहलदेश का मोती सचि क्कण, कुछ महुवे की सी कान्तिवाला और अर्ब का मोती निर्मल और पीली छबिवाला, पारसीक देश का मोती निर्मल और स्वेत कान्तिवाला, बर्बर दे श का मोती रूखा और कुछ काली झाईवाला, और मेघ से पैदा हुआ मोती कूकड़ा (मुर्गा) के अंडे के बराबर, सूर्य की सी छबि, गोल, दृढ, बोझल, होता है सो दुर्लभ है, मोतियों की ये आठयोनि कही जिनमें दश दोष हैं सो हे ब्रह्मा सुनों ॥ १५० ॥ चार दोष बडे और छ छोटे हैं, जिनके लक्षण, नाम और

जाके एकदेसमैं लगी व्है सुक्ति सो तो दोस,
मुक्तिलग्न नाम कुष्टकारक३बतावैंहैं ॥
मीनदृग जैसो चिन्ह मुक्ताबिच होइ१ताको,
मीनदृग२नाम सब संतति नसावैंहैं३ ।
छाया१करि दीप्ति करि हीन१व्है जरठ२नाम,
दोस जो दरिद्रपन अति उपजावैंहैं३ ॥ १५१ ॥

दोहा ॥

मुक्ता बिद्रुमकांति१सो, दोस नाम अतिरक्त२ ॥
करैं मृत्यु३इम च्यारि४ए, मोटे दोस प्रसक्त ॥ १५२ ॥

मनोहरम् ॥

छोटे खट६दोस अब मुक्ता जो बलीबलित१,
दोस सो त्रिवृत२नाम दुर्भगता करैंहैं३ ।
वृत्तभावहीन१व्है सो चर्पट२अकीर्त्तिकर३,
व्है प्रलंब१सो है कृश२नाम मति हरैंहैं३ ॥
व्है त्रि३कोन१सो है त्र्यस्र२नाम सुभगत्वहंता३,
सपिटंक व्है अवृत्त१खंड२नाम धरैंहैं ॥
संपति बिनासैं३सो रु एकदेसभुग्न व्है१सो,

फल जितनेक मुनियोंने कहे हैं सो सुनों, जिस मोती के एक जगह सीप लगीहुई होवे उस दोष का नाम "मुक्तिलग्न" है जिसको कोढ उत्पन्न करनेवाला बताते हैं जिस मोती के मच्छी के नेत्र जैसा चिन्ह होवे उसका 'मीनदृग' नाम और सब सन्तान को नसानेवाला फल है. छाया (झांई) और कान्ति से हीन होके उसका जरठ नाम और दारिद्र पैदा करने का दोष है ॥ १५१ ॥ जो मोती मूंगे की छबिवाला होवे उस दोष का नाम 'अतिरिक्त' और मृत्युकरना उसका फल है इसप्रकार ये चार मोटे दोष हैं ॥ १५२ ॥ अब छोटे छः दोष कहते हैं कि जिस मोती में वल पडाहुआ होवे उसका 'त्रिवृत'नाम और दुर्भाग्य करनेवाला है, बिना गोलाई के होवे वह 'चर्पट' अपयश करानेवाला, लम्बा होवे उसको 'कृश' नाम और बुद्धि हरनेवाला है, तीन कोनेवाला होवे उसको 'त्र्यस्र' नाम और शुभका हरनेवाला है, गोलाई रहित और फोड़े (छाले) वाला होवे उसको 'खंड' नाम और सम्पत्ति का नाश करनेवाला है और जिस मोती का एक हिस्सा टूटाहुआ होवे उसका नाम एकदेशभुग्न और उसम

नाम कूसपार्श्व२जासों उद्यमता टरैंहैं२ ॥ १५३ ॥

दोहा ॥

मुक्तामैं व्है कांति चउ४,पीत१मधुर२सित३नील४ ॥
क्रमतैं श्री१मति२जस३करन, हरन सुभगता४सील ॥१५४॥
है गुन चउ४मानिक्यमैं, दोस अष्ट८दुखकार ॥
पुनि छाया सोलह१६प्रतिम, समुझहु फल अनुसार ॥१५५॥
निर्मलता१अति रक्तत २,स्निग्धछबित्व३गुरुत्व४ ॥
कहे च्यारि४गुन ए करैं, आलय बित्त उरुत्व ॥ १५६ ॥
सबगुन जुत मानिक्य सुभ, व्है सु रहै जिहिं गेह ॥
बाँजिमेध १फल धन२बिजय३,आयु४बढावत एह ॥ १५७ ।

मनोहरम् ॥

याके च्यारि४आकरहैं सिंहल१ रु कालपुर२,
अंधू३रु तुवर४इन माँहिं जन्म पावैंहैं ।
रक्तछबि१सिंहलको२पद्मराग३पीतछबि१,
कालपुर भूत२कुरुबिंद३सो कहावैंहैं ॥
पल्लव असोकछबि१अंध्रको२सौगंधिक३,

को मिटाना उसका फल ॥ १५३ ॥ मोती में चार कान्ति हैं जिनमें पीली कान्ति लक्ष्मी को देनेवाली, मधुर कान्ति बुद्धि देनेवाली, स्वेत कान्ति यश क रानेवाली और नीली कान्ति सुन्दरता और शील को हरनेवाली है॥ १५४ ॥ माणिक में चार गुण और दुःख करनेवाले आठ दोष और सोलह छाया हैं जिनके फल अपने अपने सदृश जानों ॥ १५५ ॥ निर्मलपन, अत्यन्त ललाई, सचिक्कण छवि और भारीपन ये चार गुण हैं जो घर में धन की विशालता (बहुतायत) करते हैं ॥ १५६ ॥ इन सब गुणोंवाला माणिक जिस घरमें रहता है वहां शुभ होता है और अश्वमेध का फल देकर धन विजय और आयु बढाता है ॥ १५७ ॥ माणिक पैदा होने की चार खानि हैं सिंहलद्वीप, कालपुर, अंध्र, (जगन्नाथादूर्ध्वभागमर्वाक् श्रीभ्रमरात्मिका ॥ तावदं ध्राभिधो देशः प्रोक्तः श्रीशक्तिसङ्गमे ॥ १ ॥) तुवर (देश विशेष) इन में पैदा होते हैं. सिंहल देश का मांणिक लाल छविवाला, कालपुर का पैदा हुआ मांणिक पीली छविवाला, अंध्र देश का माणिक अशोक वृक्ष के पत्ते की छविवाला, चौथा तुवर देश का मांणिक नीली छविवाला, जिसको

नीलछबि१चोथो४।२जाहि नीलगंधि३गावैंहैं ।
सिंहलको१उत्तम२रु मध्यनको२।१मध्य२तुव,
राख्यको१कनिष्ठ२मुनि बहुलै बतावैंहैं ॥ १५८ ॥
छाया जँहँ द्वै२।१ सो दोस द्विछबि२विनासैं बंधु३,
रूप द्वै२।१जो सो द्वै२पद मासमैं हरावैं हैं३ ।
भिन्न१व्है जो भेद२सस्त्रघात दै३रु रेनुजुत,
कर्कर२गिनौं सैं पसु बंधु बिनसावैं हैं ॥
दुग्ध रंग लसुन१जहाँ सो पट२सोभा हनैं३,
रंग दीनता१सो जड२बित्तहा३कहावैं हैं ।
मधुछबि१कोमल२सो आयु१जय२लच्छी३हरैं३,
धूमरंग१धूम्र२सिर बिज्जुलि गिरावैं हैं३ ॥ १५९ ॥

दोहा ॥

इंद्रनीलमैं पंच५गुन, दोस खट६रु छबि अष्ट८ ॥
रु व निजफल अनुसारही, करत मंगल१रु कष्ट२॥ १६० ॥
स्निग्धछबित्व१सुरंगपन२,रंजन पास प्रदेस३ ॥
गुरुता४पुनि तृनग्राहिता५, यँहँ गुन पंचक५एस ॥ १६१ ॥

घनाक्षरी ॥

अभ्र १सो पटल२है सो अभ्रू२आयु लच्छी हरैं३,

नीलगंधि कहते हैं, इनमें सिंहल देश का उत्तम, कालपुर और अन्ध्र का मध्यम, और तुवर देश का अधम बहुत मुनि बताते हैं ॥ १५८ ॥ जिस में दो छाया होवें सो "द्विछवि"दोष बान्धवों का विनाश करता है, दो रूपवाला होवे सो 'द्विपद' एक महीने में ही हरानेवाला है, तूटाहुआ होवे सो फूट पटका कर शस्त्रघात कराता है, रेतीला होवे सो 'कर्कर' पशु और बान्धवों का नाश करता है, दूध के रंग जैसा होवे सो 'लशुन' वस्त्र की शोभा को हरनेवाला, रंग की कमीवाला 'जड' धन हरनेवाला कहाता है, महुँवे की जैसी छवि होवे सो 'कोकल' आयु, जय और लक्ष्मी को हरता है, और धूएँ के रंग जैसा होवे सो 'धूम्र' शिर पर बिजली गिराता है ॥ १५९ ॥ नीलम में पांच गुण छः दोष और आठ छाया हैं वे सब अपने अपने फल के अनुसार ही शुभ और अशुभ करते हैं ॥१६०॥ सचिक्कण कान्ति, अच्छा रंग,

रेनु व्है१सो कर्करी२दरिद्रदै छुरावैं देस३।
भिन्नभ्रम व्है१सो त्रास२दंष्ट्रिभयदाता३भिन्न,
व्है१सो भिन्न२तनय कलत्रैं नासकारी३एस ॥
मिट्टीगर्भ व्है१सो मृत्तिकागर्भक२कुष्ठकारी३,
ग्रावगर्भ व्है१सो अस्मागर्भ२हारिदै३बिसेस ।
छायानाम१लच्छन२कहौं तो व्है बिलंब इंदैं,
नीलकी परिच्छा अब भाखौं सो सुनौं प्रजेस ॥ १६२ ॥

दोहा ॥

छुवतमात्र जो नीलकौं, होइ नील जो दुद्ध ॥
सत्यनील सो जानिये, सनिको बल्लभ सुद्ध ॥ १६३ ॥
दोस६रहित सबगुन५सहित, धरैं नील जो धाम ॥
जिहिं दै धन१बल२आयु३जस४,सनि पूरैं सबकाम ॥१६४॥
मरकतमैं गुन पंच५पुनि, दूखन सप्त७दिखात ॥
अष्ट८छवि रु गुन१नाम२अब, जे बिधि बरनैं जात ॥१६५॥

मन प्रसन्न करनेवाले, बन्धेहुए सब स्थान जिसके, भारीपन, तृणों को ग्रहण करनेवाला अर्थात् जिसके पास तृण रक्खाजावे तो वो उसको चिपका लेवै, वे पांच गुण नीलमणि [पन्ना] के हैं ॥१६१॥ बादल के समान जाला होवे सो 'अभ्र' आयु और लक्ष्मी को हरता है, जिस में रेत के दानें होवे सो कर्करी, दरिद्र देकर घर छुडाता है, तूटेहुए का भ्रम होवे सो 'त्रास' सिंह आदि दाढवाले पशुओं का भय देनेवाला, तूटाहुवा होवे सो 'भिन्न' पुत्र और स्त्री का नाश करनेवाला हैं, जिस के बीच में मिट्टी होवे उस का नाम 'मृत्तिकागर्भ' है सो कोढ करनेवाला, जिसके बीचमें पत्थर होवे सो 'अश्मगर्भ' विशेष पराजय देनेवाला है, इस नीलमणि (नीलम) की छाया के नाम और लक्षण कहूं तो देरी होती है इसकारण से इस नीलमणि की परीक्षा कहता हूं सो हे अँग्रा सुनो ॥ १६२॥ जिस नीलम के छूते ही दूध नीला होजावे उसीको सच्चा नीलम जानिये. जो शुद्ध रत्न शनैश्चर को बहुत प्यारा है ॥ १६३ ॥ दोषों के रहित और गुणों के सहित नीलमनि को घर में रक्खै तो उसको धन, बल, आयु, यश, देकर शनैश्चर उसकी कामना पूरी करता है ॥१६४॥ पन्नों में पांच गुण और सात औगुन दीखते हैं. आठ छवि, उनके नाम और गुण

सुरंगत्व१अरजस्कता२,स्निग्धभाव३गुरुभाव४ ॥
निर्मलता५ए गुन निखिल,दुरित१भीति२तृनदाँव ॥ १६६ ॥
बलि जो मरकत त्रास बिनु१,सैवल छाय२सुरंग१ ॥
सो अनर्घ सब बिषहरन, पावत पुण्य प्रसंग ॥ १६७ ॥

घनाक्षरी ॥

दोसनमैं रूक्ष भाव व्है१सो रूक्ष२व्याधि कर३,
सपिटक व्है१सो सपिटक२सस्त्रघात देत३।
छायाहीन व्है १सो मलिनाख्य२बधिरत्वदायी३,
ग्रावगर्भ व्है१सो अस्मगर्भ२बंधुनास हेत३॥
रेनुजुत होइ१सो ससर्कर२तनूजहंता३,
दीप्तिहीन व्है१जरठ२बह्निभयको निकेत३।
कर्बुरता व्है१सो कलमास२मृत्युदायी३एते७,
मरकत दोस भाखैं मुनि जे दयाउपेत ॥१६८॥

मनोहरम् ॥

कृत्रिम जो बज्र१सो तो बज्रहीको बेध्यो२नसै३,
कृत्रिम जो मुक्ता१नसै२धोयो लौंन पानीसौं३।

अब वर्णन करता हूं ॥१६५॥ श्रेष्ठ रंग, जिसमें रज (रेत) के दाने दिखाई न हीं देवें, सचिक्कणपन, भारीपन, निर्मलपन, ये गुण सब पाप और भयरूपी तृ ण पर अग्नि रूप हैं ॥१६६॥ पुनि वह पन्ना विना त्रास अर्थात् दोष रहित औ र सैवाल और छाया विना श्रेष्ठ रंगवाला होवे सो अमूल्य और सब प्रकार के विषों (जहेरों) को हरनेवाला है, सो पुण्यात्मा पाते हैं ॥१६७॥ इस पन्ना के दोषों में रूखापन होवे सो 'रूक्षभाव' रोग करनेवाला,फोड़ा(छाला)वाला होवे सो 'सपिटक,नामवाला शस्त्रघात कराता है,छाया (झांई) विना होवे सो 'म लिन' नाम वाला बहिरेपन को देता है जिस के बीच में पत्थर होवे सो "अश्मगर्भ" बंधुनाश का कारण, रेणु सहित (रेतीला) होवे सो 'सशर्कर' पुत्र का नाश करता है, कान्तिहीन होवे सो 'जरठ' अग्नि भय का स्था न है, चित्र विचित्र (नाना रंग मिलेहुए) होवे सो 'कल्माष' नाम का मृत्यु देनेवाला है. जो मुनि दया सहित हैं उनमें पन्ना के इतने दोष कहे हैं ।१६८। जो हीरा बनावटी होता है वो सचे हीरे से बेधने पर नष्ट होजाता है.

कृत्रिम जे सेसं पद्मरागादिक१घृष्ट किये,२
कथित कियं३हु नस४साँची सावधानीसौं ॥
घृष्ट किये१पावैं२मृदुभाव३औ कथित किये१,
पावैं२रागहीनभाव३परख प्रमानीसौं ।
आछे१बुरे२रत्न औसैं चिन्हन सो खोजे जात,
तैसैं दुष्ट खोजे हम दुष्टता दिवानीसौं ॥१६९॥

दोहा

कांति१कठिनता२स्वच्छता३,सबरत्नन गुन तीन३॥
बँज्रहिं टारि गुरुत्व ४बालि, किल चतुर्थ४गुन कीन ॥ १७० ॥
लाघवजुत गौरवरहित,ए५हि बज्रगुन आँहिं ॥
तैसैंको गुन कहहु तुम, मारक दुष्टन माँहिं ॥१७१॥

मनोहरम् ॥

गृत्समद२४बोले नर१गज२को परमआयु,
व्योम हग भू१२०मितं समा रु पंच५दिन है ।
अस्वको बतीस३२अब्द भाख्यो भोलि१रासभ२को,
अतिकृति२५मान वृंख१सैरिभ२को जिन२४है ॥
बस्तन१उरभ्रन२की अष्टि१६मित अब्द संख्या,

और जो बनावटी मोती है वह निमक और पानी से धोने से नाश होजाता है बाकी के माणक आदि बनावटी रत्न होवे वे घिसने से कोमल पड जावें पानी में उवालने से जिन का रंग विगडजावे यही उनकी परख है इसप्रकार अच्छे और बुरे रत्न उनके चिन्हों से तलाश किये जाते हैं. तैसे ही वावली दुष्टता से हमने उनको खोजे हैं ॥ १६९ ॥ सब रत्नों में कान्ति करडापन और निर्मलता ये तीन गुण हैं इसीप्रकार हीरे को छोड कर भारीपन भी निश्चय ही सब में चौथा गुण है ॥ १७० ॥ हलके पनके सहित और भारी पन से रहित हीरे का गुन है असे उन मारनेवाले दुष्टों में कौन सा गुन है सो हे ब्रह्मा तुम कहो ॥ १७१ ॥ गृत्समद नामक मुनि बोले, कि मनुष्य और हाथी की परम (अधिक से अधिक) आयु का प्रमाण एक सो बीस वर्ष और पांच दिन का है, और घोडे की आयु बत्तीस वर्ष की, ऊंठ और गधे की पचीस वर्ष की बैल और भैंसे की चौवीस वर्ष की बकरा औ

स्वाननके आयुकी ज्यौं अब्द संख्या इन १२ है
दैत्यनके आयुकी कहाँलौं अब्द संख्या ऐसैं,
बुल्लहु बिरिंचि कृपा लोकपैं है कि न है ॥ १७२ ॥
कामंदक बोले दुर्ग जलमय१अद्रिमय२,
ग्रांवमय३त्यौंहीं इष्टकामय४बखानिये ।
धन्वमय५मिट्टीमय६बनमय७पत्र्यमय८,
दारुमय९एते नव९दुर्ग जग जानिये ॥
अच्छे१पहिले द्वै२इनमाँहिं ओर मध्यके छ६जे१.
मध्यम२ओअंतिम१कनिष्ट२पहिचानिये ।
भुपनकौं दुर्ग ज्यौं बिपत्तिमैं बचावैं ऐसैं,
दुष्टबर दुर्गतैं बचे न बर मानिये ॥ १७३ ॥

घनाक्षरी ॥

सेनाके छ६भेद तिनमाँहिं जो प्रथम मौलं१,
पीढिनतैं सो तो बसबर्ती बिसवास धाम २ ।
भृत्य१है बहोरि जो अधीन कीनौं बेतन दै१,
मैत्र२पुनि मित्रतासौं आवैं जो सहायकाम२ ॥
सो है श्रेणा१समय अधीन ज्ञाकी आश्रितता२,

र मींढा की सौलह वर्ष की गिनती है इसीप्रकार कुत्ते की परम आयु की गिनती बारह वर्ष की है तैसे ही इन दैत्यों की आयु की संख्या कहांतक है सो हे ब्रह्मा बोलिये आप की कृपा संसार पर है कि नहीं है॥१७२॥ कामंदक मुनि बोले कि संसार में जलमय पर्वतमय पत्थरमय ईटमयँ (ईंटों से चुनाहुआ) निर्जलभूमिमय, मिट्टीमय, (धूलकोट) वनमय, मनुष्यमयँ, (मनुष्यों के इकट्ठे होजाने से किला बनजाता है अथवा व्यूहरचना से) काष्ट मय,[लकडियों का] येनव प्रकारके किले हैं इन में प्रारंभ के दो जलमय औ र पर्वतमय तो उत्तम हैं और बीच के छ प्रकार के गढ मध्यम अरु प्रान्त का काष्टमय अधम जानो ये गढ राजाओं को आपदा से बचाते हैं ऐसे वरदान रूपी गढ से उन दुष्टों का बचना श्रेष्ठ नहीं है ॥ १७३ ॥ सेना के लोगों के छ भेद हैं जिनमें प्रथम (मौलं) जो पीढियों (वंशपरम्परा) से उसीदेश में र हकर वश में रहाहोवे वह तो विश्वास का घर, दूसरा वह है तनखा देक र जिसको वश में किया होवे, तीसरा मित्र नामक है सो मित्रता से स-

आटविक१सो जो बनबासी सबरादि ग्राम२,
सो अमित्र१है जँहँ दबायो अरि आश्रित व्है२,
मुख्य त्रिक३।१मुख्य२चोथो४।१मध्य२खिल१नेष्टनामें२ ॥१७४॥

॥ दोहा ॥

उत्तम१ नृप स्वायत्त१ अरु मध्यम१ उभयायत्त२ ॥
अधम१ सुसचिवाय—२ यह मंत्री बिजित प्रमत्त ॥ १७५॥

॥ पादाकुलकम् ॥

आज्ञारूप सबनके सिरपर१ सो प्रभुसक्ति२ बतावत नयबर ॥
जो पंचांग मंत्र उपजावन१ मंत्रसक्ति—तस नाम कहावत ॥ १७६ ॥
व्है उच्छाहमात्र उद्यम में१ सोउच्छाह सक्ति२ हित श्रममें ।
पंच५ मंत्रके अंग प्रमानहु जे बिरिंचि क्रमतें इम जानहु ।१७७।

। घनाक्षरी ।

इष्टकाज साधन उपाय१है प्रथम अंग२,
दूजो१ताहि करन सहायक समर्थ होन२

हाय के अर्थ आया होवे, चौथा „ भृत्य " नामक वह है जो समय के कारण से अधीन हुआ होवे, पांचवा "आटविक" जो भील आदि के गामों में अपने देश के वन (जंगल) में रहता होवे, और छठा "अमित्र„ जो शत्रु का दबाया हुआ भागकर आश्रित हुआ होवे इनमें प्रथम के तीन तो मुख्य (उत्तम) हैं और चौथा भृत्य मध्यम, और बाकी दो अधम हैं ॥ १७४ ॥ जो राजा अपने ही वश में रहता है वह उत्तम है और जो अपने और सचिव [कामदार] दोनों के वश में रहता है वह मध्यम है, और जो कामदारों का जीता हुआ कामदार के ही वश में रहता है वह बावला अधम है ॥ १७५ ॥ सब शिर पर अमोघ आज्ञा रूप होकर रहे उसको श्रेष्ठ नीति के जानने वाले प्रभु शक्ति बताते हैं, जो पांच प्रकार के मंत्र [सलाह] उपजाने वाला है उसका नाम मंत्र शक्ति है ॥ १७६ ॥ केवल उद्यम में ही उत्साह होवे उस हित के परिश्रम का नाम उत्साह शक्ति है हे ब्रह्मा मंत्र के पांचें अङ्ग इस प्रकार जानो ॥ १७७ ॥ इष्ट [वांछित] कार्य के साधन का जो उपाय है वह मंत्र का प्रथम अंग है, दूसरा अंग समर्थन है जो प्रथम अंग की सहायता करने वाला है. तीसरा देश और समय

तीजो३ देस कालको बिचार३ अरु चोथो४ अंग,
विघ्ननको टारिबो४भएँ जो फल देंदे भोन।
पंचम५ यहै जो काजसिद्धिके भयेंतें सुख५,
असो मंत्र दैत्यनके नासमें विचारो जो न।
तो अब त्रिलोकीकी प्रजाके परिपालनमैं,
हेरि हित हंसासन हिंसकन ‾तों कोन। १७८।

दोहा॥

प्रथम१मैत्र१ संबंधज२ रु, ईतरेतर उपकार३।
उपहारँ४ हु पुनि च्यार४ए, संधिभेद नयसार। १७९।

। घनाक्षरी।

पैलेमें निहारि गुन आप गुनरागी व्हैकें,
लोभहीन संधि जो करें सो मैत्र नाम१ श्रेय।
कन्यादे करें सो संधि संबंधज२ जानों माँहिं,
माँहिं उपकार व्है सो मिथ उपकार३ गेह॥
रत्नभूमि देकें जो करें सो उपहार४ नाम,
बिग्रह विधान अब सुनहु अंहो अजेय।
रत्न१ बल२ विक्रम३ सहाय४मंत्र५ दुर्ग६ करि,

के विचार करने का है, चौथा अङ्ग विघ्न के अवयवों (अंगों) को टालना, और पांचवां अंग कार्य सिद्ध होने पर सुख होना है, सो ऐसा मंत्र हे ब्रह्मा दैत्यों के नाश में आप नहीं विचारें तो तीन लोक की प्रजा के पालन में हित हेर कर इन हिंसा करनेवालों को मारनेवाला कौन है ॥१७८॥ मित्रता से, सम्बन्ध से, परस्पर के उपकार से, भेट (नजराना) देने से संधि होती है सो नीति के सार रूप सन्धि के ये चार भेद हैं ॥ १७९ ॥ पहिले में गुण देख कर और आप गुणों में प्रीति रखनेवाला होकर बिना लोभ के सन्धि करे उसका नाम मैत्र है, और यह सब से श्रेष्ठ है, कन्या देकर संधि करे सो सम्बन्धज नाम की संधि है, एक दूसरे का परस्पर उपकार करके सन्धि करे उसका नाम मिथ उपकार, जो परस्पर के उपकार ‾ा घर है, और रत्न भूमि देकर करे उस सन्धि का नाम उपहार है, नहीं जीतने में आवे ऐसे अाश्चर्य वाले हे ब्रह्मा विग्रह की विधि अब सुनो. रत्न, सेना, पराक्रम, सहाय, मंत्र

हीन व्है जो भूप तासौं बिग्रह सदा बिधेय ॥ १८० ॥

मनोहरम्

भेद अष्ट८बिग्रहके कामज१रु लोभज२त्यौं,
भूमिभव३ मानभव४ अभय५ निहारिये ।
इष्टज६ मदज७ एकद्रव्य अभिलाषुक८ त्यौं,
स्त्रीनिमित्त इनमैं जो कामज१ सो धारिये ॥
श्रीनिमित्त लोभज२कहावैं भूनिमित्त भूज३ ,
बिरुद निमित्त मानसंभव४, बिचारिये ।
जैनिमित्त बिग्रह सो अभय५कहावैं सर-
नागत निमित्त व्है सो इष्टज६सम्हारिये ॥ १८१ ॥

॥ दोहा ॥

जुब्बन१ धन२ बिद्या३ सुरा४, इनकरि जो मद आत ।
है ताके बस बिग्रह सु, क्रमगत मदज७ कहात ॥ १८२ ॥
माँहिं माँहिं बिग्रह मचैं, एक१हि अर्थ निमित्त ॥
एकद्रव्य अभिलाषुक८ सु, चिंतत नयपटुचित्त ॥ १८३ ॥

॥ मनोहरम् ॥

पीडाकरि पीडित१ वा व्यसनी२नरेस जो व्है,

(सलाह) और गढ से हीन जो राजा होवे उससे विग्रह करना सदैव उचित है ॥ १८० ॥ इस विग्रह (विरोध) के आठ भेद हैं, वे, काम से पैदा होनेवाला, लोभ से पैदा होनेवाला, भूमि से पैदा होनेवाला, मन से उपजनेवाला, विजय से उपजनेवाला, शरण रखने से उपजनेवाला, मद से उत्पन्न होनेवाला, एक वस्तु की चाहना से उत्पन्न होनेवाला, ये हैं. इन में स्त्री के कारण से होवे सो कामज, लक्ष्मी के निमित्त होवे सो लोभज, भूमि के कारण से होवे सो भूमिज, स्तुति के कारण से होवे सो मान से होनेवाला, विजय करने के कारण विग्रह होवे सो विग्रह, किसी को शरण रखने के कारण होवे सो इष्टज ॥ १८१ ॥ जो यौवन, धन, विद्या और मदिरा इनसे जो घमंड आकर विग्रह होता है वह इसी क्रम से अर्थात् जोबनमद, धनमद, विद्यामद और मदिरामद से होनेवाला विग्रह कहाता है ॥ १८२ ॥ एक ही अर्थ के लिये परस्पर विग्रह मचता है उसको नीति में चतुर लोग एक द्रव्य अभिलाषा विग्रह कहते हैं ॥ १८३ ॥ जो राजा रोग से पीड़ित अथवा व्यसन

मित्र१ बल२ कोस३ मंत्री४ मंत्र५ करि हीनव्है।
आधि अकुलायो४व्है वा सत्रुको दबायो५ तापैं,
भूपति करत यात्रा जे नयप्रबीन व्है ॥
संधानजा१ पार्ष्णिरोधा२ तीजी३ मित्रबिग्राहिनी३,
द्वंद्वजा४ रु कुल्या५ संग जो अरिकुलीन व्है ॥
निर्व्याजा रु सीघ्रता७ ए७ यात्राके प्रकार अब,
लच्छन समस्त सुनौं जगहित लीन व्है ॥ १८४ ॥

॥ दोहा ॥

पार्ष्णिग्राहसौं संधि करि, जु इतर अरि पर जात ॥
सो यात्रा संधानजा१, कहत नीतिनिष्णात ॥ १८५ ॥
पार्ष्णिग्राहके रोध पर, जु बल रक्खि पुनि जाइ ॥
नाम पार्ष्णिरोधा२ नियत, कमलज तास कहाइ ॥ १८६ ॥
सत्रुसौं रु निज मित्रसौं, कलह तटस्थ कराइ ॥
ताही पर पुनि जाइ तब, तीजी३ नाम धराइ ॥ १८७ ॥
जापर यात्रा सोहु जब, समुख लैं दल सज्जि ॥
जंपत ताको द्वंद्वजा४, ऋषिजन नयरसरज्जि ॥ १८८ ॥

वाला, मित्र से हीन, सेना से हीन, खजाना से हीन, मंत्री (सलाहकार) से रहित, मंत्र (सलाह) रहित, मानसिक पीड़ा (मन के दुःख) से घबराया हुआ होवे, वा शत्रु का दबाया हुआ होवे, उसी पर नीतिचतुर राजा यात्रा करते हैं; उस यात्रा के संधानजा, पार्ष्णिरोधा, मित्रविग्राहिनी, द्वंद्वजा, कुल्या, निर्व्याजा और शीघ्रता ये सात भेद हैं, जिनके सब लक्षण संसार के हित में लीन होकर अब सुनो ॥१८४॥ पीठ के शत्रु से अथवा जीतने की इच्छा करनेवाले शत्रु से सन्धि करके जो दूसरे शत्रु पर जावे उस यात्रा को नीति कुशल सन्धानजा कहते हैं ॥ १८५ ॥ जीतने की इच्छावाले शत्रु के रोकने को सेना रखकर जो दूसरे पर जाता है उसको हे ब्रह्मा निश्चय ही पार्ष्णिरोधा कहते हैं ॥ ॥ १८६ ॥ शत्रु से उस (शत्रु) के मित्र से कलह कराकर उसको तटस्थ (किनारे) करादेवे और फिर उसी शत्रु पर जावे उसका नाम मित्रविग्रहिनी है ।१८७। जिस शत्रु पर यात्रा करै वही सेना सजकर सामने आवे उसको नीति के रस में प्रीति रखनेवाले ऋषि लोग द्वंद्वजा कहते हैं ॥ १८८ ॥ शत्रु के कुछ बान्धवों को साथ लेकर शत्रु पर जावे उसको

सत्रु बंधु कछु संग लहि, जबहि सत्रु पर जान ॥
कुल्या५ वह यात्रा कहत, नीतिप्रबंध निधान ॥ १८९ ॥
स्वस्थभावसौं जय समय, पर सिर होइ प्रयान ॥
निर्व्याजा६ तस नाम है, बलजुत जास बिधान ॥ १९० ॥
अरि बिनास उद्देस करि, परिहरि सकल प्रमाद ॥
सह । जाइ सु सीघ्रगा७, बंदी मुनिन नयबाद ॥ १९१ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

आसनके भेद दस१० भाखे जे समस्त सुनौं,
स्वस्थ१ औ उपेक्षासन२ मार्गअवरोध३ नाम ।
देसस्वीकरन४ रमनीय५ तैसैं दुर्गासन६,
निकट७ रु दूर८ पराधीन९ रु प्रलोभ१० काम ॥
अरि सब मारि राज्य आपुनौं अकंटककैं,
स्वस्थभावसौं जो रहैं१ स्वस्थासन२ सो ललाम ।
सत्रुन निबल जानि आपुनौं महत्व मानि,
सदय रहैं जो१ सो उपेक्षासन२ कित्तिधाम ॥ १९२ ॥
नदीके प्रवाह करि दिग्ध दवदाह करि,
अर्ध्व रुकैं आसन१ सो मार्गअवरोध२ गेय ।

नीति के ग्रन्थों का आश्रय रखनेवाला अथवा नीति के ग्रन्थ ही है धन जिनके ऐसे लोग 'कुल्या' नामक यात्रा कहते हैं ॥ १८९ ॥ जय के समय में शत्रु पर स्वस्थभाव (समान बराबरी के भाव से) यात्रा करे उसका नाम निर्व्याजा है, और पराक्रम के साथ ही उसकी विधि है ॥ १९० ॥ शत्रु के नाश का कथन करके सब प्रमाद (असावधानी) को छोडकर अचानक जावे उसको नीति कहनेवाले मुनियों ने शीघ्रगा कही है ।१९१। आसन के दश भेद कहे हैं सो सब सुनो. स्वस्थ, उपेक्षासन, मार्गअवरोध, देशस्वीकरण, रमणीय, इसीप्रकार दुर्गासन, निकट, दूर, पराधीन और प्रलोभ. इनमें सब शत्रु मारकर अपने राज्य को निष्कंटक करके स्वस्थ (चिन्तारहित) होकर रहै वह सुन्दर स्वस्थासन है, शत्रुओं को निर्बल जान कर और अपना बडप्पन मान कर दया सहित होकर रहै वह उपेक्षासन है, जो कीर्ति का घर है।१९२। नदी के बहने से, बडा अग्नि लग जाने से, मार्ग रुकजाने से, ठहरना पडै उसका

पैले देसमाँहि करि विजय करैं जो तत्थ१,
आसन सो जानौं देसस्वीकरन२ नामधेय ॥
मारि अरि ताको दंगे बारि१ धन२ धान्य३ करि,
रम्य जानि जो तँहँ रहैं१ सो रमनीय२ श्रेय ।
जीति अरि दुर्ग तासौं औरनकों त्रास दैन,
सज्ज व्है रहैं तँहँ जो१ दुर्गासन सो२ अजेय॥ १९३ ॥

॥ दोहा ॥

बलजुत अरि ढिग जाय बलि,करन महर्घ क्रयार्न ॥
राज्य बिगारन तस रहै१,निकट२नाम सो स्थान ॥१९४॥
दूर जानि निजदेसकौं, पाउस निकट प्रमानि ॥
सिबिर रचैं१दूरासन२सु,ख्यात करत नय खानि ॥१९५॥
परि अरिवस वा मित्रवस,जो न सकैं कढि जान१ ॥
पराधीन१सो स्थान प्रभु, उचित धरत अभिधान ॥१९६॥
कैटक जास बहु दैन कहि, रक्खैं अरिन डरान१॥
सो प्रलोभ२ आसन दसम१०, कमलज धारहु कान॥ १९७ ॥
बली अरिन बिच परि निबल, कढिसकै जु न काल ॥

नाम मार्ग अवरोध कहते हैं, पराये देश का विजय करके वहीं वास करैं उसका नाम देशस्वीकरण है, शत्रु को मार कर उसके नगर को जलैं, धन और धान्य से सुन्दर जान कर जो वहां पर रहैं सो श्रेष्ठ आसन रमणीय कहाता है, और शत्रु से किला जीत कर उस किले से दूसरों को भय देने के लिये सज्जीभूत होकर रहे सो हे अजेय ब्रह्मा उसका नाम दुर्गासन है।१९३। सेना सहित शत्रु के पास जाकर विक्रय (विकी) की वस्तु मँहगी करके पुनि उसके राज्य को बिगाडने को रहै उसका नाम निकट आसन है ॥१९४॥ अपने देश को दूर जानके और वर्षा काल नजीक जान कर सैना के रहने के लिये मकान बनावें उसका नाम नीति की खान (नीति के जाननेवाले) दूरासन प्रसिद्ध करते हैं ॥ १९५ ॥ शत्रु के वश में पडके अथवा मित्र के वश में पडके निकल नहीं सकै उसका नाम पराधीन है सो हे स्वामी इसका नाम उचित है ॥ १९६ ॥ तुमको बहुत देवेंगे ऐसा कह कर शत्रु के डराने के लिये सेना रक्खे सो प्रलोभ नामक दशमा आसन है, सो हे ब्रह्मा सुनो ॥ १९७ ॥ बलवान् शत्रुओं के बीच में निबल पड़कर समय नहीं निकालसके और द्वैधीभाव रचकर

रहैं सु द्वैधीभाव रचि, चलैं काकदृग चाल ॥ १९८ ॥
मिथ्यामन१ मिथ्यावचन२, मिथ्याकरन३ बिरंच ॥
जुग बेतन४ जुग प्राभृतक५, द्वैध भेद प्रभु पंच५ ॥ १९९ ॥

॥ मनोहरम् ॥

बैननमैं प्रीति बहैं चित्तमैं बिरोध चहैं१,
द्वैधीभाव मिथ्यामन२ नाम सु कहावैं हैं ।
बैंननसौं प्रीति कहैं कर्मसौं बिरोध बहैं१,
मिथ्याबैन२ नाम ताको नीतिपटु गावैं हैं ॥
छोटे अरि काज करैं मोटे काज मेटे चाहि१,
सो तो मिथ्याकरन२ प्रबंधनमैं पावैं हैं ।
एकतैं प्रकट लेत दूजेतैं प्रछन्न लेत,
बेतंन जो१ ताहि जुगबेतन२ बतावैं हैं ॥ २०० ॥

॥ दोहा ॥

बैरीहनन जु देत बसु, सु लै करत स्वीकार ॥
ताके अरिसौं लै तिमहि, व्है यापर हुसियार१ ॥ २०१ ॥
तास नाम जुगप्राभृतक२, जानहु पंकंजजात ॥
आश्रय तीन३ प्रकार अब, बरनत नयबिख्यान ॥ २०२ ।

काकपक्षी के नेत्रों की चाल (काकपक्षी एक नेत्र से आगे को देखता है और दूसरे नेत्र से पीछे को देखता है) के समान चलै ॥ १९८ ॥ मिथ्यामन, मिथ्यावचन, मिथ्याकरण,जुगवेतन,जुगप्राभृतक, हे स्वामी ब्रह्मा ये पांच प्रकार के द्वैधी भाव हैं ॥ १९९ ॥ वचन में प्रीति और मन में बिरोध रक्खे उसको मिथ्यामन कहते हैं, बचन से प्रीति कहता रहै और कार्य में विरोध करता रहै उसका नाम मिथ्याबचन नीति में चतुरलोग कहते हैं, स्वामी के मोटे कार्य मेटना चाहकर शत्रु के छोटे कार्य करे उस द्वैधीभाव का नाम ग्रन्थों में मिथ्याकरण मिलता है, एक से प्रसिद्ध में तनखाँलेना और दूसरे से छिपकर लेना उसका नाम जुगवेतन कहते हैं ॥२००॥ शत्रु के मारने को धन दियाजावे वह लेकर मारना स्वीकार करे इसीप्रकार उसके शत्रु से लेकर पीछा उसी [प्रथम धन देनेवाले स्वामी] को मारने को सावधान होवे उसका नाम हे ब्रह्मा जुगप्राभृतक जानो, नीति में प्रसिद्ध तीन प्रकारके आश्रय अब बर्णन करता

॥ घनाक्षरी ॥

आप बलहीन निज जयको अभाव जानि,
आश्रय बलिष्टको ल दंडको दबायो जाइ।
आश्रय कहावत सो ताके तीन३ भेद जे,
सदाश्रय१ रु अन्याश्रय२ दुर्गाश्रय३ ते कहाइ ॥
बैरी बलवान जो दबावैं तो निबल ताकौं,
धर्मधर जानि लेत आश्रय तदीय१ आइ ।
सो तो है सदाश्रय२ औ सत्रुको दबायो लै,
बलिष्टै और आश्रय१ सो अन्याश्रय२ नाम पाइ ॥ २०३ ॥

॥ दोहा ॥

बली सत्रु पीडित निबल, सेवैं दुर्गप्रदेस१॥
तस दुर्गाश्रय२ नाम तिम, लखहु बिदित लोकेस ॥ २०४ ॥
साम१ भेद२ उपदान३ दम४, इक१ उपाय चउ४ अंग ॥
उत्तम१ मध्यम२ अधम३ अरु, कष्ट४ गिनहु क्रमसंग ॥२०५॥

॥ षट्पात ॥

भेद सामके पंच५ कर्ण सुभग१ रु दैविक२ जिम ।
स्मारक३ लोभज४ सुनहु अप्प, अर्पन५ नामहु इम ॥
सुखद मंडि संलाप बिरचि, परचित्त प्रीतिबस ।

हूं ॥ २०० ॥ २०१ ॥ आप बलहीन होवे और अपनी विजय का अभाव [नाश] जान कर दंड का दबायाहुआ दूसरे बलवान् का आश्रय [सहारा] लेवै उसको आश्रय कहते हैं.उसके तीन भेद, सदाश्रय, अन्याश्रय और दुर्गाश्रय कहाते हैं.बलवान् वैरी दबावे तो निर्बल होकर उसीको धर्म का धारण करनेवाला जानकर उसीका आश्रय लेवै वह तो सदाश्रय कहाता है, शत्रु का दबायाहुआ किसी दूसरे बलवान् का आश्रय लेवे उसका अन्याश्रय नाम है ॥२०३॥ बलवान् शत्रु से पीडित होकर निर्बलता से गढ में जाकर रहै उसका हे अधीश्वर प्रसिद्ध नाम दुर्गासन है ॥ २०४ ॥ उपाय के साम, भेद, दान और दंड ये चार अंग हैं, सो क्रम से उत्तम, मध्यम और अधमाधम हैं ॥ २०५ ॥ इन में साम के पांच भेद हैं कर्ण,दैविक,स्मारक, लोभज और अर्पन इनमें सुखदाई वार्तालाप करके हित के साथ दूसरे के चित को प्रीति बश करलेने की सुन्दर

हितमय साम जु होइ१ नाम प्रभु कर्णा सुभग२ तस ॥
बिश्वंष्य बिरचि सपंथादि बल व्है१ सु नाम दैविक२ लहत ॥
संबंध कछुक सुमिराइकैं करिये१ सो स्मारक२कहत ॥२०६॥

॥ दोहा ॥

इष्ट परस्पर अप्पिव्है१, सांत्वन लोभज२ सोहि ॥
सो बपु तोहित अक्खि इम, होहि१ सु पंचर्म२ होइ ॥ २०७ ॥
सिद्धि व्है न जँहँ सामसौं, भेद बिरचि तँहँ भूप ॥
जलपय अरिन मरालं जिम, रचत भिन्न अनुरूप ॥ २०८ ॥
त्रस्त१ अनादृत२ क्रुद्ध३ तिम, उचित भेदके आहि ॥
गूढ पुरुष निज सत्रुगत, तिन करि भेदत ताहि ॥ २०९ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

प्रानभंग१ मानभंग२ बित्तभंग३ बंधक४ त्यौं,
दारलाभ५अंगभंग६भेदके छ ही प्रकार ।
प्रानभय दैकैं भेद ॰१सो प्रानभंग२मा॰,
हानिभय दैकैं व्है१सो मानभंग२नाम धार ॥
बित्तभय दैकैं भेद है१सो बित्तभंग२दैकैं,

'कर्ण' कहते हैं, ॰ो शपथ [सौगन] आदि से विश्वास कराकर मि॰ाप करै वह 'दैविक' कहाता है. सम्बन्ध को याद दिलाकर (तुमसे हमसे अमुक स म्बन्ध है) मेल करै उसको 'स्मारक' कहते हैं ॥ २०६ ॥ परस्पर प्रिय पदार्थ देकर जो सांत्वन (सामउपाय) करै उसका नाम 'लोभज' है. और मेरा शरीर तेरेही लिये है ऐसा कहकर जो साम करे उसको 'अर्पण' कहते हैं ॥ २०७ ॥ जहां पर साम से कार्यसिद्धि नहीं होवे तहां पर राजा लोग भेद उपाय कर के जैसे पानी और दूध को हंस जुदा जुदा करदेता है तैसे ही शत्रुओं में फूट पटककर जुदे करदेवे ॥२०८॥ डरा हुआ, अनादर पायाहुआ और क्रोधी ये ती न प्रकार के पुरुष भेद करने के योग्य हैं सो अपना गुप्त पुरुष शत्रुओं में जाकर ऊपर के तीन प्रकार के पुरुषों से फूट पटकावे ।२०९। इसभेद के प्रानभंग, मानभंग बित्तभंग, बंधक, दारलाभ, अङ्गभङ्ग, ये छः प्रकार हैं जिन में प्राण का भ य देकर फूट पटकावे उसका नाम प्राणभंग है, मानहानि (बेइज्जती) का भय देकर करै सो " मानभंग " नाम का भेद है, धन छीन लेने का भय दे

कारांभय है१सो भेद बंधक२गिनौं उदार ।
पंच्छ दुव२पत्नीभय देहै१दारलाभ२अंग,
भंग भय देह्व१अंगभंग२सो हे हंसचार ॥ २१० ॥
भेदसौं बनैं न तपैं दानको प्रयोग होत,
ताके भेद सोलह१६ते सुनहु दयानिधान ।
क्रमतैं अभीष्ट१देश्य२हायन३रु भागधेय४,
गज५हय६ग्राम७बस्त्र८ सासन९कनक१०दान ।
कन्या११ पननारि१२खानि१३भूखन१४रु बेलाकर१५,
दान प्रतिपत्तिज१६ त्यौं सोलहौं१६धरहु कान ।
नाम अनुसार जानौं लच्छन समस्तनके,
केते कथनीय तिन्हैं सुनिये सुमतिमान ॥ २११ ॥
मंगैं सोहि दैनौं ताहि कहत अभीष्ट१कबि,
देस कछु दैनौं सो कहावे देश्य२नामधेय ।
जासौं है कुटुं को निबाह एक१हायनलौं,
ऐसो द्रव्य देवो ताहि हायन३गिनौं अजेय ॥
देस तो न दैनौं कँरमात्र तास दैनौं सो है,

कर भेद करै सो " बित्तभंग ". कैद करने का भय देकर करे सो हे उदार [ब्रह्मा] उसको "बंधक" जानो. दोनों पंचवालों को स्त्री को छीन लेने का कि तुम इसके पास रहोगे तो यह तुम्हारी स्त्री को लेलेवेगा यह भय देकर भेद करे उसको हे हंस की सवारी से चलनेवाले (ब्रह्मा) "अंगभंग,, नामक भेद जानो ॥ २१० ॥ जिनमें भेद नहीं होसके उनमें दान उपाय किया जाता है जिसके हे दयानिधान (ब्रह्मा) अभीष्ट, देश्य, हायन, भागधेय, हाथी, घोड़े, गाम, बस्त्र, शाशन, सोना देना, कन्या, वेश्या, खानि, आभूषण, वेलाकर, प्रतिपत्तिज, ये सोलह भेद जानो, इन सबके लक्षण नामों के अनुसार ही जानो, परन्तु कितनेक कहने योग्य हैं सो हे श्रेष्ठ मतिवाले (ब्रह्मा) सुनो ॥ २११ ॥ जो मांगे सो ही देना उसको कविलोग अभीष्ट कहते हैं, कुछ देश दिया जावे वह " देश्य" नामवाला कहाता है. जिस धन के देने से एक वर्ष तक सब कुटुम्ब का पालन हो जावे उसको हे अजेय (ब्रह्मा) "हायन" जानो. और देश तो नहीं देवे केवल उसका कर [हांसिल]

करज ४रु ग्राम दैनों सो हैं ग्रामदान५गेय ।
जोलों लैनहारको सपिंड रहैं तोलों कछु,
दीनों जो लुपैं न सो है सासन६समाख्य देय ॥ २१२ ॥
रजत१सुवर्ण२रत्न३आदि निकसैं ए जत्थ,
ऐसो जो प्रदेस दैबो खानि दान७सो कहात ।
बहुत बहित्रजीवी सिंधुबसु लेकैं जिहिं,
घट्ट उतरैं सु देबो बेलाकर८नाम ख्यात ॥
सिंहासन१छत्र२चामरा३दिकको दैबो जाको,
मान बढिबेकौं प्रतिपत्तिज९सो भाख्यो जात ।
सप्त७जे गजादि अवसेसं तिन्ह लच्छन तो,
नाम अनुसार तासौं जानहु बिदित बात ॥ २१३ ॥
दानके प्रयोगहु सौं सिद्ध जो बनैं न काज,
तो तहँ प्रचारैं दंड पंद्रह१५प्रकार जास ।
बेर्ल१बन२छेदैं त्यों निवानलकौं भेदैं लूटि,
जारैं पुर१ग्रामन२कौं ताको नाम देस जास१ ॥
अंग अरि पच्छिनके छेदैं वह अंगछेद२,
सर्ब पसु छिन्नैं नाम गोग्रह३कहावैं तास ।

दे देवे सो 'करज' (भागधेय) है, ग्राम का देना 'ग्रामदान' कहा जाता है, जब तक लेने वाले की सपिंडी (सात पीढी) रहे जहां तक के लिये दिया जावे वह 'शासन' नामक दान है ॥ २१२ ॥ जहां पर चांदी, सोना रत्न आदि निकले ऐसा प्रदेश (स्थान) देवे उसको 'खानि' दान कहते हैं नाव (नौका) से जीविका करने वाले समुद्र से धन लेकर जिस घाट पर बहुत उतरते होवें उसका देदेना 'बेला' नाम से प्रसिद्ध है. जिस का मान बढाने के लिये सिंहासन, छत्र, चमर आदि का देना है उसको 'प्रतिपत्तिज' कहते हैं, बाकी के सात हाथी, घोड़ा, ग्राम, वस्त्र, सोना, कन्या और गणिका, इनका देना है सो इनके लक्षण इन्हीं के नामों से जान लेना. यह प्रसिद्ध बात है ॥ २१३ ॥ दान देने से भी कार्य सिद्ध नहीं होवे तो वहां पर दण्ड का प्रचार करे जिस के पन्द्रह प्रकार हैं. बाग और बन को काटे, और तालाव, बावड़ी आदि निवाणों को फोड़े, शहरों और गांवों को लूटकर जला देवे, उसको 'देशनाश' कहते हैं. शत्रुओं के पक्षवालों के अंगछेदन करे वह 'अं

धान्य सब छिन्नैं खल[1]आपनै[2]कुसूलैंन[3]तैं,
ताकौं धान्यहरन४बखानैं नयके निवास ॥ १४ ॥
धनिक कुटुंबी व्यवहारी जे गृहस्थ तिन्हैं,
आनि डारैं काराँ नाम बंदिग्रह५जंपैं जाहि।
अरिकी प्रजाकौं ज्यौं प्रतीति त्यौं अभय दैकैं,
आपुनी करैं जो देसाहारक६बखानैं ताहि ॥
दलतैं दबाइ धन सत्रुको लिवाइ लेबो,
भाखैं धनादान७ताको नीतिमैं चतुर चाहि।
सर्बहरैं ताकौं सर्बस्वहार८जानौं जाके,
गढन गिरावैं नाम दुर्गभंग९ताको आहि ॥ २१५ ॥
राजधानी सत्रुकी प्रजारैं सो तो स्थानदाह१०,
देसतैं निकासैं देसनिर्वासक११ सो कहात।
जुद्ध करि मारैं सो कहावैं जुद्धघात१२ ए तो,
द्वादस१२ही दंड बलवानन बिधेयं ख्यात ॥
निर्बल उचित अब तीन३दंड जानौं हनैं,
गरलैं[2] दिवाइ बिषदंड१सो तो कंजजातैं[3]।

गछेद'. सब पशु छीन लेवे उसका नाम 'गोग्रह'कहाता है. खले(धान्य तय्यार करके निकालने का स्थान) हाट [दुकान] और कोठों में से धान्य सब छीन लेवै उसको ' धान्यहरण ' नाम नीतिनिपुण लोग कहते हैं ॥ २१४ ॥ धनवान्, बड़े कुटुम्ब वाले, और व्यापार करने वाले जो गृहस्थी होवें उनको जेलखाने में ला डालें उसको ' बन्दिग्रह ' कहते हैं. शत्रु की प्रजा को विश्वास आवे इस प्रकार अभय देकर अपनी बनालेवें उसको ' देशहार' कहते हैं सेना से दबाकर शत्रु का धन लेलेने को नीति में चतुर लोग ' धनादान ' कहते हैं, सभी हरण करलेवे उसका नाम "सर्वस्वहार" जानो. और किले को गिरादेवे उसका नाम ' दुर्गभंग ' है ॥२१५॥ शत्रु की राजधानी जला देवे उसको ' स्थानदाह ' और देश से निकाल देवे उसको ' देशनिर्वासक ' कहते हैं, युद्ध करके मारे उसको ' युद्धघात ' ये बारह दंड तो बलवानों के करने के प्रसिद्ध हैं, और निर्बलों के करने के तीन दंड ये हैं, कि हे ब्रह्मा जहर

मारैं अभिचारं करि सो है आभिचारिक२दगा,
सौं हनि डारैं सो कहावैं दस छद्मघात३ ॥ २१६ ॥
सेनाभेद कोबिद जो अपनैं अधीन नृप,
सक्ति तीन३ छ६ गुन बिबेकी रहैं सावधान ।
च्यारि४हु उपाय अँनपाय रचि जानैं सातौं७,
प्रकृति समेत देस कालको बिचारैं ज्ञान ॥
तो जो मतिमान बसबर्त्ती सब सत्रु करैं,
दुष्टनकौं ऐसैं करि लेहो बसबर्त्तीव न ।
जो न करि लैहो तो जैमालय अतिथि व्हैकैं,
जैहैं सब लोक ताके रोधको रचो बिधान ॥ २१७ ॥

॥ दोहा ॥

मत निज निज इम सब मुनिन, न्यायनिदर्शनं बुल्लि ॥
असुरनको मिच्चुहि उचित, दृढ किन्नौं स्फुटं खुल्लि ॥ २१८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशौ मुनि-ब्रह्मलोकगमन-निजनिजमतविद्यानिदर्शन-न्यायदर्शितदैत्यवधप्रार्थनं चतुर्थो४मयूखः ॥ ४ ॥ आदित एकोनात्रिंशः॥२९॥

दिखाकर मारे वह तो 'गरलदण्ड'; मारण, मोहन, उच्चाटन,आदि तंत्र शास्त्र की क्रिया से मरावे सो ' आभिचारिक ' और छल करके मारे उसको 'छद्मघात ' कहते हैं ॥ २१६ ॥ जो राजा सेना के भेद (हाथी, रथ, सवार, पैदल) पर चतुर, अपने ही आधीन में रहने वाला, तीनों शक्ति छहों गुणों में विचारवान् और सावधान, चारों उपाय निश्चल रचिजाने, और सातों प्रकृति सहित देश काल को बुद्धि पूर्वक विचारे तो वह बुद्धिवान् सब शत्रुओं को वश करलेवे, इसी प्रकार हे ब्रह्मा इन दोनों दुष्ट दैत्यों को वश में रहनेवाले कर लो. और जो नहीं कर लोगे तो सब लोक यमराज के घर के पाहुने होकर जावेंगे जिनके रोकने की विधि रचो ॥ इस प्रकार सब मुनि अपने अपने मत से उचित उदाहरणों से बोलकर स्पष्ट रीति से खोलकर दृढ कर दिया कि दैत्यों की मृत्यु ही उचित है ॥ २१८ ॥

यह श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में मुनियों का ब्रह्मलोक में जाना और अपने अपने मत से विद्या के उदाहरणों से उचित दिखाकर दैत्यों के वध की प्रार्थना करने का चौथा४मयूख समाप्त हुआ ॥४॥

पज्झटिका॥

इम सुनत सरोरुहभव जहास, पुनि किय निदेस उत्तर प्रकास ॥
तुम कहत जिमहि आसुर बलिष्ठ, मम बर निसंक सुंडीरनिष्ठ॥ १ ॥
वे गिनत सबन निर्बल अभंग, बहिरंग सूत्र जिम अंतरंग ॥
पै मैंहि हनों किम तिन्ह बढाइ, उपजैं अलीक बर बिफल जाइ ।२।
इम सुनत मुनिन किय अरज एह, पापिन बिच ऐसो क्यों सनेह ॥
तुम्हनैंहिं बनाई आदि रीति, दमि दुष्ट निवाहन धर्मनीति ॥३॥
तुम कनककसिपु पहिलैं बढाइ, मारत नृसिंह बरजे न जाइ ॥
कनकाक्ष बढायो तुमहि चाहि,
किरिरांज न रोके हनन ताहि ॥ ४ ॥
बरदै पुनि रावन१ कुंभ२ अर्थ, मारत न राम बरजे समर्त्थ ॥
याही अनेहैं क्यों यह निदेस, हनिये न तिनहिं दै बरबिसेस ॥ ५ ॥
ऐसी मति ऐत्थ न उचित तात, अविलंबित अक्खहु दुष्टघात ॥
करिहो न धर्मरक्षा कृपाल,
मिटिहै हि भक्ति१ मख२ निगम३ चाल ॥ ६ ॥
मख बिनु निलिंपं तृप्ति न लहंत, बिनु तृप्ति बुंष्ठि मुंदिर न बहंत
सब लोक नास इम होनहार, अवलंबं होहु अब हेउदार॥७॥
हम अप्प रचे संसृति हिताय, जगदुक्ख सह्यो हमपैं न जाय ॥
किम होइ प्रानविनु बानपुत्र, तुम कहहु नाथ थिर१चर२तनुत्र ॥८॥
तिनप्रति तब बोले पुनि प्रजाप, दुष्टन यह पायो बर दुराप ॥
हम हरि१हर२ सक्र३हुसौं मरैं न,देवी४रु देव५ हम बध करैं न।९।

और आदि से उन्तीस मयूख हुए ॥ २९ ॥

१ब्रह्मा के २हंसकर ३आज्ञा ४वीरतावाले वे सबको निर्बल गिनते हैं जैसे व्याकरण में अंतरंग सूत्र बहिरंग सूत्र को निर्बल समझता है जिसकी परिभाषा यह है असिद्धं बहिरङ्गमन्तरङ्गे' अंतरंग कार्य करना हो तौ बहिरंग कार्य असिद्ध होता है.७मिथ्यापन८हिरण्यकशिपु को९ हिरण्याक्ष को१०वराह अवतार को११समय१२यहां१३शीघ्र१४यज्ञ१५ वेद १६ देवता १७ वर्षा १८ मेघ १९ आधार२० आपने२१सृष्टिके२२हित के अर्थ२३कवच(रक्षक) २४ प्रजापति(ब्रह्मा)२५दुर्लभ

योनिजं[1]रु दुकर[2]जित्तैं न रंच, हैं हम अजेय तुमरे प्रपंच ॥
इम लै बर आसुर वे बिमत्त, घल्लहु कछु पद्धति पाइ घत्त ॥१०॥
बरहू नहि जासों बिफल्ल जाय, अरु होय सिद्ध चिंतित उपाय ॥
कछु दूर कृष्ण अवतार होन, लहि इक्कगली तुम हनहु दोन ॥११॥

॥ दोहा ॥

क्षत्र अयोनिज तुम रचहु, अग्निकुंडसौं पुब्ब ॥
जो दुवर दुष्टन जारि है, ज्यौं मितद्रुकौं उब्ब ॥ १२ ॥

॥ सोरठा ॥

सुनि यह द्रुहिन निदेस, मुनिन कहिय सय जोरि पुनि ॥
चलहु संग लोकेस, अप्प छतैं अरं साध्य यह ॥ १३ ॥

॥ पज्झटिका ॥

बुल्ले बिरंचि पुनि इम बिचारि, तुम कथितं लयो करतव्य धारि ॥
वैकुंठपति[1] रु रजताद्रिनाथ[2], लै आवहु चलिहैं हमहु साथ ॥१४॥
आखंडलादि सब सुरं बुलाय, श्रीविष्णुगर्भ लै निज सहाय ॥
सुचिकुंडहिंतु राजा निकारि, प्रेरहिं तिन उप्पर रचन रारि ॥१५॥
अवनीसं तास अभिसेक अत्थ, तीर्थादि बुलै ह सकल तत्थ ॥
भूआधिपत्यं ताकौं समप्पि, थिर वह सब रच्छक दैहिं थप्पि ॥१६॥
सुरं सक्तिधरहिं तामैं असेस, हनिहै रन दुष्टन सुहि नरेस ॥
हुव द्विजन संग कहि या प्रकार, इंद्रादि संग लै पुनि उदार ॥१७॥
जे नुंति बिधाय कैलास जाइ, गिरिजौं समेत त्र्यंबकं रिझाइ ॥
आसय निवेदि तिन्ह रक्खि अग्र, बैकुंठ गये सुमनसं समग्र ॥१८॥
किय विष्णुदरस लहि सावकास, जंपियैं प्रभु होवत निखिल ॥

१ योनि से उत्पन्न होने वाले २ दो हाथवाले ३ सृष्टि में ४ मार्ग ५ समुद्र को ६ बड़वाग्नि ७ ब्रह्मा का ८ हाथ ९ शीघ्र १० कहा हुआ ११ कैलास के स्वामी (महादेव) १२ इन्द्र आदि १३ देवता १४ बीच में लेकर १५ अग्निकुंड १६ से १७ उस राजा के १८ स्वामीपन १९ देवताओं की शक्ति २० स्तुति करके २१ पार्वती २२ महादेव को २३ देवता २४ कहा

तुमतैं न छन्न अच्युत त्रि३काल, करिये स्वसर्ग रच्छा कृपाल ॥१९॥
न धनद अधीन अब स्वापतेय, पाँसीवस सलिलादिक न श्रेय ॥
अमरावती न बासव अधीन, हुव सब निलिंप अधिकार हीन ॥ २० ॥
सिव कहिय बान मम भक्त आहि, ते खल सदर्प मन्नैं न ताहि ॥
विस्वहि संहारत दुव२अबोध, उचित न अब केसव रोस रोधैं ॥२१॥
हमसौं विधि अक्खिय एक१न्याय, सु वनैं मुकुंद सुमरे सहाय ॥
सुनतहि इतीक लखि भक्त भंग, द्विज दीनबंधु हुव मुनिन संग ।२२।
अहिअरि अरोहि कमला उपेत, आये उपेंद्र अध्वर निकेत ।
श्रीकेसव१ संकर २ अज ३ सुरेस४, इत्यादि आय अर्बुद अगेस २३
निर्ऋति५रु परंजन६ गंधवाह७, अनल८रु कुबेर९जम१०लहि उछाह
दिनकर११ रजनीकर१२ एकदंत१३ ,
सिखिवाहन१४आश्विन१५दुव२सुमंत ॥ २४ ॥
आये छ६संख्य ऋतु१६ देहधारि,
दुव२अयन१७ मास१८ बारह१२ पधारि ॥
आहूत अब्द१९ दिन२० रत्ति२१आइ,
श्री२२अद्रिराजतनया२३ सुहाइ ॥ २५ ॥
वानी२४रु निगम२५बुध२६सनि२७रु और२८,
इंद्रादिकलत्र२९हु छविअपार ॥
दिव३०महर३१जन३२रु तप३३सत्य३४लोक,
वासी अनेक तजि तजि स्वओक ॥ २६ ॥

---

१ निर्विकार (पतन रहित) २ भूत, वर्तमान, भविष्यत् के जाननेवाले ३ अपनी सृष्टि की ४ नहीं ५ कुबेरके ६ धन ७ वरुण के ८ जल आदि ९ इन्द्र की पुरी १० इन्द्र के ११ देवता १२ है १३ घमंड सहित १४ हे विष्णु १५ क्रोध का रोकना १६ गरुड़ पर चढ़कर १७ लक्ष्मी सहित १८ विष्णु १९ यज्ञ के २० स्थान में २१ ब्रह्मा २२ पर्वतराज पर २३ नैर्ऋत्य कोण का पति २४ वरुण २५ पवन २६ अग्नि २७ सूर्य २८ चंद्रमा २९ गणेश ३० स्वामिकार्तिक ३१ अश्विनीकुमार ३२ श्रेष्ठ बुद्धिमान् ३३ छः की संख्यावाले ३४ बुलाये हुए ३५ वर्ष ३६ रात्रि ३७ लक्ष्मी ३८ पार्वती ३९ सरस्वती ४० वेद ४१ मंगल ४२ स्त्रियां ४३ घर

अणिमादि[1] सिद्धि३५मिलि अष्ट८आइ,
पद्मादिक[2]३६नव९निधि समय पाइ ॥
अच्छरि ३७ किन्नर ३८ गंधर्व ३९ तत्र,
इत्यादि भये गायक इकत्र ॥ २७ ॥
बिद्याधर४०गुह्यक४१बिरुदकारि[3],
बसु४२साध्य४३सिद्ध४४चारन४५पधारि ॥
आभास्वर ४६ विश्व ४७ रु तुषित ४८ जानि,
गन मरुत ४९ महाराजिक ५० प्रमानि ॥ २८ ॥
बालिनिमुख[4] ५१ तारा सप्तवीस २७,
अरु उदक ५२ भूमि ५३ रसगंध ईस ॥
सहकाय[5] आइ दस १० ककुभजूह[6]५४,
सब योगिनी ५५ रु खेचर ५६ समूह ॥ २९ ॥
कामद्रुं[7] ५७ कामर्मणि[8] ५८ कामगाइ ५९,
खग ६० उरग ६१ जच्छ[9] ६२ सब संग आइ ॥
इत्यादि देव अरु देवयोनि,एकत्थ जुरे सब सत्रछोनि[10] ॥ ३० ॥
नृप रामसिंह[11] हड्डाधिराज,उतरे इम अर्बुद सुरसमाज ॥
आहूत[12] बहुरि तीरथ असेस,पुष्कर१प्रयाग२पुनि बदरिकेस३१
गंगा४रु पूर्वगंगा५बखानि,जमुना६तापी७गोदा८हु जानि ॥
कृष्णा ९ शतद्रु १० बेणा ११ बिपास १२,
करतोया १३ लंघनै[13] जास न्हास ॥ ३२ ॥
विश्वा१४रु अर्धजान्हवि१५इयाय,गोमति१६बिरिंचिपुत्री१७सुभाय॥
सरजू१८रु बाहुदा१९पुण्यरूप,चर्मणवती२०रु बेणी२१अनूप॥३३॥

---

१ अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व ये आठ सिद्धियां हैं २ पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, खर्व ये नव निधि हैं ३ स्तुति करनेवाले ४ अश्विनी को आदि लेकर ५ शरीर सहित ६ दिशाओं का समूह ७ कल्पवृक्ष ८ चिन्तामणि ९ यक्ष १० यज्ञभूमि में ११ हे रामसिंह हाडों का स्वामी १२ बुलाये १३ जिसके उतरने का क्षय है अर्थात् अटक नदी उतरने से धर्म का नाश मानाजाता है.

सुरसा २२ रु चंदिका २३ स्वैरसुद्ध,पुनि आइ तुंगभद्रा२४प्रबुद्ध ॥
निर्विंध्या२५अवटोदा२६सु नाम,कृतमाला२७चंद्रबसा२८सुधाम।३४।
धुनि सिंधु२९पयोष्णी३०नामधेय,भीमरथि३१ताम्रपर्णी३२सुपेय॥
बैहायसी ३३ रु कौसिकि ३४ बखानि,
ह्रादिनी ऋसिकुल्ल्या ३५ बहुरि जानि ॥ ३५ ॥

दोहा

पयस्विनी ३६ पुनि सर्कराबर्त्ता ३७ पंपा३८ आइ ॥
सप्तवती३९रु दृषद्वती४०, ओघवती४१हु सुहाइ ॥ ३६ ॥
वेदस्मृति४२कूलंकषा, बहुरि त्रिसामा४३नाम ॥
सरित सु सोमा४४पुण्यमय,गण्डकी४५हु सुखधाम ॥ ३७ ॥
बितस्ता४६रु द्वैपायनी४७, असिक्नी४८हु बरतोयँ ॥
बहुरि मरुद्वृद्धा४९ नदी, अंध५० शोण५१ नद दोय२ ॥ ३८ ॥
सूर्यारक५२ पंचाप्सरस५३, फाल्गुन५४ तीर्थ हु जानि ॥
गोकर्ण५५ रु मनु तीर्थ५६ पुनि, बामनतीर्थ५७ प्रमानि ॥ ३९ ॥

हरीगीतम् ॥

बिनसन५८ सुभूमिक५९ गर्गश्रोत६० रु संखतीर्थ६१ ललामँ जो।
पुनि द्वैतबन६२ अरु नागधन्वा६३ नागबासुकिधाम जो ॥
यायाततीर्थ६४ समंतपंचक६५ थाणुतीर्थ६६ हु जानिये ।
केदारतीर्थ६७ रु हंसतीर्थ६८ सुपर्णतीर्थ६९ प्रमानिये ॥ ४० ॥
पुनि औशनस७० अरुणानदी७१अरु सोमतीर्थ७२हु ध्येय जो ।
मैत्राबरुण७३ बराहसर७४ अरु ब्रह्मकुंड७५ सुपेयँ जो ॥
सीता७६ रु भद्रा७७ अलकनंदा७८ चक्षु७९ आवर्त्ता८० नदी।
मुखतीर्थ८१ कार्त्तिकतीर्थ८२ धानदतीर्थ८३ त्यों पुनिसारदी८४।४१।
गिनि अग्नितीर्थ८५ रु बदरपाचन८६इंद्रतीर्थ८७ हु पंकहा ।
आगस्त्यसर८८ आदित्यतीर्थ८९ रु रामतीर्थ९०कलंकहा ॥

१नदी२नामवाली३नदी ४श्रेष्ठ पानीवाली५सुन्दर ६ध्यानयोग्य७पीने में श्रेष्ठ
८ पापनाशक ९ पापनाशक

सारस्वताख्य९१ ययातिपतन९२ रु प्लक्ष प्रस्रवण९३नाम त्यों।
कुरुक्षेत्र९४ धर्मारण्यतीर्थ९५ रु महाकाल९६ विराम९७ त्यौं।४२।
पुनि कोटितीर्थ९८ रु भद्रबट९९ पिंडार[१]काख्य१०० प्रधान सो॥
दमितीर्थ१०१बसुसर१०२संकुकर्ण१०३ रु सतत१०४पुण्यदथानसो
बसुधारतीर्थ१०५ रु सिंधु उत्तम१०६ब्रह्मतुंग१०७ बिसेस जो।
जालिक १०८रु सक्रकुमारिकाख्य१०९रु अपयनद११०तीर्थेसजो॥
श्रीकुंज१११भीमास्थान११२बिमल११३रु रुद्रपाद११४गिनौं जथा।
पुनि ब्रह्मबालुक११५कामतीर्थ११६रु देविकाभिध[२]११७हू तथा॥
मंडूल११८मानुष११९दीर्घसत्र१२०दशाश्वमेधिक१२१तित्थ[३] जे।
नागोदभेद१२२सिवोदभेद१२३सु तीर्थ१२४नौं अवहित्थ[४] जे॥४४॥
चमसोद भेद१२५कुमारकोटि१२६रु रुद्रकोटि१२७अनूप जे।
सत्रावसान१२८परिप्लव१२९रु शशयात१३०पुण्य सुरूप जे॥
मुनिको१३१रु आश्विन१३२सर्पदर्वी१३३एकहंस१३४बखानिये।
शालूषिकी१३५कृतशौच१३६गोग्रह१३७वंशमूलक१३८मानिये।४५।
मित्रक१३९समूलक१४०मुंजबट१४१अरुकायशोधन१४२हू कहे।
श्रीतीर्थ१४३मुदित१४४अनंडक१४५रु लोकेश्वराख्य[५]१४६हुव्हाँलहे
पुनि संखिनी१४७रु कपालमोचन१४८सूर्य१४९कपिला१५०नामज।
ध्रुवतीर्थ१५१ब्रह्मावर्त्त१५२त्यौं पुनि सरक१५३पूरक कामजे॥ ४६ ॥
सीताबन१५४रु नखलोमअपह१५५रु पाणिखात१५६गये जहां।
कपिलेसखेत्र१५७महाप्रभाव रु पुंडरीक१५८जुरे तहां॥
मृगधूम१५९ब्रह्मोदुंवराभिध१६०मनोजन्म१६१गिनौं जथा।
फलकांचनाख्य१६२इलापदाख्य१६३मनोजवाभिध१६४हू तथा ४७।
व्यासस्थली१६५किंदत्तकूप१६६रु आपगानदि१६७जानिये।
मधुबटी१६८व्यासबनाख्य१६९अह१७०अरुशालिसूर्य१७१प्रमानिय
कनखल१७२मधुश्रव१७३कन्यका१७४श्रीकुंड१७५नैमिषकुंड१७६ज्यौं।
वामन१७७कुलंपुन१७८ब्रह्मयोनि१७९पृथूदकाभिध१८०आइत्यौं४८

१ नाम २ नाम ३ तीर्थ ४ गुप्त ५ नाम

गिनि पवनन्हद१८१अरु अमरन्हद१८२पुनि ब्रह्मतीर्थ१८३बिसेस जो।
सोमाख्य१८४वैश्वामित्र१८५अग्निक१८६गोप्रतार१८७सुदेस जो॥
कपिलावटाख्य१८८अरुंधतीबट१८९लडभिकाख्य१९०गिनौं जथा
उग्राम्रकाख्य१९१रु भद्रकर्ण१९२सुगंधिकाख्य१९३मिले तथा॥
पुरुतीर्थ१९४रुद्रावर्त१९५दर्वीसंक्रमाभिधं१९६हु गये।
वीरप्रमोचन१९७अश्वबेदी१९८पर्णातीर्थ१९९हु व्हाँ ठये॥
भृगुतुंग२००यमुनाप्रभव२०१आदित्याश्रमाभिध२०२आइ जे।
सामुद्रकाख्य[3]२०३रु सिंधुप्रभव२०४सहस्त्रिकाख्य२०५सुभाइ जे५०
पुनि कृत्तिकाज२०६मघाज२०७तीर्थ रु ब्राह्मणि२०८अभिधान जो।
विद्याख्य२०९वेतसिकाख्य२१०सुंदरिकाख्य२११मुक्तिनिधान जो॥
वैसु२१२महाश्रम२१३तीर्थसृंगाच्छेद२१४विमलासोक२१५जे।
अरुकौशि२१६मार्कंडेयतीर्थ२१७रु धर्मप्रस्थ२१८सुओक जे ॥५१॥
अक्षयवटाख्य२१९रु गृध्रबट२२०पुनि तीर्थयोनिद्वार२२१जो।
अनरक२२२बिमोचन२२३शतसहास्त्रिक२२४पंचबट२२५अघहार[6] जो॥
पुनि रैणुकाख्य२२६रु वारुणाख्य२२७रु स्वर्गद्वार२२८हु जानिये।
धारा२२९रु देवीतीर्थ२३०पावनतीर्थ२३१सुद्ध प्रमानिये ॥ ५२ ॥
गंगान्हदाभिधकूप२३२जाबिच तीर्थकोटि त्रय३००००००बसैं।
पुनि इंद्रमार्ग२३३रु थाणुबट२३४जिहिँ पाइ पाप सबै नसैं॥
कन्याश्रमाख्य२३५दधीचतीर्थ२३६रु सन्निहत्या२३७ज्यौं कहैं।
प्रतिमास जाबिच तीर्थसंचय आनि आनि सबै रहैं॥ ५३ ॥
कारापथाख्य२३८रु धर्मतीर्थ२३९रु कोटिरूप२४०गिनौं जथा।
ज्येष्ठी२४१रु ईशानाध्युषित२४२कूपोदकाख्य२४३गये तथा ॥
पुनि सप्तगंग२४४त्रिशूलखात२४५रु बैद्यतीर्थ२४६बिपाप जो।
तेम रथावर्त२४७रु अग्निधारा२४८सुवर्णाक्ष२४९दुराप जो ॥५४॥
मणिनागतीर्थ२५०मतंगआश्रम२५१ब्रह्मतीर्थ२५२हु ज्यौं कहे।

१ नाम२नाम ३ नाम ४ नाम ५ घर ६ पापनाशक७ इकट्ठे८नाम ९ निष्पाप१० दुष्प्राप (कठिनाई से मिले ऐसा.)

उदपानतीर्थ२५३पुनःपुना२५४अरु जनककूप२५५तथा लहै ॥
माहेश्वरीधारा२५६बिशल्या२५७एजगृह२५८पुनि जानिये ।
माहेश्वरास्पदती[१]२५९जाबिच तीर्थकोटि१००००००प्रमानिये ५५।
सब पापमोचनकूप२६०जाबिच सिंधु च्यारि४सदा रहैं ।
जातिस्मराख्य२६१रु बामनाख्य२६२रु देवपुष्करिणी२६३कहैं ॥
स्तनकुंड२६४भरताश्रम२६५रु निश्चीना२६६रु ताम्रारुणा२६७जथा ।
कौशिकन्हदाख्य२६८रु पितामहसर२६९बंशगुल्म२७०सुनौं तथा५६
उर्वशीतीर्थ२७१रु कालिका२७२गौरीशिखर२७३नामक गये ।
पुनि कुंभकर्णाश्रम२७४रु सोमाश्रम२७५हु हाजरि ह्वाँ भये ॥
नंदिनीकूप२७६जु न्हानसौं नरमेध[२]फलको हेतु है ।
कोकामुकाख्य[३]२७७जु न्हानसौं जन्मि पूर्व सुमिरन देतु है ॥ ५७॥
लोहित्यतीर्थ२७८बिराजतीर्थ२७९रु कालतीर्थ२८०बिसेस जो।
संबर्तबापी२८१पुष्पकुल्या२८२देवन्हद२८३तीर्थेस जो ॥
बरदा२८४रु बैतरणीनदी२८५पुनि ब्रह्मसून२८६बखानिये ।
नदिफल्गु२८७सुरपथ२८८संृगबेरपुरी२८९रु आर्षभ२९०जानिये ५८
लग्वेडिका२९१मैत्रेयतीर्थ२९२रु तीर्थशकुनंदा२९३जथा।
उद्दालकाभिधतीर्थ[४]२९४आयउ खेटतीर्थ२९५गिनौं तथा ॥
इत्यादि तीर्थ समस्त हेनृप अर्बुदाचलपैं गये ।
सुनिये बहोरि अरण्य१ऊखर२ग्राम३खेत्र४पुरी५ठये ॥ ५९ ॥

दोहा

नव९अरण्य ऊखर नव९रु,सप्त७पुरी त्रय३ग्राम ॥
गुप्त चतुर्दस१४खेत्रहू ,आये अध्वर[५] धाम ॥ ६० ॥

पज्झटिका

दंडकअरण्य१सैंधवअरण्य२,त्यौं जंबुमार्ग३तार्तीय[६]३गण्य ॥

१ ब्रह्मसर २ जिस यज्ञ में मनुष्य होमा जावे उसको नरमेध कहते हैं ३ कामुक नामवाला (इसी माफिक बहुत पद संधियुक्त हैं जिनकी संधि काट कर अर्थ जान लेना चाहिये ४ उद्दालक नाम का ५ यज्ञ के ६ तीसरा

पुष्कर४चतुर्थ अटवी प्रमानि, पंचम सु उत्पलाबर्त्त५जानि ॥ ६१ ॥
छठो अरण्य नैमिष६अनूप,सप्तम कुरुजांगल७पुण्यरूप ॥
अष्टम सु हैमवत८सुखद सोहि,अर्बुदअरण्य९तँ नवम होहि ॥ ६२॥
सुनिये अब ऊखर नवन९नाम,राजाँधिराज चहुवान राम ॥
रेणुक१पुनि सूकर२नाँमधेय,कासी३अरु काली४काल५श्रेय ।६३।
बट६ईश्वर७कालंजर८सु जानि,पुनि नवम महाकाल९हिँ प्रमानि ॥
अब पुरिन नाम सुनिये उदार,हड्डनपति जे अघहरनहार ॥ ६४ ॥
गिनि प्रथम अयोध्या१पुनिय नाम, मथुरा२पुनि मायाँ३मुक्तिधाम ॥
कासी४कांची५उज्जैनि६जानि,पुनि लेहु कुशस्थलिका७प्रमानि ६५
अब ग्राम तीन३सुनिये नरेस, सुमिरत जे दाहत अघबिसेस ॥
संभल१अरु सालग्राम२सुद्ध,जानहु तृतीय नंदी३प्रबुद्ध ॥ ६६ ॥
अब गुप्त चतुर्दश१४खेत्र नाम, संभरनरेस सुनिये ललाम ॥
कोका१बहोरि कुब्जा२बखानि,सृक३अरु चतुर्थ मणिकुंड४मानि ६७
बट५सूकर६सालग्राम७श्रेय, मथुरा८रु गया९महिमा अमेय ॥
निष्क्रमण१०रु लोहार्गल११निपाप,पुनि पोतस्वामी१२अघप्रताप ६८
पुण्यद प्रभास१३गिनि भुव अलुप्त,बदरी१४ए चउदह खेत्र गुप्त ॥
　　इत्यादि तीर्थ जल थल प्रधान,
　　पहुँचे तिँ खर्ब इस१००००००००००००सत्रंथान ॥ ६९ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशौ देवर्षि-तीर्थाद्यर्बुदागमनं पञ्चमो५मयूखः ॥ ५ ॥ आदितस्त्रिंशत्तमः ॥३०॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

१वन२हे राजाधिराज चहुवाण रामसिंह(रामसिंह की पदवी,महारावराजा हैपरंतु यहां विशेष बडप्पन के लिये राजाधिराज का विशेषण दियाहै क्योंकि राजाओं के लिये संस्कृत में यह पद सबसे अधिक मानागया है)३नामवाला४पुरियों के नाम५हे चहुवाण वंश के राजा६अपार७पाप को तपानेवाला८ते९यज्ञ के स्थान में

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वार्ध के द्वितीयराशि में देवता ऋषि तीर्थ आदि का आबू पर आने का पांचवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से तीसवाँ मयूख हुआ ॥ ३० ॥

पज्झटिका ॥

अर्बुदगिरि आये जे असेस,भूभाग बहुरि सुनिये नरेस ॥
धरि देह सिंधु सप्तक७पधारि,क्रम जे द्वि२गुणोत्तर मान धारि ॥ १ ॥
लवणोद लक्ख१०००००जोजन बिसाल,पाताल निम्न सुहि भूमिपाल
द्विगुनित पुनि इक्षुरसोद२जानि,मद्योद३बहुरि आज्योद४मानि ।२।
दधिमंड उदधि५छीरोद६नाम,सुद्धोद७गिनहु सप्तम ललाम ॥
ए चाहुवान अभिसेक हेत,आये हरिसासित हित उपेत ॥ ३ ॥
पुनि खंड१द्वीप२सिखरी३अनूप,इतरहु अरगय ४बहु बिबिध रूप ॥
औषध अनेक लेले ति भूरि,आये तिन्ह नामहु कहत सूरि ॥ ४ ॥
गिनि प्रथम इलावृत१खंड नाम,जिहिं मध्य मेरु निर्जरन धाम ॥
चतुरस्र रूप सब दिस समान,चोतीस सहस्र३४०००जोजन प्रमान ।५।
तासौं उदीचि त्रय३खंड वाम,रम्यक१रु हिरगमय२कुरु३त्रिनाम ॥
चोरे सब जोजन नव हजार९०००,आसिंधु पूर्व पश्चिम बिथार ॥ ६ ॥
आवाच्यं इलावृतसौं त्रि३मान,हरिवर्ष१किंपुरुष२भरत३थान ॥
चोरे सब जोजन नव हजार९०००आसिंधु पूर्व पश्चिम बिथार ॥ ७ ॥
इक प्राच्य इलावृतसौं प्रमेय,भद्राश्व१तास कहि नामधेय ॥
चोतीस सहँस३४०००जोजन प्रलंब,
कटि एकतीस सहँसन३१०००कदंब ॥ ८ ॥
प्रातीच्य इलावृतसौं बिसाल,इक खंड नाम तस केतुमाल१ ॥
चोतीस सहँस३४०००जोजन प्रलंब,
कटि एकतीस सहँसन३१०००कदंब ॥ ९ ॥
ए जंबुद्वीप नव९खंड एवं,इनके अभिमानी नव९हि देव ॥

१एक एक से दुगुना प्रमाण धारण करनेवाले २ चारसमुद्र ३ गहरा ४ सांटे (गन्ने) के रस का ५ मद्य का ६ घृत का ७ दधि का ८ दूधका ९ शुद्ध जल का १०सुंदर ११आज्ञा से १२ सहित १३पर्वत १४और भी १५ बहुत १६ पंडित १७देवताओं का १८चोकोन १९बराबर २०उत्तरादिशा २१समुद्रपर्यंत २२दक्षिणादिशा २३पूर्वदिशा २४जिससे प्रमाणकिया जावे उसको प्रमेय कहते हैं अथवा प्राप्ति के प्रमाणवाला २५नाम २६ लम्बा २७ समूह २८ पश्चिमादिशा २९ इसप्रकार

पंडासिराजे आभिसेक हेत,आये प्रसन्न औषध, पते[2] ॥ १० ॥
द्वीपन आभिमानी देव सत्त७,जिन्ह द्वीप कहन हैं तेहु पत्ते[3] ॥
जंबू१पलक्ख२सम्मलि३हुजानि,कुस४कुं[illegible]गाग६पुक्खर७बखानि
बिच जंबु१लक्ख१०० [illegible] चार,
[illegible]क्रम द्वि[5]गुनकार ॥
तनमैं हु खंड सैंतीस३७[6]आहि,आये ति देव सासनँ[8] निबाहि ॥ १२ ॥
सैलहु समस्त जे पुरायधाम,आये तिन्ह सुनिये नृपति राम ॥
हेमाद्रि१प्रथम छितिनाभि रूप,मंदर२रु मेरु मंदर३अनूप ॥ १३ ॥
सिखरी सुपार्श्व४अरु कुमुद५जानि,भूधर[?] कुरंग६तिम कुरर७मानि
संृगी कुसुंभ८वैकंक९नाम,पुनि गिनि त्रिकूट१०सिसिग११हु सुधाम
रु पतंग१२रुचक१३पुनि निषध१४आइ,
रु सिती१५रु वास१६रु कपिल१७सुभाइ ॥
संख१८रु वैदूर्यक१९रुचिरराग,
जारुधि२०पुनि हंस२१रु ऋषभ२२नाग२३ ॥ १५ ॥
कालंजर२४नारद२५जठर२६नाम, त्यौं देवकूट२७पवन२८हु ललाम[?]
गिरि पारियात्र२९कैलास३०ज्यौंहिं,
करबीर३१त्रिशृंग३२रु मकर३३त्यौंहिं ॥ १६ ॥
पुनि दूजो२निषध३४रु हेमकूट३५,
रु हिमालय३६है जँहँ पुराय लूट ॥
गिरि नील३७श्वेत३८अरु शृंगवान३९,
त्यौं गंधमादन४०रु माल्यवान४१ ॥ १७ ॥
इत मलय ४२ रु मंगलप्रस्थ ४३ नाम,
वेंकट४४ त्रिकूट४५ कूटक४६ सुधाम ॥
मैनाक४७ऋषभ४८ कोल्लक४९ नगेसैं[14],

[?]चहुवाण २सहित ३पहुंचे ४दूसरे [?]क्रम से दुगुना करना ६है ७आज्ञा ८पर्वत [?]भू मि का नाभी रूप १०पर्वत ११ पर्वत १२ पर्वत १३ सुन्दर १४ पर्वतोंका ईश

पुनि सह्य देवगिरि५१ रम्य देस ॥ १८ ॥
श्रीशैल५२ ऋष्यमूक५३ हु सुढार,
त्यौं बिंध्य५४ अंक५५ र बारिधार५६ ॥
ऋक्षगिरि५७ चित्रकूट५८हु सुथान
नग रत्नशृंग५९पुनि शुक्तिमान६० ॥ १९ ॥
द्रोण६१ रु त्यौं रैवत६२ ककुभ६३ नील६४,
गौरमुख६५ कामगिरि६६ इंद्रकील६७ ॥
ए जंबुदीपगिरिमुख्य आय, खट६अपर दीप गिरि सुनहु राय ॥ २० ॥
मणिकूट६८ बज्रकूट६९ हु नगेन,
नग ज्योतिष्मान७० रु इंद्रसेन७१ ॥
रु सुपर्ण७२ हिरण्यष्ठीव७३ जानि,
गिरि मेघमाल७४ अरु स्वरस७५ मानि ॥ २१ ॥
सतशृंग७६कुंद७७ अरु बामदेव७८,
पुनि कुमुद७९पुष्पवर्षाख्य८०एव ॥
पब्बय सहस्रश्रुति८१ चक्र८२ आइ,
चउशृंग८३ सिलोच्चय त्यौं सुभाइ ॥ २२ ॥
गिरि कपिल८४ चित्रकूट८५ हु ललाम,
पुनि देवानीक८६ रु द्रविण८७ नाम ॥
त्यौं अद्रि ऊर्ध्वरोमा८८सुथान,
भोजन८९उपवर्हण९० वर्द्धमान९१ ॥ २३ ॥
गिरि शुक्र ९२ नंदन ९३ रु नंद ९४ जत्थ,
त्यौं अद्रि सर्वतोभद्र ९५ तत्थ ॥
पुनि ईशान ९६ रु उरुशृंग ९७ जानि,
बलभद्र ९८ रु सतकेसर९९बखानि ॥ २४ ॥
रु सहस्रश्रोत १०० रु देवपाल १०१,
पुनि अद्रि महानस १०२ अतिबिसाल ॥

---

१ दूसरे २ पर्वतों का राजा ३ पर्वत

गिरि बहुरि मानसोत्तर १०३ नगेसं,
रथचक्र धरत जिंहिं सिर दिनेसं ॥ २५ ॥
पुनि लोकालोक१०४हु सानुमंतं जिंहिं रविप्रकाससीमा कहंत ॥
इत्यादि अद्रि औषध उपेत, आहूत आइ अभिसेक हेत ॥ २६ ॥

दोहा

प्लक्षादिक जे द्वीप षट६,तिन बिच सरिता आहि ॥
करहु श्रवन तिनकौंहु नृप, बरनौं क्रम निरबाहि ॥ २७ ॥

षट्पदी

आंगिरसी१अरुणा२रु सुप्रभाता३नदि जानहु ।
ऋतंभरा४नृम्णा५तथाहि सावित्री६मानहु ॥
सत्यंभरा७धुनी रु कुहू८रजनी९राका१०जिम ।
सरस्वती११अनुमति१२रु सिनीवाली१३नंदा१४तिम ॥
रसकुल्या१५मधुकुल्या१६नदी श्रुतविंदा१७रु घृतच्युता१८॥
पुनि सरित मित्रविंदा१९गिनहु पुंण्यद संबेरसंजुता ॥२८॥

सौराष्ट्रीदोहा

नदी देवगर्भा२०रु, सुनहु मंत्रमाला२१तथा ॥
तीर्थ २२अभया२३रु,अमृतौघा२४ पुनि आर्यका२५ ॥ २९ ॥

दोहा॥

रूपवती२६रु पवित्रवति२७,शुक्ला२८अनघा२९आइ ॥
आयुर्दा३०अपराजिता३१,पंचपदी३२भल भाइ ॥३०॥
सरित सहस्रश्रुति३३तथा,उभयस्पृष्टि३४अनूप ॥
निजधृति३५ए खट६द्वीपनदि, आई आत्तसुरूप ॥३१॥
उपद्वीप जे अष्ट८तँहँ, तेहु सुनहु नृप राम ॥
अरिकुल डारन भय अतुल, कबिकुल पूरनकाम ॥३२॥
स्वर्णप्रस्थ१आवर्त्तन२रु, चंद्रशुक्र३अभिधान ॥

---

१ पर्वतराज२ सूर्य ३ शिखरवाला ४ पर्वत ५ सहित ६ बुलाये हुए ७ नदियां ८ है ९ नदी १० पुण्य देनेवाले ११ जल सहित १२ रूप धारण करके १३नाम

२मणक४मंदरहरिणा५पुनि,सिंहल६सुनहु सुजान ॥ ३३ ॥
पांचजन्य७लंका८तिमहि,उपद्वीप ए अष्ट८ ॥
निज अभिमानी देवबपु, आये लखि सुर कष्ट ॥३४॥
भरतखंडमैं नव९सहित,इतरहु पुर्ण्य अरण्य ॥
सौगंधिक१चंपक२बिपिन,धर्मारण्य३हु ग ण्य ॥३५॥
तुंगारण्य४पवित्र५पुनि,दशारण्य६अभिधान ॥
द्वैत७रु ब्रह्मारण्य८मुख, औषध बिबिध निधान ॥३६॥
इत्यादिक भूभाग जे,सीमा भिन्न प्रकास ॥
निज अभिमानी रूप सब,पहुँचे अध्वर पास ॥३७॥
अर्णव१नद२कुल्या३प्रमुख,सेचन हित जल लाय ॥
द्वीप१खंड२बन३अद्रि४ए,औषध लै सब आइ॥३८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशावर्णव१नद२नदी३द्वीप४खण्ड५वन६पर्वता ७ऽऽधिष्ठात्राऽऽगमनं षष्ठो६मयूखः ॥६॥ आदित एकत्रिंशः ॥ ३१ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पदी ॥

मुनि बसिष्ठ इन सबन आसु मिलि उचित बास दिय ।
मधुर बानि सनमानि सहित आदर स्वागत किय ॥
हरि१हर२अज३ढिग जाइ कहिय अतिनम्र जोरि कर ।
देहु नाथ आदेस रचन चिंतित अब अध्वर ॥

१नामवाले२देवताओं का३दूसरे४पवित्र ५ वन ६ वन ७गणना योग्य ८नाम ९ आदि १० आश्रय ११ इत्यादिक भूमि के भागों के अभिमानीदेवता (यह मेरा है ऐसा अभिमान रखने वाले) १२यज्ञ के १३समुद्र १४बड़ी नदियों को नद कहते हैं १५छोटी नदियें अथवा नहरें१६आदि१७सींचने के अर्थ १८पर्वत

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में समुद्र, बड़ी नदियां, छोटी नदियां, द्वीप, खण्ड, वन, पर्वत, आदि के अधिष्ठाता (अभिमानी देवता) ओं के आगम का छठा मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से इकतीस मयूख हुए ॥ ३१ ॥

१९शीघ्र२०आये का आदर२१विष्णु२२शिव २३ ब्रह्मा के २४ आज्ञा २५ यज्ञ

मुनि१ देव२ तीर्थ३ बन४ खंड५ गिरि६ द्वीप७ सिंधु८ हाजरि सकल ।
अवसर भलोहि न बिलंब अब सोधि बिचारहिं सत्रथल[1] ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

हरि१ हर२ अज३ सुनि दिय हुकम, अबहि करहु आरंभ ॥
प्रकटहिं खलनासक नृपति, थिर जातैं भुवथंभ ॥ २ ॥
मुनिराजन तब तत्थ मिलि, पाइ सहाय गरीय[2] ॥
वह्नि[3]सुमंत्रित कुंडबिच, आन्यौं आहवनीय[4] ॥ ३ ॥
सब उपहार[5] समीप धरि, भनि मंत्रन बिधि भव्य ॥
लखि निदेस डारन लगे, हुतभुक[6] अंतर हव्य[7] ॥ ४ ॥

षट्पदी

ब्रह्मा१हुव दाल्भ्य१साकटायन२होता२हुव ।
उद्गाता३मुनि आर्ष्टिसेन३अध्वर्यु४चराक[8]सुव४ ॥
स्वाहा सह आहूतिकुंड अंतरछलि छोरिय ।
ज्वलन[9] हव्य[10]संजोग हेति[11] उट्ठिय ज[12] होरिय ॥
तातैं सुतेज प्रकट्यो पुरुष पुंडरीक१निजगोत्र२धर ।
साखा तदीय[13] माध्यंदिनी२आम्नाय[14] यजु३त्रि३प्रबर४ ॥ ५ ॥
नामधेय[15] प्रतिहार१ताहि अप्पिय बिरिंचि[16] तब ।
अरु मंडिय अभिसेक सलिल औषध मिलाइ सब ॥
गंधर्वन किय गान नच्च अच्छरि गन सज्जिय ।
सुमन[17] बुट्ठि हुव सुखद देवदुंदुभि बलि[18] बज्जिय ॥
बुल्ल बसिष्ट बिरुदाइ[19] तिहिं तू सुरकारज सिद्धिहित ।
पतिहारराज मारहु प्रबल दानपुत्र संगर बिहित ॥ ६ ॥
सुनि नरेस प्रतिहार लरन हंकिय बिसेस बल ।

---

१ यज्ञ का थल २ घड़ी ३ अग्नि ४ होम के लिये संचय किया हुआ५सामग्री ६अग्नि में ७होमने योग्य पदार्थ ८पुत्र ६ अग्नि १०होमने योग्य पदार्थ को११ ज्वाला१२मानों होली की झाल होवे ऐसी१३उसकी १४वेद१५नाम१६ब्रह्मा ने१७पुष्पों की वर्षा १८ फिर १९ स्तुति करके

उतैं मख आरब्ध सुनत आयेहि असुर खल ॥
मिलत खिज्जि भमीस[1] सीस दुष्टन मुक्किय[2] सर ।
कंकपत्र[3] तस कढ़ि उनहु छाइय धर अंबर ॥
ब्रह्मंड हल्लि हुव जग बिकल उभय२ओर अमरख फुरिय ।
अमरन[4] सहाय१अरु सल्ल[5]२ इम अनल[6]१बान२सुत अंकुरिय[7] ॥ ७ ॥
बिसिखन[8] पर प्रति बिसिख त्रिसिख[9] छुट्टत त्रिसिखन पर ।
संगिन[10] ऊप्पर संगि[11] कुंत[11] पर कुंत भयंकर ॥
गदा गदा रुख चलत खग्ग बुल्लत झरि खग्गन ।
मुक्तादिक[12] आयुधन मचत इम वार समग्गन[13] ॥
छक्कछक्कत घाय[14] सोनित[15] छलत चलत राह रविरथ थकिय ।
प्रतिहारराज इतउत प्रबल धूम्रध्वज जुज्झन[16] धकिय[17] ॥८॥
अवरहु असुर अनेक घोर प्रहरन[18] झुकि झारत ।
ताडहत्थ१ह्रदतुंद२रीतिलोचन३किलकारत ॥
सूचीलोमक४सूककर्ण५मर्दक६करालमुख७।
करभग्रीव८कंकालकवल९रावन१०रावनरुख[19] ॥
बाराहदह्र११उल्मुकबमी१२पब्बयनस१३रनरस पगे
प्रतिहारराज स्यंदन[20] उपरि लैलै[21] अंग डारन लगे ॥ ९ ॥

दोहा

बच्छ१४रु धेनुक१५तीन३बक१८,केसी१९अघ२०किर्मीर२१ ॥
नरक२२प्रलंब२३हिडंब२४मुर२५,कालजिह्व२६कांडीर२७ ॥ १० ॥
कीलजिह्व२८सूलिक२९सकट३०,पीठ३१अलंबुस३२व्योम३३ ॥
अलायुध३४रु संबर३५असुर,तंडे[22] रन मिलि तोम[23]॥ ११ ॥

१भूपति के २ छोडे ३ बाण ४ देवताओं के सहायक५देवताओं के साल ६ अग्नि के पुत्र और बाणासुर के पुत्र ७ उदय हुए (खड़े हुए) ८ बाणों पर ९ त्रिशूल१०बरछी ११भाला१२मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्त और यंत्रमुक्त चार प्रकार के१३सपर्स१४घाव १५रक्त १६युद्ध करने को१७चला १८शस्त्रों को १९ रावण की भांति२० रथ पर २१ पर्वत २२ नाचने लगे, अथवा गर्जना करने लगे २३ समूह

षट्पदी ॥

तिहारहु बहु प्रदर मारि अद्रिन चूरन करि ।
अर्केतु१उरजाय मल्ल बेधिय अमरख भरि ॥
२मीसकांड पंचक५हनि कहिय ।
८९ कछर्दक ३ इमहिं मारि मर्दक४द्रुत दहिय ॥
रावन६विहाल किय तोरि रथ धूम्रध्वज हय८सूत७हनि ॥
प्रतिहार बिंदु बुट्ठत विसिख पहुँच्यो पाँउस मुदिरबनि॥ १२ ॥
जवहि छोरि रथ जंभ गयो आकास पिहित गति ।
उल्का१उपल२ अलात३असनि४पब्बय५वरस्यो अति॥
धूम्रध्वज इत अनखि सूल पटक्यो नृप छत्तिय ।
इहिं छत होत अचेत सूत रोके रथ सत्तिय ॥
प्रतिमग्ग मोरि चिंकुर चल्यो प्रान अक्खि प्रतिहारके ॥
द्विज१सुर२सुपिक्खि दुर्मन भये किय असुरन जयकारके ॥१३॥

दोहा

सुरन सु रन प्रतिहत समुझि, परबल परबल जानि ॥
सबन सबन गिरि तजि भजन, मनन मनन लिय मानि ॥ १४ ॥
श्रीहरि तब सासन दयो समय देश अनुसार ॥
सोचहु नन मुनि१से—२सुर३,प्रतिहत लखि प्रतिहार ॥१५॥
अनल कुंड सन उप्पजहिं,खत्रिय तीन३बहोरि ॥

---

१ बाण २ पर्वतों को ३ बाण ४ शीघ्र ५ स्वार्थी को ६ बाण रूपी बुन्दें बनाता हुआ ७ वर्षा काल का ८ मेघ ९ छिप कर १० आकाश में अग्नि की रेखा सी खिचजाये उसको अथवा विना धूम की झाल को उल्का कहते हैं ११ पत्थर १२ अंगारे १३ बिजली १४ पर्वत १५ क्रोध करके १६ बरछी १७ छाती पर १८ घाव से १९ उलटे मार्ग (पीछा) २० चपल २१ देवताओं ने उस (प्रतिहार) को युद्ध से गिरा हुआ जानके शत्रुओं की सेना को बलवान समझ सबने वन सहित पर्वत को छोड भागना मनों में विचार लिया ॥ १४ ॥ ३१ विष्णु ने ३२ आज्ञा ३३ इन्द्र ३४ अग्नि ३५ से

ऐसोही भावी इहाँ, समुझि देहु भ्रम छोरि ॥ १६ ॥

षट्पदी

जिते प्रकृति परिणाम तिते भावी तुम जानहु ।
ते त्यौंही सब होत कहुँ न परिवृत्ति प्रमानहु ॥
कबहु कबहु प्रतिकूल मैं रु१ संकर२दुव२होवत ।
तदपि सु उचित न गिनि सीम१संधा२को खोवत ॥
ज्यौं भाखि सत्यवादी अनृत धरत लाज तिहिँ काज धुवे ॥
यौं कछु मिटाई त्रि३गुनन अमल हम धनीहु पछितात हुव॥१७॥

दोहा

तातैं नहिँ भावी टरत, कैसेहू कहुँ काल ॥
हमहु समर्थहु होत हैं, तस इंगितँ प्रतिपाल ॥ १८ ॥
कछु न सोच सुर मुनि करहु, अग्गि धरहु आहूति ॥
प्रगटहिँ खत्रिय तीन३पुनि, बिचरण आहवऊति ॥ १९॥
इम अच्युत आदेस सुनि, सुरन लहिय बिस्वास ॥
कल्प गदहु हुतिहारको,नासत्यन किय नास ॥ २० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीयराशौ प्रतिहार प्रकटनाऽऽजिकरणदैत्यसूचीलोमो१ल्मुकवमि२वधान्तरप्रतिहारमूर्छितीभवनं सप्तमो७मयूखः ॥ ७ ॥ आदितो द्वात्रिंश ॥३२॥

सतोगुण रजोगुण तमोगुण की साम्यावस्था (माया) के फल को तुम लोग अवश्य होनेवाले जानो वे वैसे ही होते हैं उलट फेर नहीं होता, कभी कभी विरुद्ध में (विष्णु) और महादेव दोनों होते हैं तोभी वो (वह कार्य) उचित नहीं जानते और अपनी सीमा व प्रतिज्ञा को खोकर जिसप्रकार सत्य बोलनेवाला झूंठ बोल कर निश्चय लज्जा पाता है इसी प्रकार उस प्रकृति के अधिकार को (जो जगत् का कारण है) मेटकर हम ईश्वर हैं तोभी पछताते हैं १६ होनहार १७ चेष्टा के १८ पालनेवाले १९ अग्नि २० युद्ध में २१ क्रीडा करनेवाले २२ विष्णु की २३ आज्ञा २४ देवताओं ने २५ समर्थ २६ रोग को २७ अश्विनीकुमारों ने

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में प्रतिहार के प्रकट होकर युद्धकरना और दैत्य सूचीलोम, उल्मुकवमि को मारे पीछे प्रतिहार के

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतमिश्रितभाषा ॥

दोहा

हरिकोलहि निर्भय हुकम, स्रुक[1] सहकरि[2] उपहार[3] ॥
मंडिय पुनि होमन मुनिन, श्रुति[3] मंत्रन अनुसार ॥ १ ॥
मुद्गल १ मुनि ब्रह्मा १ भये, होता २धृति२मुनिराज ॥
जन्हु३भये अध्वर्यु३जहँ,सामग४भारद्वाज४ ॥ २ ॥
लखि बिलंब कछु द्रुहिनें[4] खिजि,आज्य[5] चलुक[6] भरि अग्गि॥
डारत पुनि प्रकटिय पुरुष, ज्वलन अँच्चि[7] सह जग्गि॥ ३ ॥

षट्पदी

होत अपर[8] आहूति पुरुष दूजो[9]प्रकटिय पुनि ।
द्रुहिन ताहि अभिधान[10] दये सब तेहु लेहु सुनि ॥
चाळुक१ चौलुक२ तिम चुलुक्य३ चौलुक्य४ जथाविधि ।
अरु चालुक्य५ इतीक पाय संज्ञों हुव सन्निधि[11] ॥
यजुबेद१ साख माध्यंदिनिय२ भारद्वाज३ सगोत्र यह ॥
गुन३ प्रवर४ अंसें[12] उपबीत[13]धर कढि ठढ्ढो असुरन असह ॥४॥

दोहा

चलुक१ चुलुक२ दुव२ भेद करि, भये इते इहिँ नाम ॥
अभिसेचन याकोहु अंजें[14], किय बिधिजुत जयकाम ॥ ५ ॥

षट्पदी

दै बिरिंचि[15] आदेस[16] यहहु पिल्ल्यो[17] असुरन पर ।
तबहि हंकि चालुक्य बढ्यो सज्जित संतांग[18] बर॥
संगर मंडिय जाइ बंदि बिरुदन छक्के[19] धारत ।
नद्दत मगंपति[20] नाद चंड[21] चापेंहि[22] टंकारत ॥

मूर्छित होने का सातवाँ मयूख समाप्त हुआ और आदि से बत्तीस मयूख हुए ३२
१स्रुवा (होमने का पात्र विशेष)२सामग्री३वेद के४ब्रह्मा ने५घृत का ६चुल्ला(चुलवा)
७झाल के८ दूसरी९नाम१०नाम११वाक्यार्थ के ज्ञान के हेतु को संनिधि कहते हैं
अथवा समीप१२कंधे पर१३जनेऊ१४ब्रह्मा ने ही१५ब्रह्मा ने १६ आज्ञा१७भेजा
१८रथ१९ उत्साह २० सिंह का २१ भयंकर २२ धनुष को

प्रेतन डरात रचि संख रव[1] रारि रसिक बिथुरात मह[2] ॥
गरदाइ[3] असुर चालुक लये[4] स्यंदन कावौं[5] दुसह ॥ ६ ॥
हद पिचंड १सिर हंकि तीर चालुक्य तकि दिय ।
तुरग[6] भेदि रथ तोरि फोरि दृग[7] इक्क१ काण[8] किय ॥
सूककरन२तहँ सँगि[9] आनि डारिय चालुक उर ।
घुम्मि नृपति तिहिँ घाय अनँखि[10] मारिय वह आसुर ॥
किर्मीर३केतु कट्टि रु कतल कोलजिन्ह४यह हेति[11]करि ।
मुर५के बिडारि पंच५हि मुकुट लिय नृपमर्दक[12] ६प्रान हरि ॥७॥
धूम्रकेत धँकि[13] तबहि समुह पिल्ले हिडंब१बक२ ।
स्वामि हुकम लहि उभय२बढे डाग्त जग ओदंक[14] ॥
बीस२०मारि बक बिसिख[15] तोरि रथकेतु[16] तुरंगन ।
चालुक अंग निखंग[17] कियउ करि रिक्त[18] निखंगन ॥
उर इक१हिडंब मारिय परिघ इहिँ आघात अचेत पति ॥
बपु बिकल घुम्मि सोनित[19] बमंत[20]पस्यो उलटि चालुक नृपति ॥८॥

दोहा

दोरयो बक चालुक परत, गहि असि[21] कट्टन मन्थ ॥
तबही सँकति[22] उठाइ तिहिँ, आन्यों मखथल[23] जत्थ ॥ ९ ॥
हरि[24] निदेस बिस्वास गहि, सामग्री लहि छिप्र[25] ॥
पूरन लग्गे हव्य पुनि, वन्हि[26]अवट बिच बिप्र ॥१०॥
भागुरि१मुनि ब्रह्मा२भये, होता१एकत२जत्थ ॥
उद्गाता३सु बसिष्ठ३अरु, त्रित४अध्वर्यक४तत्थ ॥ ११ ॥

षट्पदी

---

१ शब्द (शंख के शब्द से प्रेत डरते हैं यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है २ उत्सव ३घेरकर ४ रथ का ५ गोलकुंडा ६ घोड़े ७ नेत्र ८ काणा ९ बरछी १० क्रोध करके ११शस्त्र १२मर्दक नाम दैत्य के १३क्रोध करके १४भय १५बाण १६ ध्वजा १७भाथा (चालुक के शरीर को भाथा के समान करके) १८रीते १९रक्त २०उगलता हुआ २१ खड्ग २२ शक्ति ने २३यज्ञ के स्थान में २४विष्णु के २५ शीघ्र २६ अग्नि कुंड में

अनलकुंड आहूति तबहि तीजी[3]पुनि लग्गत।
प्रकट्यो पुरुष तृतीय[3]ज्वलन[2] कीला[2] बिच जग्गत॥
तिहिं प्रमार १ परमार २ नाम अप्पिय चतुराननं[3]।
अक्खिय दितिजन[4] मारि मुम्मि भुग्गहु प्रबीरपन॥
साखा त्वदीयं[5] माध्यंदिनी१ गोत्र बसिष्ठ३ रु त्रि३प्रवर३।
यजु४श्रुति[6] इतीक विधिसौं सुनत यहहु चल्यो अभिसिक्तनर[7]॥१२॥
असुरन सन परमार जाइ मंडिय रन दुर्द्धर[8]।
करि छादित आकास पिहुल[9] मुक्कत सर पंजर॥
करभग्रीव१ सिरकट्टि कलह[10] कंकालकवल२ हनि।
कोलदंष्ट्र३करि कुणप[11] अग्ग पहुँच्यो छक उप्फनि॥
बक४ नरक५ बाजिधेनुक ६ धनुख केसी७रथचक्क चूरं[12]करि।
किर्मीर ८सूतं[13] संहरि लियउ धूम्रध्वज निज अग्गधरि॥ १३॥
बानतनय तब सकति पंच५ घंटाजुत मुक्किय।
चंपलासम[14] वह चलिय सुलखि भीरुनं[15] जिय मुक्किय॥
सप्ति[16]१ केतु[17]२रथ३सूत४जाय सत्वर[18] जिहिं कट्टिय।
ठहे बिरथहु परमारदैत्य बानन बहु दट्टिय[19]॥
छेदिय प्रलंब१० याको धनुख लै असि खेटकं[20] तब लरिय।
तिन कटत गदाकर चंड गहि कलह भूप संकुल[21] करिय॥ १४॥
वह कट्टत लिय परिघ परिघ कट्टत लिय तोमरं[22]।
तोमर कट्टत सांगि सांगि कट्टत लिय मुद्गर॥
इम प्रहरनं[23] जे जे उठाइ सम्मुह डंग[24] दिन्नौं।
ते ते सब तिन कट्टि नृपहिं फग्गुन[25] तरु किन्नौं॥

---

१ अग्नि की २ ज्वाला में ३ ब्रह्मा ने ४ दैत्यों को ५ तुमारी ६ वेद ७ अभिसेक कियाहुआ ८ दुस्तर ९ बहुत१०युद्ध में११ मुरदा १२ चूर्ण १३ स्वार्थी को १४ बिजली १५ कायरों के १६ घोडे १७ ध्वजा १८ शीघ्र १९ दबाये २० ढाल २१ अवकाश रहित २२ भाला २३ शस्त्र२४पैंड २५फागुन में वृक्ष पतझड़ होकर नंगे होजाते हैं ऐसा.

दिय मरम तक्कि आसुग[1] दुसह मधुपलास[2] छबि काय[3] तब ।
मखबाट[4] आइ अक्खिय हमहिं सुर[5] आयुध पुनि देहु सब ॥ १५ ॥
तब अच्युत[6] दिय हुकम बीरबपु[7] सल्य[8] बिहावहु ।
होइ अनामय[9] त्वरन सुरन[10] प्रहरन[11] पुनि पावहु ॥
इक्क१सेसं[12] आहूति करहु द्विजबर वह पूरन ।
मिटत कबहु कैसेंहु उदित भावी[13] अंकूरन[14] ॥
इम यह मुकुंद दृढ करि नियति[15] पुरुषकार[16] खंडन करिय ।
आहूति अपर[17]बिधि सनि मुनिन निश्चित मन मंगल धरिय ।१६।

दोहा

करे अनामय अश्विनन[18], नृप चालुक१परमार २ ॥
दुहुन२पुनिहु आयुध दये, अमरन[19] जय उपकार ॥ १७ ॥
आहुति चोथी४दैन इत,बहु गहि मुनिन बिबेक ॥
निकट रक्खि बिधिकों[20] निखिल[21], किय बिधि[22] उचित अनेक ॥१८॥

इतिश्री वंशस्भाकरे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशौ चालुक्य१प्रमार२प्रकटनयुद्धकरणदैत्यशूककर्ण१मर्द्दक१करभग्रीव१कङ्कालकवल२बराहदंष्ट्रा३ऽऽदिबधचालुक्य२मूर्च्छनप्रमार३निश्शस्त्रीभवनमष्टमो८मयूखः ॥ ८ ॥ आदितस्त्रयस्त्रिंशः ॥ ३३ ॥

गीर्वाणभाषा ॥ सुदन्तम् ॥

परमारराजेऽपि परास्तपौरुषे मुनयः समाश्लाघ्य जनार्दनोदितम् ॥

१ बाण २ वैशाख महीने में ढाक के वृक्ष केसू के फूलने से लाल होजाते हैं जैसे ३ शरीर ४ यज्ञमार्ग में ५ हे देवताओ ६ विष्णु ने ७ शरीर के ८ शाल निकालो ९ नैरोग्य १० देवताओं से ११ शस्त्र १२ बाकी १३ होनहार का १४ उदय १५ भाग्य को १६ पुरुषार्थ को १७ दूजी १८ अश्विनीकुमारों ने १९ देवताओं के २० ब्रह्मा को २१ सब २२ रीति ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीयराशि में चालुक्य, प्रमार का प्रकट होकर युद्ध करना और दैत्य सूककर्ण, मर्दक, करभग्रीव, कंकालकवल, वराहदंष्ट्र आदि का मारना, चालुक्य का मूर्छित होना, परमार का बिना शस्त्र होने का अठवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ आदि से तैंतीस मयूख हुए ॥ ३३ ॥

परिपूज्य हेरम्बमनन्तपौरुषं जुहुवुः पुनर्हव्यमुषर्बुधाऽवटे ॥ १ ॥
द्रुहिणस्तदोचे शृणुत द्विजेश्वरा प्रतिहारभूपाद्यभिभूतिकारणम् ॥
न भवेद्द्विबाहोऽपि मृत्युरावयोरिति मां पुराऽभीष्टमुभावयाचताम् ।२।
अत एव सर्वैरिह संस्तुताऽच्युतैः कथनीयमाविर्भवतु ज्वलच्छिखात्
असुराटवीधुक्षितधूमकेतनः क्षितिधर्मगोप्ता पुरुषश्चतुर्भुजः ॥ ३ ॥
इतरच्च सौम्याहिपदार्थसञ्चयो हुत एष तस्मादपि सौम्यभूमिपाः ॥
अभवन्नतोऽप्युग्रपदार्थसम्पदाहवनीययाऽऽसन्नतमं महत्फलम् ।४।
इति बोधितास्ते परमेष्ठिनर्षयोऽप्यनुमोदिता भाविविदा गदाभृता ॥
शशिशेखरेणाऽपि तथा नियोजिता जुहुवुर्यथा स्यात्सपुमांश्चतुर्भुजः ।
मुनिरास तत्र द्रुहिणत्वभाग्भृगु१श्च्यवन२श्च होतृत्वमुपाददे स्वयम् ।
अथ वत्स३आसीत्स्वरसामगायनो यमदग्निजो४ध्वर्युरभून्महाऽध्वरे
हवनीयमुग्रं परिणामदुस्सहं ज्वलनेऽक्षिपन्नाहवनीयसंज्ञिते ॥

परमार राजा के भी पुरुषार्थ रहित होजाने पर सब मुनियों ने विष्णु के कहने की प्रशंसा करके अनन्त पराक्रम वाले गणेश का पूजन कर फिर अग्निकुण्ड में होमने की वस्तुओं का हवन किया ॥ १ ॥ तब ब्रह्मा ने कहा कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मणो प्रतिहार (पड़िहार) आदि राजाओं के हार जाने का कारण सुनो कि दो हाथवाले से भी हम दोनों की मृत्यु न हो यह वरदान मुझसे पहले उन दोनों दैत्यों ने मांगा था ॥ २ ॥ इसी कारण यहां पर विष्णु की स्तुति करनेवाले तुम सब के कहने योग्य दैत्यरूपी वनको जलानेवाला अग्नि के समान, पृथ्वी में धर्म्म की रक्षा करनेवाला, चार भुजोंवाला पुरुष अग्नि से प्रकट होवे ॥ ३ ॥ और भी दूसरा कारण यह है कि यह जो हवन द्रव्य का समूह होमागया है वो सौम्यभाव का था इस कारण से भी सौम्यस्वभाव वाले भूप हुए. अब इससे भी अधिक फल देनेवाले उग्रपदार्थ आहवनीय नामक अग्नि में होमेजांय तो शीघ्र ही बडाभारीफल होवे ॥ ४ ॥ यह बात ब्रह्मा ने ऋषियों से कही, और भविष्यत् को जानने वाले विष्णु ने उस को पुष्टकी, महादेव से भी उसी प्रकार प्रेरणा कियेहुए ऋषियोंने जिस प्रकार चार भुजोंवाला पुरुष उत्पन्न होवै तिस प्रकार हवन किया ॥ ५ ॥ उस महायज्ञ में भृगु मुनि तो ब्रह्मा का भाग लेनेवाला हुआ, और च्यवन ऋषि ने स्वयं होतापन को प्राप्त किया, वत्स ऋषि सामवेदपाठी हुआ और जमदग्नि ऋषि अध्वर्यु हुआ ॥ ६ ॥ जिसका फल नहीं सहाजाय ऐसा होम करने का पदार्थ आहवनीय नामक अग्नि में होमा तब लम्बे चार हाथोंवाला

उदभून्महो लम्बचतुःशयं ततश्चहुवाण एवैतदुदीरितं बुधैः॥ ७ ॥
स्तनयित्नुगम्भीरदुरूहकोटिगीर्दितिजागआताम्रमुखालिकच्छविः॥
कमनीयकोटीरककुण्डलाङ्गदःप्रकटीबभूवाऽध्वरकुण्डकूर्दनः ।८।
समिदुत्कनेत्रो वरबार्हधीजितः शितशक्तिसाधेयसुपीनदोर्लतः ।९।
शरसङ्घसङ्गी शिवसौख्यसुद्वहन्नुदतिष्ठदग्नेरिव बर्हिवाहनः ॥ ९ ॥
अरणोर्यथा कीलकरालहव्यवाडुदयादमादेनमहो महो महत ॥
गिरिशाम्बकात्काक्ष इवात्मयोनिधग्ज्वलनादथोदैत्सचतुर्थ४पूरुषः
शशिवन्हिपञ्चात्रि१३३५मितेऽब्दसञ्चये
ध्यखिले खिले द्वापरभाविभोक्तरि ॥
अरि१शक्ति२निस्त्रिंशगदा४भिरायुधैरभिशोभितोराजत दोश्चतुष्टयः
तरणावुदग्गोलपथि स्थिते तदा सुरभावृतौ माधवपक्ष उज्ज्वले ॥
परमेष्ठिभे४जीवदिने५च शोभने५युतिसत्तमे प्रादुरभूच्चतुर्भजः ।१२।
प्रायोब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

तेज रूप उठा जिसको पण्डितों ने यह चहुवाण ही है ऐसा कहा ॥ ७ ॥ मेघ के समान गम्भीर और अतर्क्य कोटिवाला है शब्द जिस का, दैत्यों के अपराध से तांबे के समान रक्त है मुख और ललाट जिसका, सुन्दर है मुकुट कुण्डल और भुजबन्ध जिसके ऐसा यज्ञकुण्ड में क्रीड़ा करनेवाला प्रकट हुआ ॥ ८ ॥ संग्राम में उत्क (ऊँचे) हैं नेत्र जिसके, श्रेष्ठ मोरछलों से होता है पवन जिस पर, तीक्ष्ण शक्ति के साधन योग्य है भुजलता जिसकी, बाणों के समूह का साथी, महादेव के सुख को धारण करनेवाला स्वामिकार्तिक के समान देवताओं के सुख को धारण करताहुआ अग्नि से उठा ॥ ९ ॥ जैसे अरणी (जिन दो लकड़ियों को परस्पर रगड़ने से होमाग्नि उत्पन्न की जाती है उन दो लकड़ियों का नाम अरणी है) से भयङ्कर ज्वालावाली अग्नि, उदयाचल से बड़ा भारी सूर्य का तेजपुञ्ज, महादेव के नेत्र से कामदेव को जलानेवाला कटाक्ष, इसप्रकार अग्नि से वह चौथा पुरुष निकला ॥ १० ॥ सम्पूर्ण द्वापर युग में से तीन हजार पाँच सौ इगतीस ३५३१ वर्ष भोगने के बाकी रहने पर चक्र, शक्ति, खड्ग और गदा इन चार आयुधों से शोभित हैं चारों हाथ जिसके ऐसा सुशोभित हुआ॥११॥जिस समय में सूर्य उत्तरायण व सन्तऋतु वैशाख शुक्लपक्ष,रोहिणी नक्षत्र,गुरुवार और शोभनयोग था उस समय में पूज्यसंग्राम के अर्थ चार भुजोंवाला प्रकट हुआ।१२।त्रुटि आदि समय की।

दोहा

आहुति चोथी४ लगत इम, चोथो४ नृप चहुवान ॥
उपज्यो वह पंचांग अब, सब नृप सुनहु सयान ॥ १३ ॥
एक१ महाजुगके बरस,ख ख ख ख रद आम्नाय४३२००००।
जे भूमुनि७१ निजसंधि जुत, इक१ मनुभोग कहाय ॥ १४ ॥
ताके हायंन ख ख ख नभ, दृग हय छ गगन तीन३०६७२००००।
सौरमान सन मानिये, पहु बुंदीस प्रबीन ॥ १५ ॥
छ६ मनु गये या कल्पके, यातैं छ६ गुने ए३०६७२०००० हु ।
ख ख नभ ख रद ख बेद धृति ,
१८४०३२००००प्रमित अब्द गिनिलेहु ॥ १६ ॥
ख ख नभ बसु दृग अग्नि ३१७२८०००, इक१ मनु संधिज बर्ष ॥
छ६ गुन तेहु ख ख ख बसु खट,
गुन दस१०३६८००० गिनहु सहर्ष ॥ १७ ॥
छ६ मनु अब्द वे१८४०३२०००० इन१०३६८००० सहित,
होवत नृप चहुवान ॥
ख ख नभ बसु बसु रस गगन,
सर अहि भूमि१८५०६८८००० प्रमान ॥ १८ ॥
सप्तम७मनुकी संधिके,अब्द१७२८०००जुरेइन१८५०६८८०००माँहिं
तब ख ख नभ रस भूमि जिन,

गणना ग्रंथ प्रारंभ समय के अहर्गण में प्रथमराशि में कह आये हैं इसकारण से उस गणना को छोडकर यहां पर आवश्यकीय गणित ही लिखते हैं कि एक महा जुग के ४३२००००वर्ष होते हैं ऐसे इकहत्तर महाजुगों का एक मनु होता है ॥ १३ ॥ १४ ॥ उस एक मनु के हे प्रवीण बुन्दीपति ३०६७२०००० सौर वर्ष हुए मानो ॥१५॥ इस कल्प के छ मनु गये इसकारण से इन वर्षों को छै गुने किये तो १८४०३२०००० वर्ष हुये जिनका प्रमाण गिनलो ॥ १६ ॥ एक मनु की सन्धि के १७२८००० वर्ष होते हैं इनको छै गुने किये तो १०३६८०००वर्ष हर्ष सहित गिनो ॥ १७ ॥ छै मनुओं के वर्ष इन सन्धियों के वर्षों में सामिल किये तो हे चहुवान१८५०६८८०००इस प्रमाण से हुये ॥ १८ ॥ सातवें मनु की

रस धृति१८५२४१६००० मित ुव आँहिँ ॥ १९ ॥
भ२७ मित महाजुग कढिगये, सप्तम७ मनुके जत्थ ॥
तिन्ह हायन ख ख ख नभ चउ,
तर्क अष्टि ससि११६६४०००० तत्थ ॥ २० ॥

पादाकुलकम्

ए११६६४०००० वे१८५२४१६००० जुरत इकट्ठे सब हुव,
ख ख ख छ पंच नवति रस नव भुव१९६९०५६००० ॥
अबको जबहि महाजुग लग्गो,
तब इहिँ१९६९०५६००० मान अब्दगन भग्गो ॥ २१ ॥
इक१ मनुसंधि १७२८०००तुल्य निजबच्छर,
कृतजुग इक१ बित्यो तदनंतर ॥
ख ख नभ रस नव रबि१२९६०००मित हायन,
पुनि त्रेतालगि किन्न पलायन ॥ २२ ॥
इन दोउन२अब अब्द इकट्ठे,नभ ख ख जिन नभ गुन३०२४०००मित नट्ठे
तीजो३ चरन गयो पुनि द्वापर,
नव छ बेद ख छ बसु ८६०४६९मित बच्छर॥ २३ ॥
द्वापर हायन भोग्य रहे जँहँ,भू गुन बान अग्गि३५३१सम्मित तँहँ॥
नव छ बेद चालीस अंक दुव,
मुनि अतिधृति१९७२९४०४६९ मित सब गताब्द हुव ॥ २४ ॥
अब इनतेँ चहुवान जन्म दिन, आनत श्रम पिक्खहु हइन इन ॥

सन्धि के१७२८०००वर्ष इनमें जोड़े तो १८५२४१६००० वर्ष हुए ॥१९॥ इस सातवें मनु के सत्ताईस महाजुग निकलगये जिनके ११६६४०००० वर्ष हुए॥२०॥ इन सत्ताईस महाजुगों के और पहिले के छै मनुओं के और सन्धियों के सब वर्ष मिलकर१९६९०५६०००हुए सो इस प्रमाण से वर्षों का समूह गया।२१। एक मनु की सन्धि के बराबर है अपने वर्ष जिसके ऐसा सत्ययुग उसके पीछे बीता फिर १२९६०००वर्ष त्रेता के गये ॥ २२ ॥ अब इन दोनों के इकट्ठे वर्ष ३०२४००० गये, फिर द्वापर के तीसरे चरण के ८६०४६९वर्ष गये ॥ २३ ॥ और द्वापर के ३५३१ वर्ष भोगने बाकी रहे उस समय १९७२९४०४६९ कुल वर्ष बीते ॥ २४ ॥ अब इन वर्षों से चहुवान के जन्म दिन को लाते हैं जिस

ए १९७२९४०४६९ सब लिखितकल्पगत हायन,
द्वादस१२प्रहत करे गुणानायन ॥ २५ ॥
बसु लोचन रस पंच अष्ठ दुव,
सर मुनि तर्क बिकृति२३६७५२८५६२८ संमित हुव ॥
इक गत मास चैत्र सित मुखतैं,
सो तिन बिच जोर्यो पुनि सुखतैं ॥ २६ ॥
नव दृग छ सर अष्ठ दुव सर मुनि,
छ बिकृति२३६७५२८५६२९ए गतकल्प मास सुनि ॥
तीस३०गुनित ए२३६७५२८५६२९यातमास करि,
गततिथि दुवरंति दई इन बिचधरि॥२७॥
द्वि मुनि अष्ठ बसु अरि सो अहि सर,
दृग दस हय७१०२५८५६८८७२मित यह गत दिन भर ॥
यह दुव२ठोर मंडि पटुतासन,इकठाँ गुन्यों कल्प अधिमासन ।२८।

दोहा

लक्ख गुनित सुर अंक तिथि१५९३३०००००,इते कल्प अधिमास ॥
गतदिन चय७१०२५८५६८८७२तिनकरि गुनित,
अधिप सुनहु जिम आस ॥ २९ ॥

षट्पदी

ख ख ख ख नभ रस अचल बान हय गुन बसु गिरि मुनि ।
हय नव चउ सर अष्टि,

का परिश्रम हे हाडा चत्रियों के सूर्य देखो, ये ऊपर लिखे हुए कल्प के गत वर्ष हे गुणों के घर रामसिंह बारह से गुणाये ॥ २५ ॥ सो२३६७५२८५६२८हु ए इन में चैत सुदि एकम से गया हुआ एक मास सुख पूर्वक फिर जोडा।२६। तो २३६७५२८५६२९ कल्प के सौरगतमास हुए सो सुनो, इन गये हुए महीनों को तीस से गुणाकर इनमें गई हुई दो तिथि जोडदी ॥ २७ ॥ तो ७१०२५८६८८७२ गये हुए दिन हुए, इनको दो जगह लिखकर चतुराई के साथ एक जगह कल्प के अधिक मास से गुनाया ॥२८॥ एक कल्प में १५९३३००००० अधिक मास होते हैं सो हे स्वामी गये हुए दिनों के समूह को इन अधिक मासों से गुनाये जैसे हुए सो सुनो ॥२९॥ इनके गुणन फल की संख्या ११३१६५४-

राम सिव११३१६५४६७७७८३७५७६००००० मित सु भयउ पुनि ॥
अर्बुद गुनित द्विपंच, विषय तिथि१५५५२००००००००० ए सब रवि दिन
इनकरि यह बडरासि, भज्यो कबि गनित पंच५इन ॥
तँहँ लब्ध मुनि ख बसु गज बिषय, छ हयनेत्रगिरि७२७६५८८०७ एठये
चंडासि जनम पहिलैं गिनहु, अधिकमास७२७६५८८०७ इतनैं गये।
तीस३०गुनित करि इनहिं, किये भासनके बासर।
ते हुव दस दुव बेद तर्क पुनि नव हग धृति कर२१८२९७६४२१० ॥
रविगत दिन७१०२५८५६८८७२ ए भिन्न,
लखे तिन बिच २१८२९७६४२१० इन्ह जोरत ।
द्विबसुनीससुरअहि राजकृतिगुनहय७३२०८८३३३०८२ हुव सम्मत
सुहि चंद्र अहर्गन आनिये७३२०८८३३३०८२,
यह बहोरि दुव२ठाँ लिखित ।
इक१ठाँ सु जानि कल्पावमन, तिन करि गुनि किन्नौं बिहित ॥३१॥
अयुत गुनित रस पंच, नेत्र बसु व्योम विषयकर२५०८२५५०००० ।
इते अवम दिन होत, सकल बिधिके इक१बासर ॥
ससिदिन गन ७३२०८८३३३०८२ यह भिन्न,
लिखित तिहिं अवम दिनन गुनि ।
जिते बढाये अंक, तिते सब लेहु भूप सुनि ॥
ससि अतिधृति नव सर बेद नव धृति आकृति चउ तर्क दुव ॥

९७७७८३७५७६००००० हुई, इनको कल्प के सूर्य के १५५५२००००००००० दिनों से ऊपर की बडी राशि में हे राजा पांचों गणित को (व्यक्त, अव्यक्त, रेखा, ग्रह, गोल) जाननेवाले कवि (ग्रन्थकर्ता) ने भाग दिया तो ७२७६५८८०७ अधिक मास गये ॥३०॥ इन अधिक मासों को तीस से गुणा करके महीनों के दिन किये सो २१८२९७६४२१० हुए सो पहिले आये हुए रवि दिनों ७१०२५८५६८८७२ में जोड़ दिये तो ७३२०८८३३३०८२ चान्द्र दिन हुए जिनको दो जगह लिख कर एक जगह कल्प की टूटी हई तिथियों से उचित रीति से गुणा किया सो जानो ॥ ३१ ॥ ब्रह्मा के एक दिन में २५०८२५५०००० टूटी तिथियें होती हैं सो चन्द्रमा के गत दिनों को जुदे जुदे दो जगह लिख कर टूटी हुई तिथियों से गुणाया वहां जितने अङ्क बढाये (गुणन फल आये) १८३६२६४ २१८९४५-

छत्तीस बसु कु ए लक्ख १०००००गन,
१८३६२६४२२१८९४५९१९१०००००,
अवम गुनि विधु द्युगन हुव ॥ ३२ ॥
युत गुनि नव अंक अंक दुव गगन अष्टि१६०२९९९००००००मित
बिधुदिनबिधिदिनमाँहिँ होत सुनिये जससोभित१६०२९९९००००००
इनकरि१८३६२६४२२१८९४५९१९१०००००ए अवमघ्न भजे तँहँ
एह लयो फल॥
अग्गि नाग ख ख अ चंदसरसर चउ सितिगल ११४५५१८००८३॥
चंडासि पुब्ब ए दिन अवम बिधु दिन गन ७३२०८८३३३०८२किय
११४५५१८००८३इन रहित ।
तब अंक अंक नव नेत्र तिथि सुर सर कृति हय
७२०६३३१५२९९९हुव सहित ॥ ३३ ॥
दोहा
ह ७२०६३३१५२९९९सावन दिनगन भयो,जबहि कल्पको यात॥
तब चहुवान धराधिपति, भो अर्बुद गिरि ख्यात ॥ ३४ ॥
दिनगन ७२०६३३१५२९९९यह पुनि सप्त७करि,कढ्योकढ्ढनबार
च्यारि४ रहे खिल याहितैं, गुरुदिन भो जयकार ॥ ३५ ॥
सर बसु रद नव पंच हय,चउ नव व नभ चंद १०२९४७५९३२८५।
भागलब्ध इतनैं भये, सुहि गत बारन कंद ॥ ३६ ॥

६१९१०००००सो हे राजन् सुनो ॥ ३२ ॥ ब्रह्मा के एक दिन में चन्द्रमा के १६०२९९९००००००दिन होते हैं सो हे यश से शोभा पानेवाले रामसिंह सुनो, पहिले तूटी हुई तिथियों से गुणाये हुए चन्द्रमा के गतदिनों में इनका भाग दिया तो चहुवान के जन्म दिन से पहिले ये ११४५५१८००८३ तूटी हुई तिथियें हुई सो चन्द्रमा के गत दिनों में से इनको निकाल दिये तो ७२०६ ३३१५२९९९ बाकी रहे ॥ ३३ ॥ उस समय में सावन दिनों का यह समूह गया तब आबू पर्वत के ऊपर भूपति चहुवान प्रसिद्ध हुआ ॥ ३४ ॥ अब वार निकालने के लिये इस अहर्गण को सात से काटा (भाग दिया) तो बाकी ४ रहे जिससे बुधवार गत और वर्तमान वृहस्पति वार आया ॥ ३५ ॥ सा तका भाग देने से१०२९४७५९३२८५लब्धि हुए सो गयेहुए वारों का समूह

रविभुक्ति ऽहै कल्पबिच कोटिगुनित रद च्यारि४३२००००००० ॥
इनकरि ७२०६३३१५२९९९यह दिनगनगुन्यों
सो अब लेहु निहारि ॥ ३७ ॥

॥ षट्पदी ॥

कोटिगुनित बसु तर्क पंच सायक नव कृति दुव ॥
विषय अग्गि भू राम ईस गुन ३११३१३५२२०९५५६८००००००० यहै गुनित हुव ॥
अयुत गुनित सर बेद अष्टि नव हय गिरि तिथि
१५७७९१६८४५००००मित ॥
कुदिन कल्पके होत कियउ तिनकरि ३११३१३५२२०९५५६८०
००००००० यह भाजित ॥
फल तास भयो भगनादि रवि नव रस चउ चालीस नव ॥
कर अद्रि अंक भू १९७२९४०४६९मित गये,
भगन तत्थ चंडासि भव ॥ ३८ ॥

॥ दोहा

अयुत गुनित सर तान रस, बसु नव येद ४९८६४९५००००इतेक ॥
सेस रहे तिनकों गुनैं, बारह१२ तैं सबिबेक ॥ ३९ ॥
वाही१५७७९१६८४५००००भाजकतैं भजे, फल आयो नभ०तत्थ ॥

हुआ ॥ ३६ ॥ एक कल्प में सूर्य के भगण [बारह राशियों का भोग] ४३२००००००० होते हैं इनसे दिनों के समूह को गुणाये सो अब देखो ॥ ३७ ॥ इसका गुणन फल ३११३१३५२२०९५५६८००००००० हुआ और एक कल्प में पृथ्वी के १५७७९१६८४५०००० दिन होते हैं जिनका भाग दिया तो फल हुआ सो १९७२९४०४६९ चहुवान के जन्म से पहिले सूर्य के भगणादि (भगण, राशि, अंश, कला, विकला) हुए ॥३८॥ ऊपर भगण बताकर अब राशि आदि बताते हैं, भूमि के दिनों का भाग देकर प्रथम फल तो भगण लाये और बाकी ४९८६४९५०००० रहे जिनको विचार पूर्वक बारह से गुणा किये ॥ ३९ ॥ उन्हीं भूमि के दिनों का भाग दिया तो फल शून्य आया जिससे

मेष१ रासि यातैं मिल्यो,
सुहि५९८३७९४००००००खिल रहिय समत्थ ॥ ४० ॥
तीस३० गुनित ताकौं किय्यउ, तब हुव सुनहु समष्टि ॥
प्रयुत गुनित दुव बसु अनल,
कु पवन नव अत्यष्टि१७९५१३८२०००००० ॥ ४१ ॥
ए१५७७९१६४५००००इहिं भाजकतैं भजे, लब्ध लहे तँहँ रुद्र११॥
ए११ ही जानहु अंस यँहँ, सुगणक गणित समुद्र ॥ ४२ ॥
खिल सर दस चालीस चउ,
नव सर५९४४०१०५ए अयुतघ्न५९४४०१०५०००० ॥
सट्ठि६०गुनित३५६६४०६३००००००ए पुनि भजे,
भाजक१५७७९१६४५००००रक्खिउ पच्छ ॥ ४३ ॥
आकृति२२ आये लब्ध तब,ते२२ रविलिप्ता जानि ॥
लक्खगुनित सिवनवति नव,बेद अंक०४९९०११०००००खिलमानि४४
सट्ठि६०गुनित पुनि९४९९०११००००००ए किये,तब हुव गनित प्रपंच
प्रयुत गुनित खटरस गगन,चउ नव नव रस पंच५६९९४०६६००००००
वा१५७७९१६४५००००ही भाजकतैं भज्यो,
पुनि५६९९४०६६ ००००००यह अंककलाप ॥
आयो तब पैंतीस३५फल,सु३५रबिबिलिप्ता माप॥४६॥
कथित१९७२९४०४६९भगननभ०रासिसिव११,अंसकलाबाईस२२

मेष राशि हुई बाकी ५९८३७९४००००००रहे ॥४०॥ इन्को तीस से गुणा किये तो १७९५१३८२००००००सब हुए सो सुनो ॥ ४१ ॥ इनमें उन्ही भूमि के दिनों का भाग दिया तो११ लब्धि लिये सोही गणित रूपी समुद्र की श्रेष्ठ गणित करनेवाले अंश जानो ॥ ४२ ॥ बाकी५९४४०१०५००००रहे जिनको साठ से गुणाये तो ३५६६४०६३००००००हुए जिनमें फिर भूमि के दिनों को समीप रखकर भाग दिया ॥ ४३ ॥ तब २२ लब्धि हुए सो सूर्य की कलायें जानो बाकी ९४९९०११०००००रहे सो जानो ॥ ४४ ॥ इनको साठ से गुणा किया तो गणित की यह रचना हुई कि ५६९९४०६६००००००यह गुणन फल हुआ जिन अंकों के समूह को फिर वही भूमि के दिनों का भाग दिया तो फल ३५ आया सो सूर्य की विकला हुई॥४५॥४६॥ऊपर कहेहुए १९७२९४०४६९

अरु बिकला पैंतीस३५।०।११।२२।३५यह,इन मध्यम अवनीस ॥४७॥
कलिका बावन५२बिकलिका,सत्तावन५७इहिं मान ॥
कढ्यो अब्द संस्कार सो, भो ऊन मध्यम भान ॥ ४८ ॥
तब आकास ० रु दस १० रु मुन–
तीस २९ तथा अठतीस ३८।०।१०।२९।३८॥
भानु अब्द संस्कृत भयो, राश्यादिक पुहवीस ॥ ४९ ॥
भास्करको मंदोच्च अब, जानहु भास्कर उक्त ॥
दुव २ सत्रह १७ छप्पन ५६ यहै २।१७।५६,
राश्यादिक क्रम जुक्त ॥ ५० ॥
काढ्यो२।१७।५६या मंदोच्चतैं०।१०।२९।३८।, यह संस्कृत दिवसेंद्र ॥
दुव हय ७ उत्कृति २६ आकृती२२,
आयो तब २।७।२६।२२ यह केंद्र ॥ ५१ ॥
गगनसिव११०रु भूवेद।४१।अरु, बान्हिवेद४३इहिं मान११०।४१।४३
ज्यका भई याकेंद्रकी, अब फल सुनहु सुजान ॥ ५२ ॥
द्वि२रु ख०रु ...तालीस४५यह२।०।४५,इहाँ मंदफल आइ ॥
केंद्र अजादिक यों दयो, यह२।०।४५अंसादि मिलाय ॥५३॥
स्फुटरबि हुव रास्यादि तब, नभ०रु बारह१२रु तीस३०॥
रु विकृति२३यह०।१२।३०।२३चंडासिके उद्भवदिन दिनईस ।५४।

भगण और हे भूपति! राशि० अंश ११ कला २२ विकला ३५ यह मध्य म सूर्य हुआ ॥ ४७ ॥ अब्दबीजसंस्कार कला ५२ विकला ५७ हुआ सो मध्य म सूर्य में से निकाला सो अब्दबीज दिया हुआ मध्यम सूर्य हुआ, तब हे भू पति राशि० अंश १० कला २९ विकला ३८ हुए ॥ ४८॥ ४९ ॥ अब भास्करा चार्य का कहाहुआ सूर्य का मंदोच्च राशि२अंश १७ कला ५६ युक्त जानो ॥ ५०॥ इस मंदोच्च से यह संस्कार किया हुआ सूर्य निकाला तो राशि २ अंश ७ कला २६ विकला २२ मन्दकेंद्र आया ॥ ५१ ॥ इस मन्दकेंद्र की अंगुल ११० व्यंगुल ४१ प्रतिव्यंगुल ४३ ज्या हुई जिसका हे सुजान रामसिंह फल सुनो ॥ ५२ ॥ अब यहां पर मन्दफल की अंश २कला ० विकला४५ आई सो मेषा दिक छः राशि में केंद्र है इससे इनमें जोडदिये ॥५३॥ तब चहुवान के जन्म के दिन का स्पष्टसूर्य राशि ० अंश १२ कला ३० विकला २३ हुआ यह जन्म

अठ्ठावन ५८ अरु अठ्ठ८ यह ५८ । ८, तँहँ कलादि रवि चाल ॥
प्रातहि के सब ग्रह गिनहु, दुपहरके न नृपाल ॥ ५५ ॥
लक्खगुनितसुरपंचमुनि, हयसर५७७५३३०००००इहिंपरिमान॥
कल्प माँहिं ससिके भगन, होवत नृप चहुवान ॥ ५६ ॥

पट्पदी

तिनकरि ७२०६३३१५२०९९यह दिन निकर
　　गुन्यौं तब लक्ख गुनित हय ।
रस सक्करि मुनि अंक गगन पंचक गिरि रस द्वय ॥
वेद अंक धृति अष्टि वेद ४१६१८९४२६७५०९७१४६७००००००
　　सब अंक इते हुव ।
१५७७६१६४५००००कुदिनन करि दिय भाग
　　तबहि रजनीस लह्यो धुव ॥
सर नवति वेद बसु अहि विसिख,
हयगुन उत्कृति२६३७५८८४९०५ ए भगन ॥
इक । १ । रासि अंस तेरह । १३ । कला,
चोतीस । ३४ । रु विकला कु । १ । धन ॥ ५७ ॥

दोहा

ससधर २६३७५८८४९०५ । १ । १३ । ३४। १ यह मध्यम भयो,
　　अब सु बीज संस्कार ॥
एक१रु वसुदुव२८रुतिथि१५यह१।२८।१५,घटयोलवादिसुढार।५८।

का सूर्य है ॥ ५४ ॥ यहां सूर्य की गति कला ५८ विकला ८ सो सब प्रभात के ही गिनो हे राजा ! ये दुपहर के नहीं हैं। ५५ ॥ हे चहुवान राजा रामसिंह ! एक कल्प में चन्द्रमा के५७७५३३००००० भगण होते हैं ॥ ५६ ॥ उनसे यह दिनों का समूह गुणाया तो४१६१८९४२६७५०९७१४६७०००००० हुए जिन को भूमि के दिनों का भाग दिया तो २६३७५८८४९०५ चन्द्रमा के ये भगण निश्चय हुए और राशि १ अंश १३ कला ३४ विकला १ मिलाई ॥ ५७ ॥ यह मध्यमचंद्रमा हुआ. अब अन्द्यबीजसंस्कार अंश१ कला २८ विकला १५ हुए सो मध्यमचंद्रमा में श्रेष्ठ रीति से घटाये ॥ ५८ ॥ तब राशि १ अंश १२

तब इक१ रासि रु रवि१२लव रु, सर५कला रु रस च्यारि४६॥
बिकला१।१२।५।४६मित यह अब्दफल, संस्कृत चंद्र निहारि ॥५९॥
गज सर गज सर गगन धृति, पन्नग वेद४८१८०५८५८प्रमान ॥
चंद्र तुंगके कल्प विच, होत भगन चहुवान ॥ ६० ॥

पट्पदी ॥

तिन करि७२०६३३१५७९९९यह दिननिकर गनित तब हुव ढुव सकरि
अष्ट अष्टि आकृति भुजंग मुनि चउ कृत गुन अरि ॥
द्विसर वेद अत्यष्टि, पंच गुन३५१७४५२६३४४७८२२१६८१४२
यह गन अंकन ।
कुदिन१५७७९१६४५०००००भक्त किय तत्थ फल सु सुनिये धरनीधन
रविअंकअष्टिनवदस्रकर,नयन२२२९१६९१२भगनहय७रासिजँहँ ॥
वाईस२२अंस चालिस४० मित कला इंद्र१४विकलाहु तँहँ ॥ ६१ ॥

दोहा

मध्यम७।२२।४०।१४यह ससिउच्च हुव, तास बीजसंस्कार ॥
लिप्तादिक पैंतीस३५धृति१८,ऊन हुव उच्च मझार ॥६२॥
तव सप्त७रु वाईस२२पुनि, वेद४रु छप्पन५६मान ॥
हायन संस्कृत उच्च७।२२।४।५६ हुव, अब फुटचंद्र विधान ॥ ६३ ॥
काढ्यो७।२२।४।५६इहिं निज उच्चतैं, हायन संस्कृत१।१२।५।४६भेद ॥
तवरास्यादिछ६अंक९,गुन-सठि५९दस१०यह६।९।५९।१०ससिकेंद्र।

कला ५ विकला४६ अब्दबीज से संस्कार दिया हुआ चंद्रमा हुआ सो देखो ॥ ५९ ॥ हे चहुवाण! एक कल्प में चंद्रोच्च के ४८१८०५८५८गिनती से भगण होते हैं ॥ ६० ॥ इन से यह दिनों का समूह गुणाया तो ३५१७४५२६३४४७८२२१६८१४२ हुए जिनको भूमि के दिनों का भाग दिया तो हे धरणीधन (भूमि ही है धन जिसके) भगण २२२९१६९१२राशि ७ अंश २२ कला ४० विकला १४ चंद्रोच्च हुआ ॥ ६१ ॥ यह मध्यमचंद्रोच्च हुआ जिसमें अब्दबीज संस्कार कला ३५ विकला१८ निकालदिया ॥६२॥ तब राशि७अंश२२कला ४ विकला५६ अब्दबीजसंस्कार दियाहुआ चंद्रोच्च हुआ. अब चंद्रमा को स्पष्टक रने की रीति कहते हैं॥६३॥ इस अब्दबीजसंस्कार दियेहुए चंद्रोच्च से अब्द बीज दियाहुआ चंद्रमा निकाला तब राशि१ अंश१२कला५९विकला १० चंद्र

नभ० बावन५२बावन५२यहै०।५२। ५२,इहाँ मंदफल आइ ॥
केंद्र तुलादिक जानि यह०।५२।५२,
दियससि१।१२।५। ४६ लवन घटाइ ॥ ६५ ॥
तव मही१ रु ईस११ रु रबि१२ रु,चोवन५४ इहिं परिमान ॥
चाहुवानजनि दिन लगत, फुट१।११।१२।५४ यह अमृतनिधान॥६६॥
काढ्योरबि०।१२।३०।२४ससि१।११।१२।५४तैंरहिय,तबखिलयहरजनीस
गगन० रु अट्ठाईस २८ अरु,बियालीस४२ इकतीस३१॥६७॥
अर्क रहित ० । २८ । ४२ । ३१ । यह ससि भयो,
सो लवादि २८ । ४२ । ३१ । यह जानि ॥
ए२८लवबारह १२ तैं भजे, तँहँ दुव २ लब्ध प्रमानि ॥६८॥
यातैं गततिथि२ दोजि तब, तीज३ रही यँहँ पेस ॥
वेद४रु लोचन कृत४२रु भू, गुन३१यह४।४२।३१भाजित सेस।६९।
सोहि तीज३को गत गिनहु, तिहिं भाजक१२सन खोइ ॥
मुनि७सत्रह१७गुनतीस२९यह७।१७।२९,भोग्य लह्यो दृढ होइ।७०।
अब४।४२।३१सु तीज३को गत कह्यो, ताकी बिकला कीन ॥
तव भू सर नव अष्टि१६९५१ए, उपजी गनित अधीन ॥ ७१ ॥
फुट ससि गति८५८।५०तैं अर्कगति५८।८,दीनी अब सु निकारि ॥
तब ख ख अष्ट८००रु नयन कृत ४२,खिल कलिकादि विचारि

मा का मंदकेंद्र हुआ ॥६४॥ यहां मंदफल अंश ० कला५२ विकला ५५ आया सो तुलादि जानकर इसमें से निकाल दिया ॥६५॥ तब चहुवाण का जन्म दिन लगने पर राशि१ अंश११कला१२विकला५४यह स्पष्ट चंद्रमा हुआ ॥६६॥ अब स्पष्ट चंद्रमा से स्पष्ट सूर्य को निकाला तो वाकी चंद्रमा राशि ० अंश२८ कला४२विकला३१रहा ॥६७॥ सूर्य रहित यह चंद्रमा हुआ उसके अंशों में बारह का भाग दिया तो लब्धि२आये ॥६८॥ इस कारण से गत तिथि दोज हुई और आगे तीज रही जिसमें अंश४कला४२विकला३१ बारह का भाग देने से बाकी रही ॥६९॥ ये अंशादिक तीज के गयेहुए गिनो. उनको भाजक में बारह से बाकी निकाला तो शेष अंश७कला१७विकला२९हुए सो निश्चय करके यह भोग्य रहा ॥७०॥ अब तीज के गयेहुए अंशादिकों की विकला की तो गणित के आधार से१६९५१हुई ॥७१॥ स्पष्ट चंद्रमा की गति से सूर्य की स्पष्ट गति

याकी पुनि बिकला करी, कर कृत नभ बसु बेद ४८०४२ ॥
पूर्व कथित १६६५१ किय भाज्य अरु, गति अंतरमय४८०४२छेद।७३
गगन मिल्यो यहँ भागफल, यातैं इह गुरु४ बार ॥
सट्ठि ६० गुनित खिल १६९५१ किय ख सर,
ख मुनि कु ख ससि१०१७०६० सुढार ॥ ७४ ॥
या ४८०४२ ही हरसन भजत फल, प्रकृति२१ घटी गत आइ ॥
खिल बसु सत्रह अट्ठ८१७८ यह, पुनि दिय सट्ठि६० गुनाइ ।७५।
जब ख बसु रस ख तान४९०६८०हुव,इहिं४८०४२ हरसन दिय भाग
गत पल दस१०तब फल लह्यो,रक्खि गनित अनुराग ॥ ७६ ॥
अब जु७।१७।२९तीज३को भोग्य है, ताकी विकला कौन ॥
तब नव संकृति तर्क दुव २६२४९,यह हुव गनित अधीन ॥ ७७ ॥
गति अंतरमय हर४८०४२यहहि,ताकरि लीनौं भाग॥
फल नभ०यातैं बार सु४हि,तिथि३वृद्धि न प्रिय त्याग ॥ ७८ ॥
सट्ठि६०गुनित खिल२६२४९तब ख कृत,नव चउ मुनि तिथि१५७४९४०एह
स्त्र हर४८०४२भज्यो तब फल रद३२सु,भोग्य घटी मित लेह ॥७९॥

५८।८ निकाल दी तो बाकी कला ८०० विकला ४२ जानो ॥७२।
इसकी फिर विकला करी तो ४८०४२ हुए सो पहिले कहीहुई विकला तो भाज्य (जिस में भाग दियाजावे) हुआ और गति के अंतरमयी विकलायें भाजक (जिससे भाग दियाजावे) हुई ॥ ७३ ॥ इसकारण से गुरु वार के दिन निश्चै शून्य फल आया, बाकी के अंकों को सुंदर रीति से ६० से गुणाया तो १०१७०६० हुए ॥७४॥ इसी भाजक से भाग दिया तो गत घटी २१ आई बाकी ८१७८ रहे जिनको फिर ६० से गुणाये ॥ ७५ ॥ तब ४९०६८० हुए. फिर उसी भाजक का भाग दिया तो पल १० गत आये सो गणित में प्रीति रख कर फल रखलिया अर्थात् बुधवार में इक्कीस घड़ी दस पल तीज सूर्योदय समय में गई अब जो तीज का भोग्य अंश ७ कला १७ विकला२९ इन सब की विकला की तो२६२४९ गणित के आधार से हुए ॥ ७७ ॥ इस में उसी गति के अंतर का भाग दिया तो फल ० आया इसकारण से वही बृहस्पति वार आया, क्योंकि तिथि की बृद्धि नहीं हुई इसकारण से वार भी दूसरा नही पलटा ॥ ७८ ॥ बाकी के अंकों को ६०से गुणाया तो १५७४९४० हुए जिनमें उसी भाजक का भाग दिया तो फल ३२ भोग्य घड़ी मिली ॥ ७९ ॥

खिल रस नव सर मुनि गुन३७५९६सु,सट्ठि६०गुनित पुनि जानि
तब नभरस मुनि सर बिखय,आकृति२२५५७६०यह हुव आनि ॥८०॥
वा४८०४२ही भाजकतैं भाजिय,तँहँ फल सैंतालीस४७ ॥
तेहि तीज३के भोग्यफल, उहाँ गिनहु अनतीस ॥ ८१ ॥
भुक्त२१।१०भोग्य३२।४७घटिका रु पल,जोरि किये एकत्थ ।
तँहँ सब तिथि त्रेपन५३घटी, सत्तावन५७पल सत्थ ॥ ८२ ॥

हरिगीतम् ॥

फुटचंद्र१।११।१२।५४की कलिका करी कर सप्तसंकृति२४७२तेभई,
तिनके तरैं बिकला अमिश्रित भिन्न चोवन५४ हू ठई ।
खखअष्ठ८००तैं कलिका भजी त्रय३रूप लब्धि तहाँ गिनी,
नच्छत्त गत तिंहिं कृत्तिका३हुव बर्त्तमान सु रोहिनी४ ॥८३॥
खिल नैन हय७२अरु बेद सर५४सुहि रोहिनी गत जानिये,
हर८००सुद्ध उत्कृति हय७२६रु रस६यन तास भोग्य प्रमानिये
गत७२।५४की करी बिकला४३७४दई पुनि सट्ठि६०तैं तिगुनाइकैं,
नभ बेद संकृति तर्क दुव२६२४४०यह गुनन फल हुव आइकैं ॥८४॥

बाकी ३७५९६ रहे जिनको फिर ६० से गुणाये सो २२५५७६० हुए ॥ ८० ॥ फिर उसी भाजक का भाग दिया तो फल४७ मिला सो पल हुए सो हे राजा वही तीज का भोग्य फल गिनो ॥ ८१ ॥ भोगी हुई और भोगनेवाली घड़ी और पल को जोड़ कर इकट्ठा किया तब घड़ी ५३पल ५७तीज का कुल भोग आया ॥ ८२ ॥ स्पष्ट चंद्रमा राशि १ अंश ११ कला १२ विकला ५४ हुए जिनकी कला करी तो २४७२ हुई जिनके नीचे विकला ५४ जुदी रक्खी और कलाओं को ८०० का भागदिया तो ३ लब्धि हुआ जिससे कृत्तिका गत और वर्तमान रोहिणी नक्षत्र हुआ ॥ ८३ ॥ बाकी कला ७२ विकला ५४ रही सो रोहिणी का भुक्तकाल जानो उसको आठ सौ में से घटाया तो बाकी कला ७२७ विकला यह रोहिणी का भोग्यकाल मानो. 'मूल में उत्कृति हय' यह पाठ है इससे कला७२६ आती हैं सो अशुद्ध मालूम होता है क्योंकि आठ सौ में से बहत्तर निकाले तो बाकी सात सौ अठाईस रहे जिनमें से विकला ५४ निकालने के लिये एक कमती किया तो ७२७ ही रहते हैं, गतकला ७२ विकला ५४ की विकला करी तो ४३७४हुई जि

तिँहिँ भाज्य रक्खि रु चंद्रकी फुटभुक्ति८५८।५०की बिकला करी,
तब तीस तिथि सर५१५३०ए भई हरभाज्यकी२६२४४०इन तैँ५१५३०हरी ॥-
तब लब्ध आयउ पंच५ ते घटिका गई यँहँ जानिये,
भन अंक मुनि कृत सेस जो४७९०पुनि सट्ठि६०आहत आनिये ।८५।

षट्पदी

नभ चालीस तुरंग अट्ठ कर२८७४००एह गुनित हुव ।
निज हर५१५३०तैँ पुनि भजत तर्क६मित लब्ध लह्यो ध्रुव ॥
ते उडुके पल भुक्त भे ग्य७२६।६बिकला४३५६कीनी अब
सट्ठि६०गुनित तब साठि नव गुन कु रसकर२६१३९६०हुव सब॥
भाजक५१५३०स्वकीय करि ते२६१३९६०भजत फल पचास-५०घटिका अगत ॥
खिल३७४६०सट्ठि६०गुनित२२४७६०० पुनिहर५१५३०भजत
त्रि कृत४३फल सु पल४३भोग्यमत ॥ ८० ॥

दोहा

भुक्त५।६भोग्य५०।४३घटिका रु पल,जो रैं विधि नच्छत्र॥

नको साठ से गुणाई तो २६२४४०हुई ॥ ८४ ॥ इनको भाज्य रखकर चन्द्रमा की स्पष्ट गति कला ८५८ विकला ५० है जिनकी विकला करी तब ५१५३०हु ई सो उस भाज्य का हर (भाजक) हुआ जिससे भागदिया तब लब्धि ५ आये सो रोहिणी की सूर्योदय से पहिले गत घडियां जानो बाकी ४७९० रहे जि नको फिर ६० से गुणाये ॥ ८५ ॥ तो २८७४०० हुये जिनमें उसी भाजक ५१ ५३०का भागदिया तो लब्धि ६ पल रोहिणी नक्षत्र के भुक्त आये 'यहां मूल में तर्क शब्द छै का बाचक है सो अशुद्ध मालूम होता है' वह भोग्य की वि कला करी ४३७६हुई यहां भी उपरोक्त एक कला के कमती होजाने के का रण विकला में ६० का फरक होगया है अर्थात् कला ७ और विकला ४४१६ चाहिये इनको फिर ६०से गुणाया तब २६१३९६० हुये जिनमें उसी भाजक का भाग देने से रोहिणी नक्षत्र के भोग्यकी ५० घडी आई बाकी ३७४६० रहे जिनको साठ से गुणाये तो २२४७६०० हुए जिनमें उसी हर (भाजक) का भाग दिया तो फल ४३ पल भोग्य आया ॥ ८६ ॥ रोहिणी नक्षत्र के

पंचावन५५घटिका रु पल, तान४९सकल हुव तत्र ॥ ८७ ॥

पटपदी

फुटरबि०।१२।३०।२३ ससि१।११।१२।५४ अब जोरि,
कला कीनी गुन कर रद३२२३।१७॥
भजी अष्ठ सय८००सौंहि बेद४तँहँ लब्ध लह्यो हद॥
तिंहिं गत युजि४सौभाग्य४वर्त्तमान सु तँहँ सोभन ।
खिल बिकृति२३रु अत्यष्टि१७सोहि सोभन गत सूधन ॥
हर८००तैं निकासि लिय भोग्यतँहँछमुनिमुनि७७६रुकृतवेद४४हुव ।
अब योगभुक्त२३।१७विकला१३।६७करिय,
सठि६० गुनित तिन्ह सुनहु ध्रुव॥ ८८ ॥

दोहा

नख अहि गुन बसु८३८२०ए भई,
भाज्य र रबि५८।८ससि८५८।५०भुक्ति ।
जोरि धृति खसर सर५५०१८करी,बिकला भाजक जुक्ति॥८९॥
एक१मिल्यो यँहँ लब्ध सो, गत घटिका तँहँ जानि ।
सेस२८८०२सठि६०हत नख कु बसु,

भुक्त और भोग्य की घडी और पल जोडने से घडी ५५ पल४९ रोहिणीका सब भोग्य हुआ ॥ ८७ ॥ अब योग के घडी पल लाते हैं, स्पष्ट सूर्य राशि० अंश १२ कला ३० विकला २३ और स्पष्ट चन्द्रमा राशि १ अंश ११ कला१२ विकला५४ है इन दोनों के राशि आदि जोड कर कलायें करी तो कला३२२३ विकला १७ हुई इन कलाओं को आठ सौ का भाग दिया तो लब्धि ४ आया उससे सौभाग्य गत और वर्तमान शोभन योग हुआ बाकी कला२३ विकला १७ सो हे भूधन रामसिंह शोभन योग का गत काल हुआ जिनको ८०० में से निकालने से बाकी कला ७७६ विकला ४४ हुये यहां भी विकला ४३चाहिये अब योग की भुक्तकला की विकला करके६०से गुणाया सो निश्चै सुनो ॥ ८८ ॥ ८३८२० हुए सो भाज्य (जिसमें भाग दिया जावे) हुआ अब सूर्य की गति कला ५८ विकला ८ और चन्द्रमा की गति कला ८५८ विकला ५० है जिन दोनों को जोड कर विकला करी तो ५५०१८ भाजक (जिसका भाग दियाजावे) की विकला हुई ॥ ८९ ॥ भाज्य में भाजक का भाग

कर मुनि भू१७२८१२० मित ठानि ॥ ९० ॥
वा५५०१८ही भाजक्क तैं भजत, लब्ध लह्यो इकतीस३१॥
ए३१ सोभन के भुक्तफल, मानहु सुमति महीस ॥ ९१ ॥
यौं ही सोभन भोग्य७७६।४३की,बिकला४६६०३सट्ठि६०गुनाइ॥
ख धृति छ नव उडु२७९६१८०भाज्य किय,
निज हर५५०१८यह अध लाइ ॥ ९२ ॥
भजि लिय फल पंचास५० तँहँ, भोग्य घटी ते जानि ॥
सेस४५२८०सट्ठि६०गुनखनभवसु,अष्टिभ२७१६८००एहुवआनि ९३।
वा५५०१८हीहर के भाग सन,यँहँ फल हुव गुनचास४९ ॥
ते सोभन के भोग्य फल४९,जानहु गनित बिलास॥ ९४ ॥
भुक्त१।३१भोग्य५०।४९ घटिका रु पल,दोनैं सकल मिलाइ
सब सोभन बावन५२घटी, अरु २०नखपल तब आइ॥ ९५॥
अट्ठबीस२८लव किय प्रथम, अर्क रहित ससिकेर ॥
पुनि तिनकौं खट६सौंभजे, बबादिकन की बेर ॥ ९६ ॥
लब्ध लहे तँहँ च्यारि४ते, एक१ऊन हुव तीन३॥
तातैं गत तीजो३ करन, कौलव३गिनहु प्रबीन ॥ ९७ ॥

देने से लब्धि १ हुआ सो गत घडी जानो बाकी २८८०२रहे जिनको ६० से गुणाये तो१७२८१२० हुए ॥ ९० ॥ फिर वही भाजक का भाग देने से ३१ मिले सो हे सुमति राजा शोभन योग के भुक्त पल जानो ॥९१॥ इसीप्रकार शोभन योग की भोग्य कला की विकला करके ६० से गुणाई सो २७९६१८० भाज्य हुआ जिसमें उसी भाजक को नीचे रख कर भाग देकर फल ५० लिया सो भोग्य घडी जानो बाकी ४५२८० रहे जिनको ६० से गुणाये तो२७१६८००हुए ॥ ९२-९३ ॥ फिर उसी हर (भाजक) का भाग देने से फल४९मिला सो शोभन योग के भोग्य पल गणित के विलास में जानो।९४। भुक्त और भोग्य की घड़ी पल को मिलाई तो शोभन योग का सब भोग्य घडी५२पल २० आया ॥ ९५ ॥ पहिले सूर्य रहित चन्द्रमा किया था उसके अंश २८ हुए। जिनको बव आदि करण लाने के लिये फिर ६ का भाग दिया ॥ ९६ ॥ तो लब्धि४ आये जिनमें से १ निकाल दिया तो बाकी तीन रहे उनसे हे प्रवीण रामसिंह तीसरा कौलव करण गत जानो ॥ ९७ ॥ उसी दिन

वर्तमान तैतिल४रह्यो, वाही दिन के प्रात ॥
तादिन के अध्याह्न मैं,हुव चुहान इम ख्यात ॥ ९८॥
इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशौ चरडासिजननतिनिसूर्येन्दुपञ्चाङ्गस्फुटीकरणं नवमो९मयूखः॥ ९ ॥
आदितश्चतुस्त्रिंशः ॥ ३४॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा ॥

षट्पदी

आकृति सर बसुपच्छ नाग रस नव दव कर२२९६८२८५२२यह
कल्पमाँहिकुजभगनगुन्योंताकरिदिनगन७२०६३३१५२९९९वह
तव बसु मुनि चउ तुरग त्रि नभ गुन नव दर्वीकर ।
रस सत्तरिनव अद्रि सप्त सत्तरि मृगांक सर ॥
सरअष्टि१६५५१७०७७९७०६८९३०३७४७८भाज्य हुव रासि यह,
भू दिन१५७७९१६४५००००करि किय तस भजन ॥
तहबसुखसप्तनवबानवअहिकृतदस१०४८९५९७०८गतकुजभगन

रोला

गज तुरंग कृत अचल अनल चउसठि अंक कृत ।
खट रस दस१०६६४९६४३७४७८।यह खिल सु अर्क१२गुन-
करि वहोरि हृत ॥

के प्रभात में वर्तमान तैतिल करण रहा उस दिन के मध्यान्ह समय में इस प्रकार चहुवाण प्रसिद्ध हुआ ॥ ९८ ॥

इति श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के दूसरे राशि में चहुवाण के जन्म दिन के सूर्य चन्द्रमा और पञ्चाङ्ग स्पष्ट करने का नवमा मयूख समाप्त हुआ॥९॥और आदि से चौतीस मयूख हुए ॥ ३४ ॥

अव मंगल आदि पाप ग्रहों को स्पष्ट करने के लिये प्रथम मध्यम ग्रह बनाते हैं ॥ ब्रह्मा के एक कल्प में२२९६८२८५२२मंगल के भगण होते हैं जिससे अहर्गण (दिनों के समूह) को गुणाया तो१६५५१७०७७९७०६८९३०३७४७४७८ भाज्य हुआ जिसमें भूमि के दिनों का भाग दिया तो १०४८९५९७०८मंगल के गत भगण आये ॥१॥ बाकी१०६६४९६४३७४७८रहे जिनको १२ से गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया तो फल ८ गत राशि हुई फिर बाकी

फल बसु८सुहि गत रासि खिलहिँ पुनि तीस३० गुनित करि ॥
लब्ध तीन३गत अस लहे त्योँही कुदिनन हरि ॥२॥
सट्ठि६०गुनित करि सेस बहुरिलिय भाग कथित मत ।
लिय फल तँहँ एकोनबीस१६आई कलाहु गत ॥
योँही बारह१२मान लहिय बिकला अतीत जँहँ ।
मध्यम कुज इम बसु रु गुन रु नव भू रु तपन८३१९१२तँहँ ॥ ३ ॥
कृत बसु नव गज नंद अंक रस गुन नव सत्रह१७९३६९९८९८४।
बुध चलोच्चके भगन इते होवत बिधिके अह॥
तिन करि दिनगन ७२०६३३१५२९९९ गुनित कुदिन भजि लिय भचक्र धुव ।
सर मुनि उडु इक अठ चंद्र अतिधृति बसु ८१९११८१२७७५ए हुव ॥४॥
त्योँ इक१रासि रु अर्क१२अंस भू बेद ४१कला सह
बिकला मुनि गुन३७विहित रासि मुख बुध चलोच्च १।१२।४१।३७ यह
सर सर कृत रस पच्छ नयन कृत सर गुन ३६४२२६४५५ सम्मित
कल्पमाँहिँ गुरु भगन होत सुनिये प्रभु अवहित ॥ ५ ॥
तिनकरि दिनगन गुनि रु लये भगनादिन १५७७९१६४५००००सन
तँहँ जिन अतिधृति बेद राम रस रस कु१६६३४१९२४एभगन

के अंकों को३०से गुणाकर भूमि के दिनों का भागदिया तो लब्धि३गत अंश लिये ॥ २ ॥ बाकीके अंकों को ६० से गुणाकर कहीहुई रीति से पृथ्वी के दिनों का भाग दिया तो फल १६ आया सो गत कला हुई बाकी के अंकों को फिर ६० से गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया तो १२ आया सो विकला गत हुई इस प्रकार मध्यम मंगल राशि ८ अंश ३ कला १९ विकला १२ हुई ॥ ३ ॥ ब्रह्मा के एक दिन में बुध के चलोच्च (शीघ्रउच्च) के १७९३६९९८९८४ भगण होते हैं जिससे दिनों के समूह को गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया तो बुध के चलोच्च के ८१९१८१२७७५ भगण बीते ॥ ४ ॥ उसी प्रकार बाकी के अंकों को १२से गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया तो राशि १ अंश १२ कला४१ विकला ३७ हुई सो बुध का चलोच्च हुआ ॥ ब्रह्मा के एक कल्प में बृहस्पति के ३६४२२६४५५भगण होते हैं सो हेस्वामि रामसिंह सावधान होकर सुनो ॥ ५ ॥ इस भगण से त

त्यौं भगन ३ रासि रु अष्टि१६ अंस मुनि बेद४७कला पुनि
सर५विकला यह३।१६।४७।५जीव भयो राश्यादि लेहु सुनि ॥६॥
दुव नव कृत नव अठ राम आकृति सत्तरि७०२२३८९४९२ सह
कवि चलोच्चके भगन इते बित्तत बिधिके अह ॥
तिनकरि गुनि दिन संघ७२०६३३१५२९९९कल्प कुदिनन१५७७
९१६४५००००बिभक्त उन ।
तँहँ भचक्र भू बेद पंच नव सिव हय नख गुन३२०७११९५४१॥७॥
रासि दोइ २लव अष्टि१६कला नव कृत४९बिकला नव९
आदिक सुक्र चलोच्च भूप यह २।१६।४९।९सिद्ध गनित भव ॥
बसु नव कर मुनि तर्क पंच रस मनु १४६५६७२९८सनि पर्यय
इते कल्पबिच होत गुन्यौं तिनकरि पुनि दिनचय ॥ ८ ॥
कुदिनन सन लिय भाग पूर्व क्रम करि समस्त तस
तँहँ भचक्र सर अष्टि अद्रि गुन अंक तर्करस ६६९३७१६५॥
दोइ २ रासि सिव११ अंस कला कृतकृत४४विकलाकृत४
आदिक २।११।४४।४यह रबि पुत्र भयो तिँहिं दिन क्रम उद्धृत॥९॥

दोहा

गज रस संकर चंद गुन नयन बिकृति२३२३११११६८ परिमान ॥
भगन बिलोमग राहुके बित्तत कल्प बिधान ॥ १० ॥

दिनों के समूह को गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया तो लब्धि भगण १६६३४१९२४और राशि ३ अंश १६ कला ४७ विकला ५ यह बृहस्पति मध्यम हुआ सो सुनलो ॥६॥ ब्रह्मा के दिन में शुक्र के चलोच्च के७२२३८९४९२ भगण होते हैं जिससे दिनों के समूह को गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया तो शुक्र के चलोच्च (शीघ्रउच्च) का३२०७११९५४१ गत भगण आया ॥ ७ ॥ और राशि २ अंश १६ कला ४९ विकला ९ हुई सो हे राजा यह शुक्र का चलोच्च गणित से सिद्ध हुआ॥ ब्रह्मा के एक कल्प में शनैश्चर के१४६५६७२९८ भगण होते हैं, जिससे फिर दिनों के समूह को गुणाया ॥ ८ ॥ जिसमें भूमि के दिनों का भाग देकर प्रथम कहीहुई रीति से फल लिया तो भगण ६६९३७१६५ राशि २ अंश ११ कला ४४ विकला ४ उस दिन मध्यम शनैश्चर हुआ सो क्रम से निकाला ॥९॥ ब्रह्मा के एक दिन में राहु के

तिनकरि गुनि दिनगन लये,कुदिनन भाग लगाइ ॥
तँहँ नख गुन रस नव ख रस,
दस१०६०९६३२०ए भवलय आइ ॥ ११ ॥
रासि तर्क६लव अष्टि१६गत, कलिका तिथि१५परिमान ॥
गुनसठि५९विकला राहु६।१६।१५।५९।यह,तादिनको चहुवान॥१२॥
केतु इतर अवयव यहहि,दूजी२ठाँ छ६ सवाग ॥
तातैंख०रुअष्टि१६रुतिथि१५रु,नवसर५९यह०।१६।१५।५९।तसकाय
रवि ससिके ससि उच्चके, कहे भिन्न संस्कार॥
तदपि सबन सम्मलि इहाँ, अक्खौं संभरवार ॥ १४ ॥

षट्पदी

रविमध्यम ख०रु शिव११रु पच्छ नयन२२रुसर गुन३५मित।
मध्यमगति ताकी कलादि नव सर५९रु अष्ठ८इत ॥
ससिकु१रु विम्व१३रु बेद गुन३४रु ससधर१यह जानहु ।
ख नव मुनि७९०रु पैंतीस३५भुक्ति ताकी पहिचानहु ॥
ससिउच्च हय७रु आकृति२२बहुरि नभ बेद४०रु मनु१४मानधर
गति तास तर्क६अरु भूमि कृत४१जानहु यह बसुधेसबर ॥१५॥
मंगल अष्ठ८रु गुन३रु अंक भूमि१९रु रबि१२आदिक ।

२३२३१११६८ विलोम भगण होते हैं ॥ १० ॥ इनसे अहगण को गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया तो १०६०९६३२० ये भगण आये ॥ ११ ॥ राशि अंश १६ कला १५ विकला ५९ मध्यम राहु हुआ दूसरा केतु जिसके अंश, कला, विकला तो ये ही हैं और राशि में ६ जोडे तो राशि ० अंश १६ कला १५ विकला ५९ मध्यम केतु हुआ सो उसी (राहु) का शरीर है ॥ १२ ॥ १३ ॥ सूर्य चन्द्र और चन्द्रोच्च के संस्कार जुदे कहे तो भी हे चहुवान रामसिंह यहां पर सब के सामिल कहता हूं ॥१४॥ राशि० अंश ११ कला २२ विकला ३५ मध्यम सूर्य है और इसकी मध्यम गति कला ५९ विकला ८ है राशि १ अंश १३ कला ३४ विकला १ मध्यम चन्द्रमा है और इसकी मध्यम गति कला ७९० विकला ३५ जानो राशि ७ अंश २२ कला ४० विकला १४ चन्द्रोच्च हुआ और हे श्रेष्ठ राजा इसकी गति कला ६ विकला ४१ जानो ॥१५॥ राशि ८ अंश ३ कला १९ विकला १२ मध्यम

तस मध्यमगति एक गुन३१रु उत्कृति२६कलिकादिक ॥
बुधचलोच्च कु१रु रवि१२रु भूमि बेद४१रु मुनि गुन३७पर ।
रस धृति१८६अरु चोईस२४मुक्ति ताकी नृपसंभर ॥
गुरु गुन३रु अष्टि१६पुनि मुनि कृत४७रु पंच५रु गति बान५रु गगन०
कविकोचलोच्चपच्छ२रुरसकु१६पुनितान४९रुनव९धरनिधन ॥१६॥

दोहा

कविचलोच्च इम मध्यगति, मुनि राम३७रु नभ०तास ॥
सनि दुव२रु शिव११रुकृतकृत४४रु,कृत४गतिहग२आकास०॥१७॥
राहु रस६रु अष्टि१६रु तिथि १५रु,अंक बान५९मित जानि॥
ताकी राम३रु ईस११यह, मध्यमगति पहिचानि ॥ १८ ॥

चशडासिजन्मार्हमध्यमग्रहचक्रमिदम् ॥									
सूर्यः	चन्द्रः	चन्द्र मन्दोच्चम्	भौमः	ज्ञचलोच्चम्	गुरुः	कविचलोच्चम्	शनिः	राहुः	केतुः
०	१	७	८	१	३	२	२	६	०
११	१३	२२	३	१२	१६	१६	११	१६	१६
२२	३४	४०	१९	४१	४७	४९	४४	१५	१५
३५	१	१४	१२	३७	५	६	४	५९	५९
५९	१९०	६	३१	१८६	५	३७	२	३	३
८	३५	४१	२६	२४	०	०	०	११	११

मंगल हुआ इसकी गति कला ३१ विकला२६ हुई ॥ राशि १ अंश १२ कला ४१ विकला ३७ बुध का चलोच्च हुआ. और हे चहुवाण रा[illegible] कला १८६ विकला २४ इसकी गति हुई ॥ राशि ३ अंश १६ कला ४७ विकला ५ मध्यम [illegible]रु हुआ, इसकी गति कला ५ विकला ० हुई. राशि २ अंश १६ कला ४९ विकला ९ शुक्र का शीघ्रोच्च हुआ ॥ १६ ॥ इसकी गति कला ३७ विकला ० है ॥ राशि २ अंश ११ कला ४४ विकला ४ मध्यम शनि हुआ, इसकी गति कला २ विकला ० हुई ॥१७॥ राशि ६ अंश १६ कला १५ विकला ५९ राहु हुआ, इसकी गति कला ३ विकला ११ हुई, यह मध्यम गति जानो ॥ १८ ॥

रासिगगन०लवमुखइतर,आहिकितमसम०।१६।१८।५९।३।११आहि।
सबको सूचीचक्र यह,श्रोता लखहु सिराहि ॥ १९ ॥
सुनहु बीजसंस्कृत सकल,ग्रह अब पहु चहुवान ॥
नभ०रु दस१०रु नव पच्छ२९अरु, वसु गुन३८यह रबिमान॥२०॥
एक१रु जगती१२पुनि सर५रु, रस कृत४६अमृतनिधान ॥
ससिमंदोच्च सु मुनि७ रु आकृति२२ रु कृत४रु रस बान ॥२१॥
मंगल अठ८ रु गुन३रु छतीस३६रु भूसर५१अच्छ ॥
बुधचलोच्च भूमि१रु उडु२७रु, नवबान५९ रु सर पच्छ२५॥ २२ ॥
गुरु अग्नि३रु तिथि१५पुनि धृति१८रु,नंद राम३९पहिचानि॥
कविचलोच्च नयन२रु रवि१२रु, वेद सर५४रु जिन२४जानि।२३।
यह२।१२।५४।२०हि भानुसुतपै अधिक,इहिं विच बिकला अष्टि१६॥
राहु तर्क६पुनि सोलह१६रु,इंदु सर५१रु अत्यष्टि १७॥२४॥
यह०।१६।५१।१७हि केतु तँहँ रासि थल,जानहु गगन० नरेस॥
कथित बीजसंस्कार लहि, इम हुव खेट असेस ॥ २५ ॥
अब सुनिये आरादिकन, आसुकेंद्र अवनीस ॥
कुजको वेद४रु विश्व१३पुनि, पन्नगकृत४८रु पचीस२५॥२६॥

राशि ० अंश १३ कला १५ विकला ५९ गति कला ३ विकला ११ है इन सबकी राश्यादिक सूचना का चक्र श्रोतागण प्रशंसा युक्त देखो ॥ १९ ॥ हे चहुवान राजा अब इन सब अब्दबीज संस्कार दियेहुए ग्रहों को सुनो. राशि ० अंश १० कला २९ विकला ३८ यह सूर्य जानो ॥ २० ॥ राशि १ अंश १२ कला ५ विकला ४६ चन्द्रमा हुआ ॥ राशि ७ अंश २२ कला ४ विकला २१ चन्द्रोच्च हुआ ॥ २१ ॥ राशि ८ अंश ३ कला ३६ विकला ५१ यह मंगल हुआ. राशि १ अंश २७ कला ५९ विकला२५बुध का चलोच्च हुआ ॥ २२ ॥ राशि ३ अंश १५ कला १८विकला ३९ बृहस्पति जानो. राशि२ अंश१२कला ५४विकला२४ शुक्र का चलोच्च जानो ॥ २३ ॥ शुक्र के समान ही शनैश्चर है परन्तु विकला में १६अधिक है । राशि ६अंश १६कला ५१ विकला १७ राहु है ॥ २४ ॥ इसीप्रमाण केतु है जिसमें हे राजा राशि के स्थान पर शून्य जाने. कहेहुए अब्दबीज संस्कार लेकर इसप्रकार सब ग्रह हुए ॥ २५ ॥ अब मंगल आदि ग्रहों का हे भूपति शीघ्रकेन्द्र सुनो । मंगल का शीघ्रकेन्द्र राशि४

इदं बीजसंस्कृतमध्यमग्रहचक्रम् ॥									
सूर्यः	शशी	इन्दुमृदूच्चम्	आरः	ज्ञचलोच्चम्	जीवः	काव्याशूच्चम्	सौरिः	तमः	शिखी
०	२	७	८	१	३	२	२	६	०
१०	१२	२२	०	१७	१५	१२	१२	१६	१६
२६	५	४	३६	५९	१८	५४	५४	५१	५१
३८	४६	५६	५१	२५	३९	२४	४०	१७	१७

बुधको एक१रु धृति१८बहुरि, बेद गुन३४रु राकेस १।
वसु८रु अतिधृति१९रु रसगुन३६रु, नव सर५९गुरुको एस ॥२७॥
कविको नयन२रु ख०रु भुजग, बान५८रु बेद४बखानि ॥
सनिको अंक६रु उत्कृति२६रु, तिथि१५रु तारका२७ जानि॥२८॥
आरादिक चलकेंद्रको, चक्र यहै सुबिवेक ॥
तम१ सिखि२कै उच्च न तबहि,ए२मध्य१रु फट२एक ॥२९॥

इदं भौमादीनांशीघ्रकेन्द्रचक्रम्					भौमादिमंदस्फुटग्रहपञ्चकचक्रं				
कुजस्य	ज्ञस्य	गुरोः	कवेः	शनेः	वक्रः	बुधः	गुरुः	उशना	शनिः
४	१	८	‐	९	७	०	३	०	२
१३	१८	१९	०	२६	२६	९	२०	११	१४
४८	३४	३६	५८	१५	४१	२५	५२	५६	१४
२५	१	५९	४	२७	१३	२४	४०	२०	११

अंश १३ कला ४८ विकला २५ हुआ ॥ २६ ॥ बुध का शीघ्रकेन्द्र राशि १ अंश १८ कला ३४ विकला १ हुआ। बृहस्पति का शीघ्रकेन्द्र राशि ८ अंश १९ कला ३६ विकला५९ हुआ ॥२७॥ शुक्र का शीघ्रकेन्द्र राशि२ अंश ० कला५८ विकला ४ कहागया । शनि का शीघ्रकेन्द्र राशि ६ अंश २६ कला १५विकला २७ जानो ॥ २८ ॥ मंगल आदि पांच ग्रहों के चलकेन्द्र का श्रेष्ठ विचार के साथ यह चक्र है ॥ राहु और केतु के उच्च और नीच स्थान उसी कक्षा (घूमने का) वृत्त (गोल) में है इसलिये ये दोनों मध्यम और स्पष्ट एक ही हैं अर्थात् मध्यम हैं वही स्पष्ट हैं ॥२९॥ इन पांचों (मंगल, बुध, गुरु

एहि पंच५ अब मंदफुट, कहियत राम दिवान ॥
आर मुनि७ रु उत्कृति२६ रु सासि, बेद४१ रु बिश्व१३ प्रमान ॥ ३० ॥
बुध आकास० रु नंद९ पुनि, अतिकृति२५ अरु चउवीस२४ ॥
बाचस्पति अग्नि३ रु नख२० रु, बावन५२ पुनि चालीस४० ॥ ३१ ॥
दानवगुरु आकास० पुनि; शिव११ रु छप्पन५६ रु बीस२० ॥
बडवासुत नयन२ रु मनु१४ र, आखंडल१४ अरु ईस११ ॥ ३२ ॥
आरादिक जे मंदफुट, ग्रह तिनको यह चक्र ॥
तबके फुटतर खेट सब, सुनिये छोनीसक्र ॥ ३३ ॥

षट्पदी

तादिन दिनकर भ० रु रबि१२ रु तीस३० रु पावक कर२३ ॥
ताकी गति कलिकादि अट्ठ बान५८ रु बसु ८फुटतर ॥
सासि भूमि१ रु सूली११ रु रबि१२ रु चोवन५४ यह जानहु ॥
ताकी गति बसु पंच गज८५८रु पंचास५०प्रमानहु ॥
कुज नव९रु रस६रु हय गुन३७बहुरि बावन५२तँहँ यह रासि मुख ॥
याकीहु भुक्ति अठतीस३८अरु रस कर२६जानहु गनित रुख ॥ ३४ ॥
बुध गग०रु इकबीस२१रु कृत पंच५४रु नव लोचन२९ ।
गुन नभ भूमि१०३ रु दंत३२भुक्ति ताकी धरनीधन ॥

शुक्र, शनि) का हे दीवान (बुन्दी के रावराजाओं का उपपद दीवान है) रामसिंह मन्दस्पष्ट कहते हैं । मंगल राशि ७ अंश २६ कला ४१ विकला १३ मन्दस्पष्ट है ॥३०॥ बुध राशि ० अंश ६ कला २५ विकला २४ मन्दस्पष्ट है बृहस्पति राशि ३ अंश २० कला ५२ विकला ४० मन्दस्पष्ट है ॥ ३१ ॥ शुक्र राशि ० अंश ११ कला ५६ विकला २० मन्दस्पष्ट है शनि राशि २ अंश १४ कला १४ विकला ११ मन्दस्पष्ट है ॥ ३२ ॥ मंगल आदि इन पांचों ग्रहों के मन्दस्पष्ट का यह चक्र है और हे भूमि के ईद्र रामसिंह उस समय के स्पष्टतर ग्रह अब सुनिये ॥ ३३ ॥ उस दिन सूर्य राशि ० अंश १२ कला ३० विकला २३ और उसकी गति कला ५८ विकला ८ स्पष्टतर है ॥ चंद्रमा राशि १ अंश ११ कला १२ विकला ५४ जानो इसकी गति कला ८५८ विकला ५० प्रमाणो । मंगल राशि ९ अंश ६ कला ३७ विकला ५२ इसकी गति कला ३८ विकला २६ गणित की राह से जानो ॥ ३४ ॥ बुध राशि ० अंश २१ कला

त्रि३रु दस१०रु वसु८रु आकृति२२गुरु गति सर५रु छगुन३६मित
कबि भु१रुछ६रु कृत सर५४रु ख०गति द्वि मुनि७२रु कृत कृत४४इत
सनि कर२रु नव९रु सत्रह १७रु रवि१२गति बेद४रु नव राम३९पर
छ६रु अष्टि१६रु भू पंच५१रु मुनि कु१७तम गति गुन३रु कपर्दधर११

दोहा

राहु समहि आहिक०।१६।५१।१७।।३।११गिनहु,
तँहँ खट६रासि बिसेस ॥
ए चुहानजनि दिवस मुख, है फुट खेट नरेस ॥ ३६ ॥

इदं चगडासिजन्माहःप्रातःस्फुटतरग्रहचक्रम्								
सू०	चं०	भौ०	ज्ञ०	गुरु	शु०	श०	रा०	के
०	१	९	०	३	१	२	६	०
१२	११	६	२१	१०	६	९	१६	१६
३०	१२	३७	५४	८	५४	१७	५१	५१
२३	५४	५२	२९	२२	०	१२	१७	१७
५८	८५८	३८	१०३	५	७२	४	३	३
८	५०	२६	३२	३६	४४	३९	११	११

इतिश्री बंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशौ चगडासिजन्माऽहर्प्रातर्ग्रहस्फुटीकरणं दशमो१०मयूखः ॥ १० ॥

---

५४ विकला २९ और हे धरनीधन इसकी गति कला १०३ विकला३२ है ॥ वृहस्पति राशि ३ अंश १० कला ८ विकला२२इसकी गति कला ५ विकला २६ का प्रमाण है ॥ शुक्र राशि १ अंश६ कला१४विकला ० इसकी गति कला७२विकला४४है॥ शनैश्चर राशि२अंश९कला१७विकला१२इसकी गति कला४विकला३९है॥राहु राशि६अंश१६कला५१ विकला१७इसकी गति कला ३ विकला११है ॥३५॥ राहु के समान ही केतु को जानो जिसमें राशि में६का अंतर है अर्थात् राशि० है ॥ हे राजा रामसिंह चहुवान के जन्म के दिन प्रभात समय में ये ग्रह स्पष्ट हैं ॥ ३६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में चहुवान के जन्म दिन प्रभात समय में ग्रहों को स्पष्ट करने का दशवां मयूख समाप्त हुआ ॥

आदितः पञ्चत्रिंशः ॥ ३५ ॥

अथ चण्डासिजन्मकालग्रहलग्नकुण्डलिकाद्याऽऽविष्करणम् ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा

॥ षट्पदी ॥

मनु सप्तम७ जँहँ बिद्यमान बैबस्वत७ आव्हय ।
ताके जुग कृत आदि होत नभ ससि इक११०अत्यय ॥
तीजो३ जुग तिन अग्ग नाम द्वापर तस बच्छर ।
बित्ते जँहँ नव तर्क बेद अंबर रस कुंजर८६०४६९॥
भू राम बान गुन ३५३१ सेस जँहँ रहत अर्क उत्तर अयन ।
अर्बुद अगेस चहुवान हुय जंभ१ धूम्रकेतन२ जयन ॥ १ ॥
माधव ऋतु माधवहि मास अवदात पच्छ जँहँ ।
जीव बार तिथि तीज३घटी रद३२ पल मुनि कृत४७ तँहँ ॥
चोथी४ तारा ख सर ५० घटी गुन कृत४३ पल अग्गल ।
पंचम५ योग प्रसिद्ध ख सर५० घटिका रु तान ४९ पल ॥
तैतिल४बिहाय लगि गर५करन अष्टि१६ रु गुन३यह इष्ट ध्रुव ।
अभिजित मुहूर्त कर्कट४ लगन तिहिं अनेह चहुवान हुव ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

भ२७ रु चोवन५४निसमान जँहँ, रद ३२ रु तर्क ६ दिनमान ॥

और आदि से पैंतीस मयूख हुए ॥३५ ॥ अब चहुवान के जन्म समय के ग्रह लग्नकुण्डलिका आदि का प्रकाश करना है ॥

जहां पर सातवां वैवस्वत नामक मनु वर्तमान है जिसके युग सत्ययुग को आदि लेकर ११० बीते जिनके आगे तीसरे (सत्ययुग, त्रेता, द्वापर) द्वापर युग के ८६०४६७ वर्ष बीते और ३५३१ वर्ष बाकी रहे और सूर्य के उत्तरायण में रहते, जंभासुर और धूम्रकेतु को जीतने के लिये आबू पर्वत राज पर चहुवाण हुआ ॥ १ ॥ वसन्त ऋतु, वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, तिथि तीज गुरु वार घडी ३२ पल ४७ रोहिणी नक्षत्र घड़ी ५० पल ५३ शोभन योग घड़ी ५०पल ४९ तैतिल करण छूट कर गर करण लगा इष्ट घड़ी १६ पल ३ अभिजित् मुहूर्त, कर्क लग्न के समय में चहुवाण हुआ ॥ २ ॥ उस दिन २७ घड़ी ५४ पल की रात्रि और ३२ घड़ी ६ पल का दिनमान है ॥ इसप्रकार

अर्ध १।६।३ दिवस गत होत इम, हुव चउ४ भुज चहुवान॥३॥
रोहिनि४ के दूजे२चरन,भव यातैं बसुधेस ॥
स्वामी सुक्र ६रु रासि वृष२ फुटग्रहगन नँहँ एस ॥ ४ ॥
प्रातहि जो फुट रबि कह्यो, सो नृपजन्म अनेह ॥
तिथि१५कलारुचोतीस३४मित,बिकलाजुतफुटएह०।१२।४५।५७ ॥
५८।८॥ ५ ॥

त्रि३लव रु तान ४९कला रु बसु,
सर बिकला५८ जुत सोम १।१५।२।५२॥८५८।५० ॥
दस १०कलिका अरु बिक्लिका
सत्रह१७ संजुत भोम ९।६।४८।९॥३८।२६ ॥ ६ ॥
भ २७ मित कला गुन वेद ४३ मित,
विकला जुत बुध ०।२२।२२।१२॥१०३।३२ जानि॥
एक १ कला बिकला ख गुन३०
संजुत गुरु ३।१०।९।५२॥५।३६ पहिचानि ॥ ७ ॥
उसना तँहँ नव भूमि १९ अरु
बसु लोचन २८ संजुत्त १।७।१३।२८॥७२।४४ ॥

आधा दिन बीतने पर चार हाथवाला चहुवाण हुआ ॥ ३ ॥ रोहिणी के दूसरे चरण में हुआ इसकारण स्वामी शुक्र, राशि वृषभ, यह स्पष्टग्रहों का समूह हुआ ॥ ४ ॥ प्रभात समय का जो स्पष्टसूर्य कहा जिसमें १५ कला ३४ विकला जोड़ने से जन्म समय का स्पष्ट सूर्य राशि ० अंश १२ कला ४५ विकला५७गति कला५८विकला ८ हुई ॥ ५ ॥ प्रभात समय के चन्द्रमा में अंश ३ कला ४९,विकला५८ जोडने से जन्म समय का चन्द्रमा राशि१अंश१५ कला २ विकला५२गति कला८५८विकला५०स्पष्ट हुआ। प्रभात के मंगल में कला१०विकला१७जोडने से जन्म समय का मंगल राशि९ अंश ६ कला४८ विकला९ गति कला ३८विकला २६ स्पष्ट हुआ ॥ ६ ॥ प्रभात समय के बुध में कला२७ विकला४३ जोडने से जन्म समय का बुध राशि ० अंश २२कला २२विकला१२गति कला१०३विकला३२स्पष्ट जानो। प्रातःकाल के बृहस्पति में कला१विकला३०जोडने से जन्म समय का बृहस्पति राशि३अंश१०कला ९विकला ५२ गति कला५विकला३६स्पष्ट पहिचानो ॥ ७ ॥ प्रभात समय के

कलिकाएक१रुबिकलिका,तिथि१५उपेतरबिपुत्त।२।९।१८।२७।४।३९
उलटी गतिके अगु६।१६।५०।२६।३।११सिखी०।१६।५०।२६।३।११।
बिकला कु सर५१बिहीन ॥
चाहुवान जनिकालको, खेटचक्र यह कीन ॥ ९ ॥

दोहा

त्रि३रुअष्टि१६रुगजगुन३८रुबसु,सर५८यह३।१६।३८।५८लग्नकुलीर
हो फुटतर चगडासिके, जन्मकाल नृप वीर ॥ १० ॥

षट्पदी

कर्क४रासि निज उच्च सहित तनु१बिच गुरु आयउ ।

इदं चगडासिजन्मकालस्फुटतरग्रहचक्रम्								
सूर्यः	ग्लौः	आरः	सौम्यः	गुरुः	काव्यः	ऐनिः	अगुः	केतुः
१	१	९	०	३	१	२	६	०
१२	१५	६	२२	१०	७	९	१६	१६
४५	-	४८	७१	९	१३	१८	५०	५०
५७	५२	०	१२	५२	२८	२७	२६	२६
५८	८५८	३८	१०३	५	७-	४	३	३
८	५०	२६	३२	३६	४४	३९	११	११
उच्चस्थः	उच्चस्थः	उच्चस्थः	अस्त.	उच्चस्थः	स्वगृहो	मित्रम्	०	०

बनिज७ रासि संस्थित चतुर्थ४आलय अगु पायउ ॥

शुक्र में कला१६विकला२८जोडने से जन्म समय का शुक्र राशि १अंश१७ कला१३विकला २८गति कला७२विकला४४स्पष्ट हुआ । प्रातःकाल के शनैश्चर में कला१विकला१५जोडने से जन्म समय काशनैश्चर राशि२अंश९कला१८ विकला२७गति कला४विकला३९स्पष्ट हुआ ॥ ८ ॥ उलटी गतिवाले प्रभात समय के राहु और केतु में विकला५१बाकी देने से जन्म समय का राहु राशि६अंश१६कला५०विकला२६और केतु राशि०अंश१६कला५०विकला२६गति कला३विकला ११स्पष्ट हुए। चहुवान के जन्म समय के ग्रहों का यह चक्र किया है ॥ ९ ॥ हे वीर राजा रामसिंह! चहुवान के जन्म समय में राशि३अंश १६कला३८ विकला५५कर्क लग्न स्पष्ट हुआ ॥ १० ॥ लग्न स्थान पर उच्च का गुरु आया और चौथे स्थान में तुला राशिपर राहु मिला, सातवें स्थान में मकर राशि-पर अपने उच्च का आरोही(अपने परम ऊंचे अंश तक चढने को

मृग१० निज उच्च अरोहि भवन सप्तम७रहि भूसुत ।
दसम१०भुवन दिनकर स्वकीय उन्नत एडक१जुत ॥
दसम१०हि निकेत बुध केतु दुव२अवि१अरोहि रवि ढिग रह्यि।
आत्मीय उच्च सक्कर२सहित आय११भाव हिमकर लहिय॥११॥

दोहा

आय११हिमैं स्वग्रही इहाँ, वृष२आश्रित कवि आँहिं ॥
मिथुन३रासि थित मित्र बनि, मंद रह्यो व्यय१२ माँहिं ॥ १२ ॥
तनु१ बिच गुरु निज उच्च४को, राजयोग कर्त्तार ॥
राज्यभाव१० पति केंद्र७बिच, यौंहि उच्च१० थित आर ॥१३॥
राज्यभाव१०बिच त्यौं रहिय, रबि निज उच्च१उपेत ॥
सोहु महाराजत्व को, दाता सिद्धिसमेत ॥ १४ ॥
लाभभाव११बिच उच्च२को,त्यौं चंद्रहु लग्नेश४स ॥
सुभ कवि संजुत करत यह,भूपति योग बिसेस ॥ १५ ॥
गुरु१कुज२रबि३ससि४उच्चके, यातैं फल अति पुष्ट ॥
इतरहु सुभ बुध अस्त इक१, अगु१आँहिक२कछु दुष्ट ॥ १६ ॥

आरोही और अपने परम उच्च अंश से आगे बढने को अवरोही कहते हैं और मंगल के परम उच्च अंश२८हैं और यहां ६अंश हैं इससे आरोही है) मंगल रहा. दशम स्थान में मेष राशि का सूर्य अपने उच्च में युक्त रहा और दशम स्थान में ही बुध और केतु मेष राशि पर आरूढ सूर्य के समीप रहे हैं । उच्च का वृष राशि सहित ग्यारहवें स्थान में चंद्रमा है ॥ ११ ॥ ग्यारहवें ही स्थान में यहां पर अपने घर का वृष राशि पर शुक्र है. और मिथुन राशि पर अपने मित्र (बुध) के घर में बारहवें स्थान मे शनैश्चर रहा ॥ १२ ॥ लग्न में उच्च का गुरु राज्ययोग का करनेवाला है वैसे ही राज्य भाव (दशवें स्थान) का पति मङ्गल केन्द्र में उच्च का बैठा है ॥ १३ ॥ इसीप्रकार राज्य भाव में सूर्य अपने उच्च के सहित है सो भी बडे राज्य का देने वाला सिद्धि सहित है ॥ १४ ॥ वैसे ही लग्न का स्वामी चन्द्रमा ग्यारहवें स्थान में उच्च का है और शुभग्रह शुक्र के साथ चन्द्रमा विशेष राज्ययोग करनेवाला है ॥ १५ ॥ बृहस्पति, मंगल सूर्य और चन्द्रमा ये चारों ग्रह उच्च के हैं इससे अत्यन्त शुभ फल दायक हैं और दूसरे भी शुभ हैं परन्तु एक बुध अस्त है सो, और राहु व केतु थोड़े से दोष करनेवाले हैं ॥ १६ ॥ यह चुहाण के जन्म

यह चुहानके जन्मकी, लग्नकुंडली आहि ॥
रासिलग्नकी कुंडली कहत, सुनहु अब ताहि ॥ १७ ॥
वृष२ के ससि१ कबि२ लग्न१ बिच, मिथुन३ मंद धन२माँहिं ॥
सुरगुरु कर्कट४ को सहज३, नवम९मकर१० कुज आँहिं ॥१८॥
एडक१ के रबि१ बुध२ उभय, द्वादस २ आलय आइ ॥
रासिलग्नकी कुंडली, यह तस सुद्ध सुहाइ ॥ १९ ॥
वादिनके ग्रह९प्रातके, जन्मकालके ज्याँहि ॥
पंच५अंग इत्यादि सब, ग्रंथसिरोमनि सौंहि ॥ २० ॥
इति श्री बंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशौ चण्डा-

की लग्नकुण्डली है अब चन्द्रकुण्डली कहते हैं सो सुनो ॥ १७ ॥ लग्न में वृष राशि का चन्द्रमा और शुक्र है और दूसरे भाव (घर) में मिथुन का शनैश्चर है और तीसरे स्थान में कर्क का बृहस्पति और नवम स्थान में मकर का मंगल है ॥ १८ ॥ मेष राशि के सूर्य और बुध दोनों बारहवें घर में आये हैं यह उस चोहान की राशि लग्न की कुण्डली श्रेष्ट है ॥ १९ ॥ उस दिन के प्रभात के और जन्म समय के ग्रह और पञ्चाङ्ग आदि सब सिद्धान्त शिरोमणि से लिये हैं ॥ २० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में चहुवाण के जन्म

सिजन्मकालग्रहलग्नकुण्डलिकादिस्फुटीकरणमेकादशो ११ मयूखः ॥ ॥ आदितः षट्त्रिंशः ॥ ३६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

दोहा

कथित समय सुचि कुंडतैं, स्वाहा ध्वनि अवसान ॥
अर्चित गनकरि आवरित, निकस्यो नृप चहुवान ॥१॥

षट्पदी

घनवल्ली निभ बसन बालदिनकर निभ बिग्रह ।
जानु बितन भुज च्यारि४असह बिथुरात महामह ॥
सकति१ गदा२ असि३ चक्र४ धीर प्रहरन चउ४धारत ।
रनउत्सुक दृग देखि सबन संताप निवारत ॥
कोटीर दिव्य कुंडल कटक अंगद भुज छबि उल्लसत ॥
मुनि बत्स मंत्र जनित सु ज्वलित हेतिन कढि आयो हसत ॥ २ ॥

दोहा

पंच५ प्रवर उपवीत१ जुत, बत्सगोत्र२ यह बीर ॥
साखा कौथमिका३ सहित, साम४ श्रुतिधर धीर ॥ ३ ॥

॥ षट्पदी ॥

धाता तस अभिधान कह्यो स्वभबल बसुधेस्वर१ ।
तिम अक्खिय चंडासि२ पिक्खि असि चंड तास कर ॥
बहुरि चतुर्भुज३कहिय च्यारि४ हत्थन लखि धारत ।
ए३ यौगिक अब रूढ कहौं मत बिबिध बिचारत ॥

का समय, ग्रह, लग्नकुंडली आदि के स्पष्ट करने का ग्यारहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ११ ॥ आदि से छत्तीस मयूख हुए ॥ ३६ ॥

१ ऊपर कहेहुए २ अग्नि ३ शब्द ४ अन्तिम ५ ज्वाला के समूह से ६ घिराहुआ ७ बिजुली के ८ सदृश ९ वस्त्र १० उदय होते सूर्य के समान ११ शरीर १२ घुटनों तक फैलेहुए १३ उत्सव १४ शस्त्र १५ उत्कंठित (युद्ध की इच्छा रखनेवाले नेत्र) १६ मुकुट १७ कंकण (कड़े) १८ भुजबन्ध १९ वत्स मुनि के मंत्रों से पैदाहुआ २० अग्नि की २१ झाल से २२ जनेऊ २३ वेद २४ ब्रह्मा ने २५ नाम २६ धन(बल) और क्रान्ति ही है धन जिसके २७ खड्ग २८ ये तीन नाम यौगिक हैं

आव्हय चुहान५ चहुवान६ अरु चोहान७ रु चव्हान८ हुव ।
इत्यादि सब्द अभिधेय यह भो अ बुव मख होम हुव ॥४॥

॥ दोहा ॥

भृगु ब्रह्मादिक यँहँ भये, संतति निज लहि सत्थ ॥
भृगु कुल नामकही भये, इम गोत्रादिक अत्थ ॥ ५ ॥

॥ षट्पदी ॥

इम बाशिष्ठ मख अनल कुंड अर्बुद गिरि उप्पर ॥
चउ४ भुजदंड चुहान अधिप निकस्यो जगईश्वर ॥
सुर हुव सकल प्रसन्न लगे मुनिबर जस अक्खनँ॥
जय रक्खन यह जानि वजे दुंदुभि दिवं लक्खनं ॥
सौरभि अनेक बरखे सुमनं भुवन भुवन जय जय भयो॥
मख भाग लुब्धं जनुं तजि उदयं अब अर्बुदं रवि उग्गयो॥६॥

शुद्धब्रजदेशीयभाषा

॥ मनोहरम् ॥

पंकजता पाई बिप्र विबुधं बिविधवृंद,
पाई चक्रताई नीठि निगमं विचारेनँ ।
असुरं अँधारेनँ महादुसह मौति पाई,
जोति पाई जित तित सुजस उजारेनँ ॥
सोनपुरं पाई हरदाई जरदाई करे-
दाई ज्यौं लुकाई पाई त्रास जगतारेनँ ॥

१नाम२नाम३आबू पर्वत के यज्ञ में होम होते समय ४ब्रह्मा को आदि लेकर ऋत्विज्५स्वामी६देवता७कहने ८ विजय का रखनेवाला९स्वर्ग में १० लाखों ११ सुगंधिवाले फूल१२देवताओं ने१३लोभी (यज्ञ में भाग पाने का लोभ करके) १४मानों१५उदयाचल को छोड कर१६आबू पर्वत पर सूर्य उदय हुआ ॥ ब्राह्मण और देवता आदि नाना प्रकार के समूहों ने कमलता पाई अर्थात् प्रफुल्लित हुए और विचारे वेदं ने कठिनाई से चक्रवाकपन पाया, दैत्यरूपी अंधेरे ने कठिन मृत्यु पाई और यश रूपी उजाले ने सब ओर कांति पाई ॥ २२वाणासुर की राजधानी शोणितपुर है वह ललाई को छोडकर पीलेपन को प्राप्त हुआ जैसे वशीकृत किया हुआ पीलेपन को पाता है और संसार के आ

अंसुमालि अतुल चुहानके उदय होत ,
उदयता पाई श्रीसदासिवके सारेनैं ॥ ७ ॥
भूँजेसे भेंटित्र बलि बंसिनके भेजा भये,
नेजा भये गाढे रुपि निगमँ निसानके।
रंभादिक हल्लीसक रुचिरँ रचाये छाये ,
तानके बितानँ देव गायनन गानके ॥
दीन भव भूत दुख बंधनतैं छूटे बजे ,
फूटे बजे बाजे अब पापके प्रयानके ॥
प्रानके निधान चहुवानके कढत फुरैं ,
दाहिनैं पुरंदरके बाम अंग बानके ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

हरि१ हर२ अज३की नुति करी, निकसत ही चंडासि॥
सबन सिराह्यो साधु कहि, प्रस्तुत काज प्रकासि ॥ ९ ॥
आयुध१ बाजि२ रथा३दि सब, देन लगे सुर ताहि ॥
कह्यो जदपि सायुध नृपति , तदपि चित्त हित चाहि॥१०॥

॥ मनोहरम् ॥

भूमि१ दीनों स्यंदन२ तुरंग१ दीनें पासपति२,
काली१ दई जाली२ रविलाली छबिकी छई ।

स रूपी तारे ने अदर्शनता (नहीं दिखाई देना) पाई, इसप्रकार चहुवान रूपी सूर्य के उदय होते ही श्रीमहादेव के साले (हिमालय का नंदी नामक पुत्र जो आबू पर्वत के नाम से प्रसिद्ध हुआ) ने उदयता (उदयाद्रिपन) पाई ॥ ७ ॥ बलि दैत्य के वंशवालों के भेजा (मस्तिस्क) भूंजेहुए सूले के समान हुए, वेदों के झंडे और नगारे दृढ हुए, रंभादिक अप्सराओं ने घूमर का नाच किया, गन्धर्वों के गाने की सुन्दर तान के डेरे तनेगये, संसार के दीन प्राणी दुःख के बंधसे छूटे प्रसिद्ध हुए, और पाप के चले जाने के फूटे बाजे बजे, प्राणों के आश्रय चोहान के निकलते ही इन्द्र के दाहिने अंग और बाणासुर के बायें अंग फरकने लगे, जो क्रम से शुभ और अशुभ के सूचक हैं ॥८॥
१३ ब्रह्मा १४ स्तुति १५ श्रेष्ट १६ उपस्थित समय को १७ देवता १८ जो १९ तो भी २० रथ २१ वरुण ने २२ जाल २३ सूर्य ने क्रान्ति

[2]बज्रो१ दयो बारन२ कुबेर१ दयो कंठमनि२,
[3]प्रास१ १पवमानैं[4] २ जम१ [5]जगर२ दयो जर्द[6] ॥
संकरनैं१ सूल२ देवमातानैं१ [7]दुकूल[8] सप्त-
कीलनैं कृपान२ चंड चर्म[9]३ [10]चपलामई ॥
चंद्रमानैं१ चाप[11]२ कंकपत्रनकलाप[12]३[13]चक्र-
धारनैं१ चक्र२ दिनकरनैं[14]१ गदा२दई ॥ ११ ॥
द्रुघनैं[15]१ [16]द्रुघन२ पितरन१ दिय पत्रपालैं[17]२,
भिंदिपालैं[18]१ भैरौं२ सुभसकुन१ [19]सरस्सई२ ।
सिद्धन१ [20]तिरस्कर२ बिश्वेदेवन१ [21]दमनदंड२,
काल१ [22]करवाली२ सित सानसौं भली भई ॥
बसुन१ [23]सतघ्नी२ प्रजापतिन१ परसु२ साध्य,
देवन१ समप्पी संगि२ रिपु रुधिरंधई[24] ।
माइगन१ मिलिकैं उतारे लौंन२ राई३ जंग,
जित्तनके उचित असीस१ इंदिरौं[25]२ दई ॥ १२ ॥

दोहा ॥

भूखन१ नानारतनमय, सिंधुनैं[26]२ अप्पे ताहि ॥
द्वीपन१ [27]अद्रिन२ बहु दये, चारु[28] [29]उपायन३ चाहि ॥ १३ ॥
जयकेतनं[30]१ दिय तुहिनगिरि[31]२ छबिबर दर[32]१ छीरोद२॥
सनमान्यौं इम नृप सबन, महत रक्खि जय मोद ॥ १४ ॥
[33]काम पुरोहितको कियो, मुनि बासिष्ठ हित मानि ॥
गर्ग कियो सब गनक[34]को, उचित रीति तँहँ आनि ॥ १५ ॥

१इन्द्र ने२हाथी३बरछी४पवन ने५कवच६जीतनेवाला७वस्त्र८अग्निने९ढाल१० बिजली११धनुष१२बाणों को भाथा१३बिष्णु ने१४सूर्य ने१५ब्रह्मा ने१६मुद्गर १७लंगाछुरा१८गोफन१९सरस्वती२०टोप२१दंडदेने का दंड२२शस्त्र विशेष(करपालो) शाण से तीखी हुई२३ तोप अथवा बंदूक२४ शत्रुओं के रुधिर पीनेवाली२५ लक्ष्मी ने२६ समुद्रों ने२७ पर्वतों ने२८ मन्दर२९ भेट३० विजय की ध्वजा ३१हिमालय पर्वत ने३२ शंख३३ पुरोहित का कार्य वशिष्ट ने किया३४ज्योतिषी का कार्य गर्ग मुनि ने किया.

अभिसेचन[1] हित इक्कठे, हरि निदेस अब होइ ॥
करन लगे वैदिक क्रिया, खलन भीति खलु खोइ १६ ॥ ॥

घनाक्षरी

भूपहिं प्रथम तिल१ सरिसव[3]२ सौं न्हवाइ१ रक्खि,
इतरासन[4]२ तदीय जयकौं उचारि३ ।
आधिपत्य[6] ताकौं इंद्रप्रस्थको सुनाइ४ निज-
जनता दिखाई५ हित हरख अपुब्ब धारि ॥
निजप्रकृतिनकौं परोक्षहि बिसास६ अरु,
नंदिनी[9] निलिंपाको नरेस्वर हु बंध टारि७ ।
बिप्रनसौं बोल्यो अब अखिल अभय होहु८,
सेवकछतैं तो खल सैंव न सकैं बिगारि ॥ १७ ॥
सित१ पट२ भूखन३ उपोसित[11] बसिष्ठ१ सक्र,
सांति करि२ बेदी लिखि३ होमबिधिसौं बनाइ४ ।
शर्म[12] वर्म१ स्वस्त्ययन२ आयुष्य३ अभय४ स्वाप ,
राजित५ पढे ए गन पंच५ हि५ उचित पाइ ॥
आभरन आदिक धरापहु[13] धवल धारि६ ,
हवनसौं ठाढो रह्यो दक्खिन तरफ आइ ।
सूचक सुभासुभको ज्वलन[14] लख्यो८ सो जग्यो,
लंबी लंबी लपट लतासी लौंनी[15] लाइ लाइ ॥ १८ ॥
चिलित बिचित्र चारु चामीकरको[16] चतुर बिस्व-
कर्मा कलस बनायो सत१०० छिद्रवान९ ।
सो करि सुगंधतैल पूरन१० प्रथम तासौं,
न्हानके निकेत[17] आनि नृपहिं करायो न्हान११ ॥

अभिषेक२निश्चै३सरसों४दूसरे आसन पर५उसकी६स्वामीपन७राज्य के सातों अंगों को८पीठ पछाडी(इंद्रप्रस्थ से दूर आबू पर से ही)९गाय१०यज्ञ को११उपवास किया हुआ१२शर्म वर्म से लेकर स्वापराजित पर्यन्त पांचों शान्ति पाठ हैं१३ भूपति१४ अग्नि को१५ भयंकर रहित (कोमल) १६ साले का सुन्दर१७ स्नान के घर में

मृत्तिका अभक्तै गिरिशृंगकी मँगाइ तदं-
नंतर लगाई नृप मस्तक बडे बिधान१२॥
वम्रीकूट[3] अग्रकी सुधाइ मिट्टी ताहीविधि,
मंत्रित मिलाइ निँ भावितँ उभय२ कान१३ ॥ १९ ॥
मिट्टी हरिमंदिरकी आननँ लगाई१४इंद्र-
ध्वजकी लगाई कंठ१५विधिसौँ बिहितँ ठानि ॥
त्यौँही राज अंगनकी हृदय लगाई१६गज,
दंतकरि उद्धृत लगाई दोहू२भुज पानि१७ ॥
पिट्ठि तालकी १८ओ नदीसंगमकी उदर१९नदी,
के दुव२तटकी लगाई पंसुलीन२०आनि ।
वा बधू द्वारकी लगाई कटि गारि२१गज-
सालाकी लगाई ऊरु उभय२।२ उचितजानि ॥ २० ॥

दोहा

गोसालाकी मृत्तिका, जानुनँ ललित लगाइ२३ ॥
हयसालाकी मृत्तिका, उभय२पिंडुरिन लाइ२४ ॥२१॥
दुव२चरनन रथचक्र करि, खुदी लगाई गारि२५ ॥
सब मिश्रितँ पुनि अंग सब,दीनी२६बिहित बिचारि ॥ २२ ॥
पंचगव्यँ घट करि बहुरि,नृपहिँ न्हवाइ२७अखेद ॥
भद्रासन बैठारि तिँहिँ२८,पढन लगे द्विज बेद२९ ॥ २३ ॥

घनाक्षरी

च्यारि४वर्णके ह्वाँ च्यारि४कलितँ सचिव मानि,

१ अछूती २ जिस पीछे ३ उदेही (दीमक) के वामले की ४ शुद्ध ५ सुख पर ६ दृष्टि के लिये राज द्वार पर चोकोण और ध्वजा के समान लंबा स्थल वनायाजावे उस को इन्द्र वज कहते हैं, वहां की मिट्टी ७ लगाई ८ उठाईहुई (हाथी के दांत से उठाईहुई) ९ पीठ पर१०तालाव की ११ वेश्या (गणिका)के दरवाजे की १२ कमर पर १३ जंघा पर १४ घुटनों पर १५ पहिये (रथ के पहियों से खुदीहुई)१६ सामिल की हुई १७ दूध, दही, घृत, गोमूत्र, गोबर इन पांचों को मिलाने का नाम पञ्चगव्य है१८सिंहासन१९प्रसिद्ध

विप्र१राख्यो पूरब२दै हेम[१]कुंभ३आज्य[२] धरि४ ।
खत्रिय१अवाची[३]२छीरपूर्न[४]३दै तार[५]कुंभ४,
बनिक[६]१प्रतीची[७]२दै दहीसौं३ रक्त[८]कुंभ४भरि ॥
सूद्रकौं१उदीची[९]२मृत्तिका[१०]घटं३सलिल[११] पूरि४,
राख्यो इन च्यारि४न१दयो यौं अभिसेक करि२।
बन्हिरच्छों[१२]१बहुरि सदस्यन[१३] अढाइ२लगे,
सिंचन पुरोधा[१४] मुनि३राजसूय मंत्र रटि[१५] ॥ २४ ॥

षट्पदी

बेदीमूल बसिष्ट होइ१पुनि आइ हुलासि हिय२ ।
सत१००छिद्रक संपात[१६]वान घट करि नृप सिंचिय३ ॥
सब औषध१सब बीज२सुमन[१७]३फल४रतन५दर्भ[१८]६सब ।
द्वीप१अद्रि[१९]२बन३सिंधु[२०]४तरु[२१]५न कीने हाजरि तब ॥
जल सुरभि[२२]जुक्त इनकोहु जहँ मुनि अभिसेचन[२३] मंडयो४ ।
कुसमार्जित[२४] करि ऋकवेदि द्विज नृपति कंठ रोचन[२५] दयो५ ॥ २५ ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

च्यारि बरन जन[२६] कूप[२७]१सरित[२८]२सर[२९]३नीर कलस भरि ।
सिंच्यो नृपहिं४बहोरि१कथित[३०] चउ४सिंधु सलिल[३१] करि
अद्रि भरन जल१इमहि पूरि गंगा१जमना२जल२ ।
इतरहु[३२] तीरथ१उक्त[३३] भूप तिन करि सिंच्यो२भल ॥
कछु देवयोनि[३४]१हरिके हुकम२दासभाव लग्गे करन३ ।

---

१ सोने का २ घृत ३ दक्षिण दिशा ४ दुग्ध ५ चांदी का घडा ६ वैश्य ७ पश्चिम में ८ तांबे का घडा ९ उत्तरदिशा में १० मिट्टी का ११ जल १२ अग्नि की रक्षा १३ सौलह ऋत्विजों के सिवाय यज्ञ में सामिल रहनेवाले अन्य सभासदों को भला कर १४ पुरोहित १५ रट करके १६ धारा सहित [घडे से पानी डालना प्रारम्भ किया] १७ फूल १८ डाभ (कुश) १९ पर्वत २० समुद्र २१ वृक्ष २२ सुगन्धिवाला २३ सींचा २४ डाभ से शुद्ध कर २५ गोलोचन २६ मनुष्यों ने २७ कुआ २८ नदी २९ तालाव के ३० ऊपर कहेहुए ३१ जल से ३२ और भी ३३ ऊपर कहेहुए ३४ विद्याधर आदि (विद्याधरोऽप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः

किय तत्थ मुनिन१नृप गुनकथन२बेदध्वनि करि बज्जरन३ ॥२६॥

दोहा

बंदिन गन बुल्ले बिरुद१,बज्जे२ दंर१नउबत्ति२॥
गान पसारिय१अच्छरिन२,घन आलापन घत्ति३॥ २७॥
गंगाकराज मुनि गर्ग१पुनि, छिद्रिनि घट धरि हत्थ२॥
अक्खि मंत्र निगमनँ उचित३, सिंच्यो नृपहिं समर्त्थ। २८।

प्रायः संस्कृतशब्दा ब्रजदेशीयप्राकृतक्रियाविभक्तिका मिश्रितभाषा

॥ सचरणगद्यम् ॥

ताके अनंतर चंडासिकै ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर ३ इन देवाधिदेवन अभिषेक कीनौं १।

अरु बासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध ४ इन च्यारि४अंतरात्मदेवन विशेषवपुर्विनिष्ठ वनि बैरोचनि बाणके बंशवर्द्धन बिरोधिबलिशपुत्रनसौं बिजयकौं आशिष दीनौं २॥

अब इंद्र, अग्नि, अंतक, आशिरेश, अप्पति, अनिल, एंकपिंग, ईशान, अब्जभव, आलुर्क १०इन अभ्रइंदु१०आशाके अर्धाश्वरन अभिषेककौं अंबु अप्पि अविरत अवनेको आदेश उच्चरयो३।

पीछैं धूर्जटी, धर्म, मनु, दत्त, रुचि, श्राद्ध, भृगु, अत्रि, वसिष्ठ, सनक, सनंदन, सनातन, सनत्कुमार, अंगिरा, पुलह, पुलस्त्य, मरीचि, कश्यप१८ इत्यादि प्रजापतिन अभिषेक करयो४॥२९॥

पिशाचा गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः) १ शंख २ अप्सराओं ने ३ घालकर (लगाकर) ४ ज्योतिषी ५ छिद्रोंवाले घडे से ६ कहकर ७ वेदों के८समर्थ॥) विशेष करके संस्कृत के शब्द और ब्रजभाषा व प्राकृत के क्रिया और विभक्तिवाले शब्दों की मिलीहुई भाषा ॥) ९ इस के पीछे१०देवताओं के देवता ११ बलदेव १२ लिङ्ग शरीर में रहनेवाले अंतरात्मा देव१३विशेष शरीर को धारण करके १४विरोचन के वंश वाले बाणासुर के१५बढानेवाले १६ सूर्य १७ यमराज १८ राक्षसों का स्वामी (नैर्ऋत्य कोण का पति) १९ वरुण २० वायु २१ कुबेर २२ शिव २३ ब्रह्मा (ऊर्धदिशा का पति)२४शेष (पाताल पति)२५इन दश ही दिशा के२६स्वामि यों ने २७ जल २८निरन्तर २९रक्षा३० आज्ञा

तदनंतर प्रभाकर, बर्हिपद, अग्निष्वात्त, क्रव्याद, उपहूत, आज्यपा, सुकाली, अग्नि८ इत्यादिक पितृनके ओघन अभिषेकके अंबुसौं अवनीसके उत्तमांगकौं अलंकृतकरि आनंद आन्यौं५। तब श्री, शिवा, शची, ख्याति, अनसूया, स्मृति, संभूति, सन्नति, क्षमा, प्रीति, स्वाहा, स्वधा१ २इत्यादि मातृगणहूनैं अभिषेकठान्यौं६॥ पीछैं कीर्ति, लक्ष्मी, धृति, मेधा, पुष्टि, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, बपु, शांति, तुष्टि, सिद्धि१ २इन धर्मकी कलत्रनहू बसुधेश्वरकौं सिंचमान कीनौं ७॥

अरु अरुंधती, बसु, यामी, लंबा, भानु, मरुत्वती, संकल्पा, मुहूर्ता, साध्या, बिश्वा१ ०इत्यादि इतरनहू धर्मपत्नीन पूर्व सपत्नीन सम सिंचिदीनौं८॥३०॥

बहोरि अदिति, दिति, दनु, काला, सुरदृष्टा, वापुषा, मुनि, कद्रु, क्रोधवशा, प्राची, विनता, सुरभि१ २इत्यादि कश्यपके कलत्रन अभिषेक कस्यो९।

अरु सपुला१सयामा२इन बहुपुत्रके कलत्रन१; तथा सुप्रभा, जया, प्रदर्शना३इन कृशाश्वके कलत्रन२अपनैं पुत्रन सहित३अभिषेक करि बिजयको आशिष उच्चस्यो१०॥

तदनंतर मनोरमा, भानुमती, बिशाला, बाहुदा४इन अरिष्टनेमिके परिग्रहन१; तथा कृत्तिका, रोहिणी, बिशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती, अश्विनी, भरणी १७इत्यादिक सोमके परिग्रहन अभिषेक कीनौं११।

अरु मृगी, मृगचर्मा, श्वेतभद्रचरा, हरि, पूता, कपिता, दंष्ट्रा, सुरभा, सुलभा ९ इत्यादि पुलस्त्यके परिग्रहन१; तथा श्येनी, भासी,

१इस पीछे २समूहों ने३ जल से ४भूपति के५मस्तक को ६भूषित ७स्त्रियों ने ८और भी ९धर्म की स्त्रियों ने१०सोकों के समान११इस पीछे १२स्त्रियों ने १३चंद्रमा की१४ स्त्रियां अथवा स्त्रीपुत्रादि

क्रौंची, घृतशाष्ट्री, शुवी ५ इन अरुणाके परिगृहन २ अभिषेककौं उत्तमांगपैं[1] उचित अम्बु[2] दीनौं १२ ॥ ३१ ॥

पीछैं आयति, नियति, रात्रि, निद्रा ४ ए जो लोकके संस्थान के कारण१; तथा उमा, सेना, शची, धूमोर्णा, निरति, गौरी, शिवा, बुद्धि, बलया, नंदिनी, आनृक्या, ज्योत्स्ना, वनस्पति १३ ए कालके अवयवभूत २ तिन अभिषिक्त कस्यो १३।

अरु आदित्य, इंदु, आर[3], इलारमण[4], आंगिरेस[5], उशना[6], आँकि[7], अर्गु[8], आहिक[9] ९ इन नव ९ गृहन अभिषेक बिस्तस्यो १४॥

तदनंतर स्वायंभुव, स्वारोचिष, औत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष वैवस्वत ७ इन सातौं ७ ही भूतमनुन सिंचमान कियउ १५।

अरु सूर्यसावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, रौच्य, भौत्य७इन भावी[12] मनुनके नाम करि गर्ग मुनिनैं ही सिंचिदियउ १६ ॥ ३२ ॥

बहोरि बिश्वभुक्, बिश्वपा, चित्र, सुशांत, सुमुख, बिभु, मनोजव, ओजस्वी, बलि, एकतम, अंतिक, वृष, कृत्तिधामा, दिविस्पृक्, शुचि १४ इन चतुर्दश देवपालन अभिषेक कीनौं १७।

अरु रेवंत, कुमार, वर्चा, वीरभद्र, नंदी, बिश्वकर्मा, पुरोजव७इन देवमुख्यन१; तथा आत्मा, आद्य, असुमान्, दत्त, पटु, प्राण, हविष, गविष्ठ, ऋत, सत्य१०इन दश आंगिरस देवन२; अरु क्रतु, दीक्ष, बसु, सत्य, काल, काम, मुनि, घृतिमान्, मनुज, रोचमान १० इन दश विश्वेदेवन सिंचिदीनौं १८॥

पीछैं मृगव्याध, सर्पि, निर्ऋति, अजैकपात्, अहिर्बुध्न्य, पुष्पकेतु, बुध, भरत, मृत्यु, कापालि, किंकिणि११इन ग्यारह रुद्रन१; तथा भुवन, भावन, सुजन्य, सुजस, ऋतु, सुवर्णवर्ण, वाज, व्यसुत प्रसव, आवय, दक्ष ११ इन भृगु नामक देवन२ सेक[13] कस्यो १९।

१मस्तक पर २जल ३मंगल ४बुध ५ बृहस्पति ६ शुक्र ७ शनैश्चर ८ राहु ९ केतु १०जिसपीछैं ११ पहिले समय में हुए १२ होनेवाले १३ सिंचन

अरु मन, मरु, प्रान, नर, अपान, चिति, हय, नय, हंस, नारायण, दिविश्रेष्ठ, जगद्धित १ इन द्वादश साध्यदेवन सहित१; धाता, मित्र, अर्यमा, पूषा, शक्र, अंश, वरुण, भग, त्वष्टा, बिबस्वान्, सविता, बिष्णु १२ इन बारह आदित्यन ह सेचन बिस्तरयो२०॥३३॥

तदनंतर[2] एकज्योति, द्विज्योति, त्रिज्योति, चतुर्ज्योति, पंचज्योति, एकशक्र, द्विशक्र, त्रिशक्र, इंद्र, मित १० सम्मित, अमित, ऋतजित, सत्याजित्, सुषेण, सेनाजित्, अतिमित्र, मित्र, पुरुजित्, अपराजित २० ऋत, ऋतवान्, धाता, वरुण, विधृत, ध्रुव, विधारण, महातेजा, ईदृश, अन्यादृश ३० एतादृश, अमिताशन, क्रीडन, श्क्ति, सरभ, महायशा, धातुरूप. मुनि, भीम, अत्युक्त४० क्षिप, सहद्युति, बपु, अनाधृष्य, वास, काम, जय, विराट्, सुकृत ४९ इन एकोनपंचास मरुदभिदेवन सेचन रचायो २१ ।

अरु चित्रांगद, चित्ररथ, चित्रसेन, ऊर्णायु, अनघ, उग्रसेन, धृतराष्ट्र, सोम सूर्यबर्चा, दुराध १० तृष्णाप, कीर्णि, दिविश्चित्र, कलि, अंगिरा, पर्जन्य, नारद, वृषपर्वा, हंस, हाहा २० हूहू, बिश्वावसु, नामूक,सूरुचि२४इत्यादि गंधर्वन सहित१; आह्नुती, शोभयंती, बेगवता, आप्नुवती, ऊर्क्, वेकुरि, बभ्रु, अमृतरुक्, भू, रुक्, भीरु शोचयंती१२इन दिव्य अप्सरनके समूह२ अभिसिक्त[3] बनायो२२ ॥

त्योंही अनुत्तमा, सुरूपा, सुकेशी, मनोवती, मेनका, सहजन्या, पूर्णाशा, पुंजिकस्थला, ऋतुस्थला, घृताची१०, बिश्वाची, पर्वचित्ती, प्रम्लोचा, अनुम्लोचा, रंभा, उर्वशी, पंचचूडा; सामवती; चित्रलेखा; मिश्रकेशी २० सुगंधि; बिद्युत्पर्णा; तिलोतमा ; अदृश्यलक्ष्मणा, आहेमा; अमिता, ललिता; सुवृत्ता; सुबाहु; सुबोधा ३० सुबपु; पुंडरीका; मुदारा; सुराधा; सुरसा; हेमा; सरस्वती; कमला; सूनृतालया; सुमुखाहं४०सपादी; वासोली; रतिलालसा ४३ इत्यादिक अपरहू अप्सरनके समूहनैं अभिषेक कीनौं २३ ।

१सिंचन (मस्तक पर जल डालना)२ इस पीछे ३अभिषेक४दूसरे.

अरु दैत्यराज प्रल्हादनैं; बिरोचन, बाणादि दैत्यनके१; बिप्रचित्ति; प्रमुख दानवनके२; तथा हत्य; प्रहत्य; सलिलेंद्र; सुकेशी;पौरुषेय; यज्ञहा; पुरुषादक; बिद्युत्; सूर्य; व्यास; बध; रसन१२ इन आद्य राक्षसनके३; नाम करि सिंचिदीनौं२४ ॥ ३४ ॥

बहोरि सुसिद्ध,मणिभद्र,सुमन,नंदन,कंडूति,मणिमान्, बसुमान् सर्वानुभति,शंख,पिंगाक्ष१०चतुर,यम,मंदरस,भीम,पद्मचंद, प्रभाकर, मेघवर्ण,भव्य,प्रद्योत, भूतिमान्२०केतुमान्, मौलिमान्, श्वेत, बिपुल, प्रद्युम्न, यज्ञपक्ष, वलाक,कुमुद,वलाहक,पद्मनाभ ३०,सुगंध, सुवीर, बिजयाकृति, पौर्णमास, हिरण्याक्ष, शतजिव्ह ३६ इत्यादि राजवृद्धनके नाम करि मुनिराज वशिष्ठ अभिषेक ठान्यौं २५ ।

अरु शंख, पद्म, मकर, कच्छप, महापद्म, नील, खर्व, कुंद, मुकुंद९ इन नव९ निधिन सहित१; छगल,एकवक्र, सूचीमुख, दुष्पूरण, बिशाद,ज्वलनांगारक,कुंभपात्र,प्रतुंड, उपबीत, उलूखल,१० अकर्ण, चक्रखंड, पात्रपाणि, पांसु, वितुंड, विपुल, स्कंदन १७ इत्यादि पिशाचनकी जाति नैं२सेचन करि मोद मान्यौं २६ ॥

पीछैं ब्रह्मचर्यस्थित[2] दांत सर्वज्ञ सर्वदर्शी नानाबदन-बाहु-शिरोधर चतुष्पद पराट्टाल-शून्यालय-निकेतन असे गिरीशके[3] गणन अभिषेक कर्‍यो २७ ।

अरु महाकाल१कौं रु नरसिंह२ कौं अग्गैं करि समस्त मातृगणन१;ग्रहस्कंद, बिशाख, नैगमेय३ इत्यादि स्कंदग्रहन[4] सहित२ सेचनके उचित सलिल चंडासिके सीस धर्‍यो २८ ॥ ३५ ॥

बहोरि डाँकिनी, योगिनी, खेचरी, भचरी, समेत१; गरुड, अरुण, आरुणि, संपात, बिनत, बिष्णु, गंधकुमारक७इन सुपर्णदेवन[6] सेचन[7] रचायो २९ ।

१आदि२ब्रह्मचर्य रखनेवाले,तप के क्लेश को सहन करनेवाले,सब जाननेवाले, सब के कार्याकार्य को देखनेवाले अनेक मुख भुज शिरों को धारण करनेवाले, चार पगोंवाले३ महादेव के४देवी के द्वारपाल (सेवक) ५ देवी की दासियों के नाम हैं ६ पक्षी ७ सिंचन

अरु अनंत, बासुकि, शेप, तक्षक, सुपर्णारि, कुंभ, वामन, अं-जनोत्तम, ऐरावत, महापद्म१०कंबल, अश्वतर, एलापत्र, खड्ग,क-र्कोटक, धनंजय, महाकर्ण, महानील,धृतराष्ट्र, बलाहक२०कुमार, पुष्पदंत, गंधर्व, सनस्विक, नहुष, खररोमा, शंखपाल,पद्म,कु-लिक, पाणि, ३० इत्यादि नागराजन अभिपिक्त बनायो ३० ॥

फेरि कुमुद, ऐरावत, पद्म, पुष्पदंत, वामन,सुप्रतीक, अंजन, नील८इन आठौं दिग्गजन सहित१; पितामहके हंस,शंकरके वृषभ, इंद्रके अश्वपति उच्चैःश्रवा३;तथा धन्वंतरि, कौस्तुभमणि, पांचजन्यादि शंख३ त्यौंहीं सुदर्शनादि चक्र, पिनाकिशूलादि शूल, बज्र, नंदकादि खड्ग, अस्त्र५ इत्यादिकन२ अभिषेक करि बिजयको आशिप दीनौं ३१ ।

अरु वृद्धशाख, धर्म, सत्य, दान, तप, यश, यज्ञ,आयु, ब्रह्मचर्य, दम, शम, चित्रगुप्त१२इन सहित१;तथा दंड, पिंगलक, मृत्यु,काल, अंतक, बालखिल्य६ इन समस्तन२ अभिपेक कीनौं ३२॥३६॥

तैसैंही संपूर्ण गौं सुरभि समेत च्यारि४ जे दिग्धेनु, तिन सेचन कियउ ३३।

त्यौंही बेदव्यास, वाल्मीकि, शमन, पराशर, देवल, पर्वत,दुर्वासा,भार्गव, शुचि, याज्ञवल्क्य१० जाबालि, जमदग्नि,शुचिश्रवा; विश्वामित्र; स्थूलकच्छ; वर्धन;अत्रि;विदूरथ; एकत;द्वित२०त्रित; गौतम; गालव; शांडिल्य; भरद्वाज; मौद्गल्य; वेदवाहन; वृहदश्व; कुटिमृड; जयजानु३०घटोदर;यवक्रीत; रैभ्य; आत्मधामा; जैमिनि;सारंगव; अगस्त्य; दुंदु; मृदु४०मृष;इध्मवाह; महोदय; कात्यायन, कण्व, वलाक, इभनंदन४६ इत्यादि मुनीश्वरन अभिपेक करि आशिप दियउ३४॥

बहोरि पृथु, दिलीप, भरत, दुष्यंत, शत्रुजित्, मनु, ककुत्स्थ, अ

१ सर्पराज २ महादेव की सूल ३ विष्णु का खड्ग ४ गायें ५ बछड़े ६ दिशा की हथनियां ७ फिर

नेना, युवनाश्व, जयद्रथ१०मांधाता, मुचुकुंद,पुरूरवा, इक्ष्वाकु, यदु, पूरु, भूरिश्रवा, अंबरीष, वृहदश्व, महाहनु२०प्रद्युम्न, सुद्युम्न, भूरिद्युम्न, संजय२४इत्यादिक स्वर्गवासीनरेश्वरन आय अभिषेक पूर्वक बिजयको आशीर्बाद दयो ३५ ।

अरु पर्जन्यादि मेघ, द्रुम[1], ओषधि, रत्न, बीज५ एहू समस्त हाजरि हे[2] तिन सहित१ ; अप्रमेयात्मा[3] पुरुष, पृथ्वी, वायु, आकाश,जल, तेज, मन, बुद्धि, अव्यक्तात्मा९ इन२हू अभिषेक निर्मयो३६ ॥३७॥

तदनंतर रुक्मभौम, शिलाभौम, पाताल, नीलमृत्तिक, पीत, रक्त, असित, श्वेत, भौम९ इन अधोलोकन[5] सहित१; जंबू, शाक, कुश, क्रौंच, शाल्मली, प्लक्ष, पुष्कर७ इन सप्त७ द्वीपन२ औषध रत्न सलिलादि उचित सामग्री करि अभिषेक ठान्यौ[6] ३७।

अरु उत्तरकुरु, रम्यक, हिरण्मय, भद्राश्व, केतुमाल, इलावृत, हरिवर्ष, किंपुरुष, भारत९ इन जंबू द्वीपके नव९ खंडन सहित१; इक्षुद्वीप, कशेरुद्वीप, ताम्रवर्ण, गभस्तिमान्, नागद्वीप, सौम्यद्वीप, गंधर्वद्वीप, वरुणद्वीप, अभयद्वीप९इत्यादि उपद्वीपन हू सेचन बिधाय आनंद आन्यौ ३८ ॥

त्योंही हिमवान, हेमकूट, निषध, नील, श्वेत, शृंगवान, मेरु, माल्यवान, गंधमादन, महेंद्र, मलय, रैवत, सह्य, शुक्तिमान, ऋक्षवान, विंध्य, पार्यात्र, इत्यादिक[7] अद्रिराजन अभिषेक रचायो ३९। अरु ऋग्वेद, यजुर्वेद, साम, अथर्व४इन वेदन१; इतिहास, अरु धनुर्वेद, गांधर्वबेद, आयुर्वेद, शिल्प ४ इन उपवेदन २; अरु शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्ति, ज्योतिष, छंद६ इन वेदके छहि अंगन ३; तथा च्यारि ४ वेद ४ ; वेद के छ६ अंग ६ । १० मीमांसा ११ न्याय १२ धर्मशास्त्र १३ पुराण१४ इन चतुर्दश१४ विद्यानैं४ ; तथा सांख्य, योग, पंचरात्र, वेद, पाशुपत, कृतांतपंचक६ इत्यादिक अनेक शास्त्रन५हू बिजयको आशिष लगायो ४०॥३८

१वृक्ष २ थे ३ परमेश्वर४ प्रकृति ५ पाताल ६ करके ७ पर्वतराज

बहोरि गायत्री, गंगा, गांधारी, नारी४ इन१; तथा देव, दानव, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, पन्नग, ऋषि, मनु, गो, देवमाता१० देवपत्नी, द्रुम, नाग, दैत्य, अप्सरोगण, अस्त्र, शास्त्र, राजा, बाहन, औषध२० रत्न, काल, तदवयव, स्थान, पुण्यायतन, जीमूत, तद्विकार२७ इ-न२ ; तथा इहाँ कहे रु न कहे तिन समस्तन३ शत्रुशातनको आ-शिष दीनौं४१।

अरु लवणोद, क्षीरोद, घृतोद, दधिमंडोद, सुरोद, इक्षुरसोद, स्वादूद, गर्भोद८इन समुद्रन१ ; तथा इहाँ अधिकारी च्यारि४सागर इनहू समस्तन२ सुंदर स्वैस्व सँलिल करि अभिषेक कीनौं ४२॥

त्योंहीं पुष्कर, प्रयाग, प्रभास, नैमिष, ब्रह्मसर, गयशीर्ष, का-लोदक, नंदिकुंड, उत्तरमानस, स्वर्गमार्गप्रद१० पंचनद, भृगुतीर्थ, अमरकंटक, कलिकालाश्रम, तृणबिंद्वाश्रम, गोतीर्थ, अग्नि तीर्थ, स्वर्गतीर्थ, जंबूमार्ग, तंडुलिकाश्रम२०कपिलतीर्थ, वातिक, खंडिक, महासर, आगस्त्य, कुमारीतीर्थ, अंगद्वार, कुशावर्त्त, बि-ल्वक३० कनखल, सुगंधा, सुधारा, धराकुंभा, शाकंभरी, भृगुतुं-ग, कुब्जाम्रक, कपिलाश्रम, चमसोद्भेदन, विनशन४० अग्नितुंग, मोच, अश्वगंध, कालंजर, केदार, रुद्रकोटि, महालय, बदर्याश्रम, नंदा, सोमतीर्थ ५० सूर्यतीर्थ, इंद्रतीर्थ, आश्विनतीर्थ, बारुण, बायुतीर्थ, कुबेरतीर्थ, ब्रह्मतीर्थ शिवतीर्थ, यमतीर्थ, अनलती र्थ ६० बिरूपतीर्थ धर्मतीर्थ, अप्सरस्तीर्थ, ऋषितीर्थ, वसुती र्थ, साध्यतीर्थ, मरुतीर्थ, आदित्यतीर्थ, रुद्रतीर्थ, आंगिरस्तीर्थ ७० विश्वेदेवतीर्थ, भृगुतीर्थ, तथा प्लक्षप्रस्रवण, बसुपुत्र, शालिग्रामसर, वाराहसर, मानस, कामाश्रम, त्रिकूट, चि-त्रकूट ८० पूर्वक्रतुसार, विष्णुपदसर, कापिलतीर्थ, वासु कितीर्थ, सिंधुत्तम, तपोद्वार, सूर्यारक, कुंभक, पुंडरीक

१ नाश करने का २ अपने अपने ३ जल ॥

गंगासागरसंगम ९० सिंधुसागरसंगम, कुंभावसुंद मानसर, बिंदु-सर, स्वच्छोदकसर, धर्मारण्य, फल्गुतीर्थ, अविमुक्त, लौहित्य, वदरीपावन १०० सप्तर्षितीर्थ, वह्नितीर्थ, पुण्यवस्त्रापथ, मेष, छागलेश, पुष्पन्यास, हंसलद, अश्वतीर्थ, कारणास्रव, मणिमंथ ११० दिविका, इंद्रमार्ग, स्वर्णबिंदु, आहल्यक, ऐरावत, ऐरावती, समुद्भेद, भोगयश, करवीर, नागध१२०वणिक, पापमोचनिक, ऋण मोचनिक, उद्वेजन, संपूज्यसर, देवब्रह्मसर, सर्पि, दधि,१२८इत्यादिक उक्त सम्पूर्ण, तीर्थन अभिषेक ठान्यौं ४३।

अरुगंगा, ह्लादिनी. पावनी, सीता, चक्षु, सिंधु, नर्मदा, सुप्रभा, कांचनाक्षी१०बिशाला, मानसी, ह्रदा, सरस्वती, ओघनादा, सुबेशा, बिमलोदका, शिप्रा, शोण, तर्ष२०सरयू, गंडकी, अच्छोदा, बिभागा, चन्द्रभागा, इरावती, वितस्ता, देविका, रंभा, अकेशा ३० देवन्हदा, इक्षुमती, कौशिकी यमुना, गोमती, धूतपापा, वाहुदा, निर्बिंध्या, तृतीया, लोहित४०देवस्मृति, बेदमाता, बेदघुर्घरदा, पर्णाशा, वंदना, सदानीरा, कुमुद्वती, पीता, चर्मण्वती, धूमा ५० विदर्भा; वेणुमती, अवंती, कुंती, सुरसा, पलाशिनी, मंदाकिनी, दशार्णा रेवा, तपती ६० पिप्पली, श्येनी, करतोया, पिशाचिकी, चित्रोपला, चित्रवर्णा; मंजुला; वाकुला; अमला; शक्तिमती ७० सिनीवाली, मद्रिणी; तृपिका; अ कपू; तापी;पयोष्णी असिता; निषधावती; वेणा, वैतरणी ८० भीमा; मंदरा; कुहू; तोया; महागौरी; दुर्गति, मंगला; गोदावरी; भीमरथी; कृष्णावर्णा ९० तुंगभद्रा; ऋषिकुल्या; वात्या; काबेरी;कृतमाला; ताम्रपर्णी; पुष्पभद्रा; उत्पलावती; नृस, मा; ऋषिकुल्या १०० इक्षु ी; त्रिदिवालया; लांगुली; बंशधीरा; जंबू; सुकुलावती ऋषिका;वरबेगा, मंदगा;मंदवाहिनी११०क्षया; दया; व्योमा, कालबाहिनी,कंपला; बिशाला; करतोया; सुवाहिनी; ताम्रा;अरुणा; वेत्रवती;१२०सुभद्रा;अश्वती; आद्रिका; आदिमा;हिरण्म

यी; आर्यगा, सोपला; आभासी; सन्ध्या१३०वडवा; महेंद्रवाणी; शाला; मालिका; बलयावती; नीलोद्धतकरा; वाहुदा; बनवासिनी; नंदा; परनंदा;१४० सुनंदा; बसुवासिनी१४२इत्यादिक समस्त नदीन अभिषेक करि विजयार्थ बखान्यौं४४ ॥ ३९ ॥

ताके[1] अनंतर इंद्रदत्त[2] गज[3]वरुणदत्त हय[4]ए नरेशके आरोहणके उचित उहाँ आनि इनहूकों अभिषिक्त बनाये।

अरु बंदीजननके बिबिध बंदन बैरिनसों बिजयके बिबर्द्धक बिरुद लगाये॥

ऐसी रीति राजमान रावराजेंद्ररामसिंह रावरे परपुरुष चंडासिके अर्बुद अंचलपैं अभिषेक भयो॥

अरु रथारुढ होतही चारके अनुकार असुरनके अनीकमैं अगारोही आतंक गयो॥ ४०॥

इतिश्री बंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीयराशौ चण्डास्याभिषेचनं द्वादशो१२मयूखः॥ १२॥ आदितः सप्तत्रिंशः॥ ३७॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा

दोहा॥

इम ताकौं अधिराजपन, दै सुर मुनिन दुरूह॥
पिल्ल्यो[15] भूप सु खलन पर, जंपि[16] विजय जसजूह[17]॥१॥
जयरथ चढि चंडासि जब, अभिषेचन लहि अंक॥
चापहिं टंकारत चल्यो, असुरन हनन असंक॥ २॥

गीतिका॥

१तिस पीछे २ इंद्र का दियाहुआ हाथी ३ बरुण का दियाहुआ घोड़ा ४ चढने को ५ बढानेवाले स्तुति ७ शोभायमान ८ हे रामसिंह ९ पर्वत पै १० हलकारे का ११ अनुकरण (नकल) करनेवाला १२ सेना में १३ भय॥

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में चंडासि के अभिषेक होने का बारहवाँ मयूख समाप्त हुआ॥ १२॥ आदि से सैंतीस मयूख हुए॥ ३७॥ १४ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसा १५ भेजा १६ कह कर १७ समूह

प्रभु देव बिप्रन पुजिकैं चहुवान संगरपैं[1] चढ्यो,
विजयावलोकनको[2] उछाह समस्त लोकनमैं बढ्यो ॥
उततैंह आत्मज[3] बानके चहुवानके सिर चँक्रमे[4],
अतिनिम्न[5] ढाल बिसाल ज्यौं फनजाल आलुंकके[6] नमे । ३ ।
जिम तेलभाजन[7] वर्तिका रेसना हजार उभे२००० कढी,
बंलि होत दंतुलि चीर पीर बराहके सिरमैं बढी ॥
मृत[11] ज्यौं लहैं पुनि प्रान अद्रिन[12] संघ[13] जंगम[14] यौं भये,
नभसिंधु नीर उडान लै पवमान[15] लै घन ज्यौं गये ॥ ४ ॥
कमठेसको उर त्यौं भटचारनकी अधिश्रयनी[16] भयो,
प्रजराव ताव अलाव कालिक[17] पूपिका[18] जिम पक्कयो ॥
धरि कार्णिकौं[19] मुखमैं भये जड दिक्करी[20] करि चिक्करी,
पलचार[21] के[22] हुव संग गिद्धनि१ कंक[23]२ फेरव[24]३ फिक्करी[25]४ ॥५॥
सलभाऽवरोधक[26] खेत लट्टत आनि कानफटा[27] लगैं,
तिम भूत१ रक्खस२ डाकिनी३ रु पिसाच४ पातरिकौं पगैं ॥
ग्लह[28] अक्षदेविन[29]को मनोरथ हारिपैं बढतो रहैं,
इम आय कौतुक काज नारदहू खरे महती[30] गहैं ॥६॥
जिम रंक काणकपर्दकैं[31] सिवं[32] मुंड संचयकौं चले,

---

१ युद्धपै २विजय के देखने का ३पुत्र ४सेना में ५बहुत गहरी और मोटी ढाल के समान ६ शेष के (यहां फनजाल के कहने से सामान्यसर्प को छोड कर शेष नाग का ग्रहण है) ७ दीपक में वर्त्ती होवे जैसी ९जिह्वा १० पुनि ११ मराहुआ शरीर फिर प्राण धारण करके चलने लगे ऐसे १२ पर्वतों के १३ समूह १४ चलनेवाले १५ पवन को लेकर १६ चूल्हा १७ कलेजा १८ पुआ (मालपुआ) १९ सुंड का अग्र भाग २० दिशा के हाथी (दिग्गज) २१ मांस खानेवाले २२ कितने ही २३ ढींच, पक्षी विशेष २४ स्याल २५ फेकरी २६ टीडियों को रोकनेवाला कनफँटा खेत लाटते समय अपना पात्र (खप्पर) भराने को आलगता है. इसीप्रकार भूतादिक भी पात्र भरने को प्राप्त होते हैं २८ द्युत में (जुआ खेलने में) २९ द्यूत खेलनेवालों का ३० नारद की वीणा का नाम है ३१ फूटी कोड़ी को ३२ महादेव मस्तक इकट्ठे करने को

द्विज मिष्ट खावन वीर बावन५२ छिप्र त्यौं पहुँचे भले ॥
जिम इंद्रजालिकके कुतूहल बाल जुग्गिनि यौं भजी,
ससिसूरनैं तम भाविके भ्रम खेहकी चिकै सी सजी ॥७॥
छिर कुमित्र ज्यौं ब्रहमंड खप्पर मेलकौं तजनैं लगे,
जिम तेयको लखि क्रेय ऊरुज भीरु यौं भजने लगे ॥
भरि दंड ज्यौं खल कैदनैं ध्वजदंड अंबर यौं खुले,
अँधमर्ण ज्यौं लखि उत्तमर्णहिं चक्क चक्किन जी डुले ॥८॥
नृप बार ज्यौं द्विज बार यौं खँ छई बिमाननकी तती,
नहिं सूर देइ दिखाव ज्यौं बिनु नाह आननको सती ॥
चहुवानके रथचक्र ह्वाँ पवमानके गुटके भये,
घमसानके महिमान बानन बानके सुत बिंटये ॥९॥
उततैंहु सम्मुह वे अदेवहु भद्दके घन ज्यौं झुके,
पय देत ज्यौं नट पट्टरी धरनी अधोबिल यौं धुकै ॥
कुलटा निसामुख गेहतैं जिम तेग केकनपैं कढी,
बनसी कि मीननपैं कितेकन मुच्छ नैंननपैं चढी ॥१०॥

---

१ शीघ्र २ इन्द्रजाली का तमाशा देखने को ३ बालक भागते हैं ऐसे ४ चन्द्रमा और सूर्य ने होनेवाले अंधेरे के भ्रम से ५ पड़दा ६ खोटे मित्रमिलाप को छोड़ देते हैं ऐसे ७ ब्रह्मांड के दोनों कटाह ८ चोरी को देख कर वस्तु मोल लेनेवाला १० बनिये भागें ऐसे ११ कायर भागने लगे, कैद भुगत कर दुष्ट पुरुष दंड से छूटते हैं ऐसे ही ध्वजा भी दंड से छूटी [यहां दंड शब्द में श्लेष है] १२ आकाश में १३ ऋण लेनेवाले (धुर) का जीव १४ ऋण देनेवाले (घोहरे) को देख कर डुलता है ऐसे ही १५ चकवा चकवियों का जी डुले १६ वशिष्ठ ऋषि के द्वार पर १७ आकाश में १८ पंक्ति १९ मुख (विमानों की पंक्ति के कारण सूर्य दिखाव नहीं देता, जैसे पतिव्रता स्त्री अपने पति बिना अन्य को मुख नहीं दिखाती) २० पवन के २१ युद्ध के २२ पाहुने २३ बाणों से २४ दैत्य भी २५ नट के पग देने से पटड़ी झुके ऐसे २६ भूमि और पाताल २७ सायंकाल (सायंकाल के समय से ही कुलटा स्त्री अपने घर से निकसे इसप्रकार) २८ तरवार कितने ही लोगों पर कढी २९ मच्छी पकडने का कांटा ३० किंधूं ३१ मच्छियों पर लगे जैसे कितनों की

कुनरेस सासन[1] ज्यौं सरासन[2] जीविका करखैं किते,
बुधका[3] बिपत्ति[4] समान प्रासन[5] पिल्लिकैं परखैं किते ॥
तिय ज्यौं हिंडोरन अद्रि[6] ओरन भिंदिपालन[7] पैं चढे,
भुज जोर जोरन जंग[8] ओर कुराज्य चोरन त्यौं बढे ॥ ११ ॥
वृखे[9] अंस कूबर बंस तुल्ल्य गदा किते करपैं रहैं,
अहि गारुरू[10] कर ज्यौं कितेकन पासि[11] प्रेरनकों[12] गहैं ॥
मधुसेस[13] छात किरात ज्यौं खल ओठ लेहनके[14] करैं,
जिम गैनतैं[15] उलकों[16] कितेकन नैंनत चिरगी झरैं ॥ १२ ॥
हलतैं[17] कि फारक फालदंत कुदाल केकनके कढे,
नृप मूढतैं[18] कि अजान मान कितेन कान बडे बढे ॥
जिम बेल[19] बालन जार यैं करि सिंह सब्द डरावते,
वनितानके मन मंत[20] ज्यौं अभिमान अंग न मावते ॥ १३ ॥
कुबंधू[22] बिपत्ति प्रयास[23] ज्यौं जिन्ह नास सास बज्यौं करैं,
छिरिको[24] दयैं तृनकूर्च[25] ज्यौं जिनके तनूरुहैं[26] उब्भरैं ॥

मूछें नेत्रों में लगीं १खोटे राजा की आज्ञा जीविका को खैंचती है ऐसे२धनुष की जीविका[प्रत्यंचा]को कितनेक खैंचते हैं ३पंडित ४बरछी ५भेजकर ६पर्वत के टुकड़े (पत्थर) ७गोफनों (पत्थर फैंकने का चमड़े का बनायाहुआ यंत्र) पर ८ युद्ध की तरफ ९ बैल के कंधे के ऊपर की कूँधड़ (ककुद) और बाँसे के दाड के समान१०कालबेलिया के हाथ पर सर्प रहे इस माफिक११पासी(फंदा) चलाने को१२मुशाल के खाली छाता को भील लोग चाटते हैं ऐसे १४ओठ चाटते हैं १५आकाश से १६ अंगीरा पडे ऐसे१७हल के फाल्या के समान कितने ही कुदालदन्तों (जिसके दंत मुख से बाहर निकले हुए होवें उसको कुदालदन्ता कहते हैं) के दांत कढे १८मूर्ख राजा से अजान (निर्गुणी) मनुष्य का सम्मान बढे ऐसे उनके कान बढे १९ बाग में अपना सहेट स्थान शून्य करने के अभिप्राय से जार पुरुष जैसे सिंह का शब्द करके बालकों को डराता है ऐसे ही ये दैत्य भी सिंह शब्द करके डराते हैं. २० स्त्रियों के मन में सलाह (गुप्तबातें) नहीं ठहरती ऐसे उन दैत्यों के अङ्ग में अभिमान नहीं समाता २२ खोटी स्त्री २३ आपदा के परिश्रम में नकसासी होजाती है ऐसे उन दैत्यों के नाकों में श्वास बजता है २४ छींटा देने से २५ चारा का पूला फूलता है इसप्रकार २६ रोम उभरता है

पटे टारि[1] चंचल नारि नैंन कि लंबजीह कढैं दुरैं,
कुच कंप पी[2] कर संगसौं रिसतैं रदच्छद[3] यौं फुरैं ॥ १४ ॥
बिकराल रीढकें[4]सौं लगी जिम बंक्रि[5] बक्रितें बंफैंनी[6],
इक कार्णा[8] अंधन[9] ओघेम इम जीत बुल्लत अप्पनी ॥
गृह छत्ति थप्पिन मारि यौं पय डारि भू धमकावते,
पयं[10] भत्त बालक हत्त ज्यौं खल चंड चोट चलावते ॥ १५ ॥
तरु तालके दलें नाल[11] ज्यौं बिकराल यौं नखरौं[12]वली,
सलभौं[13]वली सम जे छवावत दौंव लीन[14] सरावली[15] ॥
चहुवानपैं इम दैत्य दुष्टन सज्झको घनें[16] सो रच्यो,
अति जोरसौं दुँहुर ओरतैं घमसौंन[17] घोर उहाँ मच्यो ॥ १६ ॥
मुरं[18] सज्जि चापें[19] कलापं[20] कीलकौं[21]जिन्ह मुद्गरसौं लरयो,
तरवारिसौं बकैं[22] शारिपैं धकैं[23] धारि सम्मुह उच्छरयो ॥
तँहँ धूम्रकेतन चक्र जंभें[24] प्रलंबें[25] तोमैंर[26] पिल्लैंये[27],
न्हदतुंद चालुक काणा नैसृंग[28]सौं सिलोच्चय[29] ठिल्लये ॥१७॥
गहि सूल सूलिक तालहस्त सु तालं[30] हस्तहि लै जुरयो,
असि ढालसौंहिं कराल आनन कालैं[31] बानिक बिप्फुरयो ॥
इखुं[32] चापसौं बक केसि धेनुक औ अलंबुस उज्झले,
खल कालजिन्ह रु रीतिलोचन पत्रपालैं[33]हि लै चले ॥ १८ ॥
अर्धं[34]अद्रि नक्र हिडंब संबर व्योमैं[35] अद्रिनतैं लरे,
किरमीर पीठ अलायुधादिक पास पट्टिसैं[36] लै खरे ॥

१वस्त्र का दूरकरके २पति के हाथ लगने से ३ओठ ४पीठ का हाड५ पंसुली ६बांकी७नेत्रों की भांपर्नी८एक कांणा पुरुष९अन्धों के समूह में१०दूध भात पर पालक के हाथ चलें ऐसे ११ ताड वृक्ष के पत्ते की नाली के समान १२नखों की पंक्ति१३टीडियों की पंक्ति के समान१४दावाग्नि में लीन हुए १५घासों की पंक्ति छावते हैं१६मेघ१७युद्ध१८दैत्य का नाम है१९धनुष२०भाथा२१दैत्य का नाम है २२ बकासुर २३ क्रोध २४ जंभासुर ने २५ लंबा २६ भाला २७ चलाया २८ भिंदिपाल (गोफण) से २९ पर्वत ३० ताड का वृक्ष हाथ में ले कर ३१ यमराज के वेश से ३२ धणु ३३ लंबा छुरा ३४ पाप का पहाड़ ३५ आकाश में ३६ कटारी

बक भौम बच्छ गहैं गदा सकटाख्य सक्ति गहैं सज्यो,
इतिआदि आसुर संघ[1]को बहुसंघ सस्त्रनको बज्यो ॥ १९ ॥
चहुवान भूपहु चौंप[2]सौं क्रमतैं खलायुध कट्टिकैं,
सबकै दये छत[3] सूर लंतत दाव उद्धत दट्टिकैं ॥
मुर चाप कट्टत सांगि लै पटकी नरेश्वर सीसपैं,
जिम दंत तुट्टत केहरी करसूक[6] बाहत रीसपैं ॥२०॥
वह सांगि आवत भूप लै मुर बच्छ[8]मैं उलटी दई,
न जरूरही बड दानको फल होय तो महिमा गई ॥
इति घाय मोहित घुम्मिकैं मुर भुम्मि चुंबनकौं लग्यो,
अति छोहसौं पुनि द्रोहसौं तजि मोह सोवत सो जग्यो ॥ २१ ॥
नृप मग्गप जिम इल्वला[12] सर पंच५ यौं बहुरयौं दये,
तिन अर्धचंदन[13] पंच सेखर[14] चंद्रसेखर से भये ॥
इक प्रानगाहक[16] बान लै उर फोरि हू मुरकै दयो,
तिहिं घाय जो करि हाय स्यंदन[17] छोरि अंबर[18]मैं गयो ॥ २२ ॥
बनि कल्प[19] बारिद[20] दुष्ट जो बरख्यो सिला पबि[21] बिज्जुरी,
तब भूपके हिय मंत्रसौं पवनास्त्र प्रेरनकी फुरी ॥
पुनि मेरुकूटहिं तोरिबे जिम यो सदागति[22] निक्खस्यो,
तिहिं जोरसौं घनघोर अंबर ओरको मुरको नस्यो ॥ २३ ॥
उडु[23] ज्यौं बहै तब दिट्ठि आत बहोरि बानन विंधयो,
यह मेह[24]को फल सेह[25]को खल देहको खल[26]को भयो ॥

१समूह२उत्साह से३घाय४निरंतर५सिंह६नख७बरछी८छाती में९मूर्छित१०को धसे११मूर्छा१२मृगशिर नक्षत्र के ऊपर छोटे पांच तारे हैं उनका नाम इल्वला है, भावार्थ यह है कि चहुवान राजा रूपी मृगशिर पर इल्वला रूपी फिर पांच बाण दिये१३वे अर्धचन्द्राकार पांचों बाण१४शिरोभूषण१५महादेव के हुए अर्थात् महादेव के मस्तक में अर्धचन्द्र भूषण रूप है ऐसे ही ये पांचों बाण चहुवान के शिरोभूषण हुए १६ प्राण लेनेवाला १७ रथ को १८ आकाश में १९ प्रलय का २० मेघ२१वज्र२२पवन२३तारा के समान वह (मुर नामक दैत्य) २४ इस मेघ रूपी बाण वृष्टि का यह फल हुआ२५सेली(सल्लक)के समान अर्थात् सहे ली के शरीर पर शूलें होवें ऐसे२६शरीर की खोली(मृतक शरीर)मुर दैत्य की

मुरकी अनी मुरकी अनीर रही अनीर बिचारि कैं,
तब कीलजिव्ह हु मारि मुग्गर व्हाँ जुस्यो किलकारिकैं ॥२४॥
घन तास स्यंदन वाजि संजुत प्रास दै नृप कट्टये,
दितिजात छत्तिय पत्रवाह पचास५० पन्नग से दये ॥
नर अश्वतैं तिय ज्यौं मृगी खल इक१बेरहिमैं छक्यो,
इम भूप अंचत मासुरी लखि आसुरी दल ओदक्यो ॥ २५ ॥
हयवग्ग लै तब अग्ग व्है बँक खग्ग झारिय आनिकैं,
तिहिं तोरि भूपहु मत्थपैं पटकी गदा पहिचानिकैं ॥
गिरिकी गुहा सन गैरिकौं जिम रत्त झारि नक्कतें,
बक रोकि दुल्लभ प्रानकौं कढिगो चलाचल चक्कतें ॥२६॥
इत धूम्रकेतन चक्क मारि तरंग भूपतिके हनैं,
रथ तोरि सूतहिं मारि त्यौं उरमैं कलंब दये घनैं ॥
अधिको दिपैं मनि सानतैं जिम बानतैं चहुवान व्है,
रथ ओर लै रन रोरै संग्रिय जेठ भीखन भान व्है ॥ २७ ॥
परपिण्ड कट्टत ज्यौं महालय यौं अरी अरि कट्टिकैं,
छेद छेदि लस्तकैं भेदि मस्तक खेदि सो१००द्विय दट्टिकैं॥

सेना पीछी मुड़ी (फिरी) पराक्रम रहित होकर और बाकी रही उसको भी पराक्रम रहित जान कर कीलजिव्ह नामक दैत्य युद्ध करनेलगा५ रथ (मेघ के समान उसके रथको) घोडों सहित ६ भाला ७ दैत्य की ८ बाण ९ कामशास्त्र में कहेहुए अश्वजाति के पुरुष से मृगी जाति की स्त्री एक समागम में ही छक जाती है ऐसे१०मूछ को११असुरों की सेना १२भय भीत हुई१३बकासुर ने १४पर्वत की गुफा से१५ गैरों [लाल रंग का धातु] १६ रक्त १७ नासिका से१८चंचल१९सेना से२०सारथी को२१बाण२२शाण से घिसाहुआ मणि अधिक शोभायमान होता है ऐसे बाणों से (जातिवाचक होने के कारण यहां बाण शब्द एकवचन रक्खागया है)२३भयंकर२४भयंकर सूर्य होकर२५महालय श्राद्ध में पर अर्थात् बायें हाथ की ओर के अन्तिम (जो पड़दादे के नाम का) पिंड होता है उसको दादे और पिता इन दोनों के नाम के पिंडों में मिलाने के लिये बराबर के दो टुकड़े करते हैं इसप्रकार प्रत्येक शत्रु के बराबर टुकड़े करके२६बाण से२७धनुष का मध्यभाग.

छकि धूम्रकेतन चुक्कि चेतन दगड केतनको गह्यो[1],
जिय जात केतनसौं हु हेतन[2] छोरि प्रेत नभो रह्यो ॥ २८ ॥
जिम इभ्य[3] ऊरुज[4] मौषकाभिधे[5] इक१उंदुरतैं बन्यौं,
खिल[6] स्वासके लवतैं सु पै तजि मोह[7] यो पुनि उप्फन्यौं ॥
प्रतिकूल[8] प्रानन मोति मूल[9] हन्यौं त्रिसूल उठायकैं,
उर पीनमैं[10] फन तीन३ के अहि[11] ज्यौं लग्यो वह आयकैं ॥२९॥
जिम कट्टि बग्गुरि[12] सैल्लकी[13] बिल दारि[14] दंसहिँ[15] यौं गयो,
यह घाय पाय घुमाय रायहु[16] काय डारनकौं भयो ॥
कछु बोहतैं[17] अति मोह[18] आगम चंडिका नृप चिंतई[19],
ततकाल[20] जानि सुभक्तपैं पहुँची बडे रय पब्बई[21] ॥ ३० ॥
रु[22] कह्यो न होवहु पुत्र बिब्भल तू बिजै लहिहै बच्यो[23],
रनघाय घुम्मन ही बिरंचन[24] धर्म बीरनको रच्यो ॥
तव हत्थ दुष्टन सिच्चुहै[25] कबहू न होहिं सु अन्यथा[26],
नृप कौसलेश्वरतैं हि धुंधन[27] और देबनतैं जथा ॥ ३१ ॥
तव संग मैं रहिहौं सदा निज भक्त भावित संकरी,
इम अक्खि दिन्न मिटाय घायहु देखि दिट्ठि सुधाभरी ॥
नृपहू कह्यो असु[28] आसु[29] पूरिय अंब[30] तैं यहँ आनिकैं,

१ध्वजा के दंड को पकडा २जीव जाता ही था परन्तु ध्वजादंड से हेत नहीं छोड कर प्रेत नहीं हुआ(मरा नहीं) ३ धनवान् ४ वनिया ५ मूषक नामवाला (इस की कथा कथासरित्सागर में है) ६ बाकीके लेशमात्र स्वास रहे तो भी ७ मूर्छा को छोड कर ८ प्राणों का लेनेवाला ९ मृत्यु का मूल १० पुष्ट छाती में ११सर्प १२फन्दे को १३सेली नामक पशु (सहेली) विल में घुस जाता है ऐसे १४विदारण करके १५कवच को १६राजा चहुवाण ‑ी शरीर छोडने को हुआ १७वार होने के १८मूर्छा आने से पहिले १९चहुवाण नामक राजा ने देवी का स्मरण किया २०तुरन्त २१पार्वती (हिमालय की पुत्री) २२ और २३ बाकी रहाहुआ विजय २४ ब्रह्मा ने वीरों का धर्म युद्ध में घावों से घूमने का ही रचा है २५ मृत्यु २६ मिथ्या २७धुंधुमार की मृत्यु जैसे अयोध्या के राजा के हाथ से थी और देवताओं के हाथ से नहीं थी ऐसे २८ प्राणों को २९ शीघ्र पूर्ण किये ३० हे माता तैंने

मम बंस तोकँहँ आसपूरिनि अक्खिहै यह मानिकैं ॥३२॥
तबतैं उमा यह राम भूपति आसपूरिनि अक्खिये,
चहुवान चंडिय चिंति यौं छतहीन ह्वै हुलस्यो हिये ॥
पनंनारिके दृगतैं कटाच्छ दुर ओरतैं सर यौं बहे,
जिम दुस्थके घरपैं पलास तिं छाय अंबरपैं रहे ॥ ३३ ॥
इम राय पाय अभेद्यकाय बिहाय कस्मर गज्जयो,
धसि संख अग्ग बढाय स्यंदन तोमं दुष्टन तज्जयो ॥
उर धूम्रकेतनकै दयो इक१ रोप ऐंखन तानिकैं,
खल मर्म लग्गत मूढ भो तँहँ जंभ जुज्झिय आनिकैं॥३४॥
बिरच्यो प्रलंबहु जंग संगहि सेल्ल दोउन२ मुक्कये,
नृप वार टारि दुर२ओरके सर जोरके दुंवर२घाँ दये ॥
मंधुजालमैं सरघावली जिम जात दंसनमैं दिपे,
हुव मूढ वे दुवर२क्यौं रहैं नृप तूंनके निकसे छिपे ॥ ३५ ॥
कछु कालमैं ताजि मोह जंभ प्रयोग आनलको कर्यो,
वह ज्वाल जाल कराल भूपहु मुक्कि वारुन उद्धर्यो ॥
खल तत्थ पर्बत प्रेर्यो पबि अस्त्रसौं तिंहिं टारिकैं,
किय श्राद्धको जजमान जंभहिं बान बिंसति मारिकैं।३६।
पुनि फैंकि इक्क१ भुंसुंडिका उर जंत्रकेतनकै दई,
वह मर्म लग्गत दुष्टनैं गति चंर्म चाटककी लई ॥

१आशापूरण देवी २हे राजा रामसिंह ४कहते हैं ५घावरहित ६गणिका स्त्री के नेत्र से ७दरिद्री के घर पर ८ढाक के पत्ते छाये होते हैं ऐसे ९ते (वे दैत्य) १०आकाश में छागये ११ राजा चहुवाण १२कटे नहीं ऐसा शरीर १३छोड कर १४ मूर्छा को १५रथ १६दुष्टों के समूह को १७तर्जना की (डराया) १८वाण १९दोनों तरफ २०मुवाल के छाते में २१सहत की मक्खियों की पंक्ति जावे जैसे २२ कवचों में शोभायमान हुए २३ मूर्छित २४ चहुवाण के भाथा से कढेहुए २५ मूर्छा २६ अग्नि अस्त्र का २७राजा ने भी वरुणास्त्र छोड कर २८पर्वत अस्त्र २९ वज्रास्त्र से ३० श्राद्ध में जजमान को वारंवार सव्य अपसव्य कराते हैं ऐसे ३१ वीसों ३२ अग्नि यन्त्र (बंदूक) अथवा लोंहगी लकड़ी (शस्त्र विशेष) ३३ चमगीदड (वागल नामक पक्षी जो ऊंधे मुख लटका करते हैं)

उलट्यो अधोमुख व्है तहां ‥उ४बान दारुन दट्टिकैं,
नृपनैं सिलोच्चय[1] शृंगसो सिर जंभको[2] लिय कट्टिकैं ॥३७॥
लखि काल भूपहिं आसुरी[3] दल हंतं[4] हारवकैं लज्यो,
कटवाय स‥नकौं प्रलंबहु ठुंड[5] पादप[6] सो भज्यो ॥
भयकार भो वह रंग[7] अंगन देखि देवहु नाँ सकैं,
कटि काय[8] सायक[9] पायके फटि घाय सोनित उब्बकैं॥३८॥
भट भीरमैं ‥हँ बीर बावन५२ है[10] खुरी करते फिरैं,
मदअंध मल्लनके समान कबंध[11] बत्थनसौं भिरैं ॥
पँननारि[12] जुब्बनमत्त ज्यौं चौंसट्ठि६४[13] नच्चत रत्त व्है,
लहि सीधु[14] लोटत ग्राम्य[15] ज्यौं गज बाजि दारित[16] गत्त[17] व्है॥३९॥
अति उच्च छत्रि‥ ‥डं[18] ज्यौं कहुँ कुंभ हत्थिन उत्तरैं,
जँहँ प्रेत लोहित पानपैं ‥पदंसैं[19] कालिकके[20] करैं ॥
कहुँ सूर डाकिनिकौं धपाय रु स्वीय[21] हीय निकारिकैं,
द्विजकौं जिमाय रु लांगली[22] सम देत धीहित[23] धारिकैं ॥४०॥
कहुँ कट्टि अंत्रनँ[24] जाल भैरव कंठ डारत माल ज्यौं
कहुँ भत भंभहँ[25] भोरि खात बनाय बानिक बालज्यौं ॥
जिम छुद्रिका[26] बपु काढ्ढि यौं गडि जात गिद्धनि गोदमैं[27],
मिलि कंक[28] चिल्ल सिंचान[29] मंडल मेद[30] चक्खत मोदमैं॥४१॥
निकसी बिसंकट[31] अह्नजा अनुकार[32] सोनितकी नदी,

---

१ पर्वत के शिखर जैसा २ यमराज के समान चहुवाण राजा को ३ दैत्यों की सेना ४ खेद का हाहा कार शब्द ५ ठूंठ ६ वृक्ष का होवे जैसा ७ युद्धभूमि ८ शरीर ९ बाणों से १० घोड़े की शीघ्र दौड़ के समान दौड़ते फिरें ११ मस्तक रहित शरीर (धड़) १२ गणिका १३ चौसठ जोगनियां मद्य १४ (मदिरा पीकर जिसप्रकार) १५ ग्रामीण (गँवार) मनुष्य लौटजाता है ऐसे १६ कटेहुए १७ शरीरों के १८ इंडे (ऊंची छतरियों के कलसों के समान हाथियों के कुंभस्थल उतरते हैं) १९ खारभंजने २० कलेजों के २१ अपना हृदय २२ नालेर के माफिक २३ बुद्धि से २४ आंतों की २५ वृत्ताकार फिरना जिसको बालक भँभाभोरी कहते हैं २६ इसीप्रकार कवच से शरीर निकाल कर २७ भेजे (मस्तिस्क) में २८ ढींच (पक्षीविशेष) २९ शिकरा ३० मज्जा ३१ विशाल[बड़ी] ३२ नकल

अलगर्द[1] नक्र[2] दुलीज[3] अंत्र[4] तुरंग अजफल अच्छरी[5] ॥
लहि जास भासँ बनास बारिधि पास बासकतैं टरी,
रत आस एम बनासकी रनरास भूपतिके हरी ॥ ४२ ॥
प्रविसैं दरी[10] उर केसरी[11] वृक[12] त्यौं करी[13] उरके बसैं,
गिनिकैं अभीष्ट बडे बसा हिय कालैं[15] खंजनकौं ग्रसैं ॥
करि जुद्ध यौं नृप क्रुद्ध मस्तक जंत्रकेतनको हरयो,
चहुँ पास आसुर सेनमैं अति त्रास ऐकलको परयो ॥४३॥
तबही ह्रदोदर अग्ग व्है रन भिंदिपालकतैं रच्यो,
अतिकाय आकुल व्है सु पै नृप मुक्त तीरनतैं तच्यो[18] ॥
कछु काल कौतुकें[19] मंडियो सर अर्द्धचंद्रक जोरिकैं,
पटक्यो महीपतिनैं महीप्हदतुंदको सिर तोरिकै ॥ ४४ ॥
तिम सूलसौं हरि सूल सूलिक[20] सीस आसु[21] उतारिकैं,
पुनि तालहस्त करालतुराड उभैरलये नृप मारिकैं ॥
बक केसि धेनुक तीर कट्टि रु पीर मर्मनमैं[22] दई,
लहिकैं गदा गति बातके[23] तुसकी[24] अलंबुसकी भई ॥४५॥
तहँ कालजिव्ह रु रीति[25] त्र्यंबक दोरि भूपतिपैं गये,

ब्रह्मपुत्र नामक नदी का अनुकरण (नकल) करनेवाली लोही की नदी १ जलसर्प २ मगर ३ कच्छप रूपी ४ आंतें, घोड़े और ढालों से छाईहुई (यहां यथाक्रम से जानना चाहिये, अर्थात् आंतोंरूपी जलसर्प, घोड़ो रूपी मगर और ढालों रूपी कच्छपों से ढकीहुई लोही की नदी) ७ जिसकी क्रांति लेकर बनास नदी ८ समुद्र के पास वास करने से टलगई (यहां वास शब्द के साथ स्वार्थ में 'क' प्रत्यय करके वासक शब्द का प्रयोग किया है) ९ इसप्रकार बनास नदी की संभोग की आशा राजा के रण रूपी रास [कुतूहल] ने हर ली, अर्थात् बनास नदी में रक्त मिलजाने के कारण वह रजस्वला होगई१०गुफा में११सिंह घुसें इसप्रकार१२भेडिये (ल्याळी) १३ हाथियों के पेट में घुसते हैं १४मज्जा (चरबी) के लिये१५कलेजा १६ अकेले का १७ गोफनों से १८ तचका (सुकड़) गया १९ खेल २० सूलिक नामक दैत्य को २१ शीघ्र२२ मर्म स्थानों में (जीव की जगह) २३ पवन के चलने में२४ तुसों [धान्य के छिल्कों] के समान (तुस को पवन उडा देता है ऐसे

कर पत्रपालन झारिक रथ बाजि केतन कट्टये ॥
तवही गदा रन मंडिक नृप दोहु२दुष्टनसौं जुरयो,
सु मनौं सुजोधनपैं रु मागधपैं वृकोदर अंकुरयो ॥४६॥
झरि द्वै१गदा अवघट्टतैं चिनगी चलाचल निक्खसैं,
आसि सानभाव कि दावमैं तरकाव तिंदुनको लसैं ॥
अभिघातके अनुपात त्यौं प्रसरैं चटच्चट चो४ गुनौं,
दुव२बज्र भिटनसौं रु द्वै२दरघट्टना सन सोगुनौं ॥ ४७ ॥
दुँहु ओरकी अति घोर उल्मुक चक्र तोरैं गदा फिरैं,
तप पूरकी छबि सूरकी दबि बूरकी बिजुरी किरैं ॥
सब मग्ग सद्दत फाल फद्दत काल कल्पहिको मचैं,
जनु देह धारि पधारि रारि स्वयं पटैतपनौं रचैं ॥४८ ॥
दुव२घाँ गदा अवघट्ट मार मुहूर्त्त इक्क१भली भई,
नृप दाव सत्रुन मोघकैं अब रीति अंतककी लई ॥
द्रुत घोटकै कर चोट दुस्सह दोटैं लोटत ज्यौं दरी,
यहकाल लोलिकैं सीसकी गति रीसकी हतिसों करी॥४९॥
नरनाह कुंडनसो कियो उर त्यौंहि पित्तलनैनको,
सुहि पाय दाह गयो उछाह सिपाह सत्रुन सैनको ॥
अघआदि नक्क हिडंब संबर व्योमैं पब्बय प्रेरये,

अलंवुस को उडाया २५ पीतल जैसे हैं नेत्र जिसके १ बडा छुरा २ध्वजा ३ दुर्योधन पै ४ जरासन्ध पै ५ भीमसेन६दोनों गदा के भिड़ने से ७ चपल ८शाण पर तरवार से चिनगी झड़े जैसे९ वन में दव लगने से तींदूकी लकड़ी से चिनगी उड़ैं ऐसे१० प्रहार के११चोट पर चोट पड़ने से१२ भिड़ने से १३ दो शंखों की टक्कर खाने से १४अंगारों के १५ तरह १६ सूर्य की पूर्ण तप की शोभा१७ गदाओं के वूर झड़ने की१८ गदा युद्ध के सब मार्ग (रीति) छलांगें भरते हुए (फाल छलांग और फद्दत् फांदते हुए) १९ यमराज २० प्रलय का २१ मानों २२ दोनों तरफ २३ दो घड़ी तक २४ व्यर्थ करके २५ यमराज की २६ शीघ्र घोटा (गैंद खेलने की लकड़ी) से २७ दोटा (चोट) से २८ दड़ी (गैंद) २९ दैत्य का नाम है ३० राजा चुहान ने ३१ ऊँखली के समान३२दैत्य का नाम है ३३ आकाश से ३४ पर्वत

पवि अस्त्र*घाय उडाय ते पुनि तूल संचय**से दये ॥५०॥
रथ ओर बैठि बहोरि भूपति कल्पके[1] भवसो भयो,
दलिकै अघासुर दर्प [2]दुद्धर अद्रिनासिक दब्बयो ॥
इत [3]मोहंकौं ताजि [4]छोहंमैं पुनि धूम्रकेतन उप्फन्यौं,
[5]अनुजातकौं लखि गिद्ध अैंचत [6]बेरं उद्धरसो बन्यौं ॥ ५१ ॥
सर च्यारि४सौं [7]करँ पाय च्यारिहु अद्रिनासिकके हरे,
तउ भुम्मि लोटत दुष्टके सब अंग सम्मुह ही ढरे ॥
बिनु पुच्छ [8]बाहस सर्प सो [9]नगनास जुज्झत जानिकैं,
[10]करंवाल इक१कराल झारिय [11]धूमलध्वज आनिकैं ॥ ५२ ॥
दुव२[12]पानिसौं नृप बान दै गिरिनक्क मस्तक कट्टयो,
दुव२पानिसौं इत मारि ए खल बानको सुत दट्टयो ॥
इक१संगि[13] लै खल तत्थ [14]मुंक्किय [15]बिज्जुकी बहिनी बडी,
पुनि भूपके [16]रथबाह भेदि सु लाह लै गिरिमैं गडी ॥ ५३ ॥
नृपहू वरच्छिय अैंचि अच्छिय [17]जत्रुपैं खलकै दई,
करि बत्त जो गल [18]अंससो जलमत्त मच्छिय ज्यौं गई ॥
लहिकैं [19]अैली अल सिंह त्यौं तिहिं घायसौं उठ उच्छरयो,
[20]त्रि३वली कलंकिंत नक्कनैं कछु प्रान संसयमैं परयो ॥ ५४ ॥
यह पिक्खि कोतुक भूत डाकिनि हुंकि तालिन दै हसे,
खिजि दुष्टके [21]रहंपट्ट व्हाँ इनपैंहि दीननपैं बसे ॥
[22]खंग खेचरीन कह्यो तहाँ हमकौं हनैंहि न जित्तिहो,

*वज्रास्त्र से**रूई का पैल १प्रलय काल का महादेव २दुस्तर ३मूर्छा को ४क्रोध में ५अप ने छोटे भाई को ६शरीर का उद्धार करनेवाला ७हाथ पग चारों ८अजगर सर्प विना पूँछ का होवे ऐसा ९ अद्रिनास नामक दैत्य को १० खड्ग ११धूम्रकेतु ने १२ हाथों से १३ बरछी १४ छोडी १५ बिजली की बड़ी बहिन १६ घोड़े १७ गले नीचे के भाग में (हसली की हड्डी के पास) १८ कंधा और गले से घात करके १९ बीछू का डंक लगने से सिंह उछलै ऐसे २०नासिका में तीन सल पटक कर (नाक सिकोड़ कर) २१ थप्पड (दुष्ट ने खिज कर भूत और डाकनियों के थप्पड मारी) २२आकाश में विचरने वाली खेचरी ने कहा

चहुवान प[?]ंगे प्रानको बलवान भिंटत[2] बितिहो ॥५५ ॥
सुनिकैं इती धकि[3] धूम्रलोचन छोह उद्धत छायकैं,
इकसत्थ मारुत[4] १अभ्र[5]२बारुन[6]३अस्त्र डारिय आयकैं ॥
उपमान[7] भूधरका बडे झरका[8] उहाँ करका[9] झरे,
सतकोटि[10] पत्थर चंचला[11] पृथु[12] पूर[13] पानियके परे ॥५६॥
भवभूत[14] दुस्सह बा[?] गाज अवाजतैं बहिरे भये,
पवमानतैं[15] हिमवानसे[16] हिम[?]नाद दंतनकों दयो ॥
इम तीन३आसुर अस्त्र इक्कत ईक्खि[17] भोनन भै[18] बढ्यो,
जिहिं जालतैं महिपालहू बडे बग्गि[19] सागरतैं कढयो ॥५७॥
झख बालपैं[20] जिम किल्किला[21] छकि[22] छोहि[20] यौं खलपैं छयो,
लखि दाव नासनको दुसासन ज्यौं वृकोदरनैं[23] लयो ॥
सहजात[24] सक्ति नरेस[?] कहि सक्ति आश्रय जो करी,
धकि सोहि प्रानन पन्नगी[25] कर[26] अर्कके[27] करसी धरी ॥५८॥
तिहिंकाल[28] काल[29] नृपालकौं विकरा[?] बिक्खतही बनैं,
अति भाल ज्वाल अराल[30] भ्रूकुटि लाल अक्खिन उप्फनैं ॥
जिम सुंभके उर सूल सक्ति[31] सु[32] सक्ति यौं नृप मुक्कई[33],
लगि दुष्टके उर पुष्ट चंदन जुष्ट[34] जो असु लै गई ॥ ५९ ॥

---

१ प्राणों को लेनेवाले सर्प के समान चहुवान को २ भींटते ही (भिडते ही बीत जाओगे) ३ क्रोध करके ४ पवनास्त्र ५ मेघ का अस्त्र ६वरुण का अस्त्र७ पर्वत को जिसकी उपमा दीजावे ऐसे बडे ८ झड़वाला ९ ओले (गडे) १० वज्र ११ बिजुली १२ बडा१३ समूह से पानी पडा १४ संसार के प्राणी १५ पवन से १६ बरफ के जैसा ठंडा, दांतों का ठंढ का शब्द (गड़ाड़ाहट) १७ देखकर १८ भय १९ बडवाग्नि २० छोटी मच्छी पर २१ मच्छियों को पकडनेवाला पक्षिविशेष २२ क्रोध करके २३ भीमसेन ने २४ अग्निकुंड से चहुवाण के साथ पैदा हुई, बरछी जिसको ऊपर कह आये हैं उसको ही आधार करके २५ प्राण लेनेवाली सर्पिणी के समान २७ सूर्य के किरण जैसी २६ हाथ में ली ॥ उस राजा रूपी यमराज का विकराल (भयंकर) समय देखे ही बने३०टेढ़ी भृकुटी३१जिसप्रकार शुंभ दैत्य के उर में देवी ने बरछी दी थी उसीप्रकार राजा ने३२बरछी३३छोडी३४प्रीति (चंदन से प्रीति करनेवाली

पवमानतैं तरु तालसन्निभ धूमल वज भू पर्‌यो,
महिपाल पावकं रालकैं इम साल देवनको हर्‌यो ॥
यह पिक्खि संवर व्योम भोम हिडंब आदि सबै भजे,
बहु प्रेय दुंदुभि मोदमैयन आदितेयनके बजे ॥ ६० ॥
दुख नष्ट जानि असीस बिप्रन देव जुत्थननैं दई,
भनि तुट्ठि तुट्ठि अयासबानिय बुट्ठि पुप्फनकी भई ॥
जम इंद आदिन अप्पने अधिकार लाह भरे लहे,
बहुर्‌यो सदागति सीत मंद सुगंध सम्मलि व्है बहे ॥६१॥
सुखसौं दिवाकर सप्त७दीपनसीसपैं तपनैं लग्यो,
जुत बेद मंत्रन सप्ततंतुन ज्वाल कुंडनमैं जग्यो ॥
लहि भद्र सप्त७ अवारपारन निट्ठि निश्चलता लई,
स्वर सप्त७सुंदर गायकी सुरगायकावलिकी भई ॥६२॥
बलि पुत्र पुत्रबधूनके करकंज कंकन फुट्टये,
सजिकैं सिंगार पुलोमजा दृग नाहके मग त्यौं दये ॥
नृपरामैं कीरतिधाम यौं मन काम सर्वनके सरे,
चहुवान चो४ भुज धूम्रकेतन१ जंत्रकेतन२संहरे ॥६३॥
इतिश्रीबंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२ राशौ
चहुवाणविजयनधूम्रकेतुयन्त्रकेत्वादिनव९दैत्यनिपातनं

वाली, अर्थात् सर्पिणी के समान) प्राण लेगई १ पवन से २ताड़ वृक्ष के सदृश ३ धूम्रकेतु भूमि पर पड़ा ४ राल करके बढीहुई राजा चहुवान रूपी अग्नि ने ५ आकाश में ६ बहुत प्यारे नगारे ७ मोद (आनन्द) भई ८देवताओं के ९तुष्टि हो तुष्टि होये आशीर्वाद के वचन१०आकाशवाणी ने कहे ११ फूलों की वर्षा हुई १२ फिर १३ पवन १४ सूर्य १५होमों(यज्ञों)में १६ अग्नि १७ कल्याण १८ समुद्रों ने १९ गान किया २० गंधर्वों की२१ बलि दैत्य के पौत्रों (पोतों) की स्त्रियों के२२कमल रूपी हाथों के२३इन्द्राणी ने शृंगार करके२४पति के मार्ग में दृष्टि दी२५हे कीर्ति के घर राजा रामसिंह२६ चार हाथवाले चहुवान ने २७मारे.

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में चहुवान का विजय और धूम्रकेतु यन्त्रकेतु आदि नव दैत्यों के मारने का तेरहवां मयूख

त्रयोदशो मयूखः ॥ १३ ॥आदितोऽष्टत्रिंशत्तमः ॥ ३८ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा

दोहा

धूमलकेतन[1] सक्तिकरि, डार्‍यो असुन[2] विहीन ॥
जंत्रकेतु चउ४बानकरि, पटक्यो गिद्धन पीन[3] ॥ १ ॥
ह्लादके रु प्रह्लादके, विप्रचित्तिके बंस ॥
नव९आसुर चडासि हनि, दीनौं दुस्सह दंस[4] ॥ २ ॥
सूचिकेश१उल्मुक वमी२, प्रमुख[5] हनैं प्रतिहार ॥
चालुक मारे सूकश्रुति१, मर्दका२ऽऽदि जुज्झार ॥ ३ ॥
करभ कंठ१कंकालगुड२, दह्वीदह्व३दुबुद्धि ॥
खिजि प्रमार इत्यादि खल, संहरि किय छिति[6] सुद्धि ॥ ४ ॥

षट्पदी

धूमलकेतन१ जंत्रकेतु२ह्नदतुंद३महाखल ।
सूलिक४पुनि तालसँय[7]५करालानन६बिसेस बल ॥
कालरसन७पुनि क्रूर रीतिलोचन८गिरिनासक९।
चंड समर[8] चहुवान दुसह मारे इत्यादिक ॥
मुर नरक केसि रावन प्रमुख[9] गिरत बानसुत भजि गये।
अर्बुद[10] गिरीस[11] नृपराम[12] इम भूपति चउ४मुनि[13] मख भये ॥५॥

दोहा

बानसुतन हनि करि बिजय, आयो न्रप चहुवान ॥
हरि[13] हरादि देवन हुलासि, मन्यौं रचि सनमान ॥ ६ ॥
दिय प्रतिहार१[14] तँहँ द्रुहि[15], मरु भुव राज्य समस्त ॥

समाप्त हुआ॥ १३ ॥ आदि से अड़तीस मयूख हुए ॥ ३८ ॥
१ धूम्रकेतु २ विना प्राण ३ गीधों को पुष्ट करने के अर्थ ४ काटना (चहुवान की बरछी को सर्पिणी की उपमा दी थी उसका यहां संबंध है अर्थात् उस सर्पिणी ने नहीं सहाजावे ऐसा बटका भरा) ५ आदि ६ पृथ्वी को ७ तालहस्त (यहां से लेकर गिरिनासिक तक दैत्यों के नाम हैं) ८युद्ध में भयंकर९आदि१०आबू पहाड़ पर ११ हे राजा रामसिंह १२ वशिष्ट मुनि के यज्ञ से १३ विष्णु शिव को आदि लेकर१४ब्रह्मा ने मरु(निर्जल) भूमि का

सूकर ऊखर मुख्य थल, वालुककौंहु प्रसस्त ॥ ७ ॥
मालव रट्ठ प्रमारकै, कीनौं आखिल ेन ॥
इंद्रप्रस्थको प्रांत सब, चहुवानहिं बिधिं दीन ॥ ८ ॥
कर्म निगमम पुष्टकारि, बिप्रन अभय बिधाय ॥
हरि हर अँज सक्रादि सब, पंत्ते पिहितं निकाय ॥ ९ ॥
अर्बुदसौं मिलिकैं उमाँ, बुल्ली जावतबेर ॥
तूही सोदर धन्न्यतम, किल्विषहर कलिकेर ॥ १० ॥
इतरहु तीरथद्वीप अगँ, वन तरु खंड बिसेस ॥
अ।ये जे अभिसेक हित, गये ति निजनिज देस ॥ ११ ॥
हुलसि बसिष्ठहु अभयव्है, इत सब मुनिन उपेत ॥
करन लगे आरब्धं क्रतु, कारि भय असुर निकेत ॥ १२ ॥
भुजभव१मनुभव अ , भव३, ससिभव४छत्रनबंस ॥
हे चउ४तिम सुचिबंस५हुव, पंचम५प्रथित प्रसंस ॥ १३ ॥
छ नके छत्तीस३६सब, नतैं अन्वय जात ॥
दूजे आश्रममाँहिं जिम, आश्रम इतर संमात ॥ १४ ॥
इम बानासुरसुव उभय२, भूबिलं पुनि पविभित्त ॥

१ मूकर नामक क्षेत्र (रेणुका, मूकर, काशी, काली, काल, दोनों घटेश्वर, कालिंजर, उज्जीन, इन नव क्षेत्रों को ऊसर कहते हैं) २ श्रेष्ठ ३ राष्ट्र (मालवा का राज्य) ४ ब्रह्मा ने ५ वेद मार्ग के कर्म ६ करके ७ ब्रह्मा ८ इन्द्र को आदि लेकर ९ पहुंचे १० अन्तर्धान होकर ११ अपने अपने स्थानों में १२ पार्वती १३ हे भाई १४ अत्यंत धन्य है १५ पाप (कलियुग के पाप नाशने को १६ और भी १७ पर्वत १८ ते (वे)१९सहित २० आरंभ२१यज्ञ का२२घर (दैत्यों के घरों में भय करके)२३ब्रह्मा के भुजों से पैदाहुए क्षत्री२४मनु से पैदाहुए क्षत्री२५सूर्य से पैदाहुए क्षत्री२६चंद्रमा से पैदाहुए क्षत्री२७ये चार क्षत्रियों के वंश २८ थे २९ इसीप्रकार पांचमा अग्नि वंश हुआ ३० प्रसिद्ध प्रशंसा करने योग्य ३१ इन पांच वंशों से क्षत्रियों के छत्तीस वंश पैदा हुए ३२ जैसे गृहस्थाश्रम से ब्रह्मचर्यादि दूसरे आश्रम होते हैं ३३ पुत्र ३४ भूमि का विवर ३५ वज्र से खोदाहुआ

माहेयी[1] रु वसिष्ठ मुनि, नृप तव बंश निमित्त[2] ॥ १५ ॥
सहँस तीन३००० अरु पंच सत५००, अब्दं[3] बहुरि इकतीस३१॥
जुग द्वापर अवसेस जँहँ, प्रकटे चउ४पहुमीस ॥१६॥
सुरनहिंतु[4] पाये सबन, आयुध भूखन अच्छ ॥
लैलै बिधि[5] आयस[6] लरे, प्रहतक्करे[7] परपच्छ[8] ॥ १७ ॥
मरु१सूकर२मालव३प्रमुख[9] प्रतिहारादिन पाय ॥
इंद्रप्रस्थ[10][11]४चंडासि इम, हुव लहि धर्मसहाय ॥ १८ ॥
मुनि बसिष्ठ सह्यो सु मख, हुलसि अकंटक होय ॥
अर्बुद बन किन्नौं अखिल, धुरे[12] तीरथ अघ[13] धोय ॥ १९ ॥
राम[14] नृपति जँहँ रावरे, अब सगोत्र बसवान ॥
द्रंगं[15] सिरोही देवडा, थिरि अब्बुव गिरिथान ॥ २० ॥

इति श्रीबंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितयिश्राशौ हन्तृहत-विवेचन-क्षत्रियचतुष्टय४मर्वादि४देशविभजन--देवादिस्वस्वनिकेत-गमन-बाहु१मनु२रवि३चन्द्रा४ऽनल५बंशान्त सामस्त्यराजन्यषट्-त्रिंश३६भेदकथन-वशिष्ठनिःशङ्कसत्रकरण-अर्बुदप्रान्ताऽनघीभवनं चतुर्दशो१४मयूखः ॥ १४ ॥ आदित एकोनचत्वारिंशत्तमः ॥३९॥
प्रायो व्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

१गाय (वसिष्ट की नंदिनी नामक गाय) २ हे राजा तुमारे वंश के उत्पन्न होनेके ये कारण हैं ३ वर्ष ४ बाकी रहे जब ५ देवताओं से ६ ब्रह्मा की ७ आज्ञा ८ नाश किया ९ शत्रुओं को १०आदि ११ दिल्ली पर १२ मुख्य १३पाप दूर करके १४ हे राजा रामसिंह जहां अब आपके गोत्रवाले बसते हैं देवडा जाति के चहुवान १५ पुर.

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में मारनेवाले और मरनेवालों का विवेचन करना, और चारों क्षत्रियों को मरुदेशआदि चार देशों का बांटदेना, देवताओं का अपने अपने स्थान जाना, बाहु, मनु, सूर्य, चन्द्र और अग्नि वंश के भीतर ही सब क्षत्रियों के छत्तीस ही वंशों का कहना, वशिष्ठ मुनि का निःशंक होकर यज्ञ करना, आबू प्रान्त का पाप रहित होने का चौदहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १४ ॥ और आदि से उनचालीसवां मयूख हुआ ॥ ३९ ॥

पद्धतिका

प्रतिहार १ नृपहु धर धन्न्ववाय, पत्तनं बिसेस बिधि सह बसाय ॥
तंत्रावधान करि राज्य तत्थ,समयांत तज्यो वपु जोग सत्थ ॥१॥
नवं९दुर्ग देसपति तब नरेस, सुत जोध२राज तस हुव सुबेस ॥
सतपंच५००भये सुत जोध गेह, तिन्ह नाम सुनहु संभरसनेह ॥२॥
सुत देवराज३।१जेठो सुभाय, नरसिंघ३।२करन३।३पुनिराजराय४॥
सल्लर३।५रुलाल३।६छत्रेस.सुद्ध,परमेस.ज्ञान.सतगन१०प्रबुद्ध॥३॥
पंडाहर. पृथ्वीराज. नाम,जहम. समाद. कुसकर्ण. ताम ॥
व्याघ्र. रु पारादिक.रु नयपाल. गंधर्व. चंप२० राम. सुदयाल॥४॥
जाहुर. दताल. बिश्वेस. जानि, तपलोक. रु कमलादित्य. मानि॥
ध्वजबल्गु.खुगाारज.मंडमाल.बलिबच्छ३०विजयधर.जसबिसाल५
नवगुन. रु धर्मधन. कर्मरिद्ध. पुनि लोकपाल. बिंबक. प्रसिद्ध ॥
गंधनरस. माधव. पद्मगंध. सुनि मंडन४०कालप. इन. सुगंध॥६॥
सिंह. रु बुध. चित्रक.मतिसुढार, केसर. रु मान. हिमरस. उदार ॥
निमि. करुन५०कोल.भगवान.नंद. चंड.रुमहितापन.राजचंद्र.।७।
पृथ्वीस. समरसख. परसुराम. श्रीरुक्म६० बेणु. भैरव. सुधाम ॥
जाजल.अरु सागर.खेम. जानि, ॐकार. गोकरन. दानपानि.॥८॥
सुद्दाल. लच्छ७०अज.कूजदार. नल.लोकमनि.रु बल.बिजयकार.
पुनि अगरु.बज्र.अजधर.प्रवीर, गोतम.नरेण८०सिवकर्ण.धीर॥९॥
च्यवन. रु सुमेरु.उंबर.सिचान. पुष्पक. रु नयन. कोक. रु सुजान.॥
ललित९०माहिम.कुंदन.सँहँसमल्ल.भूपाल.बहुल.ईश्वर.सुभल्ल१०
तिम चंद्र. भानु.जितमल्ल. तत्थ, सल१००बेत्रपाल. महराज. सत्थ
बलि बरुज.कुंजमनि.स्याम.बीर, गोवर्द्धन.कृष्ण.भउम. गहीर।११।
उदयकरन. नरधर११०भारमल्ल. भीम. रु अनादि. हरराज. भल्ल॥
थिरराज. इंद्रराज. गुनगेय, जसराज. धर्मराज. हु अजेय ॥ १२ ॥

---

१ मरु देश में २ पुर ३ राज्य को अपनी इच्छानुसार करके ४ मारवाड़ में नव गढ प्रसिद्ध थे इसीसे मारवाड़ देश को नवकोटी मारवाड़ कहते हैं ॥

अनुपमराज. रु नाहर१२०अनंत. गंगाधर. नवल. दिलीप. संत ॥
भो अनुज खेतसी. भागचंद. कुमुद. सुरत. सुभकर्ण. हु अमंद ।१३।
वृहदर्ण१३०धीर. रत्न. सिवराज. सामंत. भीष्म. कुसल. हु सुकाज।
रु रंधर. धुंधल. प्रेम. रेणु१४०तस्करदम. रु महेश्वर. सुबेणु. ॥१४॥
अमर. अदर. उद्दल. बालराय. मधुकर. रु कीर्तिपालक. अमाय ॥
बिष्णु१५०रु सुमना गिरिपाल. वीर. धनपाल. ड्रुंड. उद्दाल. धीर १५
बिक्रम. प्रयाग. पद्मक. स्वरात. लोभ१६०रु परेस. कल्ल्यान. भ्रात।
सल्लहर. बहुरि गोइंदराय. सुंदर. रु लच्छजीवन. सुभाय ॥ १६ ॥
जाल्महर. बलस. भोज. रु प्रदान१७०, धरण. जम. रु चिंतापर. अमान॥
गोल. रु बिजयी. बिठ्ठल. धनर्ण. अल. पर्वत१८०माचल. आसकर्ण. १७
पुनि चित्ररेख. परवल. कृपाल. गोपाल. संतराज. रु सुभाल ॥
रामधन. राजनर. मेघसेन१९०, प्रह्लाद. मयूरध्वज. प्रसेन. ॥ १८ ॥
भीमरन. रु सोवन. जसिल. भ्रात, खरखग्ग. संगन. रु रमन. रूयात ॥
बसुनेमि२००भगुल. पारम. रु कल्प. जनमत. आमोद. हु बल अनल्प१९
चेमन. रु नयनसुख. चंद्रनंद. कामल. कस२१०भारत. रनअमंद ॥
सज्जन. रत्नाकर. नयन. जानि, व्रत. सामुक. सामकरन. बखानि२०
हयमारसेन. अरु खेमसेन. खट्वांग२२०कुंद. रघु. रजस. वेन. ॥
अर्जुन. चिद्रस. घनस्याम. आख्य, जनमुट. निर्भय. सुजनन२३०समाख्य
क्रोसन. मुकुंद. गोकुल. महंत. संगम. गज. सिवरज. थाणु. संत ॥
स्वादीन. रुचक२४०सुखराज. रूप. चित्रिम. नंद. चांबड. गल. अनूप २२
नरसुख. सुभाग्य. सत्तम. महेस२५०, संकर. पंचानन. रु धनसेस. ॥
सुक्र. जवन. इंद्रमति. खेमसार. भामह. त्रिलोकमानि. गंगहार२६०
सुन्नमना. सेरम. नागनाथ. दानिक. जोधन. लछमन. सुगाथ ॥
अंचन. सुरक्त. सुरतनु. अनेय२७०, कमलसुख. बसनदस. मल्ल. श्रेय २४
प्रभु. ईश्वरदास. किसोरसेन. तरसानु. धराजम. लुप्ततेन. ॥
वंसधर२८०कोकहर. सेनसूर. दिवसेन. धर्मधुर. प्रानपूर. ॥ २५ ॥
मतदल. अजंबु. उच्चल. दुलत्त. हिंदुष्क२९०ध्वजस्वन. गयु. सुपत्त ॥

बहुसेन. रमासू. परद. बेस, बालसासि. उग्रसेनक. बलेस ॥ २६ ॥
आनर्त. चंद्रकमलक. उदार, अभयमहा३।३००कौसल.बल अपार॥
उदयमहा. जयनम. तैजसाख्य. जीवन. पदमासिख.सलनदाख्य२७
महिनाभ. प्रहारक. गौर३१०जानि,हतजिन. सुबास. पुरनय. बखानि
गोपरमन. बंग. रु प्रेमसाम. खर्बम. अनेम. बडिसम.सुनाम ॥२८॥
रूपरस३२०मुक्तिमह.हरिन.भ्रात, गनपति. धनमोहक. भवन.ख्यात
अन्नदम. बगल.अंबर. जलेस.दालमह३३०भगन.बस्तुम.सुबेस।२९।
गौरध्वनि. हरसुख. लंब. नाम, हंतम.ललाम. भगरथ. सुधाम ॥
चल.सालिभानु३४०संगत.कुमार.सल्लह.सगर.चीन.बनस.उदार३०
साधुमही. हस्मक. खेमकर्ण. याजी३५०रु पर्ण. जोसम.सुबर्ण॥
सिवपाल.सिरोमनि.कनक.सूर,कीर्तिधर.मघामुक. धर्मपूर ॥३१॥
घोटन. रमेस. सुजन३६० रु सबीर. महसर. कुनक्र. कुंजर. सुधीर
बसुराम. बेणुधर. चित्रबाह. प्रहराट्ट. भीमरय.पिसुनदाह३७०।३२।
भाजिक.उत्तान.रु बिकस.भ्रात, कुसलू परारि.विजखनक.ख्यात॥
अजराज. राजनर.मल्लराज.कुस३८०चूर्ण.सिंहबाहन.सुकाज ।३३।
देवरय. प्रलयमल्लक. उदैन. बलन. गहल. राघवदास. गैन. ॥
कुबलय३९०समकर.बलसोम.नाम,हनुक.रु गभीर.सुखरत.सुधाम
उग्ररय.गोत्रमनि.बलि बखानि,नेमरु जयमद.अनयघ्न३।४००जानि॥
अभयाकर. स्वामी. उत्तमंग. चंद्रसख. मिहिर. संतनु. अभंग॥३५॥
सारध.गोलांबक.सुगत.सुद्ध४१०रबिमल्ल.बिसद.गुरुबर. प्रबुद्ध॥
ममसाधु.समान.रु कचलबित्त.कर्णजित.बच्छधन.हंसचित्त.॥३६॥
समभंत्र४२०न्हदयसुख.प्रहर.त्योंहिं,जर्त्तिल.रु लुलन्मणि.बिदितत्योंहिं
मतराग.महास्तुत.मोहराग.गोरक्ष.हर्ष.चुंबन४३०सुभाग ॥३७॥
रुतनति. चमूप. रंजन. सुबंस. मंडक. रु महातप. पुनि प्रहंस. ॥
उग्रासि.परिच्छित.माघनंद४४०,कर्पूर.रु मखनत.बिढल.कंद. ॥३८॥
मिस. कूबर.सिवद.सुमेरु.नाम,बव्हादर.ऊर्मर. पुनि ललाम ॥३९॥
सरदायम. हरनारायनाख्य. सुरतोस. रु भास्कर. माधनाख्य.

घोररय. प्रयाग. रु गोधि. बंक. ऱ्हदसेन४६०सगर. निर्दय. निसंक॥
हरिबंस. कल्प. सुरजन. ऱ्हदेस. नागोजि. मलय. जदु. रु अलकेस४७०
नवरंग. रु ओजस. परमसीर. डुंगर. गविट्ठ. धवकल. प्रबीर ॥
प्रतपन. पुनि घुंघन. केसवबेन. सोसक४८०सेवाजित. रु बुधसेन ॥४१॥
भर्मिल. रु भीष्म. आररय. नाम, सरमोहन. गर्गर. बसु. ललाम॥
संग्रामपाल. ससिबर्म४९० बर्म. अमृतेस. रजतचंद्रक. ससर्म॥४२॥
संटनन. किंश्र. कद्दर. सहाव. रामसरन. प्रानद. रंधूराव५०० ॥
ए जोधपुत्र सतपंच५००इद्ध, प्रतिहार भूप नाती प्रसिद्ध ॥ ४३ ॥
जेठो समस्त सैन देवराज२, मरुभूप भयो लहि सुख समाज ॥
नवनवति च्यारि सत४९९अनुज तास, कहुँ कर लगे मृगयाबिलास
जिनसौं किय ह्हाँ इक१जच्छ जंग, तँहँ सकल भये दीपक पतंग॥
नृप देवराज जिन्ह अग्रजात, सुत तास भये भूख्यात सात७।४५।

षट्पदी

सिंह४।१करन४।२सल्लूर४।३सल्ल४।४मिश्रक४।५छत्रासव४।६,
सप्तम७पुनि सत्रुघ्न४।७भये ए देवराज भर्व ॥
जेठो सिंह४सु भूप भयो तस तनय पडहर५,
पंडहरहु तासौं कहात प्रतिहार वंसबर ॥
पंडहर पुत्र पृथ्वीन६हुव तास जयद्रुम७सुत भयो ॥
ताकै समाधि८प्रकट्यो तनय ताकै नृप कुसकर९ठयो।४६।
पराबल१०रु गोपाल११सत्वराज१२रु भल्लकरम१३,
पुनि मखेन१४रंजन१५हु भयो जन्यजनक अनुक्रम ॥
रंजनकै प्रह्लाद१६तास सुत राज महीप१७रु,
ध्वज महीप१८हुव तास छुट्यो तासौं जनपद मरु ॥
बिंबथल नगर तब जाय नृपध्वज महीप१८निज राज्य किय,

१प्रकाशवाले२पोते३से(सबसे)४छोटे भाई५शिकार का६यक्ष ने७बडा८पैदा (उत्पन्न) ९–१०इनमें जन्यजनकभाव (पिता से पुत्र का होना) अनुक्रम से हुआ अर्थात् कोई गोद नहीं आये ११ देश

त्रिसंग१९महीप हुव तस तनय सोहि त्रिसंग१९हु नाम बियं२ ॥४७॥

पादाकुलकम् ॥

ताकै सुत अक्षयमहीप२०हुव, ताकै बेणुमहीप२१भयो ध्रुव ॥
ताको राज्य बढ्यो छितिमंडल, सब सिर तप्यो सु नगर बिंबथल्ल॥४८॥
ताके च्यारि४भये सुत भूपति, जेठो भीममहीप२२।१महामति ॥
पुनि यह बीरमहीप२२।२नाम हुव,
त्यौं मधुपालमहीप२२।३अनुज ध्रुव ॥ ४९ ॥
गर्जमहीप २२।४ चतुर्थ ४ प्रमानहु,
ताकँहँ मल्लमहीप २२।४ ह जानहु ॥
भीममहीप२२बडो तिन्ह भ्राता, नृपता लहि सु भयो भुवत्राता ॥
स्वर्णमहीप२३भयो ताकै सुत, जसनमहीप२४तास हुव जसजुत॥
ताकै संगमहीप२५ महीपति, ताकै राममहीप२६ हुव सुमति ॥५१॥
बिश्वमहीप२७ तास सुत जानहु, तस संग्राममहीप२८ प्रमानहु॥
तस रचमहीप२९ नगमहीप३० तस, ताकै रूपमहीप३१ महाजस५२
क्रम सन नंदमहीप३२ तस गिनहु, सेनमहीप३३रु गजमहीप३४ पॅहु।
सुभगमहीप३५सुराजमहीप३६रु, महामहीप३७धनुर्महीप३८बरु५३
जयमहीप३९ संकरमहीप४०पुनि, दानमहीप४१दयामहीप४२गनि।
अजितमहीप ४३ महीमहीप ४४ तिस,
प्रभुमहीप ४५ ईश्वरमहीप ४६ इम ॥ ५४ ॥
हरिमहीप४७रनमहीप४८जानहु, मधुमहीप४९बलमहीप५०मानहु ॥
ताके रत्नमहीप५१नरेश्वर, मधुमहीप५२हुव तास बुद्धिवर॥ ५५ ॥

॥ रोला ॥

मधुमहीपकै तनय पंच ५ लुद्दरमहीप ५३।१ बरु,
अचलमहीप ५३।२ रु दलमहीप ५३।३ भगवतमहीप ५३।४ अरु।
सलमहीप५३।५ इनमाँहिं ज्येष्ठ अनपत्य मर्‌यो रन,

---

१ दूसरा २ भूमि मंडल ३ रक्षा करनेवाला ४ राजा ५ पुत्रादि बिना सन्तान

जाकँहँ लोटर५३पित्रं मन्नि पूजत तस कुलजन ॥ ५६ ॥
तब हुव भूपति बिनयमहीप५४ अचलमहीप सुव,
ताकै सहनमहीप ५५ तास हंसकमहीप ५६ हुव ॥
याके सुत इकतीस३१ मल्ल५७१ खेमक२ मयार३ बलि,
मानव४धर्म५सुवर्ण६प्रनय७राजस८सुपाल९कलि१० ॥५७॥
कनक११सिरोमनि१२मान१३चंद्र१४वर्गल१५प्रेम१६रु गज१७,
गुनयत१८पूरन१९ मदन२०बदन२१चंदन२२तुंगध्वज२३ ॥
अंबर२४अदर२५असोक२६कुंज२७कटंकित२८त्याही हरि२९,
तासौं अनुज सुहोत्र३०सबन छोटो धन्वंतरि ३१ ॥ ५८ ॥
इनके अंतमहीप सबहि नामनके जानहु,
हंसकमहीप तनय बंसबर्द्धक ए३१मानहु ॥
इनमैं अग्रज मल्ल५७१तास गोतममहीप५८सुत,
ताकै कीर्त्तिमहीप५९तास महमहीप६०जयजुत॥५९॥
ताकै तेजमहीप६१तास धोरनमहीप६२हुव,
रामराज६३तस पुत्र तास सुज्ञानराज६४ सुव ॥
वीरराज६५तस पुत्र तास साहस्रराज६६पुनि.
कनकराज६७तस कुंजराज६८तस बंसराज६९ सुनि ॥ ६० ॥
इहिं क्रम बेणीराज७०चित्रराज७१प्रहराज७२अरु,
भल्लराज७३सूत्तानराज७४बंगस्वराज७५बरु ॥
कनकराज७६ कुरुसालिराज७७ बिलिखराज७८ ज्यौंहीं,
अजयराज७९ राजेंद्रराज८० मल्लराज८१ त्यौंहीं ॥ ६१ ॥
कृष्णराज८२ बलि चयनराज८३ सिंहराज८४ नामा,
पल्लहराज८५ मल्लोकराज८६ मिलराज८७ सुधामा ॥
उदयराज८८ बलराज८९ गहलराज९० राघवराज९१,

१ जो कुमारा ही मागजाता है तथा मरजाता है उसे पितर (भूत विशेष) कहकर उसके कुलवाले पूजते हैं, लोटर उस मरनेवाले का नाम है २ छोटा भाई ३ इनके नामों के अंत में महीप शब्द जानना ४ बढानेवाले ५बडा ६पुत्र

रामराज९२कुबलयराज९३रु सक्रराज९४सुकाज ॥६२॥
ताकै पंद्रह पुत्र भये सब धर्मधुरंधर,
बलिराज९५।१ चंद्रराज२हनुराज३ बंसवृद्धिकर ॥
निर्भयराज४ रु उदयराज५ गोहरराज६ तथा,
त्रिलोकराज७रु उग्रराज८सुखराज९पुनि तथा ॥ ६३ ॥
राजदाज१० रु भोजराज११ निमिराज१२ प्रमानहु,
जयमदराज१३अनेयराज१४इंद्रराज१५जानहु॥
साक्रराजि बलिराज९५सबन जेठो भूपति हुव,
ताके उत्तमराज९६तनय तस मधुरराज९७ सुव ॥ ६४ ॥
सक्तिराज९८ तस सूनु तास गिरिबरराज९९ तनय,
इहिं क्रम बेणीराज१००तास अलराज१०१ रनअभय ॥
ताकै तनय पचीस२५ सबहि राजांत नाम हुव,
हंस१०२।१बच्छ. सामंत. हृदय. हायन. मोहन. ध्रुव.॥६५॥
महासत्व. सत्रुघ्न. मदन१०मंडन. नल.संकर.
महानंद. जयदेव. भानु. कर्पूर. रु सुंदर. ॥
हर. सुमेरु२०सिवदत्त. राजबाहन. नारायन.
भास्कर. माधव१०२।२५आलराजि ए२५भये धर्मधनं ॥६६॥
इनमैं जेठो बिनु अपत्य मृत जुद्ध महामति,
हंसराज१०२करि ताहि पित्र मन्नत तस संतति ॥
हंसराजको अनुज भूप तब बच्छराज१०२ हुव,
ताकै कर्ण१०३।१त्रिलोकचंद्र१०३।२ए हुव तनूज दुव॥६७॥
इनमैं जेठो कर्ण१०३भये पंचहि ताकै सुत,
हरि१०४।१ गिरि२संभु३समान४बिनय५राजांत बिनयजुत॥
अग्रज हरि १०४ ताकैहु भये राजांत पंच सुत,

---

१ यदानेवाले २ पुत्र ३ पुत्र ४ जिनके नामों के अंत में राजा पद है ऐसे नामवाले हुए ५ धर्म ही है धन जिनके ६ विना सन्तान युद्ध में मरा ७ उसके वंशवाले ८ राजा शब्द है अंत में जिसके ऐसे नामों वाले ९ नम्रता सहित

संजम१०५।१नग२बलिभद्र३बीर४बिक्रम५स्वधर्मजुत ॥६८॥
सं‍‌‌‌‌मके सुत अमरराज१०६।१अरु राजराज१०६।२दुव२,
अमरराज१०६कै सिंहराज१०७तस महनराज१०८सुव ॥
ताकै तनय किसोरराज१०९सुत पूर्णराज११०तस,
ताकै सुजानराज१११तस कुमारराज११२अतिजस ॥ ६९ ॥
तकै सहबलराज११३राम सुरराज११४तास पुनि,
ताकै परमानंदराज११५तस नंदराज११६सुनि ॥
तस गोवर्द्धनराज११७भयो तस रामपाल११८सुत,
ताकै सुत बुधपाल११९तास धनपाल१२०धर्मजुत ॥७० ॥
चंद्रपाल१२१ तस कृष्णपाल१२२तस कर्णपाल१२३ सुव,
ताकै मोहनपाल मुख्य तेईस२३तनय हुव ॥
मोहन१२४।१सज्जन. अमर. मान. चंदन. सुख. भारत.
आनंद. रु धन. मंल१०सेन. सुंदर. भीम. अनंत. ॥ ७१ ॥
रुद्र. मेघ. व्रज. भानु. अमद. सद्दल२०दम. गोमन.
अरु जन१२४।२३ए२३[3]पालांत कर्णपालज कीरतिधर्न[4] ॥
अग्रज मोहनपाल१२४तास नरपाल१२५नैरननुत[5],
ताकै लच्छनपाल१२६तास सामंतपाल१२७सुत ॥ ७२ ॥
इहिं क्रम अनुकुल जयत्पाल१२८हत्पाल१२९प्रमानहु,
भैरवपाल१३०सुभागपाल१३१छलपाल१३२जानहु ॥
संगर१३३बेणी१३४पाल तास अनुपमपाल१३५भयो,
सो नभसरगुन३५०[6]प्रमित राजपुत्री परिनयो॥ ७३॥
तदपि भयो नहिं पुत्र सिद्धसेवन कीनौं जब,
तिनको पाय प्रसाद मिथुन इक१तास भयो तब ॥
चंद्रवती लहि नाम सुता हुव सुगुन सिराही,
सो मथुरापति अमरचंद जद्दवकँहँ व्याही ॥ ७४ ॥

---

१ पुत्र २ पुत्र ३ पाल शब्द है अंत में जिनके ४कीर्ति ही है धन जिसके ५ मनुष्यों में स्तुति योग्य६(३५०)के सम्वत् में७प्रमाण८तो भी९प्रसन्नता१०जोड़ा११बेटी

मातामह कुल नाम पाय तस पुत्र बिदित हुव,
तबतैं जदुकुलभूप पाल उँपटंकि भयो ध्रुव ॥
त्यौं अनुपमपालकै भयो जयसिंहरान१३६सुत,
तबतैं हुव प्रतिहार बंस रानोपटंक जुत ॥ ७५ ॥
तास धनेश्वररान१३७तास बुधसिंहरान १३८हुव,
ताकै दीपित आदि अट्ठ८रानांत भये सुव ॥
दीपित१३०।१उदय२सुछत्र३लाल४हरमत५जगमत६पुनि,
मान७किसोर८रु सबनमाँहिं जेठो दीपित गनि ॥ ७६ ॥
दीपितकै सुत तीन३संभु१४०।१संग्राम२रु अजगर३,
संभुतनयचउ४अज१४१।१अनूप१४१।२गांगेय१४१।३गदाधर१४१।४
अजकै कमोदरान१४२तास नगपतिराज१४३भयो,
ताकै सल्लस आदि पुत्र अष्टादसक१८ठयो ॥ ७७ ॥
सल्लम१४४।१बल२हम्मीर३बंक४चंदन५कल्ल्यान६रु,
नवल७सहज८सौभाग्य९अमर१०पर्बत११रंज१२अगरु१३ ॥
लछमन१४जदुपति१५भोज१६चंद्रभानु१७रु बिल्लहन१८तिम
ए धृति१८नगपतिरान तनुज रानांत भये इम ॥ ७८॥
जेठो सल्लमरान१४४तास सुत अभयरान१४५हुव,
भावरान१४६।१रघुनाथरान१४६।२ए तास भये दुव२॥
भावरान१४६अतिबिदित भई ताकै सत१००रानी,
तनय इंद्रजित आदि भये उत्कृति२६अतिमानी ॥ ७९ ॥
रानांतहि सब इंद्रजित१४७।१रु अन्नद२क्षुद्विप३हर४,
कमल५प्रयाग६रु बीरभानु७सुभराज८रु संकर९॥
कोक१०चंद्र११आसाजित१२बेधक१३कुंजराज१४पुनि,
कोपन१५कमन१६दिलीप१७भगीरथ१८गंगाधर१९ सुनि॥८०॥

१नाना के कुल के नामों के अनुसार २ जादवों के कुल में ३ खिताब (पाल की पदवी) ४ राणा की पदवी सहित ५ राणा शब्द है अंत में जिनके ऐसे नामोंवाले ६ पुत्र ७ राणा शब्द है अंत में जिनके ऐसे नामोंवाले ८ छ० स

सल२०समुद२१अक्रूर२२सूर२३संभू२४सम्मद२५तिम,
छोटो हरि१४७।२६छब्बीस२६भावरानजं हुव इम ॥
बडो इंद्रजित१४७बिदित भयो अतिबल जग जस चुनि,
तानैं लै मरुदेस राजधानी किन्नी पुनि ॥ ८१ ॥
भय इंद्रजित रान तनय तीन३हि अति उत्तम,
नियमराज१४८।१माधव२रु भीम१४८।३रानांत नाम क्रम ॥
नियमराज रानकै पुंडरीकादि रान१४९सुत,
गया जात बहुबेर पितर ऋन मेटि भयो नुत ॥ ८२ ॥
सुत तासहु रानांत भये तीन३हि हे भूपति,
जेठो केसव१५०।१मध्यमान२ जीवन१५०।३लघु सुभमति ॥
केसवकै बुधपाल१५१तास ध्वजपाल१५२ प्रमानहु,
लोकपाल१५३तसं तस कृपाल१५४पूरन१५५तस जानहु ॥८३॥
पूरनकै सुत अमृतपाल१५६ ताकै प्रयाग१५७ हुव,
तास समर१५८ सिवरत१५९ तदीय सेनापति१६०तस सुंव।
ताकै कासिनाथ१६१ तास कर्मन१६२ किसोर१६३ तस,
तास करन१६४तस कृष्ण१६५तास रघुराज१६६महाजस॥८४॥
सल्हरान१६७ सुत तास तास संबररान१६८ तनय,
ताकै भूपतिरान१६९ तास अजरान१७० हतअनय ॥
जाडेची जहोनि भई रानी याके घर,
तस सुत नाहरराज१७१सुता पिंगला१भये बरं ॥ ८५ ॥
पिंगला सु चित्तोडभूप तेजहिं परिनाई,
जग जस नाहरराज१७१भयो अग्रज तस भाई ॥
नियति जोग लहि तास कुष्ट निकसे सब अंगन,

---

१ भाव नामक राणा से पैदा २ राणा शब्द है अंत में जिनके ऐसे नामोंवाले ३स्तुति योग्य ४ उसके ५ पुत्र ६ पुत्री ७ श्रेष्ठ ८ चीतोड़के राजा तेजसिंह को ९ दैवयोग (भाग्यवश) से उसके शरीर में कोढ निकसे

भयो जहाँ यह भूप सुनहु वह काल[1] कित्तिधन[2]॥ ८६ ॥

॥ षट्पदी ॥

कणणाउज्ज[3] रठोर तपत जयचंद भूप जँहँ ॥
चित्तऊड[4] सीसोद समरसिंह सु रावल तँहँ ॥
तोँवर तपत अनंगपाल दिल्लिय पुर दुद्धर[5] ॥
सोमेस्वर अजमेर वंस चहुवान समुद्धर[6] ॥
चालुक्क्य[7] भीम गुजरात धर भोराराय[8] उपाख्य पति ॥
नर[9]उर अधीस है जस नृपति कूरम कुल मंडन सुमति॥८७॥
इत सु लक्ख परमार तपत अब्बुव[10] गिरि उप्पर॥
बंबावद आनंदराज कुल हड्ड दिवाकर[11] ॥
जद्दवपति जयसेन दुर्ग रनथंभ धराधन[12] ॥
भट्टी[13] जैसलमेर जानि जद्दव कलहकरन ॥
परमाल भूप चंदेल जब थान महुब्बापुर ठयो॥
तब प्रातिहार नाहर नृप सु मंडोवर[14] मरुपति भयो ॥८८॥

॥ दोहा ॥

नाहरराज नरेस यह, इकदिन गत आखेट[15] ॥
इक१हय इक१अप्पन उहाँ, भयो क्रोड[16] इक१भेट ॥ ८९॥
लखि द्रुत[17] ताकी पिछि लागि,चल्ल्यो अरब[18] उडाय ॥
कोस बहुत भुव लंघिकैं, पत्तो[19] पुष्कर आय ॥ ९० ॥

---

१ उस समय में २ हे कीर्तिधन (कीर्ति ही है धन जिसके) ३ कन्नोज पर ४ चीतोड़ पर रावल समरसिंह (सूर्यमल्ल ने समरसिंह का इस समय में होना पृथ्वीराजरासा के मत से लिया है सो सत्य नहीं है; क्योंकि पृथ्वीराजरासा उस समय का बनाहुआ ग्रंथ नहीं है उस समय के बहुत काल पीछे कई कपोलकल्पित कहानियों से बनाया गया है इस कारण से समरसिंह के समय में सौ वर्ष का अंतर पड़ता है जिसको प्रमाणों सहित देखना होवे तो मेवाड़ के इतिहास वीरविनोद नामक ग्रंथ में देखो) ५ दुस्तर ६ उद्धार करनेवाला७सोलंखी८उपनाम (भोळारायभीम ऐसा प्रसिद्ध है)९कछवाहों के१०आबू पर ११ हाडा क्षत्रियों का सूर्य१२भूमि ही है धन जिसके१३भाटी (जादव कुल क्षत्री) १४मंडोवर नामक पुर में१५शिकार१६सूवर१७शीघ्र१८घोड़े को१९पहुँचा

तीरथगुरु यह तिन दिनन, हौ गतजल[1] लहि काल[2]॥
भुव कछु अल्ली[3] यौं भयो, अतिएरक[4] तिंहिं ताल॥९१॥
प्रबिसि तत्थ भा किरि[5] पिहित[6], भयो पिपासू भूप ॥
पायो खोजत निठ्ठि तँहँ, गोपद[7] सलिल अनूप ॥ ९२ ॥
वहहि भूप पिन्नौं उदक[8], सीतल सुखद सुगंध ॥
ताही समय अकुष्ट[9] तनु, सो हुव मुदित सुसंध ॥ ९३ ॥
बहुरि बिहावन संरनि[10] श्रम, किन्नौं तत्थहि सैन ॥
श्रीपुष्कर दिन्नौं स्वपन, इहिं अंतर सुख अैन ॥ ९४॥
मैंही सूकर[11] रूप करि, यँहँ आन्यौं नृप तोहि ॥
सिक[12]तौ एरक बहुल करि, व्यवहित[13] जानहु मोहि ॥ ९५ ॥
यातैं नृप करनौं उचित, मम जीरनउद्धार ॥
कुष्ट गये तव काय[14]के, सलिल पुराय[15] अनुसार ॥ ९६ ॥
तब नृप जागि तत्थहि रह्यो, निरखि अनामय[16] काय ॥
मंडोवर सन[17] भट सचिव, लिन्नैं सकल बुलाय ॥९७ ॥
रुप्पय लक्खन खरच करि, नाहरराज नृपाल ॥
किय खुदाय उंडो अतुल, तीरथ पुष्कर ताल[18] ॥ ९८ ॥
कनका[19]दिक सब धातुके, श्रद्धा[20] मित सोपान[21] ॥
अपर[22] चहौं४दिस उपलमय[23], बिरचिय घट्ट[24] बिधान ॥ ९९ ॥
तबहीतैं प्रतिहार कुल, सूकर पलल[25] न खाय ॥
हुव इम नाहरराज१७१नृप, मंडोवर मरुराय[26] ॥१००॥
ताकै राघवराज१७२हुव, ताकै सुत ध॰राज१७३।१ ॥
राजसिंह२ सामंत१७३।३पुनि,ए तीन३हि जसभाज[27]॥१०१॥

---

१ सूखाहुआ २दुर्भिक्ष ३गीली ४एरा ५सूवर ६छिपगया ७ गाय के खुर के खड्डे में जल८पानी९बिना कोढ का शरीर१०मार्ग के परिश्रम को११सूवर का१२रेत और एरा के बहुत होने को ही मेरी ओंड समझ(अर्थात् रेत और एरा में छिपा हूं)१३शरीर के १५ पवित्र पानी से१६नैराग्य१७से १८ तालाव को१९सोने को आदि लेकर२०श्रद्धा के माफिक २१सीढियें२२दूसरे२३पत्थर के२४घाट २५सूवर का मांस नहीं खाते हैं२६मारवाड का राजा२७यश के भाजन(पात्र)

गंगपाल१७४धनराजकै, ताकै हुव हुव पुन ॥
जीवराज१७५।१सुंदर१७५।२सुमति,जस जय बिक्रम जुत्त।१०२।
जीवराज सुत दव२भये, अमायिक१७६।१रु सूदार१७६।२॥
भप अमायिककै भये, सुत द्वादस मतिसार ॥ १०३ ॥
जेठो लुल्लर१७७।१सूर२ पुनि, रामट३ खीखा४ नाम ॥
सोधक५ खुक्खर६ चंद७ बलि, मालदेव८ जसधाम ॥ १०४ ॥
धार९ खीर१०डुंगर११ सुबर१७७।१२, ए कारक खलखेद ॥
प्रातिहारकुलके भये, इनतैं बारह१२ भेद ॥ १०५ ॥
जेठो लुल्लर१७७।१पट्टपति, ताकी संतति सर्ब ॥
बजे भेद करि लुल्लरा१, आहवं असह अखर्ब ॥ १०६ ॥
सूर जनंनके सब बजे, सूराउत२प्रतिहार ॥
कति मागध मंडोवरा२, तिनको कहत प्रकार ॥ १०७ ॥
रामट कुलके रामटा३, खीखा सुत बुधखेल१७८ ॥
निजनामक बुधखेल जिहिं, नगर रचिय मतिमेल ॥ १०८ ॥
पूरबमैं बुधखेलिया४, ताके अन्वयजात ॥
लोधक सुत हुव इंद१७८तस, कुलके इंदा५ख्यात ॥ १०९ ॥
खुक्खरके खोखर६भये, चंद तनय हुव तीन३ ॥
किल्हन१७८।१चंद्र२चुहन्न१७८।३ए,तिनके आह्वय कीन ॥११०॥
किल्हन निबसथ निर्मयो, कीलोई अभिधान ॥
कीलोया१ प्रतिहार हुव, ताके सब संतान ॥ १११ ॥
चंद्र जनित चंद्रायनाँ२, असो धारत अंक ॥
तीजे३तनय चुहन्नके, चोहन्नाँ३उपटंक ॥ ११२ ॥
ए चंदाउत७भेद त्रय३, सप्तम७के पहिचानि ॥
मालदेव१७७।८ अष्टम भयो, जनंन तास अब जानि ॥ ११३ ॥
मालदेवकै महप १७८ हुव, ताकै सुत धोरान१७९ ॥

---

१ युद्ध में २ बडे ३ सूर के वंशवाले ४ जिनको कितने ही भाट लोग मंडोवरा कहते हैं ५ वंश के हुए ६ नाम ७ गांव बसाया ८ चिन्ह ९ पदवीवाले १० वंश

धे।रानाँ ८ सबही बजे, ताकै कुल संतान ॥ ११४ ॥
मालदेवको जो अनुज, नवम ९ धार १७७ अभिधान ॥
ता॑ै धंधिल १७८ तास कुल, सब धंधिल ९ संतान ॥११५॥
खीरतनय सिंधू १७८ भयो, सिंधूके १० तस जात ॥
डुंगरकै ोरान १७८ तिहिं,डोरानाँ ११ हुव [२]ख्यात ॥ ११६ ॥
सुबरानाँ १२ हुव सुबरकै, ए द्वादस १२ उपटंक[३] ॥
चले अमायिक सुतनतैं, सब भर समर[४] निसंक ॥ ११७ ॥
लुल्लर १७७ अग्रज सबनमैं, रुद्रपाल १७८ हुव तास ॥
रुद्रपालकै च्यारि ४ सुत, प्रकटे सुमति प्रकास ॥११८॥
हुव अग्रज हरपाल१७९।१ पुनि, सेनपाल २ अभिधान ॥
तीजो मोहनपाल३ गजदेव १७९।४चतुर्थ४ सयान॥११९॥
हुव जेठे हरपालकै, सुत ठक्कुरसी १८० नाम ॥
ताकै नृप गोइंद १८१ हुव ताकै बुध १८२ अभिराम ॥ १२० ॥
बुधकै पृथ्वीराज १८३ सुत, ताकै नृप रूपाड १८४ ॥
ताके हुव सोलह १६ तनय, लहि अनुचित अतिलाड[५] । १२१ ।
जेठो नृप हम्मीर १८५।१ पुनि, जैसल२ मुक्कल ३जानि ।
देवीदास ४ रु कुंज ५ तिम, कल्लू ६ करन ७ बखानि ॥१२२॥
देवपाल८जसराज९जयसिंह१०पित्थ११अरु चंद१२ ॥
चं १३रु उद्दल१४दीपसी१५,गुज्जरमल्ल१६हु मंद ॥१२३॥
ोलह१६ए रूपाड सुत, जँहँ अग्रज हम्मीर ॥
मंडोवर गढ्डिय रह्यो, निजकुल खोवन नीरँ ॥ १२४ ॥
बीरमदेव कबंधसुत, हुव चौंडा रट्ठोर ॥
इंदन घर उद्वाह करि, जो जुज्झ्यो अति जोर ॥ १२५ ॥
हे इंदे प िहार पै[११] प्रभु निज लखि प्रतिकूल ॥

१नाम २प्रसिद्ध ३पदवी ४युद्ध के भार में निशंक अमायक के पुत्रों से यह पदवी च लीं ५न म६स्नेह(प्यार)से७पराक्रम८राठोड़ वंश के क्षत्रिय९ईंदा जाति के क्षत्रियों के१०विवाह११ईंदे भी पड़िहार ही थे, परंतु१२अपने स्वामी को विरुद्ध जानकर

जामाताके[1] संग जुरि, स्वामि ह्रदय हुव सूल ॥ १२६ ॥
नृप हम्मीरहु जिन दिनन, चालतहो खलचाल[2] ॥
बहिनि सगोत्रा[3] बैर बनत, हे सब बंधु बिहाल ॥ १२७ ॥
द्विरागमन[4] करि इक्क द्विज[5], जाया निज लै जात[6] ॥
पिक्खी वह हम्मीर नृप, रूप न अंग समात ॥ १२८ ॥
छिन्निलई बरजोरि[7] करि, निलज तबहि द्विजनारि ॥
ताके पति निज देह तब, दयो अग्नि बिच डारि ॥ १२९ ॥
यहहि ब्रह्महत्या अतुल, गिनी न खल प्रतिहार ॥
बिमन भये सब बंधुगन, चाहत हनन[8] बिचार ॥ १३० ॥

षट्पदी

तँहँ चौंडा राठोर संग इंदा लहि दुद्धर ॥
अरधनिसा द्रुत[9] आय पस्यो पत्तन[10] मंडोवर ॥
खल नृपसौं तब बदलि मिल्यो परिकर[11] चौंडासन ॥
भज्यो चकित हम्मीर पतित कैसैं मंडैं रन ॥
मित बिक्रम सक जँहँ गत भयो ॥
तिंहिंकाल नगर मंडोवर सु रठ्ठोरन रन करि लयो ॥ १३१ ॥

दोहा

इत खल नृप हम्मीर१८५।१वह, बीरूटंकर नैर[12] ॥
आनि बस्यो पापिन अधिप, बिसरि कबंधन बैर[13] ॥ १३२ ॥
याको सोदर[14] पंद्रहौं१५, दीपसिंह१८५अभिधान[15] ॥
तस कुलके सुंध्यां[16] भये, मालव धर बसवान ॥ १३३ ॥
सोदर ताको सोलहौं१६, गुज्जरमल्ल१८५अगूढ ॥

---

१ जमाई के साथ होकर २ दुष्टताकी ३ अपने गोत्र की बहिन का पति होजाने से (अपने गोत की बहिन से व्यभिचार करने से) ४ गोना ५ ब्राह्मण ६ अपनी स्त्री को लेजाते समय ७ जबर्दस्ती ८ मारने का ९ शीघ्र १० पुर ११ परगह के लोग १२ पुर १३ राठौड़ों के बैर को १४ सगा भाई १५ नाम १६ जिनको सिंधिया कहते हैं, और इस समय ग्वालियर का राज्य करते हैं.

बच्छो इक[1] दव[2]मैं जर्यो, मृग जान्यों जिहिं मूढ ॥ १३४ ॥
दीपसिंह बरजत रह्यो, मन्नी तदपि[3] न एक ॥
क[4]र्नकट्टि दुव बच्छके, खाये बिरह बिबेक ॥ १३५ ॥
इहिं अंतर ग्वाल[5]हु उहाँ, अतिज[6]व ढुंढत आय ॥
बुल्ल्यो लखि इहिं बच्छके, लये श्रवन किन खाय ॥ १३६ ॥
इम हुव बिदित उदं[7]त यह, कही सगोत्रन आय ॥
मेटहु गुज्जरमल्ल अ[8]घ, प्रायश्चित्त बि[9]धाय ॥ १३७ ॥
सोहु न मन्नी टेक सं[10]न, रह्यो मत्त जिम रुट्ठि ॥
ज्ञाति बहि[11]र्गत करि जबहि, आप्त[12] गये सब उट्ठि ॥ १३८ ॥
इक मैनाँ[13] की कन्यका, त[14]न्नंतर यह ब्याहि ॥
मैनाँ गुज्जरमल्ल हुव, चित्त दुरि[15]त हित चाहि ॥ १३९ ॥
सं[16]भरपति नबतैं सुनहु, हुव मैनाँ पडिहार ॥
बसे आनि खदिराट[17]वी, इम तव देस उदार ॥ १४० ॥
इत बीरूटंकर नगर, आयो वह हम्मीर १८५ ॥
ताकैं सुत कुंतल भयो १८६, पटु रन करन प्रबीर ॥ १४१ ॥
श[18]निनगर जिहिं लरि लयो, सत्रुन सीम दबाय ॥
रजधानी रक्खी तहाँ, अप्पन अमल जमाय ॥ १४२ ॥
जिहिं सावर सरवाड जुत, थिर दब्बे बहु थान ॥
ताकै दुव २ सुत बग्घ १८७।१, अरु निम्मदेव १८७।२ अभि[19]धान ॥ १४३ ॥
चालुक ईहडदेवकी, सुता जयमती नाम ॥
बग्घ सु ब्याह्यो चरम[20]बंय, कुलटा अपजस काम ॥ १४४ ॥
गोठनपति गुज्जर भये, प्रबल समय वह पाय ॥

---

१ गाय का बच्चा २ वन में लाय लगी जिसमें जलगया ३ तौभी ४ उस बछड़े के दोनों कान काट कर ५ गायों के चरानेवालों ने ६ शीघ्र ७ वृत्तांत ८ पाप ९ करके १० हठ से ११ बाहर १२ सत्यवादी लोग १३ मींणा (एक नीच जाति विशेष) १४ जिसपीछे १५ पाप १६ हे चहुवाण राजा रामसिंह १७ खैराड़ नामक देश में हे उदार आपके देश में १८ भिणाय नगर का प्राचीन नाम है, अथवा भिणाय के पास कोई दूसरा ग्राम था १९ नाम २० वृद्धावस्था (बुढापा) में

जिनकौं लड्डो अतुलधन, खरचन खान अघाय ॥ १४५ ॥
भ्राता वे संकृति२४भये, मुख्य भोज[2] तिनमाँहिं ॥
बित्त[3] लुटावन काज जिहिं, रक्खी नाँहिं[4] सु नाँहिं ॥ १४६ ॥
ताके घर यह बग्घकी, रानी प्रविसी जाय ॥
कारन तिहिं संगर[5] कियउ, प्रतिहारन बल पाय ॥ १४७ ॥
हनि सोदर चउबीस२४ही, किन्नैं गोठ[6] बिहाल ॥
भयो बिदित यह भुम्मितल, कलह गुज्जरनकाल ॥ १४८ ॥
बग्घ तनय हुव भुद्द१८८नृप, राननगर अधिराज[7] ॥
हुत सुत गुज्जरभोजकै, उद्दल हुव अतिलाज ॥ १४९ ॥
जनक[8] पितृव्यक[9] बैर जिहिं, लिन्नौं सुमिरि असेस[10] ॥
प्रतिहारन सनैं[11] रानपुर, छुट्ट्यो तब सह देस ॥ १५० ॥
भयेभुद्द सुत दोय२जसराज१८९।१रु साँवलदास१८९।२॥
सुत जिहिं साँवलदासकै, इक१हुव केसवदास१९० ॥१५१॥
कुल सब केसवदासको, केसवउत्त कहात ॥
जेठो जो जसराज१८९तस, नंद१९०नाम सुत जात ॥१५२॥
नंद तनय[12] हुव भीम १९१अरु,ताके हुव दुव२पुत्त[13] ॥
कृष्णादास१९२।१जेठो अनुंज[14], सोनपाल२जयजुत्त ॥१५३॥
बजे सोनपालोत्त ही, तस संतति[15] प्रतिहार ॥
ताहीके कुलनाद हुव, जाके भीम उदार ॥ १५४ ॥
सोनपालसौं अग्रज[16] जु, कृष्णादास१९२अभिधान[17] ॥
जिहिं बंध्यो गढ उचहरा, पूरब धर निज थान ॥ १५५ ॥
कृष्णादास नृपकै भयो, स्यामस्याहि१९३अरिसाल ॥
तास मुकुट मोहन१९४भयो, ताकै तनय कृपाल१९५।१५६।

१ चोवीस भाई २ भोजा नामक गूजर ३ धन के देने में जिसने ४ नाहीं की नाहीं रक्खी, अर्थात् एक नटने का ही निषेध था ५ युद्ध ६ गांव का नाम है ७ स्वामी ८ पिता ९ काके(चचे) १०संपूर्ण११से१२पुत्र१३ पुत्र १४ छोटा भाई १५ वंश (संतान) १६ बडा भाई १७ नाम

गीर्वाणभाषा ॥ स्रग्विणी ॥

तत्प्रपौत्रप्रपौत्रप्रपौत्रप्रपौत्रप्रपौत्रप्रपौत्रप्रपौत्रात्मजा ॥
राम भूभृत्तृतीया३द्वितीया भवत्प्रेयसो याऽभवच्चन्द्रभानुः सुधीः॥१५७॥

॥ १५८ ॥

॥ १५९ ॥

॥ १६० ॥

॥ १६१ ॥

॥ १६२ ॥

सङ्क्षिप्य कीर्त्तितो राजन्प्रतिहारान्वयस्त्विति ॥
तस्य पूर्बभिदोऽज्ञाताः शृणु चाधुनिका भिदः ॥ १६३ ॥
पूर्वं पण्डहरोपाख्या१जाताः पण्डहरान्नृपात् ॥
लुल्लराल्लुल्लरोपाख्याः१।१शूराउत्ता१।२स्तु शूरतः ॥१६४॥
एतान्मण्डोवरोपाख्या १।२ न्वदन्ति कतिमागधाः ॥
रामटाद्रामटोपाख्याः १।३खैखेस्तु बुधखेलतः ॥ १६५ ॥
पूर्वस्यां बहुविस्तारा बभूवुर्बुधखेलयाः१।४ ॥

संस्कृतभाषा॥ हे राजा रामसिंह उस कृपाल के पड़पोते का पड़पोता, पड़पोते का पड़पोता, पड़पोते का पड़पोता, पड़पोते का पड़पोता, पड़पोते का पड़पोता, पड़पोते का पड़पोता, पड़पोते का पडपोता, अर्थात् इक्कीसवीं पीढी पर बलभद्र नामक की दूसरी पुत्री बुद्धिमती चन्द्रभानु नामवाली जो आपकी प्यारी तीसरी राणी हुई ॥१५७॥ हे राजा रामसिंह यह पडिहार का वंश संक्षेप से कहागया जिसके पहिले भेद नहीं जाने गये और अब के भेद सुनो ॥१६३॥ पहले पण्डहर से जो हुए सो पण्डहरा नाम से, लुल्लर के हुए जो लुल्लरा नाम से, और शूर से उत्पन्न हुए जो शूराउत्त कहाये ॥ १६४ ॥ इनको कितनेक भाट मण्डवरा नाम से कहते हैं. खिखि के बेटे बुधखेल से हुए जो बुधखेलया नाम से पूर्वदिशा

शोधकस्य सुतादिन्दादिन्दा१।७श्रासन्नुपाख्यया ॥ १६६ ॥
खुक्खरात्खौक्खरा ११६जाताश्चन्दस्यासंस्त्रयः३सुताः ॥
किल्हणा१श्च तथा चन्द्र२श्चुहन्न३श्चेति नामतः ॥ १६७ ॥
चन्दाउत्तोपनामान १।७स्तेऽप्यस्तिस्रो भिदोऽभवन् ॥
कीलोयाः१।७।१किल्हणाज्जाताश्चन्दाच्चन्द्रायणा१।७।२स्तथा।१६८।
चोहन्नादपि चोहन्ना १।७।३श्चन्द्राउत्ता१।७इमे त्रयः३ ॥
मालदेवसुताज्जातो धोराणो महपाभिधात् ॥ १६९ ॥
धोराणा १।८ इत्युपाभिख्यास्तद्वंश्या भूतलेऽभवन् ॥
धन्धिलो धारपुत्रोभूत्तद्वंश्या धान्धिलाः १।९स्फुटाः ॥ १७० ॥
खीरपुत्रोऽभवत्सिन्धूः सिन्धूकोपाभिधा १।१०स्ततः ॥
डोराणो डुङ्गराज्जातो डोराणा १।११ स्तद्भवा भुवि ॥१७१॥
सुवराच्च तथैवासन्सुवराणा ११।२उपाख्यया ॥
दीपसिंहादयो जाताः सर्वे सुन्ध्योपटङ्किनः११३॥ १७२ ॥
पडिहारास्तथा मैणा १।१४ जाता गूर्ज्जरमल्लतः ॥
केशवोत्ता१।१५ अथाप्यन्ये जाताः केशवदासतः ॥ १७३ ॥
बभूवुः शोणपालोत्ताः१।१६शोणपालकुलोद्भवाः ॥
मूलभेदाः प्रतिहाराऽन्ववायस्येति षोडश १६ ॥१७४ ॥

में विस्तार से हुए हैं. शोधक के बेटे इन्द से हुए जो इन्दा नाम से हुए ॥ १६५ । १६६ ॥ खुक्खर से खौक्खरा और चन्द के तीन पुत्र किल्हण, चन्द्र और चुहन्न ये चान्दाउत नाम से हुए जिन की तीन शाखें हुईं; किल्ह से कीलोया, चन्द्र से चन्द्रायणा, और चुहन्न से चोहन्ना, ये तीनों चन्द्राउत हैं. मालदेव के पुत्र महप से धोराण हुआ, जिसके वंश के पृथ्वी में धोराणा हुए. धार का बेटा धन्धिल हुआ जिसके वंश के धान्धिला कहाये. खीर के पुत्र सिन्धू से जो हुए वे सिन्धूका नाम से कहाये. डुंगर के डोराण हुआ. जिसके वंश के पृथ्वी में डोराणा कहाये ॥ १६७ ॥ १६८ । १६९ । १७० । १७१ ॥ सुवर से सुवराण नाम के हुए. दीपसिंह आदि सब सुन्ध्या पदवीवाले हुए ॥ १७२ ॥ तैसे ही गूर्जरमल्ल से पडिहार जाति के मीणा (मेर जाति का एक भेद) हुए हैं केशवदास से जो हुए वे केशवोत कहाये ॥१७३॥ शोणपाल के वंश के शोणपालोत हुए. ये सोलह पडिहार वंश के मुख्य भेद हुए ॥१७४॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीयराशौ प्रतिहार वंशसमसनोद्देसनं पञ्चदशो मयूखः ॥१५॥आदितश्चत्वारिंशत्तमः॥

अथ चालुक्यवंशसमसनोद्देशनम् ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

चालुक्य१कोँ चतुर्मुखनैं नाकँनदीपुनीतसूकरोखरक्षेत्रप्रधानदेसदयो रु ताकै ऋक्ष२।१चाच. भान. बुध. त्रिसंख्य. भग. मरीष. सिव. समीर. देव२।१० यह पुत्रनको दसक१०भयो ॥

तिनमैं अग्रज ऋक्ष२ताकै अक्षय३।१रु राम३।२ ए दोय२तनय। अक्षयकै रूप४।१ वृष. तेजित. तेज. प्रजायक. रत्न. अन्वय. भानु८ ए अठ८हि बिदितँ भये निबारि अनँय ॥ १ ॥

तिनमैं बडो रूप४ताकै पृथु सो प्रतापी मंडलेश्वर पृथु५नाम भयो एक१तनुज ॥

ताकै पंचास पुत्र तिनमैं बडो नाथ६।१तासौं बिसंध.कर्ण.चंद. ब्रध्न. बिसम. जंत्र. जवन. अंधाल. स्वबस ६।१० स्यामल. अनंजि. चित्रक. चिद्बुद्धि. चिधाल. राजसील. मान्यध्वनि. छत्रसीस. पुरुषोत्तम. राघव ६।२० चरदत्त. कुंटर. महप. अनर्ण. रुचिचन्द्र. यशव. पत्रल. अर्णव. प्रतिभू. प्रघण ६।३०।परताप. नरबिधान. सत्यव्रत. कुसल. हरिश्चंद्र. चित्रगुण. जाम. हरित. हितसेन. विघस६।४०चक्रसेन.सहदेव.अपाण. बिजय.सत्वर.भरत.उदय.शृंग. सुबर. क्षेत्रपाल ६।५० ए गुनचास४९अनुज॥

तिनमैं अग्रज जो नाथ६ताकै अस्मय७।१दिलीप. दुघण. भारत. जंबर. सुरत. दिवेस. दैवधन.नाभि. निम्म७।१० मम्म.हेमद.

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में पडिहार वंश का संक्षेप से कहने का पन्द्रहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १५ ॥ आदि से चालीस मयूख हुए ॥ ४० ॥ अब चालुक्य वंश का संक्षेप से कहना है ॥ १ ब्रह्मा ने २ देवनदी (गंगा) ३ प्रसिद्ध ४ अनीति ५ पुत्र ॥

सिंहद्वीप७।१३ ए तेरह१३पुत्र भये ॥१॥

इनमैं जेठे अस्मयकै पंचल८ताकै लोट९ताकै न्हदराज १०

तकै अप्पति ११।१दुरत्यय. अपगा. डुंड. रुतपान. त्वरस. मुंग.

सदासिव८ ए अष्ट८पुत्र ठये ॥ २ ॥

तिनमैं मुख्य अप्पति११ताकै सुदर्सन१२ भडंग१२।२ दोय२सुत ॥

सुदर्सनकै गोणा१३।१ असमीक. कोमल .दुस्सर. ईश्वर. बि

डंब. अडबड. बिस्वहंस. बरसूल. हंससूर. भासुद्ध. स्वराल १३।१२ ए

तेरह क्षेमधन्वा१३।१३ जुत ॥

जेठे गोणाके बिजय १४ ताकै देवन १५।१ पुण्यधीर. की

र्तिसील. रूपराज१५।४ए पुत्र च्यारि४ ॥

अरु मुख्य देवनकै बुधराज १६।१ कृष्णा १६।२ रक्तासव१६।३ ए

तीन३ ही बढे धर्मधारि ॥ ३ ॥

बुधराजकै मघराज १७।१ धुरराज १७।२ सीतलसील १७।३ ए

बलिष्ठ भये पुत्र तीन ३ ॥

त्योंही मघराजकै ऋक्थसील १८।१ क्षेत्रसील. बसुसील. ज-

वनसील. सूलसील. संहननसील. अचलसील. चंचलसील. हर

लसील. कमलसील १८।१० मल्लसील. क्षिप्रसील. मित्रसील. सु

न्दरसील. श्रवणसील१८।१५ए पुत्र पंद्रह भये समर प्रबीन॥

इनमैं तेरहौं मित्रसील १८।१३ ताहीके कलहकर्ता. ब्रह्मसुख.

महासुख. ए तीन ३ हु अधिक नाम ॥

अरु इनमैं बडो ऋक्थसील १८ ताकै सुधाधर१९ ताकै ब्रह्म-

धीर २० लरिबेमैं भयो ललाम ॥४॥

ब्रह्मधीरकैबिरामसील २१ताहीको अपरनाम बुद्धिमत्तताकरि

सुधी २१हू प्रकट भयो ॥

अरु या बिरामसीलकै जमसील २२ ताको अपर अभिधान

---

१ युद्ध में चतुर २ सुंदर ३ दूसरा नाम ४ बुद्धिमानी से ५ दूसरा नाम

नामसेन २२ हू कह्योगयो ॥

ताकै जनमंत्र २३ताहीकौं सुकबिजन समरसीग्रत्वकेरि त्वरि तक २३हू कहैं।

ताकै देहदेव २४ ताकै देववर्म्मा २५ अद्यापि जाकी कीर्ति कविनकी कोटिमैं राचीरहैं ॥ ५ ॥

देववर्म्माकै महीचीन २६ ताकै जयमल्ल २७।१ कुजराज. मंदुक.परिचय.प्रसून.अंकुस.अमर.रतिराज.रत्नराज. महाबल २७।१० महच्छूल. सुरनाय—. निरतराज. बसुसुर. बीरनाभि. नारायण. भान. देवकीर्ति. रूद्रधीर. २७।१९ ए पुत्र भये एकोनबीस ॥

तामैं जेठो जयमल्ल२७ताकै भीम२८।१सुरत. नरपाल. संबरदत्त.सिवराज.तुंगपाल.सुनिर्सील.जवस.बसुराज.चतुरराज २८।१०धनूराज. नरहर. रामगुण. गंगदत्त. बिजयराज. दीपराज. बलदेव. स्यामराज. सोमक. चूलक२८।२० उच्चक.चयन.सूरसिंह.बुधबीर. अचल. अंतिक. बिमर्ष. पिंड. रु तार. कीर्तिन. कूप. प्रदय. आहुक २७।३३ए भये तनूज तेतीस३३ ॥

इनमैं अग्रज भीम२८ताकै अंबर२९ताकै उज्जर३०ताकै युतार्क३१ताकै बिजयार्क३२ताकै बामांच३३ताकै मूर्द्धार३४ताकै काशीश्वर३५ताकै सूर३६ ॥

अरु सूरकै अक्षय३७ताकै प्रभु३८ताकै हंसरत३९ताकै राघव४०ताकै रूपपूर४१॥ ६ ॥

रूपपूरकै लोध्र४२ताकै स्यामार्क ४३ भयो ॥

स्यामार्ककै मौरिक४४ताकै प्रताप४५ताकै बिरतारि४६ठयो ॥

बिरतारिकै नाम परुप४६बिक्रम४६सुभाग४६अमर४६हंता४६जितसिंह४६तेजस्वी४६—दक्ष४६देवमी४६कर्ण४६ए दस अधिकहू जानैंगये।

१ युद्ध में शीघ्रता करने के कारण २ अब भी ३ पुत्र ४ बड़ा

ता बिरतारिकै गोबिंद४७ताकै इंद्रसेन४८ताकै रत्नार्क४९ताक अजाल्मार्क५०।१संग्रामार्क. द्रुमार्क. रोमार्क. नृसिंहार्क. बसुधरार्क. सुखार्क. अर्जुनार्क. अजितार्क. ध्यानार्क१० बिश्वनार्क. जयपाला र्क. सुक्रार्क. कुहरार्क. भ्रमरार्क. दुर्गार्क. भगार्क. दीपार्क. मुक्ता र्क. बिजयार्क२०युगलार्क. भीमार्क. मुदितार्क. पालार्क. व्याघ्रा र्क५०।२५ए पचीस. पुत्र भये ॥ ७ ॥

तिनमैं बडो अजाल्मार्क५०ताकै सदार२५१ताकै नाम इंद्रपाणि५१ पूर्णधर. सोमस्वर. पुण्यार्क. कमलाकर. सिरोमनि. प्रघात. संग्रामसूर. ओंकार५१ए नव९अधिकहू मानैं ।

वा सदासूरकै हर्‍राय५२ताकै पुत्र पुरुभानु५३।१सुगतार्य२यौव- नाश्व५३।३ए तीन३ही जगत जानैं ॥

बडे पुरुभानुके कर्णधीर५४।१पट्टधीर५४।२ए दोय२तनुजं ॥ तिनमैंकर्णधीरकै दोय२आस्थान५५।१बडो रूसुरतराज५५।२अनुजं८

आस्थानकै बिहितातिथि५६ताकै सुरूपातिथि५७ताकै प्रीताति थि५८ताकै रणातिथि५९ताकै देवातिथि६०।१पुण्यातिथि. पूर्णातिथि. लब्धातिथि. स्मृतातिथि. मतातिथि. धर्मातिथि. प्रसन्नातिथि. चूडा- तिथि. पिंडातिथि१०प्रियातिथि. कृपातिथि ६०।१२ ए द्वादश पुत्र भये

इनमैं बडो देवातिथि६०ताकै राजसूर६१।१देवसूर. महासूर. मो- जसूर. मोक्षसूर. कमलसूर. रम्म्यसूर. धर्मसूर. सूरसूर. लोकसूर१० उत्तानसूर. रघुसूर. करनसूर. गोपसूर. ब्रह्मसूर. मंडलसूर. जगसूर. अच लसूर. रत्नसूर. प्रधानसूर२०सुरसूर. व्याघ्रसूर. त्रिकालसूर. नृसिं हसूर. संकरसूर. उग्रसूर. अक्षयसूर. बीरसूर. अमृतसूर. प्रद्युम्नसूर ६१।३०ए तीस तनय[3] ठये ॥

इनमैं जेठो राजसूर६१ताको अपर[4] नाम त्रिभुवनसूर६१हू जान्यौं । अरु ताकै पुत्र अक्षयमनि६२ ताकै कृपालमनि६३ताकै गुणसा- रमनि६४ताकै पुत्र राजमनि६५मान्यौं ॥ ९ ॥

१ पुत्र २ छोटा भाई ३ पुत्र ४ दूसरा नाम

राजमनिकै दिवमनि ६६।१ हरिमनि. सभामनि. महामनि. बिजयमनि. सुखमनि. कमलमनि. मित्रमनि. सुंदरमनि. सिरोमनि १० सुरूपमनि. सिंहमनि. कीर्तिमनि. सामंतमनि. उदितमनि. तेजोमनि. चंदमनि. बिबस्तुमनि. साधुमनि. जगन्मनि २० भानुमणि. मुकुटमणि. बुधमणि. नवमणि. सुवर्णमणि ६६।२५ इन पचीस २५ पुत्रन जन्म लीनौं ।

तिनमैं जेठो दिवमणि ६६ ताकै कुलमणि६७ताकै पृथ्वीमनि ६८ताकै रतिमणि६९ताकै रम्यमणि७०ताकै भगवन्मणि७१भयो तानैं सुकबिनकै सूक्तकरि अपनौं सजस सालंकार कीनौं ॥ भगवन्मणिकै पुत्र पृथुदेव७२।१बरसिंह२पुरुषोत्तम३सुरराज४सूर५ रंगसूर६महादेव७रैवत८दय९सत्यदेव१०इन दस१०पुत्रन जन्म लयो तिनमैं पूर्वजं पृथुदेव ७२ ताकै उत्तानदेव७३ताकै संकरदेव७४ता कै सामंतदेव७५ताकै भीमदेव७६ताकै मल्लदेव७७ताकै संभूदेव७८ ताकै बीरदेव७९ताकै भोजदेव८० ताकै क्षेमदेव८१भयो ॥ १० ॥ क्षेमदेवकै दुश्शल ८२।१ मोत्कलभानु २ रूपभानु ३ अचलभानु ४ देवभानु५जगद्भानु६राजभानु७धर्मभानु८सुरतभानु९एनवभये तनय। इनमैं अग्रजं तो अप्रजंही अवंतिराजकै आहवमैं मरयो ताकौं चालुक्यबंश दुश्शल पित्र मान्नि पूजत ताको अनुजं मोत्कलभानु८२ भूप भयो ताकै तुलसीभानु८३ताकै सुरुचिभानु८४ताकै सुखभानु८५ताकै स्यामभानु८६जाके उत्तमआचारतैं अनालंबं रह्यो अनय॥

स्यामभानुकै बिजयपाल८७ताकै कुमारपाल८८।१बीरपाल. नमनपाल. बत्सपाल, धर्मपाल. धनपाल. भैरवपाल. सुन्दरपाल. जोधपाल.चन्द्रपाल१०सोणपाल११इन ग्यारह११पुत्रननैं जन्म लह्यो।

१ वचन २ अलंकार सहित ३ पहले जन्म लेनेवाला (बडा) ४ पुत्र ५ बडा भाई ६ विना संतान ही ७ उज्जीण के राजा के ८ युद्ध में ९ दुश्शल नाम का पितर मानकर १० छोटाभाई ११ निराश्रय १२ अनीति, अर्थात् इस के राज्य में अनीति को कोई आधार नहीं मिला

तिनमैं जेठो कुमारपाल८८जो जैनलोकननैं परम आर्हत तथा श्रौतलोकननैं परम नास्तिक कहिय ताकै अजपाल८९।१गजपाल २दोय२सुत भये तिनहूकै अभीष्ट जैनमतही रह्यो ॥ ११ ॥

अरु अजपालकै त्रिलोकपाल९०ताकै धीरपाल९१ताक प्रद्युम्न ९२ताकै इंद्रद्युम्न९३जान्यौं ॥

वाही इंद्रद्युम्ननैं नास्तिकमतको न्यक्कार करि उत्कलदेससौं पूर्वसमुद्रके तट पर श्रीजगदीसको मंदिर बनाय परमपुनीत महाभागवतधर्म मान्यौं ॥

वाहू देसमैं अपनौं राज्य संपन्न हो तासौं स्वत्व तजि अखिल अधीस ईश्वरके अंघ्रि अरबिंदनको उभय२अपनैं आलोचनमैं लयो॥

ताकै सिंहद्युम्न९४ताकै महाद्युम्न९५।१अजद्युम्न२अमरद्युम्न३ समर्थद्युम्न ४ सूरद्युम्न ५ यह पुत्रनको पंचकै ५ भयो ॥ १२ ॥

बडे महाद्युम्नकै उदयद्युम्न९६ताकै चित्रद्युम्न ९७ ताकै राजदमन ९८ ताकै सिंहदमन ९९बडो हरिभक्त भयो ॥

तैसोही सिंहदमनकै ९६ जमोदधि १०० ताकै गोपसद१०१ताकै बेदसार१०२ताकै क्षेमकरण१०३ताकै पुत्र कुसलायत१०४ठयो ॥

कुसलायतकै नंदभानु१०५।१ गोकुल. उदयकर्ण. चार्चिक. बेणुराज. बेणीदास. हरकर्ण. कन्नड. जगद्देव. सोमक. कीर्तिपाल. गोपाल१०५।१२ए द्वादश १२ उद्भूत जानैं ॥

इनमैं जेठे नंदभानुकै त्रिलोकचंद्र१०६।१खेत्रलय.जनमित्र.पुस्कर.धनल.सुमन्न्यु.कर्ण१०६।७एसात७ही पुत्र मागधलोकननैं मानैं ।१३।

इनमैंअग्रजत्रिलोकचंद्र१०६ताकैमोहन१०७ताकै महीपराज१०८भयो ताकै महाकर्ण१०९।१बीरभानु२सुरकर्ण३ये तनुजको त्रितय ठयो

जिन(जैन मत का चलानेवाला२वेद मतवालों ने३प्रिय४परम भगवद्भक्तों को५संपत्ति सहित (भरापूरा)६अधिकार(अपनापन) ७सब के८ स्वामी९परमेश्वर के १० चरण ११ कमलों को १२ विचार १३ पांचों का समुदाय १४ उत्पन्न १५वंशावली लिखनेवाले बड्वाभाटों ने१६ पुत्र१७तीनों का समुदाय

बाही महीपराजनैं पूर्बदेसमैं पट्टनि नाम नगर बसायो ।

अरु तीनौं३ही पुत्रकौं भिन्न भिन्न बसुधा बंटि परमपुण्य सहित परलोक पायो ॥ १४ ॥

ताके पुत्रनमैं बडे महाकर्णनैं तो अपनी राजधानी सोरौंपुरही रा-खि राज्य कीनौं ।

अरु छोटे बीरभानुनैं तथा सुरकर्णनैं अनुक्रमसौं पट्टनिके राज्य को तथा किलराजपुरके राज्यको लाह लीनौं ॥

तिनमैं बीरभानुके बंसके तो भाला सोलंखी१भये ।

अरु सुरकर्णके समस्त भुरटिया२सोलंखी कहेगये ॥ १५ ॥

इनमैं बडो महाकर्ण१०६ताके सूरराज११०ताके अल्हण१११ ताके परसुराज११२ताके गोकुलराज११३भयो ।

तासौं सोरौंनगरको राज्य छुट्यो तब दक्षिणमैं जाय रु बिदर्भदेस को राज्य जित्तिलयो ॥

गोकुलराजके बचौराज ११४ ताके सुरपाल ११५ताके गुणपाल ११६ताके गोवलपाल११७सुन्यौं।

जानैं अपनैं भुजनकरि बहुरि सोरौंनगरको फुल्लित फलित रा ज्य लुन्यौं ॥ १६ ॥

वा गोवलपालकै पृथ्वीपाल११८।१किसोरपाल२बीरपाल ३संगर पाल४बिजयपाल५चक्रादित्य६ज्ञानराज११८ ७।३ तनय भये सात ।

तिनमैं अग्रज पृथ्वीपाल११८ताके बालुकाराव११९देवराज२सं ख्यराज३बलराज११९।४ए चार४ही तनय भये ख्यात ॥

इनमैं बडे बालुकारावकै हरिनराज१२०ताके संकर १२१।१ खुं डन२ए दोय२पुत्र भये ॥

तिनमैं छोटे खुंडनके वंसके तो बंगदेसमैं मुरायती आदिक ग्रा मनमैं जाय बसे ते समस्त खुंडानौं३सोलंखी कहेगये ॥ १७ ॥

अरु बडो संकर पट्टपति रह्यो ताकै लवणकर्ण१२२।१सहदेव२

---

१ भूमि को बांट कर २ पुत्र ३ प्रसिद्ध ४पाट का स्वामी (पाटवी)

काशस्विर३भीष्मक४जयराम५रेणुक६अचल७कन ८प्राणसेन ९ सालिवाहन१०हंसराज११पद्मक१२।१२ए बारह१२तनय।

तिनमैं बडो लवणकर्ण१२२ताकै सिवराज१२३ताक भोजराज १२४ताकै नगराज१२५ताकै चन्द्रराज१२६ताकै धीर१२७ताकै मेघ राज१२८ताकै नल१२९ताकै बिरंग१३०ताकै हरराज१३१।१गोइंदरा ज२खेतल३राजभानु४दीपक५सुमन्न्यु६खल्ल्य७बणबीर८पत्रल ९ ए नव९ही भये सनय ॥

तिनमैं बडो हरराज१३१सो तो पट्टपति रह्यो।

अरु याके अनुज अठ८तिननैं उत्तरदिसामैं जाय रु अधिकार लह्यो१८

बडे हरराजकै कर्मसिंह१३२ताकै देवभानु १३३ ताकै महीपाल १३४।१अगल२स्फुलंग३घुसंग४मनवीर१३४।५ए पंच५पुत्र जानैं ॥

तिनमैं बडे महीपालकै इंद्रपाल१३५।१दीनपाल२जसराज३राज मल्ल४भानु५राजजुष्ट६भीम७राजरक्षित८ए अष्ट आत्मज मानैं ॥

तिनमैं अग्रज इंद्रपाल१३६ताकै प्रताप १३६।१बिज्जल.राजरत. भोज. विक्रम. हम्मीर. खेम. भारमल्ल.जयसिंह.राजसिंह१० राज-धीर.भैरव.प्रेमसिंह.रूपसिंह.उदयसिंह.कर्णसिंह. राजकर१३६।१७ ए सत्रह१७सूनु[3] कहे।

तिनमैं पट्टपति प्रताप १३६ताकै सुरतान१३७।१बीकराज. हरप. सोन.तल्ज.अलेस. कँवरपाल. बिज्जल. राजमणि. दुर्भर१०को-कराज. बिखजय. बिमच. लोहहस्त १३७।१४ इन चतुर्दस १४ पु-त्रन जन्म ले रु सुजस लहे ॥ १९ ॥

तिनमैं बडो सुरतान १३७ ताहूकै कुमारपाल१३८ताक सोमेश्वर १३९नाम महापंडितराज पुत्र भयो।

जाको बनायो मानसोल्लास नामक प्रबंध सर्वबिद्याके संग्रहमय चतुरनकै चातुरीके जुद्धमैं तनुत्र भयो ॥

ता सोमेश्वरकै श्वेताश्व१४०।१मखसूर२अर्जुन३जयपाल४ यह

---

१ नीति सहित २ राज्य का स्वामी ३ पुत्र ४ ग्रंथ ५ कवच

पुत्रनको चतुष्क[1]४सुन्यौं ।

तामैं बडे श्वेताश्वकै दुर्जदम१४१ताकै महराज१४२।१कृष्ण २ खेतल३अनहल्ल४नवरंग५सत्यभीम६ए छ६पुत्र भये तिनमैं बडे महराजको सुजसहू चतुरननैं चाव[2] करि चुन्यौं ॥ २० ॥

महराजकै पुत्रराज १४३।१ बीज २ कर्ण ३ भीम ४ संकर ५ सुरत ६ ए पिताकी संतति समान छ ६ ही पुत्र भये ॥

तिनमैं बडे राज१४३अरु बीज१४३दोहू२सोदर भ्राता हे[3] तिनतैं अनई[4] ओर अनुज[5] बदलि गयो ॥

तब राज १४३ बीज १४३ दोहू२सोदर[6] समस्त बैभवकौं बिहाय श्रीद्वारकाधीसकी यात्राकौं सिधाये ॥

अरु दर्सन भेट स्नान दान करि पच्छे मुररि दरकुंचन गुजरात जनपद[8]मैं नगर अनहलपुरपट्टनि आय मुकाम लगाये ॥ २१ ॥

तँहाँ राजा सूर चावरो[9] राज्य करतहो तानैं सनमान पूर्बक इन दोउन२कौं अतीव[10] आदर दीनौं ॥

अरु बडे सोदर राजसौं अपनी सुता पहुपावती को संबंध करि राजा सूरनैं बिबाह कीनौं ॥

अपनैं मुलकमाँहिंसौं बिभाग[11] दे रु दोहू२चालुक्य तँत्थहि[12] राखे तहाँ राजा राजसौं चावरी रानीमैं पुत्र मूलराज १४४ भयो ॥

जानैं मातुल[13]बंसको संहार करि उनके देस सहित अनहलपुर पट्टनि अपनौं अमल करि लयो ॥ २२ ॥

याही मूलराजनैं तीजे३आश्रमकी अवस्था[14]मैं बँहोरि[15] जैनमत धारन कीनौं ॥

वा मलराजकै चंद्रगिरि१४५।१सर्यगिरि२ द्रोणगिरि३ इन तीन ३ पुत्रन जन्म लीनौं ॥

---

१ चारों का समुदाय (चौकड़ी) २ उत्साह ३ थे ४ नीति रहित (अन्यायी) ५छोटेभाई६सगेभाई ७ छोड कर ८ देश ९चावड़ा वंश का क्षत्रिय१०अत्यंत ११ बंट १२ वहां ही १३ मामा के १४ वृद्धावस्था में १५ फिर

राजा चंद्रगिरिकै विजयभीम१४६ ताकै बलराज १४७ ताकै घुग्घल१४८।१ निर्भयादित्य२ बलदेव३प्रेमराज४सक्तिकुमार५ए पंच५पुत्र तिनमैं बडो घुग्घल १४८असंतति गतासु भयो सोहू चालुक्य बंशकै पूजनीय पित्र मान्यौं गयो ।

ताको अनुज निर्भयादित्य१४८राजा भयो ताकै बरसिंह १४९ ताकै बलभद्र१५०।१ नाहर१५०।२यह पुत्रनको जुग्म ठयो ॥२३॥

बडे बलभद्रकै भीम१५१९ताकै गहिलकर्ण१५२ कर्मण२चंद्रसेन३ श्रीरंग१५२।४ए च्यारि४ही पुत्र मागधनके प्रबंधन करि जानैं ॥

तिनमैं बडो गहिलकर्ण१५२तो भूप भयो रु मूलराजकै पीछैं सबननैं जैननकौंही नमनीय मांनैं ॥

इहाँ च्यारि४भीमके पुत्र कहे तिनमैं तीजो३पुत्र चंद्रसेन१५२।३ ताकै बंसके सब कटारिया४सोलंखी कहाये ।

अरु इनको अग्रज राजा गहिलकर्ण१५२।१तासौं मुख्य रानीमैं आधान रह्यो परंतु प्रसूतिकालकौं वर्षही लगाये ॥ २४ ॥

तदनंतर नीठि नीठि आस्तिकनके कहैसौं अखिलनके अधीश्वर उमेसके आराधन करि सब वैद्यनसौं औषध सेवन करि राजा गहिलकर्णकै जयसिंह१५३नाम पुत्र भयो ॥

सो यह भावी मंडलेश्वर सस्त्र सास्त्र बिद्यामैं अद्वितीय ईढ होतगयो॥

राजा गहिलकर्णनैं आस्तिकनके कथित करि अभीष्ट पायो यातैं पुत्र जन्मके अनंतर वानैंतो जैनमत दूर राख्यो ॥

अरु या जयसिंहदेवनैंतो पूर्बसंप्रदायके सास्त्री हेमचंद्रादिक जैननहीके सत्कारमैं प्रीतिको पूर राख्यो॥ ५॥

यह राजा परमारनरेस बिक्रमके च्यारिसे इकतालीस ४४१मित

१बिना संतान २ मरा ३ जोड़ा ४ बड़वाभाटों के ५ ग्रंथों से ६ नमस्कार करने योग्य ७ गर्भ ८ जन्म समय ९ जिस पीछे १० वेद धर्म को माननेवालों के कहने से ११ सब के स्वामी १२ महादेव की सेवा १३ आगे होनेवाला १४ प्रकाशमान१५वेदमतावलंबियों के१६कहने से१७इच्छानुसार फल पाया१८पीछे१९आम्नाय (गुरु परंपरा)२०समूह२१प्रमाण,

संकमैं प्राकट्य पाइ समस्त आर्यावर्त्तमैं त्वरासौं अपनौं अमल करि-
केही सिद्धि पाइ सिद्धिराज जयसिंह कहायो ॥
अरु गुजरातदेसमैं अपनैं अभिधान करि सिद्धपुरपट्टनि नाम
नगर बसायो ॥

राजा सिद्धराज जयसिंहके गोहिलराज१५४।१ हर्षल२ पूर्णमल्ल३
व्याघ्रराज४ तेजासिंह५ मंडन६ बलभीबल७ नील८ए अष्ट८ पुत्र भये ॥
तिनमैं व्याघ्रराजनैं तो पूर्वदेसमैं बाँधूगढ जाय अपनौं राज्य कियो
ताके बंसके तो अब बाघेले ५ सोलंखी कहेगये ॥ २६ ॥
अरु तेजसिंहनैं दक्खिन देसमैं मुंडल नगर जाय अमल कियो ताके
बंसके सब सरकिया६ सोलंखी कहाये ॥
मंडणनैं गढ गिरिनार राज्य कीनौं ताके बंसके महाधनुर्विद्या करि
सरवहिया७ सोलंखी भये ठाये ॥

याही बंसमैं राजा बिजयमल्ल १ ताकै कर्ण २ ताकै किवाट३
ताकै जसराज ४।१ भारमल्ल ४।२ गिरिनारके अधीस सरवहिया
सोलंखी इत्यादिक अनेक महापराक्रमी राजा भये ॥
अरु सिद्धराजके बडभीबलनैं जालोर गढ राज्य कीनो ताके बंसके
कितेक मागधनके पुस्तकनमैं बघेरवाल बनिया लिखेगये ॥ २७ ॥
इतरैं सोदर हर्षलादिक तिनके बंस न जाँनैं ॥
अरु वडो गोहिलराज १५४ सो गुजरातको नरेस भयो रु नाँ-
स्तिकही अभीष्ट माँनैं ॥

गोहिलराजके त्रिवर्णराज १५५।१ कीर्तिपाल१५५।२ दोय २ पुत्र
भये तिनमैं बडे त्रिवर्णराजकै भीमराज १५६।१ इंद्रभानु १५६।२
द्वै २ ही सुत सुनैं तिनमैं अग्रज भीमकै अजदेव१५७ ताकै बीरदेव
१५८।१ ज्यानराव १५८।२ ए दोय २ पुत्र भये ॥

---

१ संवत् २ जन्म ३ शीघ्रता से ४ अपने नाम से ५ तीर [बाण] चलानेवाले ६ प्रसिद्ध ७ बड़वाभाटों के ८ दूसरे सगे भाई ९ हर्षल को आदि लेकर १० जैनमत को ही ११ प्यारा माना

अरु बीरमदेवकै लोहकर्ण १५९ ताकै अजपाल १६० ताकै भोज-
पाल १६१।१ नमनपाल १६१।२ चमनपाल १६१।३ ए तीन ३ ही
तनुज ठये ॥ २८ ॥

वडे भोजपालकै कँवरपाल१६२।१ शुद्धपाल२ जन्हड३ लोकराव४ भू-
रिपाल५ बनसूर६ लक्ष्मीधर७ इन सप्त७ पुत्रन जन्म लह्यो ।
तिनमैं जेठो कँवरपाल१६२ ताकै भवनपाल१६३ ताकै संग्रामसिंह
१६४ ताकै महराज १६५।१ रनबीर२ शालिवाहन १६५।३ यह तनय
नको त्रि३तयै भयो ।
तामैं जेठो महराज १६५ ताकै मूलराज १६६ ताकै परसुराम१६७।१
लवकर्ण २बीसलदेव १६७।३ ए तीन३ तिनमैं जेठे परसुरामकै बा-
लप्रसाव१६८ ताकै चंद्रपाल१६९।१ उग्रसेन२ परमेश्वरदास३ जग
न्नाथ४ साँवलदास१६९।५ ए पंच५पुत्र जानैं ।
तिनमैं वडो चंद्रपाल ताकै जमुनाभान१७० ताकै बिजयपाल१७१।१
सारंगदेव२ बरसिंह३ पृथ्वीराज४ संग्रामसेन५ अंगद६ कन्हड७ ज
न्हड८ लवणकर्ण९ चंडपाल१० ए दस१० ही आत्मज मागधननैं
मानैं ॥ २९ ॥
इनमैं बडो बिजयपाल ताकै पराक्रमी पुत्र भोलाराय भीम१७२ भयो ।
अरु बिजयपालको सोदर सारंगदेव ताकै प्रतापसिंह१७२।१ अरिसिंह२
गोकुलदास३ गोइंदराज४ हरिसिंह५ स्यामदास६ भगवद्दास१७२।७
यह सूनुनको सप्त७कँ ठयो ॥
सारंगदेवको सोदर बरसिंह ताकै बालुकाराव१७२ सुन्यौं ।
अरु राजा बिजयपालको पट्ट भोलारावभीम पायो ताकोहू सुजस
कबिनकी कोटिनैंमैं चुन्यौं ॥ ३० ॥
याकै काका सारंगदेवके तो प्रतापसिंहादिक सातौं७ही पुत्र अज्ञान
रु अति अल्प अपराधपैं अजमेर नगरमैं चहुवाण कुल चूडामणि

१पुत्रों के २तीन का समुदाय ३पुत्र ४बड़वा भाटों ने ५सगा भाई ६पुत्रों का ७सात
का समुदाय ८सगा भाई ९थोडे १०चहुवाण कुल का मुकुटमणि (मस्तकमणि)

राजकुमार पृथ्वीराजकी सभाके अनंतर[1] कृष्ण चहुवाननैं प्रमाद[2] सौं मारे ।

याही बैरके ऊपर पृथ्वीराजकै दिल्ली आई ताकै[3] अनंतर गुजरातके अधीस चालुक्य राजा भोलारायभीमनैं चहुवान नरेस सोमेस्वरके संगरमैं खंड खंड करि खग[4] बिसेसनके[5] खायबेकौं डारे ॥

तदनंतर[6] पृथ्वीराज चहुवानके काका कृष्णसिंहनैं अपनैं स्वामीकं संग होय वह राजा चालुक्य सत्तरि हजार७००००निबसथँन[7] को स्वामी संग्राममैं मारिलयो ।

ताके द्रोहकरि[8] सोलंखी सारंगदेवके सोदर बरसिंहको सूनु[9] चालुका राव१७२हू चहुवाननतैं जंग करि टूक टूक भयो ॥ ३१ ॥

अरु भोलारायभीमकै भगदत्त१७३।१ कच्चररायर सक्तिकुमार१७३।३ ए तीन३भये तिनमैं सक्तिकुमारके बंसके तो गैंडा ८ सोलंखी कहाये॥ अरुबडेभगदत्तकेराजधीर१७४ताकै देबीदास१७५ताकैमुलधीर१७६ ताकै पृथ्वीसिंह१७७ताकै संग्रामसेन१७८ताकै कन्ह१७९ताकैजमुन १८०ताकै भवानीदत्त १८१।१ केहरीराय२ दोह्र२पुत्र भये ठांये ॥

बडे भवानीदत्तकै राजधर१८२ ताकै देबीराज१८३ताकै मल्लधर१८४ताकै धर्मधर१८५ताकै वालपराव१८६ताकै एहडदेव१८७।१ वेहडदेव१८७।२ यह पुत्रनको[10] जुँगल[11]२भयो ।

तिनसौं राजनीतिके प्रमाद[12] करि गुजरात देसको आधिपत्य[13] छूटिगयो ॥ ३२ ॥

तब इननैं अजमेर नगरके प्रांतमैं रामसरके समीप निज नाम करि एहडा१बेहडा२ग्राम आनि बसाये ।

तिनमैं एहडदेवकै तो एक१कन्न्या जयमती १८८ही भई जानैं गुज्जर पडिहारनकै संग्राम कराय रु दोऊन२कुटुंब खाये ॥

---

१ पीछे २ उन्मत्तता ३ पीछे ४ युद्ध ५पक्षी विशेषों के ६ जिसपीछे ७ ग्रामों का ८द्वेष (मारने की इच्छा) ९ पुत्र १० प्रसिद्ध ११ जोड़ा १२उन्मत्तता, विना सम्हाल (गफलत) १३ स्वामीपन,

अरुबेन्डदेवकैमहिपाल१८८।१उदयसिंह१८८।२ दोय२पुत्रभयेतिनमैं महिपालतोअलीरोसंखनौंबिना मस्तकजंगकरिबीरनकेलोकमैंगयो।

अरु उदयसिंह मुख्य रह्यो ताकै अमानसिंह १८९।१ बाघसिंह १८९।२सुरतानसिंह१८९।३तीन३सुत भये तिनमैं अग्रज अमानसिंहकै लवणकर्ण १९०।१ देवसिंह१९०।२ दोय२पुत्र तिनमैं लवणकर्णके भगवतीदास १९१।१ दूदा २ जगमोहन३ तुलसीदास ४ यह पुत्रनको चतुष्क[2]४भयो ॥ ३३ ॥

बडे भगवतीदासके बालपराव१९२ ताकै संग्रामसिंह१९३।१ गानिंगदेव २ खोड ३ बीरभानु ४ मल्ल ५ ए पंच पुत्र भये तिनमैं गानिंगदेवनैं तो माद्रेचे चहुवाननको मारि देवसूरीमैं अमल कियो ताके बंसके तो समस्त देवसूरीके९सोलंखीकहावैं ।
अरु खोड मालवदेशमैं रह्यो ताकै वंशके समस्त खोडेरा१०सोलंखी
ऐसो उपटंक[3] पावैं ॥
अरुबीरभानुकेसमस्तभयेतिनकौंमागधलोकबीरपुरा११सोलंखीकैहैं
अरु मल्लके बंशके मल्लारा१२सोलंखी ऐसो उपनाम लहैं।३४।
इनमैं अग्रज संग्रामसिंह१९३ताकै गोइंदराज१९४।१अमरसेन२बखतसिंह३सुंदरदास४सूरसिंह५ यह पुत्रनको पंचक[4]५भयो ॥
तिनमैं जेठे गोइंदराजनैं टोडाके अधीस गोलवाल चहुवान सातूकौं तथा याको सोदर पातूका मारि टोडामैं राज्य करिलियो ॥
गोइंदराजकैकुंभराज१९५।१कन्हड.लाहड.चूहड.भीम.स्याम. देईदास.तेजसिंह.वछराज.धीर१९५।१०जैतसिंह.खेडराव.हल्लू.छज्जराज.साँईदास.रदंग.इंद्रसिंह.दूदा१९५।१८इनअष्टादस१८पुत्रनजन्मलीनौं ॥
तिनमैं बारह१२के बंस चले रु खट६तिन निर्बंसनहीं देह त्याग कीनौं
इनमैं कुंभराजको अनुज कन्हड १९५।२ तानैं टोडरी नगर अपनौं निवास कीनौं ताकै भाणांग१९६।१ मल्हण १९६।२ दोय पुत्र भये ति

१ एक यवन का नाम है २ चारों का समुदाय ३ पदवी (खिताब) ४ पांचों का समुदाय ५ स्वामी

नमैं भाणांग तो मुख्य टोडरी रह्यो ताकै बंसके तो भाणांगोत्त१३
सोलंखी कहावैं ।
अरु मल्लहणाके अधीन निवसथ[1] चंदसीन तथा घंटी[2] प्रमुख रहे रु
चंदसीनमैं सितारा नामक दुर्ग रच्यो ताके बंसके समस्त मल्लहणो-
न १४ सोलंखी अैसो उपटंक[3] पावैं ॥

अरु कन्हडके सोदर लाहड १०५।३नैं रानभनाय जाय अमल
कियो ताकी संततिसौं जोधपुरके राजा रट्ठोड मालदेवके बडे पुत्र चं-
द्रसेननैं अपनो अनुज उदयसिंह उमरावननैं जोधपुरको अधीस की-
नौं तब चालुक्यनसौं जंग करि रानभनाय प्रमुख[6] समस्त ग्राम ला-
हडनैं लयेहे ते रट्ठोर चन्द्रसेननैं लैलये ।

अरु लाहडकै वंसके पैराजित चालुक्य या धामकौं छोरि मा-
लवमैं जाय उहाँ सुंध्यां पडिहार अपनौं धर्म तजि ब्रात्यनमैं संबंध
करि जाति बहिर्गत होय रहेहे तिनमैं संबंध करि सुंध्यानके सं-
बंधी होयगये ॥ ३६ ॥

याही कारणतैं लाहड बंसके चालुक्यनके भेदकी गिनतीमैं नाँहिं मानैं।
अरु पडिहारनके भेदकी गिनतीमैं सुंध्या लिखे तहांलौं जाति
बहिर्गत नहीं भयेहे यातैं कथनीयें जानैं ॥

अरु लाहडके अनुजको अनुज भीम१०५।५भयो जानैं गोलवा-
ल चहुवाल भानसिंहकौं मारि खैदिराटवीमैं नगर जाजपुर आय
अमल कियो ताके बंसके सब खइराडा१५सोलंखी कहावैं ।

अरु भीमको अनुज स्याम१०५।६ताके बंसके समस्त कठवाडा
१६सोलंखी अैसो उपटंकें पावैं ॥ ३७ ॥

स्यामकेअनुजतेजसिंह१०५।८ताकेबंसकेसमस्ततेजाउत्त१७सोलंखीभये

१चांदसेण नामक ग्राम२घाटी नामक गाम३आदि ४संतान (वंश) से ५ छोटा भाई ६ आदि ७ हारेहुए ८ जिनको इस समय सिन्धिया कहते हैं ९ संस्कार हीनों (शूद्रों) में १० बाहर ११ कहने योग्य १२ छोटे भाई का छोटा भाई १३मेवाड़ नामक प्रान्त १४ पदवी

अरु तेजसिंहको अनुज बछराज१९५।९ ता तीन तनय बडो अमर १९६।१ बरवासि रह्यो ताके बंसके बरवासिया १८।१ सोलंखी, दूजो२सूर१९६।२ भरसूड रह्यो ताके बंसके भरसूडा १९।२ सोलंखी, तीजो सल्लह३।१९६।३ ताके बंसके सल्हाउत २०।३ सोलंखी ऐसे बछर जकी संततिके तीन३भेद कहेगये ॥

बछराजको अनुज धीर १९५।१० ताके बंसके समस्त बैंडा २१ सोलंखी कहाये ।

अरु धीरको अनुज जेत १९५।११ उनियारा रह्यो ताके बंसके समस्त उनियारसी २२ सोलंखी ऐसे उट्टंक करि भये ठाये ॥३८॥

जैतके अनुजके अनुज हल्लानैं ल्लावट गाम बसाय अपनी संततिकौं हल्लावट२३सोलंखी ऐसो भेद दयो ।

अरु छज्जराज१९५।१४को वंत छज्जाउत२४सोलंखी ऐसो उपपद पाय ख्यात भयो ॥

अरु सबनसौं छोटो दूदा१९५।१८ बघेरा रह्यो ताकै पुत्र बेहल १९६।१ताके बंसके समस्त बेहला२५सोलंखी मानें गये ।

अरु गोइंदराजको बडो पुत्र इनको अग्रज कुंभराज१९५।१टोडापति भयो ताकैं किल्हणदेव१९६।१कीता२कर्मसी३आभा४ ए चारि पुत्र जानेंगये ॥ ३९ ॥

तिनमैं कीताकै बंसके तो मोडाउत२६सोलंखी कहाये ।

अरु कर्मसीके बंसके समस्त कर्मावत२७सोलंखी ऐसे उट्टंक करि मागधननें गाये ॥

कर्मसीको सोदर आभा डग्गी रह्यो ताके बंसके समस्त आभावत२८सोलंखी मानिये ।

अरु इनको अग्रज किल्ह टोडापति भयो ताके नरपाल१९७।१रूपाल२हम्मीर३पिथोरा४मालक५यह पुत्रनको पंचक५ जानिये ॥४०॥

१पुत्र२वंश३पदवी४छोटे भाइ से छोटा५प्रसिद्ध६बडा भाई७पदवी८बड़ेभाइयों ने ९ सगाभाई

तामैं हम्मीरके बंसके तो दूजे२कटारिया२९सोलंखी भये ।
अरु पित्थोगाके बंसके समस्त टंटावत३०सोलंखी कहेगये ॥
अरु किल्हणनैं अपनैं दूजे दायाद रूपालकौं घाड नगर दीनौं।
अरु इनके अग्रज नरपालनैं१९७।१किल्हणको पट्ट पाय टोडाको
आधिपत्य लीनौं ॥४१॥

नरपालके पुत्र सुरतान१९८।१बीरमदेव१९८।२ ए दोय२भये ।
तिनमैं बीरमदेवकै बल्लन१९९।१भील१९९।२यहसूनुनको युग्म२
ताम बल्लनके बंसके समस्त बालनोत३१सोलंखी कहेगये॥
बीरमदेवको अग्रज सुरतान नरपालको पट्ट लहि टोडापति भयो।
ताकौं घाडेसौं चढि पितृव्यक रूपालनैं मारिकैं टोडामैं अपनौं अ-
मल करिलयो ॥ ४२ ॥

रूपालके सातल१९८।१ सुरजन१९८।२दोय२ पुत्र भये तिनमैं सु-
रजनके बंसके तो सुरजनपोता३२ सोलंखी मानौं ।
अरु बडे सातलकै सेढू१९९।१ बणावीज२ राजधर३ पहप४ अमर५
गजसिंह६ अचल१९९।७ए सात७पुत्र जानौं ॥
तिनमैं बणावीर तो महदवास रह्यो ताके बंसके समस्त बणावी-
रपोता ३३ सोलंखी कहावैं ।
अरु अचल कक्कोड रह्यो ताके बंसके समस्त अचलपोता ३४ सो-
लंखी ऐसो उपटंक पावैं ॥ ४३ ॥

अरु इनको अग्रज सेढू१९९ टोडापति भयो ताके डुंगरसिंह२००।१
खेमराज २ भोज ३ खींवराज ४ हरराज ५ वैरीसाल ६ बाघ२००।७
ए सात ७ पुत्र भये तिनमैं खेमराजकै तो नाथ२०१।१रायमल्ल२०१।२
यह पुत्रनको जुगल२ तामैं नाथ तो रावहतो रह्यो ताके बंसके तो
समस्त नाथाउत ३५ सोलंखी, रायमल्लके बंसके समस्त राउतक ३६
सोलंखी, खेमराजकी संततिके दोय२ भेद लिखेगये ।

---

१ स्वामीपन २ गाम का नाम है ३ काका (पिता का लघुभ्राता ४ पदवी ५गा
म का नाम

अरु ेमराजको सोदर भोज २००।३ नैंनवा रह्यो ताके भोजाउत ३७, खींवराज ४ कोरमा रह्यो ताके खींवाउत ३८, हरराज५ गँवारि रह्यो ताके हरराजोत३९, बैरीसाल ६ हैंतोनाँ रह्यो ताके बैरिसाल्लोत ४०, बाघ २००।७ तींतरिया रह्यो ताके बाघाउत ४१ ऐसैं सेदूके पंच पुत्रके बंस तो ए पं ५ भेदके सोलंखी भये ॥

अरु इनको अग्रज डुंगरसिंह २०० टोडाको अधीस जासमयमैं लल्लनें पठान दिल्लीसौं खप्ता करि जवनेसकी पातुरिकौं लै आयो तानैं डुंगरसिंहसौं टोडा छिन्निलयो ।
तब डुंगरसिंह स्वसुर रानाँ रायमल्लके दुर्ग्ग चित्तोड गयो ॥ ४४ ॥
तब चालुक्य डुंगरसिंहके जामाता गागरोनि दुर्गके अधीस खिच्ची चहुवान पिप्पाजनैं तथा रानाँ रायमल्लके पट्टप राजकुमार उड्डयन पृथ्वीराजनैं चालुक्यको सहाय करि लल्लन पठानकौं मारि बहोरि टोडा लैदीनौं या डुंगरसिंहकै रत्नसिंह २०१।१ भारमल्ल २ जोगादित्य ३ बलराम ४ खेतसी ५ ए पंच ५ पुत्र तिनमैं भारमल्ल तो बीसलपुर रह्यो ताकै पुत्र गंगदेव २०२ भयो ताके बंसके समस्त गंगाउत ४२ सोलंखी कहाये ॥

अरु बलराम२०१के बंसके गुजरातमैं गये ते समस्त सोलंखी बलरामोत्त४३ऐसे प्रकार करि ठांये ॥

अरु इनको अग्रज रत्नसिंह२०१टोापति भयो ताकै सोरसेन२०२। १ अलसीराम २ कर्णासिंह३ए तीन३तनूज तिनमैं पट्टपति सोरसेनकै पृथ्वीराज२०३।१गोपालदास२सल्लह३सूर४ए च्यारि४पुत्र तिनमैं सल्लह सूर दोहू२सोदर तो चित्तोड दुर्गके अधीस रानाँ रत्नसिंहके सुभट भये ।

१ग्राम का नाम है २ ग्राम का नाम है ३ ग्राम का नाम है ४ ग्राम का नाम है ५ लल्ला नामक पठान जाति का यवन ६ खप्टा (बखेड़ा) करके ७ बादशाह८गढ९ उडना पृथ्वीराज (युद्ध में शीघ्रता से पहुंचने के कारण इनका नाम 'उडना' इस पदवी के साथ 'उडनापृथ्वीराज' प्रसिद्ध होगया था) १० प्रसिद्ध ११ बडाभाई १२ सगाभाई.

तिनकों बुन्दीबिलासिनीके बिलासी हड्डाधिराज चहुवान नरेस सूर्यमल्लनैं रानाँ रत्नसिंह सहित मारि लये ॥ ४५ ॥

इनको अग्रज पट्टपति पृथ्वीराज ताकै कमराज २०४।१रामचंद २ नरहरिदास ३ रुद्रसिंह ४ बिष्णुसिंह ५कृष्णसिंह६गोइंददास७ उदयसिंह८स्यामसिंह९नरायनदास१०फतेसिंह११रायसिंह २०४।१२ ए बारह१२पुत्र जानैं।

तिनमैं मुख्य कमराजकौं राज्य मिल्यो नहीं ताकै पुत्र कनकसिंह२०५।१शार्दूल२०५।२ए दोय२तिनमैं कनकसिंह तो गाँव कनवाडा बसाय तहाँ रह्यो रु सार्दूल गाँव कचनारिया बसाय तहाँ रह्यो इन दोउन२के बंसके कमाउत४४सोलंखी ही कहानैं।

अरु कमराजको अनुज रामचन्द्र२०४।२टोडापति भयो ताको अनुज नरहरिदास भंकरोड रह्यो ताके अन्ववाय अखिल नरहरिदासका४५,रुद्र बाढडाँ रह्यो ताके संतान रुद्रका४६,विष्णुसिंह सिल्लहारि रह्यो ताके कुलके विष्णुका४७,अैस ए च्यारि४भेद करि सोलंखी कहावैं।

अरु टोडापति रामचन्द्र ताकै पुरुषोत्तमसिंह२०५।१लाडखान२ साँवलदास३हरिदास४नाहरखान५ए पंच५पुत्र तिनमैं पट्टपति पुरुषोत्तमसिंह ताकै कल्ल्याणसिंह२०६ताकै अंकस्थ पुत्र भगवानदास २०७ताकै जगन्नाथ२०८।१माधवदास२दयालदास३जगरूप२०८।४ए च्यारि४पुत्र तिनमैं माधवदास घाडमुहा रह्यो ताकै कुलके माधवदासका४८,रु दयालदास सिंखनाँसोनवाय रह्यो ताकै बंसके दयालदासोत४९,रु गजरूप पैरानाँ रह्यो ताकै संतान गजरूपका५० सोलंखी, अैसे ए तीन उट्टंकें पावैं ॥ ४६ ॥

अरु इनके अग्रज जगन्नाथ २०८ सौं पमारराज बिक्रमके संवत

---

१ बुन्दी रूपी स्त्री को२भोगनेवाला ३हाडा कुल के क्षत्रियों के स्वामी ४ वंश ५सब(सम्पूर्ण)६ग्राम का नाम है७दत्तक(गोद लियाहुआ)पुत्र८ग्राम का नाम है९सिंखना और सोनवाय ये दोनों गामों के नाम हैं१०गाम का नाम है११पदवी.

सोलहसै बावन १६५२ मैं गोडा पातसाह अकबरनैं छिन्निलीनौं ।
तब यानैं झलाय नगरके समीप गाँव बसी जाय बास कीनौं ॥
या जगन्नाथके बिहारिदास२०६।१नरायनदास२जयराम३गोपी-
नाथ४प्रतापसिंह५भीमराज६बक्रराज ७मुहुकमसिंह८अनोपसिंह ९ए
नव९पुत्र भये ।
तिनमैं अग्रज दोय२अनपत्य[1] मरे तब जयराम मुख्य भयो ताकै
पुरुषोत्तमसिंह२१०।१कुसलसिंह२मदरूप३दीपचंद४ए च्यारि४सुत[2] सु
नैंगये ॥ ४७ ॥
तिनमैं पुरुषोत्तम अनपत्य मरयो तब कुसलसिंह मुख्य रहयो ताकै
दुजनसिंह२११।१सिवराम२साहिबसिंह३सिवाईसिंह४ए च्यारि४ पुत्र
भये तिनमैं अग्रज दुर्जनसिंहकै अमानसिंह२१२।१महासिंह२उदयसिंह
३नाहरसिंह४इंद्रसिंह५ए पंच५पुत्र मानिये ।
तिनमैं जेठो अमानसिंह ताकै छातलसिंह२१३।१सोभागसिंह२ज
यसिंह३कुसालसिंह२१३।४ए च्यारि४तनय तिनमैं छातलसिंहकै कृ-
ष्णसिंह१२४।१विष्णुसिंह२नवलसिंह३गुलाबसिंह४दलेलसिंह ५सू
र्यमल्ल२१४।६ए खट६पुत्र जानिये ॥
इनमैं बडो कृष्णसिंह२१४ताकै हरनाथसिंह २१५।१रघुनाथसिंह
२चमरसिंह३महतापसिंह४सिरदारसिंह५पहपसिंह६रणमल्ल७करण-
सिंह२१५।८यह पुत्रनको अष्टक[3] ८भयो ।
तामैं जेठो हरनाथसिंह अनपत्य[4] मरयो तब रघुनाथसिंह मुख्य
रहयो ताकडुंगरसिंह२१६।१शार्दूलसिंह२लछमण३बैरीशाल४इन चा
रि४पुत्रन जन्म लयो ॥ ४८ ॥
इनमैं जेठे डुंगरसिंहकै गोपालसिंह२१७।१अर्जुनसिंह२१७।२ए सो
य२संतान है ।
ते दोहू२सोदर[5] वाई ग्राम बसीमैं बिद्यमान[6] है ॥

---

१ बिना सन्तान २ पुत्र ३ आठों का समुदाय ४ बिना संतान ५ सगेभाई
६ वर्तमान (मोजूद)

भारतीभाधेय हड्डाधिराज रावराजेंद्र रामसिंह रावरो निदेस लह्यो।
तातैं यह एकोनपंचास४९गद्यन करि चालुक्यके मुख्य बंसकी
परंपराको समास कह्यो ॥ ४९ ॥

दोहा

इनके भेदनकोहु अब यह समासउद्देस ॥
सुनिये संभर दे श्रवन, रनपट्टु राम नरेस ॥५०॥

पादाकुलकम् ॥

भाला१बहुरि भुरटिया२ह जिम, खुंडानाँ३रु कटारिया४हु तिम ॥
बाघेला५सरबहिया६जानहु, सरकिया७रुगैंडा८पहिचानहु ॥५१॥
बहुरि देवसूरीका९कहिये, खोडेरा१०बीरपुरा११लहिये ॥
भल्लारा१२अरु भाणंगोत१३हु, मल्लहणोत्त१४खइराडा१५पुनि पहु५२
कंठवाडा१६तेजाउत१७त्यों सुनि, बरबासिया१८रु भरसूडा१९पुनि ॥
सल्हाउत२०बैंडा२१रनराउत, उनियारसी२२तथा हल्लाउत२३ ॥५३॥
छज्जाउत२४बेहला२५प्रमानहु, मोडाउत२६कर्माउत२७जानहु ।
आभाउत२८चालुक्यहु ऐसें, दूजे२कटारिया२९पुनि तैसें ।५४।
टंटाउत३०बँलि बल्लनोत३१बर, सुनिये सुरजनपोता३२संभर॥
रु बनबीरपोता३३इहि भिदं जुत,बहुरि अचलपोता३४नाथाउत३५ ॥
राउतका३६भोजाउत३७भेदकं, खींवाउत ३८हु तथा खलखेदकं ॥
हरराजोत३९बहुरि बैरीसल४०,वाघाउत४१गंगाउत४२अतिबल ५६।
बलरामोत४३कमाउत४४कहियत,नरहरिदासका४५हु पुनि सम्मत॥
रुद्रका४६रुविष्णुका४७कहे जिम,माधवदासका४८हु मन्नहु तिम ॥
बँलि दयालदासोत४९बखानैं,जगरूपका५०तदनु पुि जानैं॥

---

१ हे हाडा क्षत्रियों के स्वामी रावराजेन्द्र रामसिंह सरस्वती ही है कर (हासिल) जिसके ऐसे आपकी आज्ञा २ वार्ता (वचनका) ३पीढियों का४ संक्षेप ५ संक्षेप कथन ६ चहुवान कुल के राजा (चहुवाणों ने सांभर नगर में राज्य किया इससे इनको संभर, संभरी और संभरवार कहते हैं) ७ फिर ८ श्रेष्ठ ६ हे चहुवाण१०अरु११ भे- १२ भेद १३ दुष्टों के दुक्ख देनेवाले अथवा निकालनेवाले १४ पुनि १५ जिसपीछे

इमचालुक्ककुलके खोजेत अति,भेद पचास५०लहे ए५०भूपति॥५८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीयरराशौ चालुक्यवंशसमसनोद्देशनं षोडशो१६मयूखः ॥ १६ ॥

आदित एकचत्वारिंशत्तमः ॥ १४ ॥ अथ प्रमारवंशसमसनोद्देशनम्

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा ॥

हरिगीतम् ॥

दिय देस मालव अत्मभू[3] अभिसिक्त[4] भूप प्रमार१कौं,
वह राज्य ह्वां करि जोगसौं तजि देह गो भवपार[5]कौं ॥
तस पुत्र नाम पुरूरवा२तस राष्ट्रसेन३बखानिये,
तस धुंधुमार४तनूज[6] तासुत धूम्रराज५सु जानिये ॥ १ ॥
ताकै धुरंग६रु तास धीर७।१गभीर२भीम३रु केसरी७।४,
ए च्यारि४अग्रज धीर७भो इनमैं सुनौं नृपसंभरी ॥
ताकै सुचूड८सुचूडकै सुत कमलसेन९भयो बली,
तस प्रेम१०भो नृप मंडलेश्वर जास कीर्त्ति भली चली ॥ २ ॥
जमदच्छ११।१त्यौंहि जयंत२पुष्कर३प्रेमक सुत तीन३ए,
जमदच्छ११अग्रज तास भौम१२।१रु सूर१२।२दोय२प्रबीन ए ॥
सुत भौम १२ कै पुरुषोत्तमाख्य १३ रु पुत्र पार्षत १४ तास भो,
तसबुद्धभाव १५ रु तास धूर्हर१६।१संभु१६।२ जुग्म२सुभास भो॥ ३॥
सहदत्त १७ धूर्हरकै तंदीय अभैपती १८ श्रुति धारिये,
तस कृष्ण १९।१धुंधिल१९।२द्वै२सुकृष्ण१९अपुत्र मृत्यु[12] निहारिये ॥
जिहिं पित्र[13] कन्हड मान्नि पूजत अन्ववार्य[14] प्रमारको,

---

१ हेरते तलाश करते) २ हे भूपति ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीयराशि में चालुक्य के वंश का संक्षेप से कहने का सोलहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १६ ॥ और आदि से इकतालीस मयूख हुए ॥ ४१ ॥ अब प्रमार के वंश का संक्षेप से कहना॥

३ब्रह्मा ने ४ अभिषेक ५ संसार के ६ पुत्र ७ बडा ८ हे चन्वान राजा ९ कीर्ति १० उसके ११अवणकरो १२ विना पुत्र हुए मरा १३कन्हड नाम का पितर मानकर १४ वंश

अनुजात धुंधिलकै भयो सुत अंब २० गाहक सारको ॥४॥
तस पुत्र धीहर २१ तास तर्वर २२ धाबुराद्धि २३ तद्‍ीय भो,
सुत सूरसेन २४ तदीय तास धराविधार २५ गरीयँ भो ॥
हुव राजराष्ट्र २६ तदीय तासुत धीरसेन २७ बखानिये,
तस घूर्णा२८।१चंद२सुमेरु३कर्ण४प्रताप २८।५ पंच५हि जानिये ।५।
हुव घूर्णकै सुत थाणुराज २९ तदीय मंथिल ३० त्यों भयो,
तस संकुदायक३१तास माहिल ३२।१ कुंत ३२।२ युग्म २ यहै ठयो॥
दकराज ३३ माहिलकै रु तुंगबलाख्य ३४ तास निहारिये,
तस कीर्तिराज ३५ तदीय धर्षण३६।१ चंड३६।२ द्वै २सुनि धारिये।६।
हुव पुत्र धर्षणकै सुलक्षण ३७ इंद्रसेन ३८ तदीयँ भो ॥
बसुदेव जद्दवभामँ जो जयसेन ३९ तास गरीयँ भो ॥
तस कृष्णशालक बिंद ४०।१ रु अनुबिंद ४०।२ बीर उभै २ भये,
तिम बिंदकै सुत इंद्रकेतु ४१।१ मयूरकेतु ४१।२ दुवे २ ठये ॥७॥
हुव इंद्रकेतु तनूज संकर ४२ तास बिद्धर ४३ भूपती,
सुत तास त्यों अहिकेतु४४।१काटक४४।२हंलि४४।३ तीन३महामती॥
अहिकेतुकै सुत उद्रसेन४५।१। बकोटसेन२ जलारनी३,
सिसुमारसेन४ बिसारसेन५ रु नक्रसेन६ दरध्वनी४५।७ ॥ ८ ॥
हुव सात७ ए तिनमाँहिं अग्रज उग्रसेन४५ महीपती,
तस आर्यसेन४६।१कुमारसेन२ रु जोध३ तीन महामती ॥
हुव आर्यसेनज राजसेन४७ तदीय प्राणग ४८जानिये,
तस भीम४९ तासुत रामसेन ५० तदीय तैजस५१ मानिये ॥ ९ ॥
तस भो रुजाजित ५२तास भौम५३ रु पुष्पसेन५४ तदीय भो,
महिपाल५५ तास महेंद्रवर्मक५६ पुत्र तास गरीय भो ॥
जयसेन ५७ तास तदीयँ आत्मज चंडसेन ५८ भयो जथा,

१छोटेभाई २ बडा ३ जोडा ४ तुंगबल नामवाला ५ उसके ६ बहिनोई (बहिन का पति)७भारी८शाला (स्त्री का भाई) ९ पुत्र १० उसके११ पुत्र

गोपाल५९।१पालक५९।२तास द्वै२धनराज६० पूर्वजक तथा ॥१०॥
श्रीपाल६१ हुव धनराजकै तस राजसिंधु६२ निहारिये,
सल्लराज६३ तास तदीय वृंहण ६४ सूर ६५ तास बिचारिये ॥
ताकै स्वरूप ६६ तदीय चित्रक ६७ तास नंद ६८ नरेस भो,
तस नाथ६९ तासुत उदयसेन७० किसोर७१ तास सुबेस भो ॥११॥
तस पुत्र ईश्वर ७२ तास जयतनु ७३ भूपराज ७४ सु तास भो,
तस शोणाहय७५ तस चंद्रजय७६ तस पर्णाराज७७ सुभास भो ॥
तस चीर्णाराज ७८ तदीय बिमल७९ रु तास चंद्रायण ८०भयो,
ताकै मथाधर८१ तास नृसरण८२ तास हिंडन८३ उग्गयो ॥१२॥
सुत तास नरहरिसेन ८४ तासुत सूर्यराज ८५ बखानिये,
ताकै समर्थ८६।१ सुमेरु२ संकर३ संभु८६।४ ए चउ४ जानिये ॥
इन माँहिं अग्रजे जो समर्थ ८६ तदीय पुत्र कृपालु ८७ भो,
भूपाल८८तास तदीय गजगुड८९।१ धीर८९।२ जुग्म३दयालु भो।।१३।
उन्माद९० गजगुडकै रु तासुत ज्ञानराज ९१।१ रु केसरी ९१।२,
हुव ज्ञानराजतनूज लछमन९२।१ सक्त२ संजय ३औ हरी ९२।४॥
इन माँहिं लछमन ९२ अग्रजात तदीय फीतरजा ९३ बली,
ब्रजराज ९४ तस तस उदयसेन ९५ भयो रु भूपकरी भली।।१४।
तस देवसेन ९६ तदीय कुसल ९७ रु तास अजधर ९८ जानिये,
महराज९९ तस तस जोध१०० औ अजबीर१०१ तास प्रमानिये ॥
तस बिष्णुराज१०२।१बलाक२अंगद३रुद्र४ कृष्ण१०२।५समिज्जयो,
तिनमाँहिं अग्रजकै अमान१०३।१बिमान२मान३पहै लयो३ ॥१५॥
नरसिंह१०४ ज्येष्ठंज तास दुर्गर१०५ वृंदिलाचल१०६ तास भो,
पृथु१०७बित्तताभिधं१०८तास तासुत सालिभानु१०९सुभास भो॥

१बडा (प्रथम जन्म लेनेवाला) २बडा (प्रथम जन्म लेनेवाला)३दो (जोडा) ४पुत्र५और ६ बडाभाई ७ उसके ८ पृथ्वी को ९ युद्ध में जय करनेवाला १० बडे भाई का पुत्र ११ उसका नाम

हुव सालिभानु तनूज सत्रह १७ ते सुनौं नृपसंभरी,
तँहँ मुख्य कुंडिन११०।१त्यौं अजेय. जयंत. सल्ल. अग्रेसरो. ॥१६॥
साकूत. सजम. संख. सोबल. सु-१० शृंखल्ल. स्याम. ज्यौं,
इनमाँहिँ सुंदर११०।१०सुंद११०।१०नाम द्वितीय२एह दु२नाम ज्यौं॥
अजसेन. बंग. मुरारि. तोसल्ल. सोम११०।१७ ए१७ क्रमतैं ठये,
इनमाँहिँ कुंडिन११०मुख्य तास प्रताप१११।१उद्धर२ द्वै२ भये।१७।
तिनमाँहिँ अग्रजकैं भये ब्रजधीर११२।१मंद२महामती,
बलदेव ११३ भो ब्रजधीरकैं जयसेन११४ तासुत भूपती ॥
जयसेनकै सुत धीर११५ अो रघुनाथ११६ तास प्रमानिये,
रघुनाथकै सुत हंसराज११७ तदीय धूरव११८ जानिये॥ १८ ॥
तस त्यौं सदादिकबीर११९ तासुत जोध१२०तास सुलीन१२१भो,
कुलसे-१२२पुत्र तदीय तासुत इंद्रसेन१२३ प्रबीर भो ॥
श्रुतसेन१२४ तासुत तास गौरिल्ल१२५।१अंगर२ माधव३ए३बली,
इनमाँहिँ गौरिल्ल१२५भो अपुत्र रु अंतरारि रची भली ॥१९॥
मदसेन गोहिल भूपसौं लरिकैं लई जिहिँ स्वर्गती,
तिहिँ पित्र गौरिलँ मन्नि पूजत पारमारन संतती ॥
तब तास सोदर अंग१२६भूपति तास दुद्धरसेन१२६भो,
तस सोम१२७।१चत्वर२बिंदु३तीन३रु सोमके नृप बेन१२८भो ॥२०॥
सुत बेनकै कमलाश्व१२९।१जुद्धर२जाम३जुज्झन मत्त ज्यौं,
हनुमान४अंगद५बीर६बंकट७ए सहोदर सत्त ज्यौं ॥
इनमाँहिँ भो कमलाश्व१२९अग्रज तास मल्ल१३०।१रु मान२ए,
दुव२मल्लके सल्ल१३१।१संग२विस्मर३तन३धर्मनिधान ए ।२१।
सल्लकैं जयंत१३२तदीयँ सिबुल१३३तास भोज१३४पराक्रमी,
तस रेणुराज१३५तदीय कुंतल१३६तास साधुक१३७संजमी ॥

१ बडा बुद्धिमान् २ उसके ३ सदाबीर(सदा शब्द है आदि में जिसके ऐसा बीर) ४ हुआ ५ अरु ६ स्वर्ग में गया ७ गौरिल नाम का पितर मानकर ८ पँवारों का ९ वंश १० सगाभाई ११ सगेभाई १२ धर्म के आश्रय १३ उसके.

जयसेन१३८नाधुकके रु विद१३९बहोरि तास प्रजा भयो,
नृप विदके जगर्धार१४०।१नीलक१४०।२पुत्र युग्म यहै ठयो ।२२।
जगधीरके पुनि इंद्रसेन१४१सु मंडलेस कह्योगयो,
गंधर्वसेन१४२ तदीय जिहिं – – – –नाम सु पै छयो ॥
गंधर्वसेनज भर्तृहरि१४३।१अरु विक्रमार्क१४३।२उभै२बली,
इनकी बडी भुवचक्र कीरति त्यों न औरनकी चली ॥ २३ ॥
दुव२बंधु पंडित सास्त्र१सस्त्र२रु लोक३आदि समस्त मैं,
कलिकाल अंकनहार त्यों सककार मग्ग प्रसस्तमैं ॥
इनमाँहिं अग्रज जो हरी१४३जिहिं पट्टरानिय पिंगला,
सतपंच५००राननिमैं भई सरदिंदुसुंदर उज्वला ॥ २४ ॥
हरिभूपधी सबकी सिरोमनि सब्दसास्त्रपटू भई,
इक लक्ख१०००००व्याकृतिमैं बली नृप कारिका नव निर्मई ॥
धुर लै पतंजलिकी रु पाणिनिकी दुरूह सु उद्धरयो,
सृंगार१नीति२ विराग२को त्रिक३कल्प ह्वै प्रकटी करयो॥२५॥
निज पट्टरानिय पिंगला जिय जुष्ट जारहिं जानिकैं,
नृप ज्यों तजी अलकों अवंतियँ मोघ प्राकृत मानिकैं ॥
फल इक१भपहिं काहुनैं अधिकी चमत्कृतिको दयो,
सुं नरेसनैं हु रहस्यमैं रचि वो प्रिया हित अप्पयो ॥ २६ ॥
तब पिंगलाहु स्वजारके हित भेट चीज सुही करी ।
वह जारह पैननारि आसिक तेनैं जाय तहाँ धरी ॥

---

१ भूमंडल में २ कलियुग को चिन्हित करनेवाले ३ सम्वत् चलानेवाले४ प्रशंसा योग्य५भर्तृहरि ६ पाटवी रानी७ सरद के चंद्रमा के समान सुन्दर और उज्वल ८ राजा भर्तृहरि की बुद्धि९व्याकरण में चतुर१०व्याकरण में नवीन कारिका बनाई११कठिन व्याकरण का उद्धार किया १२शास्त्र होवे ऐसा (प्रामाणिक) १३जार (उपपति) के साथ प्रीति करनेवाली१४कुबेर की पुरी जैसी१५उज्जीण को १६ व्यर्थ १७ संसार का १८ चमत्कारवाला१९सो [वह फल] २० एकांत में राच [लीन हो] कर २१ उस पिंगला नामक अपनी प्यारी को दिया २२ अपने उपपति के लिये २३ गणिका का २४ उसने

गनिका सु धर्मनिधान ह्वै तिहिं फेरि भूपहिकों दयो,
लखि ताहि भूप विरत्त[1] ह्वै ततकाल दत्त[2] मुनी भयो ॥ २७ ॥
इम निष्क[3] बावन लक्ख५२०००००आमदकी अवंतिय ईश्वरी,
रु कुमारिका करदा[4] इन्हैं ततकाल[6] त्यागत भो हरी ॥
यहहू कितेक कहंत गोरख सिद्ध याहि मिल्यो तहां,
कहुँ सोहु कानफटा वजैं सु अलीक[7] वे जन हे कहां ॥ २८ ॥
हरि भूप यों बनि अत्रिनंदन[8] दत्त छोरि मही दई,
पवमान[9] सीत सुगंधलों तस कित्ति[10] लंघ सबै गई ॥
अवधूत ह्वै हरि भूप यों भुव दै सहोदरकों[11] गयो,
तव विक्रमार्क[12] १४३ अवंतिकों[13] अपनाय भूमिपती भयो ॥ २९ ॥
अरु विक्रमार्क महीपके मदनावती१४३१३अनुजा[14] स्वसा[15],
सरदिंदु[16] आनन[17] पंकजच्छदलोचना[18][19] सु मदालसा ॥
धुवकों[20] सुनीति जथा तथा विधुपुत्रकों यह निर्मई,
हरि अंग वंग नरेसकौं विधिसौं विवाहि वहे दई ॥ ३० ॥
जिहिं गर्भ गोपियचंद्र विक्रम भागिनेय[22] भलो भयो,
हरि ज्येष्ठ मातुल[23] अंक[24] ह्वै मिलि बोधमाँहिं[25] सु पैं ठयो ॥
बुध[26] ईस विक्रम भुपहू कलिकाल अंकितही[27] कर्‍यो,
धुर लै जुधिष्टिर[28] अंसको सकको रु अंस स्वयं धर्‍यो[29] ॥ ३१ ॥
धन्वंतरी१ पुनि अमरसिंह२ रु संकु३ वररुचि४ जैन५ ज्यों,

---

१ विरक्त २ दत्तात्रेय [दत्तात्रेय के समान] ३ सोलह मासा सुवर्ण का एक निष्क (मोहर) होता है ४ कुमारिका चेत्र के ५ कर देनेवालों को ६ तुरंत ७ मिथ्या (झूठ) है ८ दत्तात्रेय ९ पवन १० उसकी कीर्ति ११ सगे भाई को १२ विक्रमादित्य १३ उज्जैण को १४ छोटी १५ बहिन १६ सरद के चंद्रमा समान १७ मुख जिसका १८ कमल के पत्र समान १९ नेत्रवाली २० ध्रुव के लिये जैसे उसकी माता सुनीति थी तैसे ही गोपीचंद पुत्र के लिये यह बनाईगई (सुनीति ने ध्रुव को उपदेश दिया ऐसे ही मदालसा ने गोपीचंद को उपदेश दिया) २१ भर्तृहरि ने २२ विक्रम का भाणेज २३ बडे मामा भर्तृहरि के २४ गोद में होकर २५ ज्ञान २६ पंडितों का पति २७ चिन्हयुक्त २८ युधिष्टिर के कन्धे का धुर लेकर सम्वत् चलाने का २९ अपने कन्धे पर धरा.

बेताल६घटखर्पर७बराहमिहिर८रु कालियदास९त्यौं ॥
विद्या अनेकनिधान ए नव९रत्न भूपतिकै भये,
मिहिरोपटंक निधान ज्योतिष त्यौं सबैं सबमैं ठये ॥ ३२ ॥
जँहँ बर्ण च्यारिन४की [2]व्यवस्थिति भो तहाँ नृप एक[1]ही,
करि जेर अपनतैं बली कर[3] कन्यका सबतैं गही ॥
बसुकोटि८००००००००हाटकनिष्क[5] मुत्तिय अग्नि अंक९३मिला तुल,
पंचास५०गजहय अयुत१००००सत१००पननारि सब गुनसंकुला॥
इहिं मान इकदिन पांड्यदेस नरेस उपकरं प्रेसयो,
सु अमात्य[11] अतिधृति[12] १९ छंदमाँहिं निवेदि भूपतिकौं दयो ॥
खिलै[13] रक्खि अक्षर सप्त ७ ताबिच लैन उत्तर जो रह्यो,
"बैतालिकायाऽर्पय" यहै परमार१४३उत्तर व्हाँ कह्यो ॥३४॥
नृपकौं रिझावन नाम कीर्तिप्रतान बोधक गो हुतो,
सब ताहि बिक्रम १४३ यौं दयो कैर पांडुको पहुँच्यो सु तो ॥
जिहिं बोधकर कह भट्ट मागध अर्चि मन्नत अप्पनौं,
यह दान पाय प्रमारतैं वह ईभ्य उन्नत भो घनौं ॥ ३५ ॥
इम दान १ जुद्ध २ दया ३ प्रबीर अवंति नैरं नरेस भो,
भट भारती[21] रनमैंहु उद्धत अद्वितीय २ हि एस भो ॥
जँहँ देहु ए दुव २ वर्णही गुनपात्र[22] आगत[23] ही बनैं,

---

१ मिहिर की पदवी रखनेवाला(ज्योतिष में सूर्यसिद्धान्त है ऐसे) अथवा ज्योतिष में वराहमिहिर नामक विद्वान् हुआ वैसे२चारों वर्णों की व्यवस्था करने में उस समय यह एक ही राजा हुआ ३ कर (खिराज) में कन्या ४ सोने की ५ मोहरें ६ सोलह मासों का एक तोला, और चार तोलों का एक पल,और सौ पल की एक तुला होती है ७ गनिका८भरी हुई९उस प्रमाण (माफिक) १०सामग्री११कामदार ने १२ उन्नीस अक्षर की वृत्ति के छन्द में १३ सात अक्षर बाकी रखकर उन्हीं सात अक्षरों में राजा से उत्तर लेने को रहा १४ वैतालिक को देदो १५राजाओं को बोध करानेवाले (भाट) १६पांड्यदेश के राजा का भेजा हुआ कर १७बड़वा भाट १८पूजनीय१९धनवान्२०उज्जैण पुर का २१ सरस्वती (वाणी) के युद्ध में२२"देहु"ये दो अक्षर कहनेवाला ही जिसके आगे गुणवान्२३ आया हुआ ही पात्र.

निजे देय एह उदारता सब भूपकी अबलौं भनैं ॥ ३६ ॥
न कुमारिका[2] बिच कोउ दुर्गत आधि[3] व्याधि[4] दुखी रह्यो,
न अनम्र कोउ नरेस एहं[5] प्रभाव बिक्रमनैं लह्यो॥
जिहिं स्वीयं[6] सत्रु अजातसत्रु[7] समान कोउ न जानयो,
निज दोसत हुव कोहु सोहु नम्यौं रु प्रभु[8] पहिचानयो ॥ ३७ ॥
संक जास नूतन सालिबाहन दब्बिकैं[11] अबलौं बहैं,
नृप राम[12] यौं कबि किर्त्ति[13] बिक्रमराजकी कबलौं कहैं ॥
नहि और पांडवके[14] अनंतर[15] भूप बिक्रमसो भयो,
रसना हजार १००० हुतैं न तज्जस[16] काहुसौं बरन्यौं गयो ॥ ३८ ॥
क्रमचित्र१४४।१बिक्रमचित्र१४४।२ओ भवदास१४४।३बिक्रमकै भये,
क्रमचित्रकै सिवसत्य १४५।१ ओ सिवराज १४५।२ आत्मज[17] द्वै२ठये।
सिवसत्यकै बुधसेन १४६ तासुत भद्रसेन १४७ बखानिये,
तस पुत्र अजभवपाल १४८ अनुभवपाल १४८हू तिंहिं जानिये॥३९॥
तस पुत्र अर्जुन १४९ तास सांडिल १५० त्यौं जगज्जय१५१ तासभो,
तस बिंब १५२।१ नंदक२बिंबपुत्र महेस १५३।१ त्यौं हरिदास२भो।
रु महेसकै सुत द्वै २ बिजैभूपाल १५४।१ दुर्जयसेन १५४।२ ये,
तिनमाँहिं अग्रजकै सरस्वत १५५।१ मेहपाल१५५।२उभै२भये।४०।
जनमैं सरस्वतकै सुहार्द १५६।१ नृसिंह. भीम. सुगंध. त्यौं,
हररत्त. मंगल. ल्हाद. नंद. सरज्ञ. धूरथ१५६।१० अंग. ज्यौं ॥
सिव. स्याम१५६।१३तेरह१३ए भये इनमैं सुहार्द सु१५६अग्रनी,
हुव तास ईश्वर१५७।१त्यौं नृपाल१५७।२हु दायके दुव२ए धनी।४१।
जनसूर१५८।१गल्लक२गद्यगुन३अरु कृष्ण१५८।४ईश्वरकै इते४,

१ स्वयं अपने आपको देदेना २ कुमारिका क्षेत्र (आर्यावर्त) ३ मानसिक (मन की) पीडा ४ शारीरक (देह) पीडा ५ कोई राजा अनम्र नहीं रहा ६ जिसको अपना शत्रु ७ राजा युधिष्टिर के समान ८ अपने ही दोष से जो कोई उस राजा का शत्रु हुआ वह भी९ स्वामी ही जाना १०सम्वत् जिसका ११शालिवाहन के नवीन सम्वत् को दबाकर १२हे राजा रामसिंह १३कीर्त्ति १४राजा युधिष्टिर के१५ पीछे १६ उसका यश१७पुत्र,

जनसूरकै सिवराज१५९।१सिंधुल२मुंज१५९।३ए गुन३सम्मिते ॥
नृपती अवंतियमैं भयो सिवराज१५९।१सिंधुल१५९।२धारमैं,
अरु मुंज१५९।३दसउरमैं भयो सु रह्यो कुबुद्धि विचारमैं ॥४२॥
सिवराज १५९ गो अनपत्य तब सब देस सिंधुल १५९ भूप भो,
तउ तास खास अवंति तजि धाराहि बास अनूप भौं ॥
सुत निष्ठि हायन सष्ठि६०के बयमाँहिँ सिंधुलकै भयो,
अभिधान ताकँहँ भोज१६०यह आ[illegible]सि लोकन अप्पयो ॥४३॥
निज मृत्युकौं ढिग जानि सिंधुल१५९चित्त निश्च[illegible] यौं कस्यो,
मम पट्ट लै सिसु भोज सोदर मुंजतैं निहचै मरयो ॥
तसमात आत्मजकौं बचावन राज्य मुंजहिँ अप्पनौं,
तस अं[illegible]मैं पुनि भोजकौं जुवराजको थिर थप्पनौं ॥४४॥
यह सोधि बुद्धि दसोरतैं नृप राज्य मुंजहिकौं दयो,
जुवराज राजकुमार भोजहिँ अंकें तास समप्पयो ॥
रु कही मही यह भोज सोदरके अनंतर पाय है,
सुखहेत सासनपै पितृव्यकको सदा सिर लाय है ॥ ४५ ॥
यह [illegible]ालहू मम ईसहै इम मुंज अग्रजसौं कह्यो,
सुनि सो तज्यो बपु भूप सिंधुल मुंज१५९भूपपनो लह्यो ॥
सुत मुंजके हु जयंत १६० औ यह भोज१६०बालक द्वै२भले,
लहि मुंज सासन पाठसाल कुमार ए२पढिबे चले ॥४६॥
हरि१ श्री२रु सर्व३सिवा४गनेस५गिरा६बिधानन बंदिक,
पढिबे लगे दुव२पोर्तें श्रीगुरु पाय पूजि अनंदिकैं ॥

१ उज्जैण में २ पुर का नाम है ३ मंदसोर नामक पुर ४ विना संतान मरा ५ साठ वर्ष की अवस्था में ६ नाम ७ आज्ञाकारी लोगों ने ८ भोज बालकपन में मेरे सिंहासन पर बैठ कर९निश्चय ही मेरे सगे भाई मुंज के हाथ से माराजावेगा १० इसकारण से ११ पुत्र को बचाने के लिये १२ गोद (दत्तक पुत्र बनाकर) बैठाकर१३नगर का नाम है१४गोद१५अरु१६पीछे१७आज्ञा १८ काका (पिताके भाई) को१९बडे भाई से२०शरीर२१और २२विष्णु २३ लक्ष्मी२४महादेव२५पार्वती २६सरस्वती २७ वेदों को नमस्कार करके २८बालक

अध्याय उत्तम भोजको इक१अब्द मुंज१५निहारिकैं,
न जयंत मोसुत याछतैं धरनीस यों धिय धारिकैं ॥४७॥
किय बुद्धिसागर नाम दूर अमात्य सिंधुलको करयो,
अधिकार सो दिय बच्छराजहिं मुंज आगस अहरयो ॥
अरु स्वीय किंकर अंतरंग पठाय आसय बुल्लिकैं,
बगालपति वह बच्छराज अमात्य आतुर बुल्लिकैं ॥४८॥
रु कही बिससय बच्छराज प्रदोस कालहिं पायकैं,
भुवनेश्वरी बनमाँहिं भोज कुमार मारहु जायकैं ॥
सिर तास लै अवरोधमाँहिं बिबिक्त मोकँहँ अप्पनौं,
वच बज्र ए सुनि बच्छराजहु मुंजकौं बरज्यो घनौं ॥४९॥
न तथापि दुष्ट दयालु भो तब पाठसाल यहै गयो,
समधीत पुच्छन ब्याजकैं पहिलै जयंतहि बुल्लयो ॥
कछु पुच्छिकैं तिंहिं सिक्ख दै रु कुमार भोज बुलायकैं,
बलसौं उठाय रु अप्पनैं रथपैं लयोहि चढायकैं ॥ ५० ॥
पहिचानि भोजहु सत्रुकी साकूत दिट्ठि तहाँ लई,
निज पावरी गहि बच्छराज ललाटपैं कररी दई ॥
तब बच्छराज कह्यो कुमार न नैंक दोस मदीय है,
अंघजुष्ट दुष्ट प्ररुष्ट मुंज सपत्न सो भवदीय है ॥ ५१ ॥
इम अक्खि भोजहिं लै वहै भुवनेश्वरी बनमैं गयो,
असि कड्ढि बुल्लिय इष्ट चिंतहु आयु पूरनही भयो ॥
कछु जो कहावहु मुंजसौं सु कहो निवेदहिं तायकैं,
सिसु भोज यों सुनिकैं लये बँटपत्र दोय२तुरायकैं ॥५२॥

१ पढना २ एक वर्ष ३ इसके होते हुए मेरा पुत्र जयंत राजा नहीं हो सकता, यह बुद्धि में विचार कर ४ मंत्री ५ दोष ६ अपने नौकर७स्वानगी (अमात्य) ८ अभिप्राय ९ संदेह रहित १० संध्या के समय ११ जनाने में१२एकान्त में १३ देना १४ वचन १५ तो भी १६ पढाहुआ १७ मिस करके १८ आशय (अभिप्राय) की दृष्टि १९ मेरा २०पाप से२१प्रीति करनेवाला २२ क्रोधित २३शत्रु२४आपका२५खड्ग२६अर्ज करूं२७ बड़ के वृक्ष के पत्ते.

करि एक१पत्रहिं*पत्र भाजन दूसरे२दलको कर्‌यो,
निज जंघ**नैंक छुरी बिदारि निकारि***सोनित सौं भर्‌यो
बुध बालहू तनसौं तहाँ ततकाल पद्य जु निर्मयो.
कृतकालभूखन भूत भूपति यौवनाश्व कहाँ गयो ॥५३॥
रघुराज राम जुधिष्ठिरादिक कोउ कोटिनमैं न हैं,
अबलौं न भू गत काहु संग सु मुंजतो जुत जाय है ॥
करि लेह एह दयो कह्योऽबैं करो जु मुंज निदेस भो,
तँहँ भोजको मुखकंज फुल्लित पुब्वतैं हु बिसेस भो ॥५४॥
लहि तत्व जीवतमुक्त जो सिसुहू प्रसन्न बन्या रह्यो,
लखि ताहि सानुज वच्छराज प्रकंपि पातक ना चह्यो ॥
यह घोस कोसन फैलि पत्तन धार बैर बढ्यो घनौं,
नृपहिंतु अग्गजके सिपाह मुरे प्रकुप्पि जमाँ जनौं ॥ ५५ ॥
गज बाजि उंट अमात्य उत्तम मुंजके हनिबे लगे,
करि नैर फग्गुनरुक्ख आहव तोरसौं तनिबे लगे ॥
हटनारि लग्गि बजार मुंजहु जंत्र द्वारनके जरे,
सावित्रिकाभिध भोजमात बिलाप रोदन बिस्तरे ॥ ५६ ॥
खिजि केक सूरन कोस चत्वर मंदुरा दव देदयो,
अरु देस वासिन व्रातहू मुरि मुंजसौं भिरनौं भयो ॥

---

*एक पत्ते को तो पत्र (कागज) बनाया**दूसरे पत्ते को भाजन (बरतन)बनाया***अपनी जांघ को छुरी से थोडीसी चीरकर लोही से भरा १ उस बालक पंडित ने २ तुरंत ३ श्लोक ४ बनाया ५ सतयुग के भूषण रूप ७ क्रोड़ों होगये जिनमें भी कोई नहीं है ८यह पृथ्वी किसी के साथ नहीं गई ९ लेख (लिखावट) १० अब ११ मुंज की आज्ञा होवे सो करो१२ कमल के समान १३ पहिले १४ ज्ञान १५ जीता हुआ ही मुक्त के समान१६ अपने छोटे भाई के साथ वच्छराज ने १७ पाप १८ शब्द (हल्ला) १९पुर२० धार नामक नगर में २१ राजा से २२ बडे भाई (भोज के पिता सिंधुल के सिपाही) २३ कामदार २४नगर को फागण मास के वृक्ष के समान २६ युद्ध २७ माले २८ सावित्री नामक भोज की माता ने २९ रोना ३० खजाना ३१ चौक ३२ हयशाला में ३३ अग्नि (लाय लगागये) ३४ समूह

इत जाम जावन जामिनी वह वच्छराज सभ्रातही,
भरि नैंन भोज हन्यौं नहीं बटपत्र लेख बनातही ॥५७॥
रथ बैठि लैं तिहिं छन्न आय रु भोज मंगृहमैं धन्यो ॥
नट इंद्रजालिक बुद्धि मस्तक तास तुल्ल्यं नयो कन्यो ॥
सिर सो सकुंडल कंजलोचन जाय मुंजहिं अप्पयो,
लखि ताहि मुंज कह्यो कुती सिसु सो कहा कहतो हयो॥५८॥
बटपत्र जो तब वच्छराज समप्पि आलय आत भो ।
अरु दीपसन्निधि मुंज सो दल नैन द्वैनदिखात भो ॥
तस तत्व जानत रोय वेगहि विज्ञ विप्रन बुल्लिकैं,
रु कह्यो कहा गति मोर मैं खल भोज मारिय भुल्लिकैं ॥५९॥
सुनि चोलें पावकको प्रवेस बताय विप्रन ह्वाँ दयो,
ततकाल ज्वाल जराय मुंजहु देह होमनकौं भयो ॥
पहिलो अमात्यं जु बुद्धिसागर सोहु यौं सुनिगो तहाँ,
मिलि छन्न तासन वच्छराज निवेदि तत्व दयो जहाँ ॥६०॥
पुनि दोउहु सम्मालि व्है कछू विधि भोजकौं प्रकटी कन्यो,
हिय लाय मुंजहु रोय ताकँहँ भद्रआसनपैं धन्यो॥
निजपुत्र भोजहिं मुंज दै सकलत्रही वनमैं गयो,
सिसु बेस भोज नरेसहू पढनौं सदा बढनौं लयो ॥ ६१ ॥
सचिवाधिकार दयो बहोरि हु बुद्धिसागर सुद्धकौं,
पृतनाधिकार सबै समप्पिय वच्छराज प्रबुद्धकौं ॥
निज आन संजुत घोस डिंडिम धारपत्तन विस्तन्यो,

१पहर२रात्रि में३भाई सहित४बड़ वृक्ष के पान पर५नहिंमारा ६ इन्द्रजाल जाननेवाले ७ उसके समान ८ कमल के से नेत्रवाला ९उस बालक पंडित ने१०अपने घर आया११दीपक के पास १२दोनों नेत्रों को दिखाया अर्थात् दोनों नेत्रों से देखा १३ उस भोज का ज्ञान १४ पंडित ब्राह्मणों को१५ वस्त्रों सहित १६ अग्नि में प्रवेश करो १७ मंत्री (प्रधान) १८ सारांश (गुप्तवार्ता १९ प्रसिद्ध (छोड़े) २० सिंहासन पर२१स्त्री सहित२२कामदार का अधिकार २३ सेनापति का अधिकार २४ पंडित२५ ढूंढा की शब्द २६ धारानगर में

नर नारि जो पढिहै न सो कढिहै इहाँ सन ज्यों मस्यो ॥ ६२ ॥
पुनि सर्व बालक बालिका पढि भोग दुर्लभ पायहै,
अरु सास्त्र१व्याकृति२काव्य३कोबिदं मोहि मित्र बनायहै ॥
बिद्याप्रचार बढाय यों सब सीघ्र अप्पहु सिक्खयो,
पढि श्रुति जटांत४सभाष्य कैय्यट पाणिनीय५हु पिक्खयो ६३
लगि सांख्य६योग७कणाद८गोतंम९व्यास१०जैमिनि११तंत्रलै
सुभ धर्म सास्त्र१२ सअर्थ आगम१३दंडनीति१४ सुमंत्र लै ॥
सिक्षा१५रु कल्प१६निरुक्त१७ज्योतिष१८छंद१९सिक्खि सबैलये
चउसट्ठि६४त्यौंहिं कला पढी तिन्ह नाम आप्तन ए दये॥६४॥
इक गीत१सो स्वरगाख्य१ओ पदगाख्य२ है लयगाख्य३त्यों,
चेतोवधानग४हू चतुर्थ४कह्यो चतुर्विध गेय१यों ॥
पुनि वाद्य२सो आनद्ध१तत२सुसिराख्य३घन४चउ४भेदही,

१मुर्दा को निकालैं जैसे२लड़किये३व्याकरण४पण्डित५आपने भी सीखा ६ वेद को जटान्त पढा [वेद के अर्थ करने के दश साधन हैं, जिनमें अन्तिम साधन का नाम जटा है वहां पर्यंत पढा] और पाणिनीय व्याकरण अष्टाध्यायी को भाष्य कैयट सहित सीखा ॥ ६३ ॥ सांख्य, योग, कणाद का कियाहुआ वै ाषिक, गोतंम का कियाहुआ न्यायदर्शन, व्यास का कियाहुआ वेदान्त, और जैमिनि का कियाहुआ मीमांसा शास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र श्रेष्ठ सलाह के साथ राजनीति और शिक्षा, कल्प, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द ये भी सब सीखलिये, इसीप्रकार चौसठ कला भी पढीं; जिनके नाम बडे लोगों(सत्य वक्ताओं) ने ये दिये हैं ॥६४ ॥ ग्रंथकर्ता ने ये चौसठ कला कामसूत्र से ली हैं तो हम भी कामसूत्र की टीका के अनुसार टीका करते हैं. जिसको देखना हो निर्णयसागर में छपेहुए पुस्तक के पृष्ठ ३४ से देखो. प्रथम गान कला के चार भेद हैं, जिनमें स्वरगाख्य स्वर से गाये जानेवाले वेद आदि. पदगाख्य पद से गाये जानेवाले. [सुवन्त तिङंत को पद कहते हैं]. लयगाख्य "स-रि-गम" आदिलय से गायेजानेवाले. चेतोवधानग "ड्डि. ड़. डा. ड़ा." आदि चित्त में छुपी रीति से गाये जानेवाले (इनका सविस्तर वर्णन देखना होवे तो "संगीतरत्नाकर" नामक ग्रंथ में देखो) दूसरी कला वाद्य बजाने की जिसके भी चार भेद हैं, अर्थात् चर्म से मढेहुए मृदङ्गादि वाद्यों को "आनद्ध", वीणा आदि तार के वाद्यों को "ततं", बंसी शंख आदि फूंक के वाद्यों को

रस१अंगहार२बिभाव३आदि छ६भेद नृत्यकला३कही ॥ ६५ ॥
गंधर्व नामक वेदमैं त्रय३कोंहि बिस्तर जानिये,
चोथी४कला आलेख्य४तासहु भेद ए खट६मानिये ॥
इक रूपभेद१प्रमानि२पुनि लावरय३आसय४लावनौं,
वर्णिका ं ग५रु साम्य६इहिं हित सिल्पवेद दिखावनौं ॥ ६६ ॥
पुनि पंचमी५हु कला कलाधर पत्र्च्य५निहारिये,
बिधि सिल्पवेदहिमैं सु पै खट६भेद बल्गु बिचारिये ॥
अरु पुष्पतंडुलबलिबिकार६छठी६कला श्रुति लाइये,
जिहिं चित्रतंडुलपुष्पसोभित ‾‾ट्टिमादि बनाइये ॥६७॥
पुनि पुष्पआस्तरनाख्य७जिहिं सयनीय भव्य भले बनैं,
तिम दंत पट बपु राग८जो अति प्रीति नारिनकै तनैं ॥

"शुषिर" और झालर घंटा आदि कांसी के वाद्यों को "घन" कहते हैं ॥ रस, अंगहार और विभाव को आदि लेकर छै भेदवाली नाचने की तीसरी कला कही है ॥६५॥ परन्तु गान्धर्ववेद में इन ऊपर कहेहुए तीन भेदों का ही विस्तार जानो ॥ चौथी कला आलेख्य (चित्रकारी) नाम की है, जिसके ६ भेद हैं, जिनमें प्रथम रूप भेद (स्वेत, नील, पीत, रक्त, हरित, धूसर, चित्रविचित्र [अबलख]) सात प्रकार का है; दूसरा प्रमाण [छोटा, लंबा, मोटा, पतला, चौकोर और गोल] छै प्रकारका है; तीसरा लावण्य [कान्तिवाला]; चौथा आशय लावना (भाव बताना; पांचवां वर्णिकाभङ्ग (नील आदि रंगों के भेदों का ज्ञान कर स्याही बनाना) और छठा भेद साम्य है, सो जिसका चित्र बनाया जावे उस वस्तु के समान (साक्षात्) करदेना, इनकेलिये शिल्प शास्त्र देखना चाहिये ॥ ६‾ ॥ हे कला को धारण करनेवाले रामसिंह! पांचवीं कला पत्रछेद्य नामक है, जो कागज वा केले आदि के पत्रों को कतरकर पशु पक्षी पुष्पादि सुन्दर चित्र बनाये जाते हैं जिस के भी छै भेद शिल्प शास्त्र में देखो.अथवा भोजपत्र आदि की भांति भांति की कतरी हुई टीकियां ललाट में लगाना. छठी कला पुष्प तण्डुल बलि विकार नाम की है, जिसमें भींतें आदि के ऊपर रंगे हुए चावलों से पुष्प आदि चित्र बनाये जाते हैं ॥ सातवीं कला का नाम पुष्पास्तरण है,जिसमें पुष्पों के बिछाने से अनेक चित्रोंवाली सुन्दर शय्या बनाई जाती है ॥ आठवीं कला दन्तपटवपुराग नामक है, सो दांत रंगना (मिस्सी आदि लगाना, वस्त्र रंगना, शरीर को रंगना अर्थात् मेंहदी आदि लगाना जो स्त्रियों को

नवमी कला मणिभूमिकर्म९सु कुट्टिमादिक रंगनौं,
अरु तल्परचन१०सु न्यासकाल बिभिन्न मोद रचैं घनौं । ६८ ।
जलबाद्य११सो मुरजादि ज्यौं बरबादना जलमैं दुरी,
रु जलोपघात१२सु हस्त जंत्रन तोयताडन चातुरी ॥
बलि चित्रयोग१३बिरूप वलि पलितादिकारक जानिये,
पुनि माल्यग्रथनबिकल्प१४सो शृंगार साधक मानिये ॥ ६९ ॥
आपीडसेखरयोजनाख्य१५किलंगि मुकुट बनावनौं,
नेपथ्ययोग१६सु पै सरीर सुरूप मंडन लावनौं ॥
श्रुतिपत्रभंग१७दरादि कर्त्तित जे बिसेस चहैं प्रिया,
पुनि गंधयुक्ति१८अठारहीं१८अतरादि अर्चनकी क्रिया ॥ ७० ॥
सुनियेऽब भूखनयोजनाख्य१९सु दोय२भेदनसौं जथा,

प्रीति कारक है ॥ नवमीं कला मणिभूमिकर्म नामकी है, सो भींतों पर मणियें जड़ने के चित्राम से होती है ॥ दशमी कला का नाम तल्परचन है, सो देश काल के अनुसार शय्या की वस्तु स्थापन करने से होती है, वह बहुत मोद दायक है ॥ ६८ ॥ ग्यारहवीं कला जलवाद्य है, सो मृदङ्ग आदि के वाद्य समान श्रेष्ट बाजा जल में छिपा हुआ है, अर्थात् चीणी या कांसी के कटोरों में जल भरकर उन कटोरों को बजाने से राग निकलती है ॥ अथवा तलाव आदि के जल में हस्त के आघात से मृदंग आदि की नांई वाद्य बजाना बारहवीं कला का नाम जलोपघात है,सो हाथ अथवा यंत्रों (पिचकरों) द्वारा जल से ताडन करना ॥ फिर तेरहवीं कला का नाम चित्रयोग है,जो विरूप(रूप को बिगाड़ना) वलि (वृद्धावस्था में शरीर की चमड़ी में झुर्रियां पड़जाती हैं वैसी झुर्रियां पटकना) और श्वेत केस करदेना आदि है॥ चौदहवीं कला माल्यग्रथन नामक है, जिसमें पुष्पों की माला, गुच्छा, भूषण आदि बनाते हैं; जिसे शृंगार को साधनेवाली जानो ॥ ६९ ॥ पंद्रहवीं कला आपीड़शेखरयोजना नाम की है, जिसमें शिर गूँथने और किलंगी, मुकुट आदि बनाने के काम होते हैं ॥ सोलहवीं कला नेपथ्ययोग नामक है, सो वस्त्र, आभूषण आदि धारण करने की चतुराई से शरीर मंडन की है ॥ सत्रहवीं कला का नाम कर्णपत्रभंग है, जिसमें शंख, हाथी दांत आदि से कानों के भूषण बनाने की चतुराई है; जिसको स्त्रियां बहुत चाहती हैं ॥ अठारहवीं कला का नाम गंधयुक्ति है, जिससे अतर आदि गंधद्रव्य खींचाजाता है ॥ ७० ॥ अब भूषणयोजना नामक उन्नीसवीं कला सुनिये, जिसके दो भेद हैं. जिनमें एक

हारादिमैं मणियोजना१कटकादिकी घटना२तथा ॥
अरु इंद्रजाल२०अनेक देखनहार बिस्मयकार जो,
कुचुमारयोग२१बसाक्रिया सु भगाक्रियादि सुढार जो ॥ ७१ ॥
पुनि हस्तलाघव२२सीघ्रता सबकर्म मैं व्यय रंचकौं,
तेईसमीं२३वरना कला सुनियेऽब तास प्रपंचकौं ॥
रस१राग२पानक३यूष४भक्ष्य५रु साकद्योग बिचित्र२३ज्यौं
तस भक्ष्य१भोज्य२रु लेह्य३पेय४रु चोष्य५पंच५प्रभेद त्यौं ।७२।
तहँ भक्ष्य१तो करि खंड दंतन खंडि खावन सोधिये,
वहुधा सु ख्यात समस्त ठाँ अब भोज्य२वस्तु प्रबोधिये ॥
संजाव१ भत्त२ रु साक३ आदिक सर्व रंधित भोज्य है ।
तनु भेद पुब्ब प्रयुक्त तत्थहु साक है दसधा१० यहै ॥ ७३ ॥
फल१ कांड२ पुष्प३ पलास४ मूल५ करीर६ राम नृपाल है,
त्वच७ औ प्ररूढक८ अग्र९ कंटक१० अत्थ भेद इते कहे ॥
इनके प्रपंच अनेक आयुरबेद आदिनमैं रहैं,

तौ हार आदि में मणियों का पोना और दूसरे कंकन (कड़े) आदि बनावा. बीसवीं कला इंद्रजाल नाम की है, जो अनेक देखनेवालों को अचरज करानेवाली है ॥ कुचुमारयोग नाम की सुंदर इक्कीसवीं कला है, जिससे वशीकरण और सुभगकरण आदि होता है ॥ ७१ ॥ हस्तलाघव नाम की बाईसवीं कला है, उससे सब कार्यों में हाथ की फ़ुर्ती से थोड़े खर्च से कार्यसिद्धि होती है ॥ अब तेईसवीं कला का वर्णन करता हूं, जिसका विस्तार सुनो. रस, राग (चाटने योग्य पदार्थ), पानक, यूष (क्वाथ-काढा) भक्ष्य और शाक इन सब के अनेक प्रकार के योग हैं; जिनके भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, पेय, चोष्य ये पांच भेद हैं ॥ ७२ ॥ इनमें भक्ष्य तौ दांतों से टुकड़े करके चबाकर खाने योग्य पदार्थ को कहते हैं, सो सब जगह बहुत प्रसिद्ध है. अब भोज्य वस्तु को जानो. हलवा (सीरा) भात (चांवल) शाक (तरकारी) इनको आदि लेकर रंधेहुए सब पदार्थों को भोज्य कहते हैं, ऊपर कहेहुओं के साथ थोड़ेसे भेद (फरक) से दश प्रकार के शाक ये हैं. फल, कांड (शाखा) पुष्प, पत्ते, मूल (जड़) करीर (वंशांकुर), त्वच (छाल), प्ररूढक (कन्द), अग्र (कोंपल) और कांटा. यहां इतने भेद (प्रकार) कहे हैं इनके अनेक प्रभेद आयुर्वेद आदि ग्रंथों में हैं. यहां पर राग शब्द लेह्य पदार्थ का वाचक

यँहँ लेह्य३ बाचक राग३ ताकँहँ पाकप्रज्ञ त्रि३धा कहै ॥ ७४ ॥
द्रव१ लेह्य२ चूरन३ नामके अनुसार आत्मक तीन३ ए,
संधेय१ तदितर२ पेय४ के दुव२ भेद आदि प्रवीन ए ॥
अद्रावितारूय१ रु द्रावितारूय२ द्वि२धाहि यह संधेय है,
बहुधाहु तदितर२ एक१ लच्छन सिद्धसत्वक पेय है॥ ७५ ॥
अद्रावित१ हु संधेय१ यह संधानहीन२ समान है,
द्रावित२ सुरस१ यूषा२दि पानक३ आसवा४दि प्रमान है ॥
पुनि सूचिकासंधानकर्म२४ कला यहै चउवीसमी२४,
सीवन१ रु बिरचन२ भूनयन३ तस भेद तीन३ कहे अमी ॥७६॥
चोलादि१ सीवन१ सौं रु बिरचन२ सौं कुथादि२ बनावनौं,
भूनयन३ सौं पट फाटितादि३ नवीन पुनि करि लावनौं ॥
पचवीसमी२५ पुनि सूत्रक्रीडन२५ सोहु बिस्मयसालिनी,
जँहँ छिन्न संधत दग्ध जन्मत सूत्र छिद्रित नालिनी ॥ ७७ ॥

है, जिसका पाक बनानेवाले चतुर लोक तीन प्रकार का कहते हैं ॥७४॥ अपने नाम के अनुरूप द्रव, लेह्य, चूर्ण ये तीन भेद हैं. पानक (पेय) के दो भेद , जिनमें एकतो संधेय, दूसरा तदितर [असंधेय] इनमें संधेय दो प्रकार का है, और तदितर [असंधेय] बहुत प्रकार का है; जिनका एक ही लक्षण यह है कि, जिनमें पेय पदार्थ सिद्धसत्व है, अर्थात् बनायाहुआ नहीं है, जैसे दुग्ध आदि ॥ ७५ ॥ अब दो प्रकार का संधेय बताते हैं कि, प्रथम द्रावित और दूसरा अद्रावित; इनमें अद्रावित तो असंधेय के समान ही है. और द्रावित में रस (स्वरस), यूष (क्वाथ आदि), पानक (पना, अमरस, गुड़ इमली [आमलवाएया] आदि) आसव (मद्य) इनको आदि लेकर जानो ॥ चौबीसवीं कला सूचिकासंधान नाम की है; जिसके सीवन, विरचन, भूनयन ये तीन भेद हैं. जिनमें चोला आदि सीने को सीवन, और हाथी की भूल आदि बनाने को विरचन, और फटेहुए अथवा छिकेहुए वस्त्रों के तरकी लगाकर वा तून कर नवीन बनादेनेको भूनयन कहते हैं. पचीसवीं कला सूत्रक्रीडन नाम की है, सो भी विस्मय करानेवाली है; क्योंकि इस कला से जादूगर लोक कपडे को सब के साम्हने फाड कार फिर जोडदेते हैं, और जला कर वस्त्र को फिर पैदा करदेते हैं. इसीप्रकार दोनों हाथों में दो नलियां लेकर उसमें छिद्र करके दो सूत्रों को, ये एक ही हैं ऐसा दिखादेते हैं, ये सब

बीणा रु डमरुक बाद्य२६ पुनि प्रथमोक्तसौं सु बिसस है,
बिनु कंठ कोसलसौं जहाँ श्रुति१ जाति२ राग३ निदेस है ॥
रु कला बहोरि प्रहेलिका२७ जँहँ गुप्त आसय पावनौं,
प्रतिमालिका२८ जँहँ अंत अक्खर पूर्बपद्य चलावनौं ॥ ७८ ॥
दुर्बाचकाभिधयोग२९ जो पदगुप्त सब्दनमैं रहैं,
अरु पुस्तबाचन३० सौं अदृष्टहिं दृष्ट ज्यौं पढिबो कहैं ॥
आख्यायिकादि उपेत नाटककर्म३१ है इकतीसमी३,
कबिता समस्यापूरनाख्य३२सु पृच्छकोदित ठाँ धमी ॥ ७९ ॥
पुनि पट्टिकाजुत बेत्रबानबिकल्प३३ नाम निहारिये,
अरु तक्षकर्म३४ सु सान१ भ्रमि२ करि व्यंग वस्तु सुधारिये ॥
बलि तच्छनाख्य३५ कला सु बर्द्धकिकर्मकौसल जानिये,
अरु सिल्पबेद प्रपंच पाटव बास्तुबेदन३६ मानिये ॥ ८० ॥

जादूगरी के खेल हैं ॥ ७७ ॥ छब्बीसवीं वीणा डमरू बजाने की कला है, सो प्रथम कहीहुई वाद्य बजाने की कला से विशेष है, जिसमें विना कंठ ही कुशलता से श्रुति, जाति और राग का उपदेश होता है. सत्ताईसवीं कला पहेली नामक है जिसमें छिपे हुए आशय को पाते हैं. अट्ठाईसवीं कला प्रतिमालिका नाम की है, जिसमें एक पद्य के अंत्याक्षर से द्वितीय पद्य का प्रारंभ कियाजाता है ॥ ७८ ॥ उनतीसवीं कला दुर्वाचकयोग नाम की है, जिसमें शब्दों के बीच में पद गुप्त रहते हैं, अर्थात् संधि आदि के छिपाने में पद जाना नहीं जाता. तीसवीं कला पुस्तकवाचन की है, जिसमें कभी नहीं देखेहोवें उन पुस्तकों को भी देखेहुओं की भांति पढलेवे. इकतीसवीं कला नाटकाख्यायिका (आख्यायिका है आदि में जिसके ऐसे नाटक सहित) नाम की है, जिसमें नाटक (ग्रन्थ विशेष) और आख्यायिका (प्राचीनकथा अर्थात् कहानी मिलजावे उस पर गद्यग्रन्थ) बनाते हैं. बत्तीसवीं कला कविता में समस्यापूर्ति करना है) सो पूछनेवाले के कथन पर है ॥ ७९ ॥ पट्टिकावेत्रबाण नाम की तेतीसवीं कला है, जिसका नाम विकल्प अर्थात् बेत्रवाणपट्टिका भी कहते हैं, जिससे वेत आदि से मांचा व कुरसी आदि बुनना होता है. चौतीसवीं कला तक्षकर्म नाम की है, जिससे शाण और भ्रमि (यंत्रविशेष) से अंगहीन वस्तुओं को सुधारते हैं. फिर तच्छन नाम की पैंतीसवीं कला है, सो खाती (सुथार) के काम की कुशलता में जानो. छत्तीसवीं कला वास्तुवेदन नाम की है, सो शिल्पवेद की रचना में चतुराईवाली है, जिसको मकान

तपनीय१ तार२ जवाहरा३दिनकी परीच्छा३७ त्यौं कह्यो,
अरु धातुबाद३८ सु धातु१ रस२ उपला३दि मारनमैं रह्यो ॥
मनिराग आकरज्ञान३९सो मनि रंगनौं खनि हेरनौं,
बलि वृच्छ वैद्यक४०सोहु सोमनृपादि ग्रंथनमैं घनौं ॥ ८१ ॥
तिम मेष१कुक्कुट२लाव३योधन४१सोहु चालुकनैं कही,
सुक सारिकान पढावनौं४२यहह्न कला गुनमैं गही ॥
उत्सा३म१रु संबाहनाभिध२केसमर्दन३चातुरी४३,
पय१हत्थ२सो वपु दब्बनौं कचसोधनौं३सु न है दुरी ॥ ८२ ॥
पुनि आहि अक्खर मुष्टिको कहनौं४४सु द्वै२बिध जानिये,
साभासिका१ऽनाभासिका२द्वन्ह रूप अब पहिचानिये ॥
पहिली१तँहाँ इक१आदि अक्खरसौंहिं सब्दन जाननौं,
दूजी२सु अंगुलिन्यासत्सौंहिं प्रयुक्त सब्द प्रमाननौं ॥ ८३ ॥
म्लेच्छितबिकल्प४५सु वर्णाव्यत्ययसौं कथा व्यवहारिये,

यनाने की कला जानो ॥ ८० ॥ सैंतीसवीं कला सोना, चांदी जवाहरात आदि की परीक्षा करने की है. अड़तीसवीं कला धातुवाद नाम की है, जिससे धातु, रस, मणि आदि का फूंकना जलाना आता है. मणिराग आकरज्ञान नाम की उनचालीसवीं कला है जिससे मणियों (रत्नों) पर रंग चढाना और खान हेरने का कार्य होता है. पुनि वृक्षवैद्य नाम की चालीसवीं कला है जिसमें बाग लगाने आदि कार्य होते हैं, जिसका विस्तार सोमनृपादि और वराहमिहिरादि के ग्रंथों में बहुत है ॥ ८१ ॥ इकतालीसवीं कला मींढा, मुरगा, लवा आदि पशु पक्षियों को लड़ाने की है. बयालीसवीं कला सुआ, मैंना को पढ़ाने की है. तैंतालीसवीं कला तीन प्रकार की है. उत्सादन १ संवाहन २ केशमर्दन ३. पैरों से शरीर को दबाना उत्सादन; हाथों से शरीर को दबाना संवाहन, और हाथों से केशमर्दन करना केशमर्दन है; सो छिपीहुई नहीं है ॥ ८२ ॥ अक्षरमुष्टिकाकथन नाम की ४४ वीं कला है जिसके दो भेद हैं. एक साभाषिका और दूसरी नाभाषिका. इनमें साभाषिका उसको कहते हैं कि, आदि के अक्षर को कहने से ही पूरे शब्द को जान लेते हैं. और नाभाषिका उसको कहते हैं कि, अंगुलियों के इसारों से शब्दों को जान कर आशय समझ लेते हैं ॥ ८३ ॥ म्लेच्छितविकल्प नामवाली ४५ वीं कला है, जिसमें अक्षरों की उलटापलटी से प्रसिद्ध कथा (बार्ता)

सब देस ।निय बोध४६हू यह है कला श्रुति धारिये ॥
पुनि पुष्पसकटी४७पुष्पही जँहँ बर्णबोधक तत्वके,
रु निमित्तज्ञान४८सु साकुनादिक सास्त्रही ब सत्वके ॥८४॥
बलि यंत्रनामक मातृका४९तुपकादि जत्र बनावनौं,
पुनि आहि धारनमातृका५०इक१बेर सुनि न गुमावनौं ॥
संपाठ्य५१ है पढनौं जु अश्रुतपद्य पाठक संगही,
द स्वरन व्यञ्जन१व्यञ्जनन स्वर२मानसी५२सु कला कही।८५।
कबिताक्रिया५३पुनि है कला भरतादि ग्रंथन जानिकैं,
अभिधानकोसप्रबोध५४एह लई कला पुनि मानिकैं ॥
अरु छंदबोध५५हु है कला तँहँ छंद लौकिक जानिये,
रु क्रिया प्रकल्पन५६काव्यभुखन आदि परखन मानिये ॥८६॥

को छिपाकर व्यवहार में लाना है. ४६ वीं कला सब देशों की भाषाओं को जानना है, सो इसको भी कला कहते हैं सो सुनो. ४७ वीं पुष्पशकटी नाम की कला है, जिसमें पुष्प के चिंतवन से अभिप्राय के अक्षरों का ज्ञान कराना है. ४८ वीं कला का नाम निमित्तज्ञान है, जिसमें शकुन, स्वरोदय (सरोदा) अंगफरकना आदि का वर्णन है. इसका वर्णन "वसन्तराज) आदि शकुन शास्त्रों में लिखा है ॥ ८४ ॥ फिर यंत्रमातृका नामक ४९ वीं कला है, जिससे बंदूक आदि यंत्र बनायेजाते हैं. ५० वीं कला का नाम धारणमातृका है, जिससे एक बेर की सुनीहुई बात को फिर नहीं भूलना; मतांतर से इसको तोलने की कला भी मानते हैं. संपाठ्य नाम की ५१ वीं कला है. जिससे पहिले कभी नहीं सुने होवें वे छंद भी एक बेर के सुनने से पढनेवाले के साथ ही पीछे पढ देते हैं. ५२वीं कला का नाम मानसी है,जिसमें स्वरों को व्यंजन और व्यंजनों को स्वर बनाकर कविता आदि बनाते हैं, जिसको इच्छालिपि भी कहते हैं॥८५॥ कविता करने की ५३वीं कला है, सो भरत कारिका आदि साहित्य के ग्रंथों में जानो.५४वीं कला अभिधान नाम की है, जिससे कोश का ज्ञान होजाता है.इसको भी कला मान लिया है.छंदों का ज्ञान होने की५५वीं कला है, जिससे वैदिक छंदों को छोड कर लौकिक छंदो का ज्ञान होता है.५६वींकला क्रिया प्रकल्पन नाम की है,जिससे काव्य के अलंकारों की परीक्षा अथवा काव्य और भूषणों की परीक्षा होती है. मतांतर से बनाये हुए भोजनादि सिद्ध पदार्थों की परीक्षा में भी इस कला का प्रयोग करते हैं ॥ ८६ ॥

तिम आदि छलितकयोग५७निज बपु अन्य बेस बनावनौं,
बलि वस्त्रगोपन ५८ है त्रि३धाइक१कांतिसौं परिधावनौं१॥
दूजी फट्यो पट नव्य ज्यौं पहिरैं२बडे पटकौं तथा,
पहिरैं सु संबरनादिसौंहिं समेटि ३दीप्ति बन ‾था ॥८७॥
बलि त्याहि द्यूत बिसेस५९सो चतुरंग आदि बिनोदनो,
आकर्षक्रीडन६०अक्षहृदय प्रमा प्रगल्भ प्रमोदनौं ॥
बलि बालक्रीडन६१बाह कंदुक पुत्रिकादि बनावनौं,
पुनि प्रेय बैनयिकी कला६२विनयादिसौं जस पावनौं ॥८८॥
गज१बाजि२आयुध३आदि ग्रंथ प्रबोध बैजयिकी६३कला,
चउसट्ठि६४मी व्यायामिकी६४मृगयादि सोहु महाफला ॥
पांचालिकी चउसट्ठि ६४ हू पुनि कामसास्त्र प्रपंचिका,
नृप भोज सिक्खि लई सबैहि प्रगल्भ प्यारिन वंचिका ॥ ८९ ॥

छलितादियोग नाम की५७वीं कला है, जिससे अपने शरीर को अन्य वेश में करके दूसरों को ठगते हैं. फिर ५८वीं कला वस्त्रगोपन नाम की तीन प्रकार की है जिनमें एक तो क्रांति से शुद्ध वस्त्र धारण करना; दूसरी फटे हुए वस्त्र को ऐसी चतुराई से पहनना कि, जिसमें वे नये दीखने लगें, अथवा बडे वस्त्र को भी ऐसा अँवेर कर पहनना जो बुरा नहीं लगै; तीसरी वस्त्र को समेट कर पुट (तह) आदि लगाकर इस रीति से पहिनै कि जिससे क्रांति बनजावै ॥८७॥ फिर इसीप्रकार५९वीं दाव लगाकर जुआ खेलने की कला है, जिसमें सतरंज आदि का खेल खेलते हैं. ६०वीं कला आकर्षक्रीडन नाम की है जिससे अपने मन में पासों का यथार्थ ज्ञान करके बुद्धिमानी से आनंद लेते हैं अर्थात् लाग के पासे फेंके जाते हैं. मतांतर से यह कला मल्लयुद्ध में भी मानीजाती है. फिर बालक्रीडन नाम की ६१ वीं कला से गेंद फेंकना, पुतली आदि बनाना आता है. फिर वैनयिकी ६२ वीं कला है, जिसमें नम्रता से यश पाते हैं. इसका विशेष वर्णन धर्मशास्त्र में है ॥ ८८ ॥ वैजयिकी नामक ६३ वीं कला है, जो हाथी, घोड़ा, आयुध आदि के ग्रंथों का ज्ञान देनेवाली है. ६४ वीं कला व्यायामिकी नाम की है, सो शिकार आदि बड़े फल की देनेवाली है. और पंजाब में वर्तीजानेवाली ६४ कलायें जुदी हैं; जिनका विस्तार वात्स्यायन प्रणीत कामशास्त्र में है; वे भी सब राजा भोज ने सीख लीं. जो बुद्धिमान् स्त्रियों को ठगनेवाली हैं ॥ ८९ ॥

इक पोत[1] बनिकहु आय भूपहिं अर्द्धपद्यहि[2] दे कह्यो,
यह सिंधुमैं[3] मरजिवके कर मैंनें[4] पट्टक मैं लह्यो ॥
सुनि भोज यौं तँहँ जायकैं तस उत्तरार्द्ध[5] समुद्धरयो[6],
हनुमानको[7] उपकार मालवभूमिभूप १६० भलो करयो ॥ ९० ॥

जलमैं सिला बिच पद्य ओरहु हे[8] कपीसे[9] लिखे जिते,
पटकाय मरजीवारु इक इक वर्ण[10] जोरि चुनैं तिते ॥ ९१ ॥
पहिले समै हनुमान रामचरित्र नाटक निर्मयो[11],
सु बडी सिला बिच खोदि वल्मिकजातकौं[12] लखिवे दयो ॥
वाल्मीकि देखतही सिला वह डारि अंबुधिमैं[13] दई,
कपिराजकी कबिता सु भोजहि उद्धरी स्फुट[14] भू[15] भई ॥ ९२ ॥
इक द्यौंस[16] भोजहिं इक्खिकैं[17] इक बिप्र लोचन मीलिये[18],
अरु पुच्छिवे[19] सैन रोस उत्तर दोस संकुलही[20] दये ॥
बहुतैं बछ्यो नृप तू तथापि[21] कँदर्यता[22] कररी लई,
इहिं हेतु प्रातहि जोहि लखि हम मुंदि अंखिनकौं दई ॥ ९३ ॥
उपदेस ताकँहँ मान्नि भोजहु दानको अंतही[23] लयो,
जस जेसैं[24] उज्जल व्है असेसन[25] देस देसनमैं गयो ॥
कछु कोउ पद्य बनाय जो अधिकी चमत्कृतिको[26] कहैं,
लघुंही[27] वहैं कबिराज रुप्पय लक्ख १००००० भूपतिसौं लहैं ॥९४॥

१ जहाज से व्यापार करनेवाले बनिये ने २ आधा श्लोक ३ समुद्र में मरजीवों (गोता लगाकर समुद्र में से वस्तु निकालनेवालों) के हाथ में ४ मैंने की पट्टी में मैंने लिया है ५ उस श्लोक का उत्तरार्ध भी ६ निकाला ७ यह श्लोक हनुमान का बनायाहुआ था इसकारण से ८ थे ९ हनुमान् के लिखेहुए जितने थे उतने १० एक एक अक्षर को जोड़ कर ११ बनाया था १२ वाल्मीकि को १३ समुद्र में १४ स्पष्ट (प्रसिद्ध) १५ भूमि पर १६ दिन १७ भोज को देख कर १८ एक ब्राह्मण ने नेत्र मींचलिये १९ से २० दोष से भराहुआ २१ तौ भी २२ कृपणता २३ नियम २४ जिस भोज का २५ संपूर्ण २६ चमत्कारवाला २७ शीघ्र ही.

मथुरेस जद्दवकी सुता नृप ब्याहि भानुमती लई,
लीलावती पुनि भीमपाल बघेलकी दुहिता सई ॥
अभिरूपिका तीजी ३ सु कर्मनकी सुता प्रतिहारिका,
इत्यादि भोज अनेक ब्याहिय काव्य उत्तमकारिका ॥ ९५ ॥
नहिं कोउ संस्कृत मूढ मानव धार पत्तनमैं रह्यो,
नहि देसदेसनके प्रबुद्धन वास निज घरमैं लह्यो ॥
तब रामदेव १ सुबंधु२बररुचि ३ बान ४ इंद्र ५ मयूर ६ ज्यों,
हरिवंस ७ संकरलिंग ८ कोकिल ९ कालिदास१०कपूर११त्यों॥९६॥
बिद्याविनोद १२ बिनायक १३ रु भवभूति १४ आदि सबे जहाँ,
तिहिंकालके कवि भोजसेवन धारि आनि वसे तहाँ ॥
कवि माघहू अवसान काल समीप तत्थहि आत भो,
बिनुही मिले नृप नेरैं संन्निधि तास देह प्रपात भो ॥ ९७ ॥
तिय माघकी १ हु प्रबुद्धकी सु अतीव भूपति अद्दरी,
पंडित कुटुंबहुकी सुता२पत्तनी३स्नुषा४सधना करी ॥
भट्टारिका सीला५द्विजा सीता६जया७अरु अंबिका८,
वे ले फल्गुहस्तिनि९विज्जिका१०कमला११रु विकटनितंबिका १२
इत्यादि के वर अंगना जँहँ काव्य कल्पकही भई ।
रु अनेक सास्त्रन वादमैंहु विसेस बुद्धि सबे ठई ॥
सुकदेव१बिल्हन२लच्छिधर३दंडी४धनंजय५से घनें,
नृप हितु लक्खन लैगये कविता किरीट जनें जनें ॥ ९९ ॥
कवि कालिदास१रु भोज२भानुमती३समान न ओर भो,
पर भोज तो खट६शास्त्रमैंहु अजेय सब सिरमोर भो ॥
जिहिं जोगपै करि वृत्ति१सब्दनआनुसासन२हू करयो,

१मथुरापति जादव क्षत्रिय की पुत्री २पुत्री ३उत्तम काव्य करनेवाली ४संस्कृत में मूर्ख मनुष्य ५धार नगर में ६ पंडितों ने ७ उस समय के ८ धार नगर में ९ अंत समय में १०नगर के ११पास १२पतन(मृत्यु) १३पण्डिता १४पुत्री १५स्त्री १६व हिन १७पुनि १८कितनी १९स्त्रियां २०रचनेवाली २१और २२ से २३कविता के मुकुट २४परंतु २५योगसूत्र पर भोजवृत्ति नामटीका बनाई २६शब्दानुशासन भी बनाया

रचि ग्रंथ राजमृगांक३वैद्यककोहु आसय उद्धरयो ॥ १०० ॥
साहित्यपैं बहुरयौं सरस्वतिकंठभूखन४निर्मयो,
परमार पंडित अद्वितीय प्रबंधकार भलो यो ॥
प्रतिबर्णहू नृपतैं अनेकन लक्ख१०००००पायउ पद्यके,
अतिदानसौं नृपकेहु गेह बढे दरिद्र अवद्यके ॥ १०१ ॥
तबहू प्रमार सु मालवेंद्र बिसेस सोभितही ह्यो,
भरि द्वीप सप्तहि७भूमिके जिम रिक्त तोयद उल्लह्यो ॥
इम रांम भूपति कित्ति उत्तम भोजकी कबलौं कहैं,
बर ग्रंथ भोजप्रबंधमैं सु बिसेस बिस्तरसौं रहैं ॥ १०२ ॥
नृप भोजके सुत भीम आदिक अठ्ठ८बीर बली भये,
तिनमाँहिँ अग्रज भीम१६१तासहु अठ्ठ८नाम सुनेंगये ॥
इक भीम.त्यौं जयसेन. संकर. केसरी. बिजई. जथा,
हयसेन. अर्जुन. धीर. ए८अब नाम ओरनके तथा ॥ १०३ ॥
हुव भीमके अनुजात बल्लभ१६१।२दर्ग३बिल्हन४नच्छु५त्यों,
हरिसेन६मान७प्रताप८ए परमार अन्वयँ ईस त्यों ॥
हरिसेनके कुल भो सु लक्ख प्रमार अंबुवको धनीं,
चहुवान पृथ्वियराजकी पत्नी सुता तस ईच्छनीं ॥ १०४ ॥
अरु भीम१६१अग्रज भोज सुत तस रत्नपाल१६२प्रवीर भो.
तस इंद्रपाल१६३तदीय संतति चंद्रपाल१६४सुधीर भो ॥
हुव तास उदयादित्य१६५।१मंग२तथाहि वीरस३तीन३ए,
हुव मंगके महपाख्य१६६।१जालप१६६।२दोय२सूनु प्रवीन ए ॥१०५॥
इकके वढे कुल सु महपाउत१जालपा२हुव२जानिये,

---

१ सरस्वतीकंठाभरण नामक ग्रंथ २ बनाया ३ ग्रंथकर्ता ४ एक एक अक्षर के लाख लाख रुपये ५श्लोक के ६ अधम (राजा के घर में भी अधम दरिद्र बहुत बढ़े) ७ तौभी८जैसे भूमि के सातों द्वीपों को भर कर रीता होने पर भी ९ मेघ १० हे राजा रामसिंह! ११ कीर्ति १२श्रेष्ठ१३छोटा भाई१४पँवार वंश के१५आबू का१६स्त्री (राणी) १७लाखा पँवार की बेटी१८इच्छनी उस स्त्री का नाम था १९ उसके २०वंश में.

अनुजात बीरस पुत्र धारव१६६।१भाम२द्वै३हि प्रमानिये ॥
इनकी जु संतति धारवा३भाभा४प्रभेद पमार है,
सुत मंग अग्रजकै छ६ही जगदेव आदि उदार है ॥ १०६ ॥
जगदेव१६६।१पुनि रनधवल२अवर सु पीलधवल३भयो जथा,
बलि महपधवल४रु सिंहधवल५रु बीरधवल६छठो६तथा ॥
इनमैं बडो जगदेव१६६।१बितरनकर्ण ही प्रकटी भयो,
जिहिँ कट्टि निजसिर किंत्तिधन कंकालि भट्टनिकों दयो ।१०७।
जगदेव१६६।१अग्रजं स्वर्ग गो रनधवल१६६।२तब वसुधेस भो,
अरु पीलधवल१६६।३तनूज भायल१६७।१डोड२जामल२एस भो॥
हुव भायलान्वय भायला५अरु डोड६डोडहितैं भये,
तिम संखुला७पुनि महपधवल तनूज संखुल१६७तैं ठये ॥१०
बलि सिंहधवल तनूज सूमर१६७।१त्योंहि ऊमर१६७।२द्वै२हव
बसवाय ऊमरकोट जंगलदेश सन्निधि जे रहे ॥
हुव सोढ१६८सूमरकै तहिँ प्रमार कुल सोढा८बजे,
अनुजात ऊमर संतती उपटंकै उम्मट९उप्पजे ॥ १०९
हुव बीरधवल तनूज दर्भिक१६७तास डभिय१०जानिये,
रनधवलकै महदेव१६७।१हूण२हमीर३पत्तल४मानिये ॥
उपटंकहूण११कहात तिनविच हूणकी सब संतती,
हम्मीरकै सामंत१६८।१वरड२सुजान३कुंत४महामती ॥ ११० ॥
सामंतकै सामंत१२वरडज वरड१३बारड१३द्वै बजे,
त्योंहीं सुजान१४सुजानके कुंता१५सु कुंतजें उप्पजे ॥
रु कनिष्ट पत्तल पुत्र सर्बड१६८।१जोरवाख्य२नलाख्य३ज्यों,
पुनि मदन४पे सव५खहर६कालम७गुंग८ए हुव अट्ठ८त्यों ।१११।
वड वंस सर्बडिया१६रु जोरवके बजे सब जोरवा१७,

---

१ पुनि २ दान में ३ कीर्त्ति ही है धन जिसके ४ भाटनी का नाम है ५ विना सन्तान ६ भूमिपति हुआ ७ पुत्र ८ भायल के वंश के ९ समीप १० उसके ११ छोटे भाई १२ वंश १३ पदवी १४ पुत्र १५ कुंतज पदवीवाले १६ और १७ छोटा

नल३मदन४के नल१८मदन१९पोसवकी प्रजा सब पोसवा २०॥
खहरके खह्नर२१रु कालमाँ२२सब कालसोत्थ पमार है,
सु बजंत संचारा२२हु संतति गुंगकी गुंगा२३रहै ॥११२॥
महदेव१६७।१ अग्रज भूप भो तस पुत्र अठ८निहारिये,
अमरेस१६८।१कर्मन२साल३रब्बड४कब्ब५त्यौं श्रुति धारिये ॥
थलपति६ रु गहलड७ धंधु८ है सब बंस बिस्तरकार जे,
हुव हुरड१६९ कर्मन पुत्र ―रड२४हि तास वंस प्रमार जे॥११३॥
सालाउता१भिध २५ साल रब्बड भेद रब्बडिया२६ जनैं,
कुल कब्बके कब्बा रु२७थलपतिके भये थलवा२८घनैं ॥
गहलडज गहलडिया२९प्रमार रु धंधुके धंध३०बजे,
अमरेस१६८।१नृप इनमांहिं अग्रज तास दस१०सुत उप्पजे११४
कलदेव१६९।१ सिंघन२ कंध३सुरजन४कुरड५कंकन६नामज्यौं
उल्लंघ७ बावल८ बंसनाथ अपुत्र जल्हन९ राम१६९।१० ज्यौं॥
परमार सिंघन बंस सिंघन३१कुरड३२ कुरड कुलीरजैं,
कंकनकुल रु उल्लंगकुल कंकन३३रु उल्लंगा३४ बजैं ॥११५॥
बँलि बावलान्वय बावला३५खिल च्यारि४अप्रजहीं गये,
इनमैं बडो कलदेव१६९तासुत लल्ल१७०।१मल्ल२उभैरठये॥
हुव लल्लकै सुत सालिभानु १७१नृसिंह१७२।१सब्दच२तासद्वै,
इनमाँहिं जो अनुजात सब्दच१७२।२बैलसो बिनु नास ह्वै।११६।
पुरसिंह बनिकै जु पद्मसी तस कन्यका चटसालमैं,
सालंगिका लहि लज्ज तजि बिगरयो जु चेतन चालमैं ॥
उपज्यो अमान१७३नृसिंहकै सुत भूप मालव जो भयो,
रठोर नृप जयचंद्रनैं उज्जैन तासन छिन्नयो ॥११७॥

१संतान२ बढानेवाले३सालावत नाम के ४पुनि ५बावला के वंश के ६ बाकी के ७ विना संतान ८ छोटा ९ विना नासिका वाला (नकटा) बैल के समान अथवा विना नाथवाले बैल के समान होकर१०नगरसेठ११ बनिया पद्मसी नामक की १२ सालंग्या नामक १३ उससे.

उदयापुरी तब गो अमान तदीय[1] च्यारि ४तनूज[2] हे,
तिन नाम भैरव१७२।१ सुरत२ चयन३रु इन्द्र४ ए४क्रमतैंकेह ॥
हुव२ सल्ह१७३।१ मंडन१७३। २भैरवात्मज[3] सल्हकै सुत इंद्र१७४ज्यौं,
हुव तास मुत्तियराज१७५ मुत्तियकै भये सुत पंच५त्यौं ॥११८॥

दलपति१७६। १गुमान२समान३सूरज४पंचमौं५जसराज१७६।५भो,
अनपत्य[4] अग्रज[5] गत भये तब पट्ट सूरजकाज भो ॥
फतमल्ल१७७।१लछ्मन२त्यौंहि नरहरि १७७।३तीन३सरजकैभये,
फतमल्लकै सुत नंद१७८तास गुलंब१७९।१ओ महतर्प२ये ॥११९॥

अनपत्य[6] प्रेत[7] गुलंब भो महतर्प१७९मुख्य तहाँ रह्यो,
तस चन्द्रसिंह१८०।१अमान२आमद३त्यौं चतुर्भुज१८०।४हू कह्यो ॥
तिनमाँहिं अग्रजकेर[8] सालम१८१रामसिंह१८२तदीय[9] भो,
भवदास१८३।१बग्घ२पहाड३यौं त्रय३ही तदीय बलीय भो ॥१२०॥

भवदास पुत्र कुसाल१८४।१लछमन२चंदनाख्य३तृतीय३ज्यौं,
हुव अग्रजात[10] कुसाल पुत्त गरीबदास१८५गरीय[11] त्यौं ॥
तस कर्ण१८६तस सुत देवदास१८७तदीय मांधाता१८८भयो,
हुव बीरभानु१८९तदीय तासुत हंसराज१९०बली ठयो ॥१२१॥

हुव तास बेनियदास१९१तस हम्मीर१९२तासुत कर्ण१९३भो,
हुव तास गोकुलदास१९४ईश्वरदास१९५तास रणर्ण[12] भो ॥
तस पित्थ१९६तासुत समरसाहि१९७रु गंगसेन१९८तदीय[13] त्यौं,
गोविंददास१९९तदीय तास प्रतापसिंह२००सहीय त्यौं ॥१२२॥

तस गुरुगनेस२०१तदीय सुत कल्यानराय२०२सुभाय भो,
तस चउ४असोक२०३।१दयालु२पुनिजगनाथ३रायनराय४भो,
अगराख्य[14] पत्तन[15] पाय रायनराय२०३।४मालवमैं रह्यो,
तस बंस रायनरायउत्त३६अजौंहु तत्थहि हे कह्यो ॥ १२३ ॥

---

१ उसके २ पुत्र ३ भैरव के पुत्र ४ विना संतान ५ बडे भाई मरे ६ विना संतान ७ मरा ८ बडे भाई के ९ उसके १० बडे भाई का पुत्र ११ भारी १२ युद्ध का ही है ऋण (करजा) जिसके १३ उसके १४ अगरा नामवाला १५ पुर

उदयापुरी विनु होय अग्रज चित्रकूटहि आत भो,
इक लक्ख१००००० आय पटासहित विंझोलि पत्तन पात भो,
संग्रामरान नरेसको भेंट वै असोक२०३ रह्यो जहाँ,
पद्मावती पुनि रानकी तनयाहु ताहि मिली तहाँ ॥ १२४ ॥
निज भुम्मि खोय असोक यों उमराव रानहिको वन्यों,
रतनेस रान समेत सो रविमल्लभूप तिनैं हन्यों ॥
तस पुत्र सहज२०४।१ममारखान२सुजान३पूरनमल्ल४ज्यों,
हुव चंद्रभानु५रु खानखान६रु लाड७ताजनखान८त्यों ॥१२५॥
नव९वीरभानु२०४।९समेत ए तँहँ ज्येष्ट अग्रजही मरयो,
चितोरं अकवरसों बिसीस ममार खान२०४हु ठहै लरयो ॥
तस पुत्र द्वै२सुभकर्ण२०५।१डुंगरसीह२०५।२उद्धतही भये,
इनमाँहिं केसव२०६।१भोज२जोगियदास३अग्रजकै ठये ॥१२६॥
खट६केसवात्मजें इंद्रभानु२०७।१रु उदयभानु२भये जथा,
जसकर्ण३अरु रघुनाथ४दीप५छठो विजैगज६हू तथा ॥
हुव इंद्रभानु तनूंज पंचक५वैरिसल्ल२०८।१वडो जहाँ,
कल्यान२रु महासिंह३रनछोड४गोविंद२०८।५इते तहाँ ॥१२७॥
हुव वैरिसल्ल तनूज दुर्जनसल्ल२०९।१त्यों नग२ओ हठी३,
सुत च्यारि४दुर्जनसल्लकै हुव किति संचन सम्मंठी ॥
इक विक्रमार्क२१०।१मुकुंद२त्यों रनधोल३ओ फतमल्ल४ये,
मांधातृक२११।१रु उम्मेद२कुसल३सुजान४विक्रमकै भये॥१२८॥
सुरतान२११।५आत्मजें पंचमाँहु सिवाय इन विच जानिये,
इनमाँहिं अगूजकै हु च्यारि४विनीतैं आत्मजें मानिये ॥
सुभकर्ण२१२।१अरु कल्यान१वँलि वखतेस३इंद्र४चउत्थ४ज्यों,
सुभकर्णकै हु भयो उँदैकरनादि पंचक५जुत्थ ज्यों ॥ १२९ ॥

---

१ चीतोड़ २ आमद का ३ वींझोल्याँ नामक पुर ४ उमराव ५ पुत्री ६ बुंदी के राव सूर्यमल्ल ने ७ विना संतान ८ चीतोड़ गढ ९ विना मस्तक १० केशव पुत्र ११ पुत्र १२ वहुत (सामग्री) १३ पुत्र १४ शिक्षा पायेहुए १५ पुत्र १६ पुनि १७ उदयकर्ण को आदि लेकर पांचों का समुदाय.

तहँ उदयकर्ण१२३।१बहोरि केसव२नन्द३रामसिंह४पहाड५हू,
मृत ज्येष्ट अग्रजं हैऽब केसव १३।२नेसं विक्रत१७ पहू ।।
सिवसिंह२१४नाम कुमार केसवदासनं इकार्हा लह्यो,
नृप रामसिंह प्रमार अन्वयको समासं यहै कह्यो ।। १३० ।।

दोहा

किते कहत जगदेवको, वंसहु है गुजरात ।।
कुलनमुख्य रनधवलको, क्यों यहँ कीनौं ख्यात।।१३१।।
उदासीनं ह्वै हम इहाँ, लहि बहु व्यापक लेह ।।
बहु मागध मत वर्णयो, याको उत्तर एह ।। १३२ ।।
रूप्पय व्यय दस सहँस१००००करि, चउ४दिस दूत चलाय ।।
कुल मागध बुल्ले सकल, नृप तुम खोजन न्याय ।। १३३ ।।
सबहि मागधन पुच्छि सुनि, मत बहु इक्क१मिलाय ।।
कहे विविध आगम कलित, अनलवंसं अधिकाय ।। १३४ ।।
पीढिन बिच घटि बढि पुरुख, भोरैं कहुँक बिरोध ।।
तहँ भ्रमनासक असुतके, सुत भ्रातहि यह बोध ।। १३५ ।।
च्यारि ४ हु छत्रिय कुलनकी, इम पीढी भ्रम होत ।।
नवे मागध जे ह्वैरहे, पत्थरमय ते पोत ।। १३६ ।।

पादाकुलकम् ।।

अब प्रमार कुल भेद समासहु, सुनियें संभर विविध विलासहु ।।
महपाउत१रु जालपा२जानहु, धारया३ रु भामा४पहिचानहु।।१३७।।

१बडा भाई बिना संतान मरा और अब केशवदास विद्यमान (मौजूद) है. २बीकानेर नगर का पति ५ है राजा रामसिंह६वंश ७ संक्षेप ८पंवारों के कुलों में पाटवी९प्रसिद्ध१०मटस्थ११लेख१२बहुवाभाटों का १३ हे राजा रामसिंह ! तुमने १४ बहुतों के मत [राय] इकट्ठे मिलाकर १५ नाना प्रकार के ग्रंथों में १६ प्रसिद्ध १७ अग्निवंश को १८ दीखे १९ वहां भ्रम मिटाने के लिये यह जानना कि यातो वह बिना पुत्र मरा, अथवा छोटा भाई उसका पुत्र होगया, अर्थात् भाई गोद बैठगया २० बराबर होजाती है २१नवीन (इस समय के) बहुवाभाट२२पत्थर की नाव के समान होरहे हैं अर्थात पार लगाने में असमर्थ हैं २३संक्षेप में२४हे चहुवान.

तत्थ मायला५डोड६हु जैसैं, संखुला७रु सोढा८पुनि तैसैं ॥
उम्मट९हुमिय१०हूया११भेदवर, सामंत१२रु पुनि बर्ड१३कित्तिकर
बलि सुजान१४कुंता१५श्रुति धारहु,सर्वडिया१६जोरवा१७बिचारहु॥
नल १८ अरु अमर १९ पोसवा २० देखहु,
खहर २१ कालमाँ २२ विदित बिसेखहु ॥ १३९ ॥
संचोरा२२हु कालमाँ२२कहिये, गुंग२३हुर्ड२४लिखित ए लहिये ॥
सालाउत २५ रब्बडिया २६ ए जिम,
[illegible]ब्बा २७ थलवा २८ गहलडिया २९ तिम ॥ १४० ॥
धंधू ३० सिंघणा ३१कुर्ड ३२ रु कंकन ३३,
उल्लंगा ३४ बावला ३५ हु जसधन ॥
ए पैंतीस३५प्रभेद बिदित भुव, अभुव आधुनिक अंतरगत हुव।१४१।
रायनरायउत ३६ सु इम अग्गहु, जे अवलौं अगरा भुवके पैहु ॥
इहिं इक१गेह रही अरु रहिये, कुबधू कुकी कहानी कहिये।१४२।
जे अनुजहु हुव धरनिं धर्मधन, भिन्न लगे तिनके भिद भासन ॥
अब तुमरो अवसर नृप आयो, प्रभु मैं रंक सु सेवंधि पायो।१४३।

दोहा

सद्मनकैंहि नहि होत सुत, अरु अंकेस्थहु होत ॥
बग्सनतैं इक कछु बढत, पीढिन पुरुख उदोत ॥ १४४ ॥
हुवँ हग मुनि कृत वसु ८४७२ बरस, पीढी छप्रकृति २१६ ज्योंहि ॥
मुनि प्रकृति२१७रु गुन प्रकृति२१३पुनि, त्रिनभनेत्र२०३क्रम त्योंहि

१भूमि पर२इस वंश के जो [illegible] भूमिवाले हैं वे इनके ही भीतर आगये४अगरा नामक ग्राम की भूमि के पति हैं ५ भूमि (इस भूमि) के पति तो अनेक होगये, परंतु खोटी स्त्री के समान यह एक ही घर में रही, अर्थात् बड़े भाई के जो पृथ्वी थी वही छोटे के रहगई इससे ६ जो छोटे भाई ७ राजा होगये उनके ८ भेद जुदे दीखने लगे ९ हे राजा रामसिंह १० धन ११ गोद लियाहुआ (दत्तक) पुत्र१२अग्निकुल को उत्पन्न हुए८४७२वर्ष हुए, जिनमें २१६ पीढी प्रतिहारों (पड़िहारों) की, २१७ चालुक्यों (सोलंखियों) की २१३ परमार (पँवारों) की, और २०३ पीढियां चहुवाणों की हुई ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशौ स्वमुख्यभेदसहितप्रमारवंशसमसनोद्देशन-मागधान्वेषण-वसुव्ययशौष्य-सूचन-वंशानभिज्ञभ्रमविदारणं सप्तदशो१७मयूखः ॥ १७ ॥

आदितो द्विचत्वारिंशत्तमः ॥ ४२ ॥

इतिश्रीमदखिलमहीभृन्मुकुटमल्लीमाल्यमकरन्दमद्यमत्तमिलिन्दमुखरितचरणचिन्हिताऽरातिचूड बुन्दीपूर्विलासिनीविलासिचाहुवाणचूडामणिभारतीभागधेयहड्डोपटङ्किमहाराजाऽधिराजमहारावराजेंद्रश्रीरामसिंहदेवाऽऽज्ञया गीर्वाणगीरादिषड् ६ भाषावेशसुभ्रूभुजङ्गकाव्याकूपारकर्णधारवीरमूर्तिचक्रिचरणारविन्दचञ्चरीकचारुचमत्कृतचेतनचारणचक्रचण्डचण्डीदानात्मजमिश्रणसुकविसूर्यमल्लविहितवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशौ वशिष्ठहोमधेनुमहागर्तपतनगङ्गास्तवनवाशिष्ठीनदीप्रादुर्भावमुनिदिग्गवर्ज्जनसमारूढार्बुदनागतत्पंगुपुत्रनन्दिश्वभ्रप्रक्षेपणातदर्बुदाद्रीभवनतत्रर्षि१देव२तीर्था३ऽऽदिरूपनदीतिवाशिष्ठसर्वमुनिगणाऽऽह्वयनमहासत्रारम्भणदैत्येन्द्रबाणपुत्रधूम्रकेतु१यन्त्रकेतु२तद्विध्वंसनमुनिगणासत्यलोकादिगमनहरि१हर२जे३न्द्रा४दिसर्वदेवाद्यर्बुदानयनाभिषेकार्थतीर्थ१वन२खण्ड३सिन्धु४द्वीपागमनप्रतिहार१चालुक्य२प्रमार३यज्ञाग्निकुण्डोद्गमनप्रहतसूचीकेशो१ल्मुकवर्मि२सूककर्ण१मर्दक२

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में अपने मुख्य भेद सहित प्रमार वंश का संक्षेप से कहना, भाट लोगों से खोज (तलाश) करने में धन खर्च हुआ जिन रुपयों को जनाना, वंश नहीं जानने के भ्रम को मिटाने का सत्रहवां १७ मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से बयालीस ४२ मयूख हुए ॥

श्रीमान् सब राजाओं के मुकुटों में रहेहुए मोगरे के पुष्प संबंधी मकरंद(पुष्परस)रूप मद्य से मस्त हुए भ्रमरों से शब्दायमान चरण करके चिन्ह युक्त किये हैं शत्रुओं के मस्तक जिन्होंने, बुंदीपुरी रूपी स्त्री के विलासी, चहुवाणों के शिरोमणि, सरस्वती है दायभाग में जिनके अथवा सरस्वती से कर लेनेवाले अर्थात् पूर्ण विद्वान्, हाडा पदवीवाले महाराजाधिराज महारावराजेन्द्र श्री रामसिंहदेव की आज्ञा से, संस्कृतभाषा आदि छै भाषा रूपी गणिकाओं

करभग्रीव १ कङ्कालक ल २ वराहदंष्ट्रि ३ प्रमुखदैत्य प्रतिहार१ चालुक्य २ प्रमार ३ पराजयनचतुर्थ ४ पुरुषचण्डास्यु ४ प्रमनत ज्जन्मकालादिस्पष्टीकरणा१ऽभिषेचन२योधन३धूम्रकेतु१यन्त्रकेतु२ न्हदोदर३शूलिक४तालहस्त५करालमुख६कालजिह्व७रीतिनेत्र ८गि रिशासा९ऽसुरनिपातनस्वविजयनब्रह्मैतत४क्ष्माविभागविभजनहरि१हरा २जा३ऽऽदितिरोभवनप्रतिहार१चालुक्य२प्रमार३मुख्यवंशपरंपरासम सनतत्पुरुषकालभ्रमनिरसनं द्वितियो२राशिः समाप्तः॥ २ ॥

अनुष्टुप् छन्दांसि ३०३५ ॥

श्रीगोवर्द्धनो जयति ॥

का पति, काव्यरूपी समुद्र के कैवर्तक (खेवटिये) वीरमूर्ति, विष्णु भगवान् के चरणारविन्द के भ्रमर, मनोहर चमत्कारिक बुद्धिवाले, चारणगण के सूर्य चण्डीदान के पुत्र मिश्रण (मीशण) शाखा के श्रेष्ठकवि सूर्यमल्ल के रचे हुए वंशभास्कर नामक महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में वशिष्ठ मुनि की होमधेनु का बडे खड्डे में गिरना, गङ्गा की स्तुति, वाशिष्ठी नदी का पैदा होना, मुनि का हिमालय से याचना करना, उस हिमाद्रि के अर्बुद नाग पर चढे हुए नन्दी नाम पाँगले पुत्र का खड्डे में गिराना जिस से आबू पहाड़ का होना, वहां ऋषि देवता और तीर्थ अ[illegible] का स्थापन करना, दीक्षा लिये हुए वशिष्ठ का सब मुनिगण को बुलाना, बडे यज्ञ का आरम्भ करना, दैत्यों के राजा बाण के पुत्र धूम्रकेतु और यंत्रकेतु द्वारा उस यज्ञ का नाश होना, मुनि लोगों का सत्यलोक आदि में जाना, विष्णु महादेव ब्रह्मा और इन्द्र आदि सब देव आदि का आबू पर लाना, अभिषेक के लिये तीर्थ वन खण्ड समुद्र और द्वीपों का आना, प्रतिहार चालुक्य प्रमार का यज्ञ के अग्निकुण्ड से उत्पन्न होना, सुचीकेस उल्मुकवमी शूककर्ण मर्दक करभग्रीव कंकालक व वराहदंष्ट्रि आदि दैत्यों को मारना, प्रतिहार चालुक्य और प्रमार का पराजय, चौथे पुरुष चहुवाण की उत्पत्ति, उसके जन्म समय आदि को स्पष्ट करना, अभिषेक होना, युद्ध करना, धूम्रकेतु यंत्रकेतु न्हदोदर शूककर्ण तालहस्त करालमुख कालजिह्व रीतिनेत्र और गिरिशास आदि दैत्यों को मारना, चहुवाण का विजय, ब्रह्मा का इन चारों को भूमि बाँटदेना, विष्णु महादेव और ब्रह्मा आदि का अन्तर्धान होना, प्रतिहार चालुक्य और प्रमार की मुख्य वंशावली का संक्षेप, तहाँ पीढियें और समय के भ्रम को [illegible]टाना अर्थात् कितने समय में किन किन की कितनी कितनी पीढियें हुईं जिसका सन्देह मिटाने का द्वितीय राशि समाप्त हुआ ॥

इतिश्री नीतिनिपुण-बुद्धिविशारद-सज्ज शिरोमणि-हरिभक्तिपरायण-धर्म मूर्ति-वीर-वदान्य-सोदाबारहठ-चारणकुलाऽवतंस-शाहपुराप्रतोलीपात्र-सु योग्यपितुरऽवनाड़सिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्याः शृङ्गारनामजनन्याः प्राप्तप्रस वपालनबालशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितैराऽऽज्ञाकारिभिराऽऽत्मजैः केसरीसिंह किसोरसिंह-जोरावरसिंहैर्विगतभाव्याऽऽधिना, कविकोविदनिजमातुल-कवि राज-श्यामलदासादाऽऽप्तकाव्यशिक्षेण, सन्तोऽषादिसद्गुणसम्पन्न-विद्वच्छिरो मणि-परमवैष्णव-रामानुजसम्प्रदायिनः श्रीमदाचार्य-सीतारामाऽऽव्हयगुरोरा ऽऽसादितसंस्कृतविद्येन, सूर्यवंशोद्भव-रघुवंशीय-राणोक्त-शाहपुराधिप-राजा धिराजोपटङ्कि नाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकर-रविकुलशिरोरत्न-रघुवंशीय-गुहि लोक्त-मेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराऽधीशसज्जनतादिसद्गुणसम्पन्न-महाराणा सज्ज नासिंहवर्म्म, तथैव तदुत्तराधिकारि-महाराणा-फतहसिंहवर्म्म, भानुवंशभूष ण राष्ट्रकूटकुलाऽवतंस-मरुधराधिप-जोधपुरेश-राजराजेश्वर-महाराज-यशव न्तसिंहवर्म्मभ्यो लब्धाऽतीवदान-मान-स्वर्णरचितपादभूषणाऽऽदिसत्कारेण, त था तदुत्तराधिकारि-तत्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रतिपालक-मरुधराधीश श्रीसरदार- गोश्रितेन, अधीतविद्यां सफलयितुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रैर्ल योत्साहेन, शाहपुरानिवासिना कविवर-बारहठ-कृष्णसिंहेन विरचि तदधिमन्थनीटीकायां द्वितीयो राशिः समाप्तः ॥

श्रीयुत नीतिनिपुण बुद्धिविशारद सज्जनशिरोमणि हरिभक्तिपरायण धर्ममूर्ति वीर उदार (दातार) सोदा बारहठ शाखा के चारण कुल के मुकुट शाहपुरा के पोलपात्र (शाहपुरा के राज द्वार पर नेग 'दस्तूर' लेनेवालों में पात्र) सुयोग्य पिता ओनाड़ (अनड़) सिंह के पुत्र ने, पण्डिता शृङ्गारबाई नामक माता से पाया है जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा पायेहुए आज्ञाकारी पुत्र केसरीसिंह, किशोरसिंह और जोरावरसिंह से मिटगई है आनेवाले समय में होनेवाली मनासिक चिन्ता जिसकी, पण्डित कवि अपने मामा कविराज श्यामलदास से पाई है काव्यशिक्षा जिसने, सन्तोष आदि गुणों से युक्त विद्वानों के शिरोमणि परमवैष्णव रामानुज सम्प्रदायी श्रीमत् आचार्य सीताराम नामक गुरु से प्राप्त की है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में पैदाहुए रघुवंशीय राणाउक्त शाहपुरा के पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंह वर्मा, और आर्यों के सूर्य सूर्यकुल के शिरोमणि रघुवंशी गुहिल राजा के वंशवाले मेवाड़ देश के पति उदयपुर के स्वामी सज्जनता आदि स गों की समृद्धिवाले महाराणा सज्जन सिंह वर्मा, और उन्हीके समान उनकी गद्दी पर बैठनेवाले महाराणा फतहसिंह वर्म्मा, और सूर्यवंश के भूषण राठोड़ कुल के मुकुट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर के स्वामी राजराजेश्वर महाराजा यशवन्तसिंह वर्मा से

पाया है दान, बडप्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक प्रतिपालक मरुधराधीश श्रीसरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिलगया है पढीहुई विद्या को सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह जिसने, शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे सुकवि बारहठ कृष्णसिंह की रचीहुई उदधिमन्थनी नामक टीका में द्वितीय राशि समाप्त हुआ ॥